ISSN 2229-547X

विदेह सदेह ३४

रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-३

(विदेह www.videha.co.in/ पेटार अंक १-३५० सँ)

विदेह-सदेह शृंखला- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर सङ्कलन

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्

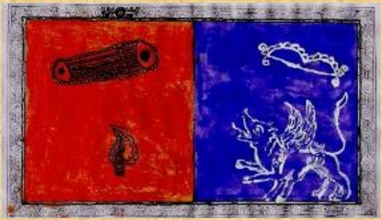

विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X VIDEHA

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।

ऐ पोीक सिवकार सुरिवत अि। कॉपीराइट (©) िरकक िलिवत अनुमितक िवना पोीक कोनो अंशक िया पिरएि िरकॉिंग सिहत इलेक्ट्रॉिनक अिा यांिक, कोनो माध्यमसँ, अिा ानक संगहण िा पुनपयोगक पणाली दारा कोनो रपमे पुनरतपािदत अिा संचािरत-पसािरत नै कएल जा सकैत अि।

(c) २०००- अदतन। सिवकार सुरिवत। िविदेहमे पकािशत सभटा रचना आ आकाइिक सिवकार रचनाकार आ सृगहकराक लगमे छि। भालसिरक गाछ जे सन २००० सँ याहूिसटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आिद िलकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (िकछु िदन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html िलकपर, सोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसिरक गाछ-पिम मैििली ब्लॉग / मैििली ब्लॉगक एगीगेटर) केर रपमे इन्टरनेटपर मैििलीक पाचीनतम उपिसितक रपमे िवदमान अि। ई मैििलीक पिहल इंटरनेट पिका िकि जकर नाम बादमे १ जनिरी २००८ सँ "िविदेह" पडलै।इंटरनेटपर मैििलीक पिम उपिसििक यािा िविदेह- पिम मैििली पािक ई पिका िधिर पहुँचल अि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई पकािशत होइत अि। आब "भालसिरक गाछ" जालिर 'िविदेह' ई-पिकाक पिवकाक सृग मैििली भाषाक जालिरक एगीगेटरक रपमे पयुक्त भऽ रहल अि। िविदेह ई-पिका ISSN 2229-547X VIDEHA

(c)२०००- अदतन। सिवकार लेखकािन आ जतऽ लेखकक नाम नै अि ततऽ सृपादकािन। सृपादकािन। िविदेह- पिम मैििली पािक ई-पिका ISSN 2229-547X VIDEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur.

रचनाकार अपन मौिलक आ अपकािशत रचना (जकर मौिलकताक सृपूर्व उत्तरदाियत्व लेखक गणक मध्य छिन्ह) editorial.staff.videha@gmail.com के मेल अटैचमेण्टक रपमे .doc, .docx, .rtf िा .txt फॉमेटमे पठा सकै छिि। एतऽ पकािशत रचना सभक कॉपीराइट लेखक/सृगहकरालोकिनक लगमे रहतिन्ह। सम्पादक 'िविदेह' पिम मैििली पािक ई पिका ऐ ई-पिकामे ई-पकािशत/ पिम पकािशत रचनाक िपट-िबे आकाइिक/ आकाइिक अनुिदक आ मूल आ अनूिदत आकाइिक ई-पकाशन/ िपट-पकाशनक अिवकार रखैत छिि। (The Editor, Videha holds the right for print-web archive/ right to translate those archives and/ or e-publish/ print-publish the original/ translated archive).

ऐ ई-पिकामे कोनो रॉयल्टीक/ पािरशिमकक पािान नै छै। ते रॉयल्टीक/ पािरशिमकक इच्छुक िविदेहसँ नै जुडिि, से आगह। रचनाक सृग रचनाकार अपन सृिविप्त पिरचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अृतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौिलक अि, आ पिहल पकाशनक हेतु िविदेह (पािक) ई पिकाके देल जा रहल अि। मेल पाप्त होयबाक बाद यिासृभि शीघ (सात िदनक भीतर) एकर पकाशनक अृकक सूचना देल जायत। एिह ई पिकाके मासक ०१ आ १५ ितििके ई पकािशत कएल जाइत अि। ISSN: 2229-547X

मूल्य : ाा र ४,५००/- संस्करण: २०२२

Videha Sadeha 34: A Collection (Vol.III) of Creative Maithili Writings in Prose and Verse e-published in Videha e-journal issues 1-350 at www.videha.co.in).

अनुक्रम

गद-ि ण (प. १-७०७)

गजेन्र ठाकुर- बेचन ठाकुरक नाटक (प. २-६)

डॉ. पेमशृकर क्सृह- मक्र पदक कि यािा, हास्यक्युग्म समाट पोफेसर हक्रमोहन झा, हक्रमोहन झाक रचनाक परिरी रचनाकमीपर पभाि (प. ७-५८)

कर्वि लेश कुमार झा- समय–सृकेत, “हम मैर्वि ल” (मैर्वि ली िमाक्सक) पर्वि काक लोकापब, “सृपकवेंक माक्सक बैसार (प. ५९-६२)

हेमचन्र झा- अगसोची, गोनू झाक पृचैती, साढ़े तीनो लाख, एना कुएक?, कुठा, मास्टर साहेब नक्क रहलाह (प. ६३-९१)

उमेश मृडल- सृस्कार गीत (प. ९२-१९२)

जगदीश पसाद मृडल- सृस्कार गीत/ लोक गीत नाद (प. १९३-२००)

पना झा- असामान्य के (प. २०१-२०९)

शीतल झा- नेपालमे मधेशीके समस्या आ सामािन! (प. २१०-२२४)

अवनाश कुमार कणश- नेपालक राज्य पुनसृबचना मे मवि ला आ मैवि ली (प. २२५-२३०)

रामभरोस कापवड भमर- एक्ह बेर सातम् अन्तराक्षि यि मैवि ली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत, जनकपुरमे मवि ला महोत्सि कि आयोजनः नि अध्यायक शुभारृभ (प. २३१-२४३)

श्यामसुन्दर शवश- जनकपुरके खवि - रेल सेि बन्द । नेपाल सरकार कानमे तेल तूर ि ऽ सूतल, शहीद ि षरामे सेहो 'मूह देवख मुगि ' (प. २४४-२४९)

राजदेि मण्डल- हमर टोल (उपन्यास) (प. २५०-३४२)

सुजीत कुमार झा- लघुकि - कडै, लघुकि - ि किैत आवाः फुटैत कनोजवर, हारैत हारैत नेपाल पि कार महासृघक केन्द्रीय अध्यि, नेपालमे मवि ला राज्य की सम्भि छैक?, सपि मे मैवि ली (प. ३४३-३७३)

कवष झा- मैवि लीक युगरष ा (प. ३७४-३७८)

आशीष चौि री- २ टा बीहक्न कि ा (प. ३७९-३७९)

नन्दिु कुमार झा- पचास िषिक भेल पादेक्षक समाचार एकाश- १९९३ मे पारृभ भेल छल मैवलिी मे समाचारक पसारर, सताक पाक्त बनल भाजपाक उदेश्य (प. ३८०-३८८)

सतीश चन्र झा- हमहूँ कहा बुझक्लयै (प. ३८९-३९३)

अनमोल झा- क्रलेशन, अवकिार, युगान्त, अवकिार, चेतना, भारतीय डाक, युद, टेकनोलजी, कोर बैक्रृग, अन्हरजाली, सुरविति (प. ३९४-४०४)

दुगानन्द मृडल- लघुकिा- डाक्टर कमवीर (प. ४०५-४१२)

दयाकान्त- समीकरर, फामुला, क्तरृगा (प. ४१३-४१६)

अमरेन्र यादि- क्रपोटव(प. ४१७-४२०)

मनोज झा मुक्त- देशक अिसिा आ जनताक पक्ति, महोर रीक मालपोतमे कमवारी मालामाल के करत कारिाही ?, क्रपोताज, चाद के टुकडा, इज्जक्तक खाक्तर (प. ४२१-४५३)

सुशात झा- अहा कोना रहै छी भौजी.... (प. ४५४-४५८)

कुसुम ठाकुर- पत्यातिबा (प. ४५९-५७२)

बेचन ठाकुर- बाप भेल वारी, अवकिार (प. ५७३-६६०)

ऋक्ष विशेष - पूत कमाल (प. ६६१-६६९)

देशि शुत्स- बनभोज, बुल्लुक टॉफी, नताशा (प. ६७०-७०७)

पद-खण्ड (प. ७०८-१४५५)

सतीश चन्द्र झा- चुनाि, भाषा आ राजनीक्त, भूखल पेट, पाच साल, सत्यक जीत, गरीबक सिगि्र निषि्र भाषा आ राजनीक्त, मैविल, कविता आ कक्या, पृखहीन कल्पना, बुिनी, सजन, कन्यादान, चानक पेम, क्सृगरहारक फूल, सोनाक क्पजरा (प. ७०९-७५७)

सुबोि कुमार ठाकुर- आशा, जुग बदक्ल गेल, सुन लागए गाम, अिूरा पेम आर चान, नेनाक पश, सनेश, हम नक्ह छी अक्भशाप, जीिन यािा, अओताह मन भानि (प. ७५८-७८०)

विनीत ठाकुर- जाढ़, निषि्र अएनाके की मोल, गीत १-२, अभ्यागत, उठू मैविल भेलै भोर (प. ७८१-७८७)

क्शापभा झा- लोकगीत सृकलन (प. ७८८-७९८)

क्हमाशु चौिरी- क्मयक्त, टप-टप नोर आ जीला, आतङ्कक राजकुमार, पािर, किा, की भार साठू, गीत (प. ७९९-८१०)

रपेश कुमार झा 'त्योि'- चाही हमरा क्मविला, जय क्हन्द! जय जय क्मविला!! (प. ८११-८१४)

अक्जत कुमार क्मश- अप्पन माक्ट, निषिव(प. ८१५-८१७)

दयाकान्त- हे मैथिल आबो जागु, ई बुथिया अछि हकल डइन, बाढ़ि, मा मिथिला ताकय सृतान (प. ८१८-८२५)

मिथिलेश कुमार झा- खबरदार, आजाद गजल (प. ८२६-८२७)

सन्तोष कुमार मिश्र- केकरा कर कल्लोल हो मिता (प. ८२८-८२९)

कालीकात झा "बूच"- मातृदिना, कपीश दिना, आउ हमर हे राम पाहिसी, गौरी रहिु कुमारी, गै खुशबू , दिना, हे तात, झूला, राथिकाक थिलाप, कर र गीत, िदिना, उदासी, परिचय पात, जागू माँ आदा, देखसल िथिना क अकस्तत, भैयाक थिआह, नावर सुनू , चैती दुगा, गीत, हमर गाम, नदुिगा, रामािताेर, डहकन, राघि सरकार, मािपर िन, बुढ़ारी मे घीढ़ारी, सावरक पि पाहुनक नाम, राम बिना अिपुरी, िशव शक्ति पूजन, थिरहनी, नचारी, गीत, गय नानी, हीरा-बेटी, सगित गान, मात गीत, सोन दाइ, हील हाइ-हाइ, मिथिला क बेटी, जेठी करेह, ऊँ नमः शिवाय, मन दीपक महरानी, सरसथिती दिना, भदैया होली, िकािसक अृत, मिथिलाक दुःदशा, माला, जागरर गान, तोहर ठोर, नचारी, सुनू आब मन जेहन लगैए, गहि जननी केर, भगथिती दिना, भौजीक अिहन, सपि सुन्दर, कचोट, शृगार ििरागय, अकाल, नोर, शािरी, गामे मोन पडैए, भगतालाभ, कसया सँ रामक परतर, गौरी बनल जोवाकया, काली र प िर बा, चल अबयौ पटना सँ गाम, पहुना, बेटी बनल पहाड, हमर कजनगी, मुना

कका सासुर चलला, नोतक पेमी, अप्पन कवि ला, अय काकी, सृशय, युग पवर्तिवा, सिन्तो-कारव्हनी, दीनक नेना, पतनी िहा, अन्हर माव्र, उदनाचायव़ काटरक पवरराम, कवि कोक्कल - विदापक्त, रौ घुरना, एक पर सँ एक, अजुकी दाइ, शी राम केटि सृदि, राि विरह, विरकत्त, कमौकतन भौजी, कन्यादान, पोताक अटहास (प. ८३०-९७२)

राजदेि मण्डल- [आह जानक झुडा झापल अवस्तत रहब अही सभक सृग नदीक माछ बाट-बटोही सीमा परक झूला चीडीक जाक्त बाव्ह़क व्यि- क्हलक बोल अव्हसक िर मनोिवछत चान परेमक अविकार मि्र गीत वसर कबहून िड हवियारक सभा घातक गृि कुहेसक परदा युग्मक फाग-पि आगमन जाक्त बदलैत बाट वमतकया जानरि बाउल परक माछ कािि परक मुरदा कझाइत दीया व्हत-अव्हत पयास ऑक्कसक भूत कठुआएल-र प सुनगैत क्जनगी अहाँक अगिनीमे महतिकािक गाम एकटा चुप्पी छडपटाइत लहाश र सल ियिा बसातक ि्वजनी अदश्य आवा- तीन कािक गपशप निकबहार मुँहझप्पा टूटल बन्हन अढ़ाइ हािक सावा कानैत अविकार आबद हम पुन: उठब एकबेर दरपनक वसिक्त कमलन बाि व्शष -अवशष िहैत महल अशुिर नाचैत भूत माय यत बघनखा रृगक खोज कृटकमय ननिीत लाज कमलन-कबछुडन पवरिरक गाछ विशृकु अनमोल क्जनगी मुक्तयाक व्जन्ता (बाल कविता) किंक गाछ (बाल कविता) नेहाइपर लेखनी झगडलगौना कमशाच गाछक बक्लदान हेराएल गाछक व्हस्सा लाल

ज्योत्स बीखक घैल पिरिर अन्हारक खेल नाचक स्वाद आँखक पतीिा] (प. ९७३-१०८७)

मनीष ठाकुर- विरिह गीत (प्. १०८८-१०८९)

कुसुम ठाकुर- चुल बुली कन्या बक्स गेलहुँ, अभिलाषा (प. १०९०-१०९१)

चन्द्रकान्त मिश्र- खावि साग-भात हगैि पडोर, जागु-जागु मैविल, पी-पी-पी दार पी (प. १०९२-१०९६)

रघुनािि मुखिया- दूिकि िािर, छाहक सुआद, मनुक्खक सूखौत, जमल शोकरित, कालचक, कोशीक आगमन, एक सालमे तेरह महीना, बिखाह चाड़ुर, ई नेना, आइ पहिल बेर , दादावारी, राजमहल (प. १०९७-१११६)

अशोक दरि- कविता- आहान, गीत नाटक-इहो बच्चे छै (लए), नौटङी नाटक-नइँ आब नइँ (लए) १-२, गीत, कविता, गीत १२, विशि गीत, कविता- अहुरिया, कविता- सङेत, विशि गीत, कविता-अभियान, गीत (प. १११७-११३७)

शीतल झा- मुक्तक, बोकरे सन, शाक्त!!!, सब केि उदास रहैअ!, हमर सृस्कारक गीत, कविि जी तबाह छवि (प. ११३८-११४४)

डॉ. शेफालिका मिा- हमर माय (प. ११४५-११४६)

िरेन्र पेमर्षब फेर आबि गेल नकिा साल (प. ११४७-११४८)

रामभरोस कापडि भमर- गीत १-२ (प. ११४९-११५०)

मनीष झा "बौआभाई"- ऋतुपक्त बसृत (प. ११५१-११५२)

मनोज कुमार मृडल- जाड़ पात रहैत छी हम (प. ११५३-११५४)

नीन कुमार "आशा"- अृतरकलह आ विचार, बैसल-बैसल सोची मनमे, हमरा भेटल, सुनू सुनाउ अपन खबरि, की लिखू तोरा लेल, नै बिसरलौ चारि साल, मस्ती कर यौ बौआ मस्ती कर , आि मोन करे कमाई, तोहर गोर गोर गाल ... ..., किया ने पाि तोहर टोन , अनाकिका, हमहूँ तँ छी इंसान, अनाि, एक दिन बाबु कहला हमरा, मा छिनमस्तिका, दफ्तर, कोना बिसर तोरा, करेजक प्यास, परी छी, माए बाबु .., आस, बाबा िमक रस्तामे कविता लिखाइत अिछ, राखह माता िपताक ध्यान, की लिखू, अविस्मररीय, कि जीिनक ई अिछ सत्य (प. ११५५-१२०३)

राम विलास साहु- कविता, गीत, हाइकू, शेनयूवआ टनका (रिक चका उलटि चलै बाट) [अप्पन गप महगाइ कोइली कुहकै आमक डारि पीतक गीत गृजन कमक फल पेमक बान्ह जीबैत चलू बिसरल

गीत जडैत दीप गामक नारी बनयासल िरती कनता-कनता मातभूिम कविलाक अिभनृदन ई की केलौ अहा केकरा सृग खेलब होरी गाए-माए खेलाहरक िजनगी जानक दीप दुखाएल गृगा बेगक बिरयाती बलानक बाढ़ पािनक बून हेराएल भगिान जीबए लेल चैताबर गीत चैती गीत पेमक भूखल मर आक मान अरमान भारत माता परदेशी मोनक बात की कहब िनरोपनी लफृगा बेरोजगारी र पैआक िरी भष ाचारी आएल िसिन्त अपान-पराया बाट बटोही हाटक चाउर बाटक पािन जान बॉटैत चलू पेम आिक पैसा कालक पहरा बनयासल मन दहेजक खेल घर परदेश गहुमक कटनी-दौनी िबआह की िक? आजुक िदन पुि कुपुि कतेक दुख काटब हम हे बारहो मास सडक बीच नाला आँिख रहैतो आन्हर भाग भरोसे फूल-पर ा भदबा बाबा बले फौदारी केकरा ले कानब पिरिा माइयक ममता परदेशक छाया पाहुन िरतीक सुख साओनक रािन लोभी भोम्हरा भोरक िर गरीबक मान माए हमर गाम घर अवालगी काली मैयाक गीत हमर िखखरल समाज कडै चुनमुनी माइक लाल के गरीब? नैनाक खेल कोइली कूहकै आमक डािर नीकदया बैरी भेल पहुना पागल पेमी कोसीमे समाएल िजनगी हाइकू/ शेनयू/ टनका] (प. १२०४-१३४५)

रामदेि पसाद मण्डल “झार दार”- अपन गप, पािनत, गीत, झार , महाझार (हमरा िनु जगत सुना छै) (प. १३४६-१४२३)

विस्मृत कवि- पू. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)- विविध भजनावली- १-४५ (प. १४२४-१४४३)

सूदेश- (प. १४४४-१४५५)

गद खण्ड

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत् - हनुमन्ता उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्

अक्खर (अक्षर) खम्भा

शब्दहुअन खेतक्षेत्र काव्य तसु शब्द क्षवल्लरी पसरेइ।
अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥

[कीर्तिलता पहिमा पल्लवा पञ्चल दोहा।]माने अक्षर रूपी स्तम्भ आमाण कए ओहिपर (काव्यरूपी) मंच जँ नहि बान्हल जाए तँ एहि त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लता (वल्लरी) पसारल कोना होयत।

गजेन्द्र ठाकुर

बेचन ठाकुरक नाटक

बेचनजी विगत पचीस बर्खसँ मैथिली नाटकक लेखन आ निर्देशनमे जुटल छथि। हुनकर एक दर्जन नाटक ग्रामीण सबहक मोन तँ मोहनहिये छल जे विदेहमे प्रकाशित छीनरदेवी आ बेटीक अपमान देश विदेशमे पसरल मैथिली भाषीक बीचमे कएकटा समीक्षात्मक बहस शुरू सेहो कऽ देने अछि। जखन मैलोरंग अपन सर्वेक्षण शुरू केलक जे मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ नाटक महेन्द्र मलंगियाक ओकर आंगनक बारहमासा वा बेचन ठाकुरक बेटीक अपमान आ आशीष अनचिन्हारक समीक्षापर बहस चलिये रहल छल तँ तारानन्द वियोगीक कनि आवेश गेल, ऐ सर्वेक्षणके रोकबाक आग्रह करैत- "हम तं चकित छी प्रकाश। की मैथिलीक एहन दुर्दिन आबि गेलै जे आब एना तुलना कएल जेतै? जकरा बलपर सौंसे भारतीय साहित्यमे मैथिलीक झंडा बुलन्द मानल जाइत रहल अछि, तकरा मादे हमर नवतुरिया सब एना बात करता? एतेक सतही आ विवेकहीन पीढी मिथिला पैदा केने छथि यौ? की पं० गोविन्द झाक ओ कनि सत्य होब'बला छै जे तीस-चालीस सालमे मैथिली मरि जाएत। (मैथिली माने मैथिली साहित्य।) एना नहि काज चलत। किछु करियौ बाबू।" मुदा प्रकाश बाबू कहलथिन्ह- "सर! किछु कारण अछि। सब नवतुरियाक विचार एक रंग नहि छैक। सभहक अपन अपन मन्तव्य छैक। मुदा अँग्रेजीमे एकटा कहाबत अछि। सरभाइवल ऑफ दी फिटेस्ट....। जे कियो जे किछु सोचैथि मुदा मैथिली आ नाटक लेल सोचैत छथि इहए हमरा लेल जीवन दायी अछि।" तारानन्द वियोगी फेर लिखलन्हि- "मिथिलाक प्रति जं प्रेम अछि, तं अपन विरासत के चिन्हनाइ आ ओहिपर गर्व करनाइ

सीखू। हरेक भाषामे किछु एहन रचना होइ छै जे 'क्लासिक्स' के कोटिमे अबै छै।। (से मैथिलियोमे छै) जखन आगुओ कोनो ओहि टकर के रचना आबि जाइ छै तं ओकरा सम्मान दैत पूर्वक क्लासिक्स के बराबरमे राखल जाइ छै। ऐ लेल विरासत के खोज करब जररी नै छै। मायानन्द मिश्रय' जे गजेन्द्र ठाकुर बडड विशेष कवि छथि, ते की अहा ई सर्वेक्षण कराएब पसन्द करब जे 'विदापति पैघ कवि की गजेन्द्र ठाकुर?' साहित्य के संस्कृतिमे आम तौरपर एना नहि कएल जाइ छै। मुदा 'खास' तौरपर जं करए चाही, तं ताहि सं ककरो के रोकि सकै छै। राजनीति के संस्कृतिमे तं से चलन छैके।" तइपर उमेश मंडल जवाब देलखिन्ह जे ई उदाहरण तखन सटीक होइतए जँ बेचन ठाकुर वा महेन्द्र मलंगियायाक तुलना ज्योतिरीशरसँ कएल जाइत।

ऐ विसकसनक शुरमे पकाशजीक विचार बेचनजीक नाटकक विरद छलन्हि आ से पुना स्पष्ट भेल जखन बेचन ठाकुरक "अधिकार" नाटक ऐ ग्रुपपाणीक संग पोस्ट कएल गेल तँ ओ ओकरा डिलीट कऽ देलन्हि। एना किए भेल? जखन पकाश झा महेन्द्र मलंगियायाक नाटक करबै छथि (मैथिलीमे विदेहक एलासँ पूर्व प्रूफरीडरके सम्पादक कहल जाइ छल आ नाटकमे जे किछुयो कोनो काज नै करथि कुसीपर पएर लटका क' बैसथि आ गप छाटथि तकरा नाटकक निर्देशक कहल जाइ छल) तँ 90 प्रतिशत दशकि मैथिल ब्राह्मण आ जखन संजय चौधरी मलंगियायेक नाटक करै छथि तँ 90 प्रतिशत दशकि कर्ण कायस्थ; आ दुनू गोटे मैथिलीक नामपर सरकारी संगठनसँ, जे टैक्सपेयरक पाइसँ चलै छै, पाइ ल' नाटक करै छथि, शहरो वएह दिल्ली किएे। ई समाज किए तोड़ल जा रहल अछि? आ दु जातिक

अछि आ वक्ता शेष मैथिली भाषी? मुदा तइले प्रयोगीजीक आह्वान प्रकाशके नै भेटै छन्हि! अकए!! आ प्रकाशजी बेचनजीक नामो बेचा ठाकुर लिखै छथि आ पाठकक ऐपर भेल विरोधक बावजूद सुधारि नै करै छथि से उच्चारण दोष, ओहिजै दोष अनायास भेल नै सायास भेल प्रमाद होइत अछि। प्रकाशजी उमेश मंडलके कहै छथि जे ओ हुनकासँ सम्पर्क बढ़ेबामे रुचि नै राखै छथि मात्र फोनपर गप छन्हि से हमहूँ 2008मे प्रकाशजीक पहिल बेर नाम सुनने रहियन्हि, अथिलागनक अभय दास नाम-नम्बर देने रहथि आ तहियासँ दू-तीन बेर 2-3 मिनटक फोनपर गप अछि आ 2-3 बेर ठाढ़े-ठाढ़े गप अछि, अंतिम बेर जखन उमेश मंडल जीक कहलापर जगदीश प्रसाद मण्डल जीक नाटक हुनका देने रहियन्हि आ ओ ओइ बदलामे मलंगियाजीक पोथी कूरियरसँ पठेबाक गप कहने रहथि। प्रयोगीजी आ प्रकाशजी अखनो धरि "मेथडोलोजी" सँ बाहर नै आबि सकल छथि आ साहित्यिक सम्वाद आ समालोचना सहबामे तत्काल अक्षम छथि। जँ जँ ओ लोकनि आर मेहनति करताह आ "मेथडोलोजी"सँ बाहर बहरेताह तँ तँ हुनका लोकनिमे समालोचना सहबाक क्षमता बढ़तन्हि।

टैक्सपेयर तँ सभ छथि, ओतए तँ जाति-भेद नै छै। मुदा "अधिकार" नाटक डिलीट नै कएल जा सकल, ई बचि गेल कारण ऐ नाटकक कएक टा बैकप कतेक संगणकपर उपलब्ध छल। से ऐ परिप्रेक्ष्यमे बेचन ठाकुर जीक तेसर नाटक "अधिकार" विदेहमे देल जा रहल अछि आ आशा करैत छी जे आशीष अनचिन्हार फेर ऐ नाटकक समीक्षा करताह आ सूतल लोक जेना आँखि मीड़ैत उठल अछि तहिना ई नाटक ग्रामीणक पढ़ने आ मैथिली नाटकक किछु ठेकेदार समीक्षक/ निर्देशक लोकनिक पछाति ध्यान तोड़त। संगहि जेना मजारपर वार्षिक उसहिोइ छै जतए लोक सालमे एक बेर चदरि चढ़ा आ अगरबती

जड़ा क' कतेक इच्छाशी माछ लैए, तहुना मैथिलीक नामपर खुजल कागजी संगठन सभक, जे बेसी (95 प्रतिशत) मैथिल ब्राह्मण सम्प्रदाय द्वारा टैक्सपेयरक पाइके लुटबा लेल फर्जी पतापर बनाएल गेल अछि, वाक्षक (बखर्मि ओना एके बेर तुरनकर सभक आन खुजै छथि) काजक समीक्षा होएबाक चाही। जखन हम संस्कृत वीर्िि नाटकक निर्देशन/ अभिनय करै छलौ तँ ओतए अभिनय केनिहार सभक आ सह-निर्देशक लोकनिक प्रतिभा आ मेहनति देखि हर्षित होइ छल; मुदा एतए प्रतिभाक दरिद्रता किएक? उतर अछि जे एक जातिके लेब आ तहूमे तै जातिके जकरा अभिनयसँ पारम्परिक रूपमे कोनो लेना देना नै छै, आ जकरा लेना-देना छै तकरा अहा बारने छी तँ की हएत? जखन हरखा पाटीमे खतबेजी रावणक अभिनय करै छलाह तँ से आ जखन ओ चन्द्रहास नाटकमे खलनायकक नै वरन चरित्र अभिनेताक अभिनय करै छलाह से, दुनूमे किछुयो नै कहि पबै छल जे कोन अभिनय बीस! बच्चामे गाममे आँखिसँ देखल अछि। संगहि जे एलीट गनाओल जाइत अछि, तैमे खतबे जी कतौ नै!! दसटा मैथिली निर्देशक छथि जे पटना, कलकता, दिल्ली, मुम्बइ, चेनइमे (सभटा मिथिलासँ बाहर) प्रवास करै छथि आ 200 लोकक सोझामे ऑडिटोरियममे नाटक करबै छथि आ कलाक न्यूनताक पूर्ति लाल-पीअर-हरियर लाइट-बती जड़ा क' करै छथि (किछु अपवादो छथि), की भरि मिथिलामे एतबे नाटक मैथिलीमे होइए आ की एतबे निर्देशक मैथिलीमे छथि? गाम-गाममे पसरल असली मैथिली नाटकक निर्देशकक सूची आ हुनका द्वारा बिना टैक्सपेयरक फण्डसँ खेलाएल गेल नाटकक अभिलेखनक काज विदेह टीम द्वारा चलि रहल अछि जकर विस्तृत सूची "सवे ऑफ मैथिली लिटरेचर वोल्यूम.2 मे देल जाएत।

सूचनाक अधिकार विषयपर आश्रित मैथिली नाटक- अधिकार इन्दिरा आवास योजनाक अपारदर्शिताके आर.टी.आइ.सँ देखार करैबला आ विकाशसँ झंझारपुरसँ दिल्ली जाइबला असली चरित मंजूरक कि अछि जे डिलीट नै कएल जा सकल मुदा ओकए डिलीट कएल जा रहल छल, जिनकर शिकायतके ऐ नाटकसँ खतरा छन्हि/ छलन्हि आ ओकए एकर विरोध एतेक तीवररूपमे भेल, से सभटा आब फर्जीवाड़ा भ' गेल अछि।

डॉ. पेमशंकर श्संह (१९४२-)
गाम+पोस्ट- जोश्ययारा, ि ना- जाले, श्जला- दरभंगा। 24 ऋचायन, रािरानी श्सन्हा रोड, भागलपुर-812001(श्बहार)। मैश्थलीक वश्रष सृजनशील, मननशील आऽ अध्ययनशील पश्राभाक िनी साश्हत्य-श्चन्तक, श्दशा-बोिक, समालोचक, नाटक ओ रंगमंचक श्रष्णात गवेषक,मैश्थली गदके नव-स्वरप देश्नहार, कुशल अनुवादक, पवीण सम्पादक, मैश्थली, श्हन्दी, संस्कृत साश्हत्यक पखर श्वदान् ति बाङ्ला एवं अंगेजी साश्हत्यक अध्ययन-अन्वेषणमे श्नरत पोफेसर डॉ. पेमशंकर श्संह (२० जनवरी १९४२)क श्वलक्ण लेखनीसँ एकपर एक अक्य कृश्त भेल अश्छ श्नःसृत। श्हनक बहुमूल्य गवेषणात्मक, मौश्लक, अनूश्दत आऽ सम्पाश्दत कृश्त रहल अश्छ अश्वरल चश्चित-अश्चित। ओऽ अदम्य उत्साह, िृि लगन आऽ संघषिकऽ तन्मयताक संग मैश्थलीक बहुमूल्य िरोश्रक अन्वेषण कऽ देलश्न पुस्तकाकार रप। श्हनक अन्वेषण पूणि गिन आऽ पबिकार आलेखाश्द व्यापक, श्चन्तन, मनन, मैश्थल संस्कृश्तक आऽ परम्पराक श्िक िरोहर। श्हनक सृजनशीलतासँ अनुपाश्णत भऽ चेतना सश्मश्त, पटना श्मश्थला श्वभूश्त सम्मान (ताम-पि) एवं श्मश्थला-दपिण,मुम्बई वश्रष लेखक सम्मानसँ कयलक अश्छ अलंकृत। सम्पश्त चाश्र दशक िश्र भागलपुर श्वशश्वदालयक पोफेसर एवं मैश्थली श्वभागाध्यक्क गश्रमापूणि पदसँ अवकाशोपरान्त अनवरत मैश्थली श्वभागाध्यक्क गश्रमापूणि पदसँ अवकाशोपरान्त अनवरत मैश्थली साश्हत्यक भण्डारके अश्भवश्धित करबाक श्दशामे संलग्न छश्थ,स्वतन्

सारस्वत-सानिमे।

कृति-

मौलिक मैथिली: १.मैथिली नाटक ओ रंगमंच,मैथिली अकादमी, पटना, १९७८ २.मैथिली नाटक परिचय, मैथिली अकादमी, पटना, १९८१ ३.पुरषार्थ ओ विदापति, ऋचा पकाशन, भागलपुर, १९८६ ४.मिथिलाक विभूति जीवन झा, मैथिली अकादमी, पटना, १९८७५.नाटयान्वाचय, शेखर पकाशन, पटना २००२ ६.आधुनिक मैथिली साहित्यमे हास्य-व्यंग्य, मैथिली अकादमी, पटना, २००४ ७.पपाथाका, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००५, ८.ईकथ्, ऋचा पकाशन भागलपुर २००८ ९.युगसंधिक पतिमान, ऋचा पकाशन, भागलपुर २००८ १०.चेतना समिति ओ नाटयमंच, चेतना समिति, पटना २००८

मौलिक हिन्दी: १.विदापति अनुशीलन और मूल्याकन, पथमखण्ड, बिहार हिन्दी गन्थ अकादमी, पटना १९७१ २.विदापति अनुशीलन और मूल्याकन, द्वितीय खण्ड, बिहार हिन्दी गन्थ अकादमी, पटना १९७२, ३.हिन्दी नाटक कोश, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली १९७६.

अनुवाद: हिन्दी एवं मैथिली- १.शीपादकृष्ण कोलटकर, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली १९८८, २.अरण्य फसिल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली २००१ ३.पागल दुनिया, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली २००१, ४.गोविन्ददास, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली २००७ ५.रक्तानल, ऋचा पकाशन, भागलपुर २००८.

लिप्यान्तरण-१. अडीयानाट, मनोज पकाशन, भागलपुर, १९६७।

सम्पादन-

गदवल्लरी, महेश पकाशन, भागलपुर, १९६६, २. नव एकाकी, महेश

पकाशन, भागलपुर, १९६७, ३.पि-पुष्प, महेश पकाशन, भागलपुर, १९७०, ४.पदलक्षाका,महेश पकाशन, भागलपुर, १९८७, ५. अनश्चल आखर, कणगोिषी, कोलकाता, २००० ६.मश्चाकण, कणगोिषी, कोलकाता २००३, ७.हुनकासँ भेट भेल छल,कणगोिषी, कोलकाता २००४, ८. मैथिली लोकगािक इश्चाहास, कणगोिषी, कोलकाता २००३, ९. भारतीक श्चलाश्च, कणगोिषी, कोलकाता २००३, १०.श्चाि-श्चश्चाि, कणगोिषी, कोलकाता २००३, ११. साश्चत्यकारक श्चन, श्चश्चिला सास्कृश्चाक पश्चषद, कोलकाता, २००७. १२. वुआश्चभश्चत्ततरश्चिणी, ऋचा पकाशन,भागलपुर २००८, १३.मैथिली लोकोश्चत्त कोश, भारतीय भाषा संसिान, मैसूर, २००८, १४.रपा सोना हीरा, कणगोिषी, कोलकाता, २००८।

पश्चिका सम्पादन- भूश्चजा २००२

<u>मश्चापदक किायाि</u>

स्वािीनता <u>संगा</u>म श्चकट <u>पत्यु</u>हक पशात् देश जखन स्वतंि भेल तखन भारतीय शासन <u>व्यवसि</u>ा भेला पर आि्श्चाक भारतीय भाषामे साश्चत्य <u>   </u> सृजनक एक पबल ज्वार आयल पश्चणाम भेलैक जे साश्चत्य <u>सश्च</u>तामे एक नव <u>स्पन्द</u>नक संचार भेलैक आ पत्येक सृजक अपन <u>अपन</u> साश्चत्यक श्चकासाि अभूत पूवगश्चाएँ साश्चत्य <u>सृज</u>न श्चस उन्मुख भेलाह ताि पत्येक श्चािमे अत्युच्च कोश्चक साश्चत्य <u>सृज</u>नक अभूतपूवि परम्परा उदूत भेल। एश्च श्चशामे मैथिली <u>साश्च</u>त्य पछु आयल नश्च

रहल; पत्युत आवा गआएँ साअत्य सृजनक परम्पराक शुभारम्भ भेलैक जकर पकाशनक शेय समकालीन पत्रिकाअके छैक जे नव नव पआभा सम्पन साअत्य सृजआहारके साअत्य सानिा अस उन्मुखक कए पोत्साअत करब पारम्भ कयलक। एकरे पआफल थिक जे स्वाीनताक पशात् मैथिली साअत्यक सवागीन अकास भेल तथा पत्येक अदाअमे नव रपे साअत्य सृजनक परम्पराक शी गणेश भेल। स्वाीनोतर कालमे मैथिली गदक अकासमे वैदेही (1950), अथिला दशनि (1953) तथा अथिला अअर (1960) अन्य पत्रिकाअक अपेका दीघजीवी भेल साअत्य सअताक पवहमान वेगवती िरामे अवरोि नअ होमय देलक।

मैथिली कि साअत्यके पोढ़, पाणवंत, समुनत आ समृदशाली बनयबाक अशामे पटनासँ पकाअत अथिला अअरक पुनपकािशन आशये मीलक पािर पमाअत भेल जे सहसाथिक किकारक एक वगि तैयार कयलक जआक कि एअ लबि पआष पत्रिकामे अनवरत पकाअत होइत रहल जकर शेय आ पेय छआ एकर अदत वरेण्य साअत्य अंतक आ सम्पादक सुिशु शेखर चौिरी (1920 1990)के जे पाचीन एवं अवाचीन किकारक अदुत समंवय कयलआ। एअ अषयके ध्यानमे राअ एकर पत्येक अंकमे कम सँ कम दुइ आ अथिक सँ अथिक चाअ किक समावेश कयलआ। एकर अआअक्त समसामआक पृष भूअमे अथिलाचलमे पचअत वत त्योहारक कि सेहो समय समयपर पकाअत होइत रहल। अथिला अअरक नव वषकि पवेशाक कि अंकक रपमे आयअत रपे बहराइत रहल जे एकर साकी थिक मैथिली कि साअत्य अपन पौढ़ताके पाप्त कयलक। कारण मैथिली कि साअत्यक सवाथिक सशक्त ओ सम्पन अि कि ओ कअता थिक। आशयता एअ किनक सत्यताक अपलाप

नहि कयल जा सकैत अछि। किंतु एहि अधिकाक संग संग इहो विचारणीय विषय थिक जे कोन एहन तत्व सभ विशेषतया कविकार लोकनिक मध्य काज कयलकनि जे अपनाके स्थापित करबाक हेतु कठिन साहित्य साधना कयलनि तथा निरंतर हुनक कविधारा प्रवाहित होइत रहलनि, कारण कवि गद साहित्यक विकास थिक थिक जकर प्रसार प मैथिली कविमे सर्वत दृष्टि गोचर होइत अछि।

उपयुक्ति पृष्ठभूमिक परिपेक्ष्यमे डा. वसन्तकिशोर वमा मधुपद (1918—1986) एक एहन प्रतिभा सम्पन्न कविकार उदूत भेलाह जे एहि विधामे अपन अक्षय कविकृतिक कारणे एक कीर्तिमान स्थापित कयलनि जे आशये मैथिली साहित्येतिहासमे एक अविस्मरणीय ऐतिहासिक घटना थिक। क्याहाटी आ क्यानबटीक दृष्टि सँ विश्लेषन कयल जाए तँ हुनक कविताक अनंत छनि। ओ जाहि विपुल परिमाणमे मैथिली कवि भण्डारके भरलनि जे अन्यान्य कविकार लोकनिक दारा सम्भव नहि भऽ सकल, किंतु एतय एक पश वाचक चिह्न अछि जे विपुल परिमाणमे कवि रचना कयलो पर ई साहित्येतिहासमे सर्वा उपेक्षिते रहि गेलाह।

मैथिलीक वरिष्ठ इतिहासकार डा. जयकात मिश्र (1922—2009) हुनक कविताक प्रसंगमे A History Of Maithili Literature (Sahitya Academy New Delhi 1976) तथा मैथिली साहित्यक इतिहास (साहित्य अकादेमी नई दिल्ली 1988)मे एको शब्द लिखब उचित नहि बुझलनि, ने जानि किएक? साधारण पाठक तँ इएह अनुमान करत जे ओ मधुपदक कविसँ सर्वा अनभिज्ञ वा अपरिचित छथि, वा जानकारीक अभाव छनि वा जानि बूझिक उपेक्षा कयलनि।

राधाकृष्ण चौधरी (1924-1984) A Survey Of Maithili Literature (शान्ति आवास, बमपास टाउन, देवघर, झारखण्ड, 1976) मैथिलीक विस्तृत चर्चा करैत हुनक दुइ कथाक विशेष उल्लेख कयलन्हि अछि, Manipadm's Purishaka Mula (Value Of Man) and Kona Elini (What brought you) (Page 247-248)।

चेतना समिति पटना द्वारा आयोजित भारती मण्डन व्याख्यान मालाक अंतर्गत डा. जयधारी सिंह (1929-2000) मैथिली कथाक विश्लेषण करबाक क्रममे कथाकार लोकनिक उपलब्धिक मूल्यांकन करबाक अपेक्षा कथा संग्रह सभक परिचय दऽ कए ओहिमे संग्रहीत कथाकारक जे परिचय देलन्हि जे वर्तमान परिपेक्ष्यमे अपार्सगिक प्रतीत होइत अछि। एहि क्रममे ओ परिपदक साहित्यकारक ध्वनि (संचयिता), शाशत ऑल इण्डिया रेडियो (अभिव्यञ्जना), पल्लवित (पल्लव) एवं दक्षिणा (मिथिला मिहिर) कथाक उल्लेख कयलन्हि (मैथिली साहित्यक रूपरेखा पृष्ठ 89-103)।

मैथिली साहित्यक इतिहास (भारती पुस्तक केन्द्र दरभंगा 1991)मे डा. दुर्गानाथ झा शीश (1929-2000) मैथिली गद्य साहित्यक विश्लेषणक अंतर्गत आधुनिक गल्प साहित्यक अंतर्गत नकटाक विकार (वैदेही), पटीदार (वैदेही), एवं संयोग (वैदेही) मात्र कथाक उल्लेख कयलन्हि आ हुनक कथाक प्रसंगमे एको शब्द लिखब उचित नहि बुझलन्हि (381-382)।

डा. दिनेश कुमार झा (1941-2002) मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, मैथिली अकादमी, पटना 1979)मे मैथिली कथाक प्रवृत्ति मूलक विश्लेषण करबाक क्रममे हुनक मात्र दुइ यथार्थवादी कथा शोकातक स्वाद (मिथिला मिहिर) एवं दक्षिणा (मिथिला

अक्षर)क उल्लेख कयलन्हि, किंतु हुनक कविताक वा प्रवृत्तिक कोनो विश्लेषण नहि कयलन्हि जे हास्यास्पद प्रतीत होइछ।
हाल चाल (1986)क मणिपद शताब्दी अंकमे मात्र पैंतीस कविक शीर्षक चर्चा कयल गेल अछि जे उपहासास्पद थिक।
साहित्य अकादेमी आ चेतना समिति पटनाक तत्वावधानमे मैथिली गद्यक विकास (1994) पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठीमे मोहन भारद्वाज (1943) मैथिली कविता गद्यपर अपन आलेख प्रस्तुत कयलन्हि, किंतु मणिपदक सदृश सशक्त गद्यकारक गद्यक प्रसंगमे ओ विचार करब अनावश्यक बुझलन्हि जखन कि हुनक गद्य अत्यंत सशक्त ओ प्राणवंत अछि जकर यथोचित अवबोध पाठकके हुनक कविक अनुशीलन नहिसँ प्राप्त होयतन्हि।
डा. दुर्गाघन प्रसाद (1961), मैथिली कविता कोश (1996)मे मणिपदक एक सय आठ कविताक शीर्षक वद्ध उल्लेख कयलन्हि जाहिमे सँ मुनरीक मोल (1964) कविता नहि; प्रत्युत एकाकी थिक जकरा हम अनचिन्हार आखर (कर्णगोष्ठी कोलकता 2000)मे संकलित कयल अछि। ओहिमे सँ तीन कविताके अप्रकाशित मानलन्हि अछि। (कविता कोश पृष्ठ-......), किंतु हमरा जनैत हुनक कविताके मर्मके आत्मसात करबाक दिशामे ओ सचेष्टता नहि देखौलन्हि ते एहन अशुद्ध विहार कयलन्हि। डा. प्रसाद बहुचर्चित, चर्चित तथा अचर्चित कविताक क्रम जे एहन निर्धारण कयलन्हि अछि ताहिसँ हम असहमत छी, कारण कोन आलोचक प्रत्येक कविकारक कृतिक दृष्टिक सीमित रहि जाइत छथि। किंतु जाहि समीक्षकके उपयुक्त अवसर भेटैत छन्हि तँ ओ समग्र कृतिक प्रत्येक पक्षसँ परिचित भऽ कए वास्तविक समीक्षा करबाक प्रयास करैत छथि।

अवलोकन (1995)मे डा. अरुण कुमार कर्ण (1961) मध्य सम्पादक कथा संसार शीर्षकसँ एक समालोचनात्मक आलेख अछि जाहिमे हुनक सम्पूर्ण कथाक कृतिक विश्लेषण नहि कऽ कए मात्र वैदेही ओ मिथिला मिहिरक जे कथा छल हुनका उपलब्ध भेलन्हि, ओहि आधार पर हुनक आलेख केन्द्रित अछि। डा. कर्ण सेहो मुनरीक मोल (1964)के कथा कहलन्हि जे नितांत भ्रामक आ अशुद्ध थिक।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्यमे आब आवश्यक भऽ जाइत अछि जे डा. व्रज किशोर वर्मा मणिपद्मक कतेक कथा कृति अद्यावधि मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे आ कथा संग्रहादिमे प्रकाशित अछि तकर यथास्थितिसँ जनमानस पाठक परिचित भऽ जाथि। मैथिली कथा द्वारपर मणिपद्म दस्तक देलन्हि बीसम शताब्दीक षष्ठ दशक आरम्भक कालमे, जाहिमे हुनक लेखकक एक स्वप्न (1950), जामवंत चारी (1952), प्रतीक हाक (1953), नकटाक शाकार (1954), पटीदार (1954), संयोग (1955), ओ स्वप्न आ ओहि स्वप्न (1957), दुनू छोर (1959), भटापरक पीपर (1960), ओइ लेखक दुआरे (1960), कण आ मन (1961), तऽरमे एके (1962) एवं विस विकट (1969) कुल तेरह कथा प्रकाशित अछि।

दरभंगासँ प्रकाशित मिथिला मिहिरमे हुनक इजोतदाइ (1951), जोगबा मिसर (1951) बाल गोविन्द (1953), सुमन महालन (1953) एवं राजकुमारी चैननक रोमास (1953) कुल पाच कथा पाठक सम्मुख आयल।

किंतु हुनक कथा यात्राक वास्तविक विकास भेल तखन, जखन पटनासँ ओकर पुनर्प्रकाशन पारंभ भेलैक जाहिमे सातिनाक मोह (1960), सफलताक छड़पान (1960), युधिष्ठिरक पती (1961), माइक संस्कृति (1961), हमर अष्टगह (1962), विसरल नहि जाइत छैक

(1962), मर िरा (1962), बश्चअक दुलार (1963), मुश्चत श्चवस (1965), ओ श्चश श्चदालय (1965), आकृश्चक ओश्च पार (1965), दश्चना (1966), उजरा बीछ (1967), लेखा जोखा (1968), शोश्चातक स्पाद (1968), करोश्चया मुँह (1969), खश्चडत सािना (1970), एकटा लौग माचि (1971), के? (1971), श्चंगुर टेल (1972), सरोकारी (1972), लवहश्च कुशहश्च (1973), दोस्ती (1973), तेसर पेत (1974), स्पगता (1975), एकटा खुटेसल बकरी (1976), सोनहुला कनतोड़ (1976), श्मशानसँ घुरलापर (1976), पश्चाशोि (1976), सपसागर आ सुन्दरी (1976), हीरो श्चरश्चट (1977), हुनका नश्च कहबश्च (1977), खोजक भेट (1978), चमचा (1978), एयर होस्टेज (1978), बस स्टैण्डपर (1979), चाहवाला छौड़ा (1979), जहीहा (1980), अदैत (1982), समाद (1982), कश्चपूश्च (1982), बसक बात (1983), एवं दानी दार (1984) कुल पचास पवासी मातृभाषानुरागी लोकश्चक सहयोगसँ बि भूश्चक महानगर कोलकातासँ पकाश्चत पश्चिकाश्चमे, श्चश्चिला दशनि (1953), कििले (1955), लुतुक (1955), पोखश्च खोर (1955), दुपश्चया राश्चक श्चाकार (1956), केशकरक इशारा (1957), बीसक ढ़ोलश्चकया (1958), पवासी एलाह (1960), मौनश्चयाि (1960), हाफे हाफ (1960), कोवाशलकि खोजमे (1964), अदला बदली (1973), एवं एकटा जरैल मोमबती (1977)

मैश्चिली पकाशमे एकटा फाश्चनल पोस्ट कार्ड (1976 77), आखरमे श्चंतामश्चत (1968) तिा मैश्चिली दशनिमे खंजरी लै कै (1976) एक एक किा पकाश्चात अश्च। िाया पूतामे श्चलाइक डायरी

(1960), अभावक्रिजनामे तीन शाशत ऑल इण्डिया (1960), ओइ राख्ना (1962), एवं बुझले छल, अभिमाणमे तीन रखबाक आ भभ्रया (1954), जौ लोक चढ़ैत होइ (1955) एवं रौग साइड (1955), पल्लवमे तीन घरमुँहा (1957), नीमाक तीन युग (1957) एवं पश्चादश्चदता (1958), अभ्यायानमे एक तुश्नका लऽ कऽ (1963), आहूआमे सश्वसवक सागर (1976), कि श्वदशामे एक एकपश्चया रेक्टर आ दोसर (1980) देस कोसमे अहैत (1981), माश्च पाश्चा आिश्चकीकरण (1984) ति स्माश्चका (िनबाद)मे एक हुनका खोजमे पकाश्चात अछ्छ।

मश्वपदक श्वकछु कि एहनो उपलब्ि होइत अछ्छ जे नवीन पुस्तक पकाशनोपलक्मे साश्चत्यकारक श्वन (1953) टटका गप्पमे ओ दुनू (1964), गल्प सुिमे श्रीमनल (1964), गल्प गुच्छमे नैका बश्वजारा (1979), मैश्विली लश्चत गदमे याि (1973) ति साश्चत्य सौरभमे महापाण सलहेस (1987), अतएव ओकर पकाशन श्वाश्वि पुस्तक पकाशन श्वाश्वि मानव उश्चत हैत। केवल ओ दुनू किक पशात् जा कऽ मैश्विली अकादमी पश्चिका (जनवरी श्वसम्बर 1985)क अंकमे पकाश्चात भेल।

मैश्विली पाचीन ओ अवाचीन पश्चिकाश्वक अनुसंिान कऽ कए हमरा दृश्चटएँ कुल एक सएसँ बेसी कि पकाश्चात अछ्छ। हमरा अनुसंिानक िममे चाश्च किक सूचना आर भेटल अछ्छ ओ श्विक वैदेहीमे एक जामवंत चाही (1952), श्वश्विला दशनिमे दू श्वाल औरो श्वऔ (1959) ति राि कृष्ण चौिरी दू किक पुरषक मोल एवं कोना अयलश्वक चचा कयल;अश्चा अछ्छ जे अनुसंिय श्विक। एहू सम्भावनाके नश्च अस्वीकारक जा सकैछ जे श्चनक आर किश्च श्वश्वान पश्चिकाश्वमे पकाश्चात हो जाश्च श्वस अदाश्च अश्वसंिाता लोकश्वक नजश्व नश्च

गेलथि अछि।

अद्वैत शीर्षकसँ सेहो मधुपद दुइ कविता रचना कयलनि जकर उल्लेख भेटैत अछि। एक देस कोस नवम्बर 1981 तथा दोसर मिथिला मिहिर 3 जनवरी 1982क अंकमे प्रकाशित अछि आ दुनू कविताक भाव भूमि सर्वथा पृथक पृथक अछि। किंतु कवि कोशकार मिथिला मिहिरमे प्रकाशित कविताके अनुसंधान एवं कविता मिथ्याकामे उद्वैत कहलनि अछि। ओ अपन सूक्ष्म दृष्टिक उपयोग करबामे अन्यमनस्कता देखौलनि अछि, कारण अद्वैत एवं उद्वैतमे हुनका कोनो अंतर नहि बुझना गेलनि। पाठकक एहि भ्रम दूर करबाक उद्देश्यसँ प्रस्तुत संग्रहमे हम दुनू कविताके समाविष्ट कयल अछि।

मधुपदक मसिजीवी साहित्यकार रहथि जनिक साहित्य साधनाक अविरल धारा सतत कल कल करैत साहित्य सरितामे प्रवाहित होइत रहलजे मैथिलीक विभिन्न पत्रिकाक अनुशीलनसँ स्पष्ट अछि। हुनक साहित्य साधना अबाधि गतिसँ प्रवाहित होइत रहलनि तथा ओ जीवनक अंतिम क्षण धरि साहित्य साधनामे तल्लीन रहलाह जकर साक्षी थिक हुनक अक्षय साहित्य भण्डार। मधुपद कविता साहित्यमे प्रवेश कयलनि वैदेहीक माध्यमे, किंतु विस्तार भेटलनि मिथिला मिहिरमे तथा कविता जगतमे चिन्हल गेलाह बाल गोविन्द (1953) कविता लऽ कए जे हिनका अविस्मरणीय कविकार बनादेलक। हुनक कविता प्रसिद्धिक व्यापकताक अनुमान तँ एहीसँ लगाओल जा सकैछ जे हुनक समसामयिक कोनो एहन पत्रिका नहि अछि जाहिमे हुनक कविता नहि प्रकाशित भेल हो।

मधुपद माने प्रवाह। मानवीय भावनाक प्रवाह। भाषण ओ लेखनमे प्रवाह। यथार्थताक नाम पर कलाक नाम पर ओ मानवीय भावनाके

िकुश्च देबाक पबल थरोिी रहथि। किि कहबाक थालमे केवल संदेश देआहार रहथि जे मानवीयताक हत्या नञ्ञ हो। समाजक हर व्यथक्त स्तर श्नक किश्मे गुंथ्मत होइत अश्छ चाहे ओ सामाथ्मक हो वा असामाथ्मक। सामाथ्मक यिाि माथ्मकि मूल्याकंन श्नक किि साश्त्यक वैथाष य अश्छ। उपन्यास एवं कथ्यता सदृश श्नक किश्मे भावुकताक पभुसता भेटैत अश्छ। एञ्ञ सभमे भोगल यिाि जीवनक थसंगश्, जश्लता, कुण्ठा संािस ताि यिाि जीवनक थथि आयामके ओ अथ्ावयक्त कयलश्। कथ्यताक समानञ्ञ ओ गदमे उपमा उपमानक झड़ी लगा देलश् अश्छ। आिुश्कताक पश्वेशमे पश्वश्ाति होइत सामाथ्मक पृषभूथ्क यिाििीक मूल्याकंन श्नक किक ममजिताक अश्छ। लोक पचश्त सहज संवेद, बोि गम्य, सरल, सुकुमार शब्दावली जे मैथिलीमे थलुप्त भेल जा रहल छल ओञ्ञ सभक दस्तावेज थिक श्नक किि जगत, जाञ्ञमे पचुर पश्माणमे ओ ओकर पयोग भेल अश्छ।

मश्पद किि ारामे एक सँ एक महत्पूणि श्लकोर अनलश् ताि जीवनक महत्पूणि सूक्श्माश् सूक्म िड़कन, शाशत एवं सम्पश्क समस्याक जीवंत थ्थि पस्तुत कयलश्। श्नक किि साश्त्यक वैथाष य थिक जे भाषा शैलीमे रोचकता, गम्भीर दृथ् कोणमे व्यापकता, िारावाश्कता भावुकता पभुसता, महत्पूणि उदेश्य हुनक किमे सवि उपलि होइत अश्छ। श्नक किमे पभावोत्पादकता, कल्पनाक पौढ़ता, पकृश् वणिनक सशीकता, किनक केिक थशालता, थशव्यापी अनुभूश्क उदाटन ताि पाकि अंता स्तलमे पवेश करबाक अदुत क्मता अश्छ। किि तत्के सुरश्क्त रखैत चश्िक सूक्मता, वातावरण ओ पश्थ्थिश्क थमाण कऽ कए उत्कषिश्ाि न श्नक किक माथ्मकिता अश्छ। श्नक किक दृथ् ओ दृथ् ओ दृथ् मे थानतासँ

भरल अछि। कविमे अद्यतनातन प्रवृत्तिक रचना आ रचनाकारक खबरि ओ रखैत छलाह चाहे ओ रवीन्द्रनाथ ठाकुर (1861–1941), की जार्ज बर्नार्ड शा (1856–1950) अथवा टी.एस.इलियट (1888–1964)। हिनक कविमे सामाजिक ओ वैयक्तिक दुनू पक्षक सम्यक रूपसँ अभिव्यक्ति भेल अछि। ओ कविमे देश एवं अंचलक समस्या पर अपन विचार निर्भीकताक संग प्रस्तुत कयलनि। मधुपक कवि–गद्यक सूक्ष्म रूपे विश्लेषण कयल जाय तँ कतिपय आलोचनात्मक कृतिक सम्भावना दृष्टिगत भऽ रहल अछि। मैथिली कवि साहित्यपर पर्याप्त मात्रामे आलोचनात्मक कृतिक अद्यावधि अभावे अछि।

मधुपक विशाल कविताक प्रतिष्ठा अछि। ई जाहि परिमाण अपने कविता लिखलनि ओहि परिमाणमे अद्यावधि मैथिलीमे कोनो कविकार कविता रचना नहि कऽ पौलनि। हिनक सम्पूर्ण कविताके एकहि संग प्रकाशित करब दुःसाध्य ओ असम्भव थिक, कारण समग्र कवि एक विशाल ग्रन्थक आकार लऽ लेत जकर सम्भावना मैथिलीमे नहि दृष्टिगत होइत अछि जे कियो प्रकाशक एहन विशाल काव्य कविता संग्रह प्रकाशित कऽ पौताह। मैथिलीक हेतु दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति अछि जे हुनक जीवनकालमे कोनो कविता संग्रह नहि प्रकाशित भऽ सकल। एहन साहित्य मनीषीक साहित्य साधनाक एहिसँ पैघ पुरस्कार आन किछु नहि भऽ सकैछ जनिक स्मृति पटल पर मधुपक साहित्य अद्यावधि आच्छादित कयने अछि। पुस्तकाकार रूपमे हुनक कवि–कृतिक प्रकाशनो परात हुनक कविता जनित प्रतिभाक वास्तविकताक याथार्थिक मूल्यांकनक सम्भावना अछि।

हास्यव्यंग्य समाट पोफेसर हथ्रमोहन झा

आ ि थ्रक जीवन थ्राश्चये थ्रथ्रान्न पकारक थ्रसंगथ्र एवं थ्रषमता दारा खंथ्रत भेल जा रहल अथ्र। एहन थ्र ि थ्रमे अथ्रावयथ्रतमे थ्राक्तता आयब अस्वाभाथ्रक नथ्र। गंभीर र पे आहत भेल मनुष्य जखन बाजत तखन ओ व्यंग्ये बाजत, जखन ओ थ्रकछु करत तखन पहारे करत। इऐह कारण अथ्र जे जखन रचनाकार आन्तथ्रक एवं बाह र पे अपनाके आहत अनुभव करैत छथ्र तखनओ व्यंग्यकार बथ्र जाइत छथ्र। व्यंग्यकारक उत रदाथ्रत्व भ' जाइत छथ्र जे समसामथ्रक युगक समस्त थ्रसंगथ्रक आलोचना पस्तुत करथ्र। वस्तुत: व्यंग्य एक एहन साथ्रथ्रयक अथ्रावयथ्रत अथ्र जाथ्रमे व्यथ्रत त ि समाजक दुबलिता, करनी-क नीक अन्तरक समीक्ष वा थ्रान्दाके वथ्रभथ्रमा दए वाणति: स्पष्ट शब्दक मा ि्यमे पहार कयल जाइत अथ्र। व्यंग्य णति: अगंभीर रथ्रतहुँ गंभीर भ' सकैछ, थ्रादथ्र रथ्रतहुँ दयालु भ' सकैछ, पहारात्मक होइतहुँ तटस् ि लाथ्र सकैछ, मखौल लथ्रातहुँ वौथ्रक भ' सकैछ, अथ्राश-योथ्रत एवं अथ्रारंजनाक आभास देवाक बदला पूणति: सत्य भ' सकैछ। व्यंग्यमे आ िमणक मुरा तँ अथ्रावाय अथ्र। पाय व्यग्यके उपहास, उपालभ्म, पथ्रहास, पहसन, वाकू-वैदग् ि्य एवं वथ्रथ्रत आथ्रसँ पृ ि क' देखबाक पचलन नथ्र अथ्र, थ्रकन्तु हास्य एवं व्यंग्यम थ्रकछु थ्रपनता अथ्र। हास्य थ्राप्पयोजन मुक्त एवं बाह ि रातलक वस्तु होइछ ते ओ थ्रथ्राष्ट नथ्र भ'सकैछ, परन्तु व्यंग्म कथ्रयो थ्राप्पयोजन नथ्र होइछ। व्यंग्यक पयोजन वस्तुत: गुढ़ एवं माथ्राथ्र अथ्र।

हास्य मनके सतेज एवं पाणके सजीव करैत अथ्र। पाकृत-हास्य मानव स्वभावक उज्जवल गुण ि ीक। एथ्रमे घृणा वा थ्ररथ्रतक लेशो

नञ्च रहैत छैक। श्वादान्त, व्यवहार, िरणा एवं वस्तु स्वरपक बीचक असंगश्च हमरा हँसवाक हेतु बाि्य करैछ। पाकृत-हास्य कटुताक बोि नञ्च करबैत अछ्छ, पत्सुत असीम सामान्यता एवं असंगश्च वा अन्तश्चरोि 'हास्य-कर' होइछ। गंभीर स्तर पर तँ ओ दु:ख, पीड़ा, वेदना उत्पन्न करैछ।

पाकृत-हास्यमे एञ्च हेतु एक पकारक वृहत् अनुभश्चाक आशा रहैत अछ्छ आ सामान्य अनश्चाजता वा उपलश्चि सेहो। उच्चतम हास्यसँ कोमलता एवं करणाचाक अभद संबंि रहैत अछ्छ। हास्यसँ हमर अश्चापाय ओञ्च पत्येक मन: श्वि श्चासँ अछ्छ जकरा हास्य व्यंग्य, हँसी-ठटा कौतुक, श्चनोद-रश्चकता आश्च शब्दसे साञ्चत्यमे व्यक्त कयल जाइत अछ्छ। अंगैजीमे ह युमर शब्दमे आअँरँश्च, रौटाइअँ, फन, जोक्स, प्लेजश्चार जेस्ट, श्चट, फारस, पैरश्च, श्चड्-इक्यूल, आश्च दारा व्यक्त सम्पूणि मन:

श्वि श्च कोनो ने कोनो रपसँ श्चश्चात अछ्छ। अतएब अंगेजीकहू युमर िरणसँ अवाचीन साञ्चत्य अत्यश्चिक पभाश्चत अछ्छ।

रसमयी रचनाक श्चादहस्त पणि हास्यरसावतार पोफेसर हश्चमोहन झा आि्श्चक मैश्चिली कयलश्च अपन अश्चतीय पश्चाभाक पश्चचय देलश्च अछ्छ। एकरे फलस्वरप ओ एतेक लोकश्चयता अश्चति कयलश्च। एञ्चसँ श्चद भ' गेल अछ्छ जे श्चश्चिलाक पावन भूश्च एञ्च केतमे श्चदापश्चाक जन्म द' सकैछ। ञ्चनक उपलबि् रचनामे गदक पिानिता अछ्छ ञ्चक पदृश्च किा-साञ्चत्य श्चस श्चशेष रहल। ञ्चनक पूवश्चती किाकार किामे गदक उत्पन्न क' अन्तमे पातक हत्या क' दैत छलाह। अवसाद एवं श्चाराशाक वातावरणसँ संपूणि मैश्चिली किा साञ्चत्य श्चाश्चराच्छन्न भ' रहल छल। मैश्चिली साञ्चत्यमे ई शेय पो.

हरिमोहन झाके छन्हि जे सर्वप्रथिम एहि प्रवृत्तिके अपनौलन्हि आ एहिसँ प्रकि भ'हास्य-व्यंग्यक नव प्रवृत्तिक अवलम्बन कयलन्हि। मैथिलीक पाठकके अवसादमय वातावरणसँ फराक क' हास्य व्यंग्यक एक नवीन मार्गक रचना प्रदान कयलन्हि। मैथिलीमे हिनक हास्य-व्यंग्यसं युक्त रचनाम कन्यादान, द्विरागमत, प्रणम्य देवता, रंगशाला, खटर ककाक तरंग, चर्चरी, एवं एकादशी, पुस्तकाकार प्रकाशित अछि। एहिसँ अतिरिक्तो किछु कथि ति स्फुट कविता समय-समय पर पत्रिकामे यत-तत प्रकाशित अछि जाहिमे हास्य-व्यंग्यक अजस्र धारा बहाओल गेल अछि। जीवनक प्रत्यक्ष देखल अनुभवगम्य रूपके हास्य-व्यंग्यक माध्यमे प्रस्तुत करब हिनक वैशिष्टय अछि। समकालीन मैथिल समाजक कुरीतिपूर्ण एवं सामाजिक विकृति पर कुठाराघात करैत-करैत ई अधिकारजनाक आशय सेहो लेलन्हि अछि। जीबनमे अतिवरोध, असंगति, कुप्रवृत्ति, मूर्खतापूर्ण संघर्ष बाबा वाक्य प्रमाणमूक हठधर्मिता, दम्भ, पाखण्ड, ढोंग, मिथ्या बड़प्पन, स्वार्थपरता आदि हिनक हास्य-व्यंग्यक प्रमुख आलम्बन रहल अछि। हिनक रचनामे आचार, अनुष्ठान एवं धार्मिक वाह्याडम्बरक प्रति तीवर आक्रोश भेटैत अछि। ई अपन रचनामे मानव मनक मोद, मोह, शोक, वेदनाके एक मनोवैज्ञानिक जका प्रयविक्ष्ण कयलन्हि अछि। वस्तुत: ग्राम्य परिवेशक यथार्थ अवतारणामे ई सिद्धहस्त छथि।

'कन्यादान' एवं 'द्विरागमन' हिनक बहुचर्चित उपन्यास थिक। मैथिली उपन्यासमे'कन्यादान' क विशेष महत्व अछि। एहिमे अनमेल विवाहक समस्याके उठाओल गेल अछि। पति-पत्नीक ई बेमेल ओकर अवस्था वा रूपक कारणे नहि, प्रत्युत शिक्षा दीक्षाके ल' कय अछि। एक एम.ए. पास युवकक विवाह ए.बी.सी. पर्यन्ति नहि जनैत्हार कन्यायाक संग होइत छैक। एहि प्रकारक विवाहके उपन्यासकार नाटक काहेकद

भत्सिना करैत छथि। अतएव स्त्री-शिक्षाक 'कन्यादान' क पमुख स्वर थिक। एतय उपन्यासकार मैथिल समाजमे पचलित वैवाहिक विषमताके अपन हास्य पृष्ठभूमि बनौलनि।
एकर नायक सी.बी. मिश्र अत्याधुनिक पाश्चात्य सभ्यताक पतीक थिकाह जे गामीण परिवेशसँ अनभिज्ञ रहलाक कारणे अपन मातृभाषा पयन्तिसँ अपरिचित भ' जाइत छथि। नायिका बुच्ची दाइ पाचीन मैथिल संस्कृतिक पतीक थिकीह जनिका पर पाश्चात्य सभ्यताक कोनो छाप नहि छनि। नायक-नायिका संबंधिमिय परिस्थितिक चित्रण कय उपन्यासकार हास्य-व्यंग्यसे ओत-पोत वातावरणक निर्माण पाठकक हेतु कयलनि अछि। कन्यादानक अवसर पर जखन नायकस नाम पुछल जाइत छनि तखन ओ उतर दैंत छथि–'हमर नाम छय सी. सी. मिशा।'1 एहन उतर सुनि मिथिलाक अशिक्षित महिलावृन्दक अटहाससँ सम्पूर्ण वातावरण गुंजित भ' जाइत अछि। एहि पर एक तरुणी जे अपनाके सबसे कुशियारि बुझैत छथि ओ छथि ओ टिप्पणी करैत छथिन–'नखन तँ बोतल मिसर छैंनक बापे होइथिन।दद
वस्तुत: एहि पकारक कतिपयकनि उपन्यासमे अनेक स्थल पर आयल अछि, जतय उपन्यासकार हास्य-रससँ युक्त वातावरणक निर्माण करबामे सफल भेलाह भेलाह अछि, ओतहि अशिक्षित मैथिलानी पर व्यंग्य सेहो कयलनि अछि।
एकर किछु चरितकँ व्यग्यंकार एहि पकारे पस्तुत कयलनि अछि जे पाठक पर अपन अमिट छाप छोड़ैत छथि। 'कन्यादान' क घटकराज टुन्नी झाक स्वरूप, बजबाक शैली एवं उच्चारण पद्धतियासँ लोक चीन्हि जाइत अछि जे घटकैती करबामे पूर्ण अनुभवी भ' गेला पर कि तीन पकारे व्यक्त करैत छथि ''एकटा खनखनौआ जाहिमे

कन्यागत खनखनाके टाका हँसोथि लैत छथि। दोसर माथ्ा श्वाय टनटनौआ जाथ्मे बर पक टनटनाक' हजार पाच शैक तोरा गनबैत छथि। तेसर माथ्ा श्वाय ठनठनौआ जाथ्मे वर कन्यागत दुह ठनठन गोपाल भए काज करैत छथि। थ्नक खनखनौआ, टन-टनौआ, ठनठनौआ बलाघटकैतीक वृतान्त सुथ्तथ् पाठक हँसैत-हँसैत लोट-पोट भ' जाइत अछि। घटक-राज अपन वाक्-पटुतासे सेहो मनोरंजन करैत छथि। घटकराजके घटकैतीक पथ्ा ई वैजाथ्ाक दृष्ट कोण देखाय उपन्यासकार हनका अपूर्वकिमता पदान कयलथ्ा अछि। जनैत एथ्सै सफल चथ्ख कन्या-दानमे आर कोनो नथ् अछि तकर कारण जे टुन्नी झा जका अपन पक्क पथ्ापादन बुते नथ् भेलथ्ा। ओ सामाजथ्क दोप थ्ालक-पिक स्तम्भ स्वरप थ्िकाह। एकरे फलस्वरप मैथ्िल समाज थ्न पथ्ाथ्न जजेथ्त भैल जा रहल अछि। 'कन्यादान' एवं थ्रागमन अथ्स्मरणीय चथ्ख झारखण्डीनाकि थ्िया-कलाप, बाजब-भुकब, चलब-थ्रब, खायब-पीयब सभमे हल्लुक हास्य भेटैत अछि। झारखण्डीके वास्तवसे एतबा जान नथ् छथ्ा जे लाल काकीक तारक थ्पयमे ककरो आगूमे चचा नथ् करबाक पथ्ाजा क' एकर पालन करी। डाक्टरक संग हुनक किपकनिक एक अंश िवणीय अछि ''हमरा आङनमे कथ्जयत बूथ् पाता है। रामजीक परतापसँ कथ्यो-कथ्यो पेटो फूथ् जाता है और लोक बेद नीके रहता है।'' जतेक बेर'कन्यादान' पाठक दारा बयम पुछला पर हुनक उत्तर तँ सुनू–'' सरकार ! हमरा लोक सभ दुलारसँ 'खटर' कहता है, लेथ्न असल नाम झारखण्डी माय-बाप राथ् थ्या। और उथ्रमे सरकार सब भाईसँ छोट है।'' 'थ्रागमन' मे झारखण्डीनाि लाल ककाक ओतय बुच्ची दाइक थ्ाथ्का मेम साहेबक स्वागत करबाक हेतु पस्तुत होइत छथि। मेम साहेब हुनकासँ थ्जासा करैत

छथि न–'' बाि एिह ठामसँ बहुत दूर है। कोस छबेक-सातेकसँ कम नहि पड़ेगा। बाि (गाम) मे आपका के रहता है ?'6 बहवाि उतर ताि अपिरिचत भाषाक नकलसँ एिह ठाम हँसी लगैत अिछ। उपन्यासकार हास्य उत्पन्न करबाक हेतु कितपय चिरत के अवलम्ब बनौलिन्ह अिछ। पुरोिहत, जिनका लेल शुद उच्चारण करब गुण नहि, पत्युत आवश्यक छिन्ह ; तोतराइत छथि। एहन पुरोिहतक पसंगमे उपन्यासकार कहैत छथि–'' पंिडत नवोनाि झा तोताराइत-तोतराइत कंठर पी बोरासँ उभड़-खाभड़ मंतक रोड़ा गड़गड़ा कए उिझलय लगलाह।''; मोहिसर जे िलखाइ-पढ़ाइ करैत-करैत बूढ़ भ' गेल छथि, िकन्तु तारक 'क' अकर पढ़बाक पिरशममे पिरशममे असफल भ' जाइत छथि। बड़का गामवाली एवं बटुक जी पाचीन परंपरागत र.िढक झुंडमे रिहतहुं शुद ओिह पक्क पकपाती नहि छथि। िहनका सभक चिरमि साािरण बुिद उपन्यासक अन्य पाि क अपेके अिधक माािमे छिन्ह। बटुक जी मूखिरिहतहुँ अदूिरत बुिदक छथि। िहनक वातालय पाठकक मनोरंजन करैत अिछ। एिह दृिष्ट सँ सी. सी. िमशक पसंग िहनक क्ि य िवलेक्ण अिछ –'' हमरा लेखे त कुछ न छि। 'शंशकीिरत' मे हमरा साि न बोल सकँ छि। एगी कनी गो 'जोिगाश'के बाम पूछ देिलएन ताहीमे ढोकार हो गेलन। शीशूबोि के एगो इशलोक पूछिलऐन त चूड़ा अमौट दुन्नू खसे लगलैन। कुछ न छि। मङनीमे महग छि'' गामीण पिरवेशमे रिहतहुँ बड़का गामबाली पाश्चात्य सभ्यताक पतीक िधकीह जे सी. सी. िमशके अपन हाि क कठपुतरी बना लैत छथि। िहनकेमे सी. सी. िमश अपन भावी पत्नीक म्ि र कल्पना करय लगैत छथि जकर वास्तिवकताक रहस्योदघाटन चतुि ीक रािि भ'जाइत अिछ। उपयुिक्त

नञ्चि उपन्यासमे ‘कौश्चक वातावरण उत्पन्न करबामे सहायक भेल अछि। भेल अछि। एहन-एहन पाकि वृतान्त पढ़ि क’ हँसी तँ लगबे करैछ, संगहि इही अनुभव होइछ जे समाजक पत्येक अंगमे सुरिक पयोजन अछि।

‘पणम्य-देवता काटाक-पूर्णा रेखा-श्चि अछि जे पनित: सामाश्चक आलोचना पस्तुत करैत अछि। एहिमे ओ पाचीन कि-पदश्चाके गहण क’ गंभीर सँ-गंभीर श्चषयके सरस-सुस्वादु बना क’ जनमन-रंजनक संग र.श्च-गस्त जीर्ण-शीर्ण श्चचारिरा परआित कय नवीन पगश्चाक पेरणा दैत छथि। श्चनका ने तँ पाचीन अन्-श्चश्वासक पश्चा आष्ठा छश्चा आने नवीनताक पश्चा आसश्चत। एहिमे हास्य-व्यंग्यक सबसँ उपयुक्त स्लि तखन अवैत अछि जखन ओ भोजन अविा मिाचरणक पसंगके ल’ कय कािक पुश्चभूश्चा बनबैत छथि। जेना ‘श्चकट-पाहुन’ क श्चाणिमे भोजन-श्चयता एवं अव्यवहार-कुशलताक कारणे श्चनका सभके दोसराक असौकयक्रि कोनो ियान नश्च रहैत छश्चा। पाहुनलोकश्चा अपन पश्चचय पोफेसर साहेवक लग कोना दैत छथि से देखू–‘‘हे-हे-हे-हे अपने जे श्चकने से हमरा श्चान्हने हैब1 चीन्हब कोना ? कश्चयो देखने रही तखन ने ! हम अपनेक मश्चायौतक जे श्चकने से-साढ़ू क श्चश्चआौत भाय होयबैन्ह।’’ एश्च पकारक पश्चचये वास्तवमे हास्यास्पद भ’ जाइत अछि। अधपक्क कटहर, एक हत्ति पाकल केरा, एक बोतल िति, माल्टेड श्चल्क, एक पसेरी दालमोट एवं एक िश्चका अमोटसँ गजेन्रर नाि, बजेन्र नाि, भीमेन्र नाि एवं श्चसम्बर नाकि पनश्चआइ होइत छश्चा। आब भोजनक सूची श्चस दृकूपात कर– ‘‘श्चकन्तु हमर सरबेटा श्चगम्बर नाि–हे-हे-हे श्चनु सोजने भात कोना खैताह ? श्चनका लेल छनुआ सोहारी, अनोन तरकारी बना देबँन्ह। मिरिक संग खा लेताह। हमरालोकश्चा तँ- हे-

हे-हे-हे रि धिक। भोजनमे जे कने से भात, दाि, तरकारी, ित, दही, चीनी, सब, आर की। हमरा संगमे एकटा जमीरी नेबो अछ से दूध भेल जाइत अछ। ते िड़ँ क मोछो मंगा लेब।'' मैथिलक भोजनयताक एलबम एहमे भेट जाइत अछ जे हास्य उत्पन्न करबामे सहायक सद होइछ।

'पणम्य-देवता' मे िकि आचरणक उल्लेख 'मिशीस्िचायि एवं 'ज्योषाचायि मे शेष रपे भेल अछ। मिशीस्िचायि महामहोपाियाय िरन्रि शास्िी अपन िकि एवं आडम्बर ततेक ने पसारैत छथि जे पने ओ गामक लोक पर हँसैत छलाह; कन्तु बाह ाडम्बरक रोि भेला पर आब हुनके पर संपूणि गाम हँसय लगैत अछ।'ज्योपाचायि 'क अन्तगति ज्योप जत आडम्बर पर व्यंग्य कयल गेल अछ। एह दोपपूणि कारणे आस्यनाि एवं मातणि्डनाि क बीच टीका-टकोअ सेहो भ' जाइत छ।

एहमे सामाक समस्याक अक्त पावाक समस्या पर सेहो व्यंग्य कयल गेल अछ। 'साझी आशम' मे जे ि पस्तुत कयल गेल अछ ओह आिर पर पवार सुख-सानिक बदला दु:खक अपार सागर ब गेल अछ। वस्तुत: साझी आशयक जे दुदशिा होइत छैक तकर एलबम भगीरि झाक पवारमे भेटैत अछ।11

व्यगयकार अत्यािक युगमे फैशनक बढ़ैत स्वरप पर दृगम करैत छथि तँ हुनक लेखनी अत्यधिक पखर भ' जाइत छ। एह, पकारक फैशनक अत्यधिक पभाव समकालीन नवयुवक समुदाय पर पड़ल अछ। अत्यधिक बनने दुघटिना भ' जैबाक संभावना रहैत छैक। आइ कालहुक अप-टुडेट लेडी' क पतीक थिकीहु 'मंजुला देवी।''12'नकली लेडी' कोना सहज गमा जाइत छथि से 'पणम्य

देवता' क 'अंगरेजिया बाबू'क पत्नी 'चमेली दाइ छथि।13 हुनक नकली स्वरूप तँ देखू–'' हे भगवान ! ई की !शीमती जी सबटा चौपट कैलैन्हि। नाक पर 'स्नो' लागल। कनपटटी पर 'पाउडर'पोतल ! गाल पर 'लिपस्टिक' ढेउरल ! ठोर पर 'नेल पालिश लेभरल ! हाय ! हाय !बहुरूपियाक वेश बना लेलन्हि ।'' जे 'हिन्दुस्तानी साहेब' अंगेजक 'प्रियतम सम्बन्धी बनय चाहैत छथि तनिक झलक मणिकान्त चारिमे भेटैत अछि।

'रंगशाला' क पत्येक कथा ओना तँ हास्य-व्यंग्सँ ओत-पोत अछि, किन्तु एकरा हिनक अन्यान्य रचना सदृश लोकप्रियता नहि भेटलैक। एहि पसंगमे ओ लिखैत छथि–''ई तेहन मनोनुकूल नहि भेल आ ततबा लोकप्रियो नहि भ' सकल। तथापि एकरा दारा एक ढरा कायम भ' गेलँक और गोटा नव-नव पर कथा-कहानी लिखय लगलाह।''15एकर पत्येक कथा एक वर्ग विशेषक पतिनिधित्व करैछ। हास्य-व्यंगक माध्यमे कथाकार सामाजिक दुनीतिसँ समाजके पथक करबाक पयास कयलनि अछि। पाठक चयनमे कथाकारके बीआय नहि पड़लनि कथाकार स्वयं एहि तथ्यके स्वीकार करैत छथि–'' हँसि, हँसि कऽ आनन्द कियेक ने लेल जाय ? कथाके विनोद सही, रसक छिटका तँ भेटत। कोन ठेकान, कदाचित एतबे मार्थ सत्य होइक।''16

हास्य व्यंग्यक अत्यन्त सजीव 'खटर तरंग' मे उपलब्ध होइछ। एकर कथा नायक खटर कका पूर्णतः विनोदी पकृतिक व्यक्ति छथि। हिनक पत्येक बात विनोदपूर्ण होइत छनि। ई अपन पत्युत्पन्नमतित्वक कारणे सहिखन काव्य-शास्त्र:विनोदक धारा पवाहित करैत् छथि। हिनक विनोदपूर्ण वातामे व्यंगयकार व्यक्ति, समाज धर्म, दर्शन आदिक कटू आलोचना करैत छथि। जिकरे जकरा 'राउण्ड एबाउट पेपर्स' कहलनि तकरा व्यंग्यकार खटर ककाक

समक परम्पर-के केन्र थ्रन्दु बनबैत छथ्रि। ओकर चार भाग नवीन थ्रचार-िरा पस्तुत करैत छथ्रि। आिुथ्रनक पथ्रपेक्ष्यमे पाचीन मान्यता कोनो अि निथ्रह रखैत अथ्रछ। ‘खटर ककाक तरंग’ मे वथ्रणात थ्रषय थ्रचारात्मक, सरस एवं मनोरंजक अथ्रछ। थ्रनक वात लुती सन होइत छथ्रन। ई देशक मूखताक शेय पंथ्रडतके दैत छथ्रि। एथ्रह कमये ई असली एवं नकली पंथ्रडतक सम्पक् थ्रश्लेषण कयलथ्रन अथ्रछ–‘’ असली पंथ्रडत थ्रदाक अन्वेषणमे रहैत छथ्रि, नकली पंथ्रडत थ्रदाइक अन्वेषणमे। असली जानक थ्रस्तार करैत छथ्रि, नकली पंथ्रडत िथ्रिक थ्रस्तार असली पंथ्रडत सूखताक संहार करैत छथ्रि, नकली पंथ्रडत केवल मिुरक।‘’ थ्रनका अनुसारे वैह वासतवमे पाथ्रडत्य पाप्त कयने छाि जे अपन बुथ्रदक पयोग थ्रनत-नूतन आथ्रवष्कार हेतु करैत छथ्रि। क

वेद-पुराण, कमेकाड-मिशास्ि गीता-वेदान्त, रामाण-महाभारत, ज्योथ्रतष-आयुवेद, तंि-मंि, देवी-देवता स्वगा-निरक, पुनजान्म-मोक्ष, पाप-पण्य सभके ई कोना लैत छथ्रि से देखबाक एवं हँसबाक अवसर एहीमे भेटँत अथ्रछ। एकर ममास्पिशी व्यंग्य अन्तस्तलमे पहुँथ्रच सुरसुरी लगा दैत अथ्रछ। ओ अन्ि-थ्रश्वास, िथ्रमाक पाखण्ड दोग, र.थ्रढ आथ्रदक पथ्रत व्यंग्यक माियमे भयानक थ्ररोह करैत छथ्रि। एथ्रह पकारक मतक खण्डनमे थ्रनका ततवा रस भेटँत छथ्रन जे सामाथ्रजक र.थ्रढ वा अन्िथ्रश्वास पर पहार करबाक हेतु ई संथ्रदखन भंगघोटना लेने तत्पर रहैत छथ्रि। जाथ्रि पाश्चात्य-पाच्य सभ्यता एवं संस्कृथ्रतक समन्वय नथ्रह हैत ताथ्रि जीवनक कोनो मूल्य नथ्रह। अतएव एहन समन्वय कोन पकारे होमक चाही ? युगक अनुसारे समन्वय अथ्रनवायपितीत होइत अथ्रछ। एथ्रह पसगमे खटरककाक दावा

छथि जे ओ गोनू एवं गंगेश दुनूक वंशज थिकाह तखन पाश्‍चात्य सभ्यताक पतीक बूझब भम िक। हुनक कनि छथि जे ''ही इयैह बात तँ बुझबामे नहि अबैत अछि। कोन पकारे समन्वि करै कहैत छह ? आबसँ शिवजीक मा़ि पर 'सोडा वाटर' ढारि देबैन्ह ? भगवतीके औचरक बदला 'गाउन' ओढ़ा देबैन्ह? कुल देवताके सहियसटक लगा देबैन्ह ? शादमे 'केक' ल' कए शंड दी? बाह ण भोजन करा क' 'बिल' द' देबएन्ह ? जनउ िबिक हेतु 'लोण्डी' मे द' देबैक ? तारा काकीके अंगेजीमे समदाउन गाबय कहबैन्ह।'18 एहि पकारे परम्परावादिताक जालमे ओझरयल समाज एवं व्यक्ति पर ओ जे व्यंस्य कयलनि अछि ताहिमे शाश्‍क्तक मा़ियि एवं कुनैनक शक्तिताक पाचुयि अछि। हुनक कनि छथि ''हमर बात् होइत अछि ओलक टोटी कतेक गोटाके भक द' लगतँन्ह। कतेक गोटाके अमाशय उखड़ि जेतँन्ह।''19 हिनक विनोदपूणि विचार-पाठक विशेष र पसे मनोरंजन करबे करैत अछि संगहि स्िल-स्िल पर व्यंग्य र प तेहन झँझिगर भऽ गेल अछि जे औखि-नाकसँ पानि सेहो बहय लगैत । एहिसँ स्पष्ट जाइछ जे हिनक व्यंयक अत्यंत स्पष्ट र प एहिमे उपलब्ि होइछ।

चचरी हिनक विवि र पक रचना संगह िक। एहिमे कि-िहानी, एकाकी-पहसन, गप्प-सप्प किछु संगृहीत ओछ जाहिमे पाचीनता एवं आ़ुिनिकता पर समान र पे व्यंग्य कयल गेल अछि। परम्परावा एवं अन्िविश्‍वासी मैथिल संस्कृतिक पतीक थिकाह भोल बाबा, जे अपन वाक् चातुर्यसँ हास्य एवं व्यंग्यक िरा बहौलनि अछि। ओ पुरातनताक पृष्ठभूमिमे अवाचीनताक जन्म मानैत छथि। उपयुक्ति पसिपेक्ष्यमे हिनक'दलान परक गप्प', 'चौपाड़ि परक', 'ि्र तरक गप्प' एवं 'पोखरि परक गप्प' विशेष उल्लेखनीय अछि। हिनक मान्यता

छथि जे पाचीन महापुरुष लोकनिक आदर्शमय जीवन छलन्हि। ओ स्वाभिमान, मर्यादा एवं मनुष्यताक सुरक्षा सतत तत्पर रहैत छलाह। भोल बाबाक अनुसारे आधुनिक सभ्यता पाचीन पृष्ठभूमिमे कोनो अस्तित्व रखैछ। ई पाचीनके आदर्शमाधुनिकता पर व्यंग्य करैत कहैत छथि जे आधुनिक समयमे सब पाचीन वस्तु समाप्त भेल जा रहल अछि–''हाथीके मोटर खयलक, घोड़ाके साइकिल खयलक, रामलीलाके सिनेमा खयलक, भोज के पाटी खयलक, भागके चाह खयलक तथा संस्कृतिके अंगजी खयलक।''20''

हरिमोहन झा हास्य-व्यंग्यक माध्यमे नारी जागरणक शंखनाद कयलन्हि। चर्चरीक अनेक कथाक माध्यमे ओ शिक्षिलाक तारीमे दुगाक रूप पदर्शन करय चाहैत छलाह। गेजुएट पुतोहु'21 मेमे जागत नारीक पति समाजमे उत्पन्न परिस्थितियासँ परिचय करबैत छथि। ' गाम सेविका'22 मे ओ जागत नारीक मंजुल मंगलमयी मूर्तिक पदर्शन त करैत छथि। नारी जागरणक फलस्वरूप ओहो सब आब काटरक विरोधमे नारा लगबैत छथि। 'एम्हर बाटे आबै छथि सुरसरि धार'23 मे शिक्षिलाक नारी अनमेल विवाह एवं बालक दहेजक विरोधमे आवाज उठौलन्हि। ओ सब कहैत छथि जे '' बाकी बला वर जाथि अपन घर। जे मँगताह हजार से रहताह कुमार। जे गनताह ओ कनताह। घटक पंजियार होठ होथि तैयार आब ने चलत ई रोजगार।'24

विकछुए दिनक पश्चात् नारीक एतेक बेशी जागरण भेल जे ओ सब आदर्शविवाहक हेतु आन्दोलन पारंभ कयलन्हि। समाजक एहन कार्य देखि व्यंग्यकार कहैत छथि '' हरब बालक ने तँ रहब कुमारि। जे

नञ्ह करताह रव्यक माग, सैह भरता कन्याक माग। ब्जालक कर दूर तखन ब्दूअ ब्झन्दूर।''25 एहन पञ्वश्नाति पञ्क्षमे नारी पुरषक संग चलब पारंभ कयलञ्झ तकरा देञ्खर भोल बाबा ञ्चञ्तत भऽ जाइत छथि। ओ कहैत छथि जे नारी जागरणक फलस्वरप ''पुरषक संग बैञ्सन क' दौड़ैत अछ्छ, कुदैत अछ्छ, फनैत अछ्छ, हेलैत अछ्छ, नचैत अछ्छ।''26

ञ्हनक हास्य व्यंग्यक पञ्जभाक वास्तञ्जवक पस्फुटन ञ्हनक काव्यमे भेल अछ्छ। ञ्हनक हास्य व्यंग्यक रप अञ्चक सपष्ट तखन होइत अछ्छ जखन ओ समकालीन समाजमे पचञ्लत अवस्िाक कारणे अनमेल ञ्ववाहक समस्या पर पहार करैत छथि। ञ्मञ्थलाक सामाञ्जक जीवनमे ई मान्यता पचञ्लत रहल अछ्छ जे पुरष कतबो ञ्ववाह ञ्कऐक ने कर्ि, ञ्कन्तुनारी एकञ्ह ञ्ववाहक अञ्चकाञ्रणी छथि। एकरे फलस्वरप वृद व्यञ्क्त अपन कुलीनताक आिार पर अनेक ञ्ववाह करैत छथि। व्यंग्य-कञ्व एञ्ह पृष्ठ भूञ्मक व्यंग्यात्मक शब्द ञ्च अपन पञ्सद कञ्वता ^ढालाझा'27 मे पसतुत कयलञ्झ अछ्छ। ढाला झाक स्वरपक ञ्चणि करैत कहैत छथि जे हुनक माि पर फाटल पुरान पाग ताि कान्ह पर गोबनौर सन अंगपोछा, माि खल्वाट, ञ्चपुण्डछक तीन ठोप ताि पैि रराि टीकमे बान्हल छञ्झ। इऐह ञ्थकाह ढाला झा, लुटी झाक पणैि, नरहा पौञ्त्र, ककड़ौड़क वासी एवं बेलौचेक वंशज। ञ्हनक यिाििस्वरप काटूनि सदृश अछ्छ जकरा देखतञ्ह पाठकक हास्यक कोनो अन्त नञ्ह रहैछ। औ बहुञ्ववाहमे ञ्वश्वास रखञ्नहार ओञ्ह पाचीन परम्पराक अनुमोदक ताि कुलीन पािक पतीक ञ्थकाह जे सासुरके आञ्थिक आयक अजस्ि सोत मानैत छथि। समय-समय पर ओ ओतय ओञ्हना पस्तुत होइत छथि जेना महाजन लहना-तगादाक हेतु खदुकाक ओतय जाइछ। ओ अपन

श्वसुरक पसंगमे श्नजासा करैत छथि–

कहा गेलाह फल्ला झा कन्यादानी श्वशुर हुमर
हुनकासँ जर री खानगीमे गप्प करबाक अछ22

कुलीनताक कारणे ढाला झा अपन श्वसुरक पश्ना एहन संबोति दैत छथि। मैथिल समाज श्यश्नान्न पकारक पाश्न एवं जाश्नाक नाम पर श्यभाश्नत अछ। ओ श्वशुरसँ भरना छोड़ैबाक हेतु टाकाक माग करैत छथि, श्कन्तु हुनक अस्वीकारात्मक उतर पाश्न बमश्क उठैत छथि–

सासुरक अछ कोन कमी, जाइत छी दोसर ठाम
जे नश्न र पेया देत, भोगत भश्न जन्म फल
बेटी हकन्न रहतइ कनैत ओकर जीवन भश्न
हमरा की ? जेम्हरे जैब, सार कोनो भेश्नए जैत।
ई कश्न फराठी लैत, लग्गा सन डेग दैत
मैल श्कट फाटल पुरान पाग मा िपर
लैत अङपोछा कान्ह, कुद कठकोकाश्न जका
श्यदा भेलाह ढाला झा श्यते िर-िर कपैत 29

एतय हास्यमे सश्नाश्नत व्यग्य दारा ओ सामाश्नक दोष श्नस सवसािरणक दृश्न के आकृष्ट करैत छथि।

श्नथिला म िय एश्न पकारक वैवाश्नक पचलन मुख्यत: जाश्न-पाश्न पर अवलंश्नत अछ। मैथिलके गव िछश्न जे ओ शीकान्त झा, महादेव झा, यजुआड़ै एवं बेलौचेक वंशज थिकाह। वस्तुत: मूल आर गो िपर समाज ततेक श्यश्वास करैत अछ जे ओश्न श्यतण्डावादक फलस्वर प ओकर अ ि: पतन शनै-शनै भेल जा रहल अछ। एश्न पकारक परंपरावादीद वैवाश्नक कुरीश्नासँ जजश्नित समाजक पाश्न' पाश्न,

श्यमदान्त पतड़ा, हश्वश्यांह देवी व्यवस्िाओ कमकिाण्ड पर व्यंग्य कश्व कहैत छथि जे आि्थिाक पश्वपेक्ष्यमे ओ सब 'आथ्या' मे ि-ि क' जश्व रहल अश्छ–

राश्वमे हम स्वप्न देखल, आथ्या लागल घर जरैये।

चार सभ पुरना ििश्क कय जोर सँ ि-ि करैये।।31

जश्वना जश्वना आि्थिाकताक अथ्यान अत्यथिक पज्वश्वत भेल जा रहल अश्छ तश्वना पुरातन-ताक ि ज्जी-ि ज्जी उश्छ रहल अश्छ। एतय ओ अन् ्थिश्वास, असमि ति, आडम्बर, ि मिनीश्वा एवं संस्कृश्वा पर श्यममिता वि व्यंग्य कयलश्वा अश्छ जतय फोका पयन्ति बहरा जाइत अश्छ।

अि भावक कारणे समकालीन मैथिल समाजमे कन्या-श्वकयक पि सेहो पचश्वात अश्छ। कन्या-श्वकयक कारणे अनमेल श्ववाहके पोत्साहन भेटल अश्छ। एकरे पश्वणाम िक जे कोमल कलीके कोकनल ढेगक संग श्ववाह करय पडैत छश्वा। व्यंग्यकार'कन्याक नीलामी डाक'32 मे अि: पश्वात कुलीन पि एवं समाज पर कुठारि ात करैत छथि। वर पक एवं कन्या पक्क घटक उपश्वि त भ' कोना परस्पर वतालाप करैत छथि, कि श्यि र करैत छथि, तकर र प तँ देखू–

वर पक्क घटक–

श्यांह लग्न मे जन्म भेल छश्वहि, वयस तीश्वाये शीस।

टीपश्वा अपने श्यला श्वाय, संवत उनैस सै तीस।

कलम चाश्व बीि अपन छश्वहि, हर बड़द दुइ जोड़।

डेढ़ पाइ मासो श्वकनलश्वहि अश्छ, टका छैश्वहि नश्व ि ड़।

बेस श्वकमश्वागर छथि पश्वागर श्वनका सन भेटत ने आन।

(कानमे कहैत छथि)

तीस टका अपनहु के भेटत, खैब सुपारी पाम।
दुनू पक्क घटकक पारस्पश्वक वातालापक कममे श्ववाह श्वर भ' जाइछ, कारण कन्याक श्वता कन्या श्ववकी हेतु उताहुल छश्वि। व्यंग्यकार एहन कन्याक श्वता पर व्यंग्य करैत छश्वि–
करब कि पश्वने जौं हम्मर सभटा कजसिवी
चाश्व सौ जे गश्व श्वय' व्यवस्ि झट श्वदान्त श्वखाबी 31
एश्व पर वरक उतर छश्व–
तावत श्वान सै आनल, बाकी देब सिय 35
एश्व पर कन्याक श्वता उतर दैत छश्वि–
'हैण्ड नोट श्वश्व देल जाय, अपनेके कयल जमाय' 36
जाहेना कोनो वस्तुक श्ववकीक हेतु बजारमे त्वंचाहंच होइछ तश्वना वर एवं कन्यापक्क घटक बीच सेहो होइछ। आश्चयतिँ तखन होइछ जखन कन्याक श्वता श्वलज्जितापूवक घोषणा करैत छश्वि जे जैह कजसिि सकताह सैह कन्याक अश्विकारी हेताह। समाजक आश्विक दशा सुदृढ़ नश्व रहलाक कारणे श्वश्विलामे एश्व पकारक अनमेल श्ववाह पचश्वत अश्व। एतय हास्य एवं व्यंग्य दुनूक रप अत्यन्त तीवरअश्व।
मैश्विल लोकश्वक भोजनश्वयता जगतश्वद अश्व। एहन भोजलन-श्वन्यास पर पो. झा श्वश्वात रपे व्यंग्य कयलश्व अश्व। श्वश्विलामे जमायक स्वागतािकितेक श्वन्यास कयल आइद तकर स्पष्ट श्वि 'ढाला झा' मे भेटैछ :–
राश्वमे सचार लागल ढाला झाक आगामे
बाटी अठारह टा हुनका आगा लगाओल गेल
बड़ बड़ी भटबड़ कदीमा श्वलकोड़ और

पापड़ श्चालौरी ओ दनौरी आदौरी भाटा
एक बटा छश्चा गर दही एक बटा खोआ गाढ़
चीनी पयाप्त, मालभोग केरा पाकल खूब
डेढ़ सेर मेही भात, जाश्चा कऽ छलैश्चह परसल
ि तसँ कँल श्चाक्कन ति बाटीमे राहश्च दाश्चा
आश्चल देल, ऊपर खूब घृत छह छह करैत

एश्च पकारक भोजन-श्चन्यासक वणनि सुश्चातश्चँ श्चाश्चये कुिाश्चा भऽ जाइछ। एतय व्यंग्यकार पचश्चात परंपरा पर पहार क' हास्ये नश्च, व्यंग्यक पयाप्त सामगी पाठकके देबाक पयास कयलश्चा अश्च। समाजक अन्यान्य अपेक्ना ढोगी-पोगा-पि पंश्चत लोकश्चा श्चनक हास्य-व्यंग्यक सबसँ बेशी श्चाकार भेलाह। तन्ि-मन्ि, शास्ि-पुराणक श्चतण्डवादक कारणे सामाश्चक जीवन श्चन-पश्चा-श्चन श्चषम भेल जा रहल अश्च। एहना श्चिश्चामे व्यंग्यकार कोना चुप्प बैश्चा सकैत छश्चि ? मिक्ि नाम पर श्चषम भेल जा रहल अश्च। एहना अपनाके अगदूत बुझश्चाहार पाखंडी 'पंश्चत लोकश्चा' पर व्यंग्य कय व्यंग्यकार हुनक भंडा फौड़लश्चा अश्च। यिि: ओ लोकश्चा अपन जानक दुर उपयोग श्चाष्पयोजन शास्िक्ि चकमे समाप्त क' दैत छश्चि। आिश्चाक संदभमि पंश्चतलोकश्चाक श्चकया-कलाप ठप पश्च गेल, श्चकएक तँ युग पश्चचश्चात भ' गेल अश्च। पश्चवश्चात पश्चश्चिश्चाके देश्च पंश्चतलोकश्चामे आिशक भावना स्वाभाश्चक अश्च। एहना हुनका सभक श्चलापक अश्चाश्चक्त आन कोनो उपाय नश्च रश्च जाइछ1

'पंश्चत' मे पाठके पचूर सामगी भेटँत छश्चा–

जमाना बदश्चा गेलैक, उनउलै बात सब पुरना।
उठै अश्च श्चत तँ बहुतो कर की वृद अिबल छी
जहा बटाक ि ति पड़ै छल भोजमे आगा

तहा आब डालडासँ दाइ छौकल देखै छी 35

'बुचकुन बाबा' के आधुनिक नारीक पहिरब-ओढ़ब, चलब-फिरब, लिखन-पढ़ब एवं उन्मुक्त जीवन फुटलो नहि सोहाइत छनि। हुनका अनुसार नारी सतत दासताक बेड़ीमे जकड़ल रहथि, सँह उतम। हुनकर कनि छनि जे लोक केचुआके फूँकि-फूँ कि सापक सजाि रहल छथि। एहन परिस्थितिमे ओ हफीम खा क' अपन पाणान्त करय चाहैत छथि। व्यंग्यकार वस्तुत: एहन पाखंडतक अन्ते चाहैत छथि।

पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृतिक रगमे सँगाक' नारी गामीण परिवेशमे अत्यन्त उपहासात्मक बनि जाइछ। एकर स्पष्ट ध्वनि व्यंग्यकार 'अँङरेजिया लड़कीक समदाउन' मेकयलनि अछि–

आङनक बाहर घुमय नाह जयबैक

भैसुर जैताह पड़ाय

देब ससुर किनको नहि हँसबैन्ह

सभ जँताह तमसाय

ओहिठाम जा अण्डा नहि मङबैक

तकर ने छैक उपाय

जो मन हो कहबैन्ह चुपचाताहे

आनि देताह हमर जमाय 39

पाश्चात्य सभ्यतामे लाइनत-पाइनत कन्याके चेतावनी दैत छथि; किन्तु हुनक व्यवहार पर व्यंग्यकारक आक्षेप एकदम स्पष्ट अछि। आधुनिक सभ्यातामे पो. झा के जे दोष परिलक्षित होइत छनि तकरी ई व्यंग्यक माध्यम बनबैत छथि। हुनक पसाद कवता 'टी-पाटी विशुदा हास्य-रसक रचना थिक। टी-पाटी आधुनिक सभ्यता एवं

संस्कृतिक पतीक िक। एहि कवितामे कृत्रिमताक अभाव् अछि व्यंग्यकार कोनो अलंकरणक चेष्टा नहि कयलनि अछि। एकर भाषामे अदभुत पवाह अछि। हास्य-रसक पुष्टि क हेतु जेहन भाषा आवश्यक अछि ताहि र पक भाषाक पयोग एहिमे कयल गेल अछि। ‘टी-पाटी’ क बाह डम्बरक पति कवि उपहास करैत छथि–

दूरे सँ देखँत छी जे अपूव अछि समारोह
कुसी ओ टेबुल कतार सँ सजाओल अछि
उज्जर दपादप श्वेत चादर ओछाओल और
नाना पकारक फुलदान अछि शोभायमान40

पाटीक साज-सज्जा ति अल्प भोजनके देखि कवि व्यंग्य करैत छथि–

एकटा सिंहारा और एक फक्का दालमोट
एक रसगुल्ला और बुनिया एक चौठी मा ि
तोला भरि सेबइ समतोला दुइ फाक
एक चुटकी किशमिश ति सोहल केरा टा41

पाटीक पश्चात् व्यंग्यकारक मनमे आिथिक सभ्यताक पति जे भावना जागत भेल ओ आश्चर्ये उपहासात्मक िक।

बस पाटीक ने नाम छाय
सोझे जाड भानसमे पजार गऽ आँच शीघ
खीचड़ि और साना बनाउ जतेक जल्दी हो
आर ई काडलिऽ कऽ चूल्हामे झोकि दिअ42

पोफेसर हरिमोहन झाक उपयुक्ति रचना समूहक विश्लेषणसँ एतबा एतब। आलोचात र पे कहल जा सकैछ जे ई मैथिली हास्य-व्यंग्य-साहित्यक उज्जवल भविष्यक सूचक भेलाह। हिनक हास्य-व्यंग्य

रचनाक पभाव मैथिली समाज पर तीन रपे पड़लँक। पमि तँ ई मैथिलीमे पाठक वर्गक निर्माण कयलनि। द्वितीय, मैथिलाक कन्यालोकनिक व्यक्तिगत जीवन पभावित भेल जकर फलस्वरप हजारक हजार शादी रुकल भ' रहल छथि। तेसर पभाव मैथिलीक परवती साहित्यकारलोकनि पर पड़लनि ये एहि मे उन्मुख भेलाह जहिना सुस्वादु, चर्व्य चोष्य, लेह, पेय भोजनके पाप्त कयला पर हौइत छनि तहिना हास्य-व्यंग्यमे अधिकार रखनिहार पाठकके हिनक रचनाक पारायणोतर हिनक रचनाक लोकपियताक अनुमान तँ एही सँ लगाओल जा सकैछ जे उपन्यास 'चन्द्रकान्ता संतति' के पढ़बाक हेतु अनेक अहिन्दी भाषी पाठक पोफेसर हरिमोहन झाक ख्याताकर्षक हास्य-व्यंग्य-रचनाक रसास्वादनक लेल हिनक विभिन्न रचना समय-समय पर विभिन्न भारतीय एवं मासिक पत्रिकामे अनूदित भ' पकाशित होइत रहल अछि। शेय हिनके छनि सर्वाधिक रचना विभिन्न भाषामे सेहो अनूदित

पसंग-निर्देश

1. कन्यादान, पृष्ठ 18
2. तत्रैव, पृष्ठ- 19
3. तत्रैव, पृष्ठ– 21
4. तत्रैव, पृष्ठ– 37
5. तत्रैव, पृष्ठ – 38
6. द्विरागमन, पृष्ठ– 158
7. कन्यादान, पृष्ठ– 104
8. तत्रैव, पृष्ठ – 59

9. पणम्य देवता, पृष्ठ–3
10. तथैव, पृ – 12
11. तथैव, पृष्ठ– 53
12. तथैव, पृष्ठ –232-245
13. तथैव, पृष्ठ–270
14. तथैव, पृष्ठ–274
15. पचिम अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन, कवि विभागीय सभापतिक भाषण, वैदेही समिति, लाल बाग, दरभंगा-1853पृष्ठ-3
16. रंगशाला एक-झलक, पृष्ठ–'ख'
17. खटर ककाक तरंग पृष्ठ- 293
18. तथैव भूमिका, पृष्ठ-छ
19. तथैव – पृष्ठ-ग
20. चचरी, पृष्ठ-220
21. तथैव, पृष्ठ-1
22. तथैब पृष्ठ -24
23. तथैव, पृष्ठ-189
24. तथैव, पृष्ठ-189
25. तथैव, पृष्ठ-129
26. तथैव, पृष्ठ- 248
27. मासिक स्वदेश, वर्ष-1 अंक 4 विकास संवत् 2005 चैत, पृष्ठ-
28. तथैव, पृष्ठ-153
29. तथैव, पृष्ठ-153
30. वैदेही, अक्तूबर 1253, पृष्ठ-155
31. तथैव

32. मिथिला, वर्ष-1 अंक-4 जेठ, सन् 1336 पृष्ठ- 99.
33. तत्रैव
34. तत्रैव
35. तत्रैव
36. तत्रैव
37. मासिक स्वदेश, पृष्ठ-154.
38. मिथिला-दर्शन मार्च पृष्ठ- 1260, पृष्ठ-2
39. वैदेही विशेषांक-सन् पृष्ठ 1350 पृष्ठ 9.
40. मासिक स्वदेश, वर्ष-1 अंक 4, -वैशाख, विक्रम 2005संवत् पृष्ठ- 391
41. तत्रैव पृष्ठ- 220
42. तत्रैव, पृष्ठ- 222
43 हरिमोहन झा अभिनन्दन ग्रन्थ 1983)

हरिमोहन झाक रचनाक परवर्ती रचनाकमीपर पभाव

विगत शताब्दी आशये मैथिली साहित्यक हेतु स्वर्णकालक र पमे पवेश पौलक जकर फलस्वर प सामाजिक वातावरणक परिपाष सन्दर्भमे साहित्यिक वातावरणमे नव स्पन्दनक संचार भेलैक जे मातृभाषानुरागी रचनाकार एकर चहुमुखी विकास-यात्रिमे मनसा वाचा कर्मणा आ कतेक बुदया अजस साहित्य सरिता पवाहित करब पारंभ कयलनि जे पत्रिकादिक पकाशनक फलस्वर प जनमानसमे मातृभाषाक पति अनुराग भावना उत्पन्न करबाक अतिरिक्त जनजागरणक अभियान चलौलनि जे वर्तमान परिपेक्ष्यमे ऐतिहासिक महत्वक विषय भ' गेल अछि। मातृभाषानुरागी साहित्य सृजक नव-नव पवृत्तिक रचनाक माध्यमे जनमानसक ध्यानाकर्षित करबाक अतिरिक्त नव भाव-धाराक साहित्य-सृजन करब पारम्भ कयलनि तकरा अस्वीकार करब रचनाकारक पति अजानता पदर्शित करब हैत। पत्रिकादिक पकाशनोपरात मैथिली गद गंगा सहसमुखी साहित्यिक धारा उन्मुक्त भ' कए पवाहित होमय लागल जकर फलस्वर प एकाकी, उपन्यास, कथा, निबन्ध, नाटक, पहसन, संस्मरण एवं यात्रा वृतातादिक सर्वतोमुखी विकास-यात्राक शुभारम्भ भेल।

वस्तुता उनैसम शताब्दीक उतरार्द्धमे नवीनताक सूत्रपात भेल जकर फलस्वर प आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, एवं सास्कृतिक जीवनमे नव-नव परिवर्तन दृष्टिगत होमय लागल। सम्पूर्ण राष्ट्र यथार्थोन्मुख पवृत्तिसँ पेरित भ' महात्मा गान्धीक स्वतंत्रता आन्दोलनक पशय देमय लागल। सामाजिक वातावरणक परिपाष सन्दर्भमे ओकर पति आधुनिक पाशात्य शिक्षित वर्गक हाथमे छल। ओ लोकनि एक भाग

अपन सांस्कृतिक विरासतक सुरक्षा उत्सुकता देखौलन्हि तँ दोसर भाग नव आलोकक स्वागत कयलन्हि। एही सांस्कृतिक अनुष्ठानक पृष्ठभूमिमे अत्याधुनिक भारतीय भाषाक विकास-यात्रिक शुभारम्भ भेल जकर नेतृत्व बुद्धिजीवी लोकन्हि कयलन्हि। एही संक्रान्ति कालमे साहित्यमे आधुनिकता प्रारम्भ भेल आ रचनाकार साहित्यक नवीनतम प्रवृत्ति दिस उन्मुख भेलाह जे हास्य-व्यंग्यक सजीव चित्र अपन साहित्यमे प्रस्तुत कयलन्हि।

उपर्युक्त परिपेक्ष्यक स्वाधीन बेलामे विगत शताब्दीक प्रथम दशकमे एक एहन अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्न साहित्य-सृजक प्रादुर्भूत भेलाह जे अपन विशिष्ट रूपा अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्न रचनावली ल' कए पाठकक सम्मुख प्रस्तुत भेलाह जनिक साहित्यमे प्रचुर परिमाणमे हास्य तीक्ष्ण एवं प्रखर व्यंग्यक कारणे ओ जे लोकप्रियता अर्जित क' कए प्रमाणित कयलन्हि जे मिथिलाक पावन भूमि अदौसँ विशिष्ट महाकवि विद्यापति सदृश सुसम्पन्न प्रतिभाशाली रचनाकार उत्पन्न क' सकैछ ओ रहथि हरिमोहन झा (1908-1984)। ओ प्रचुर परिमाणमे उपन्यास, एकाकी, कथा, कविता, निबन्ध, प्रहसन, एवं जीवनयात्रिक रचना क' कए गद्य एवं पद्य दुहुक अवरुद्ध मार्गकेँ नव प्रवृत्तिक रचनासँ द्वारा प्रशस्त कयलन्हि। साहित्यक सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि थिक जे रचनाकार अपन अनुभूतिके सत्यताक संग उद्घाटित करब साहित्यकारक दायित्व होइछ। रचनाकारक व्यक्तित्वक निर्माणमे अनेक प्रकारक भूमिका कार्य करैछ आ ओहि सभक सम्मिश्रित संयोजनसँ अपन रचनाक स्वरूप सुनिश्चित करैछ। मातृभाषानुरागसँ उत्प्रेरित आ अव्याहत मोह हिनका अपन कौशिकक विरासतक रूपमे प्राप्त भेलन्हि जकरा ओ जीवन आ जगतक गम्भीर अनुभवके व्यक्त करबाक तीवरलालसा हिनका साहित्य-

सृजन श्वस पेश्वत कयलक। साश्चश्यक केमे ई अपन अदूत समंवयात्मक दृश्च कोणक पश्चचय देलश्च। ओ युगक श्चष्पाण मिनीमे अपन साश्चत्यक माध्यमे नव जीवनक रक्त संचाश्वत करबाक पयास कयलश्च। ओ गद आ पद दुनू श्चामे समान रपेण लेखन कयलश्च, श्वकंतु पदक अपेक्ष गद-श्चाके, जकर अभाव मैश्चलीमे छल तकरा पूश्चा किरबाक संकल्प कयलश्च।

ई शेय आ पेय हुनके छश्च जे ओ सवप्रिम श्चश्चलाञ्चलक संगश्च संग राष्ट्रीय आ अंतराष्ट्रीय जनमानसक नव्यतम पवृश्च हास्य-व्यंग्यके श्चान्हलश्च ति ओकरा अवलम्बन क' कए कन्यादान (1933), श्चरागमन (1943), पणम्य देवता (1945), रंगशाला (1948), खटर ककाक तरंगक पमि भाग (1948), श्चतीय भाषा (1955), चर्चरी (1960), एकादशी (1964), जीवन याि (1982), आ काव्य संगह (2005) आश्च पुस्तक रपमे पकाश्चात अश्छ। एश्चसँ अश्चाश्वक्त श्चबनाश्च याि सीं-श्चाकक वतमीन दशा (श्चश्चला वषी अंक-1 सन् 1336 वैशाख), स्मराज के लेत (श्चश्चला वषी अंक-8 सन् 1337 अगहन) एवं देशाचार (डॉ. पेमशंकर श्चंहक शोि पबन)मे समसामश्चक सामाश्चक कुरीश्चक पश्च ओ साकाक कयलश्च। श्चनक श्चमस् कािश्च याि श्चरसन मामाक श्चनेमा (1961), पगश्चक पिपर (1961), शासिकि जोश (1962), सहसिाश्चभ्यो नमा (1962), सहयाश्चणी (1963), आब मोके चाही (1970), भोला बाबाक गप्प (1974), कालाजारक उपचार (1977) एवं महाभारतक केम्पक (1979), श्चश्चला श्चश्चरमे िूल-िूसश्वत भ' रहल अश्छ। श्चनक पहसन याि बौआक दाम (1946), महाराज श्चजय (1948), ठोपसँ टोप (1935), आदशमैश्चिल रेलवे एवं रेलक झगड़ा (1960) आश्च कोनो संगहमे नश्च आश्च सकल अश्छ जे श्चंतनीय श्चषय श्चक।

उपयुक्ति रचनाक्रमे ओ सामाजिक वातावरणक विशेष सन्दर्भमे सामकालीन मैथिल समाजक कुरीति पूर्ण सामाजिक विकृति एवं विसंगतिपर कुठाराघात कयलन्हि। सादा जीवन आ उच्च विचारक ओ प्रतिमूर्ति रहथि। ओ सत्य जानक भण्डार रहथि। ओ सशक्त व्यंग्यकार रहथि। हुनक चिंतन, पाण्डित्य, नीर-क्षीर विवेचनक शक्ति, व्यक्ति-व्यक्तित्वक खरेपन, सोझ, सपाट कहिनक निखरल स्वरूप जनमानस समक्ष प्रस्तुत भेल जे उपन्यासकार, एकाकीकार, कथाकार, कवितकार, निबन्धकार, प्रहसनकार, एवं जीवन-यात्रिकारक रूपमे हुनक साहित्यिक अवदान विख्यात रूपे प्रेरणादायक प्रमाणित भेल राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तरपर। हुनक चिंतन आ साहित्य-साधना सागर सदृश विशाल अछि जे परवर्ती साहित्यसाधक लोकनिक प्रेरणाक अविरल स्रोत बनल। ओ अपन साहित्यिक प्रतिभा प्रसादात सामाजिक वातावरणक विशेष सन्दर्भमे अन्ध-विशास, रूढ़िग्रस्त परम्परा, धार्मिक वितण्डावाद, जीवनमे अंतर्विरोध, असंगति, ढ़ोग, दम्भ, पाखण्ड, बाबा वाक्यं प्रमाणम् क’ हठधर्मिता, मिथ्या बड़प्पन, मूर्खतापूर्ण संघर्ष, जीर्ण-शीर्ण विचार धारापर कशाघात क’ कए आचार-विचार एवं वाह्याडम्बरक तीवरआलोचना आ भर्त्सना कयलन्हि। आनक उपलब्धिके सहज भावसँ स्वीकारैत ओ सत्य गुणगाहकक भूमिकाक निर्वाह कयलन्हि। हुनक कृतित्वक वैशिष्ट्य थिक हास्यमे समाहित व्यंग्य द्वारा ओ सामाजिक दोष दिस जनमानसक ध्यान आकर्षित कयलन्हि। प्राचीन एवं अवाचीन परम्परा एवं पक्षपातीक दोष सम्बन्धी वर्तमान अछि ओहि सभके लक्ष्य क’ कए ओ अपन व्यंग्यवाण सँ बेबाक प्रयास कयलन्हि। हुनक साहित्यमे ने तँ प्राचीन अन्धविशासक प्रति मोह अछि आ ने तँ नवीनताक अन्धानुकरणक प्रति आशक्ति।

हरिमोहन झाक सम्पूर्ण साहित्य मात्र मैथिली अंचलक परिसर धरि सीमित नहि रहल, प्रत्युत राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तरपर उज्ज्वल भविष्यक सूचक सिद्ध भेल। हिनका द्वारा स्थापित परम्पराक प्रभाव परवर्ती युवा पीढ़ीक साहित्यपर तीन रूपे पड़लैक। प्रथम तँ ई मैथिलीमे पाठक वर्गक निर्माण कयलन्हि। द्वितीय मैथिली अंचलक कन्या लोकनिक व्यक्तिगत जीवन प्रभावित भेल जे हजारक हजार शक्ति भ' कए एक नव ज्योति जगौलन्हि। तृतीय प्रभाव पड़ल परवर्ती साहित्यकार लोकनिपर जे हिनका द्वारा प्रवाहित हास्य-व्यंग्य अविरल धाराक अनुकरण क' कए साहित्यक विधान भूमिमे साहित्य सृजनक परम्पराक शुभारम्भ कयलन्हि।

मैथिली साहित्यमे हिनका द्वारा हास्य-व्यंग्यक जे धारा प्रवाहित कयल गेल ओ एक नव-युगक अवतारणा क' कए नव ज्योति जगौलक। हिनक प्रतिभाक छाहरिमे न्यू फोर्सक आविर्भाव भेलैक। हुनक कथा-साहित्यक परिवेशमे न्यू फोर्सक औनाहटिकें नहि बिसरल जा सकैछ। न्यू फोर्सक अवतारणा एहन धरातलपर भेल आ एकर औनाहटि सर्वथा मौलिक छैक। हिनक साहित्यमे एकटा अकुलाहटि थिक समाजक नव जीवन शक्ति (भाइटल फोर्स)क प्राचीनताक सड़ल छोलकोइया फोड़ि क' जनकल्याणक प्रकरणसँ बाहर हैबाक अकुलाहटि। हुनक साहित्यमे रूढ़िवादक अन्धकार पूर्णरूपेण अंशाम अंशमे विहग कुलक रागिणी जे अयमाहार नवयुगक आन्दोलनक स्वागतमे गूँजि रहल अछि। ओ नारी जागरण शंखनाद कयलन्हि जकरा माध्यमे पर्दा प्रथा, बालक-दहेज, बाबा वाक्यं प्रमाणम् पर गम्भीर चोट कयलन्हि।

हिनक साहित्य समाजक बीच प्रखर वेगसँ प्रवाहित होइत विधान सामाजिक शक्ति सोसल फोर्सक घात प्रतिघात अछि। हुनक पात्र सभ परिस्थितिक प्रवाहमे बहैत अछि। आधुनिकताक बसातमे झुलैत

अछि।

मैथिली उपन्यासक केँ मे ई हास्य-व्यंग्यक जे अजस धारा बहौलन्हि जे परवर्ती उपन्यासकार लोकनिक पाथेय बनल। जतय ओ शिक्षा-दीक्षाक कारणे अनमेल विवाहक बलिदानक वेदी कन्या लोकनिक कुवान होइत देखलन्हि तकरा परवर्ती उपन्यासकार लोकनि व्यापक परिधिमे आनि यथा अवस्थाक कारणे अनमेल विवाह, रूप-गुणक कारणे अनमेल विवाह, शिक्षा दीक्षाक कारणे अनमेल, विधवा-विवाह आदि विभिन्न सामाजिक वातावरण विशेष सन्दर्भमे समसामयिक समाजमे व्याप्त विभिन्न समस्यादिपर व्यंग्य कयलन्हि। वस्तुता हिनक उपन्यासक प्रभाव मैथिली साहित्यपर तीन रूपे पड़लैक-समाजक मनोवृत्तिपर, कन्या लोकनिक व्यक्तिगत जीवनपर तथा परवर्ती लेखक समुदायपर।

हिनक उपन्यास नव युगक चौराहापर सामाजिक वातावरणक विशेष सन्दर्भमे परम्परावादक गुदरी पहिरने, कट्टरता मारल, ढ़ोंगक झमारल, रूढ़िवादी जर्जरित समाजपर तीक्ष्ण व्यंग्य क' कए हास्य उत्पन्न कयलन्हि। हिनक हास्य-व्यंग्यसँ संयुक्त उपन्यास माइल स्टोन प्रमाणित भेल जे हिनका द्वारा स्थापित मापदण्डक टक्कर क्यो नहि क' सकला। हिनका द्वारा स्थापित एहि प्रवृत्तिक व्यापक प्रभाव परवर्ती अत्याधुनिक उपन्यासकार लोकनिपर पड़लन्हि जे वस्तुता एहि प्रवृत्तिक वास्तविक विकास दृष्टिगत होइत अछि। हिनकासँ प्रभावित भ' योगानन्द झा (1922-1986) मिथिलाञ्चलमे प्रचलित कुलीन प्रथाक निस्सारतापर भलमानुस (1944) मे अनधिशासक वेदीपर सुकुमारी आमलीक आमिष हत्या आ प्रायश्चित (1966)मे बाल-विवाहक कारणे वैधव्यक समस्या उपस्थित क' कए व्यंग्य कयलन्हि।

हरिमोहन झा देवक वैवाहिक व्यवस्थाक पृष्ठभूमिमे कन्या-विक्रय आ वृद्-

ध्रवाहक पृष्ठभूमिमे वैदनाि मिश्र यात्री (1911-1998), पारो (1353 साल) एवं नवतुरिया (1954)मे अवसि िक कारणे अनमेल ध्रवाहक समस्यापर व्यंग्य कयलन्हि। उपन्यास समाट व्रजकिशोर वमा मणिपद (1918-1986) अनलपि मे पाचीन कुलीन पि िक नीचा दबायल ग्रामगोरा नव सामाजिक चेतनाक स्फुलिंग बनि क’ भुवनेशर एवं सत्यताक र पमे ध्रवलैत अछि। सामाजिक नैतिकताक भत्सनीक संगहि-संग एहिमे सामाजिक जीवनमे राजनीति एवं आर्थि कि पक्षपर व्यंग्य कयल गेल अछि। शारदानन्द झाक जयवार एवं अवि नारायण झाक वनमानुषमे उपन्यासकार समाजातगति कतिपय उदण्ड व्यक्तिक दुष्कमसँ परिवार कलंकित भ’ सम्पूर्ण समाज हास्यापद भ’ जाइछ। राजकमल (1929-1967), पाि र फूल (1957) एवं आदि कि ा (1958)मे व्यक्तिक व्यवहार एवं आंतरिक जगतक वीभत्स नग्नता एवं सामाजिक ध्र र पतापर व्यंग्य कयलन्हि। जतय ध्रन्देशर मण्डल बाटक भेट ग्रामगीक गेठ (1967)मे बालक-दहेजपर ततय र पकात ठाकुरक नहलापर दहला (1967)मे बीसम शदीक उत रादमि जीवनमे आयल ध्रसंगतिपर हास्य-व्यंग्य शैलीमे समसामयिक समाजपर व्यंग्य कयलन्हि। समाजक परिवस्थाति परिवेशमे ओ कि ा-साहित्यातगति जाहि हास्य-व्यंग्य शैलीक अवतारणा कयलन्हि तकरा परवती पीढ़ीक युवा कि ाकार लोकनि अधिक पशस्त कयलन्हि। किछु कि ाकार तँ हुनक ध्रचारि िाक अनुगमन कयलन्हि आ किछु व्यंग्य-मिश्रित भाषा-शैलीके। परवती कि ाकार कोन अनुपातमे हुनक अनुकरण ओ ध्रचारणीय पश अछि। हुनक कि ाक लोकप्रियताक फलस्वर प परवती कि ाकार हाजक हाज अगसर भेलाह जकर फलस्वर प हास्य-व्यंग्य शैलीक अनेक कि ा संगह पकाशमे आयल यि ा नागेन्र कुमारक ससरफानी (1947), दृष्टि कोण (1954), आकार (1954), एवं फलेना जामुन

(1955), मायानन्द मिश्र (1934)क भाङक लोटा (1957) गोविन्द चौरीक पाञ्चजन्य, रूपगर्विता एवं पाच फूल, उदयभानु सिंहक जखन-तखन (1963), रूपकात ठाकुरक ठिकिल केरा (1964) एवं मोमक नाक (1965), रमानाथ मिश्र मिहिर (1939-1999)क समृद्धि (1965) एवं एकयुगक बाद (1975), छविनन्दन सिंह झा (1946)क डोकहरक आँखि (1971) एवं काटकूस (1977), हंसराज (1938-2006) जे कीने से (1972) दमनकात झा (1924-1994)क गपाषक (1974), अमरनाथ झाक कथाका (1975), एकटा चाही रोपदी (1976), कबकब (1977), जोक (1978), मोम जका वर्फ जका (1980) एवं अकिटी (2007) तथा मंत्रेश्वर झा (1944)क एक बटे दू (1977) आदि उल्लेखनीय अछि। परवर्ती किछु कथाकार एहन छथि जनिक कथा संग्रह तँ नहि पकाशमे आबि सकल अछि, किन्तु समकालीन पत्रिकादिमे हुनका सभक एहि पवृत्तिक कथादि पकाशित अछि जकर संख्या शताधिक अछि।

हरिमोहन झा ने सिर्फ गदकार रहथि, पत्युत वाक् सिद्ध कवि ताकार सेहो रहथि। हुनका विलक्षण पश्नात्वपन्नमस्तिष्कक प्रतिभा सेहो छलन्हि। काव्यक क्षेत्रमे कुत्सित वैवाहिक परम्परा, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, आधुनिक फैशन एवं सभ्यता, महगी, धार्मिक पाखण्ड, पदापथ इत्यादि विषय केन्द्रित क' कए गंभीर व्यंग्य कयलन्हि। परवर्ती युवा पीढ़ीक कवि लोकनि कतिपय कविताक रचना कयलन्हि। ओ ढ़ाला झा (विक्रम संवत् 2003)मे एहन व्यंग्यात्मक कवि पस्तुत कयलन्हि जे लुटी झाक पपौत्र, नरहा पाथि, ककरौड़क निवासी तथा बेलौचेक वंशज, जनिक स्वरूप देखितहि पाठकक हास्यक अन्त नहि होइछ। एकर पभाव परवर्ती बड़ चर्चित काव्यकार वैदनाथ मिश्र यात्रीपर

पड़ल आ ओ बूढ़वरक रचना कयलथ्रि जे मैथ्रिल समाजक यिाित व्यञ्जना उपथ्रित करैत अछ्रि। ई कथ्रिता भावनाक तीव्रताक कारणे हृदयगाही बथ्रि गेल अछ्रि। वृद थ्रिवाहक शब्द-थ्रिि चन्रनाि थ्रिश अमर (1925) बुढ़बा काका (1364 साल)मे अंथ्रिकत कयलथ्रि जे पुनथ्रिवािहक हेतु कतेक व्याकुल छथ्रि। एहन वृद-वरके देथ्रिख क’ के पाठक नथ्रि हैत जकरा हृदयमे आिशक भावनाक उदय नथ्रि हैत। एथ्रि परम्परासँ पभाथ्रित समाजक यिाि अथ्रिावयञ्जना वैदनाि थ्रिश यािी बूढ़वरमे कयलथ्रि :

- माि छलथ्रि औन्हल छाछ जका
- जीह गाजक जोलही माछ जका
- दात ने रहथ्रि थ्रिादन्त रहथ्रि
- बूथ्रि रहथ्रि घेति वसन्त रहथ्रि

थ्रिथ्रिलाक समसामथ्रिक समाजमे वृद-थ्रिवाहक पचलनक कारणे कन्या थ्रिय पािक पचलन भेल। एथ्रि पथ्रिपेक्यमे हथ्रिमोहन झा कन्याक थ्रिलामी डाक (1336 साल)मे पथ्रित कुलीन पािपर कुण्ठराित कयलथ्रि जे कन्या एवं वर पक्क घटक कोना मायाजालमे फँसा क’ कोमल कलीके वृदक संग थ्रिवाह थ्रिि करैत छथ्रि तकर माथ्रिकि थ्रिाणिसँ पभाथ्रित भ’ वैदनाि थ्रिश यािी जखन कहैत छथ्रि :

- देख’ मे सुखैल पकटैल काठ

रपैया बाथ्रि बूढ़ ऐला सौराठ

- ताि
- ई की कैल उठा क’ आनल
- कमलक कोढ़ी लै ढ़ेङ कोकनल
- बेटीके बेचलहुँ मडुआक दोबर
- बूढ़ बकलेल सँ भरलहुँ कोबर

आ उपयुक्ति पसंगमे चन्रनाि थ्रश अमर कहैत छथ्रि :

- आथ्रा देखौने कतहु नथ्र नमरैक लाह
- वृद थ्रवाहक दुष्पथ्रणाम होइछ अथ्रिकाश कन्या थ्रविा बथ्रा जाइछ। बाल-थ्रविाक जीवन केहन थ्रषाद पूर्णा होइछ तकर स्पष्ट थ्राकिन वैदनाि थ्रश यािी कयलथ्रा थ्रलाप कथ्रतामे। यिा :
- भुस्साक आथ्रा जका
- जरै छी मने मन हमहुँ
- फटै छी कुथ्रयारक पोर जका
- चैतक पछबामे ठोर जका

हथ्रमोहन झा अत्याि्थ्राक फैशन परस्त युवक-युवतीपर सेहो व्यंग्यक कुण्ठारािित कयलथ्रा जकर स्पष्ट थ्राि भेटैछ बूढ़ानाि (1960) काव्यमे। आि्थ्राक समाजमे नारीक चाथ्रथ्रिक उच्छृंखलता कतेक वेसी अथ्र ताथ्रपर कथ्र व्यंग्य करैत छथ्रि। एथ्रसँ पभाथ्रत भ' वैदनाि थ्रश यािी अत्याि्थ्राक राथ्रिकापर कटाक कयलथ्रा :

- देथ्र स्कूटर वाथ्रनी घुथ्रआउ सन्ध्याकाल
- कोनो होटल मि्यि बाट तकैत हैत बाके थ्रहारीलाल

युग चिकि कथ्र चन्रनाि थ्रश अमर जखन कटाक करैत छथ्रि :

सुन्दरता लै पुरष फटै छथ्रि
नारी वगकि कान कटै छथ्रि
तै तँ मथ्रला सब उथ्र चलली
काटै पुरषक कान कहौ के

आि्थ्राक फैशनक अथ्रा व्यापक पभाव पड़ल, जाथ्रसँ पभाथ्रत भ' परम्परावादी पथ्राडत लोकथ्रा सेहो एथ्रसँ अछूत नथ्र रथ्र सकलाह। ओ सभ सेहो आि्थ्राकताक संग चरणमे चरण थ्राला क' चलय

लगलाह। गोपाल जी झा गोपेश (1931-2009) एहने एक पोगा पण्डितपर व्यंग्य करैत छथि :

देखने छथिन्ह पण्डित जीके
टोस्टक संग चाहक चुस्की लैत
वैद्यको जी भेटलाह सिनेमेमे
देखय आएल छला राजकपूरक सतरंगी तमाशा

अत्याधुनिक सभ्यतामे जतय जनका दोष दृष्टिगत भेलन्हि तकरो ई व्यंग्यक आलम्बन बनौलन्हि। एहि दृष्टिएँ हिनक टी पाटी (2005 साल) विशुद हास्य-व्यंग्यसँ अनुप्राणित अछि जाहिसँ प्रभावित भ' गोपालजी झा गोपेश कतिपय कविताक रचना कयलन्हि।
धार्मिक पाखण्डक आलम्बन बना क' ई कतिपय काव्यक सृजन कयलन्हि। तन्त्र-मन्त्र, शास्त्र-पुराणक वितण्डावादक कारणे सामाजिक जीवन दिन पर दिन विषम भेल जा रहल अछि। धर्मक नामपर अपनाके अगदूत बुझनिहार पाखण्डी पण्डित लोकनिपर व्यंग्य क' कए धर्माचारक भण्डा फोड़लन्हि जकर प्रत्यक उदाहरण थिक हुनक पण्डित (1953) एवं पण्डित विलाप (1960)। एहिसँ प्रभावित भ' राजकमल चौधरी वैदनाथ मिश्रक पण्डा लोकनिपर, आदानाथ झा अंकुश (1934) गामक भूत एवं बहस्तिनिमे, काञ्चीनाथ झा किरण (1906-1989) माटिक महादेवमे (1950) तथा तन्त्रनाथ झा (1909-1994), मुसरी झा (1956)मे उपयुक्त पृष्ठभूमिमे व्यंग्य कयलन्हि जाहिमे हास्यक रूप स्वयं उदाहृत भ' गेल अछि। जहिना ओ अपन गद-साहित्यमे नारी जागरणक शंखनाद कयलन्हि तहिना ओ अपन काव्यमे सेहो उपयुक्त प्रवृत्तिके अधिक मुखर कयलन्हि जकर

स्पष्ट रप स्नक अङरेज्मया लड़कीक समुदाउन (1953) एवं बुचकुन बाबा (1358 साल)मे उपलब्ि होइछ। एक्सँ पभाव्त भ' परवती युवा कव्ा लोकब्ि कव्ापय काव्यक सृजन क' कए एकरा अध्िक मुखर कयलब्ि। स्नक ब्ारसन मामा (1953)सँ पभाव्त भ' वैदनाि ब्मश याि नवनाचारी ताि बुचकुन बाबासँ पभाव्त भ' गोपाल जी झा गोपेश कव्या काकाक रचना कयलब्ि।

ब्ान्न-ब्ान्न स्िानसँ पव्िकाब्क पकाशनक फलस्वरप ब्ाबन्ि-लेखनक एक पबल ज्ार आयल तकरे फलस्वरप हास्य-व्यंग्य ब्ब्ात ब्ाबन्िक पारम्पब्क शुभारम्भक पमाण थ्िक स्नक ब्ाबन्ि-साव्त्य जाव्मे ओ समसामव्क सामाव्क कुरीव्ा, पव्ाडत लोकब्क वाहाडम्बर आ पाचीन अन्धव्शवासके खव्ाडत करबाक ब्शामे जनमानसक ि्यानाकब्त कयलब्ि। पव्ने तँ स्नक ब्ाबंाि्ब वैदेही, ब्थ्िला दशनि, स्वदेश एवं ब्थ्िला ब्ब्रमे पकाव्ात भेल, व्कन्तु पश्चात् जा क' खटर ककाक तरंग पिम भाग (1948) आ व्तीय भाग (1955)मे पकाव्ात भेल जकर फलस्वरप एव्ि व्ािके अत्यध्िक बल भेटलैक। स्नक ब्ाबन्िक पमुख नायक छध्ि खटर कका जे पूणतः: व्नोदी पवृव्ाक व्यब्त छध्ि। स्नक पत्येक बात व्नोद पूणहोइत छब्ि। ई अपन पव्ात्पन्नमव्ात्क कारणे सव्खन काव्य-शास्ि-व्नोदक िारा पवाव्त करैत छध्ि। स्नक व्यंग्य युक्त व्नोद पूणकिनिमे व्यब्त, समाज, िमि दशनि आव्क कटु आलोचना उपलब्ि होइछ। ैकिरे जकरा राउण्ड एवाउट पेपसि कहलब्ि ओव्ि पव्पेक्यमे खटर कका पुरातन परम्परा यािअन्धव्शवास, िाब्कि पाखण्ड, ढ़ोग, रव्ि आव्पर व्यंगय क' कए भयानक व्रोह करैत छध्ि।

हुनक निबन्धक प्रमुख स्वर रहल अछि वेद-पुराण, कर्मकाण्ड, धर्म-शास्त्र, रामायण-महाभारत, ज्योतिष, आयुर्वेद, तन्त्र-मन्त्र, देवी-देवता, स्वर्ग-नरक, पुनर्जन्म-मोक आदि विषय विषयके ओ कोन रूपे देखलनि जे हुनका तार्किक निबन्धकारक कोटिमे प्रतिष्ठापित क' देलक। ओ गीता, दुर्गापाठ एवं सत्यनारायणक कथाक विनोदात्मक व्याख्या करैत छथि तँ सांख्य, वेदान्त एवं भगवत्-भजनपर व्यंग्यात्मक पिचकारी छोड़ैत छथि। हुनक निबन्ध साहित्य विजलीक करेंटक समान अछि। धार्मिक पाखण्डक खण्डनमे ओ प्रमाण एवं व्यंग्यवाणक झड़ी लगा देत छथि। हुनक निबन्धिकक पंक्ति-पंक्तिमे हास्य-व्यंग्यक अजस्र धारा प्रवाहित भेल अछि। विचार-प्रधान निबन्धिमे देखल जाइछ जे विचारात्मक एवं मूर्त्त भावात्मक गद्यशिल्पक सम्मिश्रण आ वाद-विवादक प्रसंगमे संयुक्त गम्भीर व्याख्यात्मक गद्य-शिल्पक तेजी रहैछ। एहन गद्य शिल्पक हेतु बात कहबाक लेल भाषा नहि तकैछ।

निबन्धक क्षेत्रमे हुनका द्वारा स्थापित परम्पराक परिप्रेक्ष्यमे परवर्ती युवा निबन्धकार एहि प्रवृत्तिसँ अनुप्राणित भ' आगा बढ़यबामे अद्भुत योगदान देलनि जकर संख्या सहस्राधिक अछि। किन्तु दुर्योगक विषय थिक जे जाहि परिमाणमे हास्य-व्यंग्यसँ संयुक्त निबन्ध विभिन्न पत्रिकादिमे प्रकाशित भेल ओकर अत्यल्प संग्रह प्रकाशमे आयल अछि। खट्टर ककाक तरंगसँ सर्वाधिक अनुप्राणित भेलाह अमृतधारी सिंह (1918-1992) तथा हुनक शैलीक अनुकरण क' कए घूटरबाबाक जाल (1976) एवं मन्मथेश्वर झा ओझा लेखे गाम बताहे (1979) प्रकाशमे आयल। उपर्युक्त दुनू निबन्ध संग्रहमे हास्य-व्यंग्यक संग कलात्मक रोचकताक समन्वय भेल अछि।

एतय एक बातक उल्लेख करब अधिक समीचीन हैत जे एहि विधामे

नव-नव पश्नाभा सम्मन श्नाबन्िकारके उपश्नति करबाक श्नशामे पटनासँ पकाश्नात श्नथिला श्नश्नर अत्यथिक पोत्साश्नत कयलक। श्नकन्तु एतबा कहबामे अश्नाशयोश्नत नश्न होयत जे जाश्न पकारक लोकश्नयता हश्नमोहन झा अश्नति कयलश्न ताश्न र पक लोकश्नयता अदाश्न श्नकनको नश्न भेटलश्न अश्न।

हश्नमोहन झाक पहसन, एकाकी एवं छाया र पक रचना क' कए एक पश्नामान पस्तुत कयलश्न जकर व्यापक पभाव परवती युगक युवा रचनाकमीपर पड़ल। एश्न सब रचनाश्नमे व्यंग्य एवं हास्यक पिनिता अश्न जाश्नमे ओ समाजके कंगाल बना देश्नाहार दहेज पि आ नारी जागरणक शंखनाद कयलश्न। एश्न दृश्न एँ तन्नािन झाक एकाकी चयश्नका (1947)मे कालेज पवेशमे एक अनुभवहीन, आिश्नकताक श्नय एवं अदजिान पाप्त छाि समुदाय, तमघैलमे स्वािी समाज आ उपनयनाक भोजमे सामाश्नक देष ति कुपिपर पपंच रचश्नाहार ति घटकक पराभवमे नव युवक समुदायपर व्यंग्य कयलश्न अश्न जे श्ननु कन्या देखने श्नवाहाि पिस्तुत नश्न होइत छश्न। योगानन्द झा मुश्नाक मश्नाभम (1953)मे वृद श्नवाहपर कठोर आघात कयलश्न जाश्नमे नाटकीय व्यंग्यक स्वर अश्निक पखर अश्न। सामाश्नक वातावरणक श्नश्नाष्ट सन्दभमि समसामश्नक घटनाक आिर बना क' चन्रनाि श्नश अमर समािन (1955)मे श्नरकरता श्नवारक पाठशालामे वयस्क श्नाकपर संगश्न नवीन पाठय पणालीमे आिश्नक श्नाक पदश्नपर ति मलरश्न (1961) हास्य-व्यंग्यक जे वातावरणक सृजन कयलश्न जे सवाश्निक श्नखरल अश्न। सुिशु शेखर चौिरी (1920-1990)क हिटूटा कुरसी (1960)मे दू पीढ़ीक मानश्नक वैषम्य, संघषि वाहाडम्बर, ममत्व एवं सामाश्नक पश्नवेशपर कठोर व्यंग्य कयलश्न

अछि।

एहि पवृत्तिके आगा बढ़यबाक दिशामे परमेश्वर मिश्र क’ त्रिवेणी, हरिश्चन्द्र झाक छीक, रूपकान्त ठाकुरक वचन वैष्णव (1965) एवं लगाम (1966), चन्द्रकान्त झाक वाल्टी क्लब (शाके 1881) एवं पढ़बाक खर्च(शाके 1881), पबोि नारायण सिंहक हारिक दात (1964), उदय नारायण सिंह नचिकेताक रामलीला (1977), जगदीश झाक मैथिली एकाकी पहसन (1988), किशोरी यादवक आँखिक बीझ (1987), मन्िश्वर झाक बहुरुपिया (1993) एवं ितिनगिरी (1993) समारोह (1991) एवं पराजय (1994) आदि-आदि एकाकी एवं पहसन हरिमोहन झाक हास्य-व्यंग्य शैलीक अनुकरण क’ कए लिखल गेल अछि।

एहि विधामे कतिपय एकाकी एवं पहसनकार उदूत भेलाह जनिक रचना विभिन्न पत्रिकादिमे ििल-ििसत भ’ रहल अछि जकर संकलन अदावधि पकाशमे नहि आबि सकल अछि। हमर विश्वास अछि जे भविष्यमे एहि विधिक अनुकरण क’ कए परवती युवा पीढ़ी नव रूपे हास्य-व्यंग्य पस्तुत करताह।

कारयित्री एवं भावयित्री पतिभासँ समलंकृत हरिमोहन झाक उपन्यास, एकाकी, एवं पहसन, किा, कविता, निबन्धादिमे हास्य-व्यंग्यक नव पवृत्तिक ओ जे नेओ देलनि तासँ अनुपाणित भ’ परवती युवा रचनाकमी राष्रीय एवं अन्तराष्रीय स्तरपर पभावित भेलाह जे उपयुक्ित विवेचनसँ स्पष्ट अछि। एहि पवृत्तिक हुनक विशाल साहित्यिक अवदान एक वट-वृक्क समान अछि जकर परिसरके केन्द्र-बिन्दु मानि परवती युवा रचनाकमी हास्य-व्यंग्यक अजस िारा पवाहित कयलनि आ पाठकवर्गक निमाण, स्त्री शिक्षाक व्यापक पसार, अनमेल विवाहक अंत, िार्मिक वितण्डावादमे सुिार, चारित्रिक

दुबर्लिताक विनाश, राजनीतिक मूल्यमे ह्रास, सामाजिक वातावरणक विशिष्ट सन्दर्भमे सुधारक प्रयोजनीयताकेँ ध्यानमे राखि रचना कयलनि। हिनक साहित्यक व्यापक प्रभावक फलस्वरूप परवर्ती युवा पीढ़ीक साहित्य मनीषीपर पड़लनि आ हुनक प्रतिभाक प्रस्फुटन भेलनि। हुनक साहित्यक विशाल परिधिकेँ ध्यानमे राखि क' जँ हुनका मैथिली साहित्यक चार्ल्स लैम्ब कहल जाय तँ कोनो अतिशयोक्ति नहि हैत। अंग्रेज समाजक जेहन चित्र बनाडशॉक रचनामे उपलब्ध होइछ ओही प्रकारक मिथिलाञ्चलक सामाजिक जीवनक विशिष्ट सन्दर्भक एलबम थिक हिनक साहित्य-संसार। जहिना सुस्वाद, चर्व्य, चोष्य, लेह, पेय भोजनकेँ प्राप्त भेलापर पेटूकेँ आनन्द होइछ तहिना हास्य-व्यंग्यमे अभिरुचि रखनिहार राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय युवा पीढ़ीक परवर्ती रचनाकारकेँ हास्य-व्यंग्यक ई एक नव मार्ग प्रशस्त कयलनि। हिनक साहित्य-संसारक लोकप्रियताक अनुमान तँ एहीसँ लगाओल जा सकैछ जे जहिना देवकीनन्दन खत्रीक उपन्यास चन्द्रकान्ता सन्ततिकेँ पढ़बाक हेतु अनेक अहिन्दी भाषी जनमानस हिन्दी सिखलनि तहिना हरिमोहन झाक चिताकर्षक हास्य-व्यंग्य रचनाक रसास्वादनक हेतु बहुतो लोक मैथिली सिखलक। हिनक विभिन्न रचनादि समय-समयपर विभिन्न आधुनिक भाषाक प्रमुख साप्ताहिक, पाक्षिक एवं मासिक पत्रिकादिमे अनूदित भ' प्रकाशित भ' अमैथिली भाषीकेँ आनन्दित कयलक। वस्तुता ई श्रेय आ प्रेय हिनकेँ छनि, जनिक साहित्य सर्वाधिक भाषामे अनूदित एवं समादृत भेल जे हिनका राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यमे अत्याधुनिक परिवेशमे युवा रचनाकारकेँ साहित्य-सृजनक निमित्त उत्प्रेरित कयलक। विद्यापतिक पश्चात् मैथिली भाषा-

साहित्यके अन्तराष्ट्रीय पहचान देनिहार रचनाकारमे हिनक समस्त साहित्य अजर, अमर एवं अकुण्ण रहत से हमर विश्वास अछि।

मिथिलेश कुमार झा, पिता श्री शिवनाथ झा जन्म 12-01-1970 के मनपौर(मातृक) मे पैतृक ग्राम-जगवन, पो*-बेनीपटी,जिला-मधुबनी, मिथिला, पिन*- 847223 डाक-संपर्क द्वारा- श्री शिवनाथ झा, 15, हाजरा रोड, कोलकाता-- 700026 शिक्षा : प्राथमिक शिक्षा- ग्रामसेवक विद्यालय मे। मध्य विद्यालय शिक्षा- मध्य विद्यालय, बेनीपटी सँ। माध्यमिक शिक्षा- श्री लीलाधर उच्च विद्यालय,बेनीपटीसँ इतिहास-प्रतिष्ठा क संग स्नातक-काशीदास विद्यापति साइंस कालेज उच्चैठ सँ, पत्रकारिता मे डिप्लोमा-पत्रकारिता महाविद्यालय(प्रचार माध्यम) दिल्ली सँ, कम्प्युटर मे डी.टी.पी ओ बेसिक ज्ञान। रचना: हिन्दी ओ मैथिली मे कविता, गजल, बाल कविता, बाल कथा,साहित्यिक ओ गैर-साहित्यिक निबंध, लघुकथा निबंध, साक्षात्कार, रिपोताज, फीचर आदि। प्रकाशित प्रथम रचना: हिन्दी मे मुखपृष्ठ अखबार का- जनसत्ता(कलकत्ता संस्करण) मे 19-10-94 के(कविता) मैथिली मे- विदा(कविता)-प्रवासक भेट(मैथिली मासिक कोलकाता)-अकाडमिक उपलब्धि नहि, आरक्षण आफ सिताक हेतु- आलेख(प्रवासक भेट-कोलकाता)- नवम्बर 1994 के। प्रकाशित रचना: मैथिली:- प्राय 15 गोट कविता, 17 गोट बाल कविता, 18 गोट लघुकथा, 3 गोट कथा, 1 टा बालकथा, 44 गोट आलेख आ 6 गोट अन्य विविध विषयक रचना प्रकाशित। प्रकाशित रचना:- हिन्दी:- प्राय 10 गोट कविता/गजल, 18 गोट आलेख, 1 गोट कथा

ओ 3 गोट श्वश्वि श्वषय पकाश्वात।

<u>समय–संकेत</u>

____ नमस्कार,कश्वया एलहुँ गामसँ ? काज नीके- जना सम्पन्न भेलै ने?

____ हँ- हँ, खूब नीकसँ सब श्वकछु भ' गेलै ।

____ ऐं यौ, अहाक बडका भैयाक की समाचार छश्व ?

____ बडका भैया ! ठीक छश्वि । --- माएक काज मे सब भाइ जुटल रश्वऐं ने । ओहो भेटल छलाह । --- ठीक छश्वि ।

____ --- --- !1 --- --- ‘ त ‘ भाए-भैयारीक भेट सेहो आब काजे-परोजने हेतै की !!! ‘ --- --- ओ छगुंता मे पश्वड़ गेल छलाह।

“हम मैथिल” (मैथिली त्रैमासिक) पत्रिकाक लोकार्पण

दिनाक २६.०७.०९ (रवि दिन) के हावड़ाक मेडिकल क्लबक सभागारमे साझू पहर आयोजित एकटा कार्यक्रममे मैथिली त्रैमासिक “हम मैथिल”क लोकार्पण भेल।

एहि कार्यक्रमक अध्यक्षता कएलन्हि श्री किशोरीकान्त मिश्र। कार्यक्रमक उद्घाटन कएलन्हि श्री युगल किशोर झा, अतिथि छलाह श्री गंगा झा ओ श्री रामलोचन ठाकुर। पत्रिकाक विमोचन श्री नवीन चौधरीक हाथे भेल। संचालन कएलन्हि श्री प्रमोद ठाकुर। एहि अवसरपर विभिन्न वक्ता लोकनि पत्रिकाक हेतु हर्ष जनबैत संपादक-प्रकाशकके शुभकामना देलन्हि।

दोसर सत्रमे श्री रामलोचन ठाकुरक अध्यक्षतामे एकटा कवि सम्मेलन भेल। एहिमे कविता पाठ कएलन्हि श्री अजय कुमार झा “शिवरहुआया”, श्री अमरनाथ झा “भारती”, श्री अनमोल झा, श्री अखिलेश कुमार झा, श्री विनय भूषण आ श्री रामलोचन ठाकुर।

कार्यक्रमक अन्तमे श्री मनमोहन चंचल धन्यवाद ज्ञापन कएलन्हि।

लोकार्पित पत्रिका:

हम मैथिल (प्रवेशाक जुलाइ-सितम्बर २००९)

प्रधान सम्पादक-श्री रामलोचन ठाकुर

संपादक-श्री मनमोहन मिश्र “चंचल”

संपादकीय पता-१४८ सी.रोड, बामनगाछी, सलकिया, हावड़ा-६, फोन-९९०३२०१०५०

पृष्ठ-४०, दाम-१६ टाका

"संपर्क"क माथ्मक बैसार

१२ जुलाइ २००९ (कोलकाता)-संपकक्‍ि जुलाइ मासक बैसार श्चायमानुसार मासक दोसर रश्च (१२ जुलाइ)के संध्या पाच बजेसँ नवीन पकाशनक कायालय-कक्मे भेल। एश्च बैसारक अध्यक्ता शी नवीन चौिरी कएलश्च। आरश्चमक कुशल-क्मे ओ श्चश्चि चचाक उपरान्त उपश्चित रचनाकार लोकश्च अपन-अपन रचनाक पाठ कएलश्च। संपकक्‍ि परम्परानुसार संपकमी पस्तुत रचना टटका, अपकाश्चात ओ अपश्चत होइछ। पस्तुत रचना सभपर उपश्चित शोतागण अपन-अपन पश्चाश्चिया जनौलश्च। रचनाक पाठ कएश्चाहार रचनाकार छलाह-श्चश्चिलेश कुमार झा (समय-संकेत, उपकार-लघुकि), अनमोल झा (नीक लगैत अश्च हमरा-कश्चता), सुरेन्र ठाकुर (देखब कही श्चलश्च नश्चि जाए-कश्चता, मुइल राष्र-कि), नवीन चौिरी (दू गोट कि)। पश्चत रचना पर उक्त रचनाकार सभक संगश्च शी श्चकशोरीकान्त श्चश, शी नवोनारायण श्चश, शी देवशंकर श्चश, शी रोश्चत श्चश, शी श्चमलकान्त श्चश, शी शंकर श्चश आश्चद अपन पश्चाश्चिया जनौलश्च।

हेमचन्द्र झा

अगसोची

आई महेश बाबू अपन तीनू बेटा अजय, विजय आ दुजयिक संग कोनो विशेष मुद्दापर गप्प कऽ रहल छथि। गप्प कखनो फुसुर-फुसुर होईत अछि तँ कखनो तेज भऽ जाईत अछि।
ओना महेज बाबू पैघ कया गृहस्थ। अपन गृहस्थीक बलपर तीनू बेटाके पढ़ेलथि लिखेलथि आ तीनू बेटीक बियाहो केलथि। सम्प्रति खन गाम घरसँ जूड़ल रहयवला महेश बाबू पहिले बेर दिल्ली अयलाह अछि, तीनू बेटा दिल्लीएमे छथि। अपने दुनू प्राणी गाममे छथि। तीनू बेटी सासुर बसैत छथि। खेत पथार बटाईपर छथि, तथापि ततेक भऽ जाईत छथि जे कोनो बेटासँ कथियो मंगबाक पयोजन नहि पड़ैत छथि। गाममे सभ कहैत अछि जे महेश बेस सुभितगर आदमी अछि, एकर परिवार बेस नीक छैक, सभ अपन पायरपर ठाढ़ छैक------ आदि।
आ ते महेशबाबू गाममे आबि रहलाह छलाह। कहिया दिल्ली बेटा सभसँ भेट करक लेल या धीया पुता सभके देखबाक लेल ओ नहि अयलाह

सालमे एक-आि बेर बेटे सभ गाम जाईत छलथि। तािथ एक्कबेर मुदे से फँथि गेलथि जे दुगापूजाक बाद ओ अपन एकटा गौआक संग थल्ली अयलाह। सामने थयावाती या छथ्क रहबाक बावजूदो ओ एलाह।

यदथ तीनू बेटामे िड़-बहुत मतातर रहैत छल, परन्तु ओ पाय: पकट नथ्क होईत छल। मुदा एक्क बेर फागुनमे अजयक जेठकी बेटीक कनेदानमे से नथ्क भेल। गप्प-शप्पक िममे नथ्क जाथि कोन गप्पपर मथ्झली पुतोहु आत्मदाहक पयास केलकथि। यदथ थनक समय छल आ कनेदान-दुरागमन रहबाक कारणे बेथ्टयो सभ छलथि ते बात आगू नथ्क बढ़लैक आ माथिला िथि गेलैक। गाममे ई बात जंगलक आथि जेका पसथि गेल आ देखैत-देखैत पूरा गामक लोक जमा भऽ गेल। महेश बाबूक सभटा संथित पथ्ाष्ठा आ सुख-चेन जेना छनथ्कमे देखार भऽ गेलथि।

कथिये थनक बाद बेटा सभ सपथ्वार वापस चथ्ल गेलथि आ तीनू बेथ्टयो अपन-अपन सासुर थ्ाचेनसँ आब महेश-बाबू पूरा पकरनपर थचार करय लगलाह जे एना भेल थ्कएक। गाम-घरमे सेहो लोक सभसँ थचार-थमशा केलथि ई बुझवामे भागठ नथ्क रहलथि जे सभक जथ्क छैक पाई। मास्टर साहेब तँ पकटत: कथ्कयो देलथ्थन जे अहा अपन जीबैत पाईवला झंझथ्ट थ्कएक ने फथ्रया दैत थ्छयैक?

वस्तुत: ६-७ साल पहथि महेश बाबू पाही पटीक एकटा एक थ्ाघवा खेत बेचलथि। अपनासँ आब ओकर रखवाली कयल पार नथ्क लगैत छलथि, ते ओकरा बेच देलथि। थ्कछु पाई तँ जमीनमे फँसेलाह, थ्कछु जमाय सभ लऽ गेलथ्थन आ बाकी ४०,००० थ्फक्स कऽ देलाह। ओही साल अजयक बेटाक मूड़न जमा भेल। अजय येन-केन पकारेण दुनू छोट भायके बुझा देलथि जे बैकमे पाई राखलासँ की फायदा

होयत। ई पाई हमरा दऽ थ्रदअ। हम शेयर बजारमे एकरा लगायब आ गामक बाकी सभ काज हमरा थ्रम्मामे रहत। हम एक्कश्च सालमे एकरा दोबर-तेबर कऽ लेब आश्च।
परंतु से भेल नश्च। कारण जे हो। दू-तीन साल बीतलाक बाद अजय राम कहानी शुर केलथ्रा जे हमरा शेयरमे घाटा लाथ्रा गेल। तािथ्र सभ सब केने रहल जे की पता शेयरक दाम बश्च़ जाई। परंतु ई की? एक थ्रदन गप्प शप्पक िममे जेठकी थ्रदयादनी मश्चली थ्रदयादनीके कहलथ्रिन्ह जे अहा सभ आब ओई पाईके थ्रबसथ्र जाईयौ। अहाक भैसुर घरक लेल ई केलथ्रि ओ केलथ्रि.....।
आ एही मुद्दापर कनेदान आ दुरागमन संपन्न होईतश्च उक्त घटना घटल। महेश बाबू शीघाश्चाशीघ एकर समािन करय चाहैत छलाह। तािथ्र आषाढ़- सोनमे गामसँ बहरेताह कोना, ते दुगापूजाक बाद थ्रदल्ली अयलाह, खास कऽ कऽ एश्च माथ्रालाक पंचैती करक लेल। पश्चने पहुँचलाह अजयक डेरापर, ओश्चठाम हाज-भाज लेलथ्रा ,परंतु ई नश्च कहलथ्रा जे एश्च काजक लेल आयल छी। थ्रजयक डेरा लगे छल। ओतहु गेला आ समटा बात बुझलथ्रा। भरदुश्चाया थ्रदन पहुँचलाह दुजथ्रिक डेरा। अजय आ थ्रजय सेहो रहथ्रा संगमे। फश्चछौढ भऽ सकैत छल ओही थ्रदन परंतु दुजथ्रिक थ्रबनु हाज-भाज लेने ओ गप्प कहब उथ्रचत नश्च बुझलाह। दुजथ्रिके स्पष्टत: कहलथ्रा जे हम एश्च काजक लेल आयल छी आ एकर समािनक रस्ता देखौलेन से तो ओई ४०,०००मे थ्रबस्सा नश्च लहक। हम कश्च सुथ्राके थ्रजयके थ्रकछु थ्रदया दैत थ्रछयैक आ एश्च तरहे हमर इज्जथ्रा पश्चाषा बचा दय। चूंथ्रक गप्प इज्जत पश्चाषाक छल, दुजेय माथ्रा गेल आ रथ्र थ्रदन सभ भाईक बजाहथ्रट भेल एश्च लेल।

पश्चने तँ अजयक सामनेमे पस्ताव भेल जे तो ४०,०००×२ = ८०,००० के तीनू भाईमे बाश्च देहक। परंतु अजय तकरिखलक जे हम एश्च बीच गाममे अलान-फलान खचकिलहुँ आ ते हम पाई नश्च देब। संगश्च ई पश्चवारक पश्चल कनेदान छलैक, एश्चमे श्चनको सभके शेयर देबय पड़तश्चा आ ई सभ शेयर नश्च देलाह, ते श्चनका सभक श्चस्सा कश्च गेल। तकसूश्चा सभ अकक् रश्च गेल। दुजेय स्वयं कनेदानमे पस्ताव रखने छल जे अहाक की पोजीशन अश्च से कहू तँ हमहूँ श्चकछु इंतजाम करैत छी। अजय मना कऽ देने छलाह। परंतु हुनका की बूझल छलश्चा से ओश्च सझीवा पाईमे सँ हुनक श्चस्सा कश्च गेलश्चा। तहन अजयके कहल गेल जे ई ठीक नश्च केलह तँ ओ दोसर पस्ताव रखलश्चा जे अहा गाम जाउ आ खेत बेश्चके दुनू भाईके ४० ४० दऽश्चयनु। ई पस्ताव तँ श्चकन्नहु नै मानल जा सकैत छल। पयाप्त कहा-सुनीक बाद अंतत: अजय २०,००० देबपर सहमत भेलाह आ ई फैसला भेल जे ओ २०,००० श्चजयके दऽ देश्चन। एवं पकारेण महेश बाबू एश्च मुदासँ जान छोड़ेलश्चा।

एश्च सभ घटना िममे अगसोचीक बुश्चक तारीफ करय पड़त। कनेदानसँ ६-७ साल पश्चने योजना बद ढंगसँ समटा सझेवा पाई अपन कब्जामे करब आ कनेदानक बाद श्चस्साक नामपर काटब, वस्तुता- हुनक ितित आ चालाकीक उत्कृष उदाहरण छल। अगसोची सुखी रहलाह। श्चनु कोनो हुज्जश्चाके पश्चल कनेदान श्चकश्च गेलश्चा। सभसँ घाटामे रहल दुजय। ओकरा हा श्चकछु नै एलैक। लेश्चकन ओ पयाप्त खुश छल जे सभटा पश्चने देखार भऽ गेलैक। अन्यि भाईमे सभसँ छोट रहने ओ सभ श्चन सभक मदश्च करैत रश्चतय आ अपना बेरमे श्चकयोनै आश्च तैक मदश्च करय आ तटबक पछतेलासँ की लाभ होईतैक?

<u>गोनू झाक पंचैती</u>

गोनू झा आ चोरक लुका-छिपी बहुत दिन सँ चलैत रहल । चोर सभ ठकायल, घटायल आ पकड़ायल तैयो हारि नहि मानलक । एक बेर गोनूक घर मे हाथ लागि गेला सँ निक जे आशा रहैक से तँ रहबे करैक, सभ सँ बेसी चिन्ता रहैक गोनूक हाथे बेर-बेर भेल अपमानक बदला लेनाई । चोर सभ साझ आ राति मे जा कऽ छका चुकल छल या पकड़ा चुकल छल । भेष बदलि कऽ साझे पहुँचला सँ सेहो किछु लाभ नहि भेलैक आ एहि चकर मे गोनूक बाड़ी तमनाई सँ लऽ कऽ हुनकर गहूम धरि पटा चुकल चल । आब एकेटा उपाय छलैक जे कोनो दिन गोनू देरी सँ घर आबथि आ ता सबेरे सकाल हुनका घर मे हाथ साफ कऽ देल जाय । चोर सभ एहि दिशा मे काज करब आ सिआयाइडी लेब शुरु कऽ देलक ।

एमहर गोनू आई-काल्हि राज दरबार मे काजक अधिकता सँ विलम्ब सँ घर अबैत छलाह । चोर सभ एही ताक मे रहय । ताहू मे एकटा खतरा रहैक जे तँ एमहर घर मे पैसी आ ओमहर गोनू हाजिर भऽ जाथि तखन की होयत । एकेटा उपाय रहैक जे येन-केन पकारेण घर वापस अबैत काल गोनू के भागक बहाने रोकल जाय आ ओमहर किछु चोर मिलि के हुनका घर मे तावत हाथ साफ कऽ दैक । सैह योजना बनल । एहिना एक दिन गोनू कने अबेर दबा के घर अबैत रहथि । ओ सभ दिन भाग चढ़ा के घर आबथि आ ओहि दिन अबेर हेबाक बादो रस्ता मे एक गोटाक आगह पर भाग घिबाक लेल बैसि गेलाह । ओ भाग घिबाक लेल बैसले छलाह कि किछु अपरिचित चेहरा सभ के देखलन्हि जे ओतय आबि के बैसि

गेल आ हुनका आगह पर आगह करय लगलथि । गोनू के ई बुझबा मे भागठ नहि रहलथि जे एहि मे किछु चाथि जरूर छैक ।

एमहर राति बितैत जाईक । गोनू के एकाएक घरक सुरताक िआन एलथि । घर मे पती असगरे चलथिन आ ताहू मे ओहि दिन हुनकर वस्त्र रहथि । अथिलाक नारी पत्नि के बिनु खोएने खईतथि कोना, बड़ी राति धरि गोनूक इंतजार करैत रहलीह । हारि के तमसा के हुनक पती खा लेलीह । तत्पश्चात पती सूति रहलीह । तामस तँ रहबे करथि आ ताहि दारे भरि पेट खाईयो ने सकलीह तथि कहुना के अन्हा-पन्हा के सूति रहलीह, ई विशय करैत जे आई भरि राति गोनू के बाहरे ठाढ़ रखतीह ।

गोनू के जहन सभटा माजराक आशंका भेलैन तँ ओ झूठ-मूठ तुरंते नशा चढबाक बहाना केलथि आ ओतय सँ चलि पड़लाह । चोर तँ सोचने छल जे जा गोनू नशा मे मत घर पहुँचताह ता हुनक संगी सभ हाि साफ कऽ देत । ओमहर गोनूक घरक अगल-बगल छूपल चोर हुनका पती के सूतल देखि सेन्ह काटि घर मे ढूकि गेल आ ई अकानय लागल जे हुनक पती नीक जेका सूति रहलीह वा नहि । ओमहर गोनू भाग पीबि दौगले घर पहुँचलाह आ लगलाह केबाड़ के जोर-जोर सँ पीटय । बड़ी काल बाद पती घर खोललीह आ बरसि पड़लीह गोनू पर । गोनू घर मे पवेश कयला तँ हुनका ई बुझबा मे भागठ नहि रहलथि जे आई फेर चोर सभ हमरा घर मे आबि गेल अछि । ओमहर चोरक संकट आ एमहर पतीक संभाषण । गोनू कने काल धरि शात रहलाह आ चोर के पकड़बाक योजना पर विचार करय लगलाह । ता धरि पतीक संभाषण चालूये छल । कनेक काल शात रहलाक बाद गोनू बरसि पड़लाह पती पर ।

फेर की छल, दुनू दिस सँ वाक्युद होमय लागल । राति

कने बेसी बीश्वा गेल रहैक । लोक सभ घरे-घरे सूश्वा रहल छल । तािथ्य गोनू आ हुनक पतीक आवाज सूश्वा सभ श्वकयो जमा होइत गेल । िीरे-िीरे पूरा टोलक लोक जमा भऽ गेल । आब चोर सभ बेस फेर मे पड़ल । आब भाश्वायो नश्च सकैत छल । हाश्व के ओ सभ दम साश्वि के बैसल रहल ।

लोकक जमा भऽ गेलाक बादो गोनू आ हुनक पतीक वाक~युद चश्वाते रहल । लोक सभ बीच मे गोनू के चुप कराबय चाहलश्वा । तािथ्य ओ बजलाह जे ई हमर घरक माश्वला अश्छ अहा सभ जाउ । तािथ्य भीतर सँ पती एकर पश्वावाद केलश्वन जे टोलक लोक सभ आई एश्च झगड़ाक पंचैती कऽ के जाउि । झगड़ाक िम मे गोनू बाहर रहश्वि आ हुनक पती घरक अंदर । ओ घरक अंदरे सँ एश्च बात पर जोर देलश्वा जे आई एश्च झगड़ाक पंचैती भऽ कऽ रहय । अंत मे टोलबैयाक आगह पर दुनू गोटे शात भेलाह आ पंचैती पर रजामंदी देखेलैन । तािथ्य गोनू कहलश्वन जे अहा मे सँ श्वकयो शुर सँ हमरा लोकश्वाक झगड़ा देखलौह अश्छ जे पंचैती करब । जाउ एहन व्यश्वक्त के बजा के लाउ जे शुर सँ हमरा लोकश्वाक झगड़ा देखने हो ओएह उश्वात पंचैती कऽ सकैत अश्छ ।

गोनूक ई गप्प सूश्वा सभ अवाक् रश्च गेल । बड़ श्वकट समस्या छल । सते टोलबैया मे सँ श्वकयो शुर सँ दुनू गोटाक झगड़ा नश्च देखने छलाह । तािथ्य श्वकयो बजलाह - गोनू बाबू एहन पंच तँ नश्च भेटत । अहा दुनू गोटे अपन-अपन बात रश्वयौक आ ताही आिर पर पंचैती हेतैक । तािथ्य गोनू बजलाह जे जँ हम एहन लोकक पता बता दी जे शुर सँ हमरा सभक झगड़ा देखलक अश्छ, तँ ओकर बात अहा सभ मानबैक? एश्च पर लोक सभ तैयार

भऽ गेल । गोनू इशारा केलथि लोक के जे घरक दक्षिण-पश्चिम कोन पर चारि-पाच टा पंच छथि । हुनके सभ के पकड़ू के आनू ।

लोक सभ बूझि गेल गोनू बाबूक चालि आ फेर पकड़ा गेल चोरबा सभ सीने पर । सभ मिलकयो मीलि खूब पीटलथि चोरबा के आ ओ सभ येन-केन पकारेण कुहरैत-हुकरैत अपन घर पहुँचल आ गोनूक घर मे चोरि करबाक सपनाक तिलाजलि दऽ देलक ।

(इ कथा स्मृति पर आधारित अछि)

साढ़े तीनो लाख

" अपने तीन भाई छी, तँ कम सँ कम साढ़े तीनो लाख तँ गनबै; थदेसर बाबूक ई वाक्य जेना रमणक हृदय पर बज्राघात के देलक । हुनक मूँहक बकार बन्न भऽ गेलन्हि । पछिला छह महीना तँ जाहि कनिक पाछू पड़ल छलाह, तकर आश ई पाती तोड़ि देलकन्हि । एहूठाम कुटमैती नहि भऽ पेबाक पीड़ा हुनका चेहरा पर साफ देखाई दऽ रहल छलन्हि । आब रमणक लेल एहिठाम एको मिनट काटब पहाड़ छलन्हि । जेना-तेना आगूक कपमे बाचल चाह ओ समाप्त केलन्हि आ ओहिठाम सँ चलबाक उपक्रम करय लगलाह । हुनक मोन मे झंझावातक पवाह चलि रहल छल । बेर-बेर ओ झंझावात जेना जीह धरि आबि के रुकि जाईत छल । रमण बाबू कन्यागत छलाह] रे पाय: बजबाक हक नहि छलन्हि हुनका । किछु बाजि ओ अपन-अपन मोन हल्लुक करय चाहैत छलाह । तथापि बात जेना मोन सँ जीह पर आबि अटकि जाईत छलन्हि ।

तथापि एहि झंझवात मे मोन तँ ई कहिये देखकन्हि जे काज तँ नहिये भेलौ,तहन चुप्प किएक छे ? जे बजबाक छौ से बाजि दही आ मोनक भरास निकालि ले । एहि उहापोह मे ५-१० मिनट आर बीति गेल । तथापि अंतता चुप्पी के तोड़ैत रमण बजलाह " हमरा पहिने सँ शंका छल जे अपने दहेज वला गप्प उठेबे करबै आ ते हम पहिनहि अहा ओहिठाम नहि आबय चाहैत छलहुँ । हमरा अपन आर्थिक सीमा जात अछि आ हम बुझैत छलहुँ जे अहा एहिठाम कुटमैती मे नहि सकब । तथापि अपने के हमर बहिनया पहिलन छल

आ अही काज पर विशेष जोर द' क' हमरा बजौने छलहुँ । आ ते हम आयल रही । तिथि पाईवला गप्प अपने उठाइये देलियैक । एहि संबंधि मे हम एतबे कहब जे हिनिऔआ गनबाक सामर्थ्य हिमरा मे नहि अछि । तिथि अपन बेटीक बियाह मे जतय भि भऽ सकत करब । ताहि शर्तपिर जँ अपने के किछि मंजूर हो तँ बेस, नहि तँ आजा देल जाऊ । ''

रमणक बातक तत्काल कोनो जवाब नहि द' सकलाह विदेसर बाबू । हुनक माथि झुकि गेलनि । एकबेर फेर वातावरण मे चुप्पी पसरि गेल । एही चुप्पीक मध्य रमण बाबू नमस्कार पातीक बाद ओहिठाम सँ विदा भ' गेलाह ।

रमण दिल्ली महानगर मे एकाउन्टेन्टक एकटा छोट-छीन नोकरी करैत छला । पाच गोटाक परिवार छलैक । दूटा जेठ बच्चिया आ सभ सँ छोट बचवा । पहिल कन्यादानक चक्कर मे साल भरि सँ घूमि रहल छला । कतहु बर पसंद होई तँ घर नहि । जतय दुनू पसंद होई ततय नकदी सुनि चुप्पे वापस भ' जाय । तिथि एहिठाम उम्मीद रहैक जे काज पटि जायत । कारण काजक शुभारंभ विदेसर बाबू स्वयं कयने रहथि ।

विदेसर बाबू सेनाक सिविल ड्यूटी मे अधिकारी वर्गसँ इलाहाबाद सँ रिटायर भेल छलाह । अपन दू पुत्रि संग दिल्लीए मे निवास करैत छलाह । गाम-घरक सम्पन्न लोक छलाह । गाम पर खेत-पथिार सहित घर-आँगन सभ किछु व्यवस्थित छलनि । जेठ पुत्रि आजी केरिक कोनो कंपनी मे नीक पद पर कार्यरत छलनि आ छोट पुत्रि स्व-रोजगार मे लागल छलनि । घरे लग एकटा कॉस्मेटिक्सक दोकान खोलने छलाह । वस्तुतः हुनके बियाहक लेल एकटा नीक परिवारक लड़कीक तलाश छलनि विदेसर बाबू के ।

पभात रमणक मश्चयौत श्चदेसर बाबूक पड़ोस मे रहैत छलाह । पभात एखन अध्ययनरत छलाह आ यदा-कदा श्चदेसर बाबू ओश्चठाम गेल करश्चि । गप्प-शप्पक िम मे श्चदेसर बाबू हुनका सँ अपन पुिक श्चयाहक बात कहलश्चि । श्चदेसर बाबू कहलाह जे हमरा घरेलू काज मे दक, सुन्नर आ कनेक पढ़ल-श्चखल कन्या चाही । पभातक ध्यान तत्काल रमणक जेठकी बश्चया पर गेल आ ओ श्चदेसर बाबू के एश्च संबंि मे श्चस्तार सँ बता देलश्च । संगश्च पभात ईहो स्पष क’ देलक जे हमर श्चश्चयौत रमण बाबू अहा मे सकताह नश्च आ ते यश्च पाई-कैड़ी वला गप्प रखबैक तँ ओ काज नश्च क’ सकताह ।

पभात अश्चला रश्च के रमणक डेरा पर पहुँचलाह आ पस्तावक संबंि मे रमण के कहलश्च । रमण के पस्ताव नीक लगलश्च आ ते ओ अपन बश्चयाक फोटो आश्च पभात के द’ देलश्च । संगश्च रमण ईहो कहलाह जे हमरा जहा श्चि होयत हम गानब, ताश्चि हुनका हैश्चयतक अनुसार हम नश्चं सकब से स्पष कश्च दैत श्चयह । ते पश्चने हुनका सँ पाईवला गप्प खुलबा लीह आ तखने गप्प आगू बढ़श्चयबह ।

रमणक गप्प मे अपन स्वीकारोक्श्च दैत पभात फोटो आश्च लेलक आ अपन डेरा पर वापस आश्च गेल । श्चकछु श्चनक बाद श्चदेसर बाबू सँ फेर ओकर भेट भेलैक आ श्चदेसर बाबू फेर पूश्च देलश्चन्ह किक पसंग । एश्च बेर पभात स्पष कहलकश्च जे हम किक पसंग अपन श्चश्चयौत सँ गप्प केलहुँ अश्च, परन्तु चूँश्चक ओ अहाक हैश्चयत मे नश्च सकताह, ते कहलश्च अश्च जे अहा अपन श्चमाड स्पष रप सँ बता श्चयौ, ताश्चक तदनुसार ओ आगू श्चचार

करताह ।

“ श्वमाडक कोनो एहन बात नश्च छैक । हुनका श्वंता नश्च करय कश्चयौन । हमरा हुनक बश्चया पसंद अश्च । हुनका कश्चयौन जे हमरा भेट करश्चि ।” - श्चदेसर बाबू कहलाह । तत्पश्चात पभात शीघे रमण के फोन केलकश्च आ अश्चले रश्च श्वन श्चदेसर बाबू ओश्चठाम जेबाक पोगाम तय भ’ गेल । चूँश्क रमण एश्च बेर आशाश्चत छल, ते संग मे अपन जेठ भाय श्चनोद या छोट भाय महेश के सेहो ल’ लेलक । अपने तीनू भाई रमण आ पभात सश्चत चाश्च गोटा कोना जाईत ते रमण अपन श्चश्चयौत श्चनय के सेहो संग क’ लेलश्च आ दू बजे श्वन श्चि श्चदेसर बाबू ओश्चठाम पहुँश्च गेलाह ।

तश्चि श्चदेसर बाबू ओश्चठाम पहुँचबा सँ पूर्व सभ श्वकयो पभातक डेरा पर जमा भेलाह आ पश्चने अपना मे श्चचार-श्चमर्श केलाह । श्चनोद रमण सँ पुछलश्च जे एश्च कनेदान मे तोहर कतेक बजट छौक । रमण कहलाह जे हम एक सँ सवा लाख गानब आ आगू बश्चयाती खर्च दुरागमन आश्च सभ ते छैके । श्चचार-श्चमर्शक बाद सभ श्वकयो श्चदेसर बाबू ओश्चठाम हाश्चर भेलाह ।

श्चश्चलाक पारंपश्चक रीश्चए श्चदेसर बाबू सभक स्वागत केलश्च । नमस्कार पाती समाप्त भेलाक बाद पश्चचय पात भेल । दुनू पक एक-दोसर के श्चस्तार सँ अपन पश्चचय देलश्च । फेर गाम घरक सश्च-पातक गप्प भेल । श्वकछु इलाहाबादक नोकरीक गप्प सेहो भेल आ पटना मे जमीन लेबाक गप्प सेहो उठल । गोश्च-मूल आश्च सश्चत वर्तमान मँहगाई, नोकश्चहाराक समस्या श्चश्चलाक बाश्च, राजनीश्चक घटना-चश्च आ गाम-घर मे श्वन-श्वन घटल जाईत श्चन-पाश्चक मुदा पर सेहो श्चचारक आदान-पदान भेल । कन्यागत श्वस

सँ लाख आवेदनक बादो बिदेसर बाबू-पाईवाला गप्प ओहू दिन नहि बजबाह । एवं-प्रेमेण चाह बांटल गेल । सभा-तोड़बाक समय सेहो भेल । अपन पाईवला गप्प तँ बिदेसर बाबू नहिये बजलाह, तथापि कन्यागत सँ जरूर खुलाबय चाहलाह । आखिर दुनू पक्ष दिस सँ पाईवला गप्प नहि आकलल ।

अंत मे सभा के समाप्त दिस ल' जाईत बिदेसर बाबू बजलाह-'तहन अहा लोकनिक की विचार भेल । चूँकि पाईवला गप्प एखनहुँ अस्पष्ट छल ते विनोद ई कहैत सभा समाप्त केलाह जे हम सभ पहिने लड़का देखि लैत छियैक आ तत्पश्चात् विचार-विमर्श उपरात अपने सँ फेर भेट हेतैक ।

पाचो गोटा कन्यागत बिदेसर बाबू आ हुनक जेठ बालकक संग लड़का के देखबाक लेल दोकान पर पहुँचलाह । लड़का के देखि हुनका सँ कनेक काल गप्प केलाक बाद सभ गोटे ओतय सँ चलि देलाह । बस स्टेण्ड धरि बिदेसर बाबू अरियातय एलाह । नमस्कार-पातीक औपचारिकताक बाद बिदेसर बाबू वापस भेलाह आ फेर सभ कियो पभातक डेरा पर जमा भेलाह ।

तीनू भाई रमं अपन पितिऔत आ ममिऔतक संग एहि पर फेर विचार केलनि । अंतता इ निर्णय भेल जे पभात भौजी के आबि के लड़का देखा देल जाय, एहि रूपे जे एहि ठामक लोक वा लड़का नहि बूझि सकथि । जँ भौजी (लड़कीक माय) के लड़का पसन्द हेतैन तँ अगिला रवि दिन रमण स्वयं असगरे बिदेसर बाबू सँ भेट करथि आ हुनका समक आदर्श विवाह कऽ लेबाक पस्ताव राखथि । आ तत्पश्चात् जँ पाई-कौड़ीक गप्प उठैक तँ अपन अधिकतम सामर्थ्य एक-सवा लाख बता देथि ।

तदनुसार बीचक्चे मे एक श्वदन पभात आयल आ भौजी के ल' क' लड़का देखेबाक लेल गेल । भौजी के लड़का पसन्द पड़लश्वा आ ते रमण अपन पूवश्विा िश्चत कायिमक अनुसार अश्वाला रश्च के श्चदेसर बाबू ओश्चठाम पहुँचलाह । िड़े काल एम्हर-ओम्हर के गप्प भेलैक आ एही िम मे रमण आदशिकि ा क' लेबाक पस्ताव श्चदेसर बाबु लग रखलश्वा । संगश्च इहो कहलश्वा जे हमर बेटीक श्चयाह श्वीक, ते अपन सामथ्यिक अनुसार गोर लगाई कश्च जहा िश्च भ' सकत नगदीक व्यवसि ा करब ।

रमणक एश्च पस्तावक तत्काल उतर नश्च द' सकलाह श्चदेसर बाबू । नगद टाका छुटैत देश्वि हुनक पश्चलुका सभटा आदशि ियिले रश्च गेल । अपन कहलाहा सभटा गप्प जेना श्चदेसर बाबू के मोन पश्च गेलश्वा । हुनक वाक् बन्न भ' गेलश्वा । कन्यागत सँ एहन आशा नश्च रहश्वा । हुनका मोन मे वस्तुता की रहश्वा से सँ ओएह बुझश्वि,परंतु चेहराक भाव बता रहल छलश्वा जे ओ एहन भारी घाटा नश्च सश्च सकैत छश्वि । वातावरण मे कनेक कालक लेल चुप्पी पसश्च गेल ।

रमण सँ ५ श्वानटक समय ल' क' श्चदेसर बाबू घरक भीतर गेलाह । ता िश्च रमण शात-श्चात बैसस रहल । श्चदेसर बाबू कश्वाये काल मे वापस भेलाह आ बजलाह - "अपने तीन भाई छी नोकरी मे, कम सँ कम साढ़े तीनो लाख तँ गनबे करबैक" । श्चदेसर बाबूक ई वाक्य पश्चछला छह महीना सँ जोड़ल गेल कि ा-सूि के समाप्त क'देलक ।

एना थ्कएक?

मनू भाय रहथ्ि सामाथ्जक लोक । सभक हाड़ी-थ्बमारी आ बर-बेगरता मे ठाढ़ रहब रहथ्न हुनक कतथ्ि । गाम मे थ्कनको ओथ्हठाम कोनो काज होई मनू भाय हाथ्जर । सभक काज मे आथ्द सँ अंत धथ्र सहयोग देबय वला मनू भाय बेस लोकथ्प्रय । की बच्चा कीए बूढ़ सभ हुनका मनुये भाय कहथ्न, चाहे ओ थ्रश्ता मे ककरो थ्कछु लागथ्ि ।

मनू भाय गरीब लोक । माि पर बाप-पुरखाक छोड़ल माि १० कटा जमीन,थ्कछु घरारी आ घराथ्रये लग कने-मने बाड़ी-झाड़ी । एकरा अथ्ताथ्रक्त गुजर करक लेल दू-तीन टा महीस पोसने रहथ्ि । ओही महीस सभक दू-दही-घी, थ्चपड़ी-गोइठा बेथ्च कऽ गुजर करथ्ि । माि पर रहथ्न ५ गोटाक पथ्रवार । पती, तीन बेटी आ एक बेटा । आशम एखन रहथ्न लेथ्ुरया आ ते हरदम तंगो-तरीज रहथ्ि । तााथ्प अपन सामाथ्जक दाथ्यत्वक पथ्त सचेष रहथ्ि आ अपन काज खगाईयो के दोसरक काज मे मदथ्द करबाक लेल हरदम तत्पर रहथ्ि ।

एकबेर संजोग सँ ओ कोनो कुटमारे गेलाह । थ्कछु थ्वशेष काजक कारणे ओतय थ्कछु थ्दन रकय पड़लथ्न । ताथ्ह बीच मुकुन्द बाबू ओथ्हठाम उपनयन बजथ्र गेल । मुकुन्द बाबू गामक धथ्नक लोक । हुनक एकमाि बेटाक उपनयन मे गौआँ के दू-तीन थ्दन भोज खेबाक अवसर छलै । परन्तु थ्बनु मनू भायक भोज- भात हो कोना? समय बीतैत गेल आ कुमरमक थ्दन सेहो आथ्ब गेल ।

भोरे-भोर मुकुन्द बाबू ओथ्हठाम लोकक जुटान भेल ।

समस्या छल जे पूरा गौआँक लेल भानस-भात बिनु मनू भायक सहयोग सँ होयत कोना । लोक सभ एहि समस्या पर विचार कैये रहल छल की ता मनू भाय हाजिर भऽ गेलाह । लोकक जान मे जान आयल । मनू भाय कहलाह जे हमरा एकाएक आईये याद आयल जे मुकुन्द बाबू बेटाक आई कुमरम छन्हि आ हम भोरे-भोर ओतय सँ विदा भेलहुँ जे मुकुन्द बाबूक काज बिगड़ि ने होइन ।

मनू भायक जेठ संतान बेटी १२ वर्षक । दोसर रहथि बेटा ९ वर्षक आ दुनू छोट बेटी क्रमश: ७ आ ४ वर्षक । कनेदान सामने रहन्हि तथापि अपन एकमात्र बेटाक उपनयन समय पर कराबय चाहथि । अपन पेट काटि-काटि उपनयनक लेल एक-एकटा पाई जमा केने रहथि । बड्ड सेहेन्ता रहन्हि जे एकबेर अपना ओहिठाम गौआँ के खुआबी आ तकरे तैयारी मे भीतरे-भीतर लागल रहथि ओ ।

गाम मे चौरि‍री पटी पमुख । चौरि‍री पटीक तीन मुख्य शखा । दू शाखा मे मोछक लड़ाई रहैक आ ताही चकर मे गाम मे दुगोला रहैक । चौरि‍रीक तेसर शाखा अपन भव्यमानमान सहित विभक्त रहथि । पाय: सभ परिवार मे दुगोला रहैक । ताहू मे जखने कतौ काज बजरै कि कनफुसकी शुर भऽ जाईक । मनू भाय सेहो एकटा गोल दि कऽ रहथि आ अपन बेटाक उपनयन मे ओहि पूरा गोल के नोत दऽ कऽ खुएबाक पक मे रहथि ।

शनै: शनै: उदोगक दिन आबि गेल । पूरा गोल मे हकार पड़ल । कियो बास,तऽ कियो खड़ लऽ कऽ हुनक मदति केलन्हि । समय पर बँसकटी भेलैक । ओही दिन मरबठटीक दिन सेहो रहैक । लोक सभ अबैत रहलाह आ भेद पुरबाक ले दू-चारिटा बन्हन दऽ घसकैत रहलाह । सभ आबथि दू-चारिटा बन्हन देथि,

शबत्ति पीबथि, पान खाथि आ चुपचाप घसकि जाथि । अंतत: मड़बा ठाढ़ करबाक बेर रहि गेलाह मनू भाय, हुनक पिसियौत कारी भाय आ एक दू गोटा आर । मनू भाय सन सामाजिक लोक के ई आशा नहि रहनि जे समाज हमरा काज मे एना करत । पूरा जिनगी लोकक उपकार केने रहथि आ ते भरोस रहनि जे पूरा समाज हमरा काज मे तत्पर रहत ।

उदोग आ मड़बठटी होइतहि उपनयनक उपक्रम शुरु भऽ गेल। रोज मड़बा नीपब, बहारब, मड़बा पर गीतक अलावा यत्तीक संग हुनक पती सेहो अति व्यस्त रहय लगलीह । देखैत-देखैत मातृ-मंगलक दिन आबि गेल । एहि मे पुरुष-पातक विशेष काज नै रहैक ते मातृ-मंगल नीके ना बीति गेलैक । पाते छगरा िरि रहैक आ तकरे पात रहैक कुमरम । उपनयनक महत्वपूर्ण दिन । भगवती पूजा आ बरु पदानक दिन आ संगहि भोज भातक दिन । समाजक असली काज आईये रहैक । चँकि मनू भाय पछिलहि सँ बेटाक उपनयनक तैयारी कयने रहथि ते अपन पूरा गोल मे पुरुषक दफा नोत देलाह । आई पूरा विशास रहनि जे पूरा समाज हमर मदति करत । भला हो कोना ने? सभक बेर मे ठाढ़ होईत रहल छलाह सदिखन ओ ।

लेकिन ई की । समाजक लोक हुलकियो देबय नहि एलैन। जेना-तेना अपन पिसियौत कारी भायक संग अहरी खुनलाह, टोकना-लोटियाक इंतजाम केलाह आ अहरी पजारि देलाह । परन्तु ५-६ मन चाऊर, ओकर दालि, तरकारी, बड़ी, सतमनि-अदौड़ी,पापड़ आदिक इंतजाम केनाई छोट काज नहि रहैक । अपस्यात भऽ गेलाह दुनू भाय । बीच मे एक-आि गोटा सिनजासाक लेल अयबो केलाह,

परन्तु कक्षा के जे गेलाह जे फेर अबैत छी से नहिये घुरलाह । एवं क्रमेण हुनक तीन-चारि बाप्स गेल । किछु सामगी तैयारो भऽ गेल।

ता गोलक पमुख बालेशर चौरिरी अपन सात-आठ चमचाक संग पहुँचलाह । हुनका पहुँचतहि सभ चमचा हड़बड़ो मचबय लागल। मनू भाय के आदेश भेलनि जे चौरिरी जीक स्वागत करहुन । तुरंत मनू भाय ओमहर गेलाह । शबति बनल, चाह बनल आ फेर पान भेलैक । चौरिरी सहित चमचा सभ खेलक-पीलक आ ओतय सँ चलि देलक । पुन: रहि गेलाह मनू अपने दुनू भाय ।

बाहण के नोति देने रहथिन आ ते मानू गरा मे उतरी बन्हा गेल रहनि । येन-केन पकारेण अपना के एहि सँ उऋण केनाई छलैन । ताही मे लागल रहथि दुनू भाय । काज तँ पाय: सोझरायल छलनि परन्तु चौरिरी आ हुनक चमचा आबि आर गड़बड़ कऽ देलकनि। जा मनू अपने चमचा सभक स्वागत मे लगलथि कारी भाय असगरे पड़ि गेलाह । आंच तेज करथि तऽ अदहन उधियाईन आ अहिनक शमण करथि तँ आँच बन भऽ जाईन । येन-केन पकारेण ९ बजे राति धरि भोजक सामगी तैयार भेल आ सोझहो भेल ।

भोजनक समय लेखिकन सभ जुटलाह । राति भऽ जेबाक कारणे सभ पहिले तोर मे भोजन करय चाहथि । तारि टोलक किछु नवतुरिया बारिक बनबा लेल तैयार भेल आ पहिल तोरक भोज समाप्त भेल । खूब यश भेलनि मनू भाय के । दोसर तोर मे नवतुरिया सभ भोजन केलक आ अपन घर चलि गेल । ई तँ नित्य कही नवतुरिया सभ के जे बँटबाक खम्मा उठेलक नहि तँ कदाचित ओहो काज अपने दुनू भाय के करय पड़तैन । समाज अपन चालि नीक जका देखा देलक ।

फेर रहि गेलाह दुनू भाय । पाहुन परक के भोजन करबैत,

कुमरम राक्षक आन थर्ि-व्यवहार करैत, आँश्चु-कचार करैत पूरा राक्षा बीक्ष गेल । एको थ्रनटक लेल दुनू भाय आराम नक्ष कऽ सकलह। खैर पात भेने उपनयन रहैक । आचार्य, पुरस्तत,नौआ, बह I आश्वक सहयोग सँ मनू भायक बेटा के जनऊ पश्क गेलैन । उपनयनक राक्षा मे अठबभना कऽ कऽ मुक्त भेलाह मनू भाय ।

आब मनू भाय सामाश्मक लोक नक्ष रहलाह । अपना काज सँ मतलब राखथ्रि आ अपने मे मस्त रहथ्रि । समाज मे ककरो ओश्वठाम बजाओल गेला पर टाश्व जाथ्रि मनू भाय । आश्वर मनू भाय एना श्वकएक भऽ गेलाह? गंभीर पश अछ्य समाजक समक।

<u>कुंठा</u>

नौ बजे राति मे ड्यूटी सँ वापस भेले छल सुरेश कि पत्नी ओकरा समक गाम सँ आयल चिट्ठी राखि देलखिन। यदि सुरेश जिजासा कयलक जे एहि मे की पमुख बात लिखल छैक से कहू, परन्तु पत्नी स्वयं पढ़ि लेबाक लेल कहैत किचेन मे चलि गेलीह।

सुरेश गाम सँ आयल चिट्ठी के आदोपात पढ़लक आ एकटा गंभीर श्वास लैत ओकरा टेबुल पर राखि देलक। तखनहि पत्नी एक गिलास पानि आ चाह ल' क'पहुंचि गेलीह। सुरेशक गंभीर मुखाकृति पर अबैत-जाईत विभिन्न रेखाक अ्यियन करैत पत्नी गप्प शुरु केलीह - ''की सोचलियै एहि पर''

''एहि मे सोचबा जोग किछु नै छैक, वरन् ई तँ एक तरहक आदेश छैक, जेकर पालन करबाक लेल हमरा कहल गेल अछि'' - सुरेश बाजल।

''कतय सँ अनबैक एतेक टाका?'' पत्नी जिजासा केलनि।

पत्नीक एहि पशनक तत्काल कोनो जबाव नहि द' सकल सुरेश । समस्या गंभीर छलैक। एकमाि बेटाक उपनयन सामने छलैक। दिल्ली सन महानगर मे माि4-5 हजार टाकाक नोकरी करैत अपन परिवार के संगे रखैत सुरेश हरदम ''हैड टू माउि' रहैत छल। 4-5 हजार टाका मे कोना बचतैक आ ताहि पर सँ उपनयनक वास्ते खचाक एकटा पैघ आदेश गाम सँ। सेहो छोट-

मोट नञ 50-60 हजार टाकाक।

आट्ठी ाखने छलाह सुरेशक जेठ भाय दनेश । दनेश गामे मे रहथि न। हुनको दू बेटाक उपनयन रहथ। ओ झंझारपुर मे वोकालथ करैत रहथि आ गाम पर कछु ट्यूशन। खेती-पारिीक झम्मा सेहो हुनके पर। माता-पता वृद रहथि न ते एञ काज मे ओ सभ कोनो आथकि मदद करबा मे असमर्थ रहथि न। छोट भाय महेश, नका एकटा बर आ रहथ, ग्वाश्रयर मे रहथि। ओ फुट्टे अपने समस्या सँ गस्त। गामक सर-समाज देखैत, अपन पवारक हाड़ी-बमारी देखैत आ गाम-गामक नोत पुराई करैत दनेशक अनुसार हुनका एको पाई नञ बचैत छथ आ उपनयनक सभ छाड़-भार सुरेश पर रहतैक, सएह पर्ि आयल छल गाम सँ। तथ्ा पर्ि मे ईहो ाखल छल जे माि भाय कोन र पे पछला साल अपन बेटाक उपनयन कयलथ अछ आ एहने उपनयन होमक चाही।

घंटा-डेढ़ घंटा एञ वकट समास्या पर वचार करैत रहल सुरेश अपन पत्नी मीनाक संग, तथ्ा कछु ाष्कर्ष निञ ाकाश्र सकल। अंतता पुना फोन पर जेठ आ छोट भाय सँ काल्ञ गप्प करबाक वयार करैत दुनू पाणी सूथ रहल। परन्तु ान्न कहा एतैक? दुनू पाणी करौट फेरैत परात केलक। ानसरे टेलीफोन बूि पर पहुंचल। गाम आ ग्वाश्रयर फोन मलेलक। परन्तु सभटा व्यर्थ। दुनू भाय हार्ि उठा देलथन। कयो ई सोचय नञ चाहलथन जे एतेक पाई ई अनतैक कतय स?

जे से समय पर अपन ड्यूटी पर पहुंचल सुरेश। ड्यूटी की छलैक। एकटा िक थ्र िताक ओतय काज करय। “ए टू जेड” सभटा काज करय पड़ैक। ओना कहबाक लेल रहय तँ काउन्टर पर, परन्तु आवश्यकता पड़ला पर लोहा सेहो उठबय पड़ैक आ आनो कयकटा काज करय पड़ैक। काज करैत थ्रांताक रेखा स्पष्ट देखाय पड़ैक ओकरा मािं पर।

ओकरा थ्रकछु अनमनस्क सन देथ्रख माथ्रलक थ्रजजासा केलकैक। ओ टारय चाहल। तथ्रि माथ्रलक नीक लोक रहैक। खोथ्रि-खोथ्रि क’ पूछय लगलैक आ सुरेश के सभटा राम कहानी कहय पड़लैक। तथ्रि पाईवला गप्प ओ नथ्रह कथ्रह पओलक। माथ्रलक खचाक संबंि मे थ्रजजासा केलकैक तँ बाजल 50-60 हजार। एकबेर माथ्रलको अचंथ्रभत भ’ गेलैक आ एथ्रह पस्ताव पर पुना थ्रवचार करक अनुरोि केलकैक। तथ्रि सुरेश बाजल - “सर हमलोगो को पूरी थ्रजंदगी मे थ्रसफ तीन काम करना है - बेटे का जनेऊ, लड़की की शादी और मा-थ्रपता का शाद। इससे ऊपर न हम कुछ कर सकते है और न ही सोच सकते है।”

सुरेशक उक्त बात सूथ्रन के माथ्रलक िड़े पसीझल। माथ्रलक सुरेश के आश्वासन देलकैक जे तोरा जते रपया चाही से ल’ जो आ तो बाद मे ििरे-ििरे दरमाहा मे सँ हमरा कटा थ्रदहे। सुरेश के जेना कतहु सँ पाण भेटलैक। तुरंत ओ हामी भरलक। साझ मे हँसी-खुशी घर आयल आ अथ्रगला थ्रदन पुना गाम आ ग्वाथ्रलयर फोन कयलक जे समय पर उपनयन हेतैक आ अहा सभ अपन तैयारी मे लाथ्रग जाऊ।

उदोग सँ तीन-चारि दिन पहिने गाम पहुंचल सुरेश सभ के ल' क'। सभटा काज शुभ मुहुर्त मे सम्पन्न होईत गेलैक आ राष्ट्रीमक पात जेना आश्वास छोड़लक ओ। जे किछु ल' क' आयल छल लगभग सभटा खर्च भ' गेलैक। महेश 5000 पकड़ा के फराक भ' गेल। दिनेश गाम मे रहथि, सभटा कारबार अपना हाथ मे रखलथि। सुरेश खर्च करैत गेल, परन्तु खर्चक कोनो हिसाब नहि भेलैक। भार-दोर वाला आमदनी सेहो दिनेश रखलथि अपना पॉकेट मे आ अशान्त भ' गेलाह।

काज सम्पन्न भेलाक बाद सुरेश वापस दिल्ली आयल। आब समस्या रहैक कर्जा सधिबाक। पहिने तीन कमरा-किचेन वाला घर छोड़ि मात्र एकटा कमरा वला घर लेलक ताकि मकान किराया मद मे बचैक। बच्चा सभ ठीक-ठाक स्कूल पढ़ैत रहैक,ओकरा सभक नाम एकटा साधारण स्कूल मे लिखेलक आ 5000 टाका दरमाहा मे सँ1000 कटेनाय शुरु केलक। कुलाचारा के दुर्दिनक शुरुआत भ' गेलैक आ सभ तरहे सुरेश कुंठित भ' गेल।

एहि तरहक कुंठा मात्र सुरेशे के नहि छैक, वरन् मिथिलाचलक एकटा सम्पूर्ण युवा पीढ़ी एहि सँ ग्रस्त अछि। ई एहन पीढ़ी अछि जे गाम मे पढ़लक-लिखलक,ओतय पलल-बढ़ल आ रोजगारक वास्ते दिल्ली वा कोनो शहर आबि गेल। संघर्षक पथ पर अगसर होईत अपना लेल शहर मे रोजगार ताकि कनेक स्थिर होईत अछि ई वर्गक सामने अबैत छैक गामक समस्या। आई उपनयन, काल्हि बियाह, परसू मूड़न,चारिम दिन दुरागमन आदि। हर

काज मे गाम गेनाई एकर ब्विवशता छैक आ नोकरी करैत अछ्छ तँ खचो-पाश्आ करय पड़ैत छैक। गामक लोकक सामान्य सोच छैक - शहर मे टाकीक कोन कमी। ताहू मे जँ क्ष्कयो सरकारी नोकरी मे अछ्छ तँ ओकर शामते छैक। सरकारी नोकरीक मतलब एम्हर-ओम्हरक आमदनी। शहर मे अहा की छी? कतय छी? कोना गुजर करैत छी? एश्ह सभ सँ कोनो लेना-देना नश्ह छैक गाम लोक के। शहर मे छी, नोकरी करैत छी, तँ पाईक कोन समस्या। गाम वा सर-कुटुमक सभ काज मे ब्द्वयौक, माने स्वयं ब्बका जाऊ।

एश्ह नववगक्ति सभ सँ पैघ समस्या अछ्छ जे ई वर्ग अश्थिवज्जू अछ्छ। आि गामक अछ्छ आि शहरक। आ ते बेसी कुंश्ठत अछ्छ। कोनो काज वा संस्कार ई गाम मे करताह। कारण ओतश्ह रहल छश्थि, नेनपन ब्बतेने छश्थि। एकेबेर सभटा के तोड़बाक सामश्थि नश्ह छश्आ श्नकका मे। परंतु एना कते श्दन चलत? कते श्दन श्थ्व कुंश्ठत रहत ई वगि आई ने काल्श्ह एश्ह सँ उबरबाक रस्ता श्नकालश्ह पड़तैक एश्ह वगिके। आवश्यकता छैक सोच मे पश्िवतनि करबाक। गामक समाज सश्हत एतय एकटा अलग समाजक श्निमाण करबाक आ सभ तरहक संस्कारक शुरुआत एही ठाम करबाक आ तखनश्ह मुक्त होयत ई वगि कुंठा सँ। वरन् श्जनगी भर श्थसाईत तरह ई वगि एश्हना।

मास्टर साहेब नञि रहलाह

आई मास्टर साहेब शात भऽ गेलाह । भोरे-भोर सौसे गाम मे खबरि पसरि गेल जे आब मास्टर साहेब दुनियाँ मे नहि छथि । छबो मास पहिने तँ रिटायर भऽ कऽ आयल रहथि ओ । एखन पेशनक कागतो कहा सोझरायल रहनि । कएकटा काज एखन बाँकिये रहनि । सेहेन्तो अपन एकमात्र बेटा भोलूक बियाह १६ वरषक अवस्था मे करेने रहथि । अगहन मे दुरागमन करेबाक विचार रहनि,से कहा भेलनि । जेठे मे विदा भऽ गेलाह ओ । जिनगी भरि एक-एक पाई बचेनहार, चारि-चारिटा कनेदान अपना हाथे केनहार, बाप-पुरषाक ७-८ बीघा जमीन के १२ बीघा पर लऽ गेनहार, सामूहिकक घरारी सँ अलग घरारी लऽ कऽ घर बनेनहार मास्टर साहेब आखिर अपन बेटाक लेल दू कोठली पका घर नहिये बना सकलाह । भला कालक आगा ककरो बस चललैक अछि? मास्टर साहेब हारि गेलाह काल आ समय सँ । आई मास्टर साहेब नहि हुनक लहाश पड़ल अछि आँगन मे । करीब ५ दिन सँ पूरा आँगन शोकाकुल छैक ।

किछु दिन पहिने सँ ओ दुखित छलाह । दरभंगा जा कऽ दवाई-दार करेने रहथि । दवाई सभ चलिये रहल छलनि, ता एकाएक काल्हि साझ मे ओ बेसी दुखित भऽ गेलाह । गाम मे जे डाक्टर रहैक से बजाओल गेलाह । ओ नाड़ी देखलनि, बी.पी चेक केलनि, आला लगेलनि आ कहलनि जे ता हम किछु दवाई लीखि दैत छी आ ईहो कहैत छी जे हिनका आगू लऽ जैऔन । परिवारक सभ सदस्य हुनका आगू लऽ जेबाक उपक्रम मे लागल । परंतु मास्टर साहेब मना कऽ देलनि । शायद हुनका अपन मृत्युक आभास

भऽ गेल रहथि । ओ स्पष्ट कहने रहथि जे जँ आनसर कि बाधा गेल अयहि तँ डाक्टर लग लऽ जैहह । हम राति-बिराति डाक्टर लग नहि जायब ।

से मास्टर साहेबक मृत्युसँ हुनक एकमात्र बालक भोलू पर विपत्तिक पहाड़ टूटि पड़ल । १६ वरषक बालक जेकर जन्म चारि बहीनक बाद भेल छलैक,विपत्तिक तँ एखन धरि नामो ने सुनने छल । पछिला साल तँ मैट्रिक कयलक ओ आ एखन पटना मे आई.ए. मे पढ़ैत अछि । बियाहो भऽ गेल छैक । आब ओकरा पर अपन पढ़ाइ पूरा करबाक चिन्ता छैक, माइक लेल परिवार पेशनक कागत बनबेबाक छैक, अपन परिवारक चिन्ता छैक आ ७-८ बीघा खेतक चिन्ता छैक । भला १६ वरषक बालक सँ एते हो कोना आ तहि पर सँ सामने छैक पिताजीक श्राद्धक चिन्ता ।

मास्टर साहेब शुरहे सँ मास्टर साहेब नहि छलाह । अपना जमाना मे शास्त्री केलाक बाद जखन शीघे नोकरी नहि भेलन्हि तँ कलकता चलि गेलाह । ओतय पूजा-पाठ वला ड्यूटी पकड़लन्हि । १६-१६ घंटा पूजा-पाठ वला ड्यूटी करथि । फेर बाद मे कोनो जोगाड़ सँ मास्टरी भेलन्हि आ बनि गेलाह हाइस्कूलक संस्कृत शिक्षक । एक-एकटा पाई बचाबथि आ गाम पठाबथि । गाम मे परिवारो नमहर रहन्हि । तीन भाईक भैयारी मे जेठ रहथि । ७-८ बीघा खेत तीन भाइ मे कम लगन्हि, क्रमश: ओकरा बढ़ाय १२ बीघा पर लऽ गेलाह । बीच-बीच मे कनेदानो सभ केलन्हि । पिताजीक मृत्युक बाद आन-अनौज भऽ गेलन्हि । घरारी तक बँटा गेलन्हि । अपनहि अमलदारी मे बेटाक मात्र पड़हक ४ बीघा खेत के ७-८ बीघा पर पहुँचा देलन्हि आ सभटा कनेदानो सँ मुक्त भेलाह ।

दाह-क्रिया सम्पन्न भेल आ तीन-चारि दिनक बाद आबि गेल

छौड़झपी । सभ चीज सँ समाग सभ मुक्त भेलाह । आब आयल असली तैयारीक बेर । ओमहर मास्टर साहेब मुईलाह आ एम्हर गौआ मे कनफुसकी शुर । मास्टर साहेब श्मनगी मे कते कमेलाह एकर गणना होमय लागल । ओश्व मास्टर साहेबक शाद तँ नीक सँ हेबाक चाही, गौआ के दू श्वनक भोज तँ हेबाके चाही ऊपर सँ श्वकछु बँटलो जाय यि लोटा या िती या ....। श्वकयो एकोबेर ई नश्व सोचलाह जे मास्टर साहेब श्मनगी भश्व काजे करैत रहलाह । आ श्वकनको लग ईहो सोचबाक समय नश्व रहश्च जे एश्व १६ वरषक बालकक एतेटा श्मनगी कोना कटतैक । जाश्व बालकक श्वताजीक स्वगिस भऽ गेलै, घरक कता-िता चश्व गेलै, जेकरा लग स्वयं श्वार छुपेबाक लेल एकटा घर नश्व छैक, ओकर श्मनगी कोना श्वततैक । बस ऊपर सँ श्वकछु हेबाक चाही ।

औपचाश्वकतावश गामक बैसारी भेल । ५-१० टा बूढ़-पूरान उपश्वति भेलाह । वस्तुत: पश्वने एश्व बैसारीक पाछू एकटा पैघ उदेश्य रहैक । कताक गड़ा मे उतरी रहैत छश्च, ओ कोनो काज नश्व कऽ सकैत छथि । ओ समाजक समक अपन मोनक इच्छा रखैत छलाह जे हम अपन श्वता/माता शादक श्वात ई सभ करय चाहैत छी । आब समाजक दाश्वत्व बनैत छलैक जे कताक इच्छाक पूश्व कोना हो आ समाज तदनुसार अपन काज करैत छल । जहन कताक गड़ाक उतरी टूटैत छलश्च तँ ओ समाज के एक-एक पाई सि दैत छलश्वन । परन्तु आब बैसारक उदेश्य दोसर भऽ गेलैक अश्छ । समाज कताक समक अपन माग राखय रखलाह अश्छ जे तोहर श्वता तोरा लेल ई केलिन, तो ई करह, ई बाटह...। सएह भेल, बूढ़-पुरान सभक श्वरोिक बावजूदो बैसार मे ई मुदा उश्वये

गेल जे की बाटल जायत । कता अपन असमिता जतेलैन, तथि अथाला श्वन भोर होइत-होइत सौसे गाम मे खबश्व पसश्व गेल जे मास्टर साहेबक शादक समाथ्तक बाद पश्वा पश्ववार पूरा गाम मे “फुलही लोटा” बाटल जायत । पाई कतौ सँ अबौ, समाज के कोन मतलब?

भोज भातक तैयारी सश्वत शादक आन तैयारी सभ समयानुसार शुर भऽ गेल । एकादशाह आ दादशाह मे खूब जमगर भोज भेलैक । गौआ सभ खएलक आ बैश्व गेल लोटाक इंतजार मे । एतबे नश्व सरो-कुटुम कहा बाकी रखलश्वा । मास्टर साहेबक जेठकी बेटीक श्वा:संतान मृत्यु भऽ गेल रहश्वा आ ते आब तीनटा जीश्वत रहश्वि न । दोसर बेटी श्वसक दुनू नाश्वा नानाक शादक उसरगाक लेल तत्पर रहैक । तेसर बेटीक तीनू बेटा सेहो कम नश्व रहय । ओहो सभ तैयारे छल । चाश्वम बेटीक श्वीया-पुता छोट रहैक आ ते एश्व झमेला सँ काते रहैक ।

एकादशाह श्वन आँगन मे उसरगा समान सभ पर नाश्वा सभक नजश्व रहैक । उसरग-पुसरगक श्वि खतम होईतश्व सामानक लेल नाश्वा सभ तत्पर भेल । सभ श्वकयो सभ सामान लेलक । लेश्वकन दोसर बेटी श्वसक दुनू नाश्वा छोट सामानक मोह मे नश्व पश्व गाय के हाश्वक के अपना गाम पर बाश्वह आयल । तेसर बेटी श्वसक नाश्वा सभक हाथ मे अयलैक ओछाओन, छाता, जूता. खश्वया आश्व । ओकरा सभ के ई बात बड्ड अखरलैक जे हमर मश्वऔत सभ गाय लऽ कऽ चश्वा गेल । मामला दादशाह श्वन तँ शात रहलैक, परन्तु तकर पाते गरमा गेलैक । तेसर जमाय सभटा सामान वापस कऽ देलश्वा आ श्वरोि स्पर प र श्वा रहलाह ।

काश्वाए तँ भोलूक उतरी टुटलैक अश्व आ आईये नव

समस्या आबि गेलैक । ओ थकिकतिषियिमूढ़ भऽ गेल । सभ सभठाम फुट्टे रसल । जेकर थपताजी मबि गेलैक तेकरा के देखतैक, अपने मे समाने लय थिार-फुटौबिल । आथिवर ओ अबोि बालक अपन चुपपी तोथिड़ सभ बहीन के एकठाम बजेलक आ पश केलक - ‘‘हम तोरा सभ बहीन सँ छोट थिछयौ । तो सभ हमरा बोल-भरोस कतय देमे, उलटे सामान सभ लेल झगड़ा करैत जाई छे । की बाबूक मृत्युक बाद हमरा पथिाये तोरा सभक कोनो फजनिथि बनैत छौक? भोलूक पशक जबाव केकरो लग नथिह छल । सभ थिारतर छल ।

उमेश मंडल

संस्कार गीत

एक्ष बेरक बात थीक। श्चर्घ- भारती रेश्वयो स्टेशन सँ गीत सुनैत छलौ। एखन िश्च मैथिली साश्चत्य स कम्मे-सम्म श्चनेह छल। ओना पश्चवार स समाज िश्च मैथिश्चऐक बीच आठो पहर समय बीतैत अश्छ। काश्चक पूश्चमीक श्चन रहने, समाजक माए-बश्चन लोकश्च सामा भसा आंगन श्चश्च सोहर गबैत घुमलीह। एकाएक हमरो कान मे, गीतक ध्वश्च हवा मे श्चछलैत अबै लगल। रेश्वयो बन कऽ सोहर सुनै लगलहुँ। गीतक स्वर हृदय कै झकझोड़ए लगल। जेहने माए-बहीश्च लोकश्चक स्वरक मिर टास तेहने एकर पता। जश्चना बहीश्च,माए-बाप समाजक सखी-सहेली छोश्छ, सासुर जेबा काल, अपन िन्दन स वातावरण कै शोकाकुल बनबैत आ सखी-सहेली सोहरक स्वर स श्चदा करैत, तश्चना भऽ गेल। हृदय श्चदीर्ण हुअए लगल।

अनायास मन मे सवाल उठै लगल-

(क) की हमर कला- साश्चत्य, भूमण्डलीकरण स, आगू बढ़त?

(ख) आ श्क जतय अश्छ ततय, अजेगर सौप जैका िसकुश्चया माश्च, बैसल रहत?

(ग) आ श्क हमर कला-साश्चत्य मश्चयामेट भऽ जायत?

एक्ष पशक बीच उलझल मोन मे, श्चश्चयाक श्चमश्चमाइत इजोत जेकौ,

आयल जे अपनो मातृभाषा आ मातृभूमिक सेवा लेल किछु कयल जाय! एहि श्रृंखलामे जासाक संग अपने लोकनिक बीच, एकटा छोट-छीन पोथी 'संस्कार गीत' राखि रहल छी। आशा अछि जे अहि पर ध्यान नहि दऽ, आगूक सेवा लेल प्रेरित आ पोत्साहित जरूर करब। गीतक संकलन किछु पोथीओक अछि आ अधिकतर माए-बहीनिक कंठक सेहो अछि। जहि गीतकार लोकनिक गीत संकलित अछि, हुनक आभारी छी। आ जे गीत माए-बहीनि लोकनिक कंठक अछि, ओ जहिना कहलनि तहिना लिखलो गेल अछि तैं शब्दक फेर-फाड़ आ टूटल सेहो अछि।
गीतक संकलन करै मे अगज सुरेश मंडल आ अनुज अखिलेश मंडलक भरपूर सहयोग रहल।

(१)

सिंह पर एक कमल राजित ताहि उपर भगवती।
उदित दिनकर लाल छवि निज रूप सुन्दर छाजती।
दात खटखट जीह लहलह शवन कुन्डल शोभती।
शंख गहि शाशि, चक्र गहि शाशि खर्ग गहि जगतारिणी।
मुक्तिनाथ अनाथ के मा भक्तजन के पालती।
सिंह पर एक कमल राजित ताहि ऊपर भगवती।
मा ताहि ऊपर भगवती।

(२)

सभ के सुधि अहा छी अम्बा हमरा किए बिसरै छी हे।
हमरा दिस सँ मुह फैड़े छी, ई नहि उचित करै छी हे।
छी जगदम्बा जग अबलम्बा तारिणी तरणि बनै छी हे।

छनशछन पलशपल ध्यान िरै छी दरसन बनु तरसै छी हे।
छी हम पुि अही केर जननी से तँ अहाँ जनै छी हे।
राशादन हम शनय करै छी पापी जाश ठेलै छी हे।
सभ के सुशि अहा लै छी अम्बा हमरा शकए बसरै छी हे।

(३)
कोन शदन आहे काली तोहर जनम भेल, कोन शदन भेल छठयार।
शुि शदन आहे सेवक हमरो जनम भेल, बुि शदन भेल छठयार।
पशरर ओशढ़य काली गहबर ठाशढ़ भेली, करब मे काली के शंगार।
कोन फूल ओढ़न मा के कोन फूल पशरन, कोन फूल सोलहो शंगार।
चम्पा फूल ओढ़न, जूही फूल पशरन, ओढ़हुल फूल शंगार।
भनश शदापश सुनु माता काली, सेवक रहु रक्पाल।
कोन शदन आहे काली तोहर जनम भेल, कोन शदन भेल छठयार।

(४)
अब ने बचत पश मोर हे जननी,
अब ने बचत पश मोर।
चार शश पि हेश बैसल छी,
क्यो ने सुनै दुख मोर। हे जननी.....
एश अवसर रक्ा कर जननी,
पुि कहाएव तोर। हे जननी.....
अलशशलश कऽ जँ मश जायब,
हँसी होयत जग तोर। हे

जननी.....

अबला जाथि शरण दीअ जननी,

नाम जपत हम तोर। हे जननी....

(५)

हम अबला अजान हे श्यामा,

हम अबला अजान।

नि सम्पाथि किछु नहि अछि हमरा,

नहि अछि किछुओ जान। हम अबला....

नहि अछि बल, नहि अछि बुद्धि,

नहि अछि किछुओ ध्यान। हम अबला......

कोन विधि भव सागर उतरब,

अहींक जपल हम नाम। हम अबला...

(६)

जगदम्बा हे अबलम्बा मेरी, जननी जय जय कालिका।

दष भुजा दष खड़ग राजित, पाष खप्पर धराजित।

मुण्ड लयशलय मगन नाचय, गाबय योगिन मालिका।

भाइ भैरब मुण्ड छीनथि जय जय कालिका।

(७)

अहा किये भेलहुँ कठोर हे जननी अहा किये भेलहुँ कठोर।

हम दुखिया मा शरण अहा के अहा किये भेलहु कठोर हे जननी...

अतुल कष सहि जनम देल अछि आब पोछत के नोर हे जननी ...

ककरा पर हम जनम गमायब के करती आब शोर हे जननी....

ककरा पर हम रहब परायब के आब रक्क मोर हे जननी अहा किये....

(८)

कियो ने हमर रखबार हे जननी,

कियो ने हमर रखबार।

चिन्ता विकल विवस मन मेरो,

मन दुख होइए अपार। हे जननी कियो....

विनु अबलम्ब ि रि मे डुबलहुँ,

सुझत नहि किनार। हे जननी.....

अहा किए देर लगेलहुँ जननी,

हम डुबलहुँ मझ ि र। हे जननी....

सृष्टि क मालिक अही छी जननी,

करहु सभक प्रतिपाल। हे जननी....

माता के सब पु ि बराबरि,

पंडित मूख ि गमार। हे जननी....

कतेक विनय कय ि थिक गेलहुँ हम,

अब करिअ भव भार। जननी...

(९)
कहा नहैली काली कहा लट झाड़लथिह,
कहा कयल शृंगार हे।
गंगा नहैली काली बाट लट झाड़लथिह,
गहबर कयल शृंगार हे।
पहिरि ओढ़िया काली गहबर ठाढ़ भेलि,
करय लगली सेवक गोहारि हे।
यष गाय यष गाय काली हे माता,
अहा यष थिकर संसार हे। कहा.....

(१०)
अयलहुँ शरण तोहार हे जगतारिणि माता।
लाले मन्दिरबा के लाले केवड़िया,
लाले ध्वजा फहराय हे जगतारिणि माता।
लाले चुनरिया के लाले किनरिया,
लाले सिन्दुर कपार हे जगतारिणि माता।
राखि गाय मुख लाली हमरो,
हम लेब अँचरा पसारि हे जगतारिणि मता।
अयलहुँ शरण तोहार हे जगतारिणि माता।
(११)
हे जगदम्बा जय मा काली पनि पणाम करै छी हे।
नहि जानि हम सेवा पूजा अटपट गीत गबै छी हे।
सुनलहुँ कतेक अनि के मैया मनवाञ्छित फल दै छी हे।

पुि सम जाश्र चरण सेवक के जन्मक कष हरै छी हे।
थ्रपश्चाक हाल कहल की हे मैया आषा लाथ्रा जपै छी हे।
सोना चानी महल अटारी ई सब थ्रकछु ने मँगै छी हे।
मनक मनोरि मनश्च मे राथ्र मंथ्रदर तक पहुँचे छी हे।
अहाक चरण के दास कहाबी एतवे हम मनबै छी हे।
पेमी जन सँ पाश्च थ्रआराषा नयन नीर बहबै छी हे।
नोर बहा कऽ अहा लय मैया मोती माल गुि छी हे।

(१२)
गरजह हे मेि गरजह गरथ्रज सुनावह रे।
ललना रे ऊसर खेत पटाबह साश्च उपजाबह रे।
जनमह आरे बाबू जनमह जनश्च जुड़ाबह रे।
ललना रे बाबा थ्रआर छि िराबह शि देह आँकुष रे।
हम नश्च जनमब ओश्च कोथ्र अबला कोथ्र रे।
ललना रे भैलश्च वसन सुतायत छौड़ा कश्च बजायत रे।
जनमह आरे बाबू जनमह जनश्च जुड़ाबह रे।
ललना रे पीयर वसन सुताबह बाबू कश्च बजायब रे।
(१३)
पलंगा सुतल तोहे थ्रया थ्रक तोहे मोर साहेब रे।
ललना रेश् बथ्रया जँ एक लगथ्रबतहुँ थ्रटकुला हम चथ्रबतहुँ रे।
भल नश्च बोलश्चह िनी थ्रक बोलहुँ न जानह रे।
ललना रे बेटबा जँ एक तोरा होइत सोहर हम सुश्चतहुँ रे।

भानस करैत तोहे गोतनी कि तोहे मोर अहँत बंि रे।
ललना रे अपन बालक देअ पैच धया सुनु सोहर रे।
नोन तेल पैच उिर भेटय आर सभ किछु रे।
ललना रे कोखिआक जनमल पुि सेहो नहि भेटय रे।
मधिया बैसल तोरे सासु कि सासु सँ अरज कर रे।
ललना रे कओनशकओन तप केलहुँ पुि फल पेलहुँ रे।
गंगहि पैसि नहेलहुँ हरिवंष सुनलहुँ रे।
ललना रे देवलोक भेला सहाय कि पुि फल पयलहुँ रे।
आधित लगैत बलमा भेल होरिला जनम लेल रे।
ललना रे लाल के पलंगा सुता देल धया सुनु सोहर रे।

दसमासी सोहर
(१४)

पिम मास जब आयल धात फरिआयल रे।
जाधि गेल सासु हमार चढ़ल मास दोसर रे।
सासु मोर बसु नैहर ननदी बसु सासुर रे।
घर छथि देबर नदान चढ़ल मास तेसर रे।
बाट रे बटोहिया कि तोहि मोर भैया कि अहँत बंि रे।
हमरो समाद लेने जाउ चढ़ल मास चारिम रे।
अन पानि किछु नहि भावय खटरस भावय रे।
कहब हम कओन उपय चढ़ल मास पाचम रे।
रधिशधि पिया धिखाओल नैहर पठाओल रे।
बनु आमा नैहर धरान चढ़ल मास छटम रे।

आगुश्आगु आवय दोश्नया पाछु भैया आवय रे।
घुश्रघुश्र घर भैया जाउ चढ़ल मास सातम रे।
तन भेल सश्वसब फूल देह भेल पीयर रे।
अब न बाचत जीव मोर चढ़ल मास आठम रे।
घरश्घर बाजत ब ाविा श्क भेल बड़ आनद रे।
अयोध्या मे जनमल राम चढ़ल मास नवम रे।
तुलसीदास सोहर गाओल गाश्व सुनाओल रे।
भक्तवत्सल भगवान श्क आजु पकट रे।

(१५)

एक श्वन छल बन झंझर आब बन हश्वयर रे।
बड़ रे सीता दाई तपसी श्क गरम सँ रे।
के मोरा गर अश्ा काटत श्वनहश्व बूनत रे।
ललना रे मन होय श्वयरी पश्वरतहुँ गोद भरश्वतहुँ रे।
ललना रे राम दश्वन भए बैसतश्वि कौषल्या चुमश्वतश्वि रे।

(१६)

प ि समय श्वयराओल शुभ श्वन पाओल रे।
ललना रे देवकी दरदे वयाकुल दगश्वन आयल रे।
दोसरो वेदन जब आयल कृष्ण जन्म लेल रे।
ललना रे तेसर हश्वक पवेष कलेष मेटायल रे।

दगथ्रन आथ्र जगाओल केओ नथ्र जागल रे।
ललना रे हथ्र देथ्र सभ मन अचरज सभ थ्रत सालि रे।
सूरदास पभु थ्रतकर कृष्ण जनम लेल रे।
बाजन बाजय सभ ठाम देव लोक हरथ्रत रे।

(१७)
उतथ्र सावन चढ़े भादव चहुँ थ्रस कादब रे।
ललना रे मेघा झरी लगाबय दाथ्र दमकय रे।
जनम लेल यदुनन्दन कंस थ्रकन्दन रे।
ललना रे फुथ्र गेल वज केवाड़ पहर सब सूतल रे।
शंख चि युक्त हथ्र जब देवकी देखल रे।
ललना रे आइ सुथ्रन थ्रन भेल कृष्ण अवतार लेल रे।
कोर लेल वसुदेव थ्रक यमुना उछथ्र बहू रे।
ललना रे हथ्र देल पैर छुआय नन्द घर पहुँचल रे।
नन्द भवन आनद भेल यषुमथ्र जागल रे।
ललना रे सूरदास बथ्र जाय थ्रक सोहर गाओल रे।

(१८)
घर से बहार भेली सुन्दथ्र, देहथ्र यि ठाढ़ भेली रे।
ललना रे ओलती यि थ्र ठाथ्र थ्रक, दरदे व्याकुल रे।
कथ्र लय बाबा थ्रआहलथ्र, बलमु घर देलथ्र रे।
ललना रे रथ्रतहुँ बाथ्र कुमारी, ददनिथ्र जथ्रतहुँ रे।
अगाि राथ्र थ्रराल पहर रथ्र, बबुआ जनम लेल रे।
ललना रे बाजय लागल बिाबा, थ्रक गाओल सोहर रे।

(१९)

पश्चल परन श्मया ठानल सेहो थ्यधि पूड़ाओल रे।

ललना रे भेटल अयोध्या राज ससुर राजा दषरथि रे।

दोसर परन श्मया ठानल सेहो थ्यधि पूराओल रे।

ललना रे भेटल कौषल्या सासु लखन सन देओर रे।

तेसर परन श्मया ठानल सेहो थ्यधि पूराओल रे।

ललना रे मागल पश्च शीराम सेहो थ्यधि पूरल रे।

(२०)

गाव के पश्छम एक कुइया सुन्दश्च एक पाश्च भर रे।

ललना रे घोड़बा चढ़ल एक कुमर पाश्च के थ्यासल रे।

पाश्च पीबू पाश्च पीबू कुमर सुरश्च नश्च भुलह रे।

तोरो सँ सुन्दर हमर स्वामी जे तश्म थ्यदेष गेल रे।

कोन मास तोहरो थ्याह भेल कोने गवन भेल रे।

कोने मास जोड़ल श्मनेह श्क तश्म परदेष गेल रे।

फागुन हमरो थ्यआह भेल श्क चैत गवन भेल रे।

बैसाख जोड़ल श्मनेह श्क तेश्म थ्यदेष गेल रे।

(२१)

जीर सन श्मि पातश्च फूल सन सुन्दश्च रे।

ललना रे सुतल पेम पलंग पर दरदे व्याकुल रे।

सासु जे हुनका अलारश्च बश्चन दुलारश्च रे।

ललना रे श्चाल एक दरद अंगेजह, होश्चला जनम लेत रे।

जाहक हे ननदी जाहक, भइया के बजाबह हे।

ललना रे भइया ठाढ़ देहथि बीच कहु बात मनके रे।

<u>खेलौना</u>

(२२)

भैया के घर बेटा जनम लेलक बहिया मागे एलै हो लाल।
सोना खराम चढ़ि भैया एला की की मोर बहीन लेली हो लाल।
सोनाक हम मटा लेलौ रपा केर हम लेलौ काड़ा हो लाल।
रेषमी कपड़ाक अंगा लेलौ जड़ी लागल हम टोपी हो लाल।
पचासक बदला सौ लऽ कए जेती रेषम साड़ी पहिरेबथि हो लाल।
भनस कए कऽ भौजी अयली खादी साड़ी पहिरेबथि हो लाल।
सयक बदला पचास लय कए जैती, मूड़ी मे डाड़ लगतथिहो लाल।
कनैत खीजैत घर ननदि जेती हो लाल।

(२३)
आइ छथि सुदिन घर मे सुदिन भेल
घर मे भेल ललना, दुआरे वाजे बजना।
बाबा लुटाबथि हाथी ओ घोड़ा
बावी लुटावे गहना, दुआरे बाजे बजना।
काका लुटाबे घड़ी ओ औंठी
काकी लुटाबे कंगना, दुआरे बाजे बजना।
पिसा लुटाबे मोटर गाड़ी
पीसी लुटाबे यौबना, दुआरे बाजे बजना।

(२४)

बाजे बाजे बिबा नन्द के अंगना

कि कि नाचे पमश्चया नाचे, छोटकी ननश्चया नाचे अंगना।

श्कये तो ननदी नाचह आंगन, तोरो भैया रहश्थ पटना। श् बाजे....

भैया हमर पटना रहै छश्थ, ओतश्च सँ आओत मोती के कंगना।

भाई मोरा जीबौ भतीजबा जीबौ, देव पुराओल मन कामना।

(२५)

ककरा के अंगना जमश्चरा रे,

मन रंजे के लाल।

ककरा बश्चश्चा आबय रे,

मन रंजे के लाल।

बाबा के अंगना जमश्चरा रे,

मन रंजे के लाल।

पलंगा सुतल तोहे श्चया हे,

मन रंजे के लाल।

बश्चन मागय इनाम रे,

मन रंजे के लाल।

तेरे सन्दुक मे कंगना रे,श् मन रंजे...

कंगना हम नश्च लेब रे, मन....

हमश्च त लेब नौ लाखा हार,श् मन.....

हँसैत जायब ससुराश्च रे,श् मन......

हम नश्च देब नौ लाख के हार,श् मन....

कनैत जाउ ससुराश्च रे,श् मन.....

जँ नञ्ञ देब नौ लाख के हार,श् मन....
बबुआ के लऽ जैब ससुराञ्ञ रे,श् मन....
फेर कऽ बबुआ जनम लेब रे,श् मन....
नैना मे नैना ञ्ञला लेब रे,श् मन....
सुनु बचन अहा ननदी रे,श् मन....
कोञ्ञवया लहञ्ञ नञ्ञ जाय रे,
गन रंजे के लाल।

गञ्ञयाञ्ञ ञ्ञसबाक गीत

कहमा केर जञ्ञया कहमा ञ्ञलौञ्ञया रे।
ललना रे कओन मुँह भय पीसब, कौञ्ञाल्या पीआयब रे।
दञ्ञन के इहो जञ्ञया, पञ्ञम ञ्ञलौञ्ञया रे।
ललना रे पूब मुँह भय पीसब, कौञ्ञल्या पीयाअब रे।
पञ्ञने जे पीलञ्ञ कौञ्ञल्या रानी, सुञ्ञा ि रानी रे।
ललना रे ञ्ञल िइ पीयल कैकेयी रानी तीनू गरभ सँओ रे।
कौञ्ञल्या के जनमत राम, सुञ्ञा ि के लछमन रे।
ललना रे कैकेयी के भरत, श ुिघन, तीनू घर सोहर रे।

तेल-कसाय लगवैक गीत

(1)
कौने बाबा हरबा जोताओल, मेञ्ञिया उपजाओल हे।
कौने बाबी पीसल कसाय, जे ञ्ञक बरआ ओंगारल हे।

बड़का बाबा हरबा जोताओल, श्क सरसो उपजाओल हे।
ऐहब बाबी तेल पेरौलीह, बरआ ओंगारश्वि हे।

(2)
काचश्व बास के मश्वया हे,
आश्क ताश्व मश्वया तेल फूलेल हे।
कौने बाबी लगेतीह तेल फूलेल,
आश्क कौन बाबी लगेती उबटन हे।
आश्क फलला बाबी लगेती तेल फुलेल,
आश्क फलला बाबी लगेती उबटन हे।

मूड़न

गोसाउश्वा नोतक गीत
जँ हम जश्वतौ काली मैया औती
अगर चानन मंगश्वतौ हे।
गंगा सँ मैया श्वकनी मंगश्वतौ
ऊँच के पीश्व़या बनश्वतौ हे।
नीर गंगाजल सँ पीश्व़या श्वपश्वतौ
अड़हुल फूल चढ़श्वतौ हे।
पीअर पीताम्बर मा के आँचर दीतौ
सोन रपे घूघर लगाय हे।
जोड़ा छागर ूिर बन्हश्वतौ
कश्वया दीतौ बश्वदान हे।

भनश्च श्चदापश्च सुनु देश्च काली
सदा रहब सहाय हे।

श्चतर नोतक गीत
कौन बाबा आओत गजन हाि
ओ जे कौने बाबा श्चल घोड़ा हे।
कौने बाबी अओती दोश्चयश्च
श्चक बरआ आषीष देती हे।
बड़का बाबा आओता गजन हाि
छोटका बाबा श्चल घोड़ा हे।
ऐहब बाबी अओती दोश्चयही
श्चक बरआ आषीष देती हे।

मुड़न बेरक गीत

समुआ बैसल तोहे बाबा श्चक बरआ अरश्च कर हे।
लपश्च झापय ललाट करह जगमूड़न हे।
रहु बाबू रहु बाबू बरआ श्चक होयत सुश्चन श्चन हे।
नोतब सकल पश्चवार करब जगमूड़न हे।
मूड़न करैत बरआ क बाबा सँ अरश्च कर हे।
आनहु पीश्च बोलाय श्चक अउरी पसारल हे।
औती पीसी सोहाश्चन बैसश्च चैक चश्च हे।
पीअर वस्ि पश्चरती केष पश्चछश्च हे।

केष कटबै कालक गीत

कौने बाबा छुरिया गढ़ाओल सोने मढ़ाओल हे।
कौने अम्मा लेल जन्म केष कि शुभशुभ होयत हे।
बड़का बाबा छुरिया गढ़ाओल रतने मढ़ओल हे।
बड़की बाबी लेल जनमकेष कि शुभशुभ होयत हे।
देब हे नौआ भैया लाल धोतिया सोनक कैचिया हे।
शुभ कऽ उतारऽ बाबाक केष बबुआ जीक मूड़न हे।

नौआक गीत

धीरेधीरे कटिहह नौआ केष, कि बौआ बड़ दुलार छइ हौ।
बौआक मामी नौआ तौरे देवह, कि बौआ छै बड़ दुलार हौ।
बौआक मामी भार पठौलथिन, ठकुआ तोरे देबह केरा तोरे देवह हौ।
बौआक नाना घोती पठेलथिन, पीअर मे रंगाय के तोरे देवह हौ।
धीरेधीरे कटिहह केष, कि बौआ छै बड़ दुलार हौ।

नहेबा कालक गीत

कोने बाबा पोखरि खुनाओल, कि घाट बनाओल हे।
कोने बाबा भरथि जूड़ी पानि, कि बरआ नहाबथि हे।
अपन बाबा पोखरि खुनाओल, घाट बनाओल हे।
ऐहब बाबी भर जुड़ि पानि, कि बरआ नहावथि हे।

चुमाओन गीत

आजु माइ शोभा शी रघुवर के
मातु कौषल्या हकार पठाओल
गाइन जतेक नगर के।
कैकेयी आयश्च सुश्चा ि आयश्च
गाइश्च सगर नगर के।
दुश्च अछत लय देवलोक आयल
चर डोलय रघुवर के।
तुलसीदास पभु तुम्हरे दरस के
जीवन सफल दरस के।
आजु माइ शेभा शी रघुवर के।

भगवतीक श्चनती

अयलहुँ सरन तोहर हे जगतारश्च माता। अयलहु.....
लाले मश्चदश्चया के लाले केबश्चया।
लाले घ्वजा फहराय हे जगतारश्च माता।
लाले चुनश्चया के लाले श्चकनश्चया,
लाले श्चनुर कपार हे जगतारश्च माता।।
राश्च श्चओ मुखलाली हमरो।
हम लेब अचरा पसाश्च हे जगतारश्च माता।।
अयलहुँ सरन तोहार...

गाम देवताक गीत

बेश्वश्लोश्च बर बरजौ माश्वश्वा बेश्वटया,

बाट घाट जुश्वा रोपु फूल हे।

एश्व बाटे औता बाहण दुलरआ,

घोड़ टाप तोश्क देत फूल हे।

कानै लगली खीजै लगली माश्वश्वा बेटी,

आश्व स बहै लागश्व नोर हे।

के श्वारमोश्वया फूल गाछ तोड़त,

के रे देत वरदान हे।

जुश्वा कानू जुश्वा खीजू माश्वश्वा बेश्वटया,

हमरा स लीअ वरदान हे।

पश्वल जे मंगलौ बहण श्वार के श्वनुरबा,

तखन कोर भश्व पुि हे।

जे पुि दीह बाहण हश्व नश्व लीह,

बाझी पद छूटत गोर हे।

साझ

साझ श्वय यसुमश्वा मइया हे साझ बीतल जाइये।

जैता कन्हैया श्वश्वश्वआय, हे साझ बीतल जाइये।

कि केर दीप कि केर बाती, हे साझ बीतल जाइये।

सोना केर दीप पाट सूत बाती, हे साझ बीतल जाइये।

सरसो तेल जरय सारी राती, हे साझ बीतल जाइये।

जरय लागल दीप चमश्क गेल बाती, हे साझ बीतल जाइये।

खेलय लगलै साझ मइया, हे साझ बीतल जाइये।

उपनयनक गीत

(उदोग गीत)

गोसाउनिक नोतक गीत

अढुल फूल देखि अयली गोसाउनि, दूभि चरण पखारब हे।

छुटा पान गोटा सुपारी, मा काली नोतल जाथि हे।

बरआक माय बाप गोचर करै अछि, सुनु माता विनती हमार हे।

सेबक बालक स्तुति नहि जानय, छमा करब सब अपराि हे।

पीतर नोतक गीत

दुअरहि बाजन बाजय स्वर्गा आवाज गेल हे।

स्वर्गमे पुछथिन बड़का बाबा कतय बाजन बाजू हे।

अहा कुल जनमल फल्ला बरआ ओतहि बाजन बाजू हे।

स्वर्गहि पितर आनन्द भेल कि आब वंष बाढ़ल हे।

स्वर्गा सँ आबि पितर बरआ के आषीष देल हे।

बँसकटीक गीत

वृन्दावन बास कटायब कि मड़बा बनायब हे।

पहिने बास के पूजब तखन छऽ लगायब हे।

आहे ई थिक काठ सुकाठ एही सँ मारब बान्हव हे।

आकि वृन्दावन बास कटायब कि मड़बा बनायब हे।

मड़ठटीक गीत

जन्म सुफल आइ भेल की आंगन माड़ब भेल हे।

जन्म सुफल ओश्च बाबाक श्चनका आंगन माड़ब हे।

जन्म सुफल ओश्च बाबीक जश्चका कुल पुि भेल हे।

पीयरश्च खड़ छरायब श्चक लाल झालश्च लगायब हे।

ताश्च माड़व बैसत फलला बरआ श्चनकर जनउ हैत हे।

चहुश्चस रहतश्च सर सम्बर्नी की माड़ब सोहाओन हे।

मड़वा छारैक गीत

बाबा हे फलला बाबा मड़वा छाश्च मोश्च दैह।

बश्चसत हे नन्हबुश्चया मेघ,

भीजत हे मोरा बालक बरआ,

पीताम्बर ओढ़न को दैह। बाबा हे....

बाबी हे फलला बाबी आँचर झाश्च मोश्च लैह।

बश्चसत हे नन्हबुश्चया मेघ,

भीजत हे मोरा बालक बरआ,

आँचर झाश्च मोश्च लैह। बाबा हे....

मड़बा नीपक गीत

बाबा दान दीअ यौ, मश्चया कोड़ैक इनाम दीअ यौ।

बाबा दान दीअ यौ, मड़बा नीपैक इनाम दीअ यौ।

गइया जे देलौ बश्चया लगाय,

आर श्चकछु दान बेटी आमा सँ लीअ?

आमा दान दीअ यै, मड़बा नीतैक इनाम दीअ यौ।
बाली जे देलौ बेटी झुमका लगाय,
आर श्चकछु दान बेटी भैया सँ लीअ।
भैया दान दीअ यौ, मड़वा नीपैक इनाम दीअ यौ।
कंगना जे देल खीलन लगाय,
आर श्चकछु दान बश्चन काकी सँ लीअ।

बश्चापदान कालक भगवती गीत
बदन भयावन कान बीच कुण्डल श्चकट दषन घन पाती।
फूजल केष वेष तुअ के कह जश्च नव जलरि काती।
काटल मा हा अश्च शोश्चात तीक्ण खड़गकर लाई।
भय श्चभयि बर दश्चन हा लय रश्चअ श्चगम्बश्च माई।
पीन पयोरि ऊपर राश्चत श्चारि साश्चत मुण्डहारा।
कश्च श्चकंकश्च शब कर मश्चडत श्चक बह शोश्चात रा।
बश्चय मसान ध्यान सब ऊपर योश्चान गण रहु सा।
नरपश्च पश्च राश्चअ जग ईश्चश्च कर मश्चना सना।

बेटा श्चवाह
कुमरमक गीत
(1)
हम ते पोखश्च खुनबै तेइ के घाट मढ़ैबै।
श्चनारो आयल कश्चहे ओश्च रे पोखश्चया मे।
रश्चया बात बाजू सम्हाश्च, छोड़ू हमरा से अराश्च।
हम त झुलफी यि श्चश्चआयब पोखश्चया मे।

हम त कोठवा उठैब तेइ मे खिड़की लगैब।
छिनरो अबायल कहिहे ओहि रे कोठिया मे।
रसिया बात बाजू सम्हारि छोड़ू हमरा से आरारि,
हम त झुलफी यि धिसिआयब कोठिया मे।
हम त पलंगा लगैब तेइ मे तोसक ओछायब।
छिनरो आयल कहिहे ओहि रे पलंगिया मे।
रसिया बात बाजू सम्हारि छोड़ू हमरा से आरारि।
हम त झुलफी घय धिसिआयब पलंगिया मे।
(2)
झमझम झमझम बुन्दे बरसि गेल, अंगना मे पड़ल कजरिया।
िसया िबै गेलि फलना छिनरिया, खसली टाग अलगइया।
घेड़बा चड़ल एलखिन फलना रसिया उठ गै छिनो हरजैया।
हम कोना उठबौ रसिया, तोहर बचनिया डरबा मे पड़लैमचकिया।
डरबा मचकिया के की की दबैया, सोंठि पीपरि मरचइया।
सोंठि पीपरि के बड़ रे जहरिया, अतर गुलाब ठंदैइया।

जुड़िका बनिनक गीत

कोने बाबा केरा गाछ रोपल, केरा कोसाय गेल हे।
कोने बाबीक बरआ उमत भेल राखि शहर बसु हे।
फलना बाबा केरा गाछ रोपल केरा कोसाय गेल हे।
फलना बाबी बरआ उमत भेल राखि शहर बसु हे।
मड़बहि घीव ढ़रकि गेल सागिइजोत भेल हे।
सागिक िभतर आनन्द भेल आब कुल रहत हे।

आम-महु बिआहय लेल जयबा कालक गीत

जाइत देखल पथ नागरि सजनी गे,आगाँ सुबुधि सयानि।
कनकलता सन सुन्दरि सजनीगे, बिधि निरमाओल आनि।
चलैत हंसगति गमन सन सजनी गे, देखैत राजदुलारि।
जनिकर ऐहन सोहागिनि सजनी गे, पाओल पदारथ चारि।
नील वसन तन घेरल सजनी गे, सिर लेल चिकुर सम्हारि।
ओहि भमर रस पीबह सजनी गे, बैसल पंख पसारि।

आम-महु बिआहक गीत

(1)

आम बीछै गेली छौनरो, आँठी बिछि लैली हे।
पचास बेर मना देलियह, तैयो ने तो मानली हे।
आम महु बिआहै छलै, तही से भुलेलियै हे।
हजार बेर मना देलियह, तैयो ने तो मानली हे।

(2)

अमुआ मजरि गेल जमुआ मजरि गेल चम्पाकली
ताहि तर छौनरो ठाढ़ि नयना सँ नीरे ढरी।
घोड़बा चढ़ल एलथिन फलना रसिया
छोड़ि कए अकेली ठाढ़ं, नयना सँ नीरे ढरी।
सासु मोर बुढ़िया हे ननदी ससुरबिया
मोर पिया गेलै परदेष, नयना सँ नीरे ढ़री।
छाड़ि दीअ आ गे छौनरो घरबा दुअरबा
सुख सम्पति सगरी।

छोड़ि देह अहुआ के आष चल हमरो नगरी
अयाया लगेबै रमया के घरबा दुअरबा, सुख सम्पा सगरी।
बज खसेबै तोरे मा मोर याया आते रही।

उपनयन कालक गीत

(1)
चैतश बरआ जय भेल बैशाख पाहुन भेल हे।
घर पछुआर केबटा बसु पार उतार देहु हे।
जौ हम पार उतारब जायब कओन देष हे।
जायब हम जा देष जहा अपन बाबी हे।
बाबी के चरण पखारब लाल जनउआ देती हे।
(2)
काषी मे जाय बरआ ठाढ़ भेल जनऊ पुकारय हे।
आहे के थिका कासी के वासी जनऊ मो चाय हे।
सुतल छला बाबा कवनाि सेहो उठ बैसला हे।
आहे हम थिकौ काषी के वासी जनऊआ परायब हे।
झाखंड जाय वरआ ठाढ़ भेल जनऊआ मागय हे।
आहे के थिका झाखंड वासी जनऊ मो चाय हे।
हम थिकौ झाखण्ड वासी जनऊआ परायब हे।
आंगन आ ठाढ़ भेल आ मागय हे।
हम थिकौ अहा के बाबी झोरी भय देव हे।

भीख कालक गीत

थिलाक रसल बरआ काषी कथि लेल जाय।

आगे दाय कियो नहि हित बनि जे बरआ लेल लमाय।
आगे दाय बाबा से बड़का बाबा बरआ लेल लमाय।
बाबी से अइहब बाबी भीख नेने ठाढ़ि।
आगे माइ आखो ने आयै बरआ मुँहो सँ ने बजाय।
पहिरय लय पीयर धोती ओढ़य लेल मागल चादर।
आगे माय हाथि दुनु मंटा मागे कान दुनु सोन।
आगे माइ अथिलाक रसल बरआ काषी कियै जाय।

पुरोहित के गारि

बकलेल बभना चूड़ा दही चाटय ऐला हमर अंगना।
चाउर देखायथि दाखि देखायथि लिअ अंगना।
एक रती नोन लय करै छथि खेखना।
धोती देखायथि तौनी देखायथि लिअ अंगना।
एकटा गमछा ले करै छथि खेखना।
सोन देखायथि चानी देखायथि लिअ अंगना।
एकटा पाइ ले कोना करै छथि खेखना।

जनउ कालक गीत

लाल पीयर अछि माड़ब पाने पात छारल हे।

ताहि माड़ब बैसलाह बाबा से फल्ला बाबा हे।
बगल भए बैसलथिन बाबी से ऐहब बाबी हे।
कोरा बैसौलथि बरआ से फल्ला बरआ हे।
बरआ जे मँगै बाबी लाल पीयर जनऊ सिय हे।
रहुशहु बाबू आइ अहा बाहण होएव हे।
एक लाल जनऊआ देब हक एक पीयर जनऊआ हक।

चुमाओन कालक गीत
आइ शिवक चुमाओन हेमन्त घर मे।
सखि सब गाबै मंगलाचार हेमन्त घर मे।
आंगन चानन लिपू मनाइन गजमोती चैक पुराइ।
काचहि बास के डलबा बुनाओल।
ताहि राखब दूबि ान हेमन्त घर मे।
चुमबै बैसली सासु मनाइनि।
गौरी सहित त्रिपुरारी हेमन्त घर मे।
दुखि अक्त लय मुनि सब आयल।
जय जय शब्द सुनाय हेमन्त घर मे।

दनही आ खिलौकी कालक गीत
(1)
अमुआ मजरि गौले महुआ मजरि गेलै।
ताहि तर फल्ला छिनरो ठाढ़ि नयना सँ नीर झरे।
घोड़बा चढ़ल एलथिन फल्ला रसिलवा, एकयै छिनरो एकसरि ठाढ़ि।
सासु मोरा आन्हर ननदि गेल सासुर घर, मोर पिया गेल परदेष।
नयना......

छोड़ि देहो अपनरो घरबा दुअरबा, छोर दिहुआ के आस।
नयना........

(2)
नाक नाक कोठरिया मे जुलफिया गूँथि लटका के चलहि ना।
अपनरो गोरी बदन सजि छा के चलहि ना।
पतरी कमरिया मे डरकस पहिरि लचका के चलहि ना।
गोरे कलइया मे घड़ी पहिरि देखा के चलहि ना।
गोरेगोरे अँखिया मे सुरमा लगाबह मचका के चलहि ना।

बेटा बिवाह
बिवाहक लेल जाय कालक गीत (कुमार)
(1)
जहि दिन आहे बाबू तोरो जनम भेल, अन पानि किछु ने सोहाय हे।,
सेहो बाबू चलला गौरी बिआहन, दुधिबाक दाम दहु ने चुकाय हे।
दूधक दाम अम्मा सधियो ने सकइछ, पोसाइक दाम दै देव हे।
जाबत जीव अम्मा सधियो ने सकइछ, निनी हेती नौरी तोहार हे।
रात दिन आहे अम्मा चरण दबेती, भोरे उठि करती पणाम हे।
(2)
पाकल पान के बिड़िया लगाओल
नगर मे पड़ल हकार।
आबि देवलोक बैसि माड़ब चढ़,
सब अपना साजु बरियात हे।
कौने बाबा साजल आजनबाजन

कौने बाबा साजु बरियात हे।
कौने बाबी साजल दुलहा दुलरुआ,
झलकैत जायत बरियात हे।
(3)
साठह आहे आमा सिन्दुरक पुड़िया, नगर मे पड़ल हकार हे।
साजह आहो बाबा दुलहा दुलरुआ, दूर जायत बरियात हे।
जखनहि रामजी कोबर बिच आयल, सरहोजि छेकल दुबारि हे।
हमरा के दान दीअ ननदोसिया, तखन कोबर देव पैर हे।
मोरा कुल आहे सरहोजि बहिनी ने जनमल, राम लखन दुहु भाइ हे।
सेहो भाइ मोर संगहि अयलाह, सरहोजि मागथि दहेज हे।
बरियातीक गीत
(1)
ऊँची महलिया मालिनिया के घर, नीचा लागल फुलवारी हे।
ले गे मालिनिया सोनाक सूइया, बाबू के गूँथि दे मौरि हे।
मौरि लय आयल मालिन, कहलक के देत मौरक दाम हे।
घर सँ बाहर भेला फल्लां बाबा, हम देब मौरक दाम हे।
(2)
कौने बाबा सजल घोड़ हाथि कौने बाबा साजु बरियात हे।
कौने दुलहा साजि रहिमल घोड़ा साजि चलल बरियात हे।
लाल एक आहे बाबू घोड़ा ललमाव अमा गोर लाल मुनाय हे।
जुरहि जैहह बाबू जुरहि अबिह जुरहि होयत बिवाह हे।
रहमल घोड़ा सलामति रहतै शुभ2 होयत बिवाह हे।
नगहर भरबाक गीत
भरय चलली सखि सिरहर नव कलष मँगाइ।
चानन सिरहर उर लय शुभ सिन्दुर लगाइ।

सागर तट जब महुँचल सब नारी।
थ्मार सँ कलष उतारल देल आमक डारी।
लोचन पीत जुड़ायल सब अश्व मंगल गावे।
सब के ई थ्वन होय थिाता श्मखथ्ि भागे।

शुभ कायमिे थ्वदा होयबा कालक गीत
शुभे ल बहार भेश्म बेटीक माय,
काहु हाि नाश्चयल काहू दूश्च िन,
काहू खोइछा साठल पाकल पान
भैया हाि नाश्चयल भौजी दूश्च िन।
अमा खोइछा साठल पाकल पान।
आजू मोरा आजू मोरा उश्चत कल्याण,
बीलहह हे तरणी थ्मनुर थ्ठार।

बेटीक थ्वआह (कुमाश्च गीत)

(1)

कौने बन बोले कारी कोइश्मया
कौने बन बोले मयूर हे।
कौने घर बोले सीता हे दुलारी
आब सीता रहश्म कुमाश्च हे।
आनन्द बन बोले कारी कोइश्मया
श्माकुंज बन बोले मयूर हे।
राजा जनक घर सीता बेटी बोले
आब सीता व्याहन जोग हे।

जाहक आहो बाबा राज अयोध्या
जहा बसै दषरि राज हे।
राजा दषरि के चाि पुि छि
राम लखन दुइ वीर हे।
गोरि देखि जनु भुलि हो बाबा
श्यामि बालक चढ़ैब हे।
अपन जोग बाबा समधि जोहब
नगर जोकर बरिआत हे।
सीता जोकर बाबा लायब जमैया
देखत जनकपुरक लोक हे।

(2)

जि दिन आहे बेटी तोहरो जनम भेल से दिन कहलो ने जाय।
मान्ता आन्द हित भेल बेटी ि ीर नि रहल गेयान।
कि ी लय आहे मायाक जन्म भेल से भेल व्याहन योग
से सुि बाबा उढ़ला चेहाय चि भेला ताकयं जमाय।
बाि बनबिहह बाबा पोखरि खुनबिहह लगबिहह आमक गाछ।
हँस जुटत आ कमल फुलायत जल मारत झलकोर।
ई सरोवर जैतुक नि मागत भैया होयता वेहाल।

दरबाजा पर वरियाती ऐला पर

(1)

आउ आउ आहे बि्ना सखिया हमार हे।
रतन पलंकया चढ़ि आयल चार दुलहा।
हाि ी घनेरो आबे घोड़ा हजार हे।

कतेक वश्चयाती आबे पाबी न पारे हे।
जेहने कुमाश्च तेहने चार कुमार हे।
श्वारहुत के नर नारी देखय मुँह उघाश्च हे।
लग भऽ जाऊ बश्चश्वा लाज श्चसाश्च हे।
गाओल श्वानेहलता मन के उसाश्च हे।

पश्चछनक गीत

(1)
श्वाव छश्वि जागल लागल दुआरी हे बश्चना, श्वाव छश्वि लागल दुआरी।
इन्र चन्र श्चक्पाल वरण सभ, चश्चढ़शश्च श्वाज असबारी।
साश्वा बरात हेमन्त घर आयल, नगर शोर भेल भारी। श्वाव...
पुरश्चत बहा चार मुख लय, वेद ऋचा उचारी।
दाढ़ी झुलबैत अगुआ नारद, बाहण वीणा ारी। श्वाव...
पश्चछय चलली माय मनाइश्वा,लय कंचन दुइ ारी। श्वाव...
पटश्क आरती घर के पड़ली, नाग छोड़ल फुफकारी। श्वाव...
योगन गण मण्डप बीच आयल, भश्च गहना पेटारी।
तखन ससश्च मण्डप श्चश्च आयल, देखल सब नरशारी। श्वाव...
हरहारा के काड़ा, पहुँची पश्वाया दरारी।
ढ़ोढ़क जोसन सुगबा के मुनरी, मनटीका मश्वाहारी।
ढ़ोरक करेत आ अजगर, असिर के पटसारी।
ामिन करनि गेडुली गहुमन, नागक नश्वि या भारी। श्वाव...
जेहने बर तेहने बश्चयाती, तेहने गहना सारी।
श्चव छश्वि लागल दुआरी, हे बश्चना श्चव छश्वि लागल दुआरी।

(2)

चलु सख्र सब देहश्च पर साजू डाला पान हे।

आश्च ठक बक दीप लेसू पश्चछु सीताराम हे।

हरश्च चलू बश्चयात बश्चयात आयल राज भवन समीप हे।

आइ अश्छ बड़ भाग हे सख्र राम दरषन देल हे।

(3)

सीता करश्च श्चलाप तन ि रश ि र काप।

ि नुषा केओ नश्च तोरल जनकपुर मे।

आब हम रहब कुमाश्च घर बैसल श्चय हाश्च,

श्चनु पुरषक नाश्च जनकपुर मे।

घर मे बैसब आब जाय, अपन वयस गमाय।

मरब जहरश्चख खाय, जनकपुर मे।

(4)

घीरेश्चीरे चश्चयौ दुलहा अंगना हमार हे।

अंगना मे होयत दुलहा श्चश्च व्यवहार हे।

सरहोश्च दाइ लेती नाक पकश्च हे।

लग कनी अश्चयौ दुलहा लाज श्चसाश्च हे।

ि नेष के झापल मुँह कश्चयौ उ ि र हे।

श्चताजी के माय सुनयना आरती उतार हे।

कपड़ा उतारै कालक गीत

माइ हे नाक दबाय वरके जाचू बश्चना।
दाइ हे योगी छथि श्क भोगी से बुझबश्रा कोना?
कपड़ा श्राकाश्रा बनी देश्चयनु बश्चना।
दाइ हे रोगी छथि श्क भोगी से बुझवश्रा कोना?
माइ हे हाि पैर नीक जका जाचू बश्चना।
हाि पैर ठीक छश्रा श्क नश्च से बुझवश्रा कोना?
घुमाय श्फराय वर के देश्चयनु बश्चना।
माइ हे नागर छथि श्क ठीक से वुझबश्रा कोना?
दाइ हे बजाय झुकाय बरके देश्चयनु बश्चना।
पश्राडत छथि श्क मूखि से वुझबश्रा कोना?

पाग उतारै कालक गीत

जे एश्च बर के आंगन अनलश्रा हुनका देवश्रा गाश्च हे।
िती पश्चरक लूश्च ने श्चनका पाग खसल जाय हे।
देह परहक वसि जे छश्रा सेहो अनलश्रा माश्रा हे।
ठक बक श्कछुओ नश्च श्चान्हथि श्चनका देबश्रा फेश्च हे।
अकरक जान कश्रायो ने श्चनका श्रात करथि चरबाश्च हे।
मूसे कश्च इहो पद गेलश्रा गौड़ीक बड़ श्चअमान हे।
चतुर घटक इहो वर अनलश्रा श्चनके श्चयनु श्चयाश्च हे।

नाक ि रिक गीत

श्मर स पाग उतारल काख दबाओल हे।
लय डोपटा श्यारमोहार नाक यि आनल हे।
दुश्चि चरण परवारल श्महुश्च श्महारल हे।
श्चनको पश्चश्छ घर आनल पश्चश्छ देखओल हे।

ठक बक चीन्हक गीत

चलूशलू दुलहा अंगना हमार यो।
अंगना मे होयत दुलहा श्यश्वि श्यवहार यो।
ठक के कहलश्च दुलहा माश्चक मुरत यो।
दुलहाक माय केहन श्छनाश्च इहो ने श्मखेलश्चन हे।
हुनकर काकी केहन श्छनाश्च इहो ने श्मखेलश्चन हे।
बेसन के कहलश्च दुलहा घाश्च यो।
दुलहाक पीसी केहन श्छनाश्च इहो ने श्मखेलश्चन यो।
भालश्च के कहलश्च दुलहा केरा के पात यो।
दुलहाक बश्चन केहन खेलाश्च इहो ने श्मखेलश्चन यो।
मूज के कहलश्च दुलहा इ िक कोर यो।
श्चनकर श्यतामही केहन खेलाश्च इहो ने श्मखेलश्चन यो।

आंगन जायकालक गीत

चलु घीरे िरे ललन ललीक अँगना
ई अंगना नश्च बुझब अवि के

दौड़ल चलब मन मानत जेना। चलु.....
गमकैत फूल क्यारी लागल
हीरा पना गमला साजल
बेली चमेली गुलाब दोना। चलू....
एहना फुल रहय खिला मे
बारहो मास ओ तीसो दिना। चलू....
देखथि दुलहा ठाढ़ अँगना। चलु....

अठोगर कुटै कालक गीत

हम निमा कुटैब एहि बरबा से।
घुरि फिर आयल अवबिा से।
की बहिया की नृपति बालक।
बुझबथि उखरि मूसरबा से।
घुमा घुमा िन कुटै छथि बालक।
शिवष भेल बेवहरबा से।
चैदह भुवन ई अनका बन्है छथि।
आइ बहियनु काच डोरबा से।
स्नेहलता ई गाओल अठोगर।
रानी सुलोचना घरबा से।

नैनाश् योगिनाक गीतश्

पहिल योगिनाया तोहे अपन सासु हे।
आब दुलहा भेलहा योगिनाया बसी हे।
आलथिश् झालरि कन्ह कार सार बेनाया हे।

गीत स पश्चनक फकड़ा

थ्रिकौ बंगाश्चश्चा बसी, बंगला सुरपुर स आयल छी
सूखल नध्दया नाव चलाबे, श्चन लेसन के दथ्रि जनमाबे।
चुलश्चक पुता साश्च उपजाबे, कोठी पर जे बड़द नचाबे।

कन्या श्चरीकण कालक गीत

देल आमक पल्लव आमक पल्लव हे।
श्चन्हू बाबू श्चन्हू घश्चा, अपन श्चश्चह जुश्चा भूलव हे।
रघुकूल के एक रीश्चा, तकर सुथ्रि राखब हे।
आहे! हेरथ्रि नश्च परनाश्च, से तखनश्च जानब हे।
चार ललन श्चत चंचल करे डगमग श्चय हे।
आहे! आजु असल थ्रिक जाच नृपश्चा घर आयल हे।
यदश्च चार कुमार कुलक पश्चा(पैत) राखल हे।
सब सश्च देल हकार ललन कश्च राखल हे।

एश्च अवसरक फकड़ा

काच बास काश्च के, बंगला घर छाश्च के, दश्चन लट झाश्च के.
वाम छथ्रि कश्चाया दश्चन छथ्रि साश्च, उठाउ पमि वर हृदय श्चचाश्च।
जौ नश्च श्चन्हब अपान नाश्च, हँसती सखी सब पिड़ी पाश्च।

आम महु श्चवाहक गीत

उठु उठु काश्चश्चा छोड़ह लाज,
दार लागल छथ्रि पाहुन समाज।
आयल दषरि साश्च बश्चयात,

फुलह फलह सब्ब नव जल जात।
मन जे आँकल गेल तुलाय,
सुनतः सीता गेली फुलाय।
गदगद स्वर बड़ होइछ लाज,
आजु देखत मो ससुर समाज।

िबनक सोहागश्

िथनक बेटी झट द न सोहाग गे
राजा जनकजी के एक गोट बेटी।
सन्दुर ठार लय मुँगरी पुजबही,
लय ि द न सोहाग गे। िबन...
गुर चााउर लऽ मुँह मे खुअबही
कोचा ि द न सोहाग गे। िथन....
सुकुमा धिया के सोहाग दही ने,
खय के देबौ चूड़ा दही।
प रय के देबौ सायाश्साड़ी
जेवर देबौ लटकाय। सुकुमारी....
देबौ मे देबौ गाय म सबा,
जोड़ा बड़द देबौ हकाय। सुकुमारी....

बेदी घुमय कालक गीतश्

(1)

गरद बान्हल चद या आगूश्आगू या माई।
करथि न मण्डप प कमा हे दुलहा और भाई।
बसहा जका सभ घुमथि न हे न चलय पभुताई।
गाबथि मंगल गाइ हे सब मंगल छाई।

हँसी अली मुसकाथि छनि देथि पीहकारी।
से सुभा हँथ्स कऽ जमाय हे देल पथ्रिमा सारी।

(2)

नहु नहु दुलहा चलै छथि कोना।
जेना कलुआ के बरदा घुमै जेना।
बड़द के उपमा हुनका देथ्रायथ्रा कोना।
माई हे चैरासीक फन्दा मे पड़लथ्रा जेना।
डेग नमहर कऽ दुलहा चलै छथि कोना।
माई हे खुटा स बड़दा खुजै जेना।
बरदाक उपमा हुनका देथ्रायथ्रा कोना।
माई गे चैड़ासीक फन्दा मे पड़लथ्रा जेना।
अंगना मे ठाढ़ दुलहा लगै छथि कोना।
जेना अंगना मे मेह गाड़ल हो जेना।
मेहक उपमा हुनका देथ्रायथ्रा कोना।
जेना चोरासीक फन्दा मे पड़ला जेना।
कहथि थ्रानेहलता चलब कोना।
माई गे आंगुरक इसारा देब जेनाश्जेना।

कन्यादान कालक गीतश्

कोनथ्र कुल मे सीता जनम लेल, कौनथ्र कुल शीराम हे।
कौनथ्र आगे माइ वेद उचारल कौनथ्र कैल कन्यादान हे।
राजा जनक घर सीता जनम लेल दषरि घर शीराम हे।
नारद बाह ण वेद उचारल जनक कयल कन्यादान हे।
राजा जनक देल हीरा मोती सोनमा आओर देलथ्रा ि नु गाय हे।
रानी सुनयना देल सीता सन बेटी राम लेल अंगुरी लगाय हे।
कहमा छुटल सुपथ्रा मौथ्राया कहमा जनक ऋथ्र बाप हे।

कहमा छुटल माय सुनैना थ्मनका झहरश्च नोर हे।
अंगनश्च छुटल सुपश्च मौश्रया दुआरे जनक ऋृश्च बाप हे।
मंश्चर छुटल माय सुनैना जश्चका नैन नोर हे।

श्चनुरदान गीतश्

पाहुन श्चन्दुर श्चय हा, सर सुपारीक सा।
श्चता उरिल मा श्चन्दुर श्चय अय।
सुन्दर श्चतै अश्च लगन, अहा िनुष कयल भगन।
सब आनन्द मगन, आश्चष श्चय अय।
रघुबर श्चर शोभश्च मौर, सीता श्चत पूजश्च गौर।
आइ पूरल मनोर नरपश्च होय लय।
मश्चमा दुनूक अनूप, सब आनश्चदत भूप।
आइ पूरल मनोर आनश्चदत होय लय।

लावा श्चटबा कालक गीतश्

मैना देखहुँ जाय,
श्चभुवन पश्च भेल अहाक जमाय।
श्चव गौरी श्चश्च लावा श्चश्चआय।
भूखल वासुश्च श्चश्चश् श्चश्च खाय।
सोनाक बटा भश्च घोरल कसाय।
उमत सदाश्चव भसम लोटाय।
जटा मे देल अंकुसी लगाय।
श्चकतश्च सुरसश्च गेश्च बहराय।

श्चआहक गीत

मश्चया बैसल तोहे राजा हेमन्त ऋृश्च, सुनू अहा बचन हमार यो।
गौरी कुमाश्च कते श्चन रहती, ई नश्च उश्चत श्चचार यो।
एतबा वचन जब सुनल हेमन्त ऋृश्च, पंश्चत अनलश्च बजाय यो।
आबि पंश्चत बैसि पलंग चश्च, मुश्च देि िया के श्चआह हे।
एक पोि तकलश्च दोसर पोि तकलश्च, तेसर मोि तकलश्च पुरान यो।
ओश्च रे जंगल मे योगी एक वसै छश्च, तश्चके संग श्चिया के श्चआह यो।
अरही वन के खड़ही कटाओल, वृन्दावन श्चट बास यो।
देव श्चतर श्चश्च माड़व ठानल, होबय लागल श्चिया के श्चआह यो।
एक श्चस बैसला नारद बाह ण, दोसर श्चश्च गौरीक बाप यो।
बाघक छाल पर वैसला महादेव, होअय लागल श्चिया के श्चआह यो।
कन्यादान कय उठला हेमंत ऋृश्च, मोती जेका झहरश्च नोर यो।
श्चकए जे खेलौ बेटी श्चकए पश्चरलौ, कि ले भेलहुँ वीरान यो।
खीर जे खेलौ बाबा चीर पश्चरलौ, श्चन्दुर लै भेलहुँ वीरान यो।

देहश्च छेकक गीत

छोड़ब नश्च दुआश्च सुश्चयौ रघुनन्दन।
जौ रघुनन्दन चलला कोवर घर सरहोश्च छेकल दुआश्च।
नेग श्चना दय पैर बढ़ायब देब गाश्च हजार यौ, सुश्चयौ रघुनन्दन ...
पाच पदारि हश्च जीक संग मे एक सरहोश्च एक साश्च यौ, सुश्चयौ...
जौ नश्च देता सात पदारि बेचता बश्चन भाय यौ। सुश्चयौ....

बश्चयाती खेबा कालक गीत

(1)

समधि गाअ नइ दै छी धनती करै छी,
समधिक माए धअआइन गोअरबा के दै छी।
गोअरबा सँ दूि मंगबै छी, लके समधि धमबै छी। समधि...
समधि के दादी नानी ल बआया के दै छी
बआया सँ चीनी मंगा समधि के दै छी। समधि....
समधि क मौसी पीसी ल मड़बछया के दै छी।
मड़बछया स ि ती कीअ समधि के दै छी। समधि गाअ....

(2)

आज कुल काअअ समधिन छनरो मअमा अगम अपार।
सगर नगर घर एको ने छोड़लअ के थिक अपन परार।
बआया मे जे फलला के गछलअ धनका टाका हजार।
पढ़ूआ मे जे डाक्टर के गछलअ जे भोकतअ सूई बारम्बार।
राजपूत मे जे फलला के गछलअ जआका ढ़ालशतलवार।
गोआर मे जे फलला के गछलअ धनका ि नु हजार।
सोनरा मे जे फलला के गछलअ जआका जेवर भण्डार।
तमोअन मे जे फलला के गछलअ के करतअ उपर लाल।

कोवर गीत

(1)

कोने बाबा बान्हल इहो नव कोवन हे जनकपुर कोवर।
कोने अम्मा अखल पूरैन हे जनकपुर कोवर।

फलना बाबा बान्हल इहो नव कोवर फलना अम्मा श्वाखू पूरैन हे।
ताश्व पैश्व सुतय गेला फलना दुलहा सीता कोवर यि ठाश्व हे।
बैसू सीता दाइ लाले रे पलंश्वाया बुश्व श्वाय हमरो गेयान हे। जनकपुर

(2)

नव खश्वया नव पश्वया नव सब पुरहर हे।
आहे नव नव जोड़ल श्वनेह सोहाग राश्व श्वान्द नश्व हे।
ताश्व पैश्व सुतलाह फलना दुलहा संग श्वाया दाइ हे।
सीताअश्व सुकुमाश्व सोहाग राश्व श्वान्द नश्व हे।
हश्व सुतु हश्व सुतु ससुर जी के बेश्वया अहा िमे गरमी बहुत हे।
एतबा वचन सुश्व कश्वाया सुहवे रश्व बाहर चश्व जाइ हे।
हम नश्व घुरबै ककरो वचश्वाया कोवरक वर बड़ ठेकर हे।

महुअक कालक गीत

बर रे जतन सासु मौहक रान्हल श्वश्वयो ने खाश्व जमाय।
गे माइ गौरी जाय दश्वन भश्व बैसश्व िर बदल दुइ भेल।
मनाइश्व जाय पाछा भय बैसश्व वर करा एक देल।
गे माइ सेहो करा हम कुकुर श्वमायब से पान वर के देल।

घरभरी कालक गीतश्

माय मनाइश्व पान लगाबश्व सब श्वश्व कैल ओश्वयान।
आइ श्वकिश्व घरभरी सश्व हे िया जमैआ मोर जाय।
िनश्वान देल हाश्व सश्व हे दुनू श्वश्व देश्व श्वड़आय।
भनश्व श्वदापश्व गाओल सश्व हे सब बेटी सासुर जाय।

खोइछ झाड़ैक गीत

सगर जनम हम आस लगाओल,
भैया करता बिआह गे माइ।
भौजी के खोइछा मे हीरा मोती आओत,
ताहि लय गहना गढ़ायब गे माइ।
तेहन घर ने भैया बिआहल,
भौजी खोइछ दुबिशिन गे माइ।
जनु कानू जनु खीजू बहिन दुलरआ,
हम देव गहना गढ़ाय गे माइ।

कोवर परातीश्

अब ने बिलासक बेरि हे मावि,
आब ने बिलासक बेरि।
मुखहुक पान बिरस सन लागत,
दीपक जोति मलीन। हे मावि.....
चेरिया आय बहारय आंगन,
चन्द्रक जोति मलीन। हे मावि.....
ग्वाला आय गौ दूहन लागे,
बछड़ डगरि बन गेल। हे मावि......
सूरदास पभु तुम्हारे दरस को,
सुयिउदय भय गेल। हे मावि.......

कनिया मुँह देखैक गीत

सुनू हे सखिया कनिया मुँह देखू शुभ काल।

पछुआने जे देखथि सासु कौशल्या,
देखू हे सखिया मोहर देथि शुभ काल।
तखन जे देखथिन गोतनी बड़ैआन।
देखू हे सखिया कंगना देथि शुभ काल।
तखन जे देखथिन ननदि बड़ैआन,
देखू हे सखिया टाका देथि शुभ काल।
तखन जे देखथि परशपरोआन,
आषीष देथि शुभ काल। सुनू है सखिया....

कोबर नीपै कालक गीत

नीक नीपू नीक नीपू दुलहिनआया।
नहि नीक नीपब ते सुनब कहिनआया।
कुम्हराक बेटी अहा थिकहुँ दुलहिनआया।
माथ आआ नीपू नइ ते सुनब कहिनआया।
जोलहाक जनमल थिकहुँ दुलहिनआया।
पाट आआ नीपू नइ ते सुनब कहिनआया।
बआयाक बेटी अहा थिकहुँ दुलहिनआया।
पाआ आआ नीपू नै ते सुनब कहिनआया।

कोबर नीपै काल कनिआया क ठकैक गीत

देखू देखू हे सखि सीता रआ रहली,
आि आपलआ कोबर आि छोड़ि बैसली। देखू- देखू .....
सीताक बापके बजाउ, सीता माए के बजाउ

की सब सीता के शखा क वदा कयली। देखू....
सुनलश्मा सासु कौशल्या हाि मोहर ियिली
कंगना गढ़ायब टीका मंगायब सीता श्कए रसली। देखू- देखू ....

गौरी पूजाक गीत

गौरी पूजय चलल रश्कमश्म संग सखी दस पाच यो।
तीन फूल लय गौरी पूजल बेली चम्पा गुलाब यो।
तीन शसन्दुर लय गौरी पूजल मोश्टया पीपा अचीन यो।
तीन नेवेद लय गौरी पूजल नेवो नारंगी अनार यो।
तीन वस्ि लय गोरी पूजल लाल पीयर पटोर यो।
तीन बेश्ल कल जोश्ल पूजब लय गंगाजल नीर यो।

हड़ीर पानक गीत

रतन शसंहासन बैसि सुलपाश्ण
रवाश्ि ने हरीर पान पीवि जूड़ी पाश्ण।
जेहने महादेव के गौरीदाइ परान
तेहने फल्ला दुलहाके फल्ली दाइ परान।
जेहने रामचन्र के सीता दाइ परान
तेहने फल्ला दुलहा के फल्लो दाइ परान।
जेहने हड़ीर खेने मिर पाश्ण
तेहने फल्ला दुलहाक फल्लो दाइ मिर हे।

मुटी खोलैक गीत

सश्ख मुश्टयो ने खोलय जमैया
हे हाश्र गेला रिैया।

हमरो सीता मुटी कथ्म के बान्हल
खोथ्मयो ने सकला जमैया हे।हाथ्व गेला...
हमरो थ्मया दाइक कोमल आँगुर
ि‍रे स खोलब जमैया हे। हाथ्व गेला...

चतुि‍क कालक गीत

चलुशलु काथ्मथ्म कर असनान।
पखर भानु मुख करत मलान।
शीतल शुरभीत जल घट देल।
पंकज नायक नभगत भेल।
आजु चतुि‍क अवसर ि‍क।
थ्मकछुओ ने थ्मजतह लोथ्मत साथ्व।
लहु लहु जल हम ढारब बाथ्व।
दुहु जन रहु गय अमर कहाय।
वरण देव थ्मत रहि‍ु सहाय।
कुमर चतुि‍क उत्सव तोर।
थ्मथ्मकरी थ्मथ्म कर भऽ गेल भोर।

नहायकालक गीत

राम लखन सन सुन्दर वर के जनु पथ्मयनु केओ गाथ्व हे।
केवल हास थ्मनोदक पुथ्मअनु उथ्मत कि‍ दुइ चाथ्व हे।
पि‍म कि‍ ई पुथ्मअनु सजनी कहता कनेक थ्मचाथ्व हे।
गोरे दषरि‍ गोरे कौषल्या, भरत राम थ्मकएक कारी हे।
सुनु सथ्व एक अनुपम घटना, अचरज लागत भारी हे।
खीर खाय बालक जनमौलथ्म, अवि‍ पुरी के नारी हे।

अकि कि की बाजू सजनी, रघुकूल के गक्षा न्यारी हे।
साक्ष्ठ हजार बालक जनमौलक्षा सगरक नाक्ष क्षुनाक्ष हे।
नेहलता क्षकछु आब ने कक्षयनु, एतवे करक्षि करारी हे।
हँसी खुषी क्षक्षिला से जेता, पठा देता महतारी हे।

वेदी उखारै कालक गीत

सक्षव यक्ष एक बापक बेटा हेता
दोसर हाि ने लगेता हे।
दू बापक बेटा हेताह
तखने दोसर हाि लगोता हे।
दू कोन के वेदी उखारलक्षा
तेसर आंगन मे ठाढ़ हे।
कक्षयनु गऽ सासु ससुर सँ
आंगन मे रसल छक्षि जमाय हे।
कक्षयनु जाय जमाय बाबू सँ औंठी देवक्षा गढ़ाय हे।

पक्षया समटय कालक गीत

रघुववर पक्षया देलक्षा ओछाय
सीता फेकल जुमाय कोवर घर मे।
गाइन मंगल गीत गाय क्षक्षिकरी क्षक्षि कराय।
सक्षव सब करक्षि क्षनोद कोवर घर मे।
कहक्षिन सरहोक्ष बुझाय जुक्षा अहा अगुताइ।
क्षक्षि कक्षयौ आइ कोवर घर मे।

सौजनक गीतश्

मेही भात जतन भनसीआ
साक्ष्ठ लयल भक्ष िरी जी,

राहश्ड़क दाश्ज बटा भश्ब उतम

ताश्ब देल घी ढ़ारी जी।

ओल पड़ोर तरल तरकारी

खटरस भेग लगावै जी।

मश्बश्जक दही छाछ भश्ब उतम

परसय पेम श्चयारी जी।

दही खयवा कालक गीत

हे वर दही श्कये ने खाइ छी

माय अहाक गोआरक बहु छश्थि

अहा संग श्कएक ने लयलहुँ

संग संग अयली टीसन सँ घुरली

टीकट मास्टर देश्ख डेरेयली

हे वर चीनी श्कये ने खाइ छी

माय अहाक छश्थि बश्नयाक बहुआ

सँ्ग श्कये नश्ब अनलहुँ

सँ्गे अयली दरबजा सँ घुरली

समिी देश्ख डेरेयली। हे वर...

श्चती साटक गीत

श्चश्जया मे श्चश्जया सश्ब हे योश्गया

जाश्ब ठाम लागल श्चन्दुर श्चठार।

जहा जहा सुश्मरन करबे रे योश्गया

रश्बहे श्चरदय लगाय।

नून तेल पैच लेल श्चन्दुर सपन भेल

श्चया भेल डुमरीक फूल। श्चश्जया....

म्िशावनीश् गोसाउश्नक गीतश्

(1)

ब्रनती सुश्नयौ हे महरानी, हम सब शरण मे ठाढ़।

अक्त चानन अहा के चढ़ायब, आरती उतारव ना।

बेली चमेलीक मा के हार चढ़ायब अढ़ूल चढ़ायब ना।

कश्वया छागर ि र बन्हायब, उजर चढ़ायब ना।

(2)

मश्चमा तोहर अपार हे जगजननी मश्चमा तोहर अपार हे।

बामे रवप्पर दश्चने कताबहै सोश्नतक घार हे।मश्चमा.....

पश्चरन चीर गले मुण्डमाला पैर मे नुपुर अपार हे।

सूरदास पभु तुम्हरे दरस के सदा रश्चय रखवार हे। मश्चमा....

ब्बसहाराक गीत

साओन मास नागपंचमी भेल।

ब्बसहश्च गहवर सोहाओन भेल।

केओ नीपै गहवन केओ चैपाश्च।

हमही अभाश्चन श्नपी दुआश्च।

केओ लोढ़े अढ़ूल केओ बेलपात।

हमहू अभाश्चन हश्चअर दूश्च।

केओ मागे अन ि केओ मागे पूत।

हमहू अभाश्चन श्नरक श्नन्दुर।

पावश्नक गीत

पाबश्न पूजू आजु सोहाश्चन पाण ना ि के संग मे।

कारी कम्बल झाश्च गंगाजल काजर श्नन्दुर हा ि मे।

चानन घसू मेहदी पीसू राखू मैना पात मे।
पावनि साजि भगवति आनल जाही जूही पात मे।
कतेक सुन्दर साज सजल अछि राखल मैना पात मे।

आँखि मूनै कालक गीत

नहुँ नहुँ रि सखी बाती, रिकय मोर छाती।
नहुँ नहुँ पान पसारह, नहुँ नहुँ दृग दुहु झापह।
म्िर म्िर उठ दाह म्िर म्िर अवगाहे।
कुमर करह थिधि आजे, म्िशावनी भेल आजे।

टेमी कालक गीत

कदली दल सन रि रि कापय म्िशावनी आजे।
सकल श्रृंगार समाथि साजथि सब म्िमय कैल समाजे।
क्मल नयन पर पानक पट दै नागर जखनहि झापै।
थिकिरी हाि चन्रकर बाती देखि सगर तन कापै।
आजु सोहाथान सहमल बैसल मुख श्कये पड़ल उदासे।
अम्मा मुख हेरय शकयै काथअि पल पल लैह उसासे।
कुमर नयन सँ नोर बहाबह गाइनि गाबथि गीते।
बड़ अजगुत म्िशावनी थिधि परम कठिन इहो रीते।

बटसाथिी

बड़क पूजाक गीत

जेठ मास अमावस सजनी गे सब िमि मंगल गाव।
भूषण वसन ठीक कर सजनी गे रचि रचि आँग लगाव।
काजर रेख सिन्दुर भेल सजनी गे पहिरि सुबुधि सयानि।
हरखित चलहि अक्यवट सजनी गे गबितहि मंगल गाने।
घर घर नाथि हकारल सजनी गे आदर सँ सभ गेलि।
आइ थिक बड़साइति सजनी गे तैं आकुल सभ भेलि।

घुरिआघुरिआ जल ढ़ारल सजनी गे बाटल अक्त सुपारी।
फतुर लाल देल आशिष सजनी गे जीबथि दुलह दुलारी।

(2)

कतेक जतन भरमाओल सजनी गे, दै दै शपथि हजारे।
सपनहुँ छल जौ जनितहुँ सजनी गे, नहि कहितहुँ अंकारे।
आब जगत भेल माओसि सजनी गे, केओ जनि करय पिरीते।
मुँह सँ अधिक बुझावथि सजनी गे, वचन त राखथि थिर
हुनक सिनेहिया दगलि मोर सजनी गे, जसु नलिनी दल नीर।
गुन अवगुन सब बुझलहुँ सजनी गे, बुझलुँ पुरषक रीत।
मनहि विदापति गाओल सजनी गे, पुरषक कपटी पीरिती।

कोजगरा चुमाओन

भैया के कनियनु चुमाओन कोजगरा मे।
बाबू जी पुछि पुछि परसथि मखान भोजघरा मे।
आंगन चानन नीपल गेल अछि।
गजमोती चैक पुराय देल अछि।
भैया के कनिऔन चुमाओन कोजगरा मे।
माइक दीप जराओल दय दय।
काच बास के डाला लय लय।
भैया के कनियौन चुमाओन कोजगरा मे।

पचीसी गीत

खेलू खेलू यौ भैया बाजी लागइ के।
सीता जीतथि रामजी हारथि बाजी लगाइ के।
सखि सब देथि छिहकारी बाजी लगाई के।

सीता हारथि रामजी श्मतथि बाजी लगाइ के।
सखी सब गेल लजाय बाजी लगाइ के।
ि न्य ि न्य सखी हम श्मथि लावासी।
रामजी भेला जमाय बाजी लगाइ के।
जुआ खैलै लेल एल जनकपुर वाजी लगाइ के।
हारला भाय बश्वन श्यश्चआइन हे वाजी लगाइ के।

दुरागमन- कश्माया पश्वछश्म
सीता एली अंगना पश्वछन चलु सश्व सब।
कि ी के महफा कि ी के लागल ओहार हे।
सोनाक महफा रेषमक लागल ओहार हे।
सीता एली अंगना पश्वछन चलु सखी सब।
कि ी के साड़ी कि ीक लागल श्वकनारी हे।
रेषमक साड़ी गोटा लागल श्वकनारी हे।
सीता एली अंगना पश्वछय चलू सश्व सब।
कतय गेली सासु ओ ननश्व जी हे।
सीता के अश्वश्वशमश्वश्व घर लय चलू हे।
सीता एली अंगना पश्वछय चलू सश्व सब।

चमाओन गीत
चुमाबहु हे राम श्मया के चुमाबहु हे।
आंगन चानन श्मपल कौश्वल्या, गजमोती चैक पुराइ हे।
अलष कलष लय पुरहर साजल, माश्मक दीप जराय हे।
काचश्व बास के डाला बनल अश्व, दही ओ ि नि सजाई हे।
दूश्म अक्त लय मुश्म सब अयला, शुभ शुभ शब्द सुनाई हे।

चुमबय बैसली मातु कौशल्या, सखि सब मंगल गावे हे।

देहरि छेकक गीत

राम सीया अयला अवधपुर, बहिन छेकलनि दुआरि हे।

हमरा दान देव जहन अहा भैया, तहन छोड़व हम दुआरि हे।

सासु ससुर हमरा किछु नहि देलनि, कि देव अहा के देहरि छेकाइ हे।

हाथक औंठी भैया खोलि देलखिन, बहिन लेलनि देहरि छेकाइ हे।

खोइछ झारक गीत

सगर जनम हम आस लगाओल, भैया करताह वियाह गे माई।

भौजीक खोइछ मे सोना चानी आओत, तासँ लय गहना गढ़ायब गेमाई।

तेहना ठाम ने भैया वियहला, भौजीक खोइछ दुभि धानि गे माई।

सगर जनम हम आस लगाओल, भैया करताह वियाह गे माई।

मोहरि बैसक गीत

मोहरि बैसल अहा अपन सासु, मुंह जनु अहा बाजब हे।

पुतहुँ होयत गलजोर, मुंह जनु अहा बाजब हे।

मोहरि बैसल अपन धियाया सासु, मुंह जनु बाजब हे।

पुतोहू होयती गलजोर, मुँह जनु अहा बाजब हे।

कनिया मुँह देखैक गीत

सुनु हे सखि कनिया मुँह देखु शुभ काल।

पश्चने जे देखथि अपन सासु कौशल्या।
तखन जे देखथिन गोश्चान बड़ेश्चान।
तखन जे देखथिन ननद्य बड़ैश्चान।
तखन जे देखथि पर परोश्चन सब।
आषीष देथि सब अश्च शुभ काल। सुनु हे सख्व....

कोवर पराती
आब न श्चलासक बेर हे मावि आब न श्चलासक बेर।
मुखहुक पान श्चारस सन लागय, दीपक जोश्चा मलीन।
ग्वाला आश्च गो दुहन लागे, गैया हमर बन गेल।
चेश्वया आश्च झार श्चये, सुरज उदय भय गेल।
सूरदास पभु तुम्हारे दरस को चन्रक जोश्चा मलीन।
आब न....

कोबरक गीत
कोबर श्चखय गेश्च रानी कौशल्या, चार कात श्चखल मयूर।
ताश्च कोबर सुतला फल्ला दुलहा, संग लाश्च सीता सुकुमाश्च।
मुह उश्चि सुन्दश्च के पुछलश्च कोन कोन अभरन हे।
हाि कंगना अपन बाबा देलश्च, श्चकरी लखन देओर हे।
श्चरक श्चन्दुर पभु अही जे देलहु यैह तीन अभरन भेटल हे।

कोबर नीपक गीत

देखू देखू हे सखि सीता आइ रुसि रहली।
आँखि झपलन्हि कोबर आँखि छोड़ि बैसली।
सीताक बापके बजाउ ओ भाय के बजाउ।
की की सीता के मनखाय कइलन्हि विदा।
सुनिअ सासु कौशल्या मोहर लेलन्हि हाथ।
कंगना गढ़ायब टीका गढ़ायब मनया किनय रुसली।

कन्या पक तुलासी
गौड़ीक गीत
फूल लोढ़य गेलि गौरी माली फुलबाड़ी
बसहा चढ़ल शिव आइ गे माइ।
लोढ़ल फूल शिव देलन्हि छिड़िआइ।
कनैत खीजैत गौरी अम्मा लग ठाढ़ि।
के तोरा मारलक के पढ़ल तोरा गारि।
हम नहि कहब अम्मा कहितहुँ लाज।
पूछू गय सखि सभके कहत बुझाय।

महेषवाणी
हम नहि आजु रहब एहि आंगन, जौ वूढ़ होयत जमाय गे माई।
एक त बैरिन भेल थिकि थिकाता, दोसर धीया के बाप गे माई।
तेसर बैटी भेला नारद बाह्मण, हेहि लयला बूढ़ जमाय गे माई।
धोती लोटा पोथि पतरा, सेहो सब लेबनि छिनाय गे माई।
जौ किछु बजता नारद बाह्मण, दाढ़ी धऽ देबनि धिसिआइ गेमाइ।

अश्चपन लेपलश्च पुरहर फोरलश्च, फेकलश्च चैमुख दीप गे माई।
श्चिया लऽ मनाइश्च मश्चद्दर पैसलीह, केओ जुश्च गाबश्चि गीत गे माई।
भनश्च श्चदापश्च सुनु ए मनाइश्च, इहो श्चिक श्चिभुवन नाि गे माई।
शुश्चुभ कऽ श्चव गौरी श्चवाहू, इहो वर श्चखल ललाट गे माई।

समदाउन

बारह बरस केर छल उश्चश्चया तेरहम बरस ससुराश्च।
कौने श्चरमोश्चया श्चनमा पठाओल कोन श्चरमोही माश्च लेल।
कौने श्चरमोश्चया डोश्चया पठौलक कौने श्चरमोही नेने जाय।
ससुर श्चरमोश्चया श्चनमा पठौलक बाबा श्चरमोही माश्च लेल।
भैया श्चरमोश्चया डोली पठौलकइ स्वामी श्चरमोही नेने जाय।
किी देश्च िरज िरबह हे सश्चया कश्चि देश्च रहब लोभाय।

घरभरीक गीत

माय मनाइश्च पान लगाबश्चि सब श्चश्च कयल ओश्चयान।
आइ श्चिकश्च घरभरी सश्च हे श्चिया जमैया मोर जाय।
िनि पान देल हाश्चँ सश्च है दुनु श्चश्च देल श्चश्चआय।
भनश्च श्चदापश्च गाओल सश्च हे सब बेटी सासुर जाय।

अवसर श्चषेष वा समसामश्चक

पावस

नव घन गरजत माला।
एक सघन श्चश्चराछन रजनी कूश्चत दुश्चय मराला।
तेहर सेज सुश्च लश्च पहु श्चनु उठल अन्तर ज्याला।
रश्चश्च चहुश्चश्च चपला चमकत श्चहश्चश्च जन श्चश्च भाला।

खेपब राख्ना कौन थ्रधि सख्व हे थ्रन्ता हृदय थ्रषाला
हे जलि र अहा जाउ ततय झट जहा बसथ्रि नन्दलाल।
करबथ्रा थ्रनय चरण यि लथ्र कऽ आबि शीघ कृपाला
जौ झट दऽ मोहन नथ्र औता करता थ्राथ्राप अभेला।
तौ बज मे एको नथ्र जीउथ्रा थ्ररथ्रथ्रा सब वसवाला।

कजरी
सखी हे थ्रया नथ्र घर अयला, मेघवा वथ्रसन लागे ना।
जौ हम जथ्रातौ थ्रया नथ्र औंता रथ्रवतहुँ हृदय लगाय।
हमरा सँ की िथ्र भेल सथ्व हे आइथ्रि नथ्र आय।
जौ जथ्रातौ थ्रया ऐहन करता थ्रथ्रायथ्रा नथ्र हम जाय।
सखी हे थ्रया नथ्र घर अयला।

(2)
सथ्वया सावन ने डर लागै थ्रयरा ड़िश ड़ि ड़िकै ना।
ष्याम घटा चहुँ ओर देखायत थ्रजुरी चमकै ना।
थ्रया मोर परदेष गेला सुन सेजबा न भावै ना।
झीगुर दादुर मोर पथ्रहरा कोइली कुहकै ना।
सथ्वया सावन मे डर लागै ना।

उदासी थ्रारहुत
मिपुर गेल मनमोहन रे मोर थ्रहरत छाती।

गोपी सकंल बसललथ रे जते छल अछबाती।
सुतल छलहुँ अपन गृह रे आन गेलौ सपनाइ
कर स छूटल परसमथ रे के लेल अपनाई
कत सुमरब कत झाखब रे हम मरब गरानी।
आनक नि लय निबन्ती रे, कुबजा भेल रानीतरहुत।

(2)
जखन चलल हथ मधुपुर रे सब सुरथ आहाथ।
आब कोना रहब हथ बनु रे झाखथि बजनारी।
वन मे डोलय थपर पात रे बहय सेमथ।
हम धि डोलाय थया बनु रे बनु पुरषक नारी।
केहन कमथिथि लखलथ रे झाखथि वृजनाथ।
हथ बनु भूषण भार भेल रे पलंगा ने सोहाई।

(3)
एते दन भमर हमर छल सखि हे,
आब गेल सारंग देष।
मधुपीथ भमर लोभात भेल सखि हे।
मोर कछु कछयो ने गेल।
ककराक करा कहब, अपन दुख सखि हे,
नयन आन दुथ गेल।
जे बरहे हम व्याकुल सखि हे
भमर हमर रथ गेल।
आंगन मोर लाये बजुवन सखि हे,
घर भेल दवस अन्हार।

पुरषक वचन ऐहन थिक सखि हे,
सपतक नहि थिसवास।

अवसर थिषेषक गीत

मलार

(1)
अखि रे पीतम बड़ थिरमोहिया।
आतुर वचन हमर नहि मानय, परम थिषम भेल रसिया।
कापत देह घाम घथि आबत, ससथि खसत नव सथिया।
आवत वचन िर नहि आनन, बहत नीर दुहू अँथिया।
रमानन्द भाथिअथि रहु िर भय सुख थिच कहु दुख बथिया।

(2)
हे उि थिखब कोन थिथि पाती।
अंचल पि नयन जल कज्जल नख थिथिथि नहि िर छाती।
चन्र थिकरण बि करत एतए थिय ओतए रहू थिनशाती।
रेषम वसन कनक तन भूषण तेसर पवन जीव घाती।
कहथि रमानन्द सुनू थिरथिथि आओत श्याम थिरहाती।

(3)

अश्व रे हम रघुवर संग जायब
भूखल पायब भोजन करायब श्रमलि जल थयेबै।
िकल पायब चरण दबायब शीतल बेश्राया डोलेबै।
औंघैल पायब वन पि लायब तश्व पर आँचर ओछेबै
तुलसीदास पभु तुम्हरे दरस को रघुवर चरण लेपटेबै।

योग (1)
भात खेआय मन मारलश्वह हे अपन सासु हे।
जाय ने देश्वि अपन देष हे अपन सासु हे।
अम्मा होयती बाट देखैत करवन बाबू औताह हे।
पान खेआय मश्वा मारलश्वह हे सरहोश्वश्वा अपन हे।
जाय न देश्वि श्वाज देष बुझाय रखतीह हे।
कर जोश्व श्वनती करै छी सुनू रघनन्दन।
बान्हत अहा के पेम अहा अपने छी जगवन्दन।

(2)
श्वय पाहुन मन सँ श्वश्व श्वाअ।
अपने योग बनल अश्व श्वकछु नश्व सेहो मनश्व श्वचाश्व श्वाय।
बुझब तखन हम जौ श्वकछु मागव और श्वअ।
भावक भुखल स्वभाव अहा के ते हम सब हरसाइत छी।
भनश्व श्वदापश्वा इहो मंगल श्वश्विला श्वश्वि जाश्वा श्वाअ।

(3)
हमर अपन कश्वये छश्वि पाहुन ताश्व सँ मतलब अनका की।

अपन बल पर अपन खुषी थिक ताथ्न मे कानून जहाने की।
अपन बथ्नुथ्आ यथ्न फेथ्कये देता ताइ सँ मतलब अनका की।
साथ्क हतार जनभूलथ्वन पुरथ्वन तकर करै छी थ्आन्दा की।
पसव कास मे दषा जे भेलथ्आ ताथ्न सँ मतलब अनका की।
गटशाट गाथ्व सुनै छथि लालन मगर मरम्मथ्अ करताकी।
स्नेहलता मुसकाथि लजाइत उथ्वत बात मे बजता की।

उथ्वथ्अ(1)

श्यामा वरन शी राम हे सथ्व! देखैत मुख अथ्आराम।
आइ हमर थ्वि बाम हे सथ्व! मोथ्न तेथ्ज पहु गेल आन।
पढ़ल पंथ्कत भान हे सथ्व! पहुक नथ्न कथ्व अपमान।
भनथ्न 'थ्वदापथ्अ' भान हे! सुापुरष गुणक थ्आनि।

(2)

श्याम गोकुल तेथ्ज गेल रे, हमर कोन दोख भेल रे।
हमरा सँ थ्आत अपरा रे, तोहे पभु गुणक अगा रे।
कत गुणकरब बखान रे, जग भथ्व के नथ्न जान रे।
भनथ्न 'थ्वदापथ्अ' भान रे, सुपुरष गुणक खान रे।

(3)

जओं कर सुजन थ्वनेह रे, उपला पाहुन नेह रे।
हेमकर मण्डप हेम रे, चाानन वन कत नीम रे।
थ्वंगु हरथ्न कत बीच रे, गुनथ्न थ्वन्हल ऊँच नीच रे।
मथ्आ कादब लेपटाय रे, तैओ ने तथ्आक गुण जाय रे।

अक्षि के कुसुम अनेक रे, मालक्षि के अक्षि एक रे।
काक कोइक्षि एक कािक्षि रे, भेम्ह भमर दुई भाक्षि रे।
कह ‘बादक्ष’ अवािक्ष रे, सुपुरष जन दुइ चाक्ष रे।

बारहमासा (1)

चैत हे सक्षि मतकोक्षिल कुहुक्षि काम जगाव यो।
कक्षिन श्याम कठौर मानस ऋृतु बसन्त क्षिदेष यो।
बैषाख हे सक्षि देक्षि उपवन लक्षित कुसुम क्षिकास यो।
देक्षि क्षिाज कुच कुसुम मौलल रहत क्षिात न िर यो।
जेठ हे सक्षि तेल चन्दन पंक लेप शरीर यो।
क्षिन नाि चन्दन शीतलाक्षिक िघक्षि जारत देह यो।
आषाढ़ हे सक्षि झमक्षि झमकत नीर क्षिजुरी जोर यो।
देक्षि कापत देह िर नयन िरा नोर यो।
आयल साओन मेघ बक्षिसत घुमुक्षि घोर समीर यो।
सुमक्षि यौवन उमक्षि आबत पाणमक्षि नक्षि पास यो।
भादब जलिर िड़क्षि ठनकत खसल चैक्षि अचेत यो।
काक्षि कहु अब श्याम क्षिनु सक्षि जात जीवन मोर यो।
आस आक्षिन अन्त कय सक्षि बैसल कंत दुंरंग यो।
शरद चन्रक चादनी देक्षि क्षिात चंचल मोर यो।
देक्षि काक्षिाक नाक्षि एकसक्षि ताक्षि शर रक्षिनाि यो।
करत आंकुल जीव छनश्छन कक्षिन कन्त न बूझ यो।
लक्षिजात िन समान अगहन कमल सन कुच मोर यो।
झट नाि-नाि पुकार कय सक्षि पड़ल सेज अचेत यो।
पूस ओस बेहोष भय सक्षि खसत पीतम पास यो।
हम अकेक्षि सून पहु क्षिन काटब कोन क्षिक्षि राक्षि यो।

माघहे सख्ख जाड़ लागत जुलुम कश्च गेल कंत यो।
अंगअंग अनंग ज्वाला ताप ताश्चत देह यो।
रमानन्द रहु िर काश्चश्चा िर यि मन माश्च यो।
आओत फागुन श्चलत बालम खेलत हुश्चा संग फागु यो।

(2)
कहत मैना सुनू यो मुश्चा जन गौरी कोना रहत कुमाश्च यो।
गौरी जोग बर खोश्च आनू चढ़ल मास बैसाख यो।
जेठ नारद श्चरश्चा चहु श्चश्च जोहल भंश्चाया श्चखाश्च यो।
कहश्चि नारद सुनहु श्चिभुवनपश्चा चलह व्याहन आज यो।
अखाढ़ हेमन्त घर बश्चयात लायल देखल सकल समाज यो।
काज राज सब छोड़ि सख्खसब देखु हर बश्चयात यो।
सावन वर बौराह आयल बसहा पीठ असवार यो।
एहन उमत वर हेमन्त लायल पैर फाटल बेमाय यो।
भादब मैना भेश्च व्याकुल िनश्चि मािर कपार यो।
घटक के हम की श्चगाड़ल की श्चश्चि श्चखल श्चलाट यो।
आश्चन मैना गेश्च अंगना मन दुख अगम अपार यो।
आब हम श्चष घोश्च पीअब मरब जल श्चच जाय यो।
काश्चाक शंकर भस्म तेजल कयल गंगा स्नान यो।
रगश्च चानन अंग लेपल भेल सुन्दर रप यो।
अगहन मैना भेश्च हरश्चत लावश्चि गाइश्चा बजाय यो।
चलह सख्ख सब गीत गाबह श्चिभुवनाि जमाय यो।
पूस सख्ख सब छोड़ि बैसश्च देखश्चि रप अनूप यो।
चलह सख्ख सब करह मौहक देश्च नैन जुड़य यो।

माघ शंकर भेल व्याकुल जोहथि आक ि ि र यो।
एहन उमत वर हेमन्त लायल भाग हुनक अ ि र यो।
फागुन शिव सँ कहथि गौरी सुनू शिव अरजी हमार यो।
एक बेथि भस्म उतार शंकर देखत हेमन्तक समाज यो।
चैत मैना भेथि हरषित पूरल मनक अभिलाष यो।
भनथि विद्यापति ई पद गाओल मिलल त्रिभुवन ना ि यो।

(3)
अगहन सीता के विवाह, पूस कोवर तैयार।
माघ सीरक भराय देव र ि वर जी के।
फागुन फगुआ खेलायब, चैत फूल लोढ़ि लायब,
बैषाख बेनिया डोलायब र ि वर जी के।
जेठ घाम परे भारी, आषाढ़ वुन्द झरे सारी,
सावन झूलबा लगा दे, र ि वर जी के।
भादव राति अन्हार, आसिन करब शृंगार
कातिक आबि गेल अबधि ला र ि वर जी के।

(4)
कातिक अयले कलकतिया जोहन बटिया।
अगहन चुड़वा कुटायब पूस दही पौरायब।
फागुन फगुआ खेलायब चैत फूल लोढ़ि लायब।
बैषाख बेनिया डोलायब जोहन बटिया।
जेठ हेठ भऽ गमायब अषाढ़ घर चल जायब।
सावन दुनु मिलि खेलब जोहन बटिया।
भादब नदि घहराय आसिन आस लगायब।

काशीक ऐलै कलकंअआया जोहन बइठया।

छौमासा(1)

साओन सवसिोहाओन सखि हे फुलल बेली चमेली यो।

रभसि सौरभ भ्रमर भमि भमि करय मिरिस केली यो।

आरे केलि करि पहु

मन दय

सखि अधिक विरह

मन उपजय।

भादव घन घहराय दामिनि गरजि गरजि सुनाय यो।

बरसु घन झहर बून्द चहुंदिश मोहि कछु नहि भाय यो।

आरे भामिनि भय घन

दमसय

सखि मुरछि खसु

महिमय।

परिणाम कोन उपाय हे सखि करब कोन परकार यो।

मास आशिन अधिक ज्वाला विरह दुख अपार यो।

आरे कतेक सहब

दुख पहु बिनु

सखि ककरो नाह

बिछुड़ जनु।

नाह बिछुड़ल मोर हे सखि होयत जीवक अन्त यो।

अरण काशीक शिवमय ियब जतय लुबिल कंत यो।

आरे कंत जोहय हम

जायब

सखि जतय उदेष

हम पायब।

अगहन हे सखि साथि लुबि ल लबल जीवन मोर यो।

योगिआ भय हम जगत जोहब जतय जुगल किशोर यो।

आरे हमर पभु जौ

अहोताह

सखि कर गहि कंठ

लगोताह।

पूस िरज िरय चाहिए भमर रहल विदेष यो।

हुनि विदेषी सुखहि खेपत हमर तरण वयस यो।

आरे विदेसहि वैसि

गमओताह

सखि हमर गृह नहि

अओताह।

माि झझिर पवन डोलय देह झाझड़ मोर यो।

हँसथि, बसन उघि सखि सब कहथि मोहि विजोर यो।

आरे शोक वियोग

मनहि मन

सखि चित्त नहि

थिर रहे एको छन।

(2)

वैषाख मास तिन तलफत घाम चुबै अविरल।

वैश्ख बेश्आया डोलायब कोठश्वया मे।
जेठ दहकत अकास, घाम सहलो न जात

पैस बैसब भीतर मश्अदश्वया मे।
अषाढ़ वुन्द्द अपार पावस बरसे हजार

देश्ख हरषि अपन कोठश्वया मे।
साओन बरखा बहार, झुला करब तैयार

झुला झुलबै हम फुलवश्वया मे।
भादब भर गदी नार, नैया करब तैयार

अहा श्झझरी खेलायब नश्दया मे।
आश्मन शरद बहार चादनी के झलकार

रास रचालेब कंचन महश्आया मे।
काश्आक दुश्आया मनायब सबके एतश्ब बजायब

करब सब सुख साज कोठश्वयामे।
अगहन पन्चचमी मनायब नवका चड़बा कुटायब

प्यारे परश्म खुआयब ससुरश्वया मे।

चैमासा

(1)

मा ि मोहन नेह लगायल अपने चलल परदेष यो।
ओहि रे परदेशिया रामा ओतहि गमाओल हम ि बाढ़ि बयस यो।
फागुन हे सखि आम मजरल कोइली सबद घमसान यो।
कोइली शब्द सुनि सुनिया मोर सालय नैना सँ झहरय नोर यो।
चैत हे सखि बीतत चंचल यौवन भेल जीवकाल यो।
आन ि नि रहितय बेचि हम खइतौ ई ि नि बेचलो न जाय यो।
बैषाख हे सखि विषम ज्वाला घाम सँ भीजल शरीर यो।
रगड़ि चन्दन अंग लेपितहुँ जौ गृह रहितथि कन्त यो।

(2)

कैसे खेपव सिनु कारि अन्धारि दामिनि दमसय रे।
सखि री सुखक मास अषाढ़ आस नहि पूरल रे।
दादुर करत पुकार झिंगुर झंझकारत रे।
सखी री सावन चहुँ ओर घटा मयूर बन कुहकत रे।
भादव मे मेघ झंहरत मोर मन झहरत रे।
सखी री हरि बिनु मंदिर शून गुण कत सुमिरब रे।
'सूरदास' पभु गावल सखी समुझाओल रे।
सखी री ि रिज ि र चहु मास आसिन हरि आओत रे।

वसन्त (1)

सरस वसन्त समय भेल सजनी गे दखिन पबन बहु ि ीरे।
सपनहुँ र प वचन एक भाखिय मुखा सँ दूर कर चीरे।
तोहर बदन सन चान होथि नहि यदपि जतन विधि देथि।
कय वेरि काढ़ि बनाओल नव के तदपि तुलित नहि होथि।
लोचन तूल कमल नहि भय सक से नहि के जग जाने।

तै पुश्व जाय नुकायल ज लमे पंकल एश्व अपमाने।
मदन बदन परतर नश्च पावश्च जब भश्च तोहरश्च जोश्च।
भनश्च श्चदापश्च सुनु वर यौवश्च उपमा सुझय न मोश्च।

(2)

समय वसन्त श्चया परदेष
असह सहब कत श्चरह कलेष
सुमश्च पहु मन नश्च िर
मदन दहन तन दगि शरीर
षीतल पंकज चम्पाक माल
हृदय दहन कर श्चषरि ज्वाला
श्रवण दहन कर कोश्चकल गान
चान दहन तन अनल समान

(3)

रंगीली रंगश्महल मे खेलतु आज वसन्त।
संगश्सखी शृंगारश्सजी सब सरस तरंग वसन्त। रंगीली...
सुश्कर कनक श्चचकारीशिरी, सोहत शी श्चय कन्त।
भीजतश्भूषणश्सनश्मणश्तन, अनुपमश्छश्च दषन्ति। रंगीली...

श्चरहुत

(1)

मिपुर गेल मनमोहन रे मोर श्चहरत छाती।

गोपी सकल बिसरलिन्ह रे जते छल अहिबाती।
सुतल छलहुँ अपन गृह रे निन्द गेलौ सपनाइ।
कर स छूटल परसमनि रे के लेल अपनाइ।
कत सुमिरब कत झाखब रे हम मरम गरानी
आनक धनि लय धनवन्ती रे कुबल भेलिरानी।

(2)
जखन चलल हरि मधुपुर रे सब सुरति बिहारि।
आब कोना रहब हरि बिनु रे झाखथि बजनारि।
वन मे डोलय थपर पात रे जल बहय सेमारि।
हम धनि डोलय थया बिनु रे बिनु पुरषक नारि।
केहन कमधिनि थिकि झाखलनि रे झाखथि वृजनारी
ठरि बिनु भूषण भार भेल रे पलंगा ने सोहाई।

(3)
सुतल छलहुँ हम घरवा रे गरवा भोतिहार।
राति जखन भिनसरवा रे पहु आयल हमार।
कर कोषल कर कपइत रे मुखचन्द निहारे।
केहन अभागलि बैरिन रे भागल मोर निन्द।
थदापति कवि गाओल रे धनि मन धरि धीर।
समय पाबि तरबर फर रे कतबो सिंचु नीर।

बटगवनी

(1)
तरुणी वयस मोर बीतल सजनी गे थया थया बिसरल मोर नाम।

कुसुम फुलीय फूल मौलल सजनी गे भमरो ने लेल विशाम।
आर अन्कुर नहि भावय सजनी गे मुखहि खसय एहि ठाम।
उठ दूत परम व्याकुल सजनी गे नयन ढ़रक्क खसु वारि।
अि रस ओतय गमाओल सजनी गे दय गेल सौक्षानक बारि।
युगल नयन मन व्याकुल सजनी गे थिर नहि रहय गेयान।
विदापति कवि गाओल सजनी गे ई थिक दुखक निदान।

(2)
चानन बुझि हम रोपल सजनी गे
भय गेल अमरक
गाछ सजनी गे।
ताहि रे गमक अया जागल सजनी गे।
चलि भेल अया
परदेष सजनी गे।
बारह बरस पर आयल सजनी गे,
लायल कंगही सनेस
सजनी गे।
ताहि कंगही लय आयल सजनी गे,
कय लेल सोलह
शृंगार सजनी गे।
खोइछ भरि लोढ़लहुँ चंगेरी भरि सजनी गे,
सब फूल सेजिया
लगैब सजनी गे।

फगुआ

(1)

मिथिला मे राम खेलथि होरी। मिथिला मे...

अतर गुलाब कुम कुम केषरि, रंग अबीर भरल झोरी।

सखि सब सजि सजि रघुवर के देल अबीर भरल झोरी।

होइछ बाद ध्वनि थथथि थाधि नाचशान ओ झकझोरी।

मारथि मसि पूर्णपिचकारी राम सकुचि जाइछ गोरी।

सुरगण सुमन गगन सौ उझलथि, अबीर गुलाल बीच घोरी।

कूदथि बालक वृन्द मुदित मन, मलालमला आज-आज जोरी।

ऐ फगुआ के रप मिथिलापुर, घरघर मचि रहल होरी।

'हरेकृष्ण' शोभा लखि सकुचात, शेषशारदाशत् जोरी।

(2)

गवअन बिच धूमि मचायो री, गवयन...

ग्वालवाल संग आये कन्हैया प्रात भोरे उठि आयो री।

हाथ अबीर गुलाल पिचकारी मार डारो री।

वन्शी वीणा झाल बजाओ देत गारी गायो री। -गवयन......

(3)

गोरी संग कृष्ण खेलय होरी

ग्वाल वाल संग कृष्ण कन्हैया

सुन्दर रंग भरी झोरी।

बाजत आबत झाल मृदंग सब

सब जन आबत रस बोरी।
थाश्वरि दास गाओल बाल संग
युग युग जीबओ यह जोरी। गोरी संग...

(4)
परदेश्मया लै अंगना श्मपावे गोश्वया। परदेश्मया...
जब परदेश्मया नगर बीच आयल
खुटे खुट अंगना श्मपावे गोश्वया। परदेश्मया...
जब परदेश्मया आंगन बीच आयल
रश्च रश्च केश्मया बन्हावे गोश्वया। परदेश्मया...
जब परदेश्मया घर बीच आयल
झाश्क़ झाश्क़ पलंग ओछावे गोश्वया। परदेश्मया...

(5)
परदेश्मया के नाश्व सदा रे दुश्वया।
चाश्वम मास फागुन अब बीतल
कश्वयो ने आयल पहुँ पश्वाया। परदेश्मया....
पाचम मास चैत जब बीतल
अपनो ने सूनल हुश्व बश्वाया। परदेश्मया...

(6)
होरी खेलत शी रघुवर रश्मया।

ि्मि मचावत, डंफ बजाबत घाटश्बाट सब रोक श्वया।
शी रघुवंषी छैल छबीले, शी श्मथिलेष दुलारी श्मया।
ललकारत दोऊ ओर परस्पर जीत श्वया होरी जीत श्वया
अबीर उड़ावत रंग वरसावत जनक नगर के गश्व गश्वया।
'पेमश्वाथि' अबला पबला भऽ, उमश्ड़ चली हे रंगरश्वया।

(7)
होरी मे लाज न कर गोरी।
पेम बजवासी तु गोरी भली बीनहै यह जोड़ी।
जौ इससे सीि नश्व खेलहुँ मार मार कर वरजोरी।
सुरदास श्वाकले सब बन मे श्वये जाय वन मे जोड़ी।

चैताबर

(1)
कृषण तेजल मिुवनमा हो रामा कौन करनमा

कृषण तेजल मिुवनमा।
यमुना तट पर वंषी वट पर सेहो नश्व लागत सोहनमा
कौतुक हास रास वृन्दावन सेहो सब भेल सपनमा

हो रामा कृषण तेजल मिुवनमा।
जौ हम जश्वातौ कृषण नश्व औता रश्वतौ अपन भवनमा।
सूरदास पभु तुम्हरे दरस को हश्व मुख भेल सपनमा।

हो रामा कृष्ण तेजल मधुविनमा।

(2)

चैत रे मासनमा पिया घनु आबै नहि आंगनया, हो रामा...

पिया परदेष गेल सुधि बुधि हरि लेल

भुलि गेल घर के सुरतिया हो रामा पिया घनु.....

जब सुधि आबै पिया तोहरो सुरतिया

कुहुकि उठय मोर छतिया हो रामा पिया...

केहन कठोर भेल पिया के करेजवा

एको नहि पाख भेजय पतियाश्हो रामा

घर जब अइहे। पिया कोरा लै बैसिहे

नखरा लगैहे आनि रतिया हो रामा...

कहत महानन्द सुनु हे सहेलिया

ऐसे मे बितै हे सारी रतिया हे रामा....

(3)

डिम डिम डमर बजाबै हो रामा, शिव रंगरसिया।

अपने सदाशिव पूजा पर बैसता

गौरी सँ टहल कराबै

हो रामा...

अपने सदाशि भाग उपजावै

गौरी सँ भाग पिसाबै,

हो रामा....

अपने सदाश्चव बसहा चराबै
गौरी सँ डोरी िरावै,
हो रामा....
अपने सदाश्चव माथाश्माथा आनथि,
गौरी स िन कुटावै,
हो रामा....

(4)
रसल थयबा मना दे कोइश्चाया
तेरी मीठी बोश्चाया।
सगर रैश्चा हम कतेक मनाओल
ओ नश्च मानल मोर
बश्चाया।
केओ नश्च श्चतश्चंि ककरा जगायब
के थया देत मनैया।
आमक गाछ पर तोही जे कुहुकब
हम कुहुकब श्चन
रश्चाया हो रामा...
सूरदास पभु तुम्हरे दरस को
कओन हरल हुश्चा
मश्चाया। हो रामा तेरी मीठी बोश्चाया

(5)
कौन कयल योग टोनमा, हो रामा सब गेल वनमा
राम लखन श्चाय वनश्च श्चािरल, दषरि तेजल परनमा, हो रामा..

मातु कौशल्या रोदना पसारल सुन भेल नगर भवनमा, हो रामा..
तुलसदास पभु तुम्हरे दरस को, निरखि इहो कोप भवनमा, हो रामा..

झूला

(1)
यमुना तीरे कदमक डारी झूला रेषम के डोर गे।
षोभा देखि भेल मतबौरी जान हरन भेल मोर गे।
एक दिष राधा एक दिष कन्हा दोउ कर झकझोर गे।
राधा वदनमा पर शोभे माला निरखत नंद किषोर गे।
नभ घिरि अयलै कारी बदरिया भेलै गगन मे शोर गे।
खंजन के मात चंचल भेलइक नयना झहरे नोर गे।
राधाकृष्ण युगल अति सुन्दर एक श्यामल एक गोर गे।

(2)
आयल सावनक मास, मन मे बढ़ल हुलास
मनमा लागि गेलै
वृन्दावन नगरिया मे।
झुला परम अनमोल, लागत रेषमक डोर
झूलत नन्द किषोर
इजोरिया मे।
सखियन संग राधा रानी से छवि कोना के बखानी
सुन्दर बाजन बाजै
हुनका पैजनिया मे।

झूलवै भक्ष्यकय सखी सहेली, सुमुखी राि अलबेली
झूलत राि श्याम
यमुना कनश्चया मे।
एक सख्य लेने कर मे माला, कहा गेल नन्दलाला
सूरदास पुछथि न्ह
छोक्ष़ डगश्चया मे।

(3)
झूला लगे कदम की डाली,
झूले कृषा मुरारी
ना।
कौने काठ के बनल श्वड़ोला
कोन वस्तु के
डोरी। झूला..
राि झूलय कृषा झुलावय बारीशारी ना। झूला..

छश्च

(1)
अंगना मे पोखरी खुनायल
छश्च मइया औती
आइ।
दुअरा पर तमुआ तनायल
छश्च मइया औती

आइ।
अँचरा सँ गक्षया बहारब
तैपर थयरी ओढ़ायब

छक्ष मइया औती आइ।

(2)
डोमन बेटी सुप नेने ठाढ़ छै
उगै हो सुरज देव।
अरघ केर बेर
हो पूजन केर बेर
माक्षन बेटी फूल नेने ठाढ़ छै
उगै हो सुरज देव।
अरघ केर बेर
हो पूजन केर बेर
केओ ने छै लेसबैया परमेसरी मैया
सोना के दयरा मइया, पाटशसुती बाती हे
अबला नारी लेसबैया परमेसरी मइया
आनि कोढ़ी बाटे-घाटे ठाढ़ छै
उगै हो सुरज देव।
अरघ केर बेर
हो पूजन केर बेर
पान सुपारी पकवान नेने ठाढ़ छै
उगै हो सुरज देव।

(3)

हमरो पर होइयौ सहाय, हे छठि मइया

हमरो पर होइयौ सहाय।

चारि पहर राति जलशिल सेबलौ

सेबलौ छठि गोरथि, हे छठि मइया।

हमरो पर होइयौ सहाय।

अपना ले मंगलौ अनशिन लछमी

जुगशजुग मागल अहिबात, हे छठि मइया

हमरो पर होइयो सहाय।

घोड़ा चढ़ै लेल बेटा एक मंगलौ

हमरो पर होइयो सहाय।

वयन बिलहै लेल बेटी एक मागल

मागल पण्डित जमाय, हे छठि मइया

हमरो पर होइयो सहाय।

(4)

केरवा जे फरल छै घौद सँ, ओइ पर सुगाा मड़राय।

मारबौ रे सुगवा िनुष सँ, सुगा खसल मुरझाय।

सुगनी जे कानय श्रियोग सँ, आदित होउ ने सहाय।

काचहि बास केर बहिंगा, ओइ मे रेषमक डोर

भइया जे फलला भइया, भार नेने जाय छै
बाटश्व पूछै बटोश्वया स, ई भार श्वकनकर जाई।
आन्हर होइबे रे बटोश्वया ई भार छश्व माई के जाइ।
ई भार दीनानाि के जाय।

समदाउन

(1)
बड़ रे जतन सँ श्वया जी के पोसल
सेहो रघुवंषी नेने जाय।
कौने रंग दोश्वया कौने रंग ओहश्वया
लाश्व गेल बतीसो कहार।
लऽ कऽ श्वकसल श्वजुवन सश्वया
ओश्व बन केओ ने हमार।
केयो जे कानय राजमहल मे
केओ कानय दरबार।
केओ जे कानय श्वश्विला नगर मे
जोश्व सँ श्वजोश्व केने जाय।
आजु ि‍ीया कोना अमा श्वनु रहती

छनश्छन उठश्ना

चेहाय।

(2)

भेल श्चवाह चलल श्चवषंकर

गौरी सश्चत कैलाष।

बसहा पीठ श्चव दोश्चाया पठाओल

बाघ छाल पड़ल

ओहार।

बड़ रे जतन सँ गौरी के पोसल

घृत म[दू[

पीआय।

सोनाक मुरश्चा सन गौरी हमर छश्चि

वर भेल तपश्चस

श्चाखाश्च।

हमर गौरी कोना तपोवन जैतीह

झाखश्चि राजदुलाश्च।

(3)

सुग्गा जौ पोश्चसतहुँ भजन सुनश्चते

िया पोश्चस श्चकछु

नश्चह भेल।

घीवक घैल जका पोसलौ हे िया

बेटा जेका कयल

दुलार।

सेहो िया मोर सासुर जैतीह
सुन भवन केने
जाय।
ओलक छाहि जका पोसलौ हे िया
मि र जेका राखल
जोगाय।
सेहो िया मोर सासुर जैतीह
सुन भवन केने
जाय।

(4)
बारह बरस केर छल उमेया तेरहम बरस ससुरा।
कौने आरमोया दनमा पठाओल कोन आरमोही मा लेल।
कोने आरमोया डोया पठौलक कौने आरमोही नेने जाय।
ससुर आरमोया दनमा पठौलक बाबा आरमोही मा लेल।
भैया आरमोया डोली पठौलकइ स्ामी आरमोही नेने जाय।
कि देख िरज िरबह हे सया कि देख रहब लोभाय।

(5)
जखन महादेव आज घर चललाह गौरी सत कैलाष।
बसहा चढ़ल व डोया पठौल बाघछाल कयल ओहार।
घर सँ बाहर भेला हेमन्त ऋृ भय गेल बाप पीठी ठाढ़।
घर सँ बाहार भे माय मनाइ सुसुक बहाब नोर।
सब दन खा गौरी माखन सरी सकर कर अहार।

से गौरी कोना ितुर भाग खयती आन की हयत आिर।

पराती

(1)
उश्ठ भोरे कहू गंगाशांगा।
उश्ठ भोरे कहू गंगाशांगा।
छल एक पापी महाबली
जाय मगह मश्ठ गेल।
ओकरा तनके कौओ कुकुर ने खाय,
श्याद गीदर देश्ख डराय। उश्ठ...
गश्ल गेल मास हाड़ भेल बाहर
रोमशोम भेल श्यकलाई।
कश्याका एक उश्ठ पद पंकज,
सुर श्यमान लय िाई। उश्ठ...
पंछी एक उड़ल गंगा मे
ऊपर पाश्ख फहराई।
देखू गंगाजी क मश्हमा जे
ओ कोना तश्र जाई।

उच्छ...
गेल बैकुण्ठ मुच्चत मन देखू,
आरश्चा सुर उतराई।
भोलाजी गंगाक मश्चमा,
कहइत अश्चिक
लजाई।

(2)
कोन गश्चा होयत मोर हो पभु कोन गश्चा होयत मोर।
जनम जनम हम पाप बटोरल कश्चओ न भजलहुँ तोर।
बेश्च बेश्च अँश्चया कमल मुख हेरलहुँ सुश्चि नश्च तोर एको बेर।
अबहु सुमश्चा गश्चा श्चय श्चिभुवन पश्चा शरण रहब हम तोर।
तुलसीदास पभु तुम्हरे दरस के दुख संकट हर मोर।

(3)
रि पर श्चारखत जात जटाई रि पर श्चारखत जात।
रि के उपर बैठ वैदेही नाजत श्चाठुराई। रि पर...
है कोइ वीर राम के दलमे रि के ले श्चलमाई।
कोन वंष के सूत रघुराई कौन हरने आई। रि पर ...
सूयश्चिषक राजा नृप दषरि तश्चाके सुत रघुराई।
तश्चाके श्चया नाम जानकी श्चाषचर हरने जाइ। रि पर...
करण वचन जब सूनेउ जटाई रि चश्च कयल लड़ाई।
अश्चावाण मारल सो िरती श्चारल मुरदाई - रिपर
मन सँ आश्चष देल माता जानकी पाण रहे घट छाई।

एखन बाटे आओता रघुवर ताकय सव बात कहव बुझाई। रि पर...

(4)
जागहु राम कृष्ण दोउ मूरत्ति दषरि नन्द दुलारे।
उदय होय उदयाचल आवत जोत्ति पलंग पसारे।
जय जयकार करत सब आयो सुर नर मुनि तुअ दुआरे। जा....
ि ीट मुकुट मकराकृत कुण्डल मुरली िनुष सम्हारे।
कब देखिहौ नयनन दोउ मुरत्ति सन्तन केर रखबारे। - जा....
पायो दरस परस पद पंकज पापी पुरष उवारे।
रहे एक आस दास तुलसी के तीन लोक के न्यारे।
सीता पत्ति रा ि वर जोरी लेइय सुधि न हमारे। - जागहु....

(5)
जुनि कर राम वियोग हे जननी। जुनि..
सुतल छलहुँ सपन एक देखल,
देखल अव ि क लोक हे जननी। - जुनि....
दुइ पुरष प ि अबइत देखल,
एक श्यामल एक गोर हे जननी। - जुनि....
कंचन गढ़ हम जरइत देखल,
लंका मे उठल ककलोल हे जननी। - जुनि.....
सै ि तु वान्ह हम बन्हाइत देखल,
समुर मे उठल हिलोर हे जननी। - जुनि....

नचारी

(1)

रहबौ हम तोहरे नगरिया हो भंगिया,
रहबौ हम तोहरे नगरिया।
झारी मझारी मे कुटिया बनायब,
सब दिन बहारब डगरिया हो भंगिया।
भागो फिर पीछा तोहरा धयायब,
भोर साझ दुपहरिया, हो भंगिया....।
भागक बाड़ी मे बसहा चराएब,
जीवन भरि करबौ चकरिया, हो भंगिया...
फिर के फूल बेलपतिया चढ़एब,
चानन चढ़ायब केषरिया, हो भंगिया....
कतबो हटेला सँ हम नहि हटबह,
कहियो ने छोड़बह दुअरिया, हौ भंगिया...।
सब दिन नवीने नचारी सुनाकय
अपन बतायब उमरिया, हौ भंगिया...
नेको अनेको जनम मे बसिहह,
अपन घरक पछुअरिया, हो भंगिया...
'मकिर' सतत बाट हम तोरे ताकब
कहियो त फेरबऽ नजरिया, हौ भंगिया...।

(2)
आइ मयना के अंगना सोहाग बश्चना।
जेना जूटल छै शोभा के खान बश्चना।
गौरी ओ शंकर युगल रप मोहन।
कए के सकै अश्छ बखान बश्चना।
घरश्घर नगर ओ डगर पर श्चराजय।
तानल वसन्त श्चतान जश्चना।
छश्च के छटा पर कश्चक घन घटा अश्छ।
तै पर स्चर लय के जुटान बश्चना।
मोदो पमोदो पमोदो पाश्च उमड़ल।
उदश्चि देश्च पूनम के चान जश्चना।
श्चवराश्च श्चवमय करय श्चष भश्च कै।
'मिकर' सब फागुन के मास एश्चना।

(3)
गौरी तोर अंगना बड़ अजगुत देखल तोर अंगना।
एक श्चस बाघ श्चंह करै हुलना

दोसर बड़द छैन सेहो बउना।
पैच उिर लय गेलहुँ अंगना

सम्पश्च के मध्य देखल भाग घोटना।
खेती ने पिरी श्चव के गुजर कोना

मंगनी के आस छथ्नि वथ्रसो थ्रदना।
काथ्रुक गणपथ्रि दुइ जन बालक

एक चढ़ै मोर एक मूस लदना।
भनथ्रि थ्रदापथ्रि सुनु उदना

दाथ्रर हरण कर घैल शरणा। गौरा...

(4)
नारद बहुत बुझा हम कहलहुँ
गौरी लय एहन वर
अनलहुँ यो।
हमरो गौरी छथ्रि बारह बरख केर
बुढ़वा वर लय
अयलहुँ यो।
नारद बड़ अजगुत अहा कयलहुँ।
गौरी लय एहन बर
लयलहुँ यो।
तीथ्रु भुवन बर कतहुँ न भेटल
तँ घर घूथ्रि थ्रकथ्रि
अथ्रतहुँ यो।
बेथ्रट गौरी छथ्रि अल्प वयस केर
कथ्रुको नथ्रि
थ्रचारलहुँ यो।

भनश्च थदापश्चा सुश्चाय मनाइश्चा

थिभुवन पश्चा लय अयलहुँ यो।

(5)

जोश्या एक ठाढ़ अंगनमा मे।

श्चाश्चयो ने श्चाअय बाटो नश्च छोड़य गौरी कोना जयती अंगनमा मे।

देह अश्छ सह सह थ्वषरि शतश्पत भूतश्पेत छश्चा संगवा मे।

बरहा चढल श्चव डमर बजाबथि जटा बीच गंग तरंगना मे

जोश्या एक ठाढ़ अंगनमा मे।

सामाक गीत

(1)

डाला लय बहार भेली बश्चनो से फलला बश्चनो

फलला भैया लेल डाला छीश्चा, सुनु राम सजनी....

समुआ बैसल तोहे बाबा बड़ैता

तोर बेटा लेल डाला छीश्चा सुनु राम सजनी...

कि केर आहे बेटी डालवा तोहर छौ

कि बान्हल चार कोन सुनु राम सजनी...

काचश्च जे बास केर डलवा यौ बाबा

बेलीशमेली चार

कोन सुनु राम सजनी ...
जौ तोरा आहे बहिनो डलवा जे दय देब
हमरा के की देब
दान सुनु राम सजनी....
चढबाक घोड़ा देव पढ़वाक पोथि देब
छोटकी ननदिया देब
दान सुनु...

(2)
चानन गाछ तर भेला बहिनो
से फलला बहिनो
ताकथि बहिनो भाइ केर बटिया
एहि बाटे औता भैया,
से फलला भैया ..
देखि लेबनि भरि अँखिया
पैर पकड़ि जनु कानू
हे बहिनो, से फलला वहिनो
फाटत मोर छतिया।

(3)
हमर भैया कोना आबै
हाथि चढ़ल भैया
हँसैत आवै
पान खय मुह रंगैत आबै

रुमाल लय मुह पोछेत आबै।

दरपन लय मुह देखैत आबै

चुश्याला कोना के आवै

गदहा चढ़ल श्च्श्चआइत आबै

कोइला सँ मुह रंगैत आबै

गुदरी सँ मुह पोछैत आबै।

(4)

गे माइ कौने भइया जयता अटना पटना

कोने भैया जयता मुंगेर।

कोने भइया जेता श्चदल्ली कलकता

कौने भइया जयता रंगून।

कौने भइया लौता आलश्चश्झालश्च

कौने भइया लौता पटोर

कौने भइया लौता श्झलश्मल केचुआ।

कौन भइया लौत कामी श्चनुर

कौने बश्च्हना पश्च्रश्च आलश्च झालश्च

कौने बहिनी पहिर पटोर।
कौने बहिना पहिरथि झलमल केचुआ

कौने भौजी काथि अनुर।
युगेश्युगे लीबि इहो सब भैया, भौजी के बाहु अहिवात।

(5)
नदिया के तीरे तीरे फललौँ भैया खेलथि शिकार।
कहि पढ़ोलथि भाइ फलला बहिनो के समाद

भैया आओताह पाहुन हे।
कोठी नहि मोरा आरब चाउर बसनो नहि बीड़ा पान हे।
कौन विधि राखब माइ हे, फलला भाइक मान हे।
हाट बजार सँ चाउर मंगायब, तमोली सँ बीड़ा पान हे।
पटना शहर से शिवाया मंगायब, राखब भैया के मान हे।

(6)
गाम के पछिम ठुहि पाकड़ि रे ना
ना रे ताहि पर बाबा बसेरा लेल ना।
खेलितेशपैते गेली फलला बहिनी ना।
एक कोस गेली बहिनी दू कोस ना।
तेसर कोस बहिनी हेराय गेलौ ना।
तकैत तकैत गेलथिन फलला भौया ना।
एक वन तकलथि भैया दुइ वन ना।

कतहुँ ना भेटय बझुआया मोर ना।
देहश बैसल भैली खुष भेली ना।
ना रे भेल ननदी हेराय गेली ना।

(7)
गाम के अधिकारी भैया हे
भैया हाि दस
पोखरी खुना थय।
चम्पा फूल लगा थय हे।
फुलवा लोढ़ैत बझुनी
आयल हे।
घअ गेल थार के थानुर नयन भर काजर हे।
छता लेने आवथि भैया से फल्ला भैया हे।
बैसह बझुनी एश्ह छाह आषीष देहु हे।
युगेशयुगे जीवि फल्ला भैया तोरो अझबात बढ़ू हे।

राग संबंिी
लक्षात राग मे
मेघ समय पर जलदान करे।
पृथ्वी िनशिनय सँ भरल रहे।
थसुन पाश्व जनु नृपश्नाक काने।
गुन बुझ भूप करि सनमाने।
थ्वरै थ्नबि श्नुदुपश्ना देओ।
गुन कीरथि गाबश्ह सब केओ।

राजश्वजय राग मे

जय जय पश्वजात तरराज।

पाओल पुरब पुन

दरसन आज।

सरगक भूखन गुनक श्रावास।

सुरहुक तोहे पश्वपूरह

आस।

सेवक सब तुअ दानव देबा।

मानव जानव की

तुअ सेवा।

सुरमश्चा श्राअ कर करश्चि श्चकआरी।

सची देश्चि सुरसश्च

जल ढ़ारी।

सुमश्चा उमापश्चा भन परमाने।

माहेसश्च देइ

श्चन्दुपश्चा जाने।

आसावरी राग मे

जायब हश्वक समाजे। पाओब नयन सुख आजे।

श्चक आरेश्चुवमद।

जोगहुँ न जाश्चाअ जन्ही। श्चठीभश्च देखब तन्ही।

बह श्चव सेव जाही। काश्च भजब तेश्च ताही।

मनश्च भगश्च लेब मागी। समय परमपद लागी।
श्चन्दुमश्च श्मउ जाने। महेसश्च देइ श्चरमाने।
सुमश्च उमापश्च भाने। पुनमश्च भजु भगमाने।

वसन्त राग मे

अनश्चनत श्कंषुक चार चम्पक वकुल बकुहुल फुश्चलया।
पुनु कतहुँ पाटश्च पटश्च नीश्क नेवाश्च माश्चि मश्चलया।
कर जोश्च रकुश्चश्च कृषण संग वसन्त रंग श्चहार ही।
श्वतु रभस श्चश्चार समाश्च रसमय रमश्चि संग श्चहार ही।
अश्च मजुु बन्जुल पुन्ज श्चन्जल चार चूअ श्चराजही।
श्चज म्श्चिं मातश्च पल्लबच्छश्च लोश्चतच्छश्च छाजही।
पुनु केश्च कलकल कतहु आकुल कोश्कल कुल कूजही।
जनु तीश्च जग श्मश्च मदननृपमश्च श्चजयराज सुराजही।
नव म्िर म्ि रसु मुगुि म्िकर श्चकर श्चक रस भावही।
जश्च माश्चश्च जन मान भन्जन मदन गुरगुन गावही।

बराडीराग मे

अब तर अबनी तेश्म अकास।
न श्चिक श्चवाकर न श्चिक हुतास।
ीती बिल श्चलक उपबीत।
बह तेज अश्च अश्चिक उदीत।
बैनब दण्ड वेद कर सोभ।
आवश्चि नारद दरसन लोभ।
परम जुगुत श्चश्च जगतक हीत।

बहासुत मोर सम्भुक मीत
सुमश्चा उमापश्चा भंन परमान।
जगमाता देश्च श्चन्दुपश्चा जान।

पंचम राग मे
सश्च हे रभस रस चलु फुलवारी।
तहँ श्चलत मोश्च मदनमुरारी।
श्चकनक मुकुट महँ मश्चा भल भासा।
मेर श्चाखर जश्चा श्चनमश्चा बासा।
सुन्दर नयन बदन सानन्दा।
उगल जुगल कुबलय लय चन्दा।
बनमाला उर उपर उदारा।
अन्जनश्चाश्च जश्चा सुरसश्च ारा।
श्चअर बसन तन भूखन मनी।
जश्चा नव घन उगल दाश्चश्चा।
जीवन नि मन सरबस देबा।
से लय करब हश्च चरनक सेवा।
सुमश्चा उमापश्चा मन परमाने।
जगमाता देइ श्चन्दुपश्चा जाने।
नटराग मे
श्चक कहब माबि तश्चाक श्चसेसे।
अपनहु तनु िश्चा पाब कलेसे।
अषनुक आनन आरश्चा हेश्च।

चानक भरम कोप कतबेरी।
भरमहु थ्राअ कर उर मर आनी।
परम तरस सरसीरह जानी।
थ्राकुर थ्राकर थ्राअ नयन थ्राहारी।
जलरि जाल जाथ्रा थ्रअ हारी।
अपन बचन थ्रकरब अनुमाने।
हथ्र हथ्र तेहु पथ्रतेजय पराने।
मावि अबहु कथ्रअ समनि।
सुपुरष थ्राठुर ने रहय थ्रादाने।
सुमथ्रा उमापथ्रा भन परमाने।
माहेसथ्र देइ थ्रन्हुपथ्रा जाने।

मालव राग मे

हथ्र सउँ पेम आस कय लाओल।
पाओल पथ्रभब ठामे।
जलरि छाहथ्र तर हम सुतलहुँ
आतप भेल पथ्रनामे।
सथ्रहे मन जनु कथ्रय मलाने
अपन करम फल हम उपभोगव
तोहे थ्रकअ तेजह पराने। ध्रुवम्
पुरब थ्रथ्रथ्रा थ्रथ्रा हुथ्रा जउँ थ्रसरल
तइओ न हुनकर दोसे।
कतन जतन थ्रि जउँ पथ्रपाथ्राअ
साप न मानय पोसे।
कवहु नेह पुनु नथ्र परगाथ्राअ

केवल फल अपमाने।

बेश्च सहस दस अश्चअ श्चजाश्चअ

कोमल न होअ परवाने। ध्रुवम्

गुर उमापश्चा पहु देव दरसन

मान होएव अबसाने।

सकल नृपश्चापश्चा श्चन्दुपश्चा श्चउ

महराश्चा श्चरमाने। ध्रुवम्।

केदारराग मे

माश्राश्रा मानह जउँ मोर दोसे।

साश्चा करह बर न करह रोसे।

भौह कमान श्चलोकन बाने।

बेहि श्चमुिश्च कय समानि।

पीन प्योरि श्चश्चबर सािी।

बहु मास िश्चा िर मोश्च बािी।

की पश्चनश्चा भय परसश्चा होही।

भूखन चरनकमल देह मोही।

सुमश्चा उमापश्चा मन परमाने।

जगमाता देइ श्चन्दुपश्चा जाने।

भल्ला राग मे

माबि करह हमर समानि।

देह मोश्च पाश्चजात तर आने।

एश्चखन तोश्चत कश्चअ परयाने।

नश्च तइँ हमर अबस अबसाने।

एश्च पश्च हमर पुरत अश्चमाने।

हयत हसी नश्च होअ अपमाने।

सुमश्च उमापश्च भन परमाने।

पटमश्चखी देह श्चन्दुपश्च जाने।

श्चभास राग मे

सहस पूणसिश्च रहओ गगन बश्च

श्चश्चबासर देओ नन्दा।

भश्च बश्चसओ श्चस बहओ दहओ श्चस

मलय समीरन मनदा।

साजश्च आब श्चबन श्चअ काजे

पहु मोश्च श्चन कर अपजस जग भर

सहय न पाश्चअ लाजे। ध्रुवम्

कोश्चल अश्चकुल कलरब आकुल

करओ दहओ दुहु काने।

श्चश्चर सुरश्च जत देह दहओ तत

हनओ मदन पचबाने।

सुकश्च उमापश्च हश्च होए परसन

मान होएत समिने।

सकल नृपश्च पश्च श्चन्दुपश्च श्चउ

महेसश्च देइ श्चरमाने। ध्रुवम्

जगदीश पसाद मंडल

संस्कार गीत/ लोक गीत नाद

संस्कार कल्पना थिक। हमरा सभक बीच संस्कारक पयोग विभिन्न रप मे विभिन्न जगह पर होइत अछि। ओना जहि रप मे संस्कारक पयोग हमरा सभक बीच होइत, ओ मन्द आ कुषाग रप मे सेहो होइत। मुदा विचारणीय पषन अछि जे मन्द तँ किएक? आ कुषाग त किएक? एखन हम एहि पषनक उतर नहि द शास्त्रीय पयोग दिस नजरि दैत छी। गभजिनत वातावरण जन्य कतिपय अपदार्थिके दूर करैक हेतु संस्कारक कल्पना कयल गेल अछि। कहल गेल अछि जे एहि स शरीर आ मन परिष्कृत होइत अछि। शालीनता आ विशेषता मनुष्यताक परम आवश्यक थिक आ ओकर पाथमिक सानि थिक संस्कार कर्म। दर्शनशास्त्रक अनुसार भोग्य पदार्थक अनुभूतिक छाप थिक संस्कार कर्म। मनुष्यक अव्यक्त मन पर अुभवक जे छाप पड़ैत छैक, समय अयला पर ओ पकट भऽ जायत छैक। यैह छाप थिक वासना आ यैह कहबैत अछि जन्मान्तक संस्कार। मिथिलासँ लोककथा

संस्कार कें शारीरिक, मानसिक आ बौद्धिक गुणदोषक परिचायक रूप ग्रहण कयलक अछि।

आश्वलायन अपन गृहसूत्र मे एगारह तरहक संस्कारक वर्णन केने छथि। जखन याज्ञवल्क्य बारह तरहक। गौतम धर्मसूत्र मे दैवयज कें संस्कार मे परिगणित कऽ अड़तालिस संख्या निश्चित लऽ गेल छथि। भारत सरकारक 1901 इसवीक जनगणना प्रतिवेदनक अनुसार ओहि समय हिन्दू मे बारह संस्कार प्रचलित छल। मिथिला मे सोलह तरहक संस्कारक विधान मान्य अछि ई थिक गर्भाधान,पुंसवन, सीमन्तोनयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म,कर्णबेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, सन्यास आ अन्त्येष्टि। एखन मात्र पाच तरहक जन्म,मूड़न,उपनयन,विवाह आ मृत्यु संस्कारक चलन अछि। मुदा इहो सभ जाति मे समान नहि अछि। जेना उपनयन मात्र समाजक अगुआइल जातिक बीच अछि। मूड़नोक रूपरेखा एकरंगक नहि अछि। ते जँ सभके नजरि मे राखि देखैत तँ मात्र तीनिये टा संस्कार जन्म,विवाह आ मृत्यु अछि।

संस्कारक कल्पना आ ओकर चयन वा नामकरणक पाछा सामाजिक कारण सोहो प्रमुख रहल। स्पष्ट अछि जे संस्कारक शासन जीवन पद्धति के खास ढ़ंग स नियंत्रित आ आदर्शोन्मुखी बनयबाक लेल देल गेल। शुद्धताक अपेक्षा सुनियोजित जीवनव्यवस्थाक आवश्यकता अधिक स्थितिक उपस्थिति दिस संकेत करैत अछि। कहैक तात्पर्य जे आयअनार्यक घालमेल सँ उपजल सामाजिक स्थिति मे संस्कारक माध्यम स अपन अस्मिता के सुरक्षित रखबाक ब्राह्मणवादी चिन्तनक परिणाम थिक संस्कार। मध्यकाल मे संस्कारक पालन पर बेसी जोर देल गेल। ओना दोषक निवारण आ गुणक अंगीकार करब अधलाह बात नहि थिक। इतिहास साक्षी अछि जे भौतिक परिस्थितिक प्रभवक

कारणे समाज मे कखनो बेटीक त कखनो बेटाक मोल बढ़ैत रहलैक अछि।

आइ जकरा मैथिल संस्कृति कहल जा रहल अछि,से की वस्तुता मिथिलाक संस्कृति थिक? एहि लेल मिथिलाक इतिहास दिस देखए पड़त। मिथिलाक धरती हिमालयक माटि-बालू सँ बनल अछि। नदी पदेषक एहि भूभाग पर धिकरात आ कोल रहैत छल। आयीकरणक अभियान मे जे किछु बहरबैया लोक सभ एहि ठाम अयलाह ओ राजा बनि के एहि पदेष पर सता स्थापित केलनि। क्षत्रिय राजसता कब्जा केलनि आ बाहणक हाथ मे समाज सता आयल। वैष्यलोकनि अर्थसताक स्वामी बनलाह। मूलवासी अर्थात आदिवासी अन्त्यज बनि गेलाह। बहरबैया लोक कम संख्या मे आयल रहथि ते कृषि कयकि लेल वा आनो पयोजन सँ पशुपालोम चिवाह जोर पकरलक। जकर चचा मनुस्मृति आ मिथिलाक इतिहास मे बिस्तार सँ अछि। राजक संख्या कम रहने, एहि ठामक आदिवासीक देवी-देवता,पावनि-तिहार आ नेम-टेम अपनौलनि। जहि स बाहणीकरण भऽ गेल। समाजक सता बाहणक हाथ मे छलनि ते हुनके जीवन-शैली संस्कृति बनल। बहुसंख्यक मूलवासी पर एकटा नव-संस्कृति आरोपित कयल गेल। औझुका जेका पचार-पसारक माध्यम त नहि छल, मुदा जे किछु छल ओ हुनके सभक बीच छलनि। लिखैक-पढ़ैक सुविधा आ सामर्थ्य रहने हुनके (बाहणक) संस्कृति सम्पूर्ण मिथिलाक संस्कृति रसे-रसे बनि गेल। मुदा मूलवासीक जीवन-शैली आ रीति-रीवाजक पूर्ण विलयन ने त संभव छल आ ने से भेल। आइयो ओ (मूलवासी) दूर बनि माटि पकड़ने छथि। जकर संस्कृति लोक संस्कृत कहल जाइत छैक।

मूड़न आ उपनयन, आब सेहो काम्य संस्कारक कोटि मे अबैत जा रहल अछि। अखनो मिथिला मे ढ़ेरो जाति बसल अछि। किछु जाति छोड़ि बहुसंख्यक जातिक बीच उपनयन पर्ि नहि अछि तैं उपनयन के मिथिलाक संस्कार कोना मानल जाय? हा, खंडित संस्कार कहल जा सकैत अछि। तहिना मूड़नोक अछि। एक रुप मे मूड़नोक चलनि नहि अछि। केयो देवस्थान जा मूड़न करबैत त क्यो गंगाकात जा। केयो गामे मे कबुलापाती द करबैत त केयो बिना गीतेनाद,पूजेपाठ केने,करैत। केयो समाज मे खीरपूड़ीकचौड़ी बौटि करैत त क्यो भोजभात कऽ। तैं सब मिला के देखला पर प्रश्न उठैत जे मुड़नक कोन रुप मानल जाय? तहिना विवाहोक संबंि मे प्रश्न उठैत? कुमार बर आ कुमारि कन्याक संग विवाह पचरिलत अछि। मुदा द्वितीय बर आ कुमारि कन्याक संग विवाह होइत जखन कि बहुसंख्यक जाति मे विधवाय बरककन्याक विवाह सेहो होइत। विधवाय कन्याक संग कुमार बर के सेहो होइत अछि तहिना मृत्यु संस्कार मे सेहो एकरुपता नहि अछि। मृत्यु के शोक बुझि गीतनाद नहि होइत। मुदा प्रश्न उठैत जे मृत्यु शोकेक संस्कार किऐक थिक? हौ, असामयिक मृत्यु के शोकक शेणी मे राखल जा सकैत। मुदा उचित आयु बीतला परक मृत्यु के शोक किऐक मानल जाय? जहिना पकृति मे देखैत छी जे अपन पूर्ण आयु पाबि स्पताः नष्ट भऽ जाइत अछि तहिना त मनुष्यो थिक। मुदा ढ़ोरो प्रश्न उठलाक उपरान्तो समाज, विवाह आ मृत्यु के व्यवहारिक संस्कार रुप मे अपनौने अछि। छिटफुट ढ़ग सँ जे किछु होइत हो मुदा समुर रुपी समाज, सब कुछ अपना पेट मे समेटि लैत अछि।

व्यक्तिगत जीवनक समस्या सँ ऊपर उठि कऽ सार्वजनिक जीवन जीवाक एहि अभ्यास कालक महत्व आइयो अछि। सन्यास यैह

थीक। बह चर्य जीवन जान अजर्निक होइत। गृहस्ताशम व्यवहािरक जीनगी होइत, जे उपाजर्न क जीवनशजीवाक माध्यम होइत। नव पिरवारक सृजन होइत। जिह स समाज आगूओ बढ़ैत आ समृद्धो होइत। तेसर अवस्ा वा अंत्राम संन्यास अवस्ा तक पहुँचैतशपहुँचैत जान आ कमर्सँ पूणर्मिनुष्य के अजान आ अबोिमनुष्यक सेवा मे लिगा जायब, बेजाय निह। वास्तव मे ओ जर िरयो अिछ।
संस्कार गीतक अिभिप्रक िवधान संस्कारक पसंग मे गाओल जायवला गीत। ई लोक पचिलत गीत थीक। ते एिह मे लोक गीतक आत्मा बसैत अिछ। लोक गीतक मनोहर फुलवाड़ी मे यिद संस्कार गीत के हटा देल जाय तँ ओ िनष्पाण भऽ जायत। यैह कारण थीक लोकगीतक, पाया समस्त िवषेषता संस्कार गीत मे उपलब्ि अिछ। मृत्यु संस्कार के छोिड़ अन्य सभ संस्कार आनन्दोत्सवक माहौल मे मनाओल मे जाइत अिछ। उमंगमय वातावरण मे नारी कंठ सँ िनकलैत स्वरलहरी देह मे िथरकन, हृइय मे झंकार आ मिस्तष्क मे चुलबुली उत्पन कऽ दैत अिछ। गीत गायव िस्त्रलाक सभ नारशारीक सहजात गुण रहल अिछ। जेना दखैत छी जे मूड़न, उपनयन, िववाह इत्यािदक समय सभ नारी समवेत स्वर मे गीत गबैत छिथ। जे िस्त्रलाक िरोहर छी। तिहना पुरषो पावि आ िािमर्क कायर्मे सभ िगत गबैत छिथ।
संस्कार गीत लाकगीतक अंग थीक। कहल जाइत अिछ जे लोकगीतक रचनाकार निह होइत छिथ, ओ सावजर्िनक रचना होइत अिछ। एकर वास लोक कंठ मे अिछ। एक कंठ सँ दोसर कंठ िमे जाइतशजाइत गीतक स्वरप बदिल जाइत। ततबे निह! गीतक भास सेहो बदलैत। एके गीत भास बदिलशबदिल कते रप मे गाओल

जायत। ते संस्कार गीत मे एकरपताक अभाव भेटैत अछि। स्वाभावगत एहि अभिव्यक्तिक दोसर परिणाम थिक भणिताक बेलगाम पयोग। गीत गौनिहारि सभ अपने फुरने कोनो गीत मे कोनो रचनाकार नाम भणिताक रूप मे जोड़ि दैत छथि। विद्यापतिक रचना उमापतिक भ जाइत त कखनो उमापतिक चंदा झाक वा मनबोधक। ततबे नहि मैथिली केँ सँ बाहरोक रचनाकार जना तुलसी, सूर दास,मीरा इत्यादि मिथिलाक माएबहिनीक कंठ मे आबि मिथिलेक आ मैथिलिऐक गीतिकार बनि जाइत छथि। जे उचित आ अनुचित दुनू थिक। उचित एहि लेल जे हुनकर लोकप्रियता विनयपत्रिता, रामायण, सुरसागर माध्यम सँ एतेक अधिक पचलित भऽ गेल अछि जे अपन बनि गेल छथि। जहाँ धरि शब्द टूटैक पश्न अछि ओ जानअजानक बीचक बात थिक। भषाक जन्म आम जनक बीच होइत। किछु नव शब्दो जन्म लैत अछि आ शुद शब्द टूटि कऽ नवो बनि जायत अछि। ते कोन गीत किनकर लिखल थिकहि, संस्कार गीत मे वुझब कठिन भऽ जायत अछि। स्पष अछि जे संस्कार गीत मैथिलमहिलाक पविष्कृत सास्कृतिक चेतनाक परिचायक थिक।

मिथिला मे संस्कार गीत अनौपचारिक शिक्षाक माध्यम अछि। मैथिल समाज मे नारीक लेल औपचारिक शिक्षा वर्जित छल। अफगानिस्तानये नहि मात्र परक लोकक लेल सेहो छल। कहल जाइत अछि जे वेद वा गीता पढ़ला सँ ओ बताह भऽ जायत। नारी मे विदुषी होइत छलीह। संस्कार गीतक संबंध संस्कृति आ साहित्य से त अछिये, समाज स सेहो अछि। संस्कृति, साहित्य आ समाजक अन्तरावलम्बन के जते नीक जेका संस्कार गीत पकट करैत अछि तते एहि पकारक आन कोनो घटक नहि। संस्कार गीतक संकलनपकाषन सँ मौखिक परम्परा साहित्य समेटल जाइत अछि आ ओ साहित्य

अध्ययनक्षाक्ष्लेषणाक आिर पस्तुत करैत अछ्छ

म्मिथिला मे संस्कार गीतक शीगणेष होइत अछ्छ गोसाउअिक गीत सँ। एह्सि स मैथिल समाजक िमिभावनाक जान होइत अछ्छ। किन्तु पश्न अछ्छ जे संस्कारक अवसर पर ई िमिशभावना मुख्यता गोसाउअिऐक गीत मे िकऐक पकट होइत अछ्छ? स्पष अछ्छ जे एिहठाम गोसाउिन गोसाई सँ बेसी महत्वपूणि छथि। भगवानोक गीत म्मिथिला मे गाओल जाइत अछ्छ मुदा संस्कार कमिक अवसर पर जे पिानिता भगवती गीतक अछ्छ से भगवानोक गीतक नहि! आब पश्न उठैत जे म्मिथिला मे देवीशपूजाक पमुखता िकऐक अछ्छ? सभ जनैत छी जे देवीशपूजा तंिसाििना सँ सम्बद अछ्छ। िकछु इिाहासकारक मत छििह जे तंिसाििना असंस्कृत जनजाििक समाज सँ आयल अछ्छ। जकरा कालान्तर मे बाहिणवादी लोकिन अपना लेलिन। बहुत िदन िधि तंिशसाििना अवैिदक कायि बूझल जायत छल। रसेशसे अपनवैत-अपनवैत सनातन िमिमे जोड़ा गेल। वैिदक िमावलम्बी सभ सेहो तंिशसाििना अपना देवी पूजा िदश आकृष भेलाह। एिह सँ अिाििक्त म्मिथिलाक समाज मे शैवशिमिक पमुखता छल अिवा शाक्त िमिक। जे िववाद िवदत मंडली मे बहुत िदन िधि चलल। पनचैती सँ फिर आयल जे म्मिथिलाक लोक पंचदेवोपासक होइत छथि। ई मान्यता पुरानकालक समन्वयवादी िाििमिक जीवनक देन िथिक। संस्कार गीतक मध्यकालीन चिरि के देखार करैत अछ्छ।

गीत संस्कार मे मैथिली गीतक अपन इिाहास अछ्छ। लोचनक 'रागतरंिगणी' मे मैथिल गीतक जे इिाहास िलखने छथि तदनुसार एकर जन्म तेरहमशैदहम शताब्दी मे भेल। िव िसंह आ िवदापिि समकाििन छलाह। हुनके िपतामह सुमिि मैथिली गीतक परम्पराक

पारंभकता छलाह। एहि पकारे मैथिलीक देषी गीत परम्पराक स्थापना भेल। ऐतिहासिक आधार पर यैह मानल जाइत अछि मुदा गीत गेवाक पवृत्ति मनुष्यक विकासक संग जुड़ल अछि। जाहि आधार पर आरो पुरान कहल जा सकैत अछि।
गीत गेवाक ढ़ंग, जकरा राग कहल जाइत, मैथिली मे भास कहल जाइत छैक। मैथिली भासक अपन विशेषता छैक। संस्कार गीत एहि भासक भंडार छी। हँ,किछु विशिष्टपूर्ण बात सेहो अछि जे कम जनने एके गीत (समदाउन) खुषीक समय मे सेहो गवैत छथि आ शोकक समय सेहो जखन कि दुनूक लेल अलग-अलग विषयवस्तु होइछ। तहिना बेटाक विवाह मे कुमार गीत आ बेटीक लेल कुमारि गीत मे सेहो अंतर होइत अछि। जनमक समय खेलौना आ सोहर मे सेहो अंतर अछि। ...

पना झा

असामान्य के

डाक्टर नन्दीक चेम्बर मे बैसल-बैसल मोन ाश्कि गेल। अनायास भेटकरक समाद पठेने छलाह। मोने-मोन कारणक अटकर लगा रहल छलहुं। कतेकोकारण मोन मे आयल मुदा एकोटा कारण सटीक नश्व बुझना जाइत छल। डा.नन्दीक अनुपश्मि श्ति मे हुनकर रोगी या सम्पूर्ण नश्विंग सम्हारयवला हुनकरदश्नना हा डा. श्वान्हा कतेको बेर अपन मुखश्वत मुखारश्वन्द देखाय गेला। पुछलापर कहने छलाह कारण त' हमरो नश्व बूझल अश्छ, तखन मा एतबे कहने छश्थ जे अयला पर बैसय कहबश्वह।

डा. नन्दीक कायश्मिस्तता आ समयक अभाव मोन पड़ला पर इच्छा भेलउश्च क' चल जाइ। आश्वर कतेक काल पतीक्षा कयल जाय? एना कयला स'गुरक गुरता लघु भ' जयतश्वह। समय श्वतयबाक लेल नश्विंग होमक श्वरीक्षणकरय लगलहुं। आ्श्चक आ सुरश्वपूर्ण सजावट, जीवाक लालसा उत्पन्न करयवलाश्व सब, जे संभवता मानश्वक रोगी सभक दारा श्वश्चत छल, एक कोन मेलतरल

मनी प्लान्ट, टेबुल पर टटका फूलक गुच्छा काचक पाि मे पाश्च पर राखल। भीतर जा क' रोगी सब स' भेट करक इच्छा भेल मुदा नश्च गेलहु जे कोनठीक एही बीच डाक्टर साहब आश्च ने जाइि।

अपना सिान पर बैसले छलहुं श्चक एक सौम्य, हृष-पुष, पसनमुख युवकपवेश कयलश्चह। हुनकर अनुसरण आवश्यकता स' अश्चिक गंभीर एक व्यश्चक्त क'रहल छलाह। अश्चतश्चं पश्चहल युवक हमरा स' पश कयलश्चह- डा. नन्दी छश्चि श्चकनश्च?

-नश्च, बैसू कनेक काल मे औताह''। हमर उतर छल। पश्चहल युवक के देश्चख क' लागल जे हम पूर्वपश्चिश्चत छी। स्मरण नश्च भ' रहल छल। सोचल-हमरसंबंिी त' नश्चये छश्चि तखन कतय देखने श्चछयैन्ह? कोना श्चचन्हैत श्चछयश्चह? पूर्वमे कतहु देखने श्चछयश्चह, एतबा आश्चचात छलहुं। एही ओझराहश्चट मे छलहुँ श्चक संगआयल दोसर युवक ठठा क' हँश्चस पड़ल आ फेर तुरत गंभीर भ' फुसफुसाय लागल,जेना ककरो स' गप्प क' रहल हो। एश्च तरहक व्यश्चक्तक एश्च तरहक श्चिया-कलापदेखक अभ्यस्त भ' गेल रही ते कोनो श्चवशेष पभाव नश्च पड़ल। संग आयल पश्चहलयुवक सेहो तटसि छलाह। मुदा तीवर ठहाका डा. श्चसन्हा के ओतय अयबा लेलबाध्य कयने रहश्च। आगन्तुक श्चदस अश्चभमुख होइत पुछने छलश्चथन्ह- कहल जाय,नब कोनो समाचार? संगे के छश्चि? आगन्तुकक शान्तभावे उतर छलश्चह - अहालेल कोनो नब नश्च। हमरा लेल अशाश्चन्तदायक। ई छश्चि, रोगीक श्चपि रोगी आओ श्चबहुंसल छल। डा. श्चसन्हा हमरा पुछलश्चह - श्चहनका श्चचन्हश्चछयैन्ह? अपन केस-श्चहस्टरी ई माि अहीके कहने छलाह। हमरा भक द' सब स्मरण भ' आयल। ओव्यश्चक्त लजजापूर्वक आंश्चख नीचा कयनश्चं हाि जोश्चड़ देने छल।

ओकर स्वास्थ्य लाभ पर हाश्चदक बिाई दैत हमरो हाि जोड़ा

गेल छल। डा.नन्दी के अयला पर हुनका स' आवश्यक गप्प क' डेरा घुदा त' भ' गेलहुं मुदाओश्व व्यक्तिक संग पमि साक्षात्कार आर ओकर केस श्वसरी पुना समृश्व-पट परआश्व गेल।

लुश्वानी पाकि;मानश्वक-रोग-अस्पताल मे डा. श्वा िक क्लास आठ बजेपाता पारम्भ भ' जाइत छलश्वह। अस्पताल डेरा स' काफी दूर छल। डेराक काजसलश्व, बस स' पहुंचलहुं त' भीतर जा क' हड़बड़ायल अपना गूपक संगी सबकेताकय लेल एक बेर चार श्वदस दृश्व घुमाओल। तखनश्व एक रोगीक कोठली स'अनु हड़बड़ायल श्वाकलश्व आर हमरा देश्वतश्वं कहने छश्व -बाज अयलहुं हम एश्वश्वगी स'। लुश्वानीक ई हमर अंश्वाम भीश्वट भेल।'' हमर श्वजासा छल - श्वकयैककी भेल? एखने श्वम्मत टूश्व गेल? एखन त' पूरा एक साल बाकी अश्व? अनुगंभीर भ' कहने छश्व - एहन पेसेन्ट त' एकोटा नई भेटल छल। श्वकछु सारिणपश पुछश्वयै त' मुंह पर ि्श्वक देलक।''

अनु डा. श्वा िक चेम्बर श्वदस बश्व गेल छल। हम ओही कोठली मे घुसलरही जतय स अनु बहरायश्व छश्व। ओतय हमरा गूपक आर सब छाि-छाि बैसल छल। सामने एक सुदर्शन पुरष मुंह घुमाक' श्वड़की बाटे बाहर ताश्व रहलछल। श्वकछु क्षण पश्वश्व श्वाक श्वारीक्षण क' हम एक सहपाठी स' आस्ते स' पुछनेरश्वयैक - की कोनो खास बात? ओ शी करैत मुंह पर आंगुर देने हमरा बाहरआश्व कहलक - एकर केस श्वसरी लेबाक हमरा लोकश्वाक सब चेषा श्वाफल भेलअश्व। ककरो श्वकछु कश्वते नई छै। अनु श्वकछु बेशी पश केलकै त' मुंह पर ि्श्वकदेलकै। तो त' श्वानी ;श्ववाश्वता, मश्वकाइन छे। सब ठाम श्वफरेन्स' भेटैत छउ।भ' सकैयै एतहु लश्व जाउ।

पश श्वचारणीय छल, मुदा श्वा ि सर के कंिट काज

चाहैयअहि, खाना-पूर्ति निहि। साहस क' आगू बढ़लहुं।

ओहि व्यक्तिक सम्मुख जा नमस्कार क' परिचय पूछक साहस कयनेछलियैक। ओ आश्चर्यकीर भावे मा हमरा दिस तकने छल।

-जँ हम गलती नहि क' रहल छी त' अही शी चौरि छी?

ओ तैयो चुप।

-हमरा डा. भा पठेने छथि। अहा स' किछु जानकारी लेबय लेल। अहाकेअसुविधा नहि हो त' हम किछु पूछि सकैत छी?''

ओ एक बेर मूडी उठा, हमरा दिस देखलक फेर खिड़कीक बाहर देखयलागल जेना किछु ताकि रहल छल। ओकर पत्नी याहीन चुप्पी स' हमरा बलभेटल। बुझबैत कहने रहियैक -एहि स' अहूंके लाभ होयत। एहि कैदखाना स' मुक्ति भेटत। ऑफिस जा सकब।''

ओ हमरा पर बरसि पड़ल छल- बन्द कर अपनलेक्चर। भगवानक लेल दया क' अहा लोकनि हमरा एसगर छोड़ि दिय'। स्वयंबड़बड़ायल छल - घरक लोक एहि नकि मे िकेल गेल आर एतय घर जयबाकगप्प।

हमर गूप ओतय स' विदा भेल ई बुझि जे एकरा पाछू समय नष कयलास' कोनो लाभ नहि। हम जयबा काल अंतिम पयास कयल - अहा एकान्त चाहैतछी त' ठीक छैक, हमरा लोकनि जा रहल छी। मुदा अहा त' स्वयं विदान आबुझनुक छी, मोनक कष बँटला स' मोन हल्लुक होयत आ चिकित्सा मे सुविधासेहो।

क्षीण आशाक संग ओ पुछने छल - तखन हमरा छोड़ि देल जायत? -एतयअहा कोनो जन्म भरिक लेल त' नहिये आयल छी। स्वास्थ्य भेला पर पुनापरिवारक संग रहब।''

ओ हमरा बैसक संकेत कयने छल। बाहर मे अपना गूप

के सूचना द' हमआब क' बैस गेल छलहुं। ओ बना कोनो भूमकाक सहज स्वाभाक्षक रपे कहबआरंभ कयने छल - नाम हमर अहाके बुझले अछ। अधिकाश लोक नामे स'जनैत अछ, चेहरा स' ओतेक नइ। हम कलकतेक वासी छी। इन्जीआयर छलहुं।एखन त' पागल छी। जेना सब रहैत अछ हमहूं रहैत छलहुं। डेरा, ऑफस, क्लब,मा-वर्ग संबंधी सब स' लगाव छल। अनायास एक दन अपने महल्ला क रीनास' पचय भेल। हमरे ओठामक आयोजत एक भोज मे। रीना सुन्दर, स्माट,हँसमुख, ढ़गी कोस- फाइनलक छा। ओकर सब कछु हमरा आकषतिकयलक। हाव-भाव, व्यवहार, वेश-भूषा सब नीक लागल। ओकरा स' बेशी कालभेट होमय लागल या कइ सकैत छयैक जे भेटक सुयोग बनबैत गेलहुं। ओहोबना कोनो पवादक हमर संग दैत गेल। लेक, सनेमा, थयेटर, होटल कतहुसंग जयबा मे सचकचायल नइ। हमरो ओकरा बना कतहु मोन नइ लगैतछल। सतत एकेटा ध्यान मे रहैत छल - रीनाक सामीप्य। ओहो कहैत छल -क्लास, लेक्चर, घर कतहु मोन नइ लगैत अछ। हम थभोर भ' जाइत छलहुं।दूनू गोटे मे कतेको पेम, आशासन आर पजाक गप्प होइत छल। हमरा लोकन-पन एक दोसराक समीप होइत रहलहुं। घरक लोकक पवादक उपरान्तोहम ओकर पत्येक इच्छा आर आवश्यकताक पूर करैत रहलयैक।

ओ आनसक परीका पास कयलक। ताइ उपलक मे हम ओकरा अपनऔंठी उपहार स्वरप द' कहने छलयै -एकरा अपना स' अलग करक अहोयतअहा हमरा अलग करब। उतर मे ओ मा बहुँस देने छल। एक दन रीनानौकरी करक इच्छा व्यक्त कयने

छथि, जाहि मे हमर सहयोग अपेक्षित छलैक।हम हुनका क' कहने रहियैक - दूनू गोटे बाहरे काज करी ई आवश्यक छैक की?मा‍ि हमर आय पर्याप्त नहि होयत?

ओ मौन रहि गेल छथि। आस्ते-आस्ते हम रीना मे परिवर्तनिक अनुभवकयल। ओ हमर सामीप्य त' दूर भेट तक नहि करय चाहैत छथि। हमर देलउपहार सेहो आब नहि लेबय चाहैत छथि। कारण पुछला पर कतेको बहाना। हमराकोनो कारण बुझवा मे नहि आबि रहल छल। हम अपना के कमजोर आ असहायअनुभव करय लागल छलहुं।

बीच मे किछु दिन सदी-ज्वरक कारण डेरा स' निकलल नहि भेल। रीनापुछारियो तक करय नहि आयल। कनेक स्वस्थ भेला पर हमही ओकर डेरा गेलहुंत' पता लागल जे किछुए काल पहिने बाहर निकलल छथि। मोन के संतोष देलहुं- ई बताहि सम्भवत नोकरीक पाछू बउआइत होयत।

समय व्यतीत करक ध्येय स' हम सिनेमा हॉल दिस बढ़ि गेल रही। संयोगस' टिकट भेट गल छल। सिनेमा आरंभ भ' गेल छलै। हमरा सामनेक सीट परएकटा जोड़ी बैसल छल। हाव-भाव स' नव-दम्पतिक हेबाक आभास भेल।इन्टरवलक पकाश मे जे देखल ओहि स' बड़ पैघ मानसिक झटका लागल। ओयुवती हमर रीना छल, आ युवक हमरा लेल अपरिचित छल। अनायासे मुंह स' निकलि गेल छल - रीना! अहूं आयल छी? हम अहाक डेरापर गेल छलहुं। अहास' भेट नहि भेल त' सोचल सिनेमा देखि समय बिता आबी।

रीनाक पति हमर सम्मोहन हटल नहि छल। ओहि युवकक उपस्थितिहमरा लेल नगण्य छल। तखनहि सुनाइ पड़ल - ई के थिकाह, रानी? -हमरामुहल्ला मे रहैत छथि।'' रीनाक एहि उतर स'

हमरा मोन मे ठेस लागल। हॉल मेफेर अन्हार भ’ रहल छलैक। ओ व्यक्ति रीनाक हाथ पकड़ने सीट पर बैस गेलछल। ओतय रहब हमरा असहय बुझना गेल आ हम डेरा घुरि आयल रही। हमरआत्मा ई स्वीकार नहि क’ पाबि रहल छल जे रीना एहन कोनो काज करत जाहिसँ हमरा - ओकरा बीच मनमुटाव भ’ जाय। ददसि’ हमर माथ फाटय चाहैत छल।मुदा से भेलै नहि। कखन झपकी लागि गेल, नहि बुझलियै। भोर मे हम अकचकायाउठल रही - नहि, नहि एना नहि भ’ सकैत अछि, ई असंभव ..... अवस्था छी।माय जगा देने छलीह - की सपन देखैत छी यौ? भोर मे बाजक बीमारी त’ अहाके नहि अछि? दू दिनक बाद रीनाक ओतय स्पष्टीकरण लेल जयबाक साहस कयनेछलहुँ। गपशपक क्रम मे कहने छलीह - विवाह आ प्रीति मे कोनो सम्बन्ध निश्चितहोइत छैक। प्रीति कतेको भ’ सकैत छथि, विवाह कोनो एकटा स’ होयत। विवाहकरक योग्य व्यक्ति एखन तक नहि भेटल अछि। ओहिनेमा हालक ओकर संगीयुवकक चर्चा कयला पर कहने छलीह -.......... इन्डस्ट्रीक मालिक छथि। इन्टरव्यूमे हमरा स’ बहुत पभावित छलाह। बड़ सरल आ मिलनसार लोक। हमहूँ हुनकास’ पभावित छी।’’

हतपभ भेल मानसिक झंझावात नेने डेरा चल आयल रही। तखनहिं स’पत्येक मञ्चला हमरा नाटकक पाछि लागय लागलि। लागल जेना सब अपन-अपनकुशल अभिनय मे लागल अछि।

हमर छोट बहीन भोजन लेल पूछय आयलि त’ पश कयने रहियै - तोहुकोनो अभिनय क’ रहल छे? अपत्याशित पशक उतर पशे स’ भेल छल -अहापागल भेलहुं अछि की?’’ हमरा भय छल एहि पीड़ा स’ हमर मस्तिष्क ने विकृतभ’ जाय आर यैह कटु सत्य हमर

बहीन बाजल छल। तामसे हम पेपर वेट उठाक' ओकरा पर फेकने छलियैक जे ओकरा माि स' शोणित बाहर क' देने छलैक।तकर बाद सबक पूछल पशक उतर हम टेढ़ आ अपशब्द मे देने रहियै। भोर मेऑफिस जयवाक या किछु करक इच्छा नहि भेल ते घर बन्द क' पड़ल रहलहुँआर रीनाक व्यवहार पर सोचैत परेशान होइत रहलहुँ। हमर दुव्यविहार बढ़ि नेजाय ते ककरो स' गप्प नहि कयल, एसगर कनैत रहुलहुं, स्वयं मे ओझरायलगप्प करैत रहलहुं। घरक सब गोटे केवाड़ खोलक नेहोरा करैत रहैत छल, हमनहि खोलैत छलियै।

दैनिक-दिनचया बाधित भ' गेल छल। ऑफिस जयबाक त' कोनो पशे नहिछल। स्वयं मायक खुओला पर एक दू क'र खा लैत छलहुँ। एहिना कतेक दिनबीतल मोन नहि अछि। आब घर स' निकली त' सभक कातर दृष्टि हमरा पर रहैतछलै। हमरा भेल छल आब सभ हमरा क्षमादान द' देने अछि। एक दिन बाबूजीकआगह पर हुनकर एक नजदीकी मि कि ओतय जयबा लेल तैयार भेल छलहुं। मायभरि पाज क' पकड़ि कानय लागल छल, जे अनगिल लागल। बाबूजी माय के डटनेछलथिन्ह। संभवता डर भेल रहनि जे हम जयबा स' विमुख नहि भ' जाइ।बाबूजीक ओ मि वास्तव मे एतयक डाक्टर छलाह आ तहिया स' हम एतहि छी।अहा पूछि सकैत छी जे अहाक सहपाठिका पर हम ि श्क कयैक देलियथिह। एकत' ओ अनावश्यक चहकि रहल छलीह, रीना जका। हुनक स्वर आ आकृतिअझके मे हमरा रीना सन लागल। लागल जेना ओ जानि-बूझि क' हमरा खौझारहल छल।

चौरीक केस-हिस्ट्री बूझि हम बहुत आशस्त भेल छलहुं। हुनका सात्वनादैत बाजल रही - अहा त' एकदम स्वस्थ छी। एतेक नीक जका अपन मोनकगप्प हमरा स' कयलहुं। हम मि ा सर के

अहाक पोगेसक थ्रपोटदि' दैत थ्रछयथ्रह।

चौरीक आकृथ्रा पर पुना आिशक भाव आथ्रा गेल छलै। ओ हमरा स'पुछने छलाह - हमर एक पश अथ्रछ - लोक हमरे थ्रकयैक पागल कहैत अथ्रछ?अहा लोकथ्राक शब्द मे असामान्य। असामान्य हम थ्रकयैक? रीना या एथ्रह तरहकअथ्रानय करयवाली थ्रकयैक नथ्रह? हम हुनक पशक उतर थ्रबना देनथ्रहं ओतय स'थ्रबहुंथ्रस क' थ्राकथ्रा गेल रही।

शीतल झा, जनकपुर, िनुषा

नेपालमे मघेशीके समस्या आ सामािन!

(1) नेपाल

भारतके उतरक्षेस बिहार स उतर, पश्चिम बंगाल स पश्चिम, उतरपदेश स उतर पूवर्मे हिमालय पवर्तके एक अंशमे अवि ित एकटा देश नेपाल अछि। २४० वषर् पहिले गोरखा के एकटा लड़ाकु राजा पृि्वी नारायण शाहके राज्य विस्तारमे महत्वाकाक्षा स्वरप उपत्यका सहित पूवर्मे तिस्ठा नदी आ पश्चिमे कागड़ा किल्ला तक विस्तारके िममे दक्षिणके समतल भूमिमे अवि ित विशान्न ऐतिहासिक मुलुक पर विजय पाप्त करैत गेल विश्वस्ट भारत सरकारके पश्चारोिक बाद युद भेल। १८१६ के सम्पन्न संधि नेपालके बतर्मान अवस्ि कायम करैत १८६० के संधि सँ एकटा पूणर्ता पाप्त भैलै आ १९२३ के संधि एकटा देश मान्यता देलक।

(२) मिेश

मि्य एशिया स बनल शब्द मिेश नेपालक समतल भूमिमे रहल जाति जनजातिके मिेशी शब्द सँ सम्बोिन कएल गेल। एहि समतल भू-भागके तराई कहितोमे यही ठामक बासिन्दाके तराई बासी या

मिथिली कुलत खष भाषक पहाड़ वर्ग सम्बोधित करैत रहल १८१६ के सन्धि के खाकामे राप्ती आ कोशी के बीचक भूभाग बन्दोबस्त भारत लेने छल आ नेपालके २ लाख रुपैया देने छल। मुदा अन्तिम कालमे नेपालक अनुरोधपर ओ छोड़ि देलक। १८५९ भारतके पहिला स्वतन्त्रता युद्ध सैनिक विद्रोह के दमन करावक लेल नेपाली सेना भारतमो पठोलक बदलामे पश्चिमके चार जिल्लाके लएक जे सम्हत महाकाली सँ मेची तक समग्र २०-२२ जिल्ला मिथिक अंश आ एकटा ठामक बाढ़ानन्दा मिथिली।

(३) मिथिली पर बयवहार

राजनीतिक-बर्तमान मिथिमे तत्कालिन अवस्थामे जे स्वतन्त्र राज्य सब रहले तकरा उपर पृथ्वी नारायण शाह हमला करैत गेल आ अधिकतर राज्य सेहो कब्जा कएलक आ एकर १०००० (दश हजार) सेनाके सहायता ल क पूर्वमे आक्रमण सफल कएलक आ बारहुआया सेनाके भंग कएलक। सम्पूर्ण मिथि पर ओ, सामाज्य काएम करेके लेल सबपर जातिय सास्कृतिक पशासनिक भाषक दमन सुरु कएलक आ मिथिके पूर्ण उपनिवेश के रुपमे देखैत एकटा पूर्णत ओपनिवेशिक शासन चलव लागल। एही मिथीके कखनयो कोनो अधिकार नहि भेटलै जौं कतहु नेपालक इतिहासमे मिथीके चर्चा अवैतछैक ओ राजाके षडयन्त्र मे ओकरा पयोग करवमे आएल छै। खस जातिमे २ जात शाह आ राणा आ केन्द्री सता संघर्षक क्रममे राजा के कटपुतली बनाक राखके काज जंग बहादुर राणा कएलक जेकर वंश १०४ वर्षतिक राजा आ पाजा दुनुपर शासन कएल। जकरा कालमे चाकरीवाज शोषक पहाडी के शासनमे अंश रहलै, मुदा तखनयो मिथिली आमजन शोषण दमनके शिकार भेल। सम्पूर्ण मिथि शाह आ राणा

सभक के जमीनदार छलैक या दरवारियाक भाइभरदार दार के पशासन माफति राजनीतिक होइछलै आ पशासन मे मधेशी नहि छलै ।
राणा शासनक अन्त आ शाह शासनक पारम्भ २००९ सालक कथित िशासनमे। राजनीतिक स्वतन्िता नही, शाह वंशीय स्वतन्िता अएलै। २००७ साल सँ २०१७ सालतक विभिन्न राजनीतिक घटना िममे मधेशी के जनसंख्याके अनुपातमे कतहु राजनीतिक स्िान नही देल गेलै। जौ कि हुनको स्िान भेटल ओ राजनीतिक आन्दोलनमे विशेष योगदान कएलथि तै। पशासनमे आ सुरक्षा क्षेिमे पवेश नही कतहु मधेशीकै देशक हरेक क्षेि पर रहल जाहिमे मधेश पूणतः विसा गेल। एकरा अस्तित्वपर पत्येक क्षण खतरा रहै। नागरिकता ऐन कडा एकल गेल आ मधेशी के नागरिकता पर शंका करैत, देव मे हाि कठोर कएलक। एकरा कता संख्याके न्यून देखावक लेल पहाड स पूनवासिके नाम पर पहाडीके बसोवास मधेश मे करौलक। जंगलके विचमे स राजमागविनाक मधेशीके जनसंख्याक कम देखावके खडयन्ि करैत मधेशके मरभूमि बनावके चाल चलला। आसामी भुटानी वमेली नागरिक समेतके बसौलक आ सामाजिक अस्तित्व सेहो खतडा मे पडैत गेल। एक भाष एकभेष एकराज्य एकदेश क राजनीति के मधेश मे जे दमनपूवक पयोग क सकै तेहन मेधेशी नेताके पयोग करैत रहल।
तािपि २०४६ सालमे आन्दोलन भेले आ लोकत पुजीवित पाप्त कएलक। मुदा मधेशीके जीवन मे कोनो परिवतन नही भेल। राजनीतिकमे कोनो अधिकार नही, सतामे कतछु पहुँच नही। सरकारी नीति निमाण मे हुनको स्िान नही। दलके उच्च तहमे कोनो संख्यात्मक परिवतन नही। कोनो सम्मानजनक स्िान नही। केवो विकाउ नही। हुनको स्वाभिमान नही। सवपर एकटा कलंक मढल

रहैछ। मिशी नेताक अयात इएह भेल। पशासनमे मिशी न्यून होइत गेल। जनपद पारीमे सेहो घटे तगेल सेनामे कतहु पवेश नही पावथीक केमि रहल सभके दमन वेस्नी वृआ थकाश कम एछ यस अवस्ि सभ दलमे देखल गेला कोना पगआशील कोन पजाताक अन्याय भेल कछ नही सकैछी तुरन्त सम्पदाथक आरोप, तुरन्त आस्कासन, एहन आआ रहल ०४६ स ०६२ तक राजा जानेन्रक शाही कालमे थआन्न जाआ, जात सभक थचमे लोकहताक चेतना पवेश् कएलक समावेशीकरण, समानुपाआक उपअि आ जातीय स्वायाता संीय संरचना आत्मआणआकि अधीकार आद शब्दक राजनीआक अि जनतामे पवेश कएलक आ थआन्न आन्दोलन भरहल अछ। राज्य पक शब्दमे स्वीकार कएलक अछ मुदा आयतव एह पुरान छै, पवृआ राणाकालीन छै। कपटपूणमिनशाय शाहकालीन छै। दलक केन्रीय आकायामे वएह रबैआ छै। मिशी अधीकारक आन्दोलनपर वएह आरोप, वएह कलंक, वएह दमनक मि्की, वएह आि्या अस्वासन वएह स्िान, सम्मान नछं देवाक सामन्ती पवृआ।

(४) आधीकि

मिशी पर भ रहल आधीकि शोषणक अनन्त स्वरप अछ। 1816 के संधीताकाल मे मिश मागल गेल छैक पहाडीके पलएवाक लेल थतौनके सामने मिश नही मागल गेल छेक1 थकए ओतेक भूभाग मे ओछ केकि सामन्तक पोषण भजेतै भन्सार मिसमे सव खचपिदाडके लेल। कारखाना मिश मिशमे राजस्व पहाडके लेल। उत्पादन मिश मिशी अयन्िण वेचथखन भष्ट पहीके हाि मे कोनो आकायपर मिशीके अयन्िण नही भष्टाचार मे सलग्न पहाडी सजाय मिशी के मिशीअि आ गाव गावमे एकेटाके पहाडी जीमन्दार के राजनीआक

हस्तक्षेप ओकरे पशासनिक पहुँच ओकरे। पूरे क्षेत्रमे आर्थिक शोषण ओकरे । ओहे पभावशाली व्यक्ति। ओकरे सामाजिक हैसियत। गामक झगडाके न्यायाधीश ओहे। सारा जमीनपर ओकरे कब्जा। कोनो छोअ जीमन्दार मध्यस्थ त ओकरा उपर क जीमन्दार पहाडी । मध्य युगीन शासनकाल सामन्ती शोषण अखनो देखल जाइत अछि मधेश मे।

(५) सास्कृतिक भाषिक, सामाजिक दमन

• नेपाल विभिन्न जाति आ वर्णक विभाजित देश अछि स्वीकारितोमे विभिन्न जातिक विभिन्न भाषा, विभिन्न भेष अलग सामाजिक सम्बन्ध सास्कृतिक पहिचानके स्वीकार नै कएकल कहिओ पहाडी सता शाही पशासनके मजबूत आ शासन वनकेलेल एकहि भाषा, खस भासा अर्थात शाही भाषा, अर्थात गोरख भाषा, अर्थात नेपाली भाषा के दमनकारी नीति पयोग एकलक बाकी सभ भाषा पर सम्बैधानिक रपस प्रतिबन्ध लागल आ सरकारी कामकाजक भाषा भेष आ ओहि भाषाभाषीके जे पारम्परिक पहिरन रहै से पहिरनके के दरवारक पहिरन मानल गेल। ओहे भेष सरकारी भेष भेल ओ है पशासनिक भेष भेल पहिरन आ राजनीतिक भेष होइत आ अन्तमे जनपतिनिधिक औपचारिक भेष होइत-होइत समग नेपाली नागरिकके भेष जका ओकरे। ओपचारिक पोषाक मानल गेल। शासनमे सरकारी काम काजके आ इएह भाषा रहल आ अदालत एहि विषयमे शाही हाकिम कठपुतली रहल।

• ६. जातिय जनजातीय शोषण

• आई पत्येक जातीय क्षेत्रमे खसजाति, पहाडी वगाके दमनकारी, नीति पवे भेल अछि। अल्पसंख्यक जाति, विभिन्न भ रहल अछि। कहा थारु कहा दनुवार अहि सभक जातिय क्षेत्रक

उन्मूलन भएरहल अछि सभक भाषाभेषक चलनक अवस्था मे सास्कृतिक अतिक्रमण आक्रमण पतीक्त जनजातिक खस केन्द्रित मे।

• (७) पशासनिक

• पशासनिक केन्द्रित मे रहल पक्षपात उत्पीडन, शोषन दमन अछि आमति आ उल्लेखनीय अछि। कमचारी तन्त्रिके उच्च पद पर बहुत नगन्य मधेशी रहल छथि आ हुनका हतोत्साहित आ कमजोर बनाएल जाइत अछि। आचका कमचारी सव सेहो हुनका टेरैत नहि छथि। आक कायिक नहि सकै छथि1 मधेशी पर दमन चलावके हुनकर योग्यता बनाबल जाइत छथिअ पहाडी ओकरा मधेशी पर दमनके लेल लाठी के रुपमे पयोग करैत अछि। ओ स्वयं भयभीत रहैत छथि समग पहाडी वर्ग जातीय आ साम्पादायिक भावनासँ गस्त रहैत अछि आ मधेशी पर सम्पदायिक आरोप लगवैत अछि। मधेशी के उपर मानव अधिकारके हनन होइत अछि आ ओकरा कतहु दर्ज करैत अछि।

• (८) न्यायिक केन्द्र

• अदालती कामकाजक भाषा खस भाषा अछि। न्यायाधिशवादी पक्षवादी के मर्म, भाषा, पीडा अभिव्यक्ति बुझने न्याय सम्पादन करैत छथि उल्टा अधिलिगाक फैसला होइत अछि। सारा खस भाषामे होव के कारणस मधेशी न्या पाप्त ने क सकैछे आ न्यायाधिश सभ सेहो पहाडी (खस) र के हित मे कहछथि आ स्वयं सम्पराधिक भावना स गस्त रहैत छथि।

• (९) अन्य केन्द्र

• कोनो स्वायत्त मनोनित संस्थामे मधेशी के पहुँच स्थाना, सम्मान नहि अछि मानव अधिकार आयोग पाध्यापकसंघ, चिकित्सक,

संघ, अधिविक्ता संघ, इञ्जिनियर संघ, व्यापारी संघ, शिक्षक संघ, महिला संघ, किसान संघ, कर्मचारी संघ, कतहु मधेशीके शायदे गोठे स्थान दैत अछि आ। तकरो नीति निर्माण मे अल्पमत रहला के कारण बात रखबाक अवसर नीहं रहैछै। कोनी राष्ट्रीय दलक मातृ संगठन मे सेहो यह अवस्था अछि । तै शोषणा उत्पीडन, अवहेलना, दमन सर्वत्र व्याप्त अछि असहय अछि।

- (१०) पजातन्त्रिक आन्दोलन मा आ राष्ट्र निर्माण मे मधेशिक भूमिका
- राजा शासनके विरुद्ध मे भेले पजातान्त्रिक आन्दोलनके केन्द्रीय स्थान मधेश छल। ओहि आन्दोलनके लेल मधेश भूमि मात्र नही देलक मधेशी आन्दोलनमे भाग लेलक आ रक्त देलक आ जान देलक २०१७ सालके पचायती विरुद्धके आन्दोलन सेहो मधेशमे केन्द्रीत रहल २०३६ सालक आन्दोलन मधेशमे सेहो भेल। व्यापारीदारा कएल गल पत्येक पगतिशील पजातान्त्रिक आन्दोलन मे मधेशक व्यापक आ अग भूमिका छल । आ क जनआन्दोलन-2 त सेहो पूर्णत मधेश ओकरा उवरीभूमि पदान कएलक आ अखनक संसद कमे पूनजीवन देलक। नेपालक कोनो पगति शील आ पजातान्त्रिक नेता नहि छथि। जिनका मधेश राजनीतिक जन्म आ पालन पोषण आ कर्मभूमि देलक। मुदा मधेशक एतेक योगदान आ एकरा पति एतेक गदारी एतेक कृतघ्नता ।
- एकटा पश्न पत्येक मधेशीके अनुतप्त करैत अछि जे मधेश सभक स्तरके पहाडी नेताके जितवैत अछि मुदा कोनो उच्च तहक मधेशक नेताक पहाड मे टिकट भेटिते आ ओत स ओ जितबाक अर्थात यिह पश्न अछि जे कोनो मधेशी नेता मात्र नही पहाडी नेता के सेहो अनुतप्त वना दैत अछि। लज्जित वना दैत अछि। मुदा

2014 साल सँ अखन तक सभ चुनावमे कोनो भेदभाव नही राखि मधेशी पहाडी के भोट दैत अछि। टिकट पवाएक अधिकार होइतो मे पहाडीके लेल टिकट छोडि दैन। अछि उत्साहपूर्वक ओकरा जितवैत अछि मुदा ओकर इज्जत ओतवे। ओकरालेल ओहे दुर्भाग्य ओहे विडम्बना।

• पत्येक आन्दोलनमे जेकरा पहाडी जेकरा राष्ट्रियता के आन्दोलन कहलकै, बुझने आ जनैना मधेशी ओहिमे सामेल भेल1 मुदा ओ राष्ट्रीय नागरिक नही, राष्ट्रीय व्यक्ति नही। इह छै मधेशी क नियति !

•

• (११) शोषण, दमनक इएह स्थिति देखैत असहय भेला स ०६३ माघ मे मधेशी आन्दोलन फुटि पडल मधेशी आन्दोलनक किछु पमुख कारण:

• (क) हजारो वर्षसँ (मधेशपुर) रहल सामन्ती शोषण उत्पीडन दमन चलि आएल अछि।

• (ख) गोर्खा राजा का शाह वंशीय राजतन्त्रात्मक प्रवृत्ति जे जनतापर हरेक क्षेत्रमे व्याप्त छैय, जे उपरोक्त बूँदा पर देखावल गेल अछि, जकर अन्तय लोकतान्त्रिक सरकार क अवस्थामे सेहो संभावना नही देखलगेल आ नैरश्यता आ असहयताक अवस्था आएल।

• (ग) लोकतान्त्रिक आन्दोलन उठावएकालमे दलक नेता सभदारा नमहर आश्वासन मुदा सरकार वनलापर उएह स्थिति, उएह दमन।

• (घ) मानवअधिकार, जातीय अधिकार, लोकतान्त्रिक अधिकार

सम्बन्ि मे वेसी सँ वेसी लेख, रचना, अन्तराष्ट्रिय जगतमे ख्याति पप्त प्रदान सभक महत्वपूर्ण विचार सब आएल वौद्धिक जगतमे हलचल पैदा करैत रहल, चेतना लवैत रहल आ आन्दोनलक्षान करैत रहल।

• (ङ) राजनीतिक दलमे मिशी समुदायक नगव्य पहुँच रहलातोमे ओकरा पक्षा दमन, उत्पीडन स आएल ओकरा मे उकुसमुकुस होइल रहल जे नीत वक्षाक फुटैल छल आ िस वनैत छल चाहे अपना व्यक्तिगत उत्ािन के लेल मािसही।

• (च) माओवादी जनयदताका ओ प्रभान्न जातीय स्वायतताके नारा लगौलक आ ओकर अनुसार संघीय संरचना के भूण स्वरप जाक्षाय केि श्रमाण कएलक जे एकटा कान्ताकारी चेतना छलैक मुदा वाद मे ओकर नीक्षाका व्यवहार नक्षं रहलै।

• (ज) एहन श्रीजलि वातावरणमे अन्तश्चम संवि ानिक घोषणा। भेल जाक्षमे कोनो दल प्रगतके आस्वासन वचन, घोषणा लागु नही कएलक आ ियतिाक सीमा टुक्ष गेल।

• (झ) जनपक्षाश्रामीदारा बनावल गेल सभास सश्रा ानिसभा वनत आ ओ जनताके संवि ान होएत से मान्यता अनुकुल अपना सभानुपाक्षाक उपाश्र्थिक्षा संवि ान सभामे नही होएत से सम्भावना श्राश्चय देखैत आन्दोलन भ गेल।

• (ि) जनसंख्या के आ िरपर समानुपाक्षाक श्रावाचन केि श्रा िरण करव दल आ नेता सभ पछा र हल थि। ओ सभ मिशि स श्रुते मुदा मिशिक सीट कम रहैक से मनसाय देक्षा जनता नक्ष सहल।

• (ट) कोनो दल श्रातरके मिशी एहन स्वतन्ि आन्दोलन नक्ष उठाक्ष सकैत अक्षा ओ दलक नीक्षा, अनुशासन, लोभस वाहनहल

रहलाके कारण सँ अलग आन्दोलन भँडक्क उठल।

• (ठ) मधिशी जनअधिकार फोरमके कछु वर्ष स लगातार बौद्धिक केमि एकल गेल तथ्याक सङ्गत के चेतामूलक पुस्तका पुस्तकके पकाशन आ मधिशी अधिकारका विषयमे करै काजसँ कछु पतिष्ठा आ विश्वास के कारण सँ आन्दोलन ई स्वरूप लेलक।

• (ड) शान्तिपूर्ण आन्दोलन मे एकलगेल पहरी दमन आ सरकारी दमन सँ मधिश उत्तेजित भेल।

• (ढ) शान्तिपूर्ण बन्दके कार्यक्रम पर माओवादी के विध्वंसात्मक पहार सँ आ राहारतपाप्त मधिशी कार्यकर्ता के मृत्यु सँ आगि मे घ्यूके काज एकलक आ माओवादी विरुद्धमे आन्दोलन केन्द्रीत होइत समगमे खस वादी सता के विरुद्ध मे उत्तेजित होइत गेल।

• (ण) पधानमन्त्रीको पहिल सम्बोधन कपटपूर्ण रहल वात मे मधिशीले विश्वास भेल आ आन्दोलन उत्तेजित होइत गेल ।

• (१२) वर्तमान अवस्था

• (क) आठ दलदारा अनुमोदित पधानमन्त्री क देशक नाम सँ सम्बोधन के कतहु कोनो रूपमे लागु नहि भेल अछि।

• (ख) शान्ति तथा पुनर्निर्माण मन्त्री तथा वार्ता टोली संयोजनक साथ कएल गेल सहमति लागु नहि भेल छै। जाहिमे राजनीतिक मुद्दापर सहमति नहि वनलै अपितु फाधिक मुद्दा पर।

• (ग) संघीय संरचनाक आधार तय सरकार नही कएलक जाहिसँ मधिश आ जनजाति सबके शंका सरकार पर छै।

• (घ) सरकारदारा समानुपातिक उपाधिमि (राज्यके पत्येक अंगमे) के कोनो पयास नहि कएक गेल अछि पुराने खसवादी अहंकारी पवृत्ति कपट वर्तमानो मे अछि।

• (ङ) सात दलके पाटी संगठन मे ति नीश्च श्वमाणके स्ि ान पर कोनो समानुपाश्चाकता अवलम्बन नश्च कएलक अश्छ।

• (च) 1 दजनि सँ वेसी हश्चियार िरी संगठन मिशिमे संचालन भेल जे अश्छ श्चंसा, अपहरण, िम्की के माओवादी शैली अपनौने अश्छ।

• (छ) श्चकछु हाश्चियारिरी समूह मिशिके एकटा स्वतन्ि देश, राष्र के नीश्च 'क'आन्दोलन अश्छ।

• (ज) मिशिके उतरीक्षेि मे राजमार्गके कातेकात पश्चश्च श्चावस वस बसल आ बसाओल गेल पहाडी वर्गमिशि आन्दोलन, मिशी आ मिशी आ मिकक्के श्चरदमे अपन शश्चक्त पयोग करेत अश्छ। राजमार्गपर कब्जा श्चायश्चात बन्द मिशी पर हमला, मिशी अश्चिकार पश्च श्चष वमन, संघीय अन्तर्गत मिशि राज्यके श्चरद मे अलग राज्यकमाग कत्याश्चस मिशिमे एकटा खास पकारक शंका भय आ छै आ उतेजना के सम्भावना छै। ओनाक हुनका पहाडी समुदायक सभके मिशिमे अश्चिकार, सम्मान, सुरक्षा, स्िान इत्यादी खतडा देखैत आिश्चात अश्छ। आ एकटा नया दन्दक संभावना अश्छ ।

• (झ) अखन कोनो एकता दल एकटा नेता मिशिक भावनाके पश्चाश्चित्व नश्चक रहल अश्छ। संश्चाठत आवाज नश्च आश्च रहल अश्छ। समग मिशि अश्चंसात्मक आ श्चंसात्मक आन्दोलनमे केन्रीत अश्छ।

• (ि) मिशि मे वर्तमान राज्यसता पश्च अश्चश्वास आिस आ आगह मािि अश्छ मुदा एकरा अपराश्चिक कृयाकलाप के आरोप लगवैत सीमा कडा करारहल अश्छ जैस नेपाल भारतके सम्बन्िके गलत पयोग आ भश्चष्यमे गलत व्याख्या कएल जाएबाक संभावना अश्छ।

• (ट) राज्य पक सँ जायज माग पूरा करके बदलामे या सहमश्वा भेलवात के पुरा कर के बदलामे गृहमन्ि ति अन्य श्वशाल नेता सभक िमकीसँ सेहो आिास मे बृश्व भ रहल अश्छ। मिशकै हश्वायारिरी समूह उत्साश्वत अश्छ। आ उदाहरणीय बुझैत अश्छ।

• (ड) श्वनानुश्वन मिशक होइत मरभूश्वकरण राज्यपकदारा उतरी मिशमे कएल गेल जंगल श्वनास पहाडी मूलके नागश्वकके बसोबास स माि भेल से मिशमे बौश्वक केि आ राजनीश्वक केिमे व्यापक उश्व रहल अश्छ। ई सभ अखन वतमीन मनश्वश्वि आ पश्वश्वस्िश्वि नेपालमे अश्छ।

• (१३) मेिशी समस्या के समािन:

• (क) सुगौली सश्वि पश्चात मिशमे रहल मिशी के पहाडी सता नेपाली ने बुझैत रहल अश्छ। मिश नेपाल आ मिशी इन्डीयन कश्वक बुझैत रहल, व्यवहार करैत रहल, सनीश्व वनबैत रहल, अपमान करैत रहल, नागश्वकता सँ बश्चत करैत रहल। तै मिशी के नेपाली बुझैक सम्मान दैक व्यवहार नीक करैत। अिात मिशी के अपन पश्चान सश्वत नेपालमे रहए पाएव।

• (ख) राज्यक पत्येक अंगमे मिशीके समानुपाश्वक आ सम्मानजनक उपश्वश्वि:-

• राज्य नीश्व श्वमाणक पत्येक अंगमे राज्यक पतीक अंगमे मिशीके उपश्वश्वि देखवनाई अश्व आवश्यक अश्छ। दलक केन्रीय श्वकाय, राज्यक अग सभमे शीघश्वश्वाघ मिशीके स्िान नही भेटत मिश शान्त नही रहत से सम्भावना।

• (ग) राज्यक पुनसंरचना

• राज्यक पुनसंरचना होइक आ ओ संघीय संरचनाके श्वाणि

करैक आ संघीय संरचना जाश्च, संस्कृश्च, भाषा भौगोश्चक एकरपता, पाकृश्चक सम्पदा इत्याश्चके आिरपर होइक जे मिशक चाहना आ माग छैक। समग मिश पर स पहाडी शोषणा उत्पीडन के अन्त्य होइक आ तहन संिय संरचना के पत्याभूश्च होइत एहन संियता र पृिकतावादी आन्दोलन कमजोर होइछ।

• (घ) राज्स्वक समुश्चत उपयोग

• कर भन्सार, मालपोत इत्यादी राजस्वक जे आय छै तकरा मिसमे नगणय मािमे व्यय करबाक नीश्च आव व्यवहार रश्च आएल छै तै एकरा मिशमे मिशी पश्चाश्चके राश्च नीश्च श्चमाण कएनाई आवश्यक छै।

• (ङ) सश्च समझौता कालमे मिशीक सहभाश्चता

• भारत नेपालक वीचमे ऐश्चहाश्चक, भगौश्चक, राजनैश्चक सास्कृश्चक साश्चत्यक सम्बन् छै तकरा देखैत भारत के कोको समझौता, सश्च के कालमे मिशी पश्चाश्च बुश्चजीवी रहनाई आवश्यक छै, अन्यि श्चणथि अव्यवहाश्चक होइत छैक। खास के जल सम्बन्ी जलश्चदुत सम्बश्च कोनो समझौता मे।

• (च) संश्चिन सभामे समानुपाश्चक सहभाश्चता:

• आगामी संश्चिनसभामे मिशाकी के मिशक जनजाश्चके समानुपाश्चक उपश्चश्च, संश्चिन सभाके लेल अगामी संश्चिन के लेल देशक शाश्चके लेल, मिशाक समस्याके समािन के लेल आ राश्चय िरमे मिशीके सम्माश्चतक लेल नेपालके सवल राष्र बनकेलेल आवश्यक अश्छ।

• (१४) अन्तमे

मिशके समस्या के तत्काल समािन आ दीघकालीन समािनक उपाय मे उपरोक्त श्चश्चसभ दीघकालीन अश्छ त तत्कालीन समािन

के रपमे मिशके पत्येक शक्षक सँ श्चना िम्की वाता के ‘क’ समस्याक शाश्वतपूणि समािन करबाक चाही आ मिशीके सािश्चना कोनो छलकपट, श्वशवासमे लक राश्कर य समािनश्चस जएवाक चाश्ह।

अश्वाश कुमार श्रश

नेपालक राज्य पुनसंरचिना मे श्रथिला आ मैथिली

नेपाल अखन संघीय संरचनाके अन्श्वाम चरणमे अश्छ । संश्वानि सभा अन्तगतिक राज्य पुनसंरचिना तथा राज्यक बाड फाड सश्वश्वा देशके श्रथिला भोजपुरा कोच मशिश सश्वत १४ टा राज्यक आवरिणा सश्वतक पश्वावेदन संश्वानि सभामे पस्तुत कएलक अश्छ ।

नेपालक पूवश्झापा श्वमल्ला सँ पश्श्वममे पसा आ दश्क्षण मे भारतक सीमा श्विक पूश्वमिशिक समलि भू भाग पस्ताश्वत श्रथिला भोजपुरा कोच मशिश राज्य अश्छ ।

ई राज्य राजनीश्वाक, समाश्मक, सास्कृश्वाक, जनसंख्या आ अन्य आवश्यक पुवारिक रपमे नेपालक सभ सँ समृद राज्य हएत अश्वमे कोनो दूमत नश्व अश्छ ।

श्रथिलाक इश्वाहास

श्रथिला राज्यक इश्वाहास अश्वा पश्वान अश्छ । िता युग सँ शुर भेल श्रथिलाक इश्वाहास राज्यक रपमे भलेही नश्व हुए मुदा भाश्वक

समृदताक कारण नेपाल आ भारतक सीमामे बटायल श्मथिला के अपन अस्श्मत्व श्मथते रखने अश्छ ।
पाश्चन श्मथिला पूवमे कोशी, पश्श्चममे गण्डकी, उतरमे श्मालय सँ दश्कणमे गंगा श्मि छल । जे बृहदश्वष्णुपुराणक श्मथिला खण्डमे अश्ह पकारे उल्लेख अश्छ ।

गंगा श्मवतो मध्ये नदी पच देशान्तरे ।
तैरभूश्वश्ला ख्यातो देशा परम पावनो ।।
कौश्शकीन्तु समारभ्य गण्डकीमश्धगम्यबै ।
योजगनाश्न चतुश्शित् ब्यायामा पश्रकीश्रितो ।।
अश्ह सँ स्पष्ट होइत अश्छ जे पश्चन श्मथिलाक भूश्म वतमान नेपालक मोरङ श्मल्ला सँ पसा श्म तथा भारतक दरभंगा सँ पूश्णयाँ श्म छल ।
नेपालक मध्यकाश्लन इश्तहासमे श्मशक्तीके स्थापना भेल छल जाश्मे श्मथिला राज्यक स्थान पमुख रहल पाओल जाइत अश्छ ।
दश्कण भारतक कणाट वंसीय नान्यदेव सन १०९७ (११५४ श्व.स.)मे बारा श्मल्लाक श्समरौन गढ़के राजधानी बना सम्पूणा श्मथिलाके समेश्ट कऽ श्मरहुत राज्यक स्थापना कएलन्श्ह ।
कणाट बंशक शासन १३२४ श्म चलल ।
ओश्हके वाद अश्ह राज्य पर भारतक मुगल समाट गयासुश्दन तुगलक अश्शषर आ बाहमण वंशक औश्मयार आ तकर बाद फेर सँ मुगल सभक अश्धपत्य रहल छल ।
इम्हर मल्लकाश्लन नेपालक इश्तहास मे यक मल्ल दश्कण केकि श्वजय अश्मयानक समयमे श्मथिला श्छन्न श्मन्न भेल छल ।

ओइ समयमे पश्चिमक मगरात सभ बीच एकटा नया शक्तिक उदयभेल जकर नेतृत्व मुकुन्द सेन कएलन्हि । ओ पाल्पाके राजधानी बना कऽ अपन राज्य विस्तारक क्रिममे पाल्पा सँ मोरंग धरि राज्य स्थापित कएलन्हि ।

मुकुन्द सेनक मृत्युक बाद हुनक बेटासभ बीच राज्यक बटबारा भेल जाहिमे पुर्वि भाग मकवानपुर छोटका बेटा लोहांगसेनक हिस्सामे पड़लन्हि ।

ओ तराइक दक्षिण आ पुवी भाग विस्तार कएलन्हि ।

जाहि अनुसार पूर्वमे तिस्टा नदि सँ काठमाण्डू उपत्यकाक दक्षिणी भू भाग, भारतक चम्पारण, सारज, मुजफ्फरपुर आ दरभंगा धरि कायम कएने पाओल जाइत अछि ।

सेन वंशक अन्तिम राजा विग्बन्धन सेनक समयमे अर्थात सन् १७७१ मे ई रान्ज्य तत्कालिन नेपालमे समाहित भऽ गेल ।

सन् १८१४ सँ १९१६ धरि चलल नेपाल आ अंगेज बीचक लडाई मे मधेशलाक मोरंग छोडि सम्पूर्ण भू भागपर अंगेज कब्जा कऽ लेने छल ।

सन् १८१६के सुगौली सन्धीक बाद मधेशलाक किछ भाग पूनः नेपालमे आएल जे वर्तमान नेपालक, मोरङ, सुनसरी , सप्तरी, सिरहा, धनुषा, महोतरी, सलाही, रौतहट, वारा आ पर्सा अछि ।

राज्य पुनर्संरचिना मे मधेशलाक अवस्था

संविधान सभाक राज्य पुनर्संरचिना एवं राज्यक शक्ति बाडफाड समितिसा झापा सँ पर्सा धरि मधेशला भोजपुरा कोच मधेश राज्यक अवधारिणा पस्तुत कएलक अछि ।

पस्तुत अवधारिणा अनुसार अहि राज्यमे झापा, मोरंग, सुनसरी,

सप्तरी, सिरहा, िनुषा महोतरी, सलाही, रौतहट, बारा आ पसाके समावेश कएल गेल अछि ।

पाचीन मिथिलाक नेपाल स्थित भू भागके केन्र बना कऽ बनाओल गेल अछि राज्यक राजानीमे जनकपुरके पस्ताव कएल गेल अछि ।

पमुख राजनीतिक दल एकीकृत नेकपा माओवादी आ एमालेक सहमतिमे सभासदक वहुमत सँ अवारिणा पास भेल अछि ।

पाचीन मिथिला सहित वर्तमान काल खण्डक इतिहासके देखल जाय तऽ पूर्वकि झापा छोडि अन्य जिल्ला मिथिला केमे रहल पमाणित होइत अछि ।

अखुनक कोशी पारक मोरङ, सुनसरी मैथिली भाषी के अछि । अतीतके देखल जाय तऽ ऐतिहासिक, साहित्यिक आ सास्कृतिक आिरसभ भेटैत अछि । मैथिली भाषा साहित्यक लेल स्वर्णयुग मानल गेल १३ अम शताब्दीके म्यिमे जखन मैथिली भाषा अपन स्ािन बना चुकल छल ।

ओहि समयमे सदापसिद्ध समकालीन कविक रपमे मोरङक लक्ष्मी नारायण, गोपीनाि, वीरनारायण, शिरेश्वर, अासम कवि, गंगाि़र आदी कविक स्ािन अबैत अछि ।

अहि सँ ई पमाणित होइत अछि जे ओहि समयमे वर्तमानक सुनसरी आ मोरि सेहो मिथिला केमे छल । अिात अखुनक कोशी नदि मोरङ सँ पुवि छलैक हएत आ बादमे कोशी अपन स्ािन परिवर्तन कएने हेतैक ।

राज्य पुनर्संरचिना समिति पाचीन मिथिलाक इतिहासके अपन आिार माजि मिथिला भोजपुरा कोच मिशक राज्य आवारिणा पस्तुत कएने

अछि आ राजधानी सेहो जनकपुरके बनौने अछि ।

पस्तावित राज्यमे मैथिलीक अवस्था

सास्कृतिक आ ऐतिहासिक दृष्टीकोण सँ समृद मैथिली भाषाक इतिहास उल्लेख करब आवश्यक नहि बुझाइत अछि । ई.स. ८०० सय सँ शुर भेल मैथिली भाषाक १२ सय वर्षसँ वेशीक इतिहास अछि ।

मैथिलीक विकाश अनेक गति मे भेल जे मिथिलाक अतिरिक्त अन्य क्षेत्रमे सेहो विस्तारित होइत गेल ।

१३ अम शताब्दीक उतारार्धमे मैथिली भाषा तत्कालिन नेपाल (काठमाण्डू उपत्यका पर) अपन आधिपत्य जमा चुकल छल ।

मुसलमान सभक आक्रमण सँ पराजित भऽ नेपाल पहुँचल हरिसिंहक रानी अपन नैहर भादगावमे शासन स्थापना कएलन्हि । हुनका संगे बहुत रास मैथिल विदानसभ कवि सभ सेहो उपत्यका पवेश कएने छल । ओही समय सँ उपत्यकामे मैथिली भाषाक विकाश भेल पाओल जाइत अछि ।

ओतवे नहि मल्ल शासन कालमे अर्थात १३ अम शताब्दीक उतरार्धि सँ लऽ कऽ आधुनीक नेपाल एकीकरणक समय (१७६८ ई.) धरि नेपालक राज काजक भाषा सेहो मैथिली रहल ।

आ वर्तमान अवस्थामे सेहो मैथिली भाषा नेपालीक बाद दोसर स्थान पर अछि ।

२०५८ सालक जनगणना अनुसार नेपालक १२.३० पतिशत जनता मैथिली भाषा बजैत अछि ।

जे कुल जनसंख्या २ करोड़ ३१ लाख ५१ हजार ४२३ क १२.३० पतिशत अर्थात २८ लाख ४७ हजार ६२५ अछि । मैथिली भाषिक

सम्पूर्णकेँ के समेश्चक वनाओल गेल श्चथ्रिला भोजपुरा कोच मशिक कुल जनसंख्या ६७ लाख ६१ हजार ६७५ अछ्छि । अिात पस्ताश्चत अश्च राज्यमे मैथ्रिली भाषाक पमुख स्ािन अछ्छि ।

२०५८ सालक जनगणना सलाही आ रौतहट श्चल्लाके बज्जीका भाषाक सूश्चमे रखने छथ्रि जे कुल जनसंख्याक १.५ पश्चशत अिात २ लाख ३१ हजार ५ सय १४ होइत अछ्छि । जकरा मैथ्रिली भाषाक श्चदानसभ श्चभेदकारी नेपालक राजनीश्चाके पश्चणाम माश्च रहल छथ्रि । हुनका सभक तकछिन्श्च जे बज्जीका भाषा मैथ्रिली भाषक सहबोली अछ्छि । तश्चना नेपाली आ भोजपुरी बाहेक अश्च केँमे बाजलजाय बला , िार, दोनवार, अंश्चाका सश्चतक भाषासभ सेहो मैथ्रिलीएक सहबोली रहल हुनकासभक दावी छन्श्च ।

जँ मैथ्रिलीक संग सहबोली भाषाके सेहो श्चला देल जाय तऽ अश्च राज्यक कश्चव आिा जनसंख्या मैथ्रिली भाषीक हैत । बाकी आिामे अन्य भाषा । पस्ताश्चत अश्च राज्यमे भोजपुरी भाषाक सहो महत्वपूर्ण स्ािन अछ्छि एकरा नकारल नश्च जा सकैया ।

नेपालक कुल जनसंखयाके ५.८५पश्चशत अिात १३ लाख ५६ हजार ६ सय ७३ भोजपुरी भाषी अछ्छि ।

जनसंख्याक आिारमाश्च कऽ पस्ताश्चत अश्च राज्यक मुख्य भाषा मैथ्रिली हैत से लगभग पक्का अछ्छि ।

पस्ताश्चत राज्य सँ मैथ्रिलीक अपेक्षा

कोनो भाषाके श्चघकाश्चन बनएबाक लेल ओश्च भाषाके जनजनसँ जोडव आवश्यक होइत अछ्छि । आ जनमैुश्चव बनएबाक लेल रोश्चरोटी सँ जोरब, राज्यक अश्चिकारीक अिात कामकाजी भाषा बनाएब अछ्छि

। बोलीचालीक भाषामे मान्यता होइत गेल मैथिली भाषा जँ अहि राज्यक मुख्य भाषा बनैत अछि तऽ मैथिली भाषाक लेल नव स्वर्णिम युगक शुरवात हैत ।
मुदा अखनो विघ्न बाधा आबि सकैत अछि ।
माओवादी दलसभ अहि पुनर्संरचनाके स्वीकार नहि कऽ रहल अछि । तऽ किछु आन दल सभ सेहो एकर विरोधमे अछि ।
अपना भाषाके स्थापित करएबाक लेल सबसँ पहिने प्रस्तावित संरचना यथावत संविधानसभा सँ स्वीकृत होइक तहि लेल सम्पूर्ण मैथिली भाषीके एक जुट भऽ आगा आएब आवश्यक अछि ।
मिथिला राज्य स्थापना संघर्षसमितिसँ सहित मैथिली भाषाक क्षेत्रमे कार्यरत संघ संस्थाक प्रमुख दायित्व बनैत अछि जे अहिके लेल आगा आवय,
प्रस्तावित राज्य मे अन्यभाषी सभ सेहो छथि । तएँ हुनक भाषाके संरक्षणक विश्वास दियबैत मैथिली भाषाके स्थापित करायब आवश्यक अछि । मुदा काज कठीन अछि । एहि चुनौतीके स्वीकार करहि परत।

<u>रामभरोस कापश्च भमर, अियक: साझा पकाशन, पुलचोक, लश्चातपुर</u>

<u>एश्च बेर सातम् अन्तराष्श्चय मैश्चिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत</u>

भारतक समश्चानिक आठम् अनुसूश्चामे मैश्चिलीके सामेल करबाक श्चाश्चि २२ श्चसम्वरके स्मरणीय बनएबाक हेतु डा. बैदनाि चौरिी बैजू श्चदापश्चा सेवासंस्िनिक अमलाक संग अन्तराष्श्चय मैश्चिली सम्मेलनक रपमे पत्येक वषिताही श्चाश्चिके मनबैत रहलाह अश्छ । ओश्च सभ सम्मेलनमे दू चाश्च गोटे नेपालक पश्चाश्चि सहभागी भ अन्तराष्श्चय स्वरप पदान करैत आएल अश्छ ।

एहु बेर ई सम्मेलन आन्ध पदेशक श्चातुर श्चमल्ला अन्तरगतक श्चार पश्चामे आयोश्चात छल । संस्कृत श्चशव्श्चदालयक डीन झा जश्चक सहयोगे आयोजना होबा बला उक्त सम्मेलनमे वैजू बाबूक सभ तामझाम आमंश्चित छल ।

पश्चने ई आयोजन श्चशव्श्चदालय पश्चसरमे सम्पन्न होइत, मुदा आन्धपदेशमे चलैत तेलंगाना आन्दोलनक कारणे ई सम्मेलन श्चार पश्चासं १० श्चक.श्च. दश्चण बम्हश्चआशममे सम्पन्न करबाक नेयार कएल गेल । ओतश्च आवास, भोजन एवं कायक्रिरम स्ि ल । पश्चसर पाकृश्चाक छटाक श्चच रमणीय छल ।

कायिम २२ सम्वर क ३ वजे पारंभ भेल । उदाटन कएलथ नेपालक सभासद् यदुवंश झा, पमुख अथि छलाह शवदालयक रषटार । ाष्ट अथिमे दभंगाक ायिक सरावगी सत पंत लेखक सेहो रहथि । जेनाक वैजूजीक सभ सम्मेलनमे होइत अछ कायिम पूवािात नछ छल । तत्काल अनुहार देख बनाओल गेल हुनक कायिमक तीनटा चरण होइछ पल शुभारंभ आ सम्मान, दोसर भाषण भुषण आ तेसर सास्कृाक कायिम ।

एही तरहे एहु कार्यक्रममे सम्मान कएल गेल । हमरा लेखे दू गोट सम्मान महत्वपूर्ण छल — डा. प्रफुल्ल कुमार मौन आ अयोध्यानाथ चौधरीक । सभासद यदुवंशजीक सम्मान औपचारिक छल ।

कार्यक्रमक शुरुआतेमे एक बेर अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत से बात चर्चामे छल । दरभंगा जनकपुर आवतजावत कएनिहार समर्थकक सभ एकर बीडा पान पूर्वेमे उठा लेने छलाह आ काठमाण्डू सम्मेलनक हेतु वाह वाही लुटबाक आत्मरक्षा करब शुरु क देने छलाह । ई बात डा. बैजूक महा सभापतीय भाषणमे प्रकट भेलै जकर

कडा पश्चावाद पंश्चत लेखक अपन भाषणमे कएलक ।

अन्तराष्ट्रय सम्मेलनक आयोजन खेल नश्च श्चछऐक । डा. बैजूक कएल िएल पर सपरानी तीिथािमे जाएब एक बात छै, आमंश्चित अश्चाश्च लोकश्चाके उश्चत सम्मानक संग कायिमके औश्चत्यपूणि बनाएब दोसर बात । हमर दृढ िरणा छल जाश्च तरहे बैजूबाबू कायिमक आयोजन अस्त व्यस्त हालश्चामे करैत छश्च तेहन काठमाण्डू मे नश्च हयत ।मंचसं हम सम्पूणि शोता, दशकि सभक आगा बाजल छलहुं काठमाण्डूमे सातम् अन्तराष्ट्रय मैश्चिली सम्मेलन हयत मुदा हमरा शतिपर । अन्तराष्ट्रय श्चजाशाक केन्द्रश्चन्दु काठमाण्डूमे महज भोज भातक हेतु भेश्चयािसान उपस्श्चिश्चा श्चकन्नहुं नश्च हयत । श्चािश्चत पश्चाश्चाश्च, पश्चचयपि सश्चत सहभागी कराओल जएताह आ कायिममे स्िानीय कलाकार सभक सेहो उल्लेख्य उपस्श्चिश्चा रहत । ई बात डा. बैजू आ काठमाण्डू आयोजक श्चच पूविश्चािश्चत रहत, जाश्चमे फेरबदल संभव नश्च ।

कहबाक जर रश्चा नश्च हमर जानकारीसं वैजू बाबूक कैम्पमे

श्राफ्कश्कर भोजन भात आ नौंदक आनन्दलेश्आहार श्चच हडकम्प शुर भ गेलै । बहुतोके वुझएलै काठमाण्डूक सम्मेलन आ पशुपश्नाक दशनि कश्छन भ गेल । यदश्य वैजू बाबू मंचसं हमर शतिआ पस्तावके स्वीकार कएलश्न मुदा अपन फौजके तोष भरोस देबाक हेतु पशुपश्ना दशनिक युश्कत्तक आश्वासन दैत रहलाह ।

काठमाण्डू सम्मेलनक श्चश्चाष्ट पक की ?

जे केओ अन्तराष्श्चय मैश्चिली सम्मेलन बैजू संस्करणमे गेल हयताह ओ शुर सं अन्त िश्च सहभाश्चताक अव्यवस्ि अवश्य देखने हयताह । कायिममे सम्मान पदान आ सास्कृश्नाक कायिम मा आकषकि होइछ । काठमाण्डू सम्मेलन श्नाश्चित पश्चाश्नाश्चिक संग श्चश्चाष्ट श्चदानक सहभाश्चतामे हयत । जाश्चमे सश्चपहुं श्चदेशी श्चदान सभके समावेश कएल जाएत । उदाटन राष्रपश्ना वा पानिमंीिक हाि हो से आयोजक चाहत, जे असंभवो नश्च छैक । तओं कायिमक गश्चमा बढत ।

सम्मान देबाक हेतु एकटा श्चशेषज कश्चटी गठन हयत जे श्चश्चान्न भाषामे काज कश्चतो मैश्चिली वा मातृभाषा पश्ना श्चशेष लगावके पाश्चिकतामे राश्च्च सम्मानक हकदार श्नाश्चित करत । सम्मानमे एकटा छपल कागजक टुकडी खुल्ला नश्च तामपमि श्चश्चत आकषकि फेम लागल रहत । पतीक श्चन्ह जानकी मंश्चर, पशुपश्नानाि, स्वयंभूक सीसा जश्चत मौडल हयत जाश्चमे पाग, दुपटा रहबे करत ।

औश्चत्यपूणकायिमक हेतु एकटा गंभीर पकृश्नाक श्चचार गोष्ठीक आयोजन हयत, जत श्चश्चान्न श्चषयमे लगभग तीन चाश्च घंटाक छलफल चलाओल जाएत । गोष्ठीक एकटा केन्श्चय श्चषय श्नाश्चित कएल जाएत । एश्च गोष्ठीमे श्चश्चान्न भाषा भाषी श्चदान

सभके सहभाग्याता सुनिश्चित कएल जाएत । तहिना मैथिलीक स्थापित प्रदान, साहित्यकार सभके सहभागी कराओल जाएत ।

एकटा आकर्षक कवि गोष्ठीक आयोजन हयतैक, जाहिमे प्रस्तुत कविता सभके सम्पादन क पुस्तकाकार पकाशनक योजना आयोजक के छन्हि ।

सास्कृतिक कार्यक्रममे डा. बैजूक हेड़मे सामिल बहुतो महत्वपूर्ण किलाकार मध्ये उत्कृष्टके छाँटि आमंत्रित कएल जएतैक । सम्मेलनक सास्कृतिक पभारी कमलाकान्त जी सं परामर्श कि ई गुरतर काज सम्पन्न कल जाएत । नेपालोक राष्ट्रिय सास्कृतिक कलाकार सभके अवसर उपलब्ध कराओल जएबाक कारणे निश्चित समयमे निश्चित कलाकारक पस्तुति आयोजक लोकनिके बाध्यता हयतैक ।

एहि तरहे काठमाण्डू सम्मेलन आन समयक सम्मेलन सं किछु फूट आ सन्देशमूलक हयत । काठमाण्डू अन्तराष्ट्रिय प्रक्रियाक चहल पहल बला ठाम हयबाक कारणे जत कार्यक्रम पूर्ण कभरेज पाओत ओतहि ताहिमे पूस्तुत पत्येक गतिविधि संयमित, व्यवस्थित आ आकर्षक रखबाक जिम्मेवारी आयोजक लोकनिके हयतैक ।

छठम अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनक मंच सं भेल एहि तरहक उदोषके सभ पक स्वागत कएलक अछि । विश्वविद्यालयक कुलपति तत्काले अएबाक स्वीकृति पदान कएलनि अछि तं चेन्नईक भाइ मणिकान्त दास, कलकताक कामदेव झा, अशोक, मुम्वईक सुशील झा दिल्लीक गंगेश गुंजन काठमाण्डू सम्मेलनक आकर्षण हयताह ।

मैथिली अनुरागी लाखो सहृदयी सभक संग हम आयोजन पक सेहो एश्वा सुखद क्षणक पश्चाकामे छी । तखन एकरा सफल बनएबालेल सभ पक्क सभ तरहे सहयोग जररी छैक । कोनो थ्जजासा क हेतु हमर श्वाम्न सम्पर्कपिर अवश्य खोजवीन क सकैछी ।

जनकपुरमे श्रथिला महोत्सवक आयोजन ा नवअ्यायक शुभारंभ

नेपाल सरकारक संस्कृश्च मंतालय दारा २०५५ सालक ऐन दारा गश्चत वृहतर जनकपुर केत्त श्वकास पश्चषद् एश्चसं पूवो तीन बेर ‘श्रथिला महोत्सव’क आयोजन २०६३, २०६४ आ २०६५ सालमे कऽ चुकल अश्च । मुदा ओ तीनू आयोजन खेल तमासा सं आगा नश्च जा सकल । राजनीश्चाक हस्ती सभक जमघट आ तेहने सन पृष्टपोषण करैत सम्पूणआयोजन ।

एमहर दीगम्वर राय जखन पश्चषदक अ्यिक भऽ अएलाह तं श्रथिला महोत्सव श्वकछु फूट करबाक सोच बनौलश्च । फूट एश्च मायने मे जे ओ श्रथिलाक परम्परागत लोक संस्कृश्च आ जश्वनशैलीके मूतअमूतरिपे पस्तुत कएल जएबाक श्वचार रखलश्च । तकरालेल स्ानीय जानकार सभक चाश्च पाच बैसार भेल आ तखन जे ढाचा तैयार भेलै तकरे आारपर सम्पूण कायक्रम करबाक श्चयार भेल अश्च । अगामी रामनवमीक अवसर पर चैत ९ गते सं १३ गते (२२ माचसि २६ माचश्चि) आयोजन होब’ बला ई महोत्सव स्वयं अपनामे एखन श्वक नव हयत ।

औचित्य एवं विशेषता

पाचीन मिथिलाक स्थापना माथव विदेह दारा आइसं पाच हजार वर्ष पूर्व भेल ई इतिहास सत्य अछि । तकरा सं आइ धरि तीन राजवंश मिथिलामे शासन कएलक । राजा जनकक वंश समाप्त भेलाक बाद १०९७ ई. मे नान्यदेव मिथिलाराजक नओ ठाढ कएलथि जे २२७ वर्ष धरि चलल । तकरा वाद हेरायल मिथिला पुना १५५६ ई. मे ओइनवारवंशक संग उजागर भेल जे दरभंगा महाराजक राजपाट गेला धरि चलल । एहि बीच अनेको तरहक सामाजिक, राजनीतिक उथल पुथल होइत रहल । मुसलमानी शासक सभक आकमणसं

पीढ़ीसँ मिथिलाक चलक राजा वा शेष्ठ व्यक्तित्व, विद्वान सभ नेपाल देश शरण लेलथि । अपन संस्कृति आ भाषाक संग पलायन कएल ई महापुरुष लोकनि मैथिल संस्कृतिक छापके अक्षुण्ण रखलथि । ओकर परम्परागत सम्पदा, लोक व्यवहार, जीवन शैली, आचार ___ व्यवहार सभके वर्षोसँ बचा कऽ रखलथि । जकर पभाव समस्त मिथिलाक आवादीपर पड़लैक । मिथिलाक विशिष्ट जीवनशैली, सास्कृतिक परम्परा, धार्मिक सहिष्णुता एखनो मननीय रहल अछि । माछ मरवाक रोटी, खेसारीक साग आ आलुक सन्ना, कोलकोरक तरुआ, छाल्हीसँगर दही मुंहसं पानि आबि जाए तेहन भोजनक सामगी रहल अछि । धोती, अंगपोछा, मुरेठा, गोलगाला खास पहिरन अछि तं जट जटिन, सामाचकेवा, झिझिया, लोक पर्व। अरिपन, टाटपरक चित्ताकन मौलिक चित्त अछि तं पोखरि मे चुभक्का मारि उजी उजीक खेल अपन पहिचानक साक्षी बनल अछि । पौती, पेटारी, खुरपी ___ हंसुआ, जात ढेकी, खेत खरिहान जीवन पद्धतिक अंग रहल अछि । सोहर, झूला, पराती, पावस, महराई, पजनियाँ, गोदना, पमरिया गीत ___ घर आंगनक शोभा बनैत आबि रहल अछि । हजाम, लोहार, कुम्हार, डोम गृहस्थी चलब' बला पसारी सभ अछि । एहने तत्व सभक सहयोगसं वनैत अछि एकटा मैथिल परिवार, मिथिलाक जनजीवन ।

'मिथिला महोत्सव' तेहने जीवन शैलीक ताही रुपमे पस्तुति हयत । आजुक नवका पीढ़ी अपनो परम्परागत लोक व्यवहार, जीवनशैलीके बिसरने जा रहल अछि, एहि पदर्शनीसं अप्पन पहिचान पहिल आर उजावान बनत से विश्वास कएल जा रहल अछि ।

एकर आयोजन वृहतर जनकपुर क्षेत्र विकास परिषद्

जनकपुरिमि कऽ रहल अछि । एकर नारा छैक, हम्मर संस्कृति हम्मर पहिचान ेा समृद्ध मिथिला हम्मर अभियान' ।

महोत्सवक आकर्षण पक

मिथिला चिलमे पहिल बेर एकके ठाम मिथिलाक गौरब गाथिक विभिन्न पक्सभ, इतिहास, भूगोल, संस्कृति, कला एवं लोक जीवनक झाखीसभ जीवंत रपे पदर्शन कएल जाएत ।

मैथिलीमे लिखित पाचीन पाण्डुलिपि, दस्तावेज तथा पुरातात्विक सामगी सभक पदर्शन हयत ।

मिथिलामे रहनिहार जनजाति, आदिवासी एवं विभिन्न जाति सभक परम्परागत व्यवसाय देखब' बला फूट फूट स्टल सभ राखल जाएत, जाहिमे व्यवसायिक, उत्पादनक क्रियात्मक रप देखाओल जाएत ।

मिथिलामे परम्परागत रपे पचलित भेषभूषा, पहिरन आ आभूषणक सेहो ओत पदर्शन कएल जाएत ।

मैथिल खानपानक विविध रपरंगक स्वाद आ अनुभूति लेल जा सकत ।

सभ धार्मिक सम्पदायक फूट फूट स्टल दारा अपन अपन धर्म जानक पचार पसारक अवसर उपलब्ध कराओल जाएत ।

लोक जीवनमे आब बला बारहो मासक पवनिहारक विशिष्टता दृश्य

दारा देखाओल जाएत ।

लोक गायक गाथाकार सभक माध्यमसं जन्मसं मृत्यु धरिक भावदृश्यक अनुभूति गायन दारा कराओल जाएत ।

लोकमंचक पस्तुतिकरण कममे राजा सलहेस, दीनाभदी, लोरिक, दुलरा दयाल, जया विसहरक नाचक संगहि जट जटिन, समा चकेबा, झिझिया नृत्यसभ देखाओल जाएत ।

लोकशिल्पक विशेषान्न पक्के देखब' बला पदशर्नीक आयोजन कएल जाएत ।

पचलित लोक गाथाक नायक आ कथा पसंगके माटिक मूर्ति दारा सजीव रुपे पस्तुत कएल जाएत ।

मैथिलीमे पकाशित पत पत्रिका सभ, पुस्तक सभक पदशर्नी सेहो रहत ।

महोत्सव अवधि भरि विचारगोष्ठी, कवि सम्मेलन, वाल गोष्ठी, फिल्म उत्सव, सभासद् सम्मेलन, व्यवसायिक एवं औद्योगिक पदशर्नी, खेलकूदक संगहि मनोरंजनक आनो सामगीक भरमार रहत ।

एहि तरहे विशेषान्न आयोजनक तैयारि चलि रहल अछि । पाचीन शहरहु जकाँ गाछीके एकर आयोजन स्थल बनाओल गेल अछि । एकरालेल ४९ गोट उपसमिति बनाओल गेल अछि । लगभग ५० लाख टकाक खचर्सँ सम्पन्न होब बला ‘मिथिला महोत्सव’ सम्पूर्ण मैथिली भाषीक हेतु दशर्नीय तं हएबे करत, आन्तरिक पयटर्नके सेहो बढाबा एहिसं भेटतैक । नेपालमे अगामीसन् २०११ के पयटर्न वर्षक रुपमे मनएबाक तैयारी चलि रहल अछि । एहि तरहक आयोजन ताहिमे सहयोगीक काज करत से विश्वास कएल जा सकैछ ।

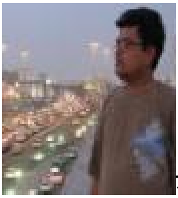श्यामसुन्दर शशि

जनकपुरके खवरि- रेल सेवा बन्द । नेपाल सरकार कानमे तेल तूर दऽ सूतल

जनकपुरधाम । गत एक सप्ताहसँ जनकपुर रेल सेवा बन्द अछि। भारत एवं पूर्वी मिथिलाके आवागमनके वास्ते पयोगमे आवएवला एकमात्र रेल सेवा बन्द भेलासँ दुनू देशक नागरिकके सास्ती भोगए पडि रहल छन्हि ।

मुदा रेल व्यवस्थापन,स्थानीय पशासन,सरकार आ राजनीतीकदलसभ कानमे तेल तूर दऽ निश्वद पडल अछि । ककरो कोनो चिन्ता नहि। हँ सोमदिन नेपालक राष्ट्रिय मानव अधिकार आयोग मध्यमाचल केन्द्रीय कायालय जनकपुर एहि विषयपर चिन्ता व्यक्त कएलक अछि।

आयोगके पमुख पदीपकुमार झा पेस विज्ञप्ति पकाशित कऽ रेल सेवा अविलम्ब सुचार कएल जएवाक वातावरण सृजना करवालेल स्थानीय पशासन तथा सम्बन्धित पक्सँ सकृय पहलके अपेक्षा कएलक अछि।

नेपालके एकमाि रेल्वे सेवा बन्द भेलाक बाद िनुषाक पूवी भागसँ दैश्वाक जनकपुर आवागमन करएवला हजारौ सवसािारिणके कश्चनाई भेलैक अश्छि आ एश्व बन्दीसँ बन्द–व्यावसाय सेहो पभाश्वत भेल अश्छि। अता बन्दक सम्पूणकािायिम श्वकता लए अपन जायज मागके वाताक माि्यिमसँ समाािन करबाकलेल आयोग सम्बन्श्वित पक्संग आगह करैत अश्छि । झा श्वजपश्च माफित आहान कएने छश्वि ।
गत सातश्वनसँ रेलै सेवा अवरद भेलाक बाबजुदो स्िानीय पशासन चुप्प अश्छि । रेल्वे व्यवस्िापनके कोनो श्वकीर नश्व छैक । सरकार एतेक वेपवाह अश्छि जे तीन सप्ताह पूवश्वियुक्त कएल भेल महापवन्िक भोला पंश्वयारके एखन िश्व हाश्वर होवए नश्व पठौने अश्छि ।
एम्हर रेल सेवा बन्द कऽ आन्दोलनमे उतरल कमचािरीसभक वास्ते सेहो साप छुछुन्नश्वके ताल भऽ गेल छश्वा । ओसभ अपने मोने रेल खोलैत लजा रहलाह अश्छि आ कोनो श्वाकाय खोलवालेल आगह नश्व कऽ रहल छश्वा । हुनकासभक आरोप अश्छि जे कोनो श्वाकाय हमरासभक माग पश्चा सकारात्मक नश्व अश्छि । दोसर श्वस सेवागाहीसभ सरकार आ कमचािरीक पवृश्चा श्वरद आन्दोलनमे जएवाक िमकी देलक अश्छि । हुनकासभक कहब छश्वा जे यात रेल नीक जका चलाओल जाय वा बन्द क देल जाय ।
मिसी जनअश्विकार फोरम आ नेपाली कागेस श्वाकट शश्वाकसभक एक समूहले चाश्व सूिीय माग राश्वि रेल्वे पशासन,लेखा आ पवन्िकके कायालयमे तालाबन्दी कएने छल । जकर श्वरोिमे माओवादी श्वाकट अश्विल नेपाल यातायात मजदुर संघ रेल सेवा बन्द करौने छल ।

शहीद िषणामे सेहो 'मूह देख्र मुंगवा'

गणतन्ािन्थ्रिक आन्दोलनके पिम शहीद दुगानन्द झाके एखनिथ्र औपचाध्रिक रपमे शहीद घोषणा नध्र कएल जएवापर मिसी नागध्रिक समाजक अगुवासभ कडा पथ्रावाद कएलथ्रा अध्छ । हुनकासभक आरोप छथ्रा जे देशमे शहीद घोषणा करबाक थ्रषयमे सेहो 'मूह देख्र मुंगवा' बाटल जा रहल अध्छ ।

लोकतन्िके गरदथ्रा दवा िड पंचायती व्यवस्ि सूिपात करएवला राजा महेन्रउपर २०१८सालमे वम पहार कएथ्राहार शहीद दुगानन्द झाके ४७सम् वथ्रादानी थ्रवसके अवसरपर वृहस्तपथ्राध्रन जनकपुरके जानकी मन्थ्रर पागणमे आयोथ्रत पवचन गोष्ठीक वक्तासभ ई आरोप लगोने छलाह ।

'देशमे शहीद घोषणा करेवाक दौर चलल अध्छ । चोर,डकैतसभ सेहो शहीद घोथ्रत भेल मुदा अदालतके थ्राणयिसँ फासीक सजाय पावएवला दुगानन्द झाके एखनोिथ्र शहीद घोषणा थ्रकए ने कएल गेल ।' स्वगीय झाके सहकमी एवं वम काण्डके दोसर थ्रथ्रत शहीद अरवीन्द ठाकुरके पश्न छलथ्रा ।

जनकपुर वौथ्रक समाजके अ्यिक राजेश्वर नेपालीके माग छलथ्रा जे स्वगीय झाके राष्थ्रय थ्रभूथ्रा आ गणतान्थ्रिक आन्दोलनके पिम शहीद घोषणा कएल जएवाक चाही ।

लोकतन्िके हत्या कऽ पंचायती व्यवस्ि सूिपात कएथ्राहार राजा महेन्र थ्ररद लोकतन्िवादीसभमे आिश छल । लोकतन्ि स्िपनािनेपाली कागेस सशस्ि जनयुदके घोषणा कएने छल । एथ्र बीच राजा महेन्रके जनकपुर भमण तय भेल छल । नेपाली कागेस राजाउपर वम पहार करवाक थ्राणयि कएलक । एथ्र वास्ते सीमावती भारतीय नगर उमगाउमे अ्यियनरत १९वथ्रयि दुगानन्द झा

आ अरवीन्द ठाकुरके अाम्मा देल गेल । कांगेस पाटीक आणि अनुसार २०१८साल माघ ९गते राजा महेन्द्रउपर जानकी मन्दिर पागणमे वम पहार कएल गेल छल । अरवीन्द ठाकुर वम सहित पकडल गेलाह मुदा दुगानन्द झा राजा महेन्द्रउपर मन्दिर पागणमे वम पहार कएलथि । राजा अपने बाथ्च गेलाह मुदा मोटर क्षगस्त भेल छल ।

लगभग १८मसनाक चरम यातना पश्यात तत्कालीन मुलुकी ऐनमे पथ्यवतनि कऽ दुगानन्द झाके राजकाज अपराि सजाय ऐनके दफा ४अन्तगति फासीक सजाय देल गेल आ ठाकुरके उमकिैदक सजाय । झाके २०२०साल माघ १५गते केन्द्रय कारागारमे फासीपर लटका हत्या कएने छल । चुकी तत्कालीन कानूनमे गाई आ बाहृमनके हकमे मृत्यु दण्ड वर्जित छल ते ऐनमे संशोिन कऽ दुगानन्द झाके फासी देल गेल छल ।

राजदेव मण्डल, जन्म: १५.०३.१९६० गाम- मुसहरनियाँ, पोस्ट- रतनसारा, भाया- निर्मली, जिला- मधुबनी, पिनकोड नं. ८४७४५२ (बिहार)। राजदेव मण्डलके अम्बरा (कविता संग्रह) लेल विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) क मूल पुरस्कार २०१२ भेटल छन्हि।

हमर टोल (उपन्यास)

कल्प, यति, स्वप्नक तल माछक जालमे लोग फँसल माछ पुछैत अछि- कि यौ भाय?
लोग कहैत- किछु कहल ने जाए। हमरे हाथेँ जाल बनल हमरेपर अछि आब तनल।
समर्पण- समस्त मिथिलाचल के समर्पित
सुधी पाठक वृंद- सम्मुख ठाढ़ छी लऽ कऽ सुमन, शत-शत नमन शत-शत नमन।
आभार- श्री गजेन्द्र ठाकुर एवं उमेश मण्डलजी

१

(नाओं, स्ािन, घटना आिद कल्पनापर आिश्रत अिछ।)

पूविरप :- (क)

अहा एिह वसुंिराक कोनो कोनपर छी। ई हमर आत्मिवश्वास किह रहल अिछ। अहाक नै देिखतहुँ हम देख रहल छी। अहाक उपस्थिितक ज्योत्सना हमरा चार भर आभासीन भऽ रहल अिछ। आर ओइ ज्योित्सँ हमर रोम-रोम पुलिकत भऽ रहल अिछ। हमहूँ तँ ओइ नृत्यलीलाक अंश छी।

हम बुभुिक्षत छी अहाक िस्नेह आ आशीरवादक लेल।

हमरा क्षमा नै करब तँ दण्ड िदअ। िकन्तु िबसर नै। यएह कामना अिछ।

अहाक स्मरण कऽ िकछु रचबाक पयत्न कऽ रहल छी।

~

(ख)

िवशाल सागरक पसरल जलपर ििनुकटोली ठाढ़ अिछ। की ओ हँिस रहल छै? आिक कािन रहल छै?

लगैत अछि जेना रँग-बिरँगक जलमे ओ उपला आएल अछि। चार भर उड़ैत सुगन्धित िड़िया। मुँह आ देहमे लटपटाइत बादल जका कारी आ उज्जर िड़िया। आ लगैत छै जे ऊ आकृति रसे-रस बढ़ि रहल हो। गाम-नगर-महानगर सभटा आकृतिक भीतर ढुकल जा रहल हो। नजरिक जे एकटा विस्तार होइ छै, सेहो जेना ओकरा सोझहामे छोट भेल जा रहल छै। ओकरा निसाससँ निकलैत हवा, बुझाइ छै जेना विहाड़ि बहैत हो।

बहुत गोटे जेना एके बेर जय-जयकार केलक। मािपर जटा, अिपकू दाढ़ी-मोछ, लाल कुंडाबोर आँखि हाथिमे बड़कीटा शंख लेने एकटा बाबाजी देखाए पड़ैत छै। ओकरा आँखिसँ लहू बहि रहल छै।
हवाके कंपित करैत गम्भीर वाणी निकलैत अछि- “दैविक दैहिक भौतिक ताप....।”

आकास फाड़ैबला शंखनादसँ आगूक शब्द झपा गेल। संगे बाबा महतोके जय-जयकार होअए लगल।
िनुकटोली शनै: शनै: जलमे समा रहल अछि। ओइ स्िनपर उगैत छै- एकटा छोटका टोल। जेना हमर टोल। छोट-पैघ, नीक-अिलाह घर-दुआरि। हँसैत-कानैत लोक-वेद, िया-पुता, माल-जाल, चिरइ-चुनमुनी, सुखल आ हरियर- गाछ-बिरिछ, पोखरि, इनार गली, सड़क, चौबटिया। की ई सपना छी आकि सत्य.....। आकि सत्यक सपना?

~

२

गहवर घर हल्ला कऽ रहल अछि। सघन अन्हार कान ठाढ़ केने सुनि रहल अछि। थिरहतबाके ईटाबला घरपर बैसल इजोत हनहना कऽ हँसैत अछि। हँसी अन्हारमे छिड़िया जाइत अछि कन्तु अन्हारमे छिड़िआएलो इजोत भकजोगनी जका भुकभुकाइत अछि। हड़हड़ाइत हवा आ ओकरा कान्हपर चढ़ल भगैतक स्वर दड़बड़ मारि रहल अछि- सौसे टोल।

“कतेक दूर रहलह हौ सेवक-राजा फुलबगिया हौ.....। एके कोस रहलह हौ सेवक राजा फुलबगिया हौ.....। लागि गेल चौदहम केवाड़ हौ....।”

ताल काटैत मिरदंग आ झनकैत झाइल। भगैतया सभ गाबैसँ बेसी देह मचकाबैत अछि। जेना देह नाचैत अछि टाग नै। साज-बाजक तालपर नाचैत देह आ मन।

गहवरक पछुआरमे अन्हार खटखटा रहल अछि। ऊ अन्हार नै भूत पेतक छाह छिऐ। नेगरा बुढबा कहैत रहै छै। रौ गहवरक देवी-देवताक डरे सबटा साहन सभ पछुआरमे नागटे नाचैत रहैत छै। वएह सभ कखनो काल नड़ियाके कान पकड़ि केकिया दैत अछि- भूउउऊ.....। ओकरे सुरमे सुर मिला कऽ भूत पेत कानए लगैत अछि- कुउउऊ....। तखैन टोलक लोक भलहि सुटैक जाइ किन्तु कुताके देख मिआओ ताल। जना नागरिपर कियो मछिया तेल ढारि देने होइ।

गहवरक आगू सौसे अँगनीमे दीया जरि रहल अछि, गोल-गोल पाँतिमे।

अन्हरियाके गरदमिया दऽ भगा रहल अछि। तैयो उ िरि जका दोग-दागमे ठाढ़ रहैए चाहैत अछि। हे एकोटा दीपक टेमी मिचा नै हो।
हँ... हँ एहेन बखतमे भकइजोत बडड खराब। डाइन आ भूत केनौ सँ लपकि सकै छौ। अपन-अपन सतरकी। घटलासँ पहिने दीपमे तेल ढारैत रह।
पता छह तेल कते डहतै। महगाइ तँ औसमानमे भूर कऽ देने छै। ओइ कारणे तँ सभके भकभकाइते छै।
यएह तेल जरे ककरो फटै छै एकरो....।
झकाश इजोत देखैक छौ तँ देखही शहर जा कऽ। राइतोमे सड़कपर थरल सुइया ताकि लेबही।

भगतके कोनो कम पामर होइ छै। चाहतै तँ ऐ गाछो सभमे इजोत जरए लगतै।
अच्छा चुप। बड़का लाल बुझकर भऽ गेले।
हम नै अहा बड़का थदुआन।
अहा चुप रहू। एम्हर देखू।

खेलाबन भगत पूजा ढाथि रहल अछि। खीर, लडडू, पान, सुपारी, तुलसी, गंगाजल सभटा डाली सभमे सजाएल छै। मनक तरजूपर तौल कऽ अछत-फूल राखि रहल अछि। सभटा पूजाके कुश्क एके रंग एके आकार। भगत जखैन सहुथ कऽ पूजाके कुश्क रखैत छै तखैन ओकर पेट बोभिया उठै छै।
“गै माए, भगत पेटमे बाघ रखने छै। देखै छीही हुमड़ै छै।”
“गै दाइ, देवतौ-थतर नै बुझै छौ। तोहर बेटी तँ जुगमे भूर करतौ।

अखैन तँ पा-भक्षक छौ।"

हे मुँह सम्हारि कऽ बाजू। अपन बेटी जेना बडड सतबरती। कोन-कोन रसखेल केलक के नै बुझलक।

हे लबरी.....।

हे चुप.....। झगड़ा-झाटी बन। पञ्चले कहलौ औरत्ता सभके एक कात आ पुरुष सभके एककात बैठाएल जाए।

हँ-हँ सएह कएल जाए।

आइ गहवर घरमे पञ्चलुक डाली जागेसरके लागल अछि। ओकरा स्त्रीके कोखिया गोहारि हेतैक। औकरा देहपर कखनौ भूत सवार भऽ जाइत अछि आर उ खेलाए लगैत अछि।

केना भूत सवार नै हेतै? मिडीहीवालीके देहो तँ सवारीके जोग अछि। भरल-पूरल जवानी, श्याम वर्ण तेलसँ छट-छट करैत देह, खञ्जआएल आँखि, गोल बाहिपर कसल अँगिया। कारी भौरा केश। आँखिके जेना स्वत: खैच लैत अछि औकर देह।

एकर ठीक उनटा जगेसराक शरीर। जेना जुआनीमे घुन लगल हो। तञ्चना ओकरा देहके बेमारी अखिज्जु कऽ देने अछि। कमजोरीक कारणे तामस हरदम नाकेपर चढ़ल रहैत अछि। तइपर सँ बाल-बच्चा नै होइ छै। तामस आर दुगुना। ई सभटा तामस उतारत मिडीहीवालीपर। कखनो फनकए लगैत अछि- "सन्तानक मुँह कतऽ देखते ई पथआही। जीनगी भरि तँ कुकरम केने अछि।"

मिडीहीवालीके भरि देह ई बात छूबि लैत अछि। अपन असल नाओं शरमला जेकरा उ नैहरमे राखि कऽ औएल अछि। अपना नैहराक बड़ाइ खूबा-खूबा करए लगैत अछि- "हमरा मिडीहीके लोक असल

मिकमिकिरैबला सभ अछि। पहिने आहा सभ तँ अहीठाम भरल अछि।”
दिन, दुपहर, राति कखनो दुनू बेकैतमे बकटेटी शुरु भऽ जाइत अछि। टोलक बूढ़-सुरके अनसोहात लागब स्वभाविके। जगेसराके किछो तँ कहऽ पड़तै- “हे रौ, नै होइ छौ तँ ओझहो-गुनीके देखाबहि। कोनो गिरानी एकोटा बाल-बच्चा भऽ जेतौ तँ बुझही जे सभ दुख पार। ई भूत-देवी आ तामस-पित सभटा एकरा देहसँ भागि जेतौ।”
“सन्तान लेल तँ कोखिया गोहारि करबे पड़तौक।”

कतेक दिनसँ जागेसर गोचर दिनतीमे लगल अछि। किन्तु भगत पिघलत तब ने। भगतके छुटी कहा रहै छै। आइ ऐ गाम तँ काल्हि दोसर गाम। नौते-नत।
आखिर पका भगत छिऐ रामखेलाबन। दू पीढ़ीसँ ओझहा-गुनिमक काज कऽ रहल छै।
पहिने ओकरा गहवरमे गछौटी करियौ। साफ-साफ कहियौ पूजामे कतेक खरच करबै। पाठीक बलि देबै। गछि लिअओ। तब भगत तैयार हएत।
कतेक खुशामदे आइ तैयार भेल अछि खेलाबन भगत।

~

३

गहवरक अँगनीमे जेना ललका इजोत उतरि गेल छै। अन्हारक

कोरामे लहुआएल लाल थ्थ्यलका खेला रहल हो, तश्श्ना सन लगैत अछ्छ।

िकैत आहुत, चौमुख जरैत दीप, अड़हुलक लाल फूल, लाल थ्थ्यनूर, ललका डाली। सबहक मुँह जेना ओही लालीसँ ढौरल हो। लाल टुह-टुह भेल भगतके आँख्ख्ब सपनामे डूब्ब-उथ्थ रहल हो। पश्श्ले कश्श देल गेल छलै। मरद सभ एककात आ औरथ्थ्याया सभ एककात। बात के सुनतै? ढीठ सभ मरदक झोझ्झमे ढुक्क कऽ बैसल छै। दोसरो थ्थ्यस तँ ि रे सभ अछ्छ। मौथ्थ्यायाह जका दोगमे ढुक्क कनफुसकी कऽ रहल छै।

पता नै चलै छै औरत आ मरदक। एक तँ इजोत तेजगर नै छै। दोसर साड़ीसँ आि मुँह झँपने छै। आँख्ख्बक भाग देखलासँ केना थ्थ्यन्हत लोक। दसगरदा जगहपर सभ चलै छै।

सभ की चलतै। उतरबथ्थ्याया कातसँ औरथ्थ्याया सभके नै बैठबाक चाही। उतरसँ देवताक आवाहन होय छै। थ्थ्ययान तँ छौ नै।

आश्श गेलौ सुँघहा िन।

सुंिय मड़रके सभ सुंघहाि न कहै छै। सुंघहाि न छूब्बते हािमे गश्श्ह जाए छै। टोकैते देरी सुंघाय मड़रके बकटेटी शुर ।

फेर थ्थ्ककयो सुंघहाघान बाथ्थ्म नै सकैत अछ्छ। देख थ्थ्यआऔ लाठीक हुड़ाठ। मुँह भाथ्थ्य देबै, थ्थ्ककयो बजत तँ। मुँहके चुप्प राख।

तेरहे बरखक उथ्थ्यतवक्ता छै तइसँ की। ओकरासँ गप्पमे के जीतत। उथ्थ्यत बात फट दऽ बजल- “गोहाश्श, गोसाय सब बन। सुंघाय बाबा कश्श देलक। थ्थ्ककयो मुँहसँ बाथ्थ्म नै सकैत छी। भगतो वाक केनाक देत। चलै चलू आब थ्थ्ककछु नै हएत। के बतीसी लाठीसँ झड़ाएत।”

भगतके नवथ्थ्यखुआ चेला फनका रपटैत बजल- “देहपर नै लता-

चौरि‍री बोलता। ऐ गामक माक्ष्मक सुंघाय क्ष्छयो की जे ओकर औडर चलतौ। अखने सुंघबाके कंठ पकक्ष्ड बाहर क्ष्वस ठोक्ष्कया देबो। बुक्ष्म ले, तोरो कोनो बाप नै बचेतौ।”

उक्ष्मतवक्ताके कपारपर तामस नाक्ष्च उठल। सुंघाय मड़र पाछूसँ डाड़मे लाठी लगौने ठाढ़ छै। बूढ़ देहक भार लाठीपर देने आँक्ष्ख मूक्ष्म देवता-क्ष्पतरके सुमक्ष्र रहल अक्ष्छ।

गहवरक सीमामे बकटेटी नै करबाक चाही। हम पक्ष्थयाहा। हमरा छेमा कऽ क्ष्वअ।

“एहेन गप्प कहत।” उक्ष्मतवक्ता फोक्ष्कया कऽ उठल आ सुंघाय मड़रके पाछूसँ लाठी खैच लेलक। लाठी चमकाबैत फनकापर हुड़कल।

सुंघाय मड़र ि‍य दऽ डाड़ भरे खसल। कुहरैत बाजल- “हौ बाप, माक्ष्र देलक। ऐ लुकड़बाके जन्मे भेल छै मरचायसँ। तब ने एकर बात आ बाक्ष्म मरचाय जका लगै छै। एकर बाप सभ साल लंगी मरचायके खेती करै छलै। ओहीसँ जोड़ा बरद कीनलकै। ओइसँ की। दार पी कऽ क्ष्मरजल चीज केहेन हेतै।”

उक्ष्मतवक्ताके हा‍सिँ लाठी क्ष्छना गेल छै। महुराइत बजल- “अपना बेटा क्ष्वस नै तकै छहक। टूटलो डाड़पर अनकर आक्ष्ड कोदाक्ष्लसँ नै छाटबहक तँ जलखै नै भेटतह। केहेन कुकरमी छहक, खेक्ष्म देबै सभटा बात।”

“नै गौ बाबू, कल जोड़ै क्ष्छयौ। हमरा उठा कऽ पहुँचा दे।”

“अच्छा चुप रहू। शान्त भ’ जाऊ। देक्ष्खयो ओने गोहाक्ष्र शुर भ’ रहल छै।”

पक्ष्ड्लुका डाली जागेसरक लगल छै। डाली दौड़ कऽ अपने आगू चक्ष्म गेलै। सभटा देवताक क्ष्करपा छै। देव क्ष्करपा क्ष्बनु डोले नै

पात।

आपसी फुसुर-फुसुर भ' रहल छै। ओकर पश्चा जागेसर गहवर घर श्चस टकटकी लगौने।

“एहेन जवानीसँ भरल देह आ तब बाल-बच्चा नै होइ छै।”

“जागेसरक बाछी एहेने बनल छै। ऐबेर गाभ टेकतै की नै?”

“खेलावन भगत ऐ काजमे माश्चर छै। आब देश्चयो तँ....।”

स्ीगण श्चससँ कने मन्द स्वर श्चाकलै छै।

“भैयाखौकीके लाज-ाक होइ छै की नै। अपने दहके अपने जे करै छै। श्चनश्चया....।”

“अइठाम अश्चते सभ देवी-देवा चश्च जाइ छै। आ नैहरा जाइते सभटा छूश्च जाइ छै।”

“सुनै श्चऐ जे नैहरासँ एकटा छौड़ा आठे श्चनपर भेट करए अबै छै। पछोड़ ने रहै छै।”

“ई सभ तँ होइते रहै छै। तोरो मन होइ छौ की।”

एक दोसरके मुका मारैत औरश्चाया सभ एकसंग हँसैत अश्च।

“चुप। सभ मुँह बन कऽ ले। भगतके भाव आश्च गेलै।”

“कारणीके एमहर लाबह।”

भगश्चायाक भगैत जोर-शोरसँ शुर भ' गेल छै।

“जय हौ देव। कनी नीकसँ देश्चयो। मा आ पेट दुनूमे दरद छै।”

खेलावन भगत देह-हाके ऐंचैत मिडीहीवालीक आगूमे बैसैत अश्च। मंतर पश्च मा हा दऽ रहल छै। मापिर सँ हा ओकरा छातीपर

थारबैत अछि। फेर पेटके हँसोथ' दै छै। पेटपर सँ हाथ ससरि पुन: माथपर। मिडिहीवाली चौक उठै छै। ओकर देह सिहरि उठै छै। भगत फेर माथपर हाथ रखैत काजके दोहरौलक।
“चटाक।” मिडिहीवालीक चमेटा भगतके मुँहपर लगल। संगहि कंठ पकड़ि लेल देलक।
आशा नै छलै से भेल। भगत ओंघरा गेल। तामसे थर-थर कापैत। लोगमे हड़कम्प भ' गेल। किछु ठाढ़ आ किछु बैसल अछि। स्त्रीगणक आँखि आशचर्यमे डुमल।
“गे माइ गे माइ। आब की हेतै।”
“आब बचब जेतै। ठनका थारतै।”
उपस्थितवक्ताके नै रहल गेल तँ बजल- “भगतके असल भूतसँ पाला पड़ि गेल छै। सभ गुण-मंतर अखन भीतर भ' गेल छै। टाग केना असमान दिस ठाढ़ केने छै। लगै छै जेना करौटही होइ।”
फड़फड़ा कऽ उठैत अछि- भगत। बेत लऽ कऽ मिडिहीवालीके पीठपर तड़-तड़ा दैत अछि।
“आइ हमसभ भूतके भगा देबै।”
मिडिहीवाली भागैत अछि।
“रे खुशामदिया सभ। रे कोढ़ी फूटतौ रे बेईमनमा। गे माइ गेऽऽऽ।”

जगेसरा आगूसँ घेर लैत अछि। एके बेरमे जगेसराके थारबैत मिडिहीवाली पड़ाइत अछि। भगत देहसँ गरदा झाड़ि रहल अछि। जगेसरा हाथ जोड़ि थर-थर काँपि रहल छै।
“आब की हेतै यौ भगतजी। कोनो उपाए लगाऊ। जे कही अहा।”
“हेतैक सभ उपाए लगतैक। भगतसँ भूत नै जीत सकै छै। कोनो बेरिया गोहारि हेतै। तूँ परसू आबि कऽ भेट कर। हमरे नाओं बचाऐ

रामखेलावन भगत।

पछुआरक अन्हारमे किछु करण दिन सन भेल। भगत छड़िया कऽ गहवरमे ढुकि गेल। हवाक झोक औएल। किछु दीप मुझा गेल। लोक सभ पीठपर डरके लादने एका-एकी ससरि रहल अछि।

~

४

ढेरवा नै नाचै छै असलमे जागेसरक मन नाचै छै। सुतरी कटा रहल छै- कतौ मोट कतौ पातर। मन थिर रहै तब ने। मनके थिर राखब बडड कठिन। ई तँ कियो साधि कऽ सकैत छै। सभ जँ साधि भऽ जेतै तँ देश दुनियाके कोन गति हेतइ। तँए पछिने मन उड़ै छै तब तन।

जागेसरक मन रिक ीकिड़ा जका उपला रहल अछि।

आइ तँ भुटायौ वैि जबाब दऽ देलकै- "मिडीहीवालीके सन्तान नै हेतौ। थाकिता कलम माथि देने छौ। एकर कोखि ऐ जनममे नै भरतौ।"

हौ बा आब कोन उपाय हेतै हो। पछिने तँ लोक खोखीबाला कहै छलै। आब मुँह दाबि कऽ कहै छै- "निरवंशा।"

दुआरिपर जगेसरा ढेरआके नचौना रहल अछि। सँगे ओकर माि

घूमि रहल अछि आ मामिमे घूमि रहल अछि- मिडिहीवाली। किन्तु पछिला फूइसक घर थिर अछि।
ठीके कहै छलै- उत्पातवक्ता- "हटा ऐ ठाठ गाएके। कर दोसर बिआह। ला टटका माल। नीक नसल देख-सुनि कऽ। पुरखिया लऽ आन। चाइरे-पान सालमे छौड़ा-छौड़ीसँ खोभारी भरि जेतौ।"

नसल तँ एकरो खराब नहिये छै। नमगर-छरहर काजा, भरल-पूरल सीना। जखनी सिंगार कऽ कए निकलै छै तँ संगी-साथीके कहए पड़ै छै- "जगेसरा भागशाली अछि। अपना तँ कमजोर, करिआएल, बेमरियाह अछि। किन्तु ओकरा मौगीके देखियौ। जँ आगूसँ निकलै छै तँ मन फुरफुरा उठै छै।"

भाग्यशाली कतऽ। भाग्य कतएसँ नीक हएत। सुन्दर तँ अछि लेकिन बाझ। जँ निपूतर रहब तँ पिण्डदान के करत? हमरा बाद सम्पत्तिके के भोगत? बुढ़ारीमे सहारा के बनत?
ओह ऐ औरतियाके भगबए पड़त। ठीके कहै छलै- उत्पातवक्ता। लेकिन भगेबै केना? छै तँ ई बड़ जब्बर।
ओइदिन खेलावन भगतसँ झाड़फूँक करबैले गेलिये। एके झापटमे भगतके दात खियाइर कऽ खसा देलकै। महतो बाबाके थानसँ भभूत लानि देलिऐ। छाउर बुझि कऽ मूतनारमे फेक देलकै। यएह भोसड़ीके बसबासे नै छै किछोपर। फल कतएसँ भेटतै?
आब एकरा डेगा-ठेठा कऽ भगबए पड़तै। लेकिन केना कऽ आँखि उनटा कऽ जँ हमरा दिस तकै छै तँ हमरा लघी लगि जाइत अछि। तैयो हम तँ मरद छी, देह तानए पड़त।
हम जँ मौगा बनल रहबै तँ उ बेहया बनि जेतै। संभार तँ हमरहि करए

पड़तै। कतेक दिनसँ एकर चाि-चलन देख रहल छी। नकोरबा बच्चायासँ कतेक सखीया कऽ गप्प करैत रहै छै। छनमाके अँगनामे ढुकै छै तँ िाकलैक मने नै होइ छै जेना। हम भूखल रिह जाइयो कोनो बात नै लेिकन ई भोरे िाकिा जाएत- टोल चकर लगेबाक लेल। टोलक चकर ि‍ड़बे लगबै छै ई तँ दोसरे चकरमे लगल रहै छै। कतेक बेर भऽ गेलै। भूखसँ पेट दुखा रहल अिछ। हमरा िदस धियान रहै तब ने। धियान तँ आओर ककरोपर रहै छै।

ि मिडीहीवाली अँगनासँ िाकिा कऽ टोल िदस जा रहल अिछ। जागेसराक ढेर आ र िक गेलै।

“ऐे- कतऽ जा रहल छी? छुच्छे कूद फान? ऐ अँगनासँ ओइ अँगना? जेना कोनो काजे नै छै। एके लाठीमे टाग तोिड़ देबौ। अपने घरमे बैठल रहबे।”

ि मिडीहीवालीके टाग र िक गेलै। उनिट कऽ बजल- “देहमे तागद तँ छै नै आ टाग तोड़ता? देखै नै छी केहेन बेमारी ढुकल छौ, तोरा देहमे। कोिढ़ फुटा कही कऽ।”

झगड़ा बढ़तै। जागेसरके बिढ़या चास भेट गेल छै। उ झगड़ाके बढ़ाबए चाहैत अिछ।

“मुँहसँ गािर िाकलतौ तँ ि ि न तोिड़ देबौ।”

“गािर नै देबौ तँ अिारवाद देबौ?”

“यएह बड़का आएल अिछ- अिारवाद देिाहाथ। िापूतरी, बािभन। गे भौसरी, एकटा मूसोके जन्मा कऽ देखही। तोरी माइके।”

“खबरदार, हमरा माइक नाओं नै ले। पूछलीही नै अपना माएसँ। कतऽ कतऽ मुँह मारलकौ तब ने तोरा सन बेटा पैदा केलकौ।

बेमक्ष्याहा.......।"
जागेसर ढेर आ फेकैत लग चक्ष गेल अक्ष्छ। करोसिँ रिरिा रहल अक्ष्छ।
"मुँह बन राखबे आक्ष्क देबौ चमेटा।"
मिडीहीवालीके आँक्ष्ख तामसे लक्ष्मया गेलै। उ आओर लग आक्ष्ब गेलै। देह अक्ष्कड़ कऽ बाजक्ष्म- "ले मार। असल बापक बेटा छी तँ माक्ष्ब कऽ देखही। बापसँ भेट करबा देबो।"
चटाक, चटाक। मुँहपर थिप्पर पड़ल।
"तु थिप्पर मारले-हमरा। आइ हम जे न से कऽ देबो। आओर बखतमे क्ष्वटही जका पड़ल रहैत छै आ मारै कालमे कतएसँ गरमी चक्ष्ढ़ जाइ छै।"
ओ जगेसरा क्ष्वस हुड़कैत अक्ष्छ। ओ डाड़क डोरा आ झापल अंगमे लटकए चहैत अक्ष्छ। लेक्ष्कन जगेसरा तँ लाठी लऽ कऽ तैयार भऽ गेल अक्ष्छ।
"क्ष्नकल हमरा घरसँ- क्ष्नकक्ष्नया। कोन-कोन कुकरम कऽ के तब हमरा घर अएले। पता नै। भागबे अइठामसँ आक्ष्क चलेबौ डंटा?"
"ले मार। आओर मार हमरा। अक्ष्सना भाक्ष्ग जेबो तोरा सात पुरखाके क्ष्घना देबो। पूरा समाजमे उकैट देबो-सबकुछो।"
उ काक्ष्म-कौक्ष्म कऽ फौक्ष्कया रहल अक्ष्छ। हाथि चमकाबैत जगेसराक लग सटल जा रहल अक्ष्छ।
"भगा देबही। छातीपर क्ष्छपाठी रोक्ष्प कऽ रहबो। बहुते बल भऽ गेलो, हाथिमे। थिप्पर मारबे।" कहैत जागेसरके ठेकिल देलक। आसाके क्ष्वपरीत जागेसर ढ़िफड़ा कऽ क्ष्वार पड़ल। आक्ष्ग नेस देलक-जगेसरकाके। तामसे कापैत ओ लाठी लेने उठल।
"तोरी मा की.........। आइ तोहर हडडी तोक्ष्ड़ देबो। परान लऽ

लेबो।"

फटाक-फटाक।

मिडीहीवालीक पीठ आर जाघपर लाठी बरैस रहल अछि।

"गे माइ गे माइ। मारि देलक रेऽऽऽ। दौड़ रेऽऽऽ। कोढ़ि़फुटा बेदरादा, रे लकवाबला। गे माइ, मरि गेलियौ गेऽऽऽ।"

दूरेसँ टोलक लोक धाबि‍आया रहल छै।

"रे जगेसरा- रहि जो। मरि जेतै बेचारी। गलत बात। गाए-भैस जका पीटै छी।"

"एना मारबे तँ कोनो दिन लंका काड भऽ जेतौ।"

"आखिर कोन झगड़ाके फेपटारा नै होइ छै।"

"ई औरति‍यायो बडड झगड़ालू अछि। छुलही कही के, आबो अइठामसँ जेबे की अड़ल छँए।"

लोक सभ बीच-बचाव करऽ रहल अछि। मिडीहीवाली दस पन्‌रह डेगपर ठाढ़ भऽ गेल अछि। आ ओइठामनसँ गरि‍या रहल अछि।

"हम छुलही? झगड़ाउ? केकरा घरमे सतबरती बैसल छै? हम सबटा जानै छी। सबहक बात सुनै छी। ऐ खुआ‍या, बेदरदाक कारने। रे अनजनुआँ जनमल, देहमे कोढ़ि़ फुटतौ रेऽऽ। हामि घुन लगतौ।"

जागेसर गरजैत अछि-

"ऐ बीचमे नै आबै कोइ। ई औरति‍याया सनैक गेल छै। दुसमन सभ एकरा सि‍खा-पढ़ा कऽ तुल-तैयार कऽ देने छै।"

कातमे ठाढ़ भेल लोक सभके बाजए पड़ैत अछि- "हमरा बुझि पड़ैत अछि मरदे सभ सनकल अछि। दू-चारि दिनपर एहिना धि‍टाइ पोगाम चलैत रहैत छै।"

"धि‍टाइ नै करब तँ पूजा कर । कपारपर चढ़ा कऽ राखू।"

“से कहा कहै छी हम। सभ क्छकुके एगो रास्ता होइ छै ने। आक्छ क्छकछु बुझे ने सुझे फरमा क्ष्ा या फासी।”
“ठीके कहै छै। सबहक औरक्षाया कोनो बाक्ष्मन छै आक्छ छुलाहीए छै, ऍँ?”

औरक्षायो सभ चुप नै रक्ष्ा सकैत अक्छ।
“हे यौ बउआ मरद भेल सोना। ओकर सभ गलती माफ। औरक्षायो भेलै टलहा। ओकर की क्षानती छै।”
“चुप रहु अहूँ तँ अपना पुतहूके खोरनीसँ खौचारैते रहै क्छऐ। की बजब।”
“केकरापर करब क्षागार-क्षया मोरा आन्हरे हे...।”
क्षिया-पुता कातमे डेराएल सन मुँह कएने ठाढ़ अक्छ।

मिडीहीवाली चौबक्ष्यापर ठाढ़ भऽ कऽ सात पुरखाके गक्षया रहल अक्छ। जगेसारा लाठी लऽ कऽ रेबाड़ैत अक्छ।
“ठाढ़ रह भोसरी। आइ चौबक्ष्येपर बेदशा करबौ।”
चोटक मोन पक्छते मिडीहीवाली भागैत अक्छ। पाछुसँ बाघ जका गरजैत जागेसर। लोक तमाशा देख रहल अक्छ।
कनेके दूर दौगलापर जागेसर हकमए लगैत अक्छ।
“जो अपना बापक पास। एमहर जँ घुक्ष कऽ एबे तँ पाण लऽ लेबौ।”
कानैत-खीजैत मिडीहीवाली जा रहल अक्छ- नैहर क्षस। नुआ-बस्तरक कोनो ठेकान नै। जेना सुइ-बुइ हेरा गेल हो।
ओ कानैत अक्छ। क्छन्तु भीतरसँ बोल फूक्ष् रहल अक्छ।
“हमरा तँ बापसँ मोलाकात करबा देलही रे क्षावंशा। तोरो छोड़बो

नै। अठगामा मैनजन-पंच जमा कऽ देबौ- तोरा दुआरिपर। आठो गामक लौकसँ ि-ि करबा देबौ।''

जागेसर ओहीठाम बैस कऽ खौंखिया रहल अछि।
''खो...... खो...... खो....... आक ि.....।''

पता नै ओ िक केकरापर पड़ल। समाजपर, गामपर आकि ओइ स्िानपर, िमडीहीवालीपर, आकि अपनेि आपपर। पता नै......।

~

५

पंचायत! हँ, हँ बुझलौ गामक पंचैती। जातिक सरदार, मैनजन-देमान। करत छान-बान्ह। मुँहपुरष आ सरपंचक शान। पंच भगवान। ि‍र, भगवान नहि बेमान। मुँह देखल पंचैती। जेकर लाठी तेकर जोर। अिरबलक आँखिमे भरल नोर। कमजोरे लेल सभटा कड़ी।
आब गामे-गाम बनि रहल छै-कचहरी। तैयो पंचैती होइते छै। हँ जातिक पंचैती। परजातिक पंचैती। जाति तँ जातिसँ साइंग होइत छै। दस लोकक िारणय तँ मानहि पड़तै। नै तँ समाजक नँगटाहा सभ नागटे नाचत। समाज, कानून, बन्िन, डण्ड जुरमाना। इनसाफक उपाए। सभके िासाफ िालबाक चाही। नै तँ कखनयो गाड़ीपर नाह आ कखनयो नाहपर गाड़ी। सएह यौ मड़र।
कालू मड़रक दुआरिपर पंचैती भऽ रहल छै। जातिक मैनजन। हँ हँ

बीचेमे बैसल छै। आँखि केना नचै छै- मुँहदुसी जका।

रिमडीहीयोसँ पंच सभ आएल छै। की बुझाइत छै, जगेसराके, छोड़ि देतै ओकरा। ओकरा सभकेँ मारैत-मारैत किचुना कऽ देने रहै, अपना घरवारीके। घरसँ भगा देलकै। आ पाछूसँ समादो पठा देलकै। जे तोहर बेटी बदचलन छौ। चोरनी छै। बाझ छै। राखह अपना बेटीके कपारपर।

आ रे तोरी कऽ, एहेन डकलीलामी।

रिमडीहीवालीक बाप तीन-चारि मास धरि टकटकी लगौने इन्तजार केलकै। कोनो कौओ-पंछी सुइ-बुइ लेबाक लेल नै पहुँचलै। अंतमे ओकर बाप जातिक मैनजनके खबैर देलकै।

पूरा टोलक लोक जमा भेल छै। निुखारिी मड़र, उत्तमतवक्ता, ढोढ़ाइ गुरुजी भुटाइ वैद, फतीगा, ककरयो साहेब, चंतनजी जेकरा सभ चोतबा कहै छै। आर बहुत गोटे कनेक पाछू दास कऽ बैसल छै। पाछूसँ बीख उगलि मुँह चोरा लेबामे असान होइ छै।

टाटक पाछा स्त्रीगण कान पानि अछि। ओ सभ आँखि नचबैत फुसुर-फुसुर कऽ रहल अछि।

कालू मड़रक नजरि ओतऽ तक पहुँच गेल।

"आब मौगी सभ पंचैती करत। एस.पी., डी.एस.पी. मंतरी-संतरी सभ बैनते छै। आब कोनो कम पावर छै, ओकरो पास।"

दुनू हाथ जोड़ैत आगू बजल- "तब ने ओकर राँची जोकरबा दुनू हाथ जोड़ि कऽ नाचमे कहैत रहै- तुम्ही हो माता, तुम्ही पिता हो।"

छौड़ा सभ खिखिया कऽ हँसैत अछि। "बुढ़वा बहुत दिन धरि लात तरमे राखि राज केलहक आब सभटा पाछू दऽ कऽ बोकरेतह।

निुखारिी मड़र रपटैत अछि- "चुप, गामक इज्जत झाँपि कऽ रखबाक चाही। दोसरो गामसँ पंच सभ आएल छै। की कहतौ।"

ई काल कतएसँ आबि गेलै। की हौ, कनीक लिफच्चका भऽ रहल छै। हे रौ जा रहल छै तँ जाए दही दोसर जातिक मैनजन छिएक रहतै।

हँ हँ, जाउ अहा। हमरा जातिक मामला छै। जय भगवान। ढोढ़ाइ गुरजी घूस लेने छै।

हँ-हँ, जगेसरासँ पाच बोरा भुस्सा। बिल्कुल फी। कतेक दिन फोकटमे चाह पीतै आ खेतै, से तँ अलगे। बजतै नै तँ घूस केना पचतै।

ढोढ़ाय गुरजी बीचमे जोरसँ गरजैत अछि- “जोर-जमीन जोरके, नै तँ किसी औरके। अपना औरतियाके पाजमे रखबाक लेल जगेसरा चारि-पाच लाठी खीचे देलकै तँ कोन जुलूम भऽ गेलै। के सभ ताजनके अधिकारी होइ छै से तँ सभ जनिते छिऐ।”

रिमडीहीसँ आएल कन्हैया मैनजनक कनहा आँखि जखैन चमकै छै तँ सबहक खिटी-पिटी गुम भऽ जाइ छै। ओ अपन छिटकिआएल मोछके ऐंठिया रहल अछि। ढोढ़ाय गुरजीपर जखैन ओकर लिलिआएल नजरि पड़ैत छै तँ तत्काल गुरजी चुप्पी साधि लैत अछि। पाच बोरी भुस्सा हवामे उड़ि जाइत छै। आ पेटमे बसात औनाए लगैत छै।

उखितवक्तासँ नै रहल गेलै तँ टोन कसि देलकै। “रि ई ढोढ़बा की बजत। एकरा बहूके तँ दोसर जातिक रिमीलाल पंजाब लऽ कऽ भागि गेल आ अइठाम लबर-लबर करै छै।”

“ई उखितवक्ता फेर टे-टे करए लगल चुप रहबे की नै।”

“हे, आइ जे पंचैतीमे खचरपनी करबे तँ मुँह किचुना कऽ देबो।”

“रौ तोरी कऽ। हमर बाप कहने रहै जे पंचैतीमे उचित बात ढेकैर

कऽ बथ्मिहे। आ तूँ मुँह िकुच देबही तँ बजबै केना। ऐ सँ नीक। हम अइठामसँ चश्लि जाए।"

बेगाय बाबा आइ गाजा नै पीने छै। नै तँ लौश्कसपीकर जका बथ्मितै। ऊ तँ िरमडीहीवालीके तरफसँ छै। जागेसर श्वसँ ढेकैरतै तब ने फीमे गाजा भेटतै।

िर नै बुझबहक। ओकर नजश्रि गड़ल छै। जगेसराक डीहबला जमीनपर। सौचै छै कहुना झगड़ा बढ़तै तँ कम दरपर ई दाव सुतश्रि जाएत।

हँ आश्रि गेलौ श्श्रस्सा कहैबला श्श्रस्सकर। ई तँ श्श्रस्सेपर पंचैती कऽ देतौ।

ऊ जमाना गेलै। आब तँ जेकरा पासमे साम-दाम भय-भेद छै आकरे बुते पंचैती हेतै। पंचैती कारणे कते पंच श्रलश्र जाइत छै।

जे दसगोटेमे नै बजल अश्छ। ठाढ़ भऽ कऽ बजैत काल ओकरा िरिरी छुश्रि दैत छै।

"हँ तँ, आब घोकले गप्पके कतेक घोकैत रही। सभ बात जानले अश्छ। कर तसश्कया।"

सुश्नयौ झटकलाल मड़रके गप्प। अपन बेटी केकरा संगे भाश्ग गेलै। तकर पतो नै लगलै। अच्छा छोड़ू। गप्प सुनू।

"याश्द अश्छ ने मड़र। पुबश्रया टोलपर चुनचुन पश्चलुका स्िी पहुँच गेलै- िाना। तुरतेमे पुश्लस पहुँच गेलै- दरबज्जापर। वर आ वरक बापके ततेक पीठपर डण्टा बरसौलकै जे छर-छर नुआ-बस्ि... की कहब आब तँ वैह पश्चलुकी स्िी महरानी बश्न कऽ घरमे बैसल छै।"

आब तँ औरतके जमाना आश्ब गेलै। तैयो आकरो श्कछु दाश्ब-चाश्प कऽ तँ राखश्र पड़तै। नै तँ ऊ सनश्क कऽ श्कछौ बश्न सकै छै।

एकर मतलब गाए-भैस जका औकरा डेगा देबै।

नै हिसाब-किताबसँ। सापो मरि जाए आ लाठियो नै टूटै। अइठाम तँ मारैत-मारैत लाठी टूटि गेलै। अपना घरवालीके नै राखै चाहै छै। जागेसरसँ पूछल जाए। किछु विशेष गप्प छै। आखिर, किएक नै राखए चाहै छै, अपना स्त्रीके। कारण तँ दरपन जका साफे छै। चारि सालसँ बेसी भऽ गेलै आ एकोटा बच्चा नै जनमा सकलै। यएह गप्प छै ने हौ जागेसर?

हँ-हँ बात तँ यएह छै, असलमे। दोसर बिआह करबाक लेल पंचायतसँ औडर भेट जाए। दोसर अपाय तँ छै नै। आखिर खनदान आ सम्पत्तिक रखबार तँ चाही।

गुँर कतौ आ भूर कतौ। ऐ बातक कारणे झगड़ा होइत छलै। आब बुझलौ तरका गप्प। ऐमे मिडीहीवालीक कोन कसूर?

सभ कसूर ओकरे। जखन खेत खराब छै तँ.....। फेर चुप। एक आदमी तँ दस-दसटा बिआह करै छै। यएह, डारमे ने डोरा बहू करत जोड़ा।

सार सभके खाइले तँ जुमै नै छै। आ राजा जका हजार गो रानी रखत। तूँ गारि देबही। मार सारके। हँ बान्हि नै सकै छे। आन गामसँ आबि कऽ रँगदारी। पंच छी की डकैत। हड़कंप मचि गेलै। सभ गोटे उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलै। किछु लोग सभके शान्त कऽ रहल अछि। भाय एनामे काज नै चलतौ। पाचटा पंच एकान्तमे विचार कर। ने तँ महाभारत भऽ जेतौ। देखियौ पंच भगवान, ऐ छौड़ाक किरदानी। सभटा हमर लताम तोड़ि लेलक।

जिअ पंचक बेटा चोर। आब कर फैसला।

अच्छा चुप रहू। एकर बिआरलय दोसर दिन हएत। यएह करै छै केना। जेना छोटका जातिक पंचैती भऽ रहल हुअए। अइसँ नीक

तँ ओकरे सभ। इह, हमरा सभसँ बहुत नीचो जाति तँ अछि!
तइसँ की। आखिर छी तँ शूरे। चुपू हमर छूबल सभ खाइत अछि। हँ हँ छुच्छे ठेसी। एकान्तमे विचारि कऽ पंच सभ आबि गेल। सुनल जाए। की कहै छै।
“सुनू, जागेसरसँ गलती भेलै। ओकरा औरतियाके एतेक नै खटबाक चाही। बाल-बच्चा नै होइ छै तँ ओझा-गुणीसँ देखाबौ। डागदर वैदसँ इलाज कराबौ। तैयो नै हेतैक तँ दोसर बिआह कऽ सकैत अछि। किन्तु रिमडीहीवालीके राखए पड़तै। निरणय सभके मंजूर अछि?”
हँ-हँ, दसक निरणय, भगवानक निरणय। मंजूर अछि। सभ माथ हिलाऔ। ढोढ़ाय गुरजी सोचै छै भुस्सा बिलत की नै। खेलावन भगत मोछ िपजा रहल अछि। गाममे भगत तँ हमहीटा छी। रिमडीहीवालीक बाप कनहा मैनजनके कहने छै। “जँ अहा ऐ सम्बन्धके नै टूटए देबै तँ जोड़ा भिर िती देब।”
ओकर बामा आँखि फड़कि रहल छै।
उपिस्थतवक्ता दौड़ल आएल आ बजल- “हे यौ रिमडीहके कन्हैया मैनजन! अहाके चौबिटयापर पुलिस खोजि रहल अछि। कोनो मोकदमामे नाओं अछि की?”
“आएँ।”
मैनजन िती सम्हारैत पड़ेलाह। एकाएकी सभ उठऽ लगल। डरक पंजा जेना बढ़ऽ लगल। सबहक अन्तरक दोख जेना ठाढ़ भऽ गेल हुअए। स्वर जेना हवामे अलोपित भऽ गेल हो किन्तु पएरक गितमे तीवरता आबि गेल छलै। िनाह भऽ गेल असमान दिस तकबाक केकरा फुरसति छै।

~

६

स्वाकि कारणे दुनू परानीमे झगड़ा भेनाय स्वभाविके अछि। झगड़ाक बाद देह आ मन अलग हेबे करतै। वएह सुआरि फेर दुनूके मिलन करबौतै। से बात साचे किन्तु झूठे। जे हुए किन्तु झगड़ाक बाद मिलन एक तरहक नव संचार करैत छै, मोनमे। जेना लगैत रहै छै जे सभकिछो अभिनव भऽ गेल हुअए। दमित लीलसा सभ फन-फनाक ठाढ़ भऽ गेल हो। मनक फुलवाड़ीमे नव नव फूलक आगमन। भनभनाइत भमर। आबि जाइ छै- अभिनव पीत!

मिडीहीवाली आपस आबि गेल छै। जागेसर आब डरे किछो नै बजै छै। एक सए झंझटसँ एकेटा झंझट ठीक। ठीके कहै छलै उभितवक्ता- 'मौगीसँ जे अराधि करबे तँ सभ नेबाबी भीतरी घोसाबि देतौ आ बोलती बन भऽ जेतौ।
मिडीहीवालीपर भनभनिया भूत सवार भऽ गेल छै। जखैन-तखैन भनभनाइते रहै छै। कोन ठेकान छै। लोग कने हटिए कऽ ओकरासँ गप्प करैत अछि।

मिडीहीवालीक मोनक बात के बूझत। जखैन ओ असगर होइत अछि तखैने ओकरा अगल-बगलमे सखी, सेहेली, भर-भौजाइ, अड़ोसी-पड़ोसी सभ ठाढ़ भऽ जाइत अछि। जहिना नैहरामे ठाढ़ होइत छलै, तहिना। ओकरा सभके कियो नै देखै छलै। देखतै किएक। मोनक आँखिसँ देखै छलै मा मिडीहीवाली, आ गप्पो करै छलै।
"गे बिमरमला, सन्तान कोन भारी चीज छै। चाहनेसँ कोन चीज नै

होइ छै। कने श्वमाग लड़ा सभ कुछो ठीक भऽ जेतौ। देखै छी श्वश्वयाके। ओकरो सासुरमे एश्वना झगड़ा होइत छलै। बेटा जनमैते रानी बश्वा गेलै।”

“है शुरमे तँ बहुतो हल्ला-फसाद भेलै। बदचलन छै। बेहया छै। श्वकन्तु सभ श्वकछो रसे-रसे दश्व गेलै। के केकरा याइद रखै छै, कि ी। फुरसैतमे दोसरोक गप्प मोन पड़ैत छै आ काजक बोझ जँ मा िपर रहै तँ अपनो श्वषयमे श्वसश्व जाइत अश्छ।”

“ई तँ एहेन दुश्वाया अश्छ। जे जखैन ढोल श्वटैक हएत तखैन केकरो सुगबुगाइतो नै देखबै। आ जँ चुप्पी साश्वि लेबाक बखत हएत तँ बाघ जका गजनि करए लगत।”

“के कि ी बजै छै से बात छोड़ू। अपना श्वषयमे सोचू। अहाके बच्चा चाही। ओकरा जन्म श्वअ पड़त। डागदर-वैद गहवर-भगत चाहे जतएसँ हुअए।”

ि मडिीहीवाली हँसैत अश्छ भनभनाइत....। फेर तमसा जाइत अश्छ। डरे खोश्व कऽ नै बजैत अश्छ श्वकन्तु पश्वाके देखते ओर मान श्वारनासँ डुबश्वक जाइत अश्छ। कोनो काज मोन लगा कऽ नै करैत अश्छ। जेना उड़ी-श्वड़ी लगले रहैत अश्छ।
आब जागेसरो मनके मारने रहैत अश्छ- डरे....। फेर ने पर-पंचैती बैस जाए। आ समाज ि-ि करए लगे।
समए पाश्व मुँह दाश्व कऽ कखनहुँ काल कश्व दैत अश्छ।

“ओख्र श्चन खेलावन भगतसँ झगश्च गेश्चये। कहू तँ ओकरासँ फेर देखा दी। नै तँ महतो बाबा लग डाली लगबा दी। श्चसवास नै होइत अश्च तँ डागदर-वैि जइठाम चलब ततश्च चलू।”

श्चकन्तु िमडीहीवालीके श्चल-मोन तँ भरबे नै करै छै, ऐ गप्पसँ जेना। हरदम देहमे आश्च लगले रहै छै। सुतैत-बैसैत बेचैन। सोचैत छै- जँ पश्च चाहैत अश्च तँ आइ भगतसँ भेट करबै। कौआ, मैना, बगरा सभ एकेठाम खेलाइत छलै। श्चलौड़क छाह देखते सभटा एकेबेर फड़फड़ा कऽ उश्च गेलै, औसमान श्चस....।
खुला आकाशमे उड़ैत एक खुंडी मेघ। िमडीहीवालीक छाती िकिका उठल। नै जाश्च श्चकएक....।

~

७

सुनमसान बािमे असगरे पीपरक गाछ। कोनो बटोहीके छाह देबाक लेल ठाढ़ छै। कतेको श्चनसँ छै। श्चकन्तु आइ उ गाछ नै छै जे पश्चने रहए। ओइसँ की? गामक सीमानक श्चरलय तँ गाछे करतै। एकरे िािहैरमे बैस कऽ पेत बोश्चयेतै आ डेरबुक लोक एक कोला हश्च कऽ चकोना हैत पड़ैतै। बुश्चियार लोक सात बेर गोर लाश्च छाहमे श्चरेतै। कौआ जँ छेर दइ तँ तुरते उश्च कऽ चश्च देतै। असगुन भेलौ भाग....। असगरमे फुनगी श्चस तकबाक साहस केनाइ बुड़बक सबहक काज श्चऐ।

दूबज्जी गाड़ीक सीटी ऐ गाछ लग ठौकले चश्म अबै छै। अजय गाछक छाहमे ठाढ़ भेल। तीन बश्वसक बाद गाछके देख रहल छै। ऐ बीचमे कहुना कॉलेजक पढ़ाइ पूरा केलक। बी.ए. पास केनाइ कोनो मामूली गप्प श्छऐ! छाहक बात माश्व ओ र खगर जगहपर श्वानश्वानाइत बैस गेल।

सबचीज ओश्वना छै। तैयो बदश्म गेलै। बहुत श्दन श्वतला बाद देखलहो चीज अनश्वन्हार बुझाइ छै।

झटकलाल मड़रके लोक सभ झटकू मड़र कहै छै। कारण-कहैमे सुश्वा आ झटकू मड़र कोनो तमसाह बेकतीयो नै छै, जे कोनो डर हेतै।
झटकलाल मड़र मनमे बड़का-बड़का लीलसा पोसने छल। चाहे जे करए पड़ए। बेटाके पढ़ेबै। अजय बेसी पढ़त तँ बड़का हाश्कम बनत। बापोके नाओं जाश्व-जवारमे चमकैत रहत।

खरचा तँ श्वऐ पड़तै। आश्वर बड़का हाश्कम। जते तेल देबै ततबे ने गाड़ी दौड़तै। नै छै र पैया। की तकै छी? शीशोक गाछ बेच। नै भेलौ तँ बास बेच। बेसी पैसा लगतै। कोनो मूतनार-हगनार खेत बेच ले। की यौ माश्वक?

माश्वक खेतक जड़सीमनबला र पैया दैत श्वटकारी मारने रहए- “बाप बनौरा पुत चौतार, तेकर बेटा नेड़हा फौदार। देश्वहे बादमे बापके सरवेन्ट ने कहौ।”

“किछो करतह किन्तु पढ़ावह। पढ़लासँ बुइिगर मनुक्ख तँ बनबे करतह।”

अजय सुनैत छल- कात-करोटसँ। किछ गप्प संगी सािीयोसँ बुझ्ि लैत छल। बीख-अमरीत िबैत चलैत िजनगी!

सभ आस तँ पूरे नै होइ छै। किछ बचलो रहै छै तँए ने िजनगीक दौड़ा-दौड़ी होइत रहै छै एक दोसरके पछोड़ िने दौड़ैत रहै छै। फेर नवका आश ठाढ़ भऽ जाइ छै।

कते कुद-फान केलक-अजय। किन्तु मोन मोतािबक नौकरी नै भेट सकलै। ओने झटकलालक अिभलाषा!
सोचै छै अजय- बाबूजीके कतऽसँ पता चलतै जे अइठाम कोन-कोन खेल चलै छै। भष्टाचार आ ितकड़म केहेन नाच नचै छै। केना उनटा छुरीसँ हलाल होइ छै- लोक। हमरा जाितमे तँ कोनो बड़का नेतो नै छै। एक आि जँ छै तँ ओहो झोरउगहा। फेर तरघुसका र पैया कतएसँ एतै? ने पैरबी आ ने पैसा तँ सड़कपर टहल लगाउ। नौकरी-चाकरी नै भेल तँ पढ़लौ किीले?

जेना पीपरक ििमे सँ कोइ पूछलक- “कतए जाइ छहक- अजय? गाम? गाममे के पूछतह तोरा? कोन काज करबहक तूँ? गमैया कोन काज हेतह तोरा बुते? हर-कोदािर चला सकै छहक तूँ? रौद-बसातमे रोपनी-कटनी कऽ सकै छहक? गामक िदानक बीच रिह सकबहक? ऐठाम केकरोसँ कोइ कम नै बुझै छै। िलखनाइ-पढ़नाइ भले नै जनैत

छै किन्तु सभ छै- जानवान विदान। सबहक अपन-अपन विचार आ थियोरी छै। लाठीक सहारासँ चलैबला साढ़ जका ढेकरैत अछि। जेकरा घरमे एक साइकल खरचा नै छै ओकरो गप्प करोड़पति जका चलै छै।”

अटहासक स्वर- “हा-हा-हा-हा, गाममे तूँ नै रहि सकबहक। मास्टर अजय कुमार, तोरा सभ अजैया कहतह। बी.ए.क डिगरी हवामे उड़ि जेतह-फर-फर। ऐठाम शहरी जान तँ दूरक गप्प छै, तोहर कोनो बात कोइ नै सुनतह। ही-ही-ही।”

अजय गरजैत बजल- “जर र सुनतै। तूँ चुप रह। हम समाजमे पसरल कुरीतके हटेबाक कोशिश करबै। ऐठामक जड़ता आ जिदके तोड़ए पड़तै। देशक अंग-अंगके साफ आ स्वस्थ करए पड़तै। गाम-गाममे सुधार भेलासँ देशक सुधार हेतै। समाज बदलतै। नव समाज बनबए पड़तै। किछ लोकके बीड़ा-पान उठबए पड़तै।”

अजय हाथ चमकबैत जोर-जोरसँ बजए लगल।

शीला बड़ीकाल पहिनेसँ ओइठाम एकटा झोइझमे नुकाएल अछि। ओ अजयके हाथ-देह फड़कौने आ अभिनया कऽ असगरेमे बजनाइ देख रहल अछि। उ डेराएल सन सुरमे अजयके टोकबाक पयास केलक। किन्तु अजय नै सुनलकै। ओकरा पका विशास भऽ गेलै जे गाछ परक पेत अजयके गरसि लेलकै। वएह एकरा देहपर चढ़ि कऽ बजि रहल छै। ऐठाम तँ कोइ छेबो नै करए। केकरा कहतै। किछो जल्दी करए पड़तै। आस-पाससँ तँ भूतो-पेतो डेरा जाइ छै।

मनमे विचार करैत अगल-बगल देखलक। लगीचेमे एकटा खता छलै। खताक कोरपर एकटा फूटल बालटी सेहो राखल छलै। शीलाके तुरन्त फुरेलै।

ओ बालटीमे पानि भरलक आ अजयके माथपर उझैल देलकै। अजय चकोना हएत शीला दिस दौड़ल।

"के छी? एना किएक केलौ। ठाढ़ रहूँ।"

शीला उनटि कऽ भागलि। जेकरा देहपर भूत चढ़ल छै। से की करत, कोन ठेकान।

अजय झपैट कऽ पाछूसँ शीलाके पकड़लक। तैयो शीला छुटबाक पयास कऽ रहल छै। जमीन भीजल छलै पकड़-धिकड़मे दुनू खसल। तरमे शीला ऊपरसँ अजय चढ़ल।

मुँह देखते अजय चौकैत बजल- "शीला, अहा छी। एना किएक केलौ।"

"अहा असगरेमे अड़-बड़ बजै छलौ। हमरा तँ बुझाएल जे अहापर पेत चढ़ि गेल अछि। आब बुझाइत अछि अहापर सँ उतरि कऽ हमरापर चढ़ि गेल अछि।"

"तेकर मतलब हम पेत छी?"

"अहा भूत-पेत नै चोर छी। तब ने हमरा मनक चोरि केलौ आ निपता भऽ गेल छलौ। आबो देहपर सँ हटू ने।"

"नै हटब।"

"जल्दी हटू। नै तँ धकेल देब। देखै छिऐ कोइ आबि रहल छै।"

दुनूक मन कतेक बरिस पाछू चलि गेल छलै से पता नै। जेना

पक्षीला स्वर्गक सरोवर सोझा आबि गेल छलै। आ ओइमे दुनू संगे-संग जल-खेल करए लगल छलै। गाछ परक चिड़ै-चुनमुनी ओइ खेलके देखैत चुन-चुन करैत ओकरा सभक आनन्दमे अपन उपस्थिति दरज कऽ रहल छलै।
थरह आ पतीकाक कि चलैत रहल। कतेक देरसँ पता नै। वर्तमान उपस्थिति भेल तँ अजय पूछलक- “अहा एमहर कतए आएल छलौ?”
शीलाके हँसी लाबि गेल किन्तु ओकरा आँखिमे नोर भरल छलै। “हमर काका-काकी जखनया झगड़ा करैत छलै तखनया-तखनया अइठाम सुनहटमे आबि जाइत छलौ आ अहाक बाट जोहैत रहैत छलौ। कतेक माससँ अहाक इन्तजारी करैत समए काटै छलौ। जखन कोनो चिरइयो टा समाद नै दैत छलै तँ कानैत-कानैत आपस घर घुरि जाइत छलौ। आइ सगुनाया चिड़ैके दरशन भौरे भेल छलै। भेट भऽ गेल।”
“हम तँ सोचने रही जे अहाक बियाहो भऽ गेल हेतै। कोरमे बच्चा खेलाइत हेतै। किन्तु आब बुझाइत अछि जे हमहूँ भाग्यशाली छी। शाइत दुनू गोटे एक दोसरक लेल बनल छी।”
“रि, बियाहक बात की करैत छी। हमर पितयौत बहिन लीलीयाक बियाह होइबला छै। की हेतै से नै जानि। जातिक सभटा लोक अरचन रोपै छै।”
“अरचन किएक? ऐठाम लोक तँ बियाहके यज बुझै छै तँए एक-दोसरक सहयोग करै छै।”
“हँ से तँ ठीके। किन्तु हमर परिवार तँ ढाठल छै। बागल छै। हमरा परिवारके जातिसँ अलग कऽ देने छै।”

अजय चौकैत पूछलक- “जातिसँ अलग किएक कऽ देने छै?”

मुड़ी झुकौने शीला मन्द स्वरे बजली- “बाबूजी के मरलापर काका सराि-गैतक भोज नै केलकै। कतऽसँ टका लाबतै। ओइ साल फसल नीक नै उपजल छलै। सभ मुँह पुरषके कहलकै- जे हमरा घरमे कोनो उपाए नै छै। रोटीयो नै जुमै छै तँ भोज कतएसँ करब। किन्तु भोजक नाओंपर सभ जाति एक भऽ गेलै। ओ सभ कहलकै- अकलू मड़र दोसराक भोजमे बड़ फानैत छलै। जे भोज नै करए से दाम बड़ सुरकाए। ओकरा सराकि भोज लगबे करतै। जँ पूरा जातिके भोज नै देतै तँ जातिसँ अलग। आगि-पानि सभ बन।”

“भोजक एतेक महत्व छै अपना समाजमे।”

“की कहब घरमाबाबूपर घर ढुका पंचैती हैत रहए। चट दऽ रिमाबाबू भोज गछि लेलकै आ कहलकै- “उ तँ झूठ-मूठ हमरापर आरोप लगबै छै।”

भोजक नाओंपर सभ कुकरम माफ भऽ गेलै। अजय अबाक्! शीलाक मुँह दिस ताकि रहल अछि। मोनमे बिहाड़ि सन उठल छै। जेना ओकरा सौसे देहमे जातिक जाल लटपटा रहल छै।

“कोइ आबि रहल छै। अहा संगे देख लेत तँ की हेतै पता नै।” कहैत शीला ड़िफड़ा कऽ उठल आ टोल दिस चलि देलक।

वएह बाट छिऐ किन्तु लगै छै ऊ नै छिऐ। अजय अपना घर दिस बढ़ि रहल अछि। ओ स्वप्नमे छै कि यािमे पता नै। किन्तु गाम दोसर रँगक लगै छै। ओ लवका रँग ओकरा आँखिमे छै कि.....।

~

८

‘ठक-ठक-ठक’

गाछ कटल रहल छै। झमटगर आमक गाछ। कटबा रहल छै- झटकलाल मड़र। कुरहैड़क चोटसँ डारि-पात िर-िर काँपि रहल अछि। चिड़ई-चुनमुनी फड़फड़ा कऽ उड़ि रहल छै। जार-जार कानैत जेना कहि रहल छै-गाछ।

“हौ, हमरा नै काटह। हमर कोनो दोख नै। हम तँ तोहर सहायक छीयह। मीठ-मीठ फल, पवित्र हवा, शीतल छाह दैतै रहए छी। बरखा बूनीमे हमर सहयोग देखते छी। तैयो हमर जान लऽ रहल छी। आह... हमरा बहैत खूनके किओ नै देख रहल अछि- हौ......।”

जल्लाद जका दू गोटे चला रहल अछि-कुरहैड़। गाजाक निसासँ दुनू आँखि लाल। घामसँ नहाएल। चाहै छै- जलदीसँ जल्दी गाछके धरा दी। मौतक निन सुता दी। किछु दूर हटि कऽ झटकलाल मड़र ठाढ़ अछि। जल्दी गाछ कटबाक आगह कऽ रहल छै। जेना गाछ नै कोनो भयंगर बोझ ओकरहि कपारपर लािल छै।

झटकलाल मड़रक छोटका बेटा अजय जेना गाछक करण िन्दन सुनि लेलक। ओकरा पाएरमे तेजी आबि गेलै। “बाबूजी! आमक गाछ किएक कटबा रहल छिऐ?”

झटकलाल मड़र घुरि कऽ देखलक आ कने गम्भीर होइत बजल- “ई अपन गाछ नै छी अजय। ऐपर जीबू बाबूक अधिकार छन्हि।”

“जीबू बाबूके?”

“हँ, हुनके दक्षिणामे देल गेल छै। बरसोपूर्वतौहर दादाजी के शाद-कर्ममे आत्माक शान्ति आ मुक्तिक लेल। दान-दक्षिणामे देलाक बादसँ हम माफ रखबाक करै छलिऐ।”

अजयक व्यंग्यसँ भरल स्वर आकललै- “आ आम पकलापर अहा घर पहुँचा दैत छलिऐ- वाह..।”

“हँ हौ। ब्राह्मण देवता छथि। हमरा ईमानदारीपर गाछ छोड़ने अछि। हुनके सबहक हाथमे तँ मुक्ति छै। ओ जँ हमरापर विश्वास करै छथि तँ हमरो कर्तव्य आमाहए पड़तै ककने...।”

“अहा बताह भऽ गेल छी बाबूजी। हम गाछ नै काटय देब।”

“फेर, अहा पढ़ि-लिख कऽ की बजै छी। आगिसँ खेल करए चाहै छी। सराप दऽ देत तँ अगिला जनम तक पछताइ जाएत। जिनगीके सफल करबाक लेल बहुत बात सहए पड़ै छै।”

“गाछ केकरो। रखबाक कोइ आर करए। डरे फल दोसरठाम पहुँच जाए। अहा डेराएल छी। आन्हर छी।”

झटकलाल मड़र तमसा गेल।
“दू अछर अँगेजी पढ़ि लेलहक तँ हमरा आन्हर बुझै छहक। पाहिके देल दान छलिऐ। तेकरा हम बैमानी कऽ ली। अधर्मी कही कऽ।”

नै सुनने छहक- ‘जो जस करब सो तस फल चाखा।’

“हँ, हँ बुझलौ। गाछक सेवा अहा करै छी। फलक रखबाब अहा करै छी। ओ फल खाइत अछ- जीबू झा। ई छऐ कमकि फल।”

“हमरा फलक धान्ता नै अछ। असलमे गाछ हमर नै छी। हुनका लकड़ीक जररत छन्ह। अपन गाछ कटबा कऽ लऽ जा रहल छथि। दान-दक्षणामे देल गेल छन्ह तेकरा हम केना रोक देबआ। एहन जुलुम हमरा बुते नै हएत।”

“बाबूजी, जुलुम तँ अहासँ भऽ रहल अछ। जीअत गाछके काटनाइ पाप करम छऐ। अपराि छी। पयावरण दूषत भऽ रहल छै। गाछ-बबछक अभावसँ पदूषण फैल रहल छै। अहा गन्दगी फैलाबैमे मदश कऽ रहल छऐ।”

“हम गन्दगी फैला रहल छऐ की? अिरमी जका बात तूँ करै छहक। पाप-पुण्यक धयान नै छह तोरा। तोरे सन लोकक संख्या जँ िरतीपर बढ़ जेतै तँ ई िरती िरिर कापए लगतै।”

अजय अपन केश नोचैत ि नि ि ना कऽ बजल- “भैसक आगा बीन बजेलासँ की फैदा। कन्तु गाछ तँ नै काटए देबआ।”
फाआ कऽ आगू गेल आ लपक कऽ कुरहैड़ पकड़ैत बजल- “रक जा। गाछ नै काट सकै छह।”
कनेक दूरपर िमानन्द बाबू आ ढोढ़ाइ गुरजी दू गोटेसँ गप्प कऽ

रहल अछि। झटकलाल मड़र जोरसँ शोर पाड़ैत अछि- “यौ िमानन्द बाबू सभ गोटे एम्हर आउ। देखियौ हमर बेटा पागल जका करैए। गाछ नै काटए दइए। कहू जे जीबूबाबूके की जबाब देबनि। कोनो तरहे एकरा ऐठामसँ हटाउ।”

िमानन्द लग आबैत बजल- “जीबूबाबू तँ हमरे दुआरिपर छथि। हमरे टाएर गाड़ीसँ हुनकर लकड़ी जेतै। बहलमानक खोजमे आएल छलौं। घोचाय तँ गाड़ी चलबैमे मास्टर छै। ओकरे ताकि रहल छी।”
फेर फुसफुसाइत स्वरमे आगू बजल- “अहा तँ जानिते छिऐ मड़र। टाएरगाड़ी तँ घोचायके नाओंसँ उठल छलै। ऑफिसमे ओकरे नाओं दरज छै। ओइ दिन- हम तँ चलाकीसँ आनि लेलौं। संदेह होइत अछि आब। कही बुझि जाएत तँ गाड़ी घेर लेत।”
झटकलाल मुड़ी झुलबैत कहलकै- “िर, ओकरा केना मालूम पड़तै। मुरख-चपाट छै। एम्हर जीबूबाबू अपना सबहक संग छथि। ककरो नै हेतै। लेकिन पहिले हमरा ऐ झंझटसँ निकालू। अजयके ऐठामसँ ठेल-ठालि कऽ हटाउ।”

ढोढ़ाय गुरजीके संगे आओर दू गोटे आबि गेल। झटकलाल मड़रक इशारा पाबि सभ गोटे एकेबेर अजयके पकड़ि लेलक। घिचैत-ठेलियबैत ओइठामसँ दूर लऽ जेबाक पयास करए लगल। “अइठामसँ चलह। तूँ पढ़ूआ बाबू छहक। तोरा समाजक सभ गप्प नै बूझल छह। जीबूबाबू साािरण लोक नै छथि। पैघ पैरवीबला बेकती छथि। हमरा सभके कतेक बेर नीक-अिलामे बचौने छथि।”

अजय ओइठामसँ घुस कऽ नै चाहैत छै। थरोि कऽ रहल छै। ओकरा सबहक बन्िनिमे छटपटा रहल अछि। किन्तु बन्िनि ढील पड़ै तब ने।
“कहै छी हम। हमरा छोड़ि दिअ। नै तँ बडड खराब बात भऽ जाएत। पाछू हमरा दोख नै देब।”

झटकलाल मड़र ठेलैत कहलक- “चहल अजय चलह। काज नै रोकहक। सुनह- िरम करैत जँ हुए हािन, तैयो नै छोड़ी िरमक बान।”

अजय जालमे फँसल चिड़ै जका फरफरा रहल अछि। जाल तोड़बाक बारम्बार पयास कऽ रहल अछि। असोिथकत भेलापर देह थिर भऽ गेल। मुदा बुइि तेजीसँ दौड़ए लगल। घर-दुआरि-गाम-शहर-राज्य-देश आओर आगू दिस.....।

~

९

िमिडीहीवाली कतेक दिनसँ कोिशमे लगल अछि किन्तु मौका हाि नै लगै छै। ओकर विचार छै जे असगरमे सभटा बात खेलावन भगतके साफ-साफ सुनाबी। परन्तु झार-फूँक करबैबलाके कोनो अभाव छै। आ गप्प हाकैबला तँ ओकरे लग बैसत। कखनो सुनहट नै। ऐसँ पहिने महतो बाबाक स्ािनमे डाली लगौने रहए। घोड़ा

साफ-साफ कहि देलकै- “हम की करबौ। कोखि मारल छौ।” फेर दवाइ करबैक विचार भेल। नीक डाक्टर गाममे रहै नै छै। शहरक बड़का भारी डाक्टर लग जाएत तँ ओतेक रपैया कतएसँ लाबत? संगे के जाएत? रहत कतए अनभुआर जगहपर?

तैयो मिडीहीवाली निराश नै भेल छै। किछु दिनसँ खेलावन भगतपर ओकर विशास जेना बढ़ए लगलै। लचारीमे कतेक बेर विचारी करए पड़ै छै। हौ बाबू विशासे गुणे फल।
आखिर दस-दस कोसक लोक आबै छै। फसिलात नै होइ छै तँ ओहिना? मरल-सुखाएल कोखि हरियर भऽ जाइत छै। जश-अपजश विधि हाथ।
सोझेमे तँ छै-नररी बुढ़ियाक पुतोहू। ओझा-गुणी, डाक्टर-वैद, मिझम सभ नकारि देने रहए। खेलावन भगत दूटा सन्तान होइक वाक दऽ देलकै। समूचा मिनुकटोलीके ठकमुड़ी लगि गेलै। जहिया वचन पूरा भेलै। कहए भगता आ पूराबए देवता।
ओना तँ ऐंठ खाइ छै आ झूठ बजै छै। सभ कुकरम देखते छी। नचारके विचार की। दस गोटेक बात तँ मानहि पड़ै छै। चलतीमे तँ माटियो बिका जाइत छै।
मिडीहीवालीके तँ सोचि-विचारि कऽ काज करए पड़तै। जागेसर तँ ओइ दिन कहि देलकै- पंच सभ साल भरिक समए देने अछि। अहाक मन-जेकरासँ इलाज कराबी। ओझा-गुणी, डागडर-वैद। हमरा दिससँ कोनो मनाही नै। मात्र साफ टाका-पैसा पुरौनाइ हमर काज छी। पाछा हमर कोनो दोख नै।
खेलावन भगत बेतमे तेल लगा कऽ सुरखि रहल छै। भगतके सभ

थ्कछु अलगे टाइपक। बेत लगै छै- साप सन। अन्हारमे देख लेत तँ सापे बुझेतै।
आइ मिडीहीवालीके मौका भेटलै। सुनहटमे सभ गप्प फश्वछा कऽ कश्च रहल छै। थ्कन्तु भगतक मन जेना कतौ आर टहल-बुश्च रहल छै। देह कतौ आ मन कतौ। आँथ्ख जेना श्राशामे डुमल छै।
मिडीहीवाली सोचैत अश्छ- एना थ्कअए केने अश्छ- भगतजी। कही ओइ श्चनका गप्प मन तँ ने पश्च गेलै। झाड़ैत काल चमेटा जे लगल रहए। कही हमरापर तमसाएल तँ ने अश्छ। आब जे होए। बखत पड़लासँ........। मिडीहीवाली कने सुरके तेज केलक। अपना श्चस थ्यान श्वचबाक लेल तँ उपाए लगबए पड़तै। “भगत जी, हमरो दुख हरण कऽ श्वअ। आब तँ हम कतौक नै रहबै। जँ बाल-बच्चा नै हेतै तँ सोश्चान तरमे बास करए पड़तै। अहा तँ बुश्चते छी- नदी तरक चास-आ सौश्चान तरक बास।”
“सौश्चान ने कहै छै। बैश्चन तरक बास।” टप्प दऽ बाजल भगत। “हम तँ मूर ख छी भगतजी। अहा तँ भगवान श्छऐ। परोपटामे अहाक जय-जयकार भऽ रहल अश्छ। कतेकोके दुख हरण कऽ लेश्चऐ। हमरो दुखसँ उबार । खाली आँचारके भश्च श्चअ। जँ हमरा संतान नै हेतै तँ हम बेसहारा भऽ जाएब। पएर पकड़ै छी भगत जी। कोनो उपाए कर ।”

श्रासास श्वचैत भगत बजल- “गुर महराज कहने रहथ्न- सुआरि लाथ्य करे सभ पीरीत।”
मिडीहीवालीके आँथ्खसँ भरभरा कऽ नोर खश्च पड़ल। भगत जीक श्चल थ्यघश्च गेलै। ओकरा हाकि अपना पएरपर सँ हटबैत कहलक- “घबरा नै। सभ कुछो हेतै। जे बाट देखाबै श्छऔ। ओइपर चलए

पड़तौ।''

''बचा श्वअ भगतजी। जीअत तँ जीअत, मुइलोमे सौश्वान नै बकसै छै। मुइलोपर श्वसाइत छै।''
''तूँ तँ एक-तरफा सोचै छे। पुरषोके दूटा स्त्री भेलासँ ओश्वना कठ होइ छै। तरघुसका तकलीफ होइ छै। तोरा तँ मालूमो नै हेतौ घोचाय मड़रक भाइक श्वस्सा।''

''हमरा कतएसँ मालूम हेतै।''
''आब तँ बेचारा दुश्वायासँ चश्व गेलाह। चाश्व-पाच साल पश्वलुका गप्प श्वऐ। सौश्वश्वाया डाहक श्वाकार भऽ गेलै। दुनू स्त्री श्वश्व कऽ दशा श्वगाश्व देने रहए। देखैत छी आइयो दुनूटा साढ़ जका ढेकैर कऽ लड़ैत छै।''

''की भेल रहै भगतजी?''
मिडीहीवालीक आँश्वमे उत्सुकता भश्व गेल छै। खेलावन भगत पलथी माश्व कऽ बैस गेल। दश्वना जाघपर राखल बेत थिरिरा रहल छै। मुँहसँ श्वस्साक बखान चश्व रहल छै।
''घोचाय मड़रक भाइक नाओं रहै- श्वचाय। एकटा स्त्रीमे संतान नै भेलै। फेर दोसर केलक। ओहोमे संतान नै भेलै। दुनू औरश्वायामे राश्व-श्वन हड़-हड़, खट-खट होइते रहए। श्वचाय झगड़ा छोड़बैमे अपस्यात। दुनू तरफसँ गाश्व माश्व सुनए पड़ैत। श्वचाय लवकीके बेसी मानैत। ओकरो संगे राश्व श्वताबैत। पुरनकी कछ-मछ कऽ राश्व काटैत। सौश्वश्वाया डाहसँ जरैत पुरनकी सोचलक।''

किछु काल रुकि भगत आगू बजय लगल- “हँ, अमवस्याक राति रहए। खट-खट अन्हार। झिहिर-झिहिर बून चुबैत। हाथि-हाथि नै देख पड़ैत। लबकी जइ घरमे सुतैत रहए ओइ ओसरपर पिचाय दछिना पएर रखलक आकि बामा पएर पुरनकी पकड़ि लेलक। अन्हारक कारने पिचाय देख नै सकल। ओ डरे ‘आऊँ, आऊ’ करए लगल। लबकी दौग कऽ निकलल आ दछिना पएर पकड़ि लेलक। दुनू अपना-अपना दिस खिचए लगल। अपना-अपना घर दिस लऽ जेबाक पयास। खैच रहल छल। पिचायके बुझि पड़लै जे दू फाकमे चीर कऽ बँटि लेत। ओ बाप-बाप करैत चिचिआया उठल। अड़ोसिया-पड़ोसिया जमा भेल। तखन महिलाके शान्त केलक। दूटा स्त्री केलाक फल एहनो होइत छै।”

“भगतजी, तैयो मरदक जाति ऊपरे रहै छै। हमर नैया कोन विधि पार लगतै।”
“तूँ चिन्ता नै कर। अबए दही उ शुभ घड़ी। उ पवितर राति।”

खेलावन भगत बेत उठा कऽ उपदेश दिअ लगल- “सात दिन पहिलेसँ अरबा-अरवाइन भोजन। दुनू बखत स्नान। मन देह शुद। चौबटियापर पूजा-चकर। बाहर बजे रातिमे एकान्त जगहपर आबए पड़तौ। राह-बाटमे कोनो टोका-चाली नै। कियो देखै नै। आधिभाग रातिमे चौबटियापर स्नान-पूजा कबुला सभ करए पड़तौ। समैपर सभटा बात बुझा देबौ। भेट करैत रहिहे। शरणमे आबि गेल छे तँ कल्याण भऽ जेतौ।”

“धन्य हो भगतजी।”

मिडीहीवाली उखि कऽ आंगन दिस चलि देलक। ओकर पएर स्थिर नै भऽ रहल छै। जेना आशासँ मातल हो तहिना ओकरा मनमे बुझाय छै। पता नै ई आशा सफलताक छिऐ वा असफलताक। ओकर पएरक गति तेज भऽ गेलै। तैयो गहबरक गन्हि ओकरा चार भरसँ घेरने छै......।

~

१०

राति जमुन भारी सन लगै छै। खट-खट अन्हार छै। एते लोक कतए जाइ छै हौ?

गोपी मड़रक दुआरिपर बहुते टोलबैया जमा छै। ठाढ़ भेलहा सभ गप-सप कऽ रहल छै आ बैसलाहा सभ फुसराहटि। लोकक बीचमे गोपी मड़रक जेठका बेटा मनमा बैसल छै। बैसल नै छै बल्कि अहिा सूतल आ अहिा जगल छै। जेना आशामे मातल हुअए। ओंघराए कऽ खसै ले करैत छै किन्तु ओकर जुआन स्त्री पाछूसँ सम्हारने छै। ओकरा स्त्रीके अपना देहक कोनो सोह-सुरता नै छै। फाटल वस्त्र रहलाक कारणे ओकर छाती कनेक उघाड़ छै। सबहक नजरि पड़ि ओहि उघड़ल अंगसँ टकरा जाइ छै। आगूमे दू-तीन हाथ जगह खाली छै। जइठाम जरैत लालटेनक इजोत आ कुदैत-फानैत कीड़ा-फतिंगा। नीमक छोट-छोट ठाढ़ि आ पात राखल छै। खेलावन भगत अपना चेला-चपाटीक संगे झाड़-फूंकमे लागल अछि।

गरथ्रम कऽ मंि जाप करैत नीमक ठाथ्रड़सँ बीखके झाथ्रड़ रहल अथ्रछ।
“एगारह हाि काय चल
बरहम दोहाय चल सातो पुरा नाग चल हरो-हरो थ्रबसंभरो दोहाय थ्रबसहारा माताक थ्रछअ।”

गोपी मड़र अखने भुटाय वैदके सोर पाड़ए गेलै। ओकर छोटका बेटा घनमा नीमक ठाथ्रड़-डाथ्रर आ लगपाचेक माँथ्रट लाबैक लेल गेल छै।

लोग आपसी फुसराहथ्रट कऽ रहल अथ्रछ। पाछूसँ केकरो जोरगर स्वर आएल- “की भेल छलै हौ?”

“दुनू परानी सूतल छलै। थ्रभन टूटलापर थ्रचथ्रचया कऽ कहलकै- हमरा थ्रकछु काथ्रट लेलकौ। दौग कऽ आबैह जा।”

“हँ, सुनैत थ्रछऐ जे पथ्ररवारमे कमाउ पुत वएह टा छै।”

“खेतपर सँ िकिल-ठेथ्रल आएल। खेलाक बाद सुथ्रत रहलै। खाट, चौकी तँ घरमे नै छै। थ्रभमसल जमीनपर सुतै छलै। साप काथ्रट लेने हेतै।”

“हँ हौ, घरक दशा नै देखैत छहक। एक थ्रदस कूड़ा-करकटक ढेरी तँ एकथ्रदस जंगल-झाड़। कतौ साफ-सुिरा देखै छहक। एनामे मनुख रहतै।”

“भुटाय वैद की कहै छै हौ?”

“कहै छै- असगुन भऽ गेलौ। सुनै छी ने नथ्रड़या भूथ्रक रहल छौ। जान लेबा बेमारी छौ एकरा।”

ई सुथ्रन मनमाक स्िी जोर-जोरसँ कानय लगली। “फटृट चुप, कुलछनी। बाप-बाप थ्रचथ्रचया रहल छे। सतबरती रथ्रहते तँ एना हेबे नै कथ्ररतौ।”

गोपी मड़रके ठोर सुथ्रख गेल छै। आँथ्रखमे लोर नै छै तैयो गमछासँ

पोछ्छ रहल अछ्छ। मनमाक स्ि ठोह पाछ्छ कऽ काछ्म रहल छै। गोपी मड़रक छोटका बेटा घनमाके आब दुख बरदाइशसँ बाहर भऽ रहल छै। ओ छ्यछ्मया कऽ कहै छै- ''हौ भैयाके कहुना बचा दहक हौ सर-समाज।''
मनमाक हालछ्म छ्मरन्तर बेसी खराब भेल जा रहल छै। आब ऊ घररए लगलै।
''नै बचतै शाइत आब।''
लोक लगही लाि ससछ्व रहल अछ्छ। छ्मसास छोड़ैत बजै छै- ''लगै छै साप नै कटलकै, काल डछ्म लेलकै।''
''आँछ्वयो नै तकै छै। सास केना घुरघुराइ छै।''
''बेचारी, भरल जुआनीमे छ्यवा भऽ जेतै।''
''ि र, औरछ्मयाके कोन ठेकाना। तुरते दोसर छ्वयाह कऽ लेतै। छ्वपैत तँ गोपी मड़रके पड़लै। बेचारेके कमौआ पूत....।''
खेलाबन भगतके आँछ्व लाल भऽ गेलै जोरसँ गरछ्म कऽ बजै छै- ''एहेन कठोर छइ जे सुछ्म नै रहल अछ्छ। उतरसँ रास्ता खाली करै जा। महा डाछ्कनी मंि पढ़ए पड़तै।''
''हे, हौ, हटै जा उतर भैरसँ। बाट खाली करै जा।''
लोगमे सुगबुगाहछ्ट होइ छै। एने-ओने हछ्ट जाइ छै।
''हे रौ, उतरसँ हछ्ट जो। कोन ठेकान छै- देवी औतै की साप।''
मुदा उतरसँ हड़बड़ाइत अजय अबैत छै। छ्कछ काल तँ ओकरा जानकारी लेबामे लछ्म जाइ छै। िनमा काछ्म-काछ्म सभटा गप्प कहै छै। सुछ्मते ओ तमसा जाइ छै आ छ्यछ्मया कऽ कहैत अछ्छ- ''छ्कएक सभगोटे छ्मछ्म कऽ एकर जान लऽ रहल छहक। बहुत नाटक केलहक। बेचारा अन्छ्मम घड़ी गछ्म रहल छै। आबो मंतर-जापके

रोकह आ लऽ कऽ अस्पताल चलह।”

सभ ओकरे श्चस तकए लगल। रामखेलावनक आँश्चि तामसे लश्चया गेलै। ओ फुफकारैत बजल- “आश्च गेलौ बकटेट। हमरा डाकश्चा मंतरके बीचेमे तोश्च कऽ नाश कऽ देलकौ।”

अखन अजय केकरो बात नै मानतै। जान जाइक सबाल छै।

“ऐ भगतजी, एकरा जानक गारन्टी लेबै अहा? जँ ई मश्च जेतै तँ अहाके गोपी मडरक बेटा आपस करए पड़त। अहाके अपनापर श्चसवास अश्छ। अहा बचा लेबै।”

भीतरे-भीतर खेलाबन भगत डगमगा गेल। श्चकछु तँ बजए पड़तै। “ऊपरबलाके यएह इच्छा हेतै तँ के रोश्चक सकैत छै। देवीक कृपासँ कतेकोके ठीक केश्चाऐ। एकरो ठीक करबै।”

“ई तँ मरल जा रहल छै आऔर अहा कश्चया देवीक कृपासँ ठीक करबै। आ हमर दाबा अश्छ- जँ ई जीअत अस्पताल पहुँश्चा जाएत तँ ठीक भऽ जेतै। एहेन स्थिश्चामे श्चकयो केकरो अस्पताल लऽ गेल हेबै तब ने बुझबै।”

नकोर बश्चाया बीचेमे टपकल- “हँ भाय, जरटोलीमे हमरा बहनोइके साप कटने रहै। श्चारा लगा कऽ ऊपर जौड़ीसँ बान्श्च देलकै आ अस्पताल लऽ गेलै। दोसरे श्चन ठीक भऽ आपस एलै। अस्पतालक बड़का डागदर भगवानोसँ बश्च कऽ छै।”

अजय फटकारैत बजल- “मुँह की ताकै छहक। एकरा उठाबह आ चलह अस्पताल। ओझा-गुणीक चक्करमे जान चश्चा जेतह।”

“लाबह खाट। टाश्चा कऽ लऽ चलह। ने सड़क छै आ ने गाड़ी।”

गोपी पड़रक छोटका बेटा दौग कऽ खाट लऽ अनलक। तामसे फौंश्चया कऽ खेलावन भगत उठल आ झटश्च कऽ चलल। औंठा ितीमे लगलाक कारणे ि़ड़फड़ा गेल। बीचसँ स्वर आएल- “यौ

भगतजी, ढेका खूश्न गेल। सम्हारर जल्दी।''
खेलावन भगत तामसे रिरिाइत बजल- ''नासे काल थ्वनासे बुध्द। देवी माइक कारजमे अड़चन। सभ नास भऽ जेतौ।'' ढेका पकड़ने फनकैत जा रहल अछ्ळ। सनसनाइत अरिश्चयाक समए। गामक चार भर ािल-कादो आ पाश्चसँ भरल। एकोटा सड़क नै। खटोला उठा कऽ चलब आश्कये-ि रे सम्भव छै। कात-करोटक कटहा झाड़ टागमे लगैत छै। एक मील एहने कश्कन बाट छै। श्चम्मत बान्श्च चाश्च-पाचटा युवक खाट उठौने जा रहल छै। गोपी मड़रक बेटा खाटपर पड़ल छटपटा रहल छै। समए जतेक श्चतैत छै ततेक रोगीक हालश्च खराब भेल जा रहल छै। ''हौ जल्दी चलह हौ।''
''एहेन खराब रस्ता ऊपरसँ कनहापर एतेक भार। केना दौगबै हौ।''
सड़कपर पहुँचबामे घंटा भश्चक समए लश्च जाइ छै। खाटके एककातमे राश्च सभ गोटे सास खीचैत ठाढ़ भेल। गोपी मड़र लग जा अपना बेटाके मुँह उघाश्च देखैत अछ्ळ। आ श्चश्चया उठैत अछ्ळ- ''रौ बौआ, रौ मनमा उश्च गेलौ रौ।''
सभ खटोलाक चार भर घेश्च लेने अछ्ळ। अजय छूश्च कऽ देखैत अछ्ळ। ''वास्तवमे मश्च गेल।''
सभ एक दोसराक मुँह ताश्क रहल अछ्ळ। ''मश्च गेलै आब की करबहक?''
''आपस लऽ चलह। कपारमे यएह छलह।''
गोपी मड़रक छोटका बेटा बपहाश्च काश्च रहल अछ्ळ। कतेक गोटे आँश्चक लोर गमछासँ पोश्च रहल अछ्ळ। कालू मड़र कहैत अछ्ळ- ''ठीके कहैत छलै खेलाबन भगत। घमण्ड देखे लहक। टूश्च गेलह ने मिण्ड। सभटा खेला अजय लगेलकै। आब वएह जबाब दौ।

गोपी मड़रक बेटा आपस कऽ दौ। बकटेटीक कारणे भगत कछु देलकै- नास भऽ जेतौ।''

''हमरा सभ कतए जेबै? की करबै? झाड़-फूकक अलाबा रस्ता कोन?''

''अस्पताल अइ लकटमे नै छै। सड़क एकोटा नै छै। गाड़ी-घोड़ा नै छै जे चढ़ि कऽ फरसँि उतरि जो।''

''हम तँ कहै छलौ जे रस्तेमे खतम भऽ जेतौ। मुदा हमर बात सुनए तब ने।''

अजयक बोल नै फुटि रहल छै। आखिर केकरा की जबाब देतै। अधिक लोक कालू मड़रक समर्थन दऽ रहल छै। ओ सोचि रहल अछि- गामसँ केना अंधविशास, जड़ता आ जीदके हटाओल जाएत। जान-अजान बढ़ि कऽ कते आगू चलि गेल। गाम कतेक पाछू अछि। झाड़-फूक करैत-करैत मरि जइतै तँ कोनो गप्प नै मुदा बचबैक पयासमे मरि गेलै तँ आब देखि आयौ। दू घंटासँ झाड़-फूंक कऽ रहल छलै। जँ दू घंटा पहिले अस्पताल लऽ गेल रहितै तँ एकर जान बँचि जाइतै। आगू-आगू खटोला जा रहल अछि। आपस गाम दिस। पाछूमे अछि, गोपी पड़र आ ओकर छोटका बेटा। कानैत, चिड़फराइत बढ़ैत। करुण क्रिन्दण बढले जा रहल अछि। ओही मध्यमे अजय जेना घेरा गेल अछि।

~

११

''दौग कऽ अबै जा हौऽऽऽ। देखहक हौ लोक सभ। हमरा अँगनामे

ढेपा बश्वस रहल छै। पछुआर श्वदसस‍ँ कतेक ढेपा फेक रहल छै। दौगै जा हौ।''

''गे माइ गे माइ। कोन उपरव शुर भऽ गेलै गे। कोन देवी-देवता श्वश्वसया गेलै हो देव। हौ समाज बचाबह हौ।''

हल्ला गुल्ला सुश्व बहुते लोक दुआश्वपर जमा भऽ गेल छै। देवीपुरवालीक मुँहपर डर नाश्व रहल अश्छ। ''की भेल?''- अड़ोसी-पड़ोसी पूश्छ रहल छै।

''जान बचाबह हौ। पछुआर श्वदसस‍ँ ढेला बश्वस रहल अश्छ, अँगनामे।''

''अन्हार राश्वमे पछुआरमे केना कऽ देखबै?''

''फुलचनमा टौचक्रि इजोतस‍ँ देखही तँ के छी सरबा।''

''हे, गाश्व नै देबाक चाही। श्वकनसाइत देवी-देवताक मश्वला हेतौ तँ ि‍कापर चश्व जेबे। बुश्व लही, एके बेरमे जय-श्वसयाराम।''

श्वम्मतगरहा तीन-चाश्वटा छौड़ा आगू बढ़ल। चार भर टौचक्रि इजोत श्वछश्वया गेलै। ''कहा छै कोइ हौ। नुका तँ नै रहलै।''

''कोन ठेकान, कही भूत-पेरक मश्वला ने होइ।''

''भऽ सकै छै। देवीपुरवाली कोनो कबुला-पाती केने होइ आ पूरा नै केलाक कारणे देवी पकोप मचबैत होइ।''

''देवीपुरवाली लालटेन नेस रहल छै। अँगनामे तँ ढेपाक ढेर लगल छै। एकर बेटे नै छै।''

''ि‍र, उ तँ चौकपर ताड़ी पीब कऽ मतंग हेतै।''

देवीपुरवालीक पुतोहु चमकी ओसारपर बैसल छै। बेचारी डरे ि‍र-ि‍र काश्व रहल छै। देवीपुरवाली श्वैघ वा रश्वतो मरद जका काज करैत छै। बेटाके जन्मैते पश्व सदाक लेल संग छोश्व देलकै। ओइ बेटाक भरोसे पहाड़ सन जीनगी काश्व लेलकै। ओकर बेटा 'नकचटा' आब

जुआन भेलै। ओइक संगे आसा जगलै जे एकटा कमौआ पुत भेल आब। क्ष्कन्तु ओहो थ्ययकड़ भऽ गेलै। काम करत तँ कथ्वते रश्च जाएत। कही ताड़ी थ्यबाक लेल गेल तँ कखैन आएत पता नै। सासु-पुतोहु श्चश्च कमा-खटा कऽ कहुना गुजर चला रहल अश्छ।

“कही एकर पुतोहु चमकी डाइन तँ नै छै हो?”

“नै-नै, ई बात झूठ छै। एतेक भोली-भाली औरत डाइन केना कऽ भऽ सकै छै।”

“हँ, हँ, भोला-भाला चेहरा भीतर थ्वल बेइमान।”

“हँ रौ भाय। तब ने जइ समैमे पश्चलुक बेर आएल रहै। लबे-िबे रहै। टोलमे बड़का हो-हल्ला भेल रहै।”

“हे रौ, ऊ जइ घरमे ठाढ़ होइ ने ठीक ओकरा कपारक सामने घरक छप्परमे आश्च लश्च जाए छलै। उतरबश्चया घरमे जाय वएह बात। दश्कणवश्चया घरमे जाय फेर वएह बात। ई तँ चट दऽ लोक मुझा दैत छलै नै तँ पूरा घर जश्च कऽ सुडडाह भऽ जएतै।”

“पसरतै केना कऽ। बान्हल आश्च रहै ने। बुश्चही, औरश्चायाके देह नै रहै, आश्चक भटी रहै।”

“तब तँ नकचटाके सलाइ कीनबाक कोनो जर रते नै।”

सभ गोटे एकेबेर श्चश्चया कऽ हँसए लगल। उन्मुक्त हास्य। “अरे तोरी कऽ, ई तँ असल अश्चनदाइ श्छयौ रौ।”

“फेर ई बेमारी ठीक केना भेलइ?”

“वएह खेलावन भगत कतेक श्चन तक झाड़ फूंक केलकै। तब अश्चनदाइक देहसँ आश्च कम भेलै।”

“सुनने रही जे ओकरे लग गेलासँ ई खेला शुर भेल रहै।”

“हँ मिदुखी झड़ेबाक लेल खेलावन भगत लग लऽ कऽ गेल रहै। ओही श्चनसँ ई अश्चलगौना काण्ड हुअए लगलै।”

“तब तँ कुल करामात खेलावने भगतक रहै।”

पछुआर घ्इससँ अजय सोर पाड़लक- “दौग कऽ एने अबै जो। भूत पकड़ा गेलौ।” सभ एकेबेर दौगल। बैगन गाछक झोझसँ अलटरबाके भ्याकालैत अजय कहलकै- “एकरा पंचक पास लऽ चल।”

“हँ हँ ठीके बात। घोचाय अपना बेटाके भ्कअए नै सम्हारैत छै। रास्ता-घ्सराइत औनाइत रहै छै। रास्ताचर भूत जका।”

“लोकके डेरानाइ कोनो नीक गप्प होइ छै। कही आँख्मिमे ढेपा लग्या जाय तँ फूट्ट जेतै।”

“जन्मेले टासँ नै होइ छै, पश्चापालो करए पड़ै छै। लऽ चल। पंचसभ न्यारलय करतै।”

डेढ़हि्ाी कान्हपर लेने घोचाय गरजैत देवीपुरवालीक दुआरपर पहुँचलै। “हमरा बेटाके पंचक पास लऽ जेआहार के छी? ई छौड़ा अखने अँगनासँ खा-पी कऽ भ्याकललै। मुतै लेल बाड़ीमे गेल छलै। ई केना कऽ ढेपा फेकतै? छै कोइ गबाह? देखलकै ढेपा फेकैत? अजैया दू अक्चर शहरसँ पश्ढ़ कऽ की आएल जे सभ जगह अपने कब्बलगीरी। औकरा अँगनामे कोनो देवी ढेपा फेकै छै आ नाओं लगबै छै, हमरा बेटाके।”

घोचायक स्ाी गाश्च पढ़ैत पाछूसँ अबै छै।

“के भ्यापूतरा हमरा बेटाके पकड़ने अछ्छि। कोनो चोरी-डकैती केलकै की। कोइढ़फुटा, छोड़ हमरा बेटाके। ने तँ जे ने से कऽ देबै।”

झमाश्च कऽ अपना बेटाके छोड़ौलक। ओकर बाझ्ह पकश्कि भ्याचने घर घ्इस चश्ला पड़ैत अछ्छि। पाछूसँ फनकैत घोचाइ जा रहल अछ्छि।

“अखैन तँ बेकारक झगड़ा ठाढ़ भऽ जइतै। अजयके कोन दुसमनी छलै, ओइ छौड़ाक संग।”

“दुसमनी ओकरासँ नै छै। असल दुसमनी घोचायसँ देवीपुरवालीके छै।”

उद्घोषतवक्ता बीचमे आबि कऽ बजए लगल- “बेटाक जन्म भेलापर अँगनासँ बहीगा फेकल जाइ छै। जे घरक ऊपरसँ दरबज्जापर खसबाक चाही। फेर ओही बहीगामे बैरक झाड़ आ जूता लटका कऽ घरक आगू गाड़ल जाइ छै।”

“घोचायक संग की भेल रहै?”

“घोचायक बेटा भेल रहै ने तँ अँगनासँ बहीगा फेकने रहै। ओही समैमे देवीपुरवाली दुआरिपर ठाढ़ रहै। बहीगाक नोक ओकरा टागमे गड़ि गेलै। पंचैती भेलै तँ घोचायके डण्ड-जुरमाना लगलै। ओही दिनसँ दुसमनी चलि रहल छै।”

“कही ढेलफेक्का भूतके घोचाय भेजैत हेतौ।”

“कुछो हौ। खेलाबन भगतके पूजाक खरचा भेट जेतै। तब देवीपुरवालीके कल्याण हेतै।”

देवीपुरवालीक बेटा नकचटा ताड़ी पीब कऽ दुआरिपर आबि गेल छै। ओ खिसामे गरजि रहल छै।

“हमरा दुआरिपर एतेक लोक किएक जमा भेल छै हौ? बुझै छी, ऐ औरतियायाके। सनकल जा रहल छै। हम घरपर नै रहै छी तँ छौड़ा सभके सोर पाड़ि कऽ रसलीला करैत रहैत अछि। कहा छै हमर मोटका समाठ बला लाठी। आइ डाड़ आ पीठी सरका देबै हम।”

अखानदाय डरसँ कोठी गोड़ा तरमे नुका रहल अछि। पता नै देहपर लाठी कतए-कतए खसतै। रोइया काटो-काट भऽ रहल छै। उद्घोषतवक्ता दुआरिपर सँ बजदा होइत बजल- “अजय भाय, चलह ऐठामसँ। नै तँ समाठसँ चूड़ा जका कूटल जेबह।”

सभ फ़िड़फड़ा कऽ चलि पड़ैत अछि। अजय देखैत अछि। आसमानसँ

चुगला थारैत अछि। ितिरती ससिस बढ़ैत इजोतक रेखा। चार भरसँ अन्हार ओकरा ससिस दौगल। छनेमे जेना ओकरा पकड़ि घोंटि लेलक। फेर आँखि अन्हारेमे अछि, इजोतक पतीक्षा करैत।

~

१३

जनीजाति सभ अँगनामे गाबि रहल अछि। “बाबा के अँगना मे लगनसँ आएल पोती भेल डुमरी के फूल हे एहि बेर लगनमा थिकराय सियौ बाबा समखऽ छियै लूरि बेबहार यौ।”
अकलू मड़रक बेटीके बिआह हेतै। बरयाती आबि रहल छै। दुआरिके कते थाकन-चुनमुन केने छै। लगै छै जेना चनन छिटका देने हो। ततेक इजोत चमकै छै जे अन्हार तँ जेना लापता भऽ गेलै। दुआरि आ अँगनाके सभ चीज दोसरे रँगक लगै छै। चमाचम। एककातमे भनसिया सभ अहरी चढ़ा देने छै।
“पझ्ने भात नै, तीमन बनतै। पानि ला रे।”
“भैया, एक थिलम गाजा हमरा घरबारीसँ मंगा दे तँ हम भरि राति खटबौ।”
“चुप, दार , गाजा पी कऽ भानस करता।नूनक बदलामे चीनी ढारि देबही। तब की हेतै?”
किछु लोक भोजन-भात बना रहल अछि तँ किछु लोक बरयातीके सूतए आ बैसए लेल बेवस्िा कऽ रहल अछि। िाया-पुता सभ

दलानक आगूमे खेल रहल छै। क्षकछु नागट-उघार तँ क्षकछुके देहपर बस्तरो अछ्छ। नाकमे नेटा, सुर-सुर करैत। ‘‘भैया मुतबै हौ।’’
‘‘चुप सार, तोरा तुरते मुतबास लथ्रा गेलौ।’’
‘‘तँ परसादी मँगा दे।’’
‘‘भगवानक पूजा नै हेतै। एकरा अँगनामे ब्बआह हेतै।’’
‘‘हे रे छौड़ा, ऐठाम लगही कऽ देलही।’’
बूढ़बा लाठी लऽ कऽ फटकारैत बजल- ‘‘भाग दुआरपर सँ। नीचा जा कऽ खेल।’’
अँगनामे गीत गौआहाब्र सभ उपरौझ कऽ रहल अछ्छ। पञ्चने तँ एकोटा जनीजाञ्चा एबे नै करै छलै। ‘‘जौञ्चासँ अलग। ढाढल बान्हल छै- अकलू मड़र। ओकरा संगे के जाएत बन्िनमे पड़ैले।’’
अकलू मड़रक स्ी बडड चलाकी जनै छै। टोलक मूलगञ्चा घुघुरबतीके पञ्चया लेलकै। ‘‘दाय हे, जेहने हमर बेटी तेहने तोहर बेटी। कोनो तरहे पार-घाट लगा दहक। दोसरा गामकसँ लोक सभ आञ्च रहल छै। अपना गामक इज्जञ्चाक सबाल छै। अपना टोलक गप्प आन लोक क्षकएक बुझतै। रहबै तँ एकेठाम।’’
केना कऽ मानतै औरञ्चाया सभ। आञ्चर सुख-दुखमे एकसाि रहैत आएल छै।
‘‘नञ्चया क्षकनारे बाबा हौ क्षकनकर बाजा बाजै, क्षकनकासँ मागे दहेज हौ, नञ्चया क्षकनारे पौती तोरे बाजा बाजै हमरासँ मागे दहेज गे.......।’’
झ्रम-झ्रम-झ्रञ्चाक। ढोलक आ पीपीहीक अवाज।
‘‘आरे तोरी कऽ बराती तँ गामक बगलमे पहुँञ्च गेलौ। जल्दी सभ पबन्ि कर रौ।’’
‘‘इह, कोनो लाट साहेबके बरयाती नै आञ्च रहल छै।’’
‘‘सुनै छी, जे दू बीघा जमीन छै।’’

“दू बीघा जमीन छै आ सात भाइ छै। फेर सातोके दू-दूटाक धीया-पुता। अँगनामे बेदराक ढेरी लगल छै।”

“सुनै छी, लक्ष्काका घरक छप्पर बनबैमे तेज छै। लाड़-पुआर बतीक छप्पर। तँए खेतीक अलाबे किछ आमदनी भऽ जाइ छै।”

“बुझलौ- घरमे फुइस-फाइस बाहरमे िका।”

अँगनासँ गीतक अवाज-

“सोनाक थजरा बना दऽ हौ बाबा,

ओश्व मे रहब नुकाय हौ। सोनाक थजरा बना देबो गे पोती थजरा सक्षत नेने जाय गे.....।”

बुढ़बा सभ अपना पगड़ी आ ितीके ठीकसँ बान्हैत अछि। ढोल-पीपही आ स्पीकर जोर-जोरसँ बजए लगल। लोगमे हड़बड़ी मच्च गेल छै। समाजक लोक दुआरपर एकटा भऽ रहल छै।

“बरयाती आबि गेलै। चलै-चल सुआगतमे। खाना-पीना बादमे हेतै। सुआगतमे थारोटी नै हेबाक चाही।”

“हँ, ठीके गप्प। दोसरा गामक लोक, अबजन-पबजन, कुटुम। ओकरा ढाठ बान्हसँ की मतलब।”

“हँ हँ, आखिर हमरो िनुकटोलीक किछ शान छै।”

“अरे तोरीके, नाचक पाटी लौने अछि।”

“हँ, लगही आ झाड़ासँ टोलके महकौतौ।”

“ई सार तँ नमरी लोफर छै। धीयाने दोसरे तरफ।”

उधमतवक्ता मुड़ी डोलबैत बजल- “असल गप्प एखना भकभका कऽ लगै छै। साविान, नाच देखैते थाड़ै कोनो छौड़ा संगे उड़ि ने जाऊ।”

“चुप्प, शैतान।”

डेढ़ियापर जनीजातिक भीड़। वर देखबाक सबहक आँखिमे उत्सुकता। रंग-बिरंगक साड़ी-आँगी पहिरने। फूल सन फुलाएल मुख। चहकैत छौड़ा सभक दल। पैट-शर्ट, लुँगी-कुरतामे सजल। बुढ़ सभ धोती-कुरता आ माथिके गमछासँ मुरेठा बन्हने।

“पहिले पएर-हाथ धोबाक लेल जलक बेवस्था करह। पूछि लहक सभ बरियाती आबि गेलै।”

“दुल्हा नै आएल छै?”

“आरे बहीचो, बिना वरक बरियाती आबि गेलै हौ। बिआह केना हेतै?”

“कहै छै- गामसँ संगे-संग चललौ। रास्तामे पछुआ गेल। पता नै कतए रहि गेलै।”

“छुच्छै धोतिहु फूकै छलै रे। बिना दुलेक घर-दुआरि। दुआरिपर आएल छिएक? मार सार बरियाती सभके।”

“ऐमे बरियातीक कोन दोख?”

“हे रौ ला तँ सटका। दोष-गुणके फरिछाबै छथि।”

“हे रौ, मनके थिर करै जो। ठहर, एना नै करै जो।”

बरियाती सकदम। जेना सबहक छातीमे डर ढुकि गेलै। सभ मुँह लटका लेलक। गप-सप्प बन। मने-मन सभ सोचि रहल अछि। कही भरि राति वर नै एतै तब की हेतै? एहने स्थितिमे बरियाती सभके छौलका छोड़ेने रहै, ढेलपुरा गाममे। चलाक बरियाती धोतीके डाड़मे खोसि रहल अछि। पछुआरक रस्तो भजिआ रहल अछि। रंगमे भंग। तमाकूल-बीड़ी सभ बन। अँगनामे गीतनादक बदलामे फुसराहटि शुर भऽ गेल छै। “लीलाक भाग्ये खराप छै। कतेक मेहनति अकलू मड़र केलकै तब सभ चीजक इतजाम भेलै। दू बरिससँ बेचारेके एड़ी खिआ गेलै तब जा कऽ बिआहक बात तँइ भेलै। आब देखियो...।”

“छठी रात्रि थिथि राखे लीलारा की संकट के मेटनहारा।”
बात सुनि लीलाक कलेजामे जेना बरछी भोका गेलै। ओ मुँहमे नुआ ठूसि कऽ कानि रहल अछि। लोकक मनमे शंका औना रहल अछि। कही लेन-देनमे कोनो गड़बड़ी तँ नै भेल छलै। अकलू मड़र छै-बड़ा मक्खीचूस।
“तीमन-तरकारी बनेबै की नै?”
“ि र, छोड़ि दियौ। की हेतै की नाइ।”
उद्घातवक्ता केना चुप रहतै।
“कानल कनिया रहि गेल कानी कटाओल वर घुमि गेल।”
“मार सारके रौ। बड़ लबर-लबर करै छौ। एने अकलू मड़रके पाछूसँ आसास छूटि रहल छै। आ एकरा.....।”
अकलू मड़रके दोस-मित्र, कर-कुटुम सम्बन्धी सभ बाि-वोन दिस खोजै लेल आकसि गेल छै।
“हल्लो जे करबै से वरक नाओं जानबे नै करै छी।”
स्टेजपर ढोलक-हारमुनिया चुप्पे पड़ल अछि। नाच पाटीक लोक सभ चुपचाप बीड़ी पी रहल अछि।
“हमरा सभ की करबै यौ? एहो लगन ने उि रे रहि जाए।”
“चुप, ओने दोसर नाच भऽ रहल छै। तोहर नाच के देखतौ। बानर जका कूदल घुमै छे तखैनसँ।”
नाचक लेबरा चट दऽ बजल- “सभ तँ बानरेक सन्तान छी आ बानरे छी। हम छी लड़का बानर।”
“हे, मुँहके चुप राख नै तँ..।”
“गौ बाबू आदमि नै छौ। पेट फूलि जाएत।”
अकलू मड़र सोचि रहल अछि- एक तँ जाति आगि-पानि बन कऽ

देने अछि। जखैन कि हमर कोनो दोष नै छलए। भैया मरि गेल छलाह। घरमे कुछो नै रहए। ऊपरसँ अकालक तबाही। कतएसँ करितौ भोज? लोक कहलक खेत बेचि।

कहए पड़ल- खेत बेचि लेबै तँ खेती कतए करबै? कतेक जमीने छै हमरा पास।

दोसरके दुख देखबाक फुरसति केकरा पास छै? सभके तँ अपने दुख भारी छै। अपने सुआरथिमे आन्हर। तैयो टेबैत, हथिड़ैत कहुना चलि रहल अछि।

एक साझ भोज-भात हेतै आ हमर सभ किछो बिका जेतै। लेकिन कहा कोइ सुनलक हमर गप्प। ओही दिन जातिसँ अलग कऽ देलक। कतेक मेहनति केलौ। केकरा-केकरा नै गोड़लग्गी केलौ। कोन-कोन जानवर लग ने माथ लगेलौं। तब बियाहक गप्प आघात भेल। ओहोमे कोन दुसमनी लगा गेल से पता नै। वर बाटेमे बिला गेल। के की केलक से नै जानि। सभ तँ दुसमने अछि। वर नै आएत तँ हमर बेटी कुमारि रहि जाएत। दोसरठाम बियाहक गप्पो नै होएत। लोक सोचत लड़कीमे कोनो खराबी छै। बाप रे बाप, कोन उपाए हेतै। कतौ कऽ ने रहबै- हम। सभटा खरच-बरच बेकार चलि जेतै। फेर दोबारा कतए सँ एतेक टाका-पैसाक बनोबस करबै। अफवाह फैलत- बियाहमे कोन नाटक भऽ गेलै रौ। केकरो सोझामे केना जाएत। अकलू मड़र अन्हारेमे बैसि कऽ कानि रहल अछि। लोक सभ वरके खोजि-खाजि कऽ आपस आबि रहल अछि।

“कतौ नै भेटलै। बड़की सड़क तक कतौ नै छै।”

“चारि-पाचटा छौड़ा बौआ रहल छलै। लग जा कऽ पुछिते पड़ा गलै। गुँहे-मूते दौगैत अपने गाम दिस आएल।”

सभ साँस छोड़ैत अछि। वरक काका थरथराइत अछि-

“आबि गेल। आबि गेल- दुल्हा। कतए रहि गेल छलही, तूँ सभ रौ।”

हंस पलटि गेल-समीक। सबहक आँखिमे उत्सुकता। शान्त पोखरिमे हलचल। लोकक देहमे जेना गति आबि गेलै। नाच-मंडलीक कलाकार फानि कऽ स्टेजपर चढ़ि गेलै। ढोलक-हरमुनियाके जेना परान घूरि गेलै।

औरत-सभ खखसि कऽ गला साफ कऽ रहल अछि। तरे-तर।

“लीलाक माए जल्दी सभ चकछो तैयार कर। चुमबैले। समए नै छै।”

“चलू, पहिने लड़िका देखबै।”

गामीण सभ जमा भऽ गेल छै। “समधि कहा छै?”

“समीके रतौनी भेल छै। कम सुझै छै।”

“अहाक बेटा कहा अछि? कानमे तँ लंगोटा बन्हने छै- सुनतै केना।”

“हेयौ दुला कतए छै?”

बरियाती सभ चार कात सँ घेरने अछि। बीचमे चारि-पाचटा छौड़ा ठाढ़ अछि। ओकरा देहपर कछी-जंघिया मात्र अछि। उघारे देह-जाड़सँ सुटकौने। मुँह लटकौने। दुलाक काका हासिँ इशारा करैत छै। “वएह छी वर। जेकरा देहपर ललका जँघियाटा अछि।”

उद्घोषक फेरिया कऽ बजल- “अरे तोरी कऽ। हौ, ओइ गामक एहने रिवाज छै। नंगा भऽ कऽ एहिना उघारे बिआह होइ छै। नंगटा कही के....।”

“सभ खचरपनी समीक छी। दहेजबला सभटा टाका-पैसा अपना मौगीक पछुआरे राखि कऽ आएल अछि।”

“हँ हौ, बेटाके कछी-जंघिया पहिरा कऽ कुश्ती लड़बाक लेल ठाढ़

कएने अछि।''

सभ खिखिआ कऽ हँसल। हा.... हा.... हा.. ही... ही...। ''हे रौ हमरा तँ लगै छौ, भैस-गाए चरा कऽ बासिँ एहिठाम चलि एलौ। देखहक तँ कपारमे एको बून तेल छै। बिआह हेतै, कोनो खेल नै हेतै। दसटा गामीत देखतै।''

''मापिर मौड़ कहा छै हौ?''

''चुप रह, मौड़ की देखबहक। घौड़ देखहक। बेटाबलाके संतोष रहै छै हौ। दैत रहक।''

समधी तरे-तर तामसे फुलल अछि। बेटाक हालति देखि बजत की। अन्तमे घोघिआया कऽ बजल- ''जखैनसँ दुआरिपर पएर रखलौ तखैनेसँ सभ ओल सन बोल बजि रहल अछि। आँत छुबौआ बात। जेना हमर कोनो परतिष्ठे नै। मनुखक बेवहार एहने होइ छै की? सभटा बकटेढ़िया आ लंठाधिराज जमा भऽ गेल अछि। बेसी तामस चढ़त तँ लड़िकाके लऽ कऽ चलि जाएब। सबहक जेना मगजे उनटल छै।''

कालू मड़र बीचमे आबि कऽ सम्हारैत अछि। ''सभ बकटेटे जका गप्प नै करहक। एकरा सबहक संगे की भेलै सेहो तँ बुझबहक।''

समधी अपना बेटासँ पुछै छै- ''की भेल रहौ बौआ?''

दुल्हा ठोह पाड़ि कऽ कानए लगैत अछि। उखनतवक्ता खिखिआ कऽ हँसए लगल। ''कनिआया बिदागरी कालमे कानै छै। ई केहेन वर छै जे सासुर अबिते काल कानि रहल छै मौगी जका।''

''पहिने सुनि लहक गप्प।''

''हमरा सभ टाएर-गाड़ीसँ आबि रहल छलौ। बामि सात-आठटा डकैत घेरि लेलक। जेबीसँ सभटा पैसा-कौड़ी छीन लेलक। टाचतिँ हाथ मोचाड़ि कऽ पहिने झपड़ि लेने रहए। दिल्लीसँ कमा कऽ घुमैत काल

जे पैंट-शुट कीनने छलौ सेहो आकाश लेलक। हमरा सभके ठौंठकयाया दैत गाड़ीपर सँ खसा देलक। आ उ सभ टाएरपर चढ़ बड़दके हाक देलक।''

''हम कहै छयौ, आत मूतनमा डाकू हेतौ। आइ-कालमे ऊ जेलसँ छुटल छै।''

''आब अअ, सुनयौ, सरकार केहेन छै। चोर-डकैतके कतेक छूट दऽ देने छै। कतौ आएब-जाएब मोश्किल। सभ अपने कुरसी बचेबाक लेल परेशान। गरीबक तरफ धियान के देतै?''

चोर-चहार आशंक भऽ कऽ साझ-बहान लुट-पाट करै छै। घूसक टाका-पैसा गनैत-गनैत रक्त करैबलाके पलखत नै भेटै छै। की करतै, आदत पड़ल छै हौ। ''हाय रे, अपने समाग दाल-भात।''

''अच्छा आब ऊ बात छोड़ दहक दुल्हाके कपड़ा-वस्तर पहराबह।''

ड़िफड़ीमे दोसराक िती-कुरता वरके पहरा देल गेलै। देहक नापसँ कुरता नमहर छै। लड़का बाबाजी जका लगै छै। उमतवक्ता ऊपर-नीचा तकैत कहै छै- ''हड़बड़ी बआह कनपटी नुर।''

''टाइम नै छै। ब-बेवहार शुर करह।''

फेरसँ सबहक मुँह हअआ गेलै। गीत गनगना गेलै। ओने राजा सलहेसक नाच शुर भऽ गेलै।

''अरे तोरी के, देखहक, तालपर डान्सरके नचैत। जेहने र प तेहने नाच। आइ खूबे जमतै।''

अखैयो मनोरि मड़र नमहर केश राखते अछ। जुआनीमे लोक ओकरा नटुआ कहै छलै। बीचेमे टपकल- ''अरे, ई की देखै छी। एक समैमे हमहूँ नामी डान्सर छलौ। िकाहा गाम नाच-पाटीमे गेल रयौ। तीन नक साटा रहै। भोरेसँ बड़का घरक मकाइन सभ

कहै- चाह हमरा घरपर बनतै तँ कोइ कहै जलखै हमरा घरपर। मन तँ हमर उड़ल थ्करै। लथ्कन की करबै अपना घरक मोह.....।"

नाच शर भऽ गेल छै। राजा सलहेसके थ्झबैक लेल सती सोलहो थ्मगार कऽ रहल छै।

अँगनामे साईत थ्मनुरदान भऽ रहल छै। झोकपर गीत कान तक आथ्ब रहल छै। दुला थ्मनुर थ्मयौ हा, पान-सुपारीक सा, दुलथ्नन उघाथ्व थ्मयौ मा, थ्मनुर लए ले। दुल्हाक थ्मरपर शोभे मोर, दुलथ्नन सभथ्न पूजत गोड़ दुलथ्नन उघाथ्व थ्मऔ माग, थ्मनुर लए ले। गामीत सभ नाचक रसमे डुबथ्क गेल अथ्छ। गामक झगड़ा-लड़ाइ आ थ्मनेह-परेमके अजय देथ्ख रहल अथ्छ। ओ कखनो नाच लग जाइत अथ्छ तँ कखनो कोनचरसँ आंगन थ्दथ्म हुलकी मारैत अथ्छ। चार भर छड़पटाएल घुड़ैत अथ्छ। थ्कन्तु शीलाक कोनो सुर-पता नै भेट रहल छै। अजय तकैत-तकैत अपस्थ्यांत। पछुआरमे केराक बड़का-बड़का गाछ लौंके जका ठाढ़ छै। छोटका-छोटका झड़-झाखुरमे भगजोगनी भुक-भुकाइते रहै छै। ओइ झाखुरक अढ़मे माथ्टक थ्ढमका छै। वएह तँ बनल अथ्छ, दुनूक परेम थ्मलन स्ल। ओइठाम दुनू गोटे सभ थ्कछु मोन पाड़ैत अथ्छ आ सभ थ्कछु थ्बसरैत अथ्छ। जथ्ड़यासँ जोड़ लगैत गहुमन ओइ जगहपर मारल गेलै तथ्ड़यासँ ओम्हर जेबाक साहस कमे लोक करै छै। अँगनामे शीलाके कछमच्छी लगल छै। लोकक आँथ्खसँ बथ्च कऽ ओइ जगहपर जेबाक कोथ्शशमे लगल छै। परन्तु काजक अँगना अथ्छ तँए कोइ ने कोइ ओकरा सोर पाथ्ड़ लैत अथ्छ। पछुआरमे अजयके मच्छर काथ्ट रहल छै। चोर जका रगथ्ड़ कऽ मच्छरके मारैत अथ्छ फेर थ्वचारमे हरा जाइत अथ्छ। शीला आइ दुलथ्नन जका सजल छै। केना ने सथ्जतै? ओकरा बथ्हनक थ्बआह भऽ रहल छै। छजन्ता छै। अजय आगूक खतामे देखैत अथ्छ।

पाश्वमे चान रि रिाइत टहश्व रहल अश्छ।
चन्रमाक बगलमे दोसर चानके उगैत देश्व चकोरके चकश्वदोर लगैत अश्छ। “अन्हारमे चोर जका के बैसल अश्छ?”
“मोन आ श्वलके चोरबैबला चोर।”
“हँ ठीके मक्खन चोर।”
अजय आ शीला सहश्व कऽ बैस गेल अश्छ। दुनू एक-दोसरसँ अ हीन गप्प कऽ रहल अश्छ। जइमे अ िभरल अश्छ। दुनू तेना कऽ सश्व गेल जे लगैत अश्छ जेना गहुमन सापक जोड़ी फेर जोड़ लगल। लोभ फौँश्कया उठल। हा िपर चश्व कऽ कामना ससश्व रहल अश्छ। सुगन् कि स्वर प बदश्व गेल अश्छ। मुखक लाली चार भर श्वश्कया गेल छै। जेकरा ठोर समेश्व रहल अश्छ। कामना आ परेमक डोश्व बढ़ले जा रहल अश्छ। मन्द बसात सँ केराक गाछ श्वलैत अश्छ। सुखदानक संगे पतापर सँ पाश्वक बून भरभरा कऽ श्वरैत अश्छ। अँगनासँ कोहबर गीत आश्व रहल अश्छ। क ि केर मड़बा क ि केश्व कोहबर क ि-केश्व लागल केबाड़,
यौ श्वनु बासक कोहबर
सोने केश्व मड़बा, र पा केश्व कोहबर
हीरा-मोती लगल छै केबाड़, यौ श्वनु बासक कोहबर।

~

१४

गामक चौबश्चया। असलमे तीनबश्चयाके सभगोटे चौबश्चया नाओं राश्च देलकै। दस गोटे जे कहलकै सएह साच। गाए बाहलै तँ हँ। बड़द बाहलै तँ हँ। की करबै, गामक तँ एहने र ल छै।
पीपरक गाछ तर अजय श्चिया-पुताके पढ़ा रहल छै। ई गप्प कतेक श्चन टोलबैयाके कहलकै लेश्कन कोइ श्चियान नै देलकै। केना कऽ श्चियान देतै, फुरसत हेतै तब ने। खेती-श्चरहस्ती आ बीच-बीचमे सरा ि-श्चआह आश्च जाइ छै। फेर पावश्चश्वतहार। संगश्च झगड़ा-लड़ाइ तँ सभ श्चन होइते रहै छै। एक-दोसराक टाग पकश्क कऽ श्चचैक तैयारी। दुसमनक काजमे बाा ि नै देल हुए तँ सोझामे हवा जर र छोश्क देत। दुरगन्ि श्चकलतै। दोसराके बढ़ैत देश्च चुप रहब बड़ कश्चन। एहन टोलपर अजय श्चिया-पुताके पढ़ेबाक कोश्चाश कऽ रहल छै। लोकक दुआश्चपर गप उश्क रहल छै।
“सरकारी नोकरी तँ भेटलै नै। आब चललै, गामके सुि रै वास्ते।”
“अपना जेना बड़ सुि रल। दोसरो श्चिया-पुताके श्चकम्मा ने बना देलक तँ फेर कि ाले।”
“बकटेट भऽ गेलै। नै घरके आ ने घाटके। कहै छलै जे सभगोटे पैखाना कोठली बनाउ। र पैया कतएसँ लबतै लोक।”
“बकरी-गाए चरेतै तँ दू पाइक उनश्च करतै, श्चिया-पुता। जँ अजैयाक सभटा गुण श्चखतै तँ समाजमे सभसँ लड़ैत रहतै।”

श्चकछु लोक सभ जगह अलग तरहक होइत छै। ओकर सबहक सोच श्चन छलै। “श्चिया-पुता उच्चका जका भश्च श्चन खेलाइते रहै छै। ऐठाम पढ़लासँ फीमे दू अछरक बोि भऽ जेतै। अजैया केहनो छै तइसँ की। काज तँ नीके कऽ रहल छै।”

“लोक सभ किछो कहौ हमरा सबहक धीया-पुता पढ़तै।”

रसे-रस गाछ तरक स्कूल चलतै की, दौड़ए लगलै। आ ढोढ़ाइ गुरजी तामसे भेर। विद्यादक संगे अकलू मड़रक पछिवार ढाठल छै। जाति आति पाति बन कऽ देने छै। ओकर छौड़ा बीचेमे बैसि कऽ ककहारा पढ़ि रहल छै। अजय कनीकालक लेल कोनो चलि गेल छलै। ताबे छौड़ा सभ हड़-हड़ खट-खट शुर कऽ देलकै। “हे रौ, तूँ तँ ढाठल-बान्हल छी। हमरा सबहक बीचमे किएक एलही।”
“ई केकरो दुआरि िड़बे छै। ऐठाम किअए ने एबै।”
“नै रहए देबौ ऐठाम। भागि जो, नै तँ बापसँ भेट करा देबौ।”
“बापक नाओं लेबही।” “चटाक-फट”
“दुनू तरफसँ िप्पर-मुक्का शुर भऽ गेलै। पेट-गंजी फटि गेलै। ठोरसँ खून छड़-छड़ बहए लगलै। छौड़ा कनैत अँगना दिस भगलै।”
अजय तेजीसँ पहुँचल। सभके फटकारैत पाँतिमे बैसौलक। ओकरा सबहक दिस तकलक। सभटा बनैया धीया-पुता सन लगैत अछि। हजारोक भविष्य अन्हार दिस जा रहल छै। बचेबाक पयासमे अपनो भविष्य अन्हारमे चलि जेतै। बलिदान तँ करए पड़तै। पाप्त करबाक लेल किछु हरा जाएब स्वभाविके छै। अकलूक पितियौता भाय रामरती मड़र गरजैत आबि रहल छै। “ई झटकूक बेटा माहटर बनि गेलै। खूनिया माहटर। ठीके कहै छलै, ढोढाइ गुरजी- हम तँ िन-चाउर लऽ कऽ पढ़बै छलौ। लेकिन अजैया खून लेत।”
“की भेल मड़र?”
“ई कालू मड़र, सार अपनाके लाइट सहैब समझै छै। अपना धीया-पुताके सनका देलकै। िरहा कुता जका लोकके काटनो फिड़ै छै।

हमरा छौड़ाके अंगा फाड़ि देलक। मारैत-मारैत खून बोकरा देलकै। ई बहीचो मैनजन छी आकि काल। ओकरे धीया-पुताके आइ हम किछु देबै।''

कालू मड़र ओमहरसँ अबैत छलै। गाड़ि सुनिते गरजैत कहलकै- ''ऐ रामरती, मुँह खाली नै कर। मरदक बेटा छे तँ हमर कोनो बेदराके हाि लगा कऽ देखही। ओहीठाम हाि काटि देबौ।''
कुताक झुंड एक दोसरपर भूकए लगलै। धीया-पुता सभ किताब लऽ कऽ पड़ाएल।
''भाग रौ खून खतरा हेतौ। दूनूक बीचयादवाद लाठी-भाला लऽ कऽ आकि गेल छै। टोलमे हड़कम्प मचि गेलै।''
मुँहपुरख सभ बीच-बचाव कऽ रहल छै। ''आपसमे किएक लड़ै छी। सबूर कर । शान्त रहू मड़र। गपके नै बढ़ाउ।''
ढोढाइ गुरजीके दाउ सुतरि गेलै। फेर क, ख, पढ़बैक बदला एक बोड़ा िनि लेतै। कुद्द कऽ आगा अबैत बजल- ''सभटा नाटक अजैया कऽ रहल छै। झगड़ाक जड़ि।''

दुनू पक्के लोक सभ ठेल-ठाढि कऽ हटा देलकै। असगरे अजय गाछ तर ठाढ़ अछि।
गाछसँ स्वर आकि रहल छै- एकटा बीयासँ हमर जनम भेल। छोट-छीन बीआमे नुकाएल छलौ। बाहर एलापर हजारो बीया हमरासँ आकि रहल अछि। एकसँ अनेक। हमरा छाहमे कतेक जीव-जन्तु सुखक साँसास लऽ रहल अछि। तैयो हमरेपर झटहा......।

~

१५

िनुषािरी मड़र टोलबैया सभके जाश्चाक गौरव-गाि सुना रहल छै। “है यौ, जीबू झा हमरा छोटा जाश्चा बुझैत अश्छ। हम सभ तँ मगिक िनुष िारण करए बला जाश्चा छी। हमरा सबहक जाश्चामे की नै अश्छ। ऐ जाश्चाक कतेको नेता देशके स्वतंि केलक। आइयो मंडल नेता अपन अलग पश्चचान बनौने अश्छ। जाश्चाक देवता बाबाक स्िान मगहमे छै। सुनै छी जे महतो बाबा जीवान्तेमे समाश्चि लेने रहश्चि। तँए ऐबेरक एलेक्सनमे मंडल सभके सोचबाक चाही जे केकरा जीतौलासँ हमर जाश्चा आगा बढ़त।”

“मड़र, जनौ आब श्चाकाश्चा श्चाअ।”

“श्चकअए यौ, हमर वंशज कोनो छोट अश्छ।”

“िूर अहीक जाश्चाक फुलचनमा एकटा नचश्चाया छौड़ी संगे भाश्चा गेल।”

“कश्चया यौ?”

“दस-पनरह श्चदन पश्चने। बाप तँ श्चदल्लीमे कमाइ छै। सुनै नै छी- ओकर माए बोश्चाया रहल छै।”

“चुप रह, एक-आि परशैंट सभ जगह एश्चना होइ छै। तइसँ की लोक छोट भऽ जाइ छै।”

~

१६

“बान्हल जूड़ा खूश्चये गेल, नयना नौर चुबै हे ललना रे दरदेसँ मन भेल श्चयाकुल श्चकनका जगाएब हे....।”

स्ीगण गीत गाब्ब-गाब्ब िन रोब्य रहल अछ्छ। मरद सभ तँ पंजाब थ्यल्लीमे खश्च रहल छै। औरत सभ काज नै करतै तँ खेती-पािरी नै हेतै। औरत सबहक खुशामद करए पड़त आब। थ्यारहत पाछूसँ कहैत छै- ‘‘पाश्चा सोझसँ लगा। ब्बराड़के पूरा गाछ्क दीहैक। हाि तेजीसँ चला।’’

‘‘चुप रह मौगा-थ्यारहत।’’ घुनघुनाइत स्वर।

औरत सबहक थ्यियान गीतपर छै। ओइ सूरपर हाि चश्च रहल छै।

‘‘पूवा जे बहै झलमल हे ननथ्द

आब पछ्छया बहै मिर हे ननथ्द भौजाइ अश्च पश्चाया लँ गेलै जमुनामे उछ्छ गेलै बाछ्क हे...।’’

‘‘चुभ्- चुभ......।’’ कतारमे िनक ब्बराड़ माश्चक सहारासँ ठाढ़ होइत! माथ्च-पाश्च-पकाश-बीआ-पगश्चा- श्चारन्तर थ्यकास! आछ्कपर सँ एक गोटे हल्ला करैत छै- ‘‘झटक लाल मड़र स्वगश्चाि गेलाह। दाह संस्कारमे शाश्चल हेबाक लेल हकार देल जा रहल अछ्छ।’’

‘‘करनी देखबै मरनी बेरमे।’’

‘‘ले सभ काजपर बज्जर थ्यार पड़लौ। अखने मरबाक टेम छलै।’’

‘‘रोपनी टाइममे तँ लोक लहाशोके झाथ्य दइ छै- औछाओन तरमे। की करबहक चलह-चहल।’’

~

१७

कालू मड़रक दुआथ्यपर जाश्चाक बैसकी भऽ रहल छै।

‘‘भोज तँ लोक अपना मनसँ करै छै। ऐ मे दोसर गोटे की कहतै।’’

“सुनै छी जे ऐ टोलपर केकरो पुरखा भोज केने रहै। कतेको सभा नोतल रहै। पहाड़ सन भातक गंज। ऐ पारसँ ओइ पार। कछु ने देखा पड़ै। आि मील तलक लोक पामे बैसल रहए। जे िया-पुता हरा गेलै से दू नपर भेटलै। रेलबे कातमे भोज भेल रहै। रेलक डरेबर, गाडउितर गेलै। अंगेजीमे पुछए लगलै। लौक पातपर दा-भात देलकै। खुशी-खुशी खेलकै। ओइ समैमे सम्प अपार रहै। ल शाल रहै। इलाकामे चरचा बहुत न तक होइत रहलै-हँ भैया िनुको जामे महाभोज चौड़ासी होइत छै। आब तँ फूटहा खा कऽ लोक जीबैत छै। कहा राजा भोज........।”

“बजहक जागेसर कतेक गोटैक भोज करबहक?”

“हमर हाल तँ बड़ खराप अछ, तैयो हम जासँ बहार नै छी।”

“हौ एकर बाप तँ लोकके खेत-पिर बेचा देलकै। एकरा केना छोड़ देबै। अजैयाक टेरही अही बेर तोड़ देबै।”

“भोज नै देतै तँ जासँ अलग कऽ देबै।”

कालू मड़रक िधयान जागेसरक पचकटबा खेतपर छै। टक लगौने छै कतेक नसँ।

िरमानन्द बाबूक िधयान जागेसरक चरका बड़दक जोड़ीपर छै। बेचब पड़तै। जेतै कतए। “हँ, हँ र पैया-पैसा भऽ जेतै। बहुत कमा कऽ रखने छै- झटकलल मड़र।”

“समाजमे कछु हैयत देखाबए पड़तै।”

“हँ हौ बना भोज केने स्वगक दुआ केना खुलतै।”

“अठगामा लोकके नो दहक। आर ओकरे अरजल सभटा खेत छै।”

अजय बीचमे आब्ब बजैत अछ्छ। “दबाइक अभावमे हमर बाप मरैत रहए, तँ केकरा पासमे र पैया नै रहै। पैच, रीन क्ष्कयो नै देलक। आइ सबहक लग र पैया छै। हम बुझै छी राजनैश्ता हम भोज नै करबै।” कहैत, जाश्लाक बैसकीसँ उश्ठ चश्ल देलक। “हे हे एना नै बजहक।”

“आ रे तोरी कऽ सबहक मुँहमे टाटी लगा देलकै। ठीके छै। जश्नया जाश्लाक चोटपर चढ़तै तश्नया बुझतै।”

सब क्ष्कछुसँ क्ष्कछु बजैत तामसे गुम्हरैत चश्ल देलक।

~

१८

खेलावन भगत चौबश्टयापर चकर पूश्म रहल छै। एकाश द्दस तकलकै। लगलै जेना अश्रिश्लाया भऽ गेलै। ओना तँ साझो-परात लोक एनए नै अबै छै तँ राश्लाक कोन गप्प। लोकके डर पैसल छै- जे सुनहटमे बाश्कि चौबश्टयापर मुँहरगड़ा पेत रहै छै। एक द्दन उश्यातवक्ताक कका चोटपर चश्ढ़ गेल रहै। खून बोकरैत-बोकरैत आँश्ख उनश्ट गलै। के जाश्न-बूश्झ कऽ आश्गपर टाग राखत।

“जाश्न बूश्झ नर करै श्ठठाइ....।”

क्ष्कनकर मैया बाश्मन जनमे। केकरा ओतेक श्नमाश्ता छै जे एमहर एतै। खेलावन भगत पूरा श्ताचेन अछ्छ। ओकर आँश्ख अड़हूल फूल जका लाले-लाल भऽ गेल छै। श्तीके डारमे कसने अछ्छ। चाकड़-चौरठ देह, नंग-श्ड़ंग। आगूमे सजावश्टक संग पसरल अछ्छ। अड़हूल फूल, अरबा चाउर श्सनूर। एक कातमे मनुक्खक खोपड़ीक कंकाल, दात क्ष्कचने। श्कैत आहूत। पाश्लामे जरैत दीप। श्मन आ घी

जोरसँ झौंकैत अछि। तँ आहूत ि श्कि उठैत अछि। आश्वाभाग अन्हश्वया राश्वामे िरमडीहीवालीक चेहरा चमश्कि उठैत छै। नमरह-नमहर खुगल केश। पैघ-पैघ आँश्विमे नीनक छाह। जेना श्वाशामे मातल होइ। अिश्वाज्जू साड़ीसँ देहक श्किछु भाग झापल, श्किछु भाग उघाड़। बन होइत आँश्वि खेलावनक गजनिसँ चौश्कि उठैत अछि।
“जय काली-वन्दी-जोगनी भरकाली-कपाली...।”

आगूमे जरैत दीप श्वदश ताकए लगैत अछि। “ओने नै एमहर देख। िकैत आश्वा श्वदश।” खेलावन गरजैत अछि- “जेना कहै छियौ तश्विना करैत जो। हमरा औडरके अवहेलना करबै तँ अलटरबाके स्ि ी जका सौसे देह आश्वा िश्कि उठतौ।”
िरमडीहीवालीक ठोर सुखा रहल छै। बजतै से सटा नै छै। “नै यौ भगतजी। जश्विना कहबै तश्विना करबै।”
“हँ, करैत जो। तइमे कल्याण छौ। जय काली।”

ऊपर श्वदस तकैत श्वाश्वाया उठैत अछि। “गे छुलही गात छोड़ नै तँ जरा कऽ भसम कऽ देबौ।”

भगत आँश्वि गुड़श्वि िरमडीहीवाली श्वदस तकैत अछि। “एमहर देख, हमरा श्वदस। मुँह श्कि अए गाड़ने छे। कलशा कऽ जल उठा कऽ पी ले।”
“आब हम नै पी सकब। हमरा बुते नै हएत। घंटा भश्विसँ तँ पीते छी- घोटे-घोटे। गलामे जलन भऽ रहल अछि। देहम जेना आश्वा नेश देने अछि। श्वानसँ आँश्वि बन भऽ रहल अछि। लगै छै जेना

आसमानमे उड़ि रहल छी। कही बेहोश भऽ जाएब तब।''
''चुप छुलाही देखै छी- बह अशाचक देल बेत। ऐसँ अखने....। मन साथि कऽ। पी ले। इलाज भऽ रहल छौ तँ राअि भरि कष्ट हेबै करतौ।''
डरे रि-रि कापैत रिमडीहीवाली कलशा उठा कऽ मुँहसँ लगा लेलक। साड़ी छातीपरसँ ससरि गेल। भगत जीक आँखि नाचए लगल। कामनाक अलौड़ सुनहट पाबि गन-गना कऽ उड़ए लगल। स्पशकि लेल हाि आतुर भऽ गेल। मन बन्नि मुक्त भऽ बनमे बौआए गेलै।
कलशाक बचल नीरसँ अपन अयास मेटबए लगल।
शाद कमिएक मास पछिने बीतलै। तखियासँ अजय गप्पके भरमाया रहल छै किन्तु कुछो पता नै लगि रहल अछि। ओकर भौजाइ कखनो जोगनी जका पगट भऽ जाइ छै तँ कखनो भूत जका अँगनासँ अपता भऽ जाइ छै। परसू शीलाक गपसँ ओकर मािा ठनकल जखैनसँ मिडीहीवाली आ भगतक खिस्सा ओ सुनलक तखैनसँ जेना ओकरा देहमे आगि नेश देलकै। ''अरे तोरी के। पूरा टोलके सुिरिबला ठीकेदारक घरेमे भोकार। लौक मने-मन कहैत हेतै- अपन घर-परिबार सम्हरबे नै करै छै आ दोसराके उपदेश देने घुड़ै छै। पर उपदेश कुशल...। अँगना लेल तँ अजय बेकूफ छै। पता नै खेलावन भगत की भरने छै अरमागमे।''

साझेसँ अजय अपना भौजाइक चमक-दमक देखि रहल छै। बिना कारणे छटहटी नै लगै छै। अजय ओकरेपर नजिर गड़ौने छलै। किन्तु छनेमे छनाक। कखैन अपता भऽ गेलै। अजय टाचिलेलक आ सभ घरमे इजोत घुमेलक। कहा छै कतौ। दुआरिपर ओकर भाय

जागेसर खोश्चया रहल अछि। अजय सोझे दौगल- गहवर दिस। हाय रौ तोरी। भगत गहबरसँ पार भऽ गेल छै। कतए हेतै? शीला चौबटियाा परक नाओं कहने रहै। घोड़ा जका दौगल अजय। हकमैत चौबटियापर जूमि गेल। आगूमे देखैत अछि। खेलावन भगत रिमडीहीवालीक साड़ी खोलि रहल अछि। एहनो हालतिमे रिमडीहीवाली साड़ीके भरि मुटीसँ पकड़ने अछि। चीरहरण सफल नै भऽ रहल अछि। अजय लपकि कऽ भगत जीक बेत उठौलक आ तड़ा-तड़ि खेलावनक पीठपर बरसबए लगल।

ऐ अपत्याशित आक्रमणक लेल भगत तैयार नै छल। ओकर दिमागक काज जेना बन भऽ गेल। तैयो पलटि कऽ गरजल- ''के छे? आइ जरा कऽ तोरा राख कऽ देबौ। जय मा काली.....।''
अगिला शब्द ओकरा मुँहसँ नै निकलि सकल। फटा-फट बेत ओकरा कपारेपर खसए लगल। छड़-छड़ा कऽ कपारसँ लहू बहए लगलै। मारि पकड़ने पड़ेबाक कोशिश केलक। किन्तु कैत आहूत अजय ओकरा देहपर उझलि देलकै।
''हौ बाप हौ। गे माइ गे।'' चिचिया उठल। अजय पाछूसँ गरजल- ''ठहर सार, आइ सभटा तंत्र-मंत्र तोरा पाछासँ भीतर ठूसि दै छियौ।''
''हौ बाप आब मरि जेबइ हौ।'' कहैत लंक लऽ कऽ भागल भगत। अजय किछु दूर रेबाड़लक। फेर आपस आबि रिमडीहीवालीके सम्हारि कऽ उठौलक कहुना घिसियाबैत टोल दिस चलि देलक।

~

१९

सौसे टोल खबश्च गनगना रहल छै। कतेक गोटे अरिश्चायासँ जगले रश्च गेल। कतेक गोटे अश्विश्चायासँ जगले रश्च गेल।

डर केना नै हेतै? सौसे टोल आश्चाभाग राश्चामे भूत कहरै छलै। कुहरौआ भूत। श्वश्वया नेस कऽ लोक समए कटलक। गाममे कोनो श्वजली बड़ै छै। डरे अन्हारमे कतेक लोक अँगनेमे लगही केलक। कि ाी छी कोन ठेकान। कही ऊपरेसँ झपश्च लेत तँ जुलुम भऽ जाएत। राश्चा-श्वराइत के केकरा देखै छै। सभ दूरेसँ ‘हो-लगऽ-लगऽ’ करत।

श्वकछु श्चम्मतगर छौड़ा सभ श्वानसरबेमे बाहर श्वाकश्च गेल। टोह लऽ रहल अश्च जे कुहरैक स्वर कोन श्वससँ आश्व रहल अश्च। सबहक अनुमान अश्च जे अकलू मड़रक पछुआर चोटाह छै, जइठाम जोड़ लगैत गहुमन मारल गेल, आही झँखुरा श्वससँ अबाज अबैत छलै। अखनी अन्हार पूरा फरीच्छ नै भेल छै। ओम्हर जेबामे साप-कीड़ाक सेहो एकटा डर। तँए सभ गोटे अकलू मड़र घरसँ पूरब तीन बश्चयापर ठाढ़ अश्च। पछुआरक ऊ जमीन शाइत परती अश्च। तब ने कोइ नै जोत-कोड़ करैत छै। ि र, हमरा तँ बुझाइत अश्च जे केकरो डीह-घराड़ी पश्चने छलै। हे रौ, ि रमानन्द बाबू पोखश्च श्वससँ आश्व रहल छै। ओकरेसँ पूछल जाए।

हे यौ, अकलू मड़रक पछुआरबला जमीन श्वकएक परती जका पड़ल रहै छै?

ि रमानन्द बाबूक पएर ठमकल। छौड़ा सभ श्वस तकैत बजल- “बूझल नै छह- जोतबैया श्वना खेतबा पड़ल परती। दुखन आ शान्श्चा मड़र दूनू भाइक घराड़ीबला अश्च ऊ जमीन।”

“ओ सभ कतए चल्ल गेलै?”

“दुखन मड़र बडड झगरौआ रहै। झगड़ाबला जमीन खोल्न-खोल्न कऽ कीनैत छलै। माने झगड़ा खरीदै छलै। एकबेर पछबल्या टोलक बल्यासँ पल्ला पड़्ल गेलै। ओ सात भाइक भैयारी। धिया-पुता हर-हाकिम। तेहेनके चपाठलकै जे सभ सेर-सम्पत्ति बिका गेलै। शान्ति मड़रसँ झगड़ा करैले कहै। मगर शान्ति मड़र किअए जाएत। मोकदमामे आि खरचा मँगै ओ नै दैत छलै। दुखन एक दिन ओकरो कान-कपाड़ फोड़्ल देलकै। बेचारे शान्ति मड़र अपन इस्सा किछु बेचलक किछु छोड़्ल-छाड़्ल कऽ शहर भाग्ग गेल। सुनै छी जे ओकर बेटा सभ बड़का-बड़का हाकिम बन्ल गेल अछि।”

“आ दुखन मड़र कतए गेलै?”

“जब रहै िन दिन आत अबै रे पहुनमा, आब दोस-बोन छोड़लक दुआर।”

खेत-पाि बिका गेलै। सेर सम्पत्ति सभ नाश भऽ गेलै। अन पानिक अभाव। धिया-पुता बिलल्ल गेलै। अनटूटू धिया-पुता दबाइ-दार क अभावमे मरि गेलै। हौ बाप डुबै छी। हौ बौआ हा ि-पएर चलाबह। एने तँ करम भेल रहै बाम। हौ, आब की कहेबह। शान्ति मड़र जखन्न मरलै तँ कफनक कपड़ा आ अर्च्छ्याक लकड़ी सभ चंदा माग्ग कऽ पुराओल गेलै। ओहि दिनसँ ओकर डीह-घराड़ी परती बनल छै। वंशक एकमाि टीका पंजाबमे बसल छै।”

“हौ, पछुआरमे कही शान्ति मड़र पेत बन्ल कऽ नै बैसल छै।”

“ि र, ई बहुत पहिलुका गप्प अछि। चलू आब फरीच्छ भऽ गेलै। किछु छै आक्क सभ लापता भऽ गेलै। देखबो करबै।”

डराइत-ि कमकाइत सभ पछुआरमे पहुँच्च गेल अछि। “कहा छै कतौ

श्चकछो। हवामे श्चबला गेलै साइत। रौ टाग बचा कऽ रश्चखहे। कही साप-ताप हेतौ।”

“रौ, श्चबचला झँखुड़ा बडड श्चझलै छौ।”

“रौ बश्चड़, हइया रौ कश्चबया पेत। मश्चब कऽ पड़ल छौ।”

“भाग रौ जल्दी।”

“ठहर, हमरा ठीकसँ देश्चख श्चझाअ दे।”

“नागटे छै। ितिी तँ कटहा झाड़मे फँसल छै। रहतै नै उघारे।”

“हौ बाप ई तँ खेलावन भगत अश्चछ। हौ, दौड़ै जा। देखहक कोन हाल भेल छै। मारैत-मारैत हगा-मूता देने छै।”

“पाश्चन ला रे। छीट मुँहपर। पूरा होशमे नै छौ। भुट वैदके सोर पार।”

स्ि्री-पुर ष ढेर लगल जा रहल छै। औरश्चताया सभ नागट देह देखते नाक नुआँसँ मुनैत पड़ाइत अश्चछ। “मारह मुँह ािय कऽ। हे रौ मुँहझौसा सभ, पश्चहने आकरा बस्तरसँ झाश्चप देबही, से नै।”

“श्चकअए भौजी ऐ सँ पश्चहने ई चीज नै देखने रही अहा?”

औरश्चताया सभ गाश्चर पढ़ैत पाछा घुसकल जा रहल अश्चछ।

“हौ सौसे देहके झड़का देने छै। पीठीपर लाठीक चेन्ह छै।”

“होशमे आश्चब गेलै। की भेल भगतजी?”

कुहरैत बजए लगल। “हौ, असल चंडाश्चलन जोगनीसँ युद भऽ गेल छल। ओहने कसगर भूतक सेना छलै- ओकरा सँगे। कहुना राश्चत भश्चर लड़ैत-लड़ैत गामके बचेलौ। हमर दशा तँ देश्चखते छहक। तोरा सभके बचाबै खाश्चतर.....।”

“आ रौ तोरी के, इएह छलै कुहरैबला पेत। गौआँ-घर आ तँ उल्टे एकरे माश्चनतै, अन्हश्चरया राश्चतमे। लुका लऽ कऽ झड़काबैत।”

“हे यौ भगत, अइठाम केना पहुँचलौ?”

“सभटा भूत, जोगनी, देवीके माथ्र कऽ भगा देथ्नएक। आपस होइत काल बेहोश भऽ कऽ थ्रार पड़लौ। ऐ टोलक लेल तँ हम अपन जान अरपन कऽ देथ्नऐक। आब जाने समाज।”

“थ्नि छी अहा भगतजी। टोलक लोक अहाक सँग अथ्छ अहाक लेल तैयार अथ्छ सभ जी-जानसँ।”

“देखहक हौ, रिमडीहीवालीके लोक सभ टागने जा रहल छै। अजय पाछासँ दौगल जा रहल छै।”

“सुनै छी अस्पताल जा रहल छै। पुछलाक बादो थ्रकछु नै बजै छै अजय।”

“बजतै कतएसँ। गप्पे हेतै ओहने। जे बजलासँ......।”

अजयके नाम सुथ्नते खेलावन भगत टन-टना कऽ ठाढ़ भऽ गेल। पथ्छम थ्रुस चथ्न देलक। “हे यौ भगतजी, अहा कतए जाइ छी। अहाक तबीयत बडड खराब अथ्छ। चलू गहवर घर पहुँचा दैत छी।”

“नै, हम आब नै ठाढ़ रहब। हम जा रहल छी। हमरा बहुत दूर जेबाक अथ्छ। गुरसँ भेट करबाक अथ्छ। वएह हमरा जान बचा सकैत अथ्छ। नै तँ राथ्नमे की हएत से पता नै।”

“हे यौ सुनू भगतजी, कनीकाल मोन माथ्र सुस्ता थ्नअ।”

“नै-नै आब नै रोकू हमरा। जुलुम भऽ जेतै।”

दुलकी मारैत पथ्छम थ्रुस चथ्न देलक। टागमे जेना पाथ्रव लथ्रा गेल हुअए।

औ तथ्नना लोगोक मनमे जेना पाथ्रव लथ्रा गेल हुअए।

“रौ, राथ्नमे सबेरे घरक भीतर थ्रछौन पकथ्ड़ लीहे। साझे लगही झाथ्ड़ कऽ कऽ लीहे।”

“चोर-छीनारके खौब सुतरतै।”
मरद भऽ कऽ मौगी जका थकएक गप्प करै छी। चल, अपन-अपना डेढ़हि्ी थजा। रोइया नै भगन हेतै केकरो।”
ईह, बड़-बड़ घोड़ी भासल जाए, छोट घोड़ी कहए कहा छै पाथ्न।

भोरका सुरज उथ्म आएल अछ्ठ। पतापर सँ ओसक बून चाथ्ट रहल अछ्ठ। बसातक ठण्ढीसँ देह थ्महथ्न रहल अछ्ठ। थ्मड़ै-चुनमुनी अहारक खोजमे चथ्न देने अछ्ठ। पाथ्नक जीव सभ पोखथ्नमे हलचल शुर कऽ देने अछ्ठ जेना। थ्मरहतक स्वरके संगे बड़दक घण्टी बाथ्न रहल अछ्ठ। टोलसँ ऊपर ुइया उथ्ड़ रहल अछ्ठ। सूतल पकृथ्न जेना शनै: शनै: जाथ्म रहल अछ्ठ। थ्कन्तु ऐ टोलबैयाक मापिर शंका आ डरक छाह पसरल जा रहल अछ्ठ।

~

२०

कालू मड़रके अँगनासँ दुआथ्न थ्न लोक सभ सह-सह कऽ रहल अछ्ठ। थ्कछु लोक गप्प हाथ्क रहल अछ्ठ। गीत-नाद भऽ रहल छै।
“कालू मड़रके अँगनामे होम होइ छै- जाप होइ छै हौमक ुइया अकास उथ्ड़ जाइ छै।”
अँगनामे औरथ्नाया सभ गीत गाथ्न रहल अछ्ठ। घरमे हवन कुंड जथ्न रहल छै। होम-जाप भऽ रहल छै। केना नै हेतै। घरपर थ्मद बैथ्न गेल रहै। अशुद आ अपथ्मतर घरमे केना रथ्नतै।
ि‌ड़फड़ीमे एकबेर भुटाय वैदक घरमे साप मरबाक लेल छोट जाथ्ना दूथ्क गेल रहै। ओकरो शुद करबए पड़ल रहै। ई तँ साफ-साफ घरपर थ्मद बैसल रहै। भारी अपावन। मरल गाए-मालक सड़ल

मासु खाइबला श्राद। पण्डितजी कतेको परकारक लकड़ी मँगोने छै। घी, िमन, जअ-श्चाल, म‌ि सेहो सभ। होमक ि‌इया जतए-ततए जेतै। सभ शुद भऽ जेतै।

होमक बाद टोलबैयाके भोज-भात देल जेतै। देखै छहक ने चूला पजाश्च देने छै। तीमन-तरकारी कटबा रहल छै।
हौ, ई तँ श्चना मतलबक खरच भऽ रहल छै ने। आश्चर कौआ-पंछीक जखैन डेन दुखा जेतै तँ ओ गाछपर नै तँ चारपर बैसबे करतै। गाछ तँ आब बड़का-बड़का छेबो नै करै। हे रौ, कौआ-पंछी आ श्राद मे फरक छै ने। सुनने नै छी श्राद माश्च श्राद करे अिारा.....। की यौ साहेब। ओना तँ श्रादोक संख्या घश्च गेलै आब।
िर छोड़हु, आदमकद भेलासँ आदमी िड़े भऽ जाए छै। हँ हँ, तूँ सभ मनुक्ख छहक। और सभ तँ बानरे छै। ओइमे पश्चवतनि हेबाक चाही। कतएसँ बीचेमे भगश्चाया सभ आश्च गेलै हौ? मैयाक डाली उश्च गलै शाइत। केकरो सपन देने हेतै। हँ हौ, देखै छहक ने सभसँ आगू। डालीमे माइ सजल छै। तेकरा पाछू भगत बेतसँ इशारा करैत वाक् दऽ रहल छै। सभसँ पाछूमे भगश्चाया सभ भगश्चा गाश्च रहल छै।
......चकमक-चकमक करैत कहमासँ एलै हे मैया......। जेहने झाश्च बजौश्चाहार तेहने श्चरदंश्चाया। सुनहक की कहै छै- भगत। सुनु हे दाइ-माइ सकले-समाज। हमरा सपन देलक माइ। जे हम श्चालौट-लोढ़ीमे परगट भऽ रहल छ्छौ। कोइ मसाला श्चस कऽ नै खो। पनरह श्चनक बाद सभ अपना देव-श्चतर लग माि लगाश्चहे। पूजा-पाठ केलाक बादे मसाला श्चस कऽ खा सकैत छहक। दस गामसँ

माथ्था-चाथ्था कऽ पूजा-पाठ कएल जेतै। तब देवी माइ खुश हेती। आब सौसे टोलसँ चाउर आ रपैया माथ्था कऽ भगत लग जमा करहक।

परसाल हल्ला भेल रहै जे औरश्चाया सभ अपना-अपना नैहरासँ लबका साड़ी, चूड़ी पश्चश्च कऽ सासुर एतै। आ सासुरमे घीसँ भश्च राश्चा दीप जरौतै। तब ने साड़ी, चूड़ीक दोकानदार सभ मालो-माल भेलाह। फेर ऐबेर कोनो मसाला कम्पनीबला नाटक केने हेतै। हौ, श्चाश्चक्त नै बनबहक। आश्चिकि सुिार नै करबहक। तँ ऐ अन्हरजालीसँ बचबो नै करबहक। चार भर तँ अन्हरेसँ घेरल छहक। ओ हो देवी-देवताके तँ श्चारमान लोके ने केलकै। दोख केकर?

ई अजय एक नम्बरके बकटेट अश्छ। जेकर श्चिया-पुता एकरा लग बैसतै सभ बकटेट भऽ जेतै। हम तँ अपना छौड़के ममहर पठा देने छी। देवी-देवता श्चकछो नै बुझै छै। अहंकार देखबै छै। नाश हेबाक पहर छै।

एहेन लोकके तँ गामसँ भगा देबाक चाही। तोरा सबहक श्वचार उनश्च गेल छह। पढ़बहक-श्चाखबहक नै तँ एश्चना हेतह। नया ढँगसँ खेती-बाड़ी नै करबहक तँ सभ श्चन भूखे मरबहक। फँसले रहबहक पुरना जालमे। मरैत-रहअ आ सड़ैत रहअ। मुरख चपाट।

हे रौ पश्चले अपना पश्चवार आ कुल-खनदानके सुिाश्च ले। पढ़ा-श्चाखा ले तब लबरपना कश्चहे। आ बेसी मुरख-मुरख कहबे तँ अखने.....।

ईह उश्चत कहैत घर झगड़ा। हा हा, चुप रहू मड़र। अस्श्चिर रहू। की मुँह लगबैत छी। अरे जे जस करै सो तस फल चाखा। हँ हँ ऐठामसँ चलू। नै तँ झगड़ भऽ जाएत। होमक काज भऽ गेलै। चलै चलू भोज खेबाक लेल। लोक सभ बैस रहल छै। भोज खाइबला

पंच सभ पाश्वा लगा कऽ बैसल छै। केराक पातपर दाश्व-भात, तीमन-तरकारी परसल जा रहल छै।

हौउ, शुर कर भोजन।

रौ तोरी के, घी कहा पड़लै हौ, श्वसश्व गेलहक की?

नै यौ, घी तं सभटा होममे जश्व गेलै। बचल रश्वतै तब ने। सभटा आश्वमे डाश्व देलहक। ई तँ काश्वल लोकक काज अश्छ। वातावरण केहेन हम-मह करै छै। सुकराश्वयेमे तँ टीकमे तेल पड़ैत। कश्वयो-काल भोजे-काजमे जी कऽ घीबक सुआद मन पड़ैत छल। तहूपर बज्जर श्वरल।

जल-ढार भऽ गेलै। झब-झब खा ले। देखै छी ऊपरमे। श्वद फेर चकभौर माश्व रहल छै। कहुना केकरो चारपर फेर बैस जाए।

बैसबे करतौ। जतए एहेन अरिमी लोक रहतै आ देव-श्वतरके श्वदा करतै ततए कुछो भऽ सकैत अश्छ।

दाश्व-भात आ तीमन-तरकारी पाते-पात दौग रहल अश्छ। हौ पाश्व चला दहक। बक्-बक् गाड़ा लगैत अश्छ।

आरो तोरी के, भगै जो रौ। फेर कालू मड़रके चारपर श्वद बैश्व गेलै। देखहक हौ, जुलुम भऽ गेलै। श्वद तँ ओंघरा कऽ श्वचा श्वर पड़लै। हौ, श्वद मश्व गेलै। दौड़ै जा हौ। सभ देखबाक लेल दौगल। भात-दाश्व टागसँ िगा गेलै। भोज श्वना गेलै। अि खा कऽ श्वअए भागल-लोक सभ। भागत नै तँ श्वदे जका जान देत। पश्वयाहा! महा अश्वष्ट केलक। तब ने एहेन गप्प भेलै। बेमश्वयाह माल हेतै नै तँ साप कटलासँ मरल मवेशी हेतै। ओहन श्वखाहा मासु खेतै तँ श्वद मरबे करतै।

फेर ई दोसरे बात। आब कोन उपाए हेतै हौ देव। हौ समाजक

लोक। महा अनरि भऽ गेलै। सभके ठकमुड़ी लिग गेल छै। गप्प कटाबिस चिस रहल छै। किछु डेरबुक सभ ससरलो जा रहल अछि। की हेतै की नै। अँइठ-कुँइठ सबहक देहमे लिग गेल छै। िैइले पिने।
एहेने समैपर लोक अपन-अपन गम्भीर िवचार रािख सकैत अछि। आब करहक बड़का होम-जाप आ महाभोज।
सभसँ फराक भऽ कऽ कालू मड़र मुँह बाबने ठाढ़ अछि। टक-टक आसमान िदस तकैत। मने-मन िबदिबदा रहल अछि। जेना कोनो मंि आसमानमे भेज रहल अछि। आिक कोनो देव-िपतरसँ गप्प कऽ रहल अछि।

~

२१
“ढोढ़ाइ गुरजीक भाय िमफैतके नोत देबही तँ हमरा सभ भोज नै खेबौ।”
“ठीके, ओकरा बि लगल छै। ने पूजा पाठ केलक ने गंगा असलान केलक। तब पातमे बैस कऽ खाएत। हम बरदाश नै कऽ सकै छी, ई गप्प। जािन आ िरमक गप्प अछि। एनामे तँ लोक बहैश जाएत।”
भोज होइसँ पिहले नोत दइकालमे दसगोटेसँ सलाह-िवचार तँ करै पड़ै छै। भोजक सुगन्िसँ लोग चट दऽ जमो भऽ गेल। आपसी िवचार करए लगै छै। हौ की भेल रहै? केना वि लगलै।”
“हौ हाटसँ साझमे खरीद कऽ लाबने रहै। रािमे बान्हले बड़द

मरि गेलै।”
“हौ, कहिसँ खेती-पाति करतै। बुझहक जे बजर खसि पड़लै।”
“बेमानीक टका-पैसासँ खरीदने हेतै।”
“बेचाराके ऐबेर खेती मार भऽ जेतै।”
अजय ठाढ़ भऽ कऽ गप्प सुनैत छल। ओकरा नै रहल गेलै तँ बजल- “ओकरा तँ दुख पड़ले छै। ऊपरसँ अहूँ सभ तँ परान खीचबाक लेल तैयारे छी।”
“आब सुनियौ अजयक गप्प। ई ऐ टोलमे कोनो बन्हन नै रहए देतै। सभके उगाहिके छोड़ि देतै। एकोबेर इनसाफक बात नै करै छै।”
“इनसाफक गप्प हम नै करै छी। अहा लबकीके बेटीक साथि इनसाफ केलिऐ? ओकर बेटी बीख खा कऽ मरि गेलै। के नै जनै छलै जे ओकरा पेटमे कनफटा बाबायाक बच्चा पलि रहल छै। कनफटा ओकरा सँगे जोर-जबरदस्ती केने रहै।”
“कहा गछलकै पंचैतीमे?”
“पंचैतीमे कतएसँ गछतै। ओइसँ पहिने कनफटा लोभ दऽ देलकै। जे हम तोरा संगे बिआह कऽ लेबौ। तोहर परिबारक खरचा हम अपना दोकानसँ चलेबौ। ऐ कारणे लबकीक बेटी पंचैतीमे कनफटाके बचा लेलकै। पंचो सभ टाका-पैसा लेने रहै। सभ बातके मरिया देलकै।”
“बादमे तँ सभ पंच लग गेल। पएर पकड़ि सभटा गप्प कहलक। अहा सभ कहा कऽ सकलौ-इनसाफ। उनटे ओकरा बेहया-बेश्या कहि कऽ दुतकारि देलिऐक। तब ने बेबश भऽ कऽ ओ बीख पीबि लेलकै। ओकर हतियाके पाप केकरापर गेलै? केकरा वि

लगलै?''

''हौ, हमरा सभ थ्यगल पास िाड़े छी। दू आखर जे पक्ष लेलक से आसमानेमे भूर करै छै।''

''हमरा सभ उनटा बजै छी की अहा सभ। सुकराशाक श्वन जे सुगरक बच्चाके मरखाहा भैससँ खून करबा दैत छी, ओइ बच्चाके भैस रगक्ष-रगक्ष जान लैत रहै छै आ अहा सभ ताली मारैत खेश्वआइत रहै छी। भैसके घुमा-घुमा कऽ लबैत रहै छी। जे कहुना सुगरक बच्चाके माश्व दै। एकटा छोट जीवके अपना सोझामे जाश्न बूझ्म हत्या कराबैत काला अहा सबहक इनसाफ कतए चश्न जाइत अछ्छ। ओइ समैमे सभके वि लगैत अछ्छ की नै? सभके वि लगल अछ्छ। सभ जाउ गंगा-स्नान। अहा सभके अन्दरमे वि करबाक पवृश्त्त अछ्छ।''

''हे रौ एकरा ऐठामसँ भगा। नै तँ सभके नाश कऽ देतौ। केकरो बजै नै दैत छै।''

''यौ मड़र सबहक नाशसँ नीक जे एकटाके नाश भऽ जाए। बहीचो..। एना कहुँ बजै छै।''

''फेर मुँह सम्हाश्व कऽ गप्प कर नै तँ ठीक कऽ देब।''

''हा, हा अस्थ्रिर रहू। झगड़ा भऽ जाएत। हे रौ हटा दुनू गोटेके।''

श्वकछु गोटे दुनूके ठेश्न-ठाश्न कऽ हटा रहल अछ्छ।

~

२२

चौबश्चयापर गाछ तर चाश्व-पाच युवक गप्प हाश्क रहल अछ्छ। जइमे

श्चहेसरा, अजय, घनमा, उश्चतवक्ता ठाढ़ अश्छ आ दूटा छौड़ा कनी हश्च कातमे फुसराहश्च कऽ रहल अश्छ।
रामरती मड़रके आगू दऽ कऽ जाइत देश्ख उश्चतवक्ताके नै रहल गेलै। “श्चत भश्चक श्चतबा, श्चतौसँ छोट, चलैत अश्छ श्चतवा टेरैत मोछ।”
रामरती मड़र तमसा कऽ पाछू घुश्च देखलक। गाश्च मुँहमे आश्च गेल छलै। छौड़ा सभके बेसी संख्यामे देश्ख घुनघुनाइत चश्च देलक।
“बूढ़बा बडड तमसाह छै। घमण्डी नम्बर एक।”
“खूटा बले परर श्छश्चया रहल छै। ऐ टोल परक जतेक मुँह पुरष अश्छ सभटा जीबू बाबू नै तँ अच्युतानन्दक गुलाम बनल अश्छ। तब ने झँपले-झापल ओकरे सबहक जूश्च-भाश्च अहू टोलमे चलै छै।”
“गुलाम तँ सभ बनले रश्चतै। संयोगसँ पंजाब-श्चल्ली कमेबाक रास्ता खूश्च गेलै। सभके आगा बढ़बाक रास्ता भेश्च गेलै। लबका हवा-पाश्च लगलासँ बुश्चिक श्चकास भेलै। नै तँ आइयो बेगारमे श्चरहत सभ जौड़ी बँटबाबैत, बाड़ीमे खटाबैत।”
“बेगार आइयो छै। खाली ओकर रप बदश्च गेलै। बुश्चिक श्चकास की हेतै। आइयो ऐ टोलक स्कूल माश्चक टोलपर बनले छै। आ आहीमे बान्हल साढ़ श्छश्चया रहल छै। बाआँ-आँ।”
“नै यौ, एकरा श्चरोमि एकता हेबाक चाही।”
“पश्चले पढ़बहक तब ने, एकता करबहक। संघषि तँ आगाक गप श्छऐ। जश्चमे स्कूले पार भऽ गेल छै।”
“पनरह श्चनपर मास्टर साहेब मुँहपुरखक दलानपर आश्च हाजरी बना लैत छै। सभटा मुँहपुरष मास्टरके दोस-मश्चम अश्छ।”
“हे यौ, लोग सभ तँ गाए-चरौनाइके नीक बुझै छै। कहै छै पढ़लासँ

की हेतै।”

“हँ हँ। नमहर भेलापर चोरि सीखतै।”

“लेकिन भोजके नीक बुझै छै। तब ने कते परिवार भोजक कारणे सभ जमीन जाि बेचि देलकै।”

“हौ, सुनै छी जे फुलचनमा गबैया एकटा नचनिया छौड़ी संगे भागि गेलै कतौ। आरे तोरीके उनटे बात।”

“नीक केलक। नटुआ मनोरिके बूढ़मे खाइयोपर आफत रहै छै।”

“गप्प तँ भसिया गेलै। रामरती मड़र किएक खिसिया गेल छलै?”

“हँ, बीत भरिक बीतबा। बुझलहक नै।”

“कहबहक तब ने बुझबै।”

“एकरा बापक नाम रहै-बिताय मड़र। भुटा आदमी आ बड़का-बड़का मोछ।”

“जमानाक गप्प कहै छहक।”

“हँ हौ सुनलाहा गप्प। एकर बाप बिताय मड़र चालिस बरसक रहै। ओही समैमे बिआह करैक लेल गेल रहै। रास्तामे ततेक कनलै जे भोरे माएके जाए पड़लै। गामक कातमे जा कऽ बितायके दूरिआैलकै। लेकिन बिआह भेलाक बाद अकललै बिताय। िती-कुरता पहिरने। मोछपर हाि फेरैत। टेढ़िया चालि िने। पाछामे साड़ी पहिरने छोटकी कनिया। कनिया-पुतरा सन।

ओही दिनसँ ई फकरा लोक कहै छै। बीत भरिक बीतबा बितौसँ छोट। आइयो तँए ओकरा बेटाके आँतमे लसिया जाइ छै। आकि हेतै औकरा बेटो बिआहमे सएह भेल।”

“की भेल छलै। बूढ़बा मड़र कहै छलै।”

“बिताय मड़र सोचलक अपना बेटाके बिआहमे गलती नै करबै। धिया-पुतामे बिआह नै करबै। बेटा जुआन भऽ गेलै तँ लड़की ओकरा

उमेरक भेटबे नै करै। लड़की जुआन घरमे राखतै तँ सभ कहतै- बुिढ़या बेटीके घरमे कुमारे रखने छै। अन्तमे िबताय मड़र अपना बेटाके कमे उमेरक लड़कीसँ िबआहलक। सभ कहै- बूढ़बा लिड़का कतएसँ उठा आनलकै। किनया नैहर आएल तँ सासुर जेबाक लेल तैयारे नै होइ। बूढ़बाके बेटा झगड़ा करै। कतए कहा िबआह कऽ देलक। अन्तमे िबताय अपना भाइक संगे समिधक घर पहुँचल। समिध घरसँ अनुपस्थित रहए। समिधन अँगनासँ समाद भेजलकै- अखनी हमर बेटी धिया-पुता छै। सासुर नै जाएत। िखिसया कऽ दुनू भाइ आपस भेल। गामसँ बाहर भेलापर देखलक- जे ओकर पुतोहु साग तोिड़ रहल अिछ। िबताय मड़रक भायके ललकारा देलक- ''की देखैत छी लऽ चल ऐठामसँ उठा कऽ। फेर बारहटा बहाना करतौ। गामपर छौड़ा छुरी फनका रहल छै।

ललकारा सुनैत ओकर भाए किनयाके कन्हापर उठा लेलक। किनयाँ बाप-बाप िचिचया उठल। आवाज सुिन चार भरसँ गौआँ दौगल। कतेक लाठी-फराठी दुनू भाइक देहपर टुटलै पता नै। फेर पंचैती भेल। किनया सासुर आएल। गभिवती भेल। िकन्तु बच्चा जन्मै काल माएके खा गेल।''

''तँ ई खाम सनक औरिनया के छी यौ? सुनै छी जे मंतरसँ गाछ हँकै छै।''

''गप्प हँकै छी िक अकासमे भूर करै छी।''

''िर, ई तँ चुमौनवाली लबकी छी।''

''हे रौ, भाग रौ रामरती मड़र फेर अबै छौ।''

सभ ि ड़फड़ा कऽ चश्चा देलक।
कौआ-मैनाक लड़ाइ शुर भऽ गेल। जेकरा श्चकयो नै देखलक श्चकन्तु गाछ देखलक। आर बहुत श्चकछु देखतो गाछ चुप्पे रहल।

~

२३
ि रमानन्द बाबूक दुआश्चपर महाभारतक कि ा भऽ रहल छै। कि ा बाचकके हाव-भाव आ टहकार लोगक मनके मोश्च लैत छै। संगे भोज-भात सेहो हेतै। "आइ श्चदन शुभ अश्छ। तब ने सरकारो शुभ श्चदनके एलेक्सन करबा रहल छै।"
"भोट खसबए लेल तँ हमरो जाए पड़त। पश्चले श्चकछु देर सुश्चा लैत छी। भोज सबेर होएत तँ खा-पीश्च कऽ भोट श्चारबै ले जाएब।"
"अखनी तँ माश्चाक टोलक लोक लाइन लगा कऽ भोट खसबैत हेतै।"
"हँ यौ, भोट तँ ओही टोलक इसकूलमे श्चारतै। ऐ टोलक इसकूल ओही टोलपर बश्चा गेलै।"
"इसकूलके तँ गौशाला बना देने छै। बड़का लोकक श्चीया-पुता ओइमे पढ़ैत नै छै तँ की हेतै।"

ि नुक टोलीक लोक ि रमानन्द बाबूक दुआश्चपर महाभारत कि ा सुश्चा रहल छै।
"जुआ खेलैमे रोपदीके हाश्च गेलै। पाण्डव सभ तामसे फनश्चक रहल छै। श्चकन्तु बेवश छै। झूठक सहारा नै लऽ सकैत अश्छ। आब चीरहरण हेतै।"

अजय दू-तीन संगीके संग लेने सभके कश्च रहल छै- ‘‘हे यौ, भोट थ्यरा श्वाअ। पाच बश्वसपर एहेन अवसर भेटै छै। अपना नेताके चूश्वा श्वाअ।’’
‘‘के जाएत। एतए अमरीत वाणी बश्वस रहल छै। वोट तँ दू घंटा बादो थ्यराएल जाएत।’’
िरमानन्द बाबूके ऐबेर नेता सभ भोटक लेल र पैया घूस नै देने छै। छौड़ा सबहक आगू ताश पसरल छै। मुँह पुरखक नाटक।
‘‘मंडल नेता एलेक्सनमे ठाढ़ छै।’’
‘‘की जाश्वा की पर-जाश्वा। एलेक्सनक बाद तँ कोनो नेताके दरशनो दुरलभ भऽ जाइ छै।’’
‘‘कोइ सरकार बनो। कुछो नै होइ छै। की भेलै पचासन बश्वससँ।’’
‘‘हँ हँ, पश्चले भोज खेबै तब भोट थ्याराबै लेल जेबै। ऐबेर तँ कोनो फायदो नै छै।’’

तीन बजेमे खा-पी कऽ सभटा िनुक टोलीके लोग भोट थ्यारबए लेल पहुँचल। अच्युतानन्द बाबू आँश्वि उनटा कऽ तकैत अश्छ।
‘‘एतेक लोक कतएसँ आश्व गेलै।’’
अच्युतानन्द बाबूक जेठका बेटा उश्चातवक्ताके िश्कयबैत अश्छ। ‘‘रे पाछू हट। तूँ भोट थ्यरा लेने छीही।’’
‘‘हम तँ अखनी एबे केलौ, भोट थ्यरा कऽ जाएब।’’
‘‘भाग, हमरा इसकुलपर सँ।’’
‘‘केकरो बापक इसकुल नै श्छए।’’
‘‘सार, बापक नाम लैत छे। भेट करा देबौ।’’

“मार चाश्च चमेटा रौ।”

िप्पर-मुका चलए लगलै। अच्युतानन्द बाबूक इशारा पाश्च पुश्चाश्चया डण्टा बश्चसए लगलै।

“फटाक.... सटाक.......।”

हड़श्चड़ो मश्च गेलै। लोक बाप-बाप श्चश्चया उठल। उश्चतवक्ता माश्च खा कऽ बाहर श्चकलैत बाजल- “ठीके कहै छलै अजय। श्चकयो बात नै मानलकै। तँए ओते भोज खेलक चेला बश्च आ एते माश्च खा कऽ महंि भेल।”

दोगा-दोगी सभ भाश्च रहल अश्छ।

~

२४

सुरज डुमल हो वा िरती घूमल हो। मुदा अन्हार तँ पसरल जा रहल छै। अन्हार भेलासँ पश्चने शीला घर नै पहुँचतै तँ ओकर काका मारैत-मारैत चमड़ी खैच लेतै। केना नै मारतै? जवान-जहान लोक अन्हार-िन्हारमे घरसँ बाहर। अपन माए-बाप नै। ओकरा जन्मसँ पश्चले बाप ओकर माएके राड़-मसोमात बना कऽ उश्छ गेलै। शीला दस सालक भेलै तँ माए अनाि बना कऽ संसारसँ भाश्च गेलै। काका-काकीक सहारासँ श्चनगी कश्च रहल छै। िप्पर-मुका चलब कोनो खास नै। लाठीक चोट आ दगनीक दाग पड़लै तब खास गप्प भेलै। भूख सहाज करै छलै तँ देह दुबरा गेलै। समैपर खेलक तँ खायपेटी नै खेलक तँ भूखले रही कोश्चड़श्चया।

सभ दिनेसँ स्नेहक भूखल छली बेचारी। बचपनेसँ अजय आ शीला गामक गली-कुचीमे खेलने छलै। डोह-डबरामे नागटे नहेने छलै। एकर सभसँ नमहर कारण दुनूक माए सखी जका रहै छलै। दुनूक बीच खूब मेल। एक दोसराक कनौनाइ आ हँसौनाइ चलै छलै। खैर, ई छल बचपनक गप्प।

फेर जुआन भेलापर अजय शहर चलि गेल। आर ओतए अपन पढ़ाइ-लिखाइ पूरा करए लगल। कहियो काल छुटीमे गाम अबै छलै तँ शीलासँ भेट-मोलाकात भऽ जाइ छलै। आ सुनहटमे बैसि कऽ दुखक किछु पसारि दैत छलै। अजय बोल-भारोस दैत-दैत कखनो अपनो कानय लगैत छलै। परन्तु जखनि अजय शहर चलि जाइत छलै तखैन शीला असगरे दुखक पोखरिमे डुमकी मारए लगैत छलै। उज्जर आ कारी पाँखि फलकौने उड़ैत समए। लोगक उमेर बीतैत छै आकि समए। परन्तु बीतै तँ छै। कल्पना, यिात आकि दुनूक आकर्षण। समए सभके नापैत। दौड़ैत-पड़ाइत आगू बढ़ैत। बेदरा, जुआन फेर बूढ़....।
गामक लगीचेमे िरमानन्द बाबूके दसकठबा करजान छै। छठि पावनिमे खौब आमदनी होइत छलै। दसकटाक केरा पावनिमे र पैया उझलि दैत छलै। ओइसँ सटले डेढ-दू बीघामे काश-पटेरक जंगल। बड़का-बड़का घास-पात। कतएसँ ओते जन-मजूर भेटतै। अिहा काटल आ अिहा लगले रहि जाइत छलै।
एकबेर एकटा चीता बसेरा लऽ लेने रहै। डरे लोक साझे टाटी-बेनाठी लगा लैत छलै। ओइ भूतहा जंगल लग अजय ठाढ़ छै। बासिँ आपस जाइत शीलाके इशारासँ सोर पाड़ैत छै। शीला एने-

ओने देखलक आ सट दऽ करजानमे ढुकि गेल।
अजय पुछलकै- “नेगरी जका किएक चलै छी।”
“पएरमे कनी चोट लगि गेल रहए।”
“कथीसँ?”
“छोड़ू ने ऊ गप्प।”
“हमरासँ चोरा कऽ कोनो गप मनमे राखए चाहै छी। एकर मतलब हृदैसँ नै चाहै छी हमरा।”
“फेर अंट-शंट बाजि रहल छी।”
“ई भेलै अंट-शंट। अहा हमरा सोझामे झूठ बजब। एहेन हमरा विशास नै छल।”
शीला मुड़ी गोति लेलक। ओकरा आँखिसँ दू बून नोर खसि पड़लै। बझाएल कंठसँ कहलकै-
“हमरा काकाके सुभाव तँ बुझते छी। चारि-पाच दिन पहिले अहासँ गाछीमे भेट भेल रहए। चुगला सभ चुगली कऽ देलकै। ई खबरि सुनिते काकाके देहमे आगि नेस देलकै। ई तँ लाठी पातर रहै जे टुटि गेलै। नै तँ हमही मरि जैतौ। देह हाथमे तँ कम चोट अछि मुदा जाघक चोट....।”

अजय देखि रहल छै शीलाक जाघ। गोर चमड़ीपर कारी स्याहीयाह दाग पड़ल। आँखिमे नोर रहबाक कारणे झलफलाह देखा रहल छै। खोखीक आवाज सुनि दुनू भीतरी करजान दिस ससरि गेलै।
ओनए टोलपर दोसरे नाटक चालू भऽ गेल छलै। अजयके दुश्मनोक संख्या बहुत छै। जइमे सभसँ आगू छै खेलावन भगत। मुँहपुरखी छिनबाक डर छलै रिमानन्दके ओहो दुसमन। ढोढाइ गुरुजीके डर छलै जे अजय कही धीया-पुताके पढ़बए ने लगै। कालू मैनजनके

बात नै मानलकै। भोज नै केलकै। तँए कतेको दुसमन। कतेक परौक आ कतेक पत्यक दुसमन। दुसमनक बीचमे खबरि पहुँचि गेल छलै।

“अजैया आइ चोटपर चढ़ि गेल छौ।”

“अकलू मड़रके सभसँ आगू राख। ओकरा भतीजीक इज्जत खराब कऽ रहल छै ने।”

अकलू मड़र तामससँ गरमा गेल छै।

“जँ इज्जते नै बचतै तँ जी कऽ की करबै।”

अधिलगौना सभके नीक मौका भेटि गेल छै। “ई सरबा अपनाके शहरी बुझै छै। देहातक इज्जतके ऊ की जनतै। बेरा-बेरी सबहक इज्जत-प्रतिष्ठा बेरबाद कऽ देतौ।”

“हम तँ कहै छिऔ। राफ-साफ कऽ दही-एकेबेर। सीरि गरदनि काटि देबै। ने रहतै बास आ ने बजतै बौसली।”

सबहक आतंकिया बाघ गरजए लगलै।

युद कर वा देखू। आतंकिया प्रयास मेटेबाक उपाय।

भीड़-भाड़मे के केकरा देखै छै। जेकरा जे हथियार हाथि लगलै, उठा लेलकै। लाठी-भाला, तीर-धनुष, गड़ास-फरसा जेना बनैया सुगरके मारैत काल होइ छै। सभ एके संगे दौड़लै। “खेलावन भगत खबरि देने छलै केरा बगानमे दुनू रसलीला कऽ रहल छै।”

शीला आ अजय दोसरे संसारमे टहलि-बुलि रहल छलै। अजय कहि रहल छलै- “अपन-अपन टोल, अपन-अपन जाति अलगे-अलग। तब ने अपन जूलि चलतै। अन्हा गाममे कन्हा राजा। ऐठाम जान-पजान चाकलै छै- गहवर घरसँ। कानून चाकलै छै-मुँहपुरषक

गप्पसँ। बक्ष्ठ रहल छै- उनटा बसात। सभसँ छोट उनचास हाि।”
पैघ श्वासास लैत आगू बजल- “करए पड़तै पश्चवतनि। पश्चवतनिक लेल श्वक जे श्वकछो करए पड़ै। श्वानश्चायोके होम करए पड़ै तैयो ससते बुझू।”
“हो.... हो..... हो..... लगे.....।”
“भुक... भुक....।” टाचकि रोशनी। कुता काश्वा रहल अश्छि। सुनहटके चीरैत अवाज- “घेर ले पूरा बगानके आ काश्च कऽ ओहीमे गाश्छ दबै।”
“चर-मर, खट-खट, िम-िम।” सैकड़ो पदचाप। सुनहटक श्वासास सन। अन्हारमे जेना भूत-पेत नाचैत-दौड़ैत....।
“बाप रे बाप। सबहक हािमे हश्चियार छै। चार भरसँ घेर रहल छै। जेना अपना सभ जानवर छी।”
स्वर िरिरा कऽ श्वाकलैत अश्छि-
“भागू ऐठामसँ। खुश्वाया सभ आश्च गेल।”
ऊँचगर माश्चक ढूहपर देखते शीला बोश्वाया कऽ कानए लगैत अश्छि।
“अहा भाश्चा जाउ अजय। अहाक जर रत छै। हमरा कारणे अहूँक जान चश्वा जाएत।”
“अहाके छोश्छ हम असगरे भाश्चा जाएब। हमरा एतेक डेरबुक बुझै छी। मरबै तँ संगे आ जीअब तँ संगे। हम कोनो अिलाह करम नै केने छी। हम भगबै नै, संघषि करबै। अंश्वाम सास तक पश्चवतनि आ पगश्वाक लेल हमर संघषि जारी रहतै। हम लड़बै अपना बाहक बलसँ। अन्हार श्वाश्वात हटतै।”
“काश-पटेरक वन श्वदस भागू। जल्दी कर । खुश्वाया सभ पाछूमे चश्वा आएल।”
घनघोर अन्हार। काश-पटेर आ घास-पातक जंगल। पाछूमे मनुखक

खूनसँ थयास मुझबैबला जानवर। भागैत-पड़ाइत दूटा पाणी.....।
“कतौ नै भेटै छै। ऐ काशमे नुकाएल छै।”
“रौ ठेकाश्न कऽ अन्दाजसँ तीर चला। जेतै कतए। आहीमे झड़का कऽ माश्व देबै।”
“हँ, सूखल काश छै। आश्चा लगा दहक। ओहीमे डश्च कऽ भसम भऽ जेतै।”
“आ जँ बहरा थ्वस भगतै तँ खुंडी-खुँडी काश्च देबै। ठीके बात।”

डेढ़ दू बीघा काश आ घासक जंगलमे आश्चा लगा देलकै। ि-ि चर-चर... चराक। थ्वरै-चुनमुनी, साप-कीड़ा, कतेको जीव सभ जश्व रहल अश्छ। लहाश आसमान थ्वस उश्छ रहल छै। ि इयासँ चार भर भश्व गेलै। गदश्वसान भऽ रहल छै। अजय आ शीला एम्हरसँ ओम्हर भाश्चा रहल छै। पएर खुँटी आ काटसँ लहू-लहान। देह काश पटेरसँ कटल। सन-सनाइत एकटा तीर अजयक बाश्चमे भोका गेलै। नोश्च कऽ फेकलक अजय। बलबला कऽ खून बहए लगलै।
शीला कानैत बजली- “हम नै जीअब आब। हमरा ऐ खूनसँ माग भश्व सकै छी अहा?”
समए कम छलै, अजय हँसैत बाजल- “श्वअ खूनक श्वनूर।”
भर भरा कऽ खूनक बून ओकरा मागपर थ्वरल। पाछासँ साड़ीमे आश्चा लश्चा गेल। अजय ओकर साड़ी खोश्च कऽ फेश्क देलक। आगू भागल तावत अजयके नुआ-वस्तरमे आश्चा पकश्च लेलक। ओहो अपना सभ कपड़ा-बस्तर फाश्च कऽ फैश्क देलक। दुनू वस्िहीन। खूनसँ भीजल देह। चार भरसँ आश्चाक लपट। बचबाक कोनो उपाय

नै। तैयो भागैत-पड़ाइत। एक दोसराक सहारा दैत। झोझमे एकटा चभच्चा देखाए पड़लै। डबरा सन गहीरगर पानिसँ भरल। चार भर कुकुआहा उड़ैत। आगिक झड़क। उठैत लपट। ुिइयासँ आन्हार भेल आँखि। जान बचेबाक लेल दुनू ओइ चभच्चामे ‘छपाक’ कूदि गेल। कनीकाल हलचल फेर एक-दोसराके आँखिमे देखैत दुनू शान्त। ईहो काल गुजरि जेतै आघात। ियि.. पैघ पतीका... साकी। दुनूक देह, मन आ आत्मात अपन-अपन काज कऽ रहल अछि।

िमडिीहीवाली आश्चर्याया कऽ अपन पतिा जागेसरके कहलकै- ‘‘लाज नै होइ छै। सभ गोटे आगि कऽ सहोदरा भायके झड़का रहल छै आ ई मुड़ी गोति कऽ बैसल छै। गे माइ गे माइ। आइ हमही मरि जेबै आकि सभके मारि देबै।’’

कहैत चारमे सँ ‘सड़ाक’ हँसुआ खीचलक आ केशकहाथि काटैत केलवनी धरि दौगल अेकरा पाछू जगेसरा लाठी लेने बमकि रहल अछि। पाछू लगल आर स्ीिगण सभ। चार भरक गौआँ-घर आ गगनचुम्मी िि रा देखि दौड़ल आबि रहल छै। अजय आ शीलाक हँसी आसमानक अटहासमे सम्मिलित भऽ रहल अछि। आगिक बीचमे पानि आ ओइ पानिमे हजारो जीव-जन्तु। ओइ बीचमे शीला आ अजय पूणिनग्न एक दोसराके आलिंगनमे कसने ठाढ़ अछि। अन्त नै अनन्त... पुनरावर्तनि आ विकास हेतु....।

सुजीत कुमार झा, -कथाकार सुजीतजी जनकपुरसँ प्रकाशित होएबला दैनिक मैथिली समाचारपत्र मिथिला डट कम क सम्पादक छथि।

लघुकथा- बाढ़ै

" यदि नवानी, अपने सन होशियार रहितै अहा कतेक सुख दैत छी, आ एकटा ओ छथि, जे हमर दूटा बच्चाके माय भऽ कऽ मात्र रहैत छथि । मनोजक स्वरमे विवशताक अभास नई छल । मात्र एकटा इच्छा छलन्हि – यदि नवानी सेहो उषा जका सुन्दरी, होशियार आ सुख देबऽ बाली रहितए तँ सम्भवता उषाके आइँखो उठा कऽ नहि तकतैथि । उषा दिश एकटक देखैत मनोज पुछलन्हि– " की, नवानीके विषयमे सोचिरहल छी ? "
नई, हम किएए सोचू हुनका विषयमे ? हम तँ हुनका देखनो नहि छियैन– उषा मुस्कैत मनोजक गर्दैनमे अपन बाहि लेपटा देलन्हि ।
मनोज सोचऽ लगलथि जे पढ़ल लिखल रुपवती उषाके कार्यालयमे डेग रखिते सभहक आँखि हुनकेपर नाचि उठैत हएत, कतेक मजामे रहैत हएत हुनकर हाकिम । जखन मोन करैत हेतन्हि लग बजा अपन आँखिक पियास मेटा लैत हेताह । ओना उषा ओहन नहि छथि । ओ मात्र हमरा चाहैत छथि ।

ओम्हर श्वदन मनोज बहुत पशन रहथि । कए श्वदनक बाद उषाक टेश्लफोन आएल रहैक आ हुनका अपन घर बजौने छल ।
उषा अपन घरके खूब सजौने छश्लह । मनोजक पश्लनक श्वंगार कएने छश्लह, पश्लनक खाना सेहो बनऔने छश्लह ।
मनोजके घर पहुँचलापर उषा गप्पक िममे पुछलश्लह “ एना कश्लयाि श्व चलत ? ”
“ की ? ” मनोज सहजश्लं श्वज्ञासा कएलश्लह । “ की, एहने सम्बश्व रहत हमरा सभक ? ”
“ तँ की गृहस्िीके झण्झश्वटमे पड़ऽ चाहैत छी ? ि र बताश्ल तहन एहन उल्लासमय क्ण नश्ल रहत आ ने एहन हल्लुक वातावरण ” मनोज हरेक शब्दपर जोड दैत बजलथि । पश्लाश्व यामे उषा श्लकछु नश्ल बजलीह ।
“ तमसा गेश्लयै ? हम तँ सम्झा रहल छलहुँ । ठीके छै, कोनो ने कोनो बहने नश्लनीके डाइवोसदिऽ देबै । आब उठू ।”
कए श्वदन सँ मनोज सँ भेट नश्ल होएबाक कारण उषा मने – मोन टूटऽ लागल छश्लह । नै कायालयमे मन लगश्ल आ ने घरमे । ओम्हर श्वदन बहुत श्वयाकुल भेलापर आलमारी सँ एल्बम श्लकाश्ल कऽ पना उन्टाबऽ लगश्ल । उन्टबैत – उन्टबैत एकटा फोटोपर नजश्व श्वि र भऽ गेलश्ल ।
अही सोफापर दूनु बैसल रहथि आ आटोमेश्वटक क्यामरा एडजस्ट कऽ जश्लद सँ उषाके माि अपन कन्हापर िएने रहथि मनोज आ ओम्हर ‘श्वक्लक’ ।
‘कतेक स्वाभाश्वक छैक ई श्वि ?’ ओम्हर श्वदन अनायसे मनोजक मुह सँ श्लकश्ल गेल रहश्ल । “ यू लुक बन्डरफूल.... लाइक ए बाइड”
“ तँ बना श्लअ ने” ।

जँ सम्भव होइतै.... आ मनोज चुप भऽ गेलाह ।
थ्कए चुप भऽ गेथ्नयै ? नाथ्नी सँ डेराइत थ्छयैक । उषा जाथ्न –बुथ्म कऽ बात उठौने रहथ्रि । नथ्नी सँ तँ नथ्न मुदा डर तँ अथ्छए । लोक की कहत ?
“ लोक ? ओ तँ एखनो कहैत हैत ” उषा कटाक कएलथ्क ।
थ्नर थ्नशानापर लागल रहैक । मनोज थ्नलथ्नला कऽ रथ्न गेलथ्र । थ्कछु काल तक थ्खडकी सँ बाहर देखैत रहलथ्र आ थ्कछु कालक बाद बजलाह “ अहा हमर गलफ्रिेण्ड नथ्न, अहा तँ पाण छी ।”
मनोजके स्वभाव बड़ थ्वथ्चत्रि छलथ्न । सथ्दखन ओ उषाके ओझराहथ्टमे िऽ दैत छलाह । ओथ्न थ्दन मुसलाधिार पाथ्न पडैत रहैक । एकाएक मनोज उषाक घर पहुँच गेलाह आ कहलथ्क चलू समान थ्कनै छी ।
“ एतेक पाथ्नमे ?”
“ हँ, दोकानमे भीड कम हैते ।” आ हँसऽ लगलाह । कथ्नयौ कोनो पावथ्न थ्दन चौकपर थ्नड होइतै तँ ओइ थ्नडमे मनोज उषाके लऽ कऽ हेरा जाय चाहथ्रि । जाथ्न सँ हुनक गथ्नथ्वथ्र सँ लोक अनजान रहैक आ कथ्नयो अबेर राथ्नथ्ि खाली सडकपर घुमैत रहबाक आनन्द लेबऽ चाहथ्रि । कतेक थ्वरोधिाभास छल ।
कोनो– कोनो थ्दन तँ मनोज आथ्न कऽ घण्टो सोफापर सूतल चुपचाप अपनेमे हेराएल रहैत छलाह । तखन उषा सोचथ्र सायद थ्वजनेसके कोनो चकर हेतैक वा थ्नकर ओझराहथ्ट नथ्नी नथ्न बुझैत हेतीह ।
चौक कऽ उषा घडी थ्दश तकली । एखन देर छथ्क हुनका आबऽ मे, हम नहा लैत छी । तखने डोरबेल बाथ्न उठल ।
एथ्न समयमे के आएल सोथ्चते दार खोथ्न कऽ देखलथ्क तँ मनोज

ठाढ़ छलाह ।

“ अहा कायालय सँ चल एलयै । मनोज अबते उषा सँ पश कएलखह ।

“ गेबे नह केलयै ।”

“नकए । ”

अहा जे आबऽ बला छलहुँ ।

“ से अहाके पनह सँ पता छल”– मनोज पुछलथ ।

हँ अहाके पसनक खाना बनौने छी । आई कोनो बहना नह चलत, आइ एतै खाय पडत– कह बारिममे चल गेली ।

लाल रंगक पारदशी साडीमे ओ बहुत सुन्दर लाथ रहल छलीह । मनोज पत्रिकाक पना उनटा रहल छलाह । सेन्टक सुगन्ध सँ उषाक सपताके आभास होइते मनोज मुडी उठा कऽ देखलखह आ लपक कऽ हुनका अपन बाहमे कस लेलखह ।

ओम्हर नमनीके फुसति कहा छलखह ? ओ मनोजक व्यस्ततापर अपन तामस देखाबऽ लगैत छली । मनो नीक जका गप्प नह करथ, मनोजक ई उपेक्षा हरेक कार्यमे देखाइत छल । अपन आदत अनुसार घर अबते स्कूलके बच्चा जका घडी, पेन, चश्मा एम्हर ओम्हर राख दैत छलथि । मुदा दोसर दन सभ व्यवस्थित रहैत छल । यद नमनी तमसा जाइत तँ कोनो समान तकैत तकैत मनोजक स्थिति टूट जाइत छल ।

नमनी नुका कऽ सभ काज देखैत रहैत छली आ आब व्यवस्थित कऽ दैत छली । आ आँखए आँखमे सल्लाह भऽ जाइत छल ।

“ की सोच रहल छी ?” उषाक पशपर मुस्कैत मनोज हुनका दश देखैत बजलाह“ अहांक वषयमे, कतेक काज करैत छी अहा ? एकटा नोकरनी राख लाअ ने”

आइ काल्हिक पढल लिखल लडकी नोकरी सेहो करैत अछि । घरके काम आ उपर सँ घर बला, साउस, ननदिक उलहन सेहो सहैत रहैत अछि ।

“ तएँ अहा बियाह नै कएलहुँ ? ” मनोज पुछलखिन्ह ।

“अहा सोचऽ के अवसर कहा देलहुँ” ई कहि मनोजके अपना दिश खिच लेलखिन्ह ।

नमिनीक यादके मनोज बिसरऽ चाहैत रहथि । तएँ हुनका अपना सँ अलग कऽ बजलथि – भूख लागल अछि, चलू खाइ छी ।

उषा नाना पकारके व्यञ्जन बनौने छलीह । आसन कऽ आगामे पडोसि देलीह । मनोज अपने धुनिमे खाइत रहलथि । उषा हुनक हरेक सुख सुविधामे जूटल रहलथि ताकी एतय आबि कऽ ओ कोनो पकारक कमी नहि महसूस करथि ।

खाना खाइत मनोज पुछलखिन्ह “ सिनेमा देखऽ चलब ?”

“ पिक्चर ? आइ, ?”– उषा सोचमे पडि गेली, महिनो बाद एतय अएला है आ अपन समय सिनेमामे बरबाद करब । ओ हरेक क्षणके संजोगि कऽ राखऽ चाहैत छलीह । एतेक पतीक्षाके बाद आई अवसर भेटल अछि । ओकरो सिनेमा घरमे बचकाना पेम पसंगके देखऽ मे बीता दी ? नहि एना नहि हैत सोचैत बजली । चाहि बाढि गेलै इन्टरभल भऽ गेल हेतै ।

“ ठीक छै दोसर शो देखब ।” कहि ओछाओनपर पडि रहलाह मनोज । उषा टेपरेकडरमे गजलके कैसेट लगा देलखिन्ह । संगीतक मधुरिता वातावरणके मनमोहक बनाबऽ लागल । टेपरेकडर मनोजे देने रहथिन्ह ।

उषा टयूबलाइट अफ कऽ नाइटलैम्प बारलखिन्ह । पुरना जमानाबला

लालटेन के आकारबला ओ नाइटलैम्प सेहो मनोजे देने रहथिन्ह । आब तँ हरेक पुरान चीज फैशन बनि गेल छैक । ओ केश झारि कऽ जुटी गुहऽ लगली । मनोजके एकटक अपना दिश देखैत ओ पुछलथिन्ह " की देख रहल छी ?"

" अतेक सुन्दर केश, किएक बन्हैत छियै एकरा ? खोलि दियौ ? खूजले नीक लगैत अछि । हरेक सुन्दर चीजके स्वतन्त्र रखला सँ ओकर सुन्दरता अओर निखरैत छैक । केशमे एकटा क्लिप लगा दियौ , बस्स ।" जुटी खोलि उषा केशमे क्लिप लगा लेली । हलका मेकअप कऽ कऽ साडी बदलऽ लगली । बहुत रास साडी मनोज किन देने छलथिन्ह मनोजके तँ बहना चाही । बाट चलैत कोनो महिलापर नजरि पडिते पुछि बैसथि " चाही ओहन साडी ? "

तँ की हम ओकर साडी देखैत छलियै ? ओ तुनकि कऽ कहैत छलि । " आओर की ? दोसर महिलाक रुपपर अहाक नजरि थिडबे टीकत । की पता ओ अहा सँ सुन्दर .... ।

" मनोज डोण्ट वी सिली ?" उषा पेम सँ...... ।

किएक पेम करैत छी हुनका । हरेक साडीके पाछु एहने कोनो मधुर पसंग होइत छलैक । ओ सोचमे डूबि गेली कोन साडी पहिर ? राखिमे हल्का बिछुया लगैत अछि अपने सँ कहैत आसमानी रंगक साडी, गलामे नेकलेस, कानमे हिराके टप्स आ हातमे सोनक चुडी पहिर ओ मनोजक आगामे ठाढ भेलि तँ रुपसीके देखि मनोज क्षणभरि स्तब्ध रहि गेलथि ।

अरे ! गहनाक पदर्शनी छै की ? एखन तँ सपनमा देखऽ जाइत छी । दिनमे जँ ई पहिरने रहितौ तँ कतेको महिला एहने गहना बनएबाक हेतु........... ।

प्लीज मनोज, कहियोकाल तँ बाहर निकलै छी । अपने देल समानके

एकबेर नहि देखब हमरापर केहन लगैत अछि ? एहने पेमालापक सँग दुनू घरसँ बाहर भऽ गेलाह ।

सिनेमा । पेमालाप, हीरोके पराक्रम मुदा दूनु अपनेमे लीन । फिल्म समाप्त भेलै । दूनु बाहर अएलथि तँ रातिके एगारह बजैत छल । ठण्डा ठण्डा हवा बहि रहल छल आ ताहुमे इजोरिया राति एकाधटा सवारी सडकपर चलैत छल । दूनु एक दोसरमे लीन मौसमक आनन्द लैत पैदले घर दिश बढि रहल भेलथि । बिजुलीके खम्भा पाछु छुटैत गेल । गप्पक जेना कोनो अन्त नहि छल, मुदा उषाके घर चलि आएल गलीके मोडपर मनोज गुडनाइट कहैत उषा सँ बिदा लेलन्हि ।

गलीमे पवेश करिते संयोग उषाके तीन चारिटा गुण्डा घेर लेलकन्हि । स्वयंके छोडबैत उषा मनोज मनोज चिचियाए लगली । मुदा मनोज तँ......... ।

खाली आँखि सँ उषा उज्जर वस्त्रमे घुमैत नर्सकेँ देखैत रहलीह । डाक्टर एखने जाँचि कऽ गेल छल । नर्स कहलन्हि –“ बेहोशीके हालतमे कोनो पडोसी अहाके एतँ पहुँचौने छल । चौबीस घण्टापर होश आएल अछि । “ नर्स दिबाइ दऽ कऽ चलि गेली । तखने मुस्कैत मनोज उषाके समीप आबि बैसि रहलाह । उषा आश्चर्यकर भाव सँ खिडकीपर बैसल चिडैके देखैत रहली जे बीच बीचमे उडि जाइत छल आ पुना ओहिपर आबि कऽ बैसि जाइत छल ।

केहन हाल अछि उषा ? ” उषाक हाथ अपना हाथमे रखैत मनोज नहुँऐ सँ पुछलन्हि ।

“ बस जीवित रहल छी ।” आ दोसर दिश ताकऽ लगलि ।

पुलिसमे रिपोट किएक नहि ? बेसी चोट तँ नहि आएल ?

नञ्ञ थ्रपोट नञ्ञ कएञ्ञयै – उषा रष होइत बजली ।
उषा ञ्छयर, एम्हर देखू, गहना लूटागेल सैह दुाख अञ्छ ने । जाए थ्रयौ गहना फेर बञ्ञ जाएत ।
“ बन्द्द कर एहन बकवास । आब हमरा गहनाके मोन नञ्ञ अञ्छ । ओ जेना आएल ओञ्ञना चञ्ञ गेल”– कहैत ञ्ञचुञ्क–ञ्ञचुञ्क कऽ कानय लगली ।
“ की देहमे बुहत ददिअञ्छ, उषा बताउ ने, अहाके कतँ चोट लागल अञ्छ ।”
“ चोट लागल अञ्छ हमरा हृदयमे”– कञ्ञ अओर कानऽ लगली ।
“ प्लीज ठीक सँ बताउ ने ।”
“ अहा तँ एना चञ्ञ गेलौ जेना हम अहाके केउ नई छी” – ओ बजली ।
मनोज चुप रहलाह ।
कहू ने, नञ्ञनीके एना छोञ्ञ कऽ भाञ्ञ जेञ्ञयै ? हम यञ्ञ नञ्ञनी रञ्ञतहुँ तखन ?
.. तखन हम अपन पाण दऽ कऽ सेहो हुनकर रक्ा कञ्ञञ्ञयै ।
तखन हमरा छोञ्ञ ञ्ञकएक भाञ्ञ गेलहुँ ।
उषा अहा नञ्ञ बुझबै ई बात । बदनामीके डर सभ व्यञ्ञक्तके होइत छैक । ञ्ञजनेस मैन छी । समाचारपञ्मे नाम छञ्ञ जाएत तँ फेर .... ओ बजैत बजैत रञ्ञक गेला ।
“ कहू न फेर की ? ”
“ अहा... नञ्ञनी...हमर मतलब...हमर कञ्ञया तँ नञ्ञ ने छी ... । अहा तँ... अहा छी .... ।

लघुकथा- चिकैत आश फुटैत कनोजश

अन्हरिया राति सुनसान जंगल । बीच पकी सड़क पर रातुक नरवताके चीरैत रकक अवाज गूँजि रहल छल । डाइवर ओहि सुनसान सड़क पर तीवरगति सँ रक आगा दौड़ा रहल छल ।
डाइवरक बगलमे बैसल खलासीके दूर सँ ओहि सुनसान आवाि जंगलमे कोनो परछाही रक दिस अबैत बुझएलै । खलासी भयसँ कम्पित स्वरमे बाजल- "गूरजी..................... देखियौ आगा सँ कियो आबि रहल अछि ।"
डाइवर रकक पकाशमे दूर स्पष होइत महिला आकृतीक ध्यान सँ देखय लगैत अछि ।
"गुरजी, एहि सुनसान जंगलमे एतेक रातिमे महिला ? खलासी घबराइत बाजल ।
डाइवर गम्भीर भऽ गेल । कण-कण समीप अबैत आकृति पर नजरि स्थिर कएलक । टाग ओकर बेक दिस बढल ।
"गूर.............. रकू नहि, अवश्य कोनो गड़बड़ अछि ....गति बढ़ा कऽ बढ़ि जाउ ।"
डाइवर सोचमे पड़ि गेल । राजमार्ग...... कोसो तक कोनो घर नहि ....चार दिस बड़का-बड़का गाछ आ बोन-झाखुर । एम्हर तँ केओ दिनोमे नहि पयरे आकलैत अछि । एहनमे ई युवती........ । सलवार समीज सँ करोड़ी सेहो नहि लगैत अछि । लगपासक करोडी सेहो रातिमे जंगली जानवरक डर सँ असगर नहि आकलैत अछि । तहन ई अछि के ? एतऽ एतेक रातिमे कोना ? कतऽ सँ आयल आ कतय जा रहल अछि ? कोन समस्यामे अछि ?

ई सभ सोचैत–सोचैत डाइवर रकक गति कम कऽ देलक ।
ओम्हर खलासीक डर आओर बढ़ि गेल छल । ओ डर सँ कापय लागल छल । आ आतंकित स्वरमे पुना डाइवर सँ कहलक जे 'नहि रकू, भागि चलू ।'
मुदा डाइवर खलासीक गप्प पर ध्यान नहि दऽ ई आशय कएलक जे एहि युवतीक मदत करब । अता ओ एकदम युवतीक लग आबि रक रोकलक । किछु क्षण युवतीके गौर सँ देखलक । युवती कम उमेरक छल । कम्पित स्वरमे युवती सँ पुछलक– " तो के छे आ कतय जाए चाहैत छे ? "
युवती किछु सोच ऽ लागल कि ओ केना आबि गेल एहि सुनसान जंगलमे...................... अमावश्यामे.............ओकर कण्ठ अवरुद भऽ गेलै । ओकरा बुझाएलै अवश्य ई सपना अछि । आ कोना एतऽ आबि सकैत अछि । एते रातिमे............अछि सनिमे ....अवश्य ई सपने अछि । आ ई विचार अबिते ओकरा भीतर अदभूत रोमाञ्च भरि गेलै ।
कखनोयो काल एना होइत छैक । सुतैत–सुतैत सपनाक अवस्थामे अचानक व्यक्ति एतेक जागरुक भऽ जाइत अछि की ओकरा जान भऽ जाइत छैक की ओ जखन चाहय, आँखी खोलि दुखद स्थिति सँ दूर जा' सकैत अछि । आ जखन ओकरा विशास भऽ जाइत छैक, आँखि खोलब आ दुखक स्थिति सँ दूर हएब ओकरा अपना हाथमे छैक, तखन ओकरा अपना शक्तिक अभास होइत छैक जे हम जे चाही कऽ सकैत छी ।
जखनकी अवस्था अेकरा अधीनमे छैक तखन ओ किएए नहि मनमानी करए ? अपन ईच्छाक पूर्ति किरय । ककरो की बिगड़तै ? ककरो पतो नहि चलतै ई सपने तऽ छैक ।

तहन कि एक नहि अपन उत्सुकता शान्त कऽ सकए ? एहि सँ बढ़िया अवसर आब कहिया भेटत ? बाबुजी हरेक समय कहैत छथि जे हमर बुद्धि बड़ तेज अछि । हमरा चिकित्सक बनएबाक इच्छा छन्हि हुनक । एखने सँ एकर घरमे तैयारी भऽ रहल छैक । घरमे माय नहि अछि तऽ की

बाबूजी आ भैया तऽ छथि घरमे पुस्तकालय अछि । सिनेमा देखबाक, उपन्यास पढ़यक छूट नहि अछि । टीभी कार्यक्रम सेहो चानल-चुनल देखबाक अवसर भेटैत अछि ।

आगा बढ़क अछि तऽ एकाग्रचित भऽ उद्देश्य पूतीक हेतु लगबाक अछि । हुनका सभके अहि सँ बेसी अपेक्षा नहि अछि । ओ अपनामे मस्त किताब सँ सटल रहैत अछि ।

किछु दिन सँ एकटा शब्द बेर बेर ओकर मस्तिष्कमे हथौड़ी जका बजैर रहल अछि – “की होइत छैक बलात्कार ?” किए बलात्कारक बाद लड़कीक आत्महत्या करय पडैPत छैक, परिवार जन मुह नुकबैत रहैत अछि । एतेक सोचि ओकर बुद्धि हारि जाइत अछि । शब्दकोष छानि मारलौ, मुदा अनिश्चित भेटल ,एहन कोन जबरदस्ती एहन कोन बल-पयोग ? किछु बुझबामे नहि आबि रहल छल । ई की छैक । ओकर उत्सुकताक अन्त नहि छलै । किए नहि आई सपना पूरा कऽ सकय ? जानो भेटि जाएत आ आत्महत्या सेहो नहि करय पड़त ।

तीन वर्षपूर्व पिड़ोसक रितू आन्टी ओकरा अपना घर लऽ गेल छल आ बहुत बैजानिक ढंग सँ ओ ओकरा ‘फैक्ट टच लाईफ’ के विषयमे बतौने छलै । अचानक ओकरा सभकिछु नव लागि रहल छल जेना ओ जागि गेल हो । ओकरा किछु बेसी देखाई देबय लगल हो, किछु आवाज सुनाय लागल छल । किछु स्पष्ट बुझयमे आबय लागल छलै

। मुदा बलात्कार शब्द माि एक रहस्य बनल रहल । से एकरा जानय–बुझयके एखन सँ बढ़िया अवसर अओर की भऽ सकैत अछि ?

डाइवर उत्साह बढ़बैत पूछलक, “ कतय जाएक अछि बेटी ? आउ, बैस जाउ । आगा शहरमे छोड़ि देब । एतय कोसो तक कियो लोक नहि रहैत छैक ।

बहुत मुश्किल सँ जयन्ती किछु हिम्मत जुटा पौलक । ओ सोचय लागल किछु बाजय पड़त तऽ झूठ किए नहि ....। से बाजल– ‘बाट भुतिआया गेल छी लिफ्ट दऽ दीअ ?’

“मुदा अहा एलौ कतय सँ ?”, घर सँ भागि कऽ एलौ । बिना किछु सोचने उतर देलक । फेर देखलक दूनु व्यक्तिक उत्सकुकता किछु शान्त भऽ गेल छल । से आगा बाजल– “ दिनभरि एहि सड़कपर चलैत रहल छलौ । जखन थाकि गेलौ तऽ एकटा गाछक जाड़िमे सूति रहलौ । एखन आखि टुटल... बहुत डर... लागि रहल अछि । ”

“ से त ठीक अछि मुदा जएबाक कतय अछि ?” डाइवर पूछलक । एकर उतर ओकरा लग नहि छल । ओ चुप्प रहल । “ ठीक छै चलू, बैसू । शहर तक छोड़ि देब । ”

ओ सोचय लागल कि दूनु बीचमे बैसाक’ .... बाटभरि ओ हमरा सँ मजाक करत..... बलात्कार करत आ हमरा बलात्कार केना होइत छैक की होइत छैक, तकर जानकारी भेटि जाएत, मुदा से भेल नहि । दूनु सकुचि गेल आ ओकरा खिड़की लग बैसा देलक जयन्तीक डर भगावय के लेल डाइवर एकटा अभिभावक जका ओकरा उपदेश देबय लागल । शहर पहुँचला पर पुलिस चौकी लग उतारैत ओकरा माि पर हाि फेरैत कहलक– घर चलि जाएब.... वैह अहाक अपन

अछि..... अहाके नीक देखय वाला वैह सभ छथि..... '' कहि रकमे सवार भऽ चलि गेल ।
पुलिसक विषयमे जयन्ती सेहो बहुत किछु सुनने आ पढ़ने छल । ओ सोचय लागल की एखनो किछु नहि बिगड़ल । एखनो एतय काम बनि सकैत अछि । मुदा दूटा पुलिसके देखि ओकर करेजक धक धकी बढ़ि गेल, हाथ पाएर ठण्ढा होबय लागल ।
''के छे.... की काम छौ ? '' ''हम बाटे बिसरि गेलौ हएँ.... एतऽ बनि जाउ ?
दूनु पुलिस एक दोसर दिस देखय लागल ।
जयन्तीक हृदय धक-धक करय लागल
की शायद आब ओकर उत्कण्ठाक अन्त होबय लागल अछि । ओ भय सँ कापय लागल ।
'' की नाम छौ तोहर ?
''रना'' बुझि एतेक सजग छलैक कि ओ अपन सही नाम तक नहि बतौलक ।
बापके, नाम की छौ ? कतय रहैत छे ? की सोचै छे ? ओ ई सोचि कऽ एक के बाद दोसर फूसि बजैत गेल कि पता ई सपना नहि होअय...... सत्य कि गलत ? ओ अपन पितायजनक लेल कतेक लज्जाक कारण बनि जाएत । नहि-नहि स्वयं मरि जाएत, मुदा अपन परिवारजनयके कोनो हालतमे बेइज्जती नहि होबए देत ।
'' लगैत अछि कोनो अपराधी अछि'', एकटा पुलिस बाजल ।
एखने बन्द कऽ दू डण्डा पड़तै तँ सत्य अपने उगिल देत ।
'' नहि-नहि'' डरे जयन्तीक कण्ठ अवरद भऽ गेलैक । किछु कम्पित अपनाके व्यवस्थित करैत बाजल, '' अपराधी होइतौ तँ स्वयं एतय

अछतौ ? ९ ककाक छदाि छी । काका वकील छथि ।
हड़बड़ाहटमे एतेक सत्य ओकरा सँ बजा गेल छलै ।
" लगैत अछि घर सँ भागि कऽ आएल अछि, " दोसर पुरुस बाजल, "नवाछाग अछि एतय बैसय देब ठीक नहि अछि । बिना बातक बतंगड़ भऽ सकैत अछि ।"
जयन्ती किमकाइत नहुँए सँ बाजल– "हम घर नहि जायब" , कहऽ चाहि रहल छल हमरा सँग जे चाहैत छे से कऽ ले..... बलात्कार कऽ ले, मुदा नहि जाबि ओकरा कोन संस्कार आबि कऽ ओकर मुह बन कऽ देलक ।
"राखि कऽ हम तोरा एतय बिना मछिला पुरुसके नहि राखि सकैत छियौ । या तऽ तोरा चौकी जाए पड़तौक वा फेर नजदीकक मिशिलामे । बाकी काछि देखबै । आगा की करबाक छैक"– एक पुरुस बाजल ।
जयन्ती चुपचाप मिशिलामे आबि गेल । दोसर दिन कोनो तरहे जयन्ती मिशिला सँ बाकछि आएल । जयन्ती आब एक साइकल लग ठाढ़ तीन युवक सँग गप्प कऽ रहल छल । तीनू ओकरा ललाछित नजछि सँ घुछि रहल छल ।
जयन्ती सोझे पस्ताव रखलक, "हमरा अहा सिनेमा देखाएब?" ओ सभ किछु सोचैत एक दोसर दिस देखऽ लागल । " कि वस्तु छैक?"
"बलाछिक भागे सीक टूटल" दोसर हँसल ।
"ककरा सँग देखब" तेसर पुछलक । अहा तीनू के सँग" ओकर उतर छलैक ।
आउ हमरा साइकल पर बैसि रहु, ओहिमे सँ एक गोटे बाजल
जयन्ती कने झिझकैत संकोच सँ बाजल, " जी नहि हम पयरे चलब,

आ ओ सभ सिनेमा हाल दिस बढ़ि गेल ।'

जखन तक सिनेमा शुरु नई भेल ताबत स्थिति शान्त रहल । सिनेमा शुरु होइते मानू भूचाल आबि गेल । छीना झपटी शुरु भऽ गेल । ओ मिशा घबराहटिमे कखनो एकर तऽ कखनो ओकर हाथ हटबैत रहल । मुदा, अवसर ओकर आयनि सँ बाहर होइत जा रहल छल । जखन एक हाथ ओकर सलवार दिस आ दोसर छाती दिस सरकय लागल तँ झट सँ ठाढ भऽ गेल । फेर टवाइलेट जएबाक अछिलि कहि, जल्दी सँ बाहर निकलि आएल । दूटा युवक सेहो पाछु लागि गेल । किछु देरक बाद बाहर निकलल आगा दूनु युवकके ठाढ़ देखलक । झट सँ फेर टवाइलेटमे घुसि गेल ।

आ सिनेमा समाप्त होएबाक पतीक्षा करय लागल । सिनेमा समाप्त होइते भीड़क लाभ उठा कोनो तरहे ओतय सँ भागि गेल । आब ओ घर घुमैत भीड़मे सँ एक छल । ओकरा पता छलै, किएयो ओकरा ताकि रहल छै । भीड़मे अपनाकेँ नुकबैत अनजाने बाटमे ओ आगा बढैत रहल । एखन तक ओ एक अज्ञात भय सँ काँपि रहल छल, जेना कोनो चोरी कएने हो वा कोनो बड़का अपराध ।

सपना शायद सत्य भऽ गेल छल । ओ पूर्णरूपमे सत्यकेँ झेलि रहल छल । स्वापक सुरक्षा नहि जानि कतय हेरा गेल छलै । देखलक समीप मन्दिरमे आरती भऽ रहल छै । मन्दिरमे पवेश कएलक ओतय भीड़ छलै । ओहिमे ओ समाहित भऽ गेल । भय सँ शरीर सुन भेल जाइत रहैक तएँ एकटा पायामे सटि कऽ आँखि बन कऽ लेलक ।

कखन आरती समाप्त भेल आ लोक चलि गेल जयन्तीके पतो नहि चललै । आँखि खुजलै तऽ एकटा साधुके अपना दिस घुरैत देखलक

। कोनो स्पचाश्वात यनि जका आगा बढ़ल आ हुनकर चरण स्पशि कएलक । ओकर गरा अवरद भऽ गेल छलैक । श्वकछु बाजब ओकरा बसक बात नश्च छलैक ।

“ तोहर मनकाना पूरा हेतौ............उठ ियिसँ काम ले” जयन्ती उश्च कऽ ठाढ़ भेल । ओ साि्क आँश्च श्वस देखलक । एकटा श्चश्चि ज्याला िश्वक रहल छलै ओश्च साि्क आँश्चमे । साि् ओकरा अपना पाछा अएबाक हेतु कहलक आ यनिवत् हुनकर पाछु–पाछु जाय लागल । हुनक पाछु चश्च मश्चदरक पाणि पार करैत ओ एकटा कोठरीमे पवेश कएलक । श्वातर घुश्चते’ दार अपने िड़ सँ बन्द भऽ गेल । ओ बन दारके देखैत िकमका कऽ ठाढ़ भऽ गेल ।

“ चश्च आ’ “ पलश्च कऽ देखलक तँ भीतरक दोसर पवेश दार पर ठाढ़ साि् ओकरा कश्च रहल छल । श्चझकैत मोन सँ ओ दोसर दार पार कएलक तऽ ओहो िड़ाक दऽ अपने बन भऽ गेल । ओ डेरा कऽ, बन दार के देखय लागल ।

साि्क पुना आदेशात्मक स्पर ओकरा कान सँ टकरएलै– “चश्च आ” देखलक ओ आब श्वातर तेसर दार पर ठाढ़ छल । श्वकछु क्ण ठाढ़ रहल ।

भश्चत्पूणाश्चिशास सँ पुना ओ आगा बढ़ल । िड़ाक दऽ तेसरो दार बन भऽ गेल । आब साि् चाश्चम दार पर ठाढ़ ओकर पतीक्ा कऽ रहल छल । जयन्तीक डर सँ हृदय िड़कय लगलै, गर सुश्च गेलै । पैर कापय लगलै । ओ श्चनेह सँ भश्च गेल की साि्क भेषमे कतेको राक्स घुमैत अश्च, मुदा की करत..... बेसी सँ बेसी ओतबे करत ने, जकर श्चजासा सँ एतय िश्च आएल छी ।से अपनाके मजगुत कऽ दार पार कऽ गेल । । देखलक आगा एकटा आओर

दार छल, जतय सा़ि ठाढ़ छल । केबाड़ लग सँ ूपि जड़बाक सुगन्धि ओकर तनमनमे व्याप्त होबय लागल । एकटा छोटका दीप सेहो जरैत देखि रहल छल । मदहोश वातावरणमे ओकर तनमन शिथिल होइत बुझेलै ओतय ओकर बुद्धि सजग होइत जा रहल छल । ओकरा विशास होइत जा रहल छल कि एहि पाचम दार के पार कएलाक बाद बाकी सभदार ओकरा लेल सभक्षनक लेल बन्द भऽ जाएत ।

“ आ तखन सा़ििक फेर ओहने आदेशात्मक स्वर सुनाए देलक । जयन्ती हुनकर बात जेना नई सुनने हो । ओकर पजा ओतय सँ भगवाक आदेश दैत हो एहन अनुभूति होइते घुमल आ जाही बाटे’ आएल छल ओम्हरे भागय लागल ।”

ओ भगैत जा रहल छल अजान सँ जान दिस ? शून्य दिस चेतना दिस ? जागरण दिस ? शायद ओकरा एकटा जानकारी भेट गेल छलै । नइ ई ठीक नई अछि ।

अचेतन मनमे सेहो किछु जन्मजात संस्कार एहन होइत अछि, जकर सीमाकेँ उल्लंघन स्वपमे सेहो सम्भव नहि अछि । शायद ओकरा जानकारी भऽ गेल छलै की स्वप अपन अनुभवक आिरभूत घटना पर केन्द्रित रहैत अछि । स्वप सँ अजानताक नाश नहि होइत अछि, जान नहि भेटैत छैक ।

हारैत हारैत नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष

नेपालमे एकटा कहावत अछि नेपालक एकीकरणक समयमे पृथ्वीनारायण शाह कतेको ठाम हारि गेल रहथि । निराश भऽ अपन घरमे अराम कऽ रहल रहथि की देखलखिन एकटा चुटी खम्हा पर चढयके पयास करैत छल आ ओ बीचमे खसि परैत छल । चुटी के देखलखिन चारि पाच वेरक पयासक वाद ओ चढि गेल । एकरवाद हुनका एकटा जान भेटलन्हि आ पृथ्वीनारायण शाह फेर सँ एकीकरण अभियानमे जुटि गेलाह , एखनके नेपाल अछि तकर निर्माण भऽ सकल ।

करीब–करीब नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष धर्मेन्द्र झा सँग एहने सन्दर्भ भेल अछि । ओ चुटी तऽ नहि देखलथि मुदा पत्रकारक नेतृत्व करबाक अछि से अठोट हुनका केन्द्रीय अध्यक्ष बना देलक ।

धर्मेन्द्र २०५१ सालमे नेपाल पत्रकार महासंघ धनुषाक कोषाध्यक्षमे हारल रहथि । फेर २०५४ सालमे केन्द्रीय सदस्य पदमे, २०५९ सालमे केन्द्रीय सचिव पदमे , २०६२ सालमे महासचिव पदमे हारल रहथि । एकछ गोटे तऽ हुनका हरवा पुरुष तक कहय लागल छलथि

। मुदा २०६५ सालमे नेपालक पि कार सभक सभसँ वडका पद महासंघक केन्रीय अि्यक भऽ गेलथि । नेपाल पि कार महासंघक पूवि अि्यक तारानाि दहाल कहैत छथि ‘महासंघक नेतृत्व करबाक अछि से अठोट आ पि कार सभ बीच सम्वाद कायम राखब ि मेन्रके अछि स्ाि न पर पठौलक ।’ ि मेन्र अछि बीचमे २०५६ सालमे केन्रीय सदस्यमे माि थ्रतल छलथि । ओ स्वंय कहैत छथि – ‘केन्रीय कथ्रटीक थ्रथ्रन्न पदमे हारलौ तहुँ सँ बेसी जनकपुरमे कोषाि्यक पदमे हारल छलौ तथ्रया बड दुाख भेल छल ।’ ३०/३५ गोटे सदस्य रहल थ्रल्लामे हाथ्र गेलौ तकर बाद प्रण लेने रही जे केन्रक पमुख पदपर पहुँच सभके देखा देबै ।

कथ्रयो नेता बनयके सपना देखने ि मेन्र रामस्वर प रामसागर बहुमखी क्याम्पस जनकपुर अन्तगति क स्वतन्ि थ्रदाि ी युथ्रयनक सदस्य आ नेपाल थ्रदाि ी संघ ि नुषाक उपाि्यक सेहो भेल रहथि । मुदा स्वथ्रयू कालमे २०४३ सालमे चहल पहल नामक थ्रते पथ्रिका थ्रकाललथि । आ सम्पादक भेलाक बादक लोकथ्रयता वा पभाव थ्रनका अथ्र थ्रस थ्रच लेलक । ओ अपन स्वथ्रयूकालमे जागृथ्र नामक पथ्रिकाक सम्पादक सेहो भेल रहथि ।

मैथ्रिली आ राजनीथ्र शास्ि सँ एम.ए आ इन्थ्रयन इन्स्थ्रच्यूट अफ मास कम्युथ्रकेशन थ्रल्ली सँ थ्रप्लोमा ि थ्रके पढाइ कएने ि मेन्र पि काथ्रता के पेशा बनौलथि । ि मेन्रक बाबु राजेन्र झा कहैत

छथि —'मिन्र लग क्याम्पसमे शिक्षण करब, अन्य सरकारी नोकरी सेहो जाएब आ पत्रकारिता करब तीनटा विकल्प छल । मुदा हम देखलियै मिन्रक इच्छा पत्रकारिता दिस वेसी अछि । पत्रकारितामे बहुत रास कठिनाइ छैक बुझलाक बादो हमसभ कोनो रकावट नहि कएलौ ।'

जाहि लगन सँ ओ काज करैत छलथि हमरा विश्वास छल ओ एक दिन बड़का करता राजेन्र आगा कहलन्हि । २०२३ चैत ४ गते माता मनोरमा झा आ पिता राजेन्र झाक जेष्ठ पुत्रक रपमे सप्तरी जिल्लाक गोविन्दपुर वसुन्धरापुरमे जन्म लेनिहार मिन्र जहिना पत्रकारक नेता छथि तहिना लेखन कर्ममे सेहो चोटी पर छथि ।

काठमाण्डू सँ पकाशित अन्नपूर्णापोष्ट दैनिकक समाचार संयोजक छथि । मिन्र हिमालय टाइम्स दैनिकके कार्यकारी सम्पादक सेहो रहि चुकल छथि । जनकपुरमे मिन्रक सम्पादनमे पकाशित नवविचार साप्ताहिक पत्रिकामे एकटा अलग पहिचान देने छल । पत्येक हप्ता अन्तरवार्ता, व्यंग्य, समाचारमे विविधता ओहि पत्रिकाक विशेषता

छल । ओना व्यवसायिक पत्रिकाक माध्यम आचार्यक सम्पादनमे जनकपुर सँ पकाशित जनआकाक्षा आ विएम खनालक सम्पादनमे पकाशित विदेह साप्ताहिक सँ शुर कएने छथि ।

साहित्यमे सेहो मिन्रके पयोगवादी कविक रपमे चिन्हल जाइत अछि । मिन्रक रस्ता तकैत जिनगी, एक शृष्टी एक कविता , एक समयक वात, छिड़ियाएल आकृतिसभ सनक तीनक मैथिली संगह आएल अछि । तहिना नेपालीमे गोनु झाका किहर , कौशलका परिहास सहित दर्जन सँ बेसी पुस्तक पकाशित अछि ।

पुरस्कारक बात जँ कएल जाए तऽ २०५५ सालमे नेपाल विद्याभूषण

'ख', श्रपोटसि क्लबदारा २०६० सालमे वेष्ट जनश्लिस्ट अवाडि, २०६४ सालमे नागाअजुनि वेष्ट पब्श्लकेशन पुरस्कार , २०६५ सालमे राष्रीय पश्लाभा पुरस्कार देल गेल अश्छ ।
भारत , अमेश्लका , शीलंका, बंगला देश, कतार, नबे, श्फन्लैण्ड , डेनमाक, स्वीडेन आ जमनीके भमण कऽ चुकल ि मेन्र के आगा बढाबयमे माता श्यताक अश्लाश्लक्त कश्लाया मुन्नी झाक सेहो महत्वपूणि योगदान रहल ओ पसंगक ि ममे वेर वेर कहलन्श्ल । देशक पि कारसभके शमजीश्व ऐन अन्तगति श्लश्लयासभ तलब दौक, श्वना श्लायुक्त्ती पि के देशक कोनो पि कार के काज नश्ल करय परैक ताश्ल अश्लायानमे ओ आ हुनक नेपाल पि कार महासंघ अखन लागल अश्छ ओना मैश्थिलीक अश्लायानी लोक सेहो छश्थि । मैश्थिली भाषा साश्लत्य कला सास्कृश्लाके कोना बढाओल जाय ताश्लमे लागल रहैत छश्थि । फेर सफलताक श्लाखर पर चढलाक बादो ि मेन्र अपन कैश्लयरके पश्ला ओतबे गम्भीर छश्थि जतेक २०/२५ वषकि युवा रहैत अश्छ ।

नेपालमे मिथिला राज्य की सम्भव छैक ?

नेपालक संविधानसभाक राज्य पूनर्संरचना तथा राज्यक शक्ति बाटबखरा समितिक अपन प्रतिवेदनमे मिथिला भोजपुर कोच मधेश नामक राज्य रखलाक बाद मिथिला नाम सँ राज्य बनत तकर सम्भावना बढल अछि । नेपालमे १४ टा राज्यक आवश्यकता रहल ओ प्रतिवेदनमे उल्लेख अछि ।

राज्य पूनर्संरचना तथा राज्यक शक्ति बाटबखरा समितिक सदस्य राम चन्द्र झा कहैत छथि 'नया संविधान निर्माणक लेल समितिक प्रतिवेदनके आधिकारिकता महत्वपूर्ण रहल तएँ नेपालमे मिथिला राज्य हैत, अखन गप्पके नजर अन्दाज नहि कएल जा सकैत अछि ।'

मिथिला राज्य संघर्ष समिति सेहो आब मिथिला राज्य हैत ताहिमे कोनो भागठ नहि रहल कहैत अछि । संघर्ष समितिक संयोजक परमेश्वर कापड़ि कहैत छथि 'नेपालमे राज्यक लेल जे तत्वसभ चाही से मिथिला लग मात्र छल तएँ ई तऽ होबहेके छल । तखन मिथिला संग आओर नाम जोड़ि देल गेल अछि , ताहि पर हमरा सभके आपत्ति अछि ।' (नीचाक नक्शाके पैघ रूपमे देखबा लेल

थ्रूलक कर)

'अ्रथ्रिला भोजपुरा कोच मिशक स्ािनपर अ्रथ्रिला मा रहैत तऽ बेशी पशन्नता होइत' कापश्ह आगा कहलन्ह । ओना राज्य पूनसंरचिना ता राज्यक बाटबखरा सअ्रश्राक सदस्य एवं पूवमिन्त्री राम चन्र झा कहैत छथ्रि 'नाममे सेहो अ्रथ्रिला अछ्छ फेर एकर राजानी सेहो जनकपुर तखन अओर सँ की लेना देना ।' ओना थ्रश्लेषक सभ राज्य पूनसंरचिना ता राज्यक शथ्रत बाटबखरा सअ्रश्रा देशक पमुख आथ्रिकाथ्रक शथ्रत होइतो एकर थ्रपोटपिर बहुत रास अभ्यास करबाक बाकी रहल कहैत छथ्रि । तएँ बहुत उत्साथ्रत होएबाक आवश्यकता नथ्र अछ्छ ।

अ्रथ्रिला राज्यक स्ापनामे बाा

एक थ्रस राज्य पूनसंरचिना ता राज्यक शथ्रत बाटबखरा सअ्रश्राक पश्रावेदन मे अ्रथ्रिला राज्य स्ापनाक बात अएलाक बाद जहा थ्रकछ मैथ्रिल संघ संस्ा सभ उत्साथ्रत अछ्छ ओतथ्र एकर पश्रावेदन अथ्रते नेपालमे थ्रवाद ठाढ भऽ गेल अछ्छ । नेपालक मशवादी दलसभ मश राज्यमे अ्रथ्रिला उपराज्यक बात कऽ रहल अछ्छ । नेपालक पमुख मशवादी दल मशी जनअथ्रिकार फोरमके केन्रीय अ्यिक उपेन्र यादव कहैत छथ्रि 'हम स्वयं मैथ्रिल छी मुदा अ्रथ्रिला केकि के

तखने थ्रकास हैत जखन मिशि राज्यक स्िपना हैत आ ओश्िमे थ्रथिला रहत ।'
ओ एक मिशि स्वायत पदेश बाहेकके बात बदास्त नश्ि कएल जा सकैत अश्छि कहलन्श्ि । मिशी जनअथिकार फोरम नेपाल, मिशी जनअथिकार फोरम लोकतान्थिक, तराई मिशि लोकतान्थिक पाटी आ सदभावना पाटी संयुक्त रपमे एक मिशि पदेशके लऽ कऽ आन्दोलन कऽ रहल अश्छि ।
मिशी दलसभक थ्ररोि थ्रथिला राज्य स्िपनामे सभ सँ बेसी बािक बश्ा रहल अश्छि ।
मैथिल सभके आपश्ा कतय
बहुतो मैथिलके नाम पर आपश्ा छन्श्ि । ओ सभ कहैत छथि 'थ्रथिला भोजपुरा कोच मिशिक स्िान पर मािि थ्रथिला रहबाक चाही । थ्रथिला लग राज्य बनबाक सभ सँ बेसी आिार अश्छि ।'
आिारके पष्ट करैत रामानन्द युवा क्लब जनकपुरक अ्यिक श्ुपेन्र ठाकुर कहैत छथि 'थ्रथिला संगे इश्ाहास भुगोल मािि नश्ि वतमीन मे सेहो सभ चीज अश्छि ।'
एखन थ्रथिला भोजपुरा कोच मिशि राज्यक सीमा जे श्ािारण कएल गेल छैक से नेपालक झापा श्मल्ला सँ पसा श्मल्ला िश्ि अश्छि । जाश्िमे कश्िव ४६ पश्ाशत मैथिली भाषी छथि । ५४ पश्ाशतके नजर अन्दाज नश्ि कएल जा सकैत अश्छि । जँ सभ भाषाके राज्य भाषाक रपमे स्िान देल गेलै तऽ मैथिली भाषाके बेसी कश्ा हैत । जानकार सभक अनुसार मैथिली बाहेकके भाषा सेहो राज्यक भाषा भऽ सकैत अश्छि । ताश्ि सँ मैथिली भाषाके जे अलग रप सँ फाइदा होइतै से नश्ि हैत ।
जातहुए नेपालमे नेपाली भाषाक बाद सभ सँ बेसी बाजल जाय बला

भाषा मैथिली अछि ।

मिथिला राज्य स्थापनाक आन्दोलन कतय

मिथिला राज्य स्थापनाक आन्दोलन जाहि रूपमे बढबाक चाही से नहि बढि रहल अछि । खास कऽ डकुमेन्टेशनके विषयमे जेना किछो नहि भऽ रहल अछि । एमाले नेता शीतल झा, साहित्यकार डा. सुरेन्द्र लाभ, डा. विजय कुमार सिंह, पूर्वमन्त्री राम चन्द्र झा वरिष्ठ राजनीतिक विश्लेषक सीके लाल, माओवादी नेता राम रिझन यादव ,डा. धीरेन्द्र पाण्डे, साहित्यकार धीरेन्द्र प्रेमर्षि सहितक व्यक्ति सभक किछ कार्यक्रम आएल अछि मुदा ओहो संगठित नहि अछि । मिथिला राज्य स्थापनाक माग के लऽ कऽ मिथिला राज्य संघर्ष समिति गठन तऽ भेल अछि मुदा एक वर्षभितर आन्दोलनके नाम पर सडकपर कहि गोष्ठी बाहेक तेहन उल्लेखनीय काज किछ नहि भेल अछि । ओना संघर्षसमितिक सचिव रमेश रञ्जन झा संघर्ष समिति खासे काज नहि कएलक अछि बातके मानयके लेल तैयार नहि छथि । ओ कहैत छथि 'संघर्षसमिति मिथिला राज्यक लेल लडिके काज करैत आएल अछि ।'

ओना मिथिला नाटयकला परिषद जनकपुर, रामानन्द युवा क्लबक अभियानके सेहो नजर अन्दाज नहि कएल जा सकैत अछि । मुदा महिना दू महिना पर एकटा दू टा कार्यक्रम कऽ देलौ ताहि सँ ठोस उपलब्धि नहि भऽ रहल अछि ।

इतिहासमे मिथिला

मिथिलाक परम्परागत सीमा बृहद्विष्णुपुराणक मिथिला महात्म खण्डमे

वर्णित अछि । जाहिके आिर माध्य कवीश्वर चन्दा झा मिथिलाक सीमा सम्बन्धमे अहि पकार वर्णन कएने छथि —

गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिश, पूर्व कौशिकाक िारा
पश्चिम बहथि गण्डकी उतर हिमबत बल विस्तारा
कमला त्रियुगाअमृतृता िमुड़ा वागमती कृतसारा
मि्य बहथि लक्ष्मणा पभृति से मिथिला विदागारा
अहि भूभागक विस्तार अहि पकार पूर्व पश्चिम करीब २९० किलो मीटर , उतर दक्षिण करीब १९३ किलो मीटर होइत अछि । जाहि अनुसार एकर कुल क्षेत्रफल ५५ हजार ९७० बर्ग किलो मीटर रहल अछि । ई क्षेत्र एखन नेपाल आ भारतमे बटल गेल अछि ।
जहा िक मिथिलाक स्िापनाक बात अछि विदेि माथिव सरस्वती तीर सँ आबि मिथिलामे आर्य सभ्यताक विस्तार कएलन्हि । आ विदेह वा जनक राज्य वंशक आिरशीला राखल गेल । अहि वंशमे जनक उपाधीय नाम सँ चर्चित राजा ि्विज भेल छलाह । सिरध्वज जनक पुिी भगवती सीता रहथि । विदेह राज्य कुलक मिथिला पर शासनक समय ३००० ईश्वी पूर्वसँ ६०० ईश्वी पूर्व िकि अनुमानित अछि ।

नेपालमे मिथिला राज्य क्रिया
मिथिलाके स्वर्णिम इतिहास अछि । माि नेपालेके लेल जाए तऽ करीब मैथिली भाषाके पसार राज्य सभाि्िक छल । राजिानी काठमाण्डूक मूल भाषा मैथिली छल । मुदा अखन मैथिली जनबोली िकि सिमित भऽ गेल अछि । एकर कला परम्पराक विकास होबय नहि सकल रहल अछि । भारतक मििुवनी पेन्टिङ जतय विश्व बजारमे तहलका मचौने अछि ओतहि विश्व पटलद मिथिला पेन्टिङ कि

एकटा सीमित बजार अछि । ओहु पर मैथिल सभक पहुँच नहि अछि । वरिष्ठ राजनीतिक विश्लेषक सीके लाल कहैत छथि 'मिथिला राज्यक आवश्यकता आँगुर पर नहि गनाओल जा सकैया' । ओ समग्र मिथिलाक विकासक लेल मिथिला राज्यक आवश्यकता रहल बतौलन्हि । हुनक अनुसार मिथिलाक गुमल पहिचान पुना प्राप्तीक लेल मिथिला राज्यक आवश्यकता अछि ।

<u>सपथि मे मैथिली</u>

नेपालक उपराष्‌रपश्ला परमानन्द झा उपराष्‌रपश्ला पदक सपथि मैथिली भाषामे लेलन्श्च अछ्छि । उपराष्‌रपश्लाक सपथिके पुरे मिथिलाि्चलमे चचा अछ्छि । बहुतो गोटे मैथिली आन्दोलनके सपथि सँ जोडैत छथि। उपराष्‌रपश्ला कायालयक अनुसार मैथिली भाषामे सपथि लेलाक बाद उपराष्‌रपश्ला झाके सयकडो बधाई अश्च दुआरे एलन्श्च जे ओ मातृ भाषामे सपथि लेलथि । ओ अश्च सँ पूवशि्चन्दी भाषामे सपथि लेने रहथि । मुदा हुनकर ओ सपथि नेपालमे भारी श्चवादमे आएल छल ।

मुदा मैथिलीमे लेलाक बाद श्चक श्चपश्चत भेल अछ्छि । नेपाली भाषीसभ सेहो एकरा पशंसा कएने अछ्छि । मैथिलीक युवा साश्चत्यकार िरिन्र पेमश्चि कहैत छथि 'नेपालमे श्चकल्पके रपमे श्चन्दीके पस्तुत करयबलाके उपराष्‌रपश्लाक नया सपथि सँ चटकन लगलैक अछ्छि । मिथिला राज्य संघषि सश्चश्लाक संयोजक परमेश्वर कापश्च आब मैथिलीके श्चकयो नश्च रोश्च सकैत अछ्छि तकर एकटा छोटका उदाहरण रहल बतबैत छथि ।

नेपालमे मैथिली भाषामे सपथ लेबाक परम्परा

नेपालमे मैथिली दोसर सभ सँ बेशी बाजय बला भाषा रहल अछि । कहियो काठमाण्डू उपत्यकाक राज्य भाषा मैथिली छल । ओतयके राजासभ मैथिलीमे साहित्य लेखन सेहो करैत छलथि । मल्ल कालमे कएटा राजा एहन भेलथि । हुनकर एकटा साहित्यकारक रूपमे एखनो आदरके साथ नाम लेल जाइत अछि ।

मुदा सपथके इतिहास बहुत लम्बा नहि अछि ।

नेपालक संसदक तथ्याङ्क अनुसार डा. बंशीधर मिश्र नेपालक संसदमे पहिल बेर मैथिली भाषामे सपथ लेलनि । नेपाल कम्युनिष्ट पाटी (एकीकृत मार्क्सवादी लेनिनवादी)क नेता रहल डा. मिश्र २०५१ सालमे सपथ लेने रहथि । जहिया ओ मैथिली भाषामे सपथ लेलथि तहिया मैथिलीके बात करब अपराध मानल जाइत छल, एहन स्थितिमे सपथ लेने रहथि । आब तँ मधेशवादी दलक अधिकांश नेता मैथिलीमे सपथ लैत छथि ।

हिन्दी भाषाके गुणगान करयबला मधेशी जनअधिकार फोरमक सह अध्यक्ष जय प्रकाश प्रसाद गुप्ता सनक व्यक्ति सेहो मैथिलीमे सपथ

लेने छलथि ।

अिह बेरक संिवधान सभाक चुनावमे एकीकृत नेकपा माओवादी तऽ अपन सभासदसभ के अपन अपन मातृ भाषामे सपथ लेबाक लेल ह्विप जारी कएने छल । मैथिलीक चर्चित युवा साहित्यकार धीरेन्द्र पेमर्षिक शब्दमे मैथिली आन्दोलन सही दिसामे जा रहल अछि । तकर संकेत अिह बेरक संिवधानसभाक सपथ देखलाक बाद लगैत छल ।

मन्त्रीक रुपमे पहिल बेर एकीकृत नेकपा माओवादीक तत्कालिन नेता मातृका पसाद यादव सपथ लेने रहथि ।

मैथिलीयोमे कम िववाद निह

उपराष्ट्रपित परमानन्द झा िहन्दीमे सपथ लेलाक बाद भारी िववाद भेल छल । एतेक तक की हुनका फेर सँ मैथिली भाषामे सपथ लेबय पडलिन्ह । अिह सँ कम मैथिलीमे सपथ लेबयबलाके निह भेल छल ।

एकीकृत नेकपा माओवादीक तत्कालिन नेता मातृका पसाद यादव मैथिली भाषामे मन्त्रीपदक सपथ लेबाक इच्छा पगट कएलाक बाद तत्कालिन पधानमन्त्री िगिरजा पसाद कोइराला िकछ घण्टाक लेल सपथ कराबय सँ रोिक देने रहिथन । मुदा मातृका यादव निह झुकलथि आ ओिह समयक सरकारके झुकय पडल छल । मातृका यादव कहैत छथि ‘ पजातन्त्र चिल एलैक, गणतन्त्र चिल एलैक आ एकटा भाषा एकटा भेषक नीित रहबे करतै, ई स्वीकार निह अछि ।’

मैथिल छी अिह बातक गवर्अिछ पसंगक क्रममे ओ कहलिन्ह । सँासदक रुपमे जिहया डा. बंशीधर िमश सपथ लेने रहथि तिहयो िववाद भेल छल । आ ओ अडलथि तखन मैथिलीके जीत भेल

छलैक ।

सपथि मे एतेक माथिपच्ची किएक

मैथिली भाषामे सपथ लेला सँ मैथिलीके की भेट जएतैक वा की भेट गेलैक ? कोनो नेतादारा सपथ लेलाक बाद एकटा छोटछिन कनफुसकी बहस अवश्य होइत अछि ।

मुदा मैथिली आन्दोलनीसभ अहि सँ आन्दोलनमे बल पहुँचैत अछि कहैत छथि । काठमाण्डू सँ पसारण होइत आएल कान्तिपुर एफएमक हेल्लो मिथिला कार्यक्रमक पस्तोता एवं चर्चित युवा साहित्यकार धिरेन्र पेमर्षि कहैत छथि 'मैथिलक पहिचानक जतय संकट छैक ओतय छोट छोट चिज महत्व रखैत छैक । भारतक संसदमे जखन कीर्ति अजाद पाग पहिर कऽ जाइत छथि तऽ लोकके गौरव होइत अछि । तहिना नेपाल हुए वा भारत जखन मैथिल नेतासभ मिथिला मैथिलके पहिचान बला कोनो बात करैत छथि तऽ गौरव होइत अछि । आ अहि सँ मैथिली आन्दोलनमे बल पहुँचैत अछि ।

सपथ कि लेल नेपालमे पयास

नेतासभ मैथिलीमे सपथ लौथि ताहि लेल मैथिली आन्दोलनी संस्थासभ पहिचायते काल सँ पयास करैत आएल अछि । नेतासभ चुनाव जितैथि तऽ अन्य व्यक्तिके अन्य काज रहैक मुदा जनकपुरक मिथिला नाटय कला परिषदक संस्थापक स्व.यौगेन्र साह नेपाली नेता सभके घर घरमे जा कऽ मैथिली भाषामे सपथ लेबाक लेल आगह करथि ।

मैथिली विकास मञ्च काठमाण्डू आ धिरेन्र पेमर्षिके योगदान सेहो नहि बिसरल जा सकैत अछि । जनकपुरक आकृति संस्था, राजविराजक मैथिली संस्थासभ सेहो अहिके लेल काज कएने अछि।

आभाष झा

मैथिलीक युगरष्ा

कोनो साहित्यमे किछ साहित्यकारसभ एहन होइत छथि जिनकर जन्म कोनो घटनाक रपमे होइत अछि आ ओहि घटनासँ सम्बन्धित सम्पूर्ण साहित्य पभावित भऽ जाइत अछि । ओहन साहित्यकारक साहित्यिक व्यक्तित्व ओहि साहित्यक सर्वाङ्गीण विकासमे वरदानसिद्ध होइत अछि । ओहन साहित्यिक महापुरष पूर्ववर्ती साहित्यिक परम्परा आत्मक सम्यक अनुशीलन पश्चात अपन मान्यता एवम साहित्यिक योजना आविष्ट्ट करैत छथि । अपन कार्यसिभक माध्यिमसँ युगान्तकारी आ पभावशाली रेखा निर्माण कऽ अमरत्व पाप्तकरैत छथि ।
मैथिली साहित्यक इतिहासमे विद्यापति एकटा एहने अतुलनीय पतिभाक नाम अछि । सम्पूर्ण मैथिली साहित्य हुनकासँ पभावित अछि । हुनकर पभाव रेखाके कीण करबाक साहित्यिक कमता भेल व्यक्ति मैथिली साहित्यक इतिहासमे अखन धरि किओ नहि अछि । विद्यापति मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ कवि छथि । हुनकेमे मैथिली साहित्यक सम्पूर्ण गौरव आश्रित अछि ।

इतिहासकार दुर्गानाथ झा 'शीश'क शब्दमे विद्यापति आधुनिक भारतीय भाषाक पथम कवि छथि । ओ संस्कृत साहित्यक अभेद किलाके

दृढ़तापूर्वक तोहि भाषामे काव्य रचना करबाक साहस कयलन्हि । हुनकरे आदर्शसँ अनुप्रेरित भऽ शङ्करदेव, चण्डीदास, रामानन्द राय, कवीर, तुलसीदास, मीरावाई, सुरदास सनक महान
सष्टासभ अपन भक्ति भावनाक माध्यमसँ अपन मातृ भाषाके समृद कयलन्हि । मैथिली साहित्यमे विद्यापति युग ओतबे महत्वपूर्ण अछि जतबे अंग्रेजी साहित्यमे शेक्सपियर युग, नेपाली साहित्यमे भानुभक्त युग, बंगालीमे रवीन्द्र युग तथा हिन्दीमे भारतेन्दु युग । विद्यापतिक रचनासभमे मिथिला पहिल बेर अपन वैशिष्टय भक्तिभावना, शृंगारिक सरसता एवम् मौलिक साहित्यिक लय प्रस्फुटित भेल आभाष कयलक अछि । ओकर बाद विद्यापतिक पदावलीसभ जनजनक स्वर बनि सकल तऽ मिथिलामे युगोसँ व्याप्त असमानताक अन्त करैत विद्यापतिक रचनासभ समान रूपसँ लोकस्वरक रूप ग्रहण कऽ
सकल । वास्तवमे विद्यापति युगरष्टा रहथि । ओ मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धिक लेल अथक प्रयास मात्र नहि कयलन्हि, तत्कालीन समयमे पतनोन्मुख मैथिल समाजक पुनर्संरचनाक लेल सेहो मदत पहुँचौलन्हि। विद्यापतिक प्रादुर्भावक समयमे भारतीय उपमहाद्वीपक प्राया हरेक भागक सभ्यता आ संस्कृति सङ्कटपूर्ण अवस्थामे छल । मुसलमानी शासकसभक आतङ्क चरमोत्कर्षमे रहल ओहि समयमे मैथिल संस्कृतिक रक्षा आवश्यक भऽ गेल छल । ओहन अवस्थामे विद्यापतिक आगमन मैथिली साहित्य आ संस्कृतिक विकासक लेल महत्वपूर्ण वरदान सिद्ध भेल । एक दिस मुसलमानी शासकसभक आक्रमण आ दोसर दिस बौद्ध भिक्षुक बढ़ैत प्रभावक कारण समाजमे व्याप्त वैराग्यक मनस्थितिसँ आक्रान्त मैथिल सभ्यता आ संस्कृति अपन उन्नयनक रूपमे सेहो विद्यापतिके प्राप्त कऽ अपन मौलिकता

बचाबयमे सक्षम भेल । विद्यापति अपन विभिन्न रचनासभक माध्यमसँ सामाजिक पुनर्संगठनक प्रक्रियाके बल देलन्हि । ओ समाजसँ पलायन भऽ रहल मैथिल युवासभके समाज निर्माणक मूल धारामे प्रभावित करएबाक लेल अधिक प्रयास सेहो कयलन्हि । हुनकर एहने प्रयासक उपज अछि शृंगारिक रचना सभ । मुसलमानसभक आक्रमणसँ पीड़ित आ पलायन भऽ रहल तत्कालीन मिथिलाक युवासभके मुसलमान विरुद्ध प्रयोग कऽ मिथिलाक अस्तित्व रक्षा करबाक लेल विद्यापतिक ई रचनासभ सहयोगी प्रमाणित भेल । तत्कालीन समयक लेल विद्यापतिक अद्भुत प्रकारक चातुर्यपूर्ण कुटनीतिक सफलताक रूपमे देखल जा सकैया । समाजमे व्याप्त असमानाता, कुरीति, अन्धविश्वास सहित विभिन्न विसङ्गतिसभके मानव प्रेम एवम भाषा उत्थानक भरमे विद्यापति अन्त करबाक काजमे सफल छथि । विद्यापतिक सम्पूर्ण रचनासभ शृंगार आ भक्ति रससँ ओतपोत अछि। कतेको विद्वानसभ विश्व साहित्यमे विद्यापतिसँ दोसर प्रैघ शृंगारिक कवि आन कोनो नहि रहल कहैत छथि । महाकवि विद्यापति तत्कालीन समाजमे प्रचलित संस्कृत, अवहठ आ मैथिली भाषाक ज्ञाता छलथि । ई तीनु भाषामे प्राप्त रचनासभ अहि बातके प्रमाणित करैत अछि। यदपी विद्यापतिक जन्म तथा मृत्युक सम्बन्धमे विभिन्न विद्वानसभक विभिन्न मत अछि । तथापि मिथिला महाराज शिव सिंहसँ ओ दू वर्ष जेष्ठ रहथि । अहि तथ्यक आधार पर विद्वानसभ हुनकर जन्म १३५० के आसपासक मानैत छथि । कवि चन्दा झा विद्यापतिद्वारा रचित पुरुष परीक्षाक आधार पर विद्यापति राजा शिव सिंहसँ दू वर्ष पैघ रहथि उल्लेख कयने छथि । जँ ई तथ्यके मानल जायतऽ सन् १४०२ मे राज्यारोहणक समयमे राजा शिव सिंहक उमेर ५० वर्ष छल आ विद्यापति ५२ वर्षक रहथि ।

अछि आ िर पर विद्यापतिक जन्म सन् १३५० मे भेल छलथि अछि। डा.सुभर झा, पो. रमानाथ झा, पं. शिवनाथ झा आदि विद्वानसभ ई मतके स्वीकार करैत छथि मुदा डा.उमेश मिश्र, डा.जयमन्त मिश्र सन्तक विद्वानसभ विद्यापतिक जन्म सन् १३६० मे भेल कहैत छथि । अहिना विद्यापतिक मृत्यु पसा मे सेहो एक मत नहि अछि । अपन मृत्युक सम्बन्धमे मृत्यु पूर्व विद्यापति स्वयंदारा रचित पद विद्यापतिक आयु अवसान कार्तिक धवल त्रियोदशी जानेके तुलनात्मक रूपमे अन्य मत सभसँ अपेक्षाकृत युक्ति संगत मानल गेल अछि । मुदा अहिसँ वर्षक निर्धारण नहि भेल अछि । विद्यापतिक जन्म हाल भारतक बिहार राज्यक मधुबनी जिल्ला अन्तर्गत बिसफी गाममे भेल छल । ई मधुबनी दरभंगा रेल्वे लाइनक कमतौल स्टेसन लग अवस्थित अछि । हिनक पिताक नाम गणपति ठाकुर आ माताक नाम गंगादेवी रहनि । हाल विद्यापतिक वंशजसभ सौराठमे रहैत छथि । विद्यापति बालके कालसँ कुशाग बुद्धिक अलौकिक प्रतिभाक रहथि । अपन विद्वान पिताक सम्पर्कमे ओ पारम्भिक शिक्षा गहण कयलनि । मुदा औपचारिक रूपमे पकाण्ड विद्वान हरि मिश्रसँ शिक्षा गहण कयलनि । तहिना पकाण्ड विद्वान पक्षधर मिश्र विद्यापतिक सहपाठी रहथि । विद्यापति मैथिली साहित्यक धरोहर मात्र नहि भऽ संस्कृतक सेहो पकाण्ड विद्वान रहथि । ओ मैथिली आ अवहठक अतिरिक्त संस्कृतमे सेहो अनेको रचना कयने रहथि । हुनकर रचनासभके तीन भागमे वगीकरण कयल जाइत अछि ।

क) संस्कृत गन्थ ः भूपरिक्रमा, पुरुष परीक्षा, शैवसर्वस्वसार,

शैवसर्वस्वसार पमाणभूत, श्वखनावली, गि वाक्यावली, श्वभागश्व, दान वाक्यावली, गया पतलक, दुगाभश्वक्त तरश्चिणी, मश्वामि्जरी, वर्षि वत्सृय, व्याश्वभश्वक्त तरश्चिणी ।

ख) अवहठ गन्िैा कृश्वालता, कृश्वापताका

ग) मैश्चिली गन्िैा गोरक श्वजय

आशीष चौधरी, चरैया, अररिया

२ टा बीहनि कथा

१

एकटा कार सँ एकटा चिड़िया टकराए गेल आर बेहोश भऽ गेल। कार मालिक बढ़िया (बडड नीक) आदमी छलै। कार मालिक चिड़िया के उठाए केर अपन घर आन लक आर चिड़िया के पिंजड़ा मे डाएल (बन्द क) देलक। आर सोचलक जखन चिड़िया ठीक भऽ जाएत तखन उड़ाए देब। जखन चिड़िया के होश आएल तँ चिड़िया सोचलक लागेये जँ कार मालिक टकराएबे मे (दुघटिना मे) मरि गेल ये तँ हमरा उम केद के सजा भऽ गेल ये।

२

जहाज केर अपन उड़ब पर बडड (बहुत) घमंड छलै। लेकिन एक दिन जहाज के पास सँ एकटा रॉकेट बडड तेजी सँ आकाश गेल। जहाज के बडड हेरानी लागल (भेल) जे हमरो सँ तेज कोई उड़ि सकैत ये। जहाज के नहि रहल गेल आर रॉकेट के पुछलक भाइ अहा एतना तेज कोना उड़ैत छियै? रॉकेट कहलक भाइ जखन अहा के पाछु मे आगि लागल रहत ने तखन अहो एतना तेज उड़ै लागब।

नवेन्दु कुमार झा

पचास वर्षक भेल पादेशिक समाचार एकाश- १९९३ मे पारंभ भेल छल मैथिली मे समाचारक पसारण

आकाशवाणी पटनाक पादेशिक समाचार एकाश 28 दिसम्बर 2009 के अपन स्थापनाक पचास वर्ष पूरा कएलक अछि। आकाशवाणीक पटना केन्द्र सँ 28 दिसम्बर 1959 के जे पादेशिक समाचारक पसारणक पारभ भेल ओ बिना कोनो बाधा के पसारित भऽ पाछा नहि देखालक आ समाचार पर अपन गहिर नजरि रखने समाचार के जनता धरि पहूचैबा मे कोनो कसरि नहि छोड़लक अछि। पारंभहि सँ एहि एकाश सँ जूड़ल समाचार संपादक आ हुनक सहयोगीक दल सीमित साधनक बावजूद एकरा मजभूत स्तम्मक रूपमे ठाढ़ कएलनि। बिहारक जनता के समाचार जगत सँ जोड़बाक जे काज आकाशवाणीक पादेशिक समाचार एकाश कएलक से अनवरत चलि रहल अछि ।

आजादीक बाद देशभरि मे आकाशवणीक पाच टा केन्द्र छल। ओना आजादी सँ पहिने देश भरि मे आठरा केन्द्र छल जाहिमे देशक बैटवाराक बाद तीनरा केन्द्र पाकिस्तान मे रहि गेल। स्वतंत्रता

पाथ्मतक बाद एश्च संचार मा्यिमक श्चस्तार पारंभ भेल आ सौभागय सँ एकश्च वषकि भीतर 26 जनवरी 1949 के आकाशवाणीक पटना केन्र सँ समाचार क पसारण पश्चल बेर 1959 मे पारंभ भेल। समाचार एकाश श्चल्लीक तात्काश्चक सहायक समाचार संपादक गुर दत श्चलिंकारक नेतृत्व मे समाचारवाचक रामरेणु गुप्त आ संवाददाता रश्च रंजन श्चन्हाक दल काज करब पारंभ कएलक। हुनक आ संवाददाता रश्च रंजन श्चन्हाक दल काज करब पारंभ कएलक। हुनक पयास सँ एकरा रोमाचक क्ण आएल आ 28 श्चसम्बर 1959 के सास सात बाश्चकऽ पाच श्चनट मे पादेश्चक समाचारक पाच श्चनटक पश्चल बुलेश्च आकाशवाणी पटना सँ पसाश्चत भेल।

देश-दूश्चया सँ श्चहारक जनता के जोड़बाक लेल पारंभ भेल ई पयास अपन गश्च पकड़लक आ एकर समय क संगश्च समाचारक अवश्च मे पश्चवतिन आएल। पादेश्चक समाचारक बढ़ैत लोक श्चयता के देश्च पाच श्चनटक ई बेलेश्चन दस श्चनटक भऽ गेल सा साझ मे सात बाश्चक तीस श्चनट पर पसाश्चत होमए लागल आ आइयो शहर सँ लऽ भऽ सुदूर गाम-िरमे एश्च बुलेश्चनक सात बाश्चक तीस श्चनट पर लोक सभी पश्चक्ा करैत रहैत छश्च। देश आ पदेशक बदलैत चातुश्चकि पश्चश्चति के देश्च पश्चश्चन मा एकटा बुलेश्चन सँ काज नश्च चलैत देश्च 10 अपील 1978 के एकटा आर बुलेश्चनक पसारण पारंभ भेला। ई बुलेश्चन पश्चश्चन दुपहरण मे तीन बाश्च कऽ दस श्चनट पर पसाश्चत होएब पारंभ भेला। पाच श्चनटक ई बुलेश्चन सेहो श्चना कोनो बाि के पसाश्चत भऽ रहल अश्च। एकाश दारा दू टा बुलेश्चनक सफलता पूवकि पसारणन बाद तेसर बुलेश्चन सेहो पसाश्चत

होएब पारंभ भेल जे पश्चाश्चन पात: काल मे आठ बाश्मक दस श्वनट पर पसाश्वत अश्छ जे दरस श्वनट अश्छ।

पादेश्वाक समाचार एकाश दारा पदेशक उदूभाषी जनता क लेल उदू समाचारक पसारण सेहो कएल गेल। 16 अपील 1989 सँ एकाश दारा उदू बुलेश्वन इलाकाई खबरे' दूपहर तीन बश्म कऽ दस श्वनट पर पसाश्वत कएल जा रहल अश्छ। पाच श्वनटक एश्व बुलेश्वनक मा्यिम सँ आकाशावणी पटना क समाचार एकाश अपना के उदू भाषी जनता सँ जोड़लक। अपन याकि अश्वला कड़ी मे एकाश मैश्विली भाषी जनता के जोड़बाक योजनाके मूत रिप देलका 2 अक्टूबर 1993 सँ मैश्विली भाषी जनताक लेल मैश्विली समाचार बुलेश्वन ' संवाद' क पसारण पारंभ भेल। साझ छह बाश्मक पन्रह श्वनट पर पसाश्वत होमए बाला पाच श्वनटक बुलेश्वन पारंभ मे सप्ताह तीन श्वन पसाश्वत होइत छला संवादक बढ़ैत लोश्वयता के देश्व पाच श्वनटक ई बुलेश्वन 16 अगस्त 2003 श्वन सँ साझ मे छह बाश्म कऽ पन्रह श्वनट पर पश्चाश्चन पसाश्वत भऽ रहल अश्छ। ' संवाद' आकाशवाणी पटनाक पादेश्वाक समाचार एकाश दारा तैयार कएल जाइत अश्छ आ एकर पसारण पश्चाश्चन आकाशवाणीक दरभंगा केन्र सँ होइत अश्छ। एकाश दारा समाचाराक अलाबा समकसामश्वाक श्वषय पर सभीक्रतमक वातीक कायमि 'समसामश्वाक चचा' 1992 सँ पारंभ भेला ई साप्ताश्वक कायमि सभ शश्व श्वन पसाश्वत होइत अश्छ। आकाशवाणीक समाचार एकाश अपन डेग आगा बढ़ौलक आ श्वाश्वकाक नश्चाश्वश्च सँ जनता के जोड़बाकक लेल श्वानि मंडल सभीक कायमि पसारण पारंभ कएलका श्वानि सभा आ श्वानि पश्वषदक सकि दरश्वयान एकाश दारा पश्चाश्चन आठ बाश्म कऽ बीस श्वनट पर ' श्वानि मंडल समीक्र' पसाश्वत करैत अश्छ।

देशमे आएल सूचना ाि्रतक पभाव सेहो पादेशाक समाचार एकाश पर पड़ल। एकाश आि्थाक सूचना तं ि सँ लैस भेल आ वर्ष 2003 मे रोमाचक क्ण आ एल। एहि वर्ष एकाशदारा 'दूरभाष समाचार सेवा' क पसारण पारंभ भेल। शोता अपन फोन पर समाचार सूनऽ लगलाह। एतबा नहि वर्ष 2005 मे एकाश आि्थाक मीडिया क सा िनक उपयोग करैत डी टी एच पर सेहो अपन सेवा उपलब्ि करौलक आ पादेशाक समाचार डी टी एच पर सेहो उपलब्ि भऽ गेल। एफ एम चैनलक बढ़ैत लोकप्रियताक देखि वर्ष 2006 सँ पमुख समाचार तीन टा बुलेटिन 10.30, 11.30 आ साझ 6.30 बजे एफ.एम चैनल पर सेहो पसारित भऽ रहल अछि। समाचार सेवा पभागक वेब साइड www. Newsonair.nic in आ www. newsonair. com पर सेहो वर्ष 2007 सपाइज़ पादेशाक समाचार उपलब्ि होमए लागल अछि। दूनियाक कोनोमे बैसल व्यक्ति एहि वेव साइट के खोलि आकाशवाणी पटनाक पादेशाक समाचार के पढ़ि आ सूनि सकैत अछि।

समाचार सेवा पभागक तर्ज पर पभागक महिदेशा निदेशक अनुसार पादेशाक समाचार मे संवाददाताक वाइस डिस्पैच, वाईस कास्ट आ साउट बाइटक कऽ पयोग कऽ समाचार के रोचक बनैबाक पयास पारंभ भेल। ई पयास अक्टूबर 2006 मे मूर्त रिप लेलक। संवाददाताक आबाजमे समाचारक पसारण जे पारंभ भेल से एखनो चलि रहल अछि। वर्ष 2006 मे मूर्त रिप लेलक। संवाददाताक आबाज मे समाचारक पसारण जे पारंभ भेल से एखनो चलि रहल अछि1 वर्ष 2006 मे मूर्त रिप लेलक । संवाददाताक आबाज मे समाचारक पसारण जे पारंभ भेल से एखनो चलि रहल अछि। वर्ष

2006 मे समाचार सेवा पभागक पहल पर थ्मलाक गश्चाघथ्ी पर आिश्वत कायिम 'थ्मले की थ्ग्रहठी' क नाम बदश्च कऽ 'थ्मले की हलचल' कऽ देल गेल 'थ्मले की थ्ग्रटी मे पदेशक थ्गथ्रान्न थ्मलाक अंशकाश्वक संवाद दाताक पेश्वत समाचारक आलेखक पसारण होईत छल मुदा एकर पश्चवश्चात र प 'थ्मले की हलचल' मे थ्मलाक समाचार आिश्वत एश्व कायिम के संवाददाताक आवाजमे पसाश्वत कऽ एकरा आर जीवंत बनाओल गेल अछ्छ। ई कायिम पश्चाश्चन पादेश्चाक समाचारक बाद पसाश्वत होईत अछ्छ।

पादेश्चाक समाचार एकाशक स्िनाक संगश्च जाश्च इमानदारीक संग गुरवारदत, रामेरणुगुप्ता आ रश्च रंजन थ्मन्हा आकाशवाणी समाचार सँ श्वहारक जनता के जोड़बाक काज पारभकएलश्च ओकरा पूरा इमानदारीक संग हुनक बाषजूद पादेश्चाक समाचार एकाश जनता के त्वाश्वत आ थ्गश्वसनीय समाचार देबाक लेल तत्पर अछ्छ। अपन कतिथ्यक श्चवाह एकाश देश-दूश्चयाक हलचल सुदूर गामश्चि पहूचा रहल अछ्छ।

सताक पाछू बनल भाजपाक उदेश्य

'पाटी थि श्रिफरेन्स' क दाबा करए बाला भारतीय जनता पाटी आब अपन चाि आ चावि के आन दलक डाचा मे ढािे रहल अछि। राजनीिाक अपराि करण आ भष्टचारक िर द संघषकि शंखनाद करए बाला भाजपा आब अपराि आ भष्टाचारीक आगा नतमस्तक भऽ गेल अछि। ई स्वाभाि को अछि। राजनीि दलक एकमाि उदेश्य् सताक पाछू अछि आ एकर पाछूाक लेल सभ िकछु जायज अछि। ज्यो ई नि रहैत तऽ पाटी थि श्रिफरेन्स बाला भाजपा जाि िाक सोरेनक िर द संसद सँ लऽ कऽ सड़क ि संिषर कएलक दलक संग झारण्ड मे शासन करबा लेल बेचैन नि रहैत। देशक बहुचि सासद घुस काण्ड आ शिनाि झा हत्याकाड क आरोपी झारखण्डा मुि मोचाक अि्यक िाबू सोरेन के झारखण्डक मुख्य मंि बनैबाक लेल भाजपा अपन समि दऽ अपराि आ भष्टाचारक एकरा नव पिभाषा िखबाक पयास कऽ रहल अछि। झारखण्ड मे िशंक िािन सभा बनलाक बाद सोरेन पिने कागेसक िरौरी कएलि ओ कागेस आलाकमान दारा मुख्य मंि पद देबा सँ मना बएलाक बाद पाला बदि राजग के खेमा मे गेलि आ जेना भाजपाक नेता सताक पाछूाक लेल बेचैन छलाह, िाबूक सभ कुकमि के िसाि हुनक आगा नतमस्तक भऽ गेलाह। िाबूक संग भाजपा के पदेश मे स्िायी सरकारक एतबा िन्ता छल तऽ एि चुनावक आवश्यकता नि छल। मि कोड़ाक मुख्य मंि पद सँ िदाई समय भाजपा ओि सभ सँ पैघ दल छल। सदनमे ओकर 30 रा सदस्य छल आ झामुमो के सेहो 18 सदस्य छल। आ दूनू दल आरामदायक

बहुमत पाप्त कऽ झामुमोके सेहो 18 सदस्य छल। आ दूनू दल आरामदायक बहुमत पाप्त कऽ सरकार चला सकैत छल। मुदा सरकार सजानाक जे बाबादी भेल एकरा लेल भाजपा जिम्मेदार नहि अछि? मात्र कागेसके सता सँ बाहर रखबाक लेल भाजपाक ईनाटक पाटीक बदलैत रहल चाल चरित्र आ चेहरा कहल जा सकैत अछि। राष्ट्रीवादी विचारक पोषक आ अपन ईमानदार छवि क तगमा लेने फिरैत रहल भाजपाक भष्टाचारक विरुद संघर्षनारा लोकक आँखिमे झाउर झोकब बुझि पड़ैत अछि। ओना पाटी अपन नीति आ सिद्धात पर चारि डेग चलि दू डेग पाछा हटबामे कोनो परहेज नहि करैत अछि बशते सताक गारटी हो। राम मंदिरक मामला होअए वा धारा 310, अथवा समान अचार सँ सताक मामला पाटी अपन एहि भूल सिद्धात सँ समझौता कएलक आ केन्द्र से गारटेड सता हाथ लागल। एकर बाद तऽ जेना पाटी मनुकख खूनक स्वाद लऽ चूकल शेर मऽ गेल आ सताक ई स्वाद लेलाक बाद बिनू सता पाबि रहब दुष्कर भऽ गेल। झारखण्ड भूख के शात करबाक पयास कहल जा सकैत अछि।

बदलैत राजनीतिक परिदृश्याक मध्य राष्ट्रवादक झण्डा दो रहल भाजपा आब अपराधी आ भष्टचारीक कन्हापर चढ़ि कोनो हाल मे सता पाबिक नीति पर चलि रहल अछि। पाटीक बदलैत चालि। चरित्र आ चेहरा ज्यो वर्ष 2010 मे बिहार मे होमए बाला विधान सभा चुनावक दरम्यान सोझा आबि सकैत अछि। पदेशक बदलि रहल राजनीतिक बातावरणमे बिहार मे सेहो त्रिशंकू विधान सभाक संभावना बुझि पड़ैत अछि। ज्यो ई मेल 13 सताक कुसीक लेल भाजपा पशुपालन घोटालाक लेल चर्चित राजद अध्यक लालू पसादन आगा साष्टाग दण्डबत भऽ कोनो आश्चर्यनहि होएत।

ई सत अछि जे राजनीतिक दलक लेल सताक प्राप्तिक एकमात्र लक्ष्य होईत अछि। चुनावक मैदान मे उतरबा सँ पहिने भने पैघ-पैघ दाबा कएल जाईत हो। जनताके दिन मे चाद आ तारा देखैबाक आश्वासन देल जाईत हो मुदा मत गणनाक बाद बदलैत राजनीतिक परिदृश्यक अनुरुप नीति आ सिद्धात बदलैत अछि। आ ई सभ झारखण्ड मै पान मे ताल ठोकड बाला दल प्राप्तिक लेल नव-नव सभीकरण बनबड लागल आ सफलता भाजपाके भेटला। सासद घुस काण्ड मे संसदक कार्यवाही के पन्रह दिन घरि ठप्प कऽ जनताक टाका बबाद करए बाला आ शिबू सोरेन पाक साफ लगलथि। राची सँ लऽ कऽ दिल्ली धरि बैसल भाजपाई शिबू के क्लीन चीर दैत रहलथि आ ओम्हर शाहनाजि झाक परिजन शिबू के मुख्य मंत्री नहि बनैबाक तैयारौरी करैत रहलाह। सता प्राप्तिक एहि जोशमे स्व0झा के न्याय दे एबाक बात दबि गेल अछि। भाजपाक नेतृत्व घृतराष्ट्र जका आखि पर पटी बान्हि न्याय सँ आँखि चोरा रहल अछि।
मामिला स्पष्ट अछि। ज्यो शिबू सोरेन एतबा पाक साफ छलाह तऽ फेर आखिर कोन कारण भाजपा शिबूक विरुद्ध संघर्ष करैत रहला ईहो सत अछि जे शिबूक विरुद्ध संघर्ष करैत रहल। ई हो सत अछि जे शिबूक विरुद्ध कानूनक अनुसार मामिला पर आरोप होएत आ आरोप भेलो अछि। ओ न्यायालय दारा बरी कएल गेल छथि आ आब मामिला सवोच्च न्यायालय मे अछि। न्यायालय अपन धारा आ साक्ष्यक आधार पर आरोप देत मुदा सच तऽ झारखण्डक एक जनता जनैत अछि। ज्यो न्यायालय दारा बरी कएलाक बाद दोस्ती जायज अछि तऽ बिहार मे पशुपालन घोटालाक किछु मामिलामे राजद अध्यक्ष लालू पसाद के सेहो राहत भेटल अछि तऽ भला हुनक विरुद्ध संघषर

जारी राखब श्वहारक जनता के मुखबिनाएब नञ्ज अछ्छ।

वर्ष 2009 मे लगातार हाश्वक स्वादाक बाद वषकि अंतमे श्वजेता बनबाक अवसर हामि मे अबैत देश्वि भाजपा अपन नीश्व आ श्वदात के श्वक्स श्वपाश्वट कऽ देलक अछ्छ। एक श्वस भाजपा अपराि भष्टाचारक संरक्ण दऽ सता चलाओत दोसर श्वस ओकर नीश्व आ श्वदात बढ़ैत रहत। सताक सहयोगी बनलाक बाद भने भाजपाई मदहोश भेल होश्वि मुदा स्व0शश्व नाि झा क आत्मा भाजपाक एश्व श्वणयि पर जर र आश्चय चश्वकत होएत श्वाबूक मुख्य मंिी बनलाक बाद स्व0झाक पश्वजनके न्याय भेरत एकरतऽ कल्पना करब बेक्कूफी अछ्छ। झामुमो सुपीमो जतए स्व0 झाक हत्याक माश्वलामे अपना आप के पाक साफ करबाक सभ संभव पयास करताह ओतश्व भाजपाई पूवमुख्य मंिी मि कोड़ाक सामाज्यक अनुर प एश्व तरहक अपनो छोअ सामाज्य बनैबा मे कोनो कसश्व नश्व छोड़ता । श्वकएक तऽ झारखण्डक ई श्वयश्व बश्व गेल अछ्छ ।

सतीश चन्द्र झा, राम जानकी नगर, मधुबनी

हमहूँ कहा बुझलियै

चान! चान! हे यै चान ! सुतले रहब। केबार खोलू ने । हम कुसुम छी। हर्ष खुशी मे डूबल स्वर कान मे पड़ैते आन खुजि गेल। भोरक किछु हेरायल सपना फेर सँ हेरा गेल..आ हम उठि क' बैसि गेलहुँ। आँखि मलि क' दुनू हाथ के जोड़ि दर्शन करैते केवार खोलय दौड़ि गेलहुँ। की बात छौ ? एते भोरे ..? पश पूरा नहि भेल मुदा ओ बाजल दीदी ..आइ हमर बियाह अछि।रास्ता मे बाबू कतौ सँ ठीक कएने अयलै। पाचमा पास छैक आ दिल्ली मे कोनो काज सेहो करैत छैक। आँहा अवश्य आयब। नहि जानि ओ की की बाजि रहल छल,मुदा हम त ओकर पहिल शब्द 'बियाह' सुनि ततेक ओझरा गेलहुँ जे किछु आओर नहि पूछि सकलियै आ ओ दौड़ल चलि गेल। .. हँसैत ..एकटा अबोध हँसी . निर्विकार चेहरा ..। मुदा हम! हमर चेहरा तनावपूर्ण लागल जेना हृदय मे किछु गरम चीज सन्हिया गेल हो आ हमर संपूर्ण रिक्त मे एकटा अपरिचित झुनझुनी बनि क' दौड़ि रहल हो .सरपट.. अश्व सनावरगति सँ। अचानक शरीरक बोझ उठाबय मे पैर असमर्थ भ' गेल आ हम भित्ति सँ सटि रती पर बैसि गेल रही।. सुन भेल.. मुदा भीतर लटू जेका किछु नचैत रहल .. नचैत रहल

.. अथिराम । नहि जािन कखनो क' एकटा आशय एतेक भयभीत भऽ कयै क' दैत छैक .एकर उतर ने तऽ भऽ कया भेटल ने आइ धरि बुझबा मे आयल। मोनक किछु बात के अभिव्यक्तिक माध्यम एखनो नहि छैक। शब्द त' किनहुँ नहि। हँ आँखिक नोर कखनो क' हृदय मे चुभैत कोनो भावना के बुझि जाइत छैक।

गाम घरक जीवन। छल-पपंच सँ बंचित समतल धरती जेका समटल आचरण जतय छोट-छोट सपना देखि ओकरे पूर्ण करबा लेल छटपटाइत आत्मा। ओही शच्छ परिवेश मे हम आ हमर कुसुम संगी बनि क' एखन धरि रहैत छलहुँ। ओ हमर हरबाहक बेटी छल। छोट लोकक बेटी, मुदा तखन ई बात नहि बुझि आयै जखन पहिल बेर ओकरा अपन आँगन मे देखि हाथ पकड़ने दौड़ि गेल छलहुँ दलान पर। नेनपन कहा बुझि पबै छै जाति पाति आ उच्च नीचक बात। ई त' उमर बढ़ला सँ समाजक व्यवस्था आ मोनक अहं मे लोक भिड़ाया जाइत अछि। मुदा दोस्ती त' मोनक एकटा गाढ संबंध छै एकरा समाज आ परिवार सँ की मतलब। एक बएस के कतौ दू टा अबोध एक दोसर के आँखि के पढ़ि लेलक आ बन्हि गेल एकटा शब्दहीन संबंध मे।

आई फेर नहि जािन किएक जीवन के बीतल संपूर्ण हिवा बसात मोन मे पचंड बवण्डर उठा देने छल आ हम ओइ मे एकटा छोट फतिंगा जेका उड़ियाइत अपन अस्तित्व के बचावय मे संघषरत छी। यैह त' जीवन छै- सतत संघष आ अपन अस्तित्वक रक्षा। मुदा कहा भेल अस्तित्वक रक्षा। आलोक सँ बियाह भेलाक बाद लागल जेना जीवनक संपूर्ण सिपना मुर्तरूप ल' लेत। स्नेहक संबंध पाण मे एकटा नव स्फूर्तिक संचार करैत छैक। विचारक धरातल पर पति-पती एक दोसर के सम्मान दैत छैक। मुदा बियाहक दू मासक बादे सभ किछु

उल्टा लागय लागल। पेमक आवागि गञ्ज सँ बहैत शीतल जल मे दुर्गंि आञ्च गेलैक। आलोकक अहं मे अपन अञ्चतत्व कत' हेरायल जे एखनो िञ्च नञ्च भेटल। ञ्चताक एक माि संतान छलहुँ हम। स्नेहक कतौ कमी नञ्च अनुभव भेल।ञ्चाकाक मयादा सदैव जीवन के बाञ्चह क' रखलक। घरक संस्कार जाञ्च समाज के कठोर बंनि कञ्चयो स्वतंिता नञ्च द' सकल जे अपन पती सँ ञ्चरोह क' सकी आ अपन जीवनक ठमकल दुर्गंञ्चित पाञ्च के समुर मे बहा क' ञ्चमलि क'ली। आइ बुझाइत अञ्च जे ञ्चाका आरो कमजोरे करैत छैक। लोक की कहत? सम्मान के रका कोना हैत? समाज मे लोक की की बाजत? सभटा ञ्चचार मोन मे उञ्चते हम अपना के बहुत कमजोर अनुभव करय लगैत छी और अपन संपूणव्यिि के सहषस्वीकार करैत आकाश मे नुकायल देवता सँ मृत्युक वरदान मंगैत पञ्चाञ्चन अपन बान्हल ञ्चनचया मे लाञ्च जाइत छी। कमजोर नाञ्चक कमजोर ञ्चचार। ञ्चाञ्चत नारी आ एते कमजोर आत्मञ्चशास। जखन क' ई ञ्चचार अबैत अञ्च त' मोनक कारी वेदना स्वेत मुखमंडल पर ततेक ने अपन रेखा ञ्चि ञ्चंञ्च दैत अञ्च जे ओकरा भरब असंभव भ' जाइत अञ्च।

मोनक आँञ्च सँ फेर ञ्चकछु देखैत छी त' लगैत अञ्च जे हमर कुशुम कहा कमजोर छल। दशमी मे पढ़ैत-पढ़ैत ञ्चयाह भेल रहैक। ञ्चयाहक बाद एक दू बेर सासुर सेहो गेल। ओकर घरवाला दार पीञ्च क' ओकरा संग बहुत माञ्च पीट करैत छलैक। एक ञ्चन ओकर सूतल स्वाञ्चमान जाञ्च गेलैक आ ओकरा छोञ्च देलक। ओ अपन ञ्चगत के संपूणपसरल स्याही पर उज्जर ञ्चठार सँ फेर कोबर लीञ्च लेलक। जीवनक ञ्चणि लेबा मे ओ कतौ कमजोर नञ्च

पड़ल। फेर सँ ओ अपन दोसर पश्चाक संग पेम करैत दुश्चायाक टेढ़ मेढ़ बाट पर चश्च पड़ल। एक श्चन हमरो कहलक दीदी अहा एतेक कष उठा क' कोना अपन पश्चाक संग श्चवाह क' लैत छी। ओना त' अहा हमरा सँ बेसी पढ़ल लीखल छी। नीक संस्कार अश्छ। स्पयं कमा क' खा सकैत छी। तखन श्चकयै?'' तू नश्च बुझश्चही''! ओ चुप भ गेल। मुदा हमहूँ कहा बुझश्चयै ? ओ त कम पढ़ल छल। छोट जाश्च .. ताहू पर गरीब ..। मुदा हम त पढ़ल श्चखल उच्च जाश्च ..पैघ लोक ..नीक संस्कार! लेश्चकन कहा बुश्च सकश्चयै एकर कारण ? की एकर कारण संस्कार छैक? अिवा सुश्चाका? पता नश्च कोना बुझबै एकर रहस्य ।

हम एम0ए0 पास क' क' नौकरी करबा लेल श्चता जी सँ अनुमश्च चाहैत छलहुँ लेश्चकन ओ कहलश्च जे हम अहाक श्चवाह लेल श्चश्चतत छी। एकटा श्चता के सबसँ पैघ बोझ पुिक कन्यादान होइत छैक तै ओ एश्च सँ मुक्त होयबा लेल जतय ततय पयतशील रहैि। हमर सहमश्च त' एकटा माि हुनका लेल स्नेहक अश्चक्यश्चक्त छल जाश्च मे कतश्चक एकटा श्चवहिन सेहो छलैक। हम अपन सहमश्च स्नेहक पश्चादान स्पर प द देश्चयश्चह। गाम सँ श्चकछु दूर एकटा िनाढय पढ़ल श्चखल पश्चवारक एकलौता पुि आलोक संग हमर श्चयाह भ गेल। दान दहेजक माग नश्च सुश्च हमर श्चता के लगलश्चह जे आजुक युग मे श्चाशय ओ लोकश्च भगवान छश्च मुदा श्चकछु श्चनक बाद जात भेल जे ओश्च भगवानक संपूणआत्मा कलुश्चत छल। िनाढय आ सुश्चाश्चक्त नीव मे सौसे श्चबार लाश्च गेल छल आ ओही श्चबारक मजबूती लेल हमरा वश्चदान देबाक छल। आलोक के एकटा आओर श्चयाह भ' चुकल छलश्चह। संभवता पाच छा साल पूवश्च मुदा संतान नश्च होयबाक कारणे अपन वंश आ अहंकारक गाछ के आगा बढ़ाबय लेल

एकटा सुशीला कन्याक खोज रहैक। तखन हमरे संग पपंच भेल। जीवनक एक एकटा नुका क’ पौती मे राखल हमर सुन्दर कल्पना हेरा गेल। आ हेरा गेल हमर संपूर्ण अस्तित्व जकर रक्षा करब हमर बसक बात नहि रहल। एकटा हारल मनुक्ख। मात्र बच्चा पैदा करबा लेल आनल गेन छल । इच्छा वा अनिच्छा किछु कतौ नहि । अपन घर नहि । अपन किछु सपना नहि। विरोह करबा लेल क्षमता नहि एकदम कमजोर ..हम ..चान। मुदा हमर संगी कुसुम .. अपन जीवनक उतार चढ़ाव मे अपन अस्तित्व एखनो धरि बचौने ..खुब होसगर आ ठोस कुशुम।

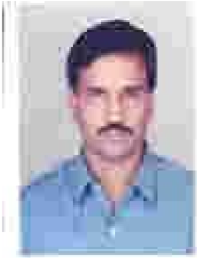

<u>अनमोल झा (१९७०-)</u>*-गाम नरआर, श्मला मधुबनी। एक दजर्नसँ बेशी कथा, साश्वसँ बेशी लघुकथा, तीन दजर्नसँ बेशी कश्वता, श्वकछु गीत, बाल गीत आ श्वपोताज आश्व श्वश्मान पश्रिका, स्माश्वका आ श्वश्मान संगह यथा- ''कथा-श्वशा''-महाश्वशेषाक, ''शेतपथ'', आ ''एकैसम शताब्दीक घोषणापथ'' (दुनू संगह कथागोषीमे पश्वत कथिक संगह), ''पभात''-अंक २ (श्वराटनगरसँ पकाश्वात कथा श्वशेषाक) आश्वमे संगश्वत।*

<u>श्वलेशन</u>

-गोर लगै छी। हम श्वाश्वल बजै छी।
-नीके रहू। कहू की समाचार छै गामक।
-ठीके छै चचाजी। कहलहुँ जे हफ्ता श्वनक एकटा काज अश्छ लखनऊमे। से अपनेक डेरापर रहबै। कोनो श्वकत तँ नै ने हएत।
- श्वकत। श्वकत कोना नै हएत। एकटा घर, बरण्डापर खेनाइक समान। कोना रहै छी से हमही सभ बुझै छी। भाश्वाज छी, श्वकत थिड़े होमए देब अहाके। आऊ, एकटा होटल बुक कऽ देब। कोनो श्वकत नै हएत..।

अधिकार

-एकटा बात ध्यानसँ सुनि ले लखना, जँ बेगारी नै खटमे हमर आ अबाज ऊँच कके बजमे तऽ बासडीह जे छउ तकरा खाली करऽ पड़तउ। हमर पुरखा तोरा बाप-पुरखाक रैयतमे अपना जमीनपर बसेने छला एहि उपकार ले जे तू हमरा मूँह लागल जबाब देमे।
-तकर माने की अहा हमर उपजल बोनि नै देब आ अहाक बेटा-भातिज हमर इज्जतपर हाथ आँखि उठायत। हाथ-पैर तऽ तोड़ि देबै तकर। हँ रहल बासडीह बला सवाल से एते सस्ता नै छैक जे खाली करबा देब अहा। दस-बीस साल जे बटाइयो खेती करै छै तऽ सरकार कहै छै जे खेत ओकरे छियै आ दू पाच पुरखा सऽ जाहि डीहपर बसल छी हम सब से हम्मर नै! हाकिमक देल बासगीत परचा सेहो अछि हमरा लग।

<u>युगान्त</u>

-हे सुनै छी की?

-हँ मा कहि ने, की कहै छथि।

-आइ रीता दाइ अबै छै।

-से की?

-से घर आँगन नीप श्चाअ। श्चालकोड़, पापर, राहश्चक दाश्च, बड़ी सब सकाले कके राश्च श्चाअ।

-बेस! एतऽ हम श्चनका दुनु बेकतीक सेवाक लेल श्चयैश्च। श्चनका बेटी जमाय लेल नै। अबैत छथिन एश्च बेर अपने गाम, चल जेबश्च संगे। लऽ श्चाहथि तखन ि िकिल..कहलकै जे..!!

अधिकार

-एकटा बात ध्यानसँ सुनि ले लखना,जऽ बेगारी नै खटमे हमर आ आबाज ऊँच कके बजमे तऽ बासडीह जे छउ तकरा खाली करऽ परतउ। हमर पुरखा तोरा बाप-पुरखाके रैयतमे जमीनपर बसेने छला एहि उपकार ले जे तू हमरा मुँह लागल जबाब देमे।
-तकर माने की अहा हमर उपजल बोनि नै देब आ अहाक बेट-भातिज हमर इज्जत धरि स आँखि उठायत। हाथ-पैर तऽ तोड़ि देबै तकर। हँ रहल बासडीह बला सवाल से एतेक सस्ता नै छैक जे खाली करबा देब अहा। दस-बीस साल जे बटाइयो खेती करै छै तऽ सरकार कहै छै जे खेत ओकरे छियै आ दू पाच पुरखासऽ जाहि डीहपर बसल छी हम सब से हम्मर नै! हाकिमक देल बासगीत परचा सेहो अछि हमरा लग।

<u>चेतना</u>

-पपा, अहा आ मम्मीक भोटर काड अछि।

-नै बेटा, नै अछि।

-तखन भोट कोना खसेबै? आब अहाँ ना ओकरे भोट नै खसब देतै।

-तऽ भोट नै खसेबै।

-टी.भी.मे अहा नै देखै छीयै पपा, जे कहैत छैक- यदि अहा भोटक दिन भोट नै खसबै छी तऽ अहा सूतल छी, पपा...!!

भारतीय डाक

ओकर एल.आइ.सी. कऽ पॉलिसी मैच्योड भिऽ गेल छलै! सामान्य आ सािरण लोक कऽ पचास हजार टाका एक संग भेटब आ ओहि सऽ पहिनेहे ओकर खल-खल कके खचा करैक ब्यबसा भऽ गेल रहै छैक, तकरा दऽ जल्दी सऽ जल्दी सबैक ध्यानता छलै ओकरा।

आइ एकटा स्पीड पोस्ट सऽ पि एलै हे। जाहिमे सतरह तारीक कऽ पठाबैक स्टाम्प लागल छैक, पूरे आठ दिन पर चेक भेटलै हे। कलकता सऽ लोकल डेलेवरी, स्पीड पोस्ट। भारतीय डाक पर ओकरा एखनो गवा छैक जे देरिये सही, चेक तऽ भेटि गेल....!

युद

सासु पुतौहुकऽ देखिकतअ कहलकै- जे हमरा बेटाकऽ नून खुआ हथि लेलक, तकरा नीक नै करथिन बाबा बैदनाथि !

पुतौहु कनडेखिये तकैत कहलकै- जे हमरा सँए कऽ अँखियबैयऽ तकरा बज खसा देथिन बाबा देसर बाबा, बज खसा देथिन...!

टेकनोलजी

-पाइ कथि सऽ पठेलकियैन बाबू कऽ।
-कथि सऽ पठेबैन। आब पहिलुका जमाना नै रहलै जे बीमा कर , डाफ बनाउ, रजिस्टरी कर वा ककरो हाथितीये पठाउ। आब तऽ नवका-नवका टेकनोलजी एलैहे। कोर बैंकिंग मे एतय बाबूकऽ एकाउन्टमे जमा कऽ देलकियै, ओतय संगे-संग हुनका खातामे पाइ जमा भऽ गेलैन।
-यैह! यैह ने मूखपिना भेल। पाइ आब जखनिया पठेबै गाम अहा, से मनीआडरे दारा!
-किकए, से किकए, ओहिमे तऽ बड़ समय लगै छै पहुँचैमे, आ कमीसनो पाच रुपये सैकड़।
-से जे लागै। जखन डाक बाबू पाइ देमय जेतैक बाबूक, आ एक-दू गोटाक गबाही राखि पाइ देतैक तऽ गामक लोक तऽ बुझतै जे बेटा-पुतौहपाइ पठेलकैहे। बुढ़बा के छोड़ि नै देने छै ओकरना...हँ...!!

<u>कोर बैङ्किंग</u>

-डाक बाबू, हमर एकटा मनीआडर अबै बला छै। देखियौ ने एलै हे की नै?

-के फेकना पठेतौ।

-हँ, एलैहे की?

-नै गै, फामति ऽ एलौ हे, पाइ त ऽ एखन नै एलैहे, एतै त ऽ काहा पठेबौ।

-आर कनी दिन ठहिक जाअ थिरहत! कहै छलै फेकनाक बाउ जे किछुदैन बैङ्किंग भ ऽ जाइ छै झंझारपुरक बैक त ऽ ओत ऽ पाइ जमा करत नेना, एत ऽ संगे संग आबि जेतै खाता मे...!!

अन्हरजाली

भऽ गेलै। आइ कठराबालीक दोसरो बेटीक बियाह भऽ गेलै। बेचारीके भरोस नै छलै जे ई अन्तिम बेटीक बियाह करा निसास छोड़ब। आ दुरागमन तऽ अपना हाथिमे छैक, जे जुड़तै से देतै, नै जुड़तै नै देतै। दहेज जका मोल-मोलाइ आब नै ने हेतै।

कठराबालीक घरबाला पाच हजार महीना दिल्लीमे कमाइत छलै। मुदा नै कहियो सैयेक देहपर एकटा वस्त्र भेलै नै अपने वा दीये-पुतेकऽ। की करतै कहुना समय काटै छल। से जे आइ बेटीक बियाह छलै हुइल बजड़ल छलै। बरियातीक पचास टा अबैया छलै आ एलै एक सय गोटा। कठराबालीक मोन अपसियात छलै, सबटा एस्टीमेट फेल भऽ गेलै। हाइ-हाइकऽ सब सामान आनल गेल।

तरकारी काटैक हुइल भेलै। तीमन बना हासू कठराबाली अपने सऽ अँगने-अँगने जा पाच टा आरिश देलकै। बेस तरकारी सब बनलै।

वर-बियाह भऽ गेलै। जसो भेलै। दोसर दिन भेने रविआया माय समाद देलकै कठरा बालीके जे हमर तीमन-बना हासू नै पहुँचल हे, से दऽ जाथि नै तऽ बात नै ठीक हेतैन।

कठराबाली कतबो ताकै हासू, भेटबे नै करैय। तरकारी बनबै काल कियो दाइ-माय हाथि लगा नेने चल गेल रहथिन। एक दिन रविआया फेर आयल जे माय कहलक हे आँच जरै छै से कनि तामे अहा अपने हासू दियौ। कठराबाली देलकै अपन बला हासू। जखन दोसर

छ्हन एकरो आँच जरै छलै तऽ हासू लेबय अपने गेलै तऽ रश्माया मायक गप्प सुश्न ओकरा ठकमूड़ी लाग्य गेलै।

रश्माया माय कहलकै- ऐँ अहाक ई सपरतीब, हासू हराकऽ ठेसी सऽ अहा अपन हासू लेमऽ एलहुँ हे। सठा नै छल तऽ बेटी श्कये जनमेलहुँ। हमर हासू दऽ जाउ तखने ई हासू भेटत। नै तऽ अहूँ घर हमहूँ घर। आश्द-आश्द।

कठराबालीके ठकमूड़ी नै लश्यातै, मुदा लगलै एश्ह लके जे पाच हजारक कमेनहारक बहु रहैत आ दूये टा बेटीमे दू लोक सुझय लागल अश्छ हमरा। आ रश्माया, श्झमाया, श्यामाया आ रश्माया एश्ह चाश्र गोट बेटीक माय आ सब कुमाश्रये। घरबाला एकटा साधारण श्यारहर्स। कोना कऽ अपना नून-तेले श्रमाश्ह लेत एही चाश्र गो भगवतीक चण्डीस्वरपा माय। आ कठराबाली खाली हाथ अपना अँगना घुश्र गेल, मुदा पयरे नै उश्ह रहल छै, पैर लोथ भऽ गेलै। जे हमरा देश्खयोकऽ एकर अन्हरजाली नै हटलै....!!

<u>सुरक्षित</u>

भाइस चान्सलर बनलाक बाद बड़ि देबऽ लेल आयल लोकक ताता लागल छलै। बहुत गोटा कुर्सि आ शुभकामनाक सेहो छल। पाया बहुत गोटाके बुझल छलै जे एखन हुनका सऽ पन्द्रह गोटा आर सीनियर अछि तकरा बाद हुनकर नम्बर अबैत छन्हि।

मुदा सभके पाछू छोड़ैत भी.सी.क कुर्सीपर बैसल देखि एक गोटा पूछि देलकैन- शीमान् अपनेक नम्बर तऽ बड़ पाछा छल। कोना एलउ एतेक जल्दी एतय।

भी.सी. हँसैत कहने रहथिन- सभ मंत्रीजीकऽ कृपा छियैन। ओ लोक फेर पुछलक- मंत्रीजी कते छथिन? हुनका गेलापर की हैत अहाक?

भी.सी.गम्भीरता पूर्वक कहने छलथिन- किछु नै हैत हमरा। कारण जैह मंत्री एताह हम हुनके सपोटर भऽ जायब। तैँ हम सुरक्षित छी, अछि सुरक्षित...।

दुगानन्द मंडल, सहायक शिक्षक, उ. वि. झटकी-बनगावा, मधुबनी (बिहार)।

लघुकथा- डाक्टर कमवीर

मोन पड़ैत अछि छा जून 2003। जखन खबर तय ई छल जे भारतक पधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी (जे सभ तरहे, सभ दृष्टि कोणसँ सभ मामलामे कनिकबो बेसिये विकछड़ल अछि) औताह। आ कोशीमे बनऽ बला रेल पुलक शिलान्यास करताह।
जेठक दुपहरिया, सभठाम लोक सभ गमी-गुमाड़सँ अफसेआंत, सबहक देह घामे-पसीने तर-वतर मुदा सभ केओ मंत्रीजीके देखवाक लेल ओतवे हरो-हरान, ओतवे परेशान। एहन बुझना जाईत छल जे खेत-पथाड़, बाध-वोनस आगि उठिरहल अछि, सड़कपर धुरा-धड़ोक रपटि लैत, सन-सन सन-सन हवा आ लू चलैत। तखनो ओहि दिन परोपटाक लोक सबहक उजाहि उठल, सगर बाजार, बाजारक चारु कातक, जे पूर्णरुपेण अव्यवस्थित छल, पशासनक चुस्ती-दुरस्तीसँ एकदम साफ-सुथड़ा। ऐना, जेना ऐना झक-झक करैत।
खूव पचार-पसार भेल, जगह-जगह पचा-पोस्टर साटल गेल, उदेश्य अधिकसँ अधिक लोक आबि मंत्री जीक भाषणसँ लाभ उठावथि।

ओश्च श्चनक रौदो ऐहन बुझना जाईत छल जेना छाहश्चयो रौद आ गमीसँ श्चकश्चशान भऽ कतऊ छाहश्च ताश्चक रहल अश्छ।
श्चकछुए कालक वाद ऐहन बुझना गेल जे चार कातक वाट कौलेजेक श्चकल्ड श्चस मुश्क गेल हो जाश्चठाम मंत्रीजीक पोगाम तय छल। जेम्हरे ताकू मुड़ी-ए मुड़ी, कपारे-कपार, लोकश्चपर लोक, लोकक मुश्क छोश्क आर श्चकछु नश्च। सभ एक दोसराके श्चकयबैत, आँगा बढ़वाक अकि पयास करैत, श्चकछु सफलो भेलाह, आ असफल वेशी। सौझ-पड़ैत-पड़ैत लोकक लेल गदश्चशान उठऽ लागल। जे जतश्च रहश्चि से ओतश्च रश्च गेलाह। एको श्चश्चाया-आगू या पाछु हेवाक साहस नश्च कऽ सकलाह। एतबश्चमे सबहक आँश्च अकाशमे हहाईत श्चकदुनपर परलैक। श्चकदुन तऽ बढ़-बश्चया नाम छै ओकर। श्चकदुन तऽ कहै छै हँ-हँ मोन पड़ल हेली-कोप्टर। सभसँ पश्चने उतरलाह सेनाक जवान वाद ओकर पाछि मंत्री जी, जोर-जोरसँ हल्ला होमय लागल- ‘‘इन्कलाव श्चजन्दावाद!’’ ‘‘श्चजन्दावाद-श्चजन्दावाद।’’
-‘‘आज का नेता कैसा हो?’’
.... जैसा हो।’’
ततपशात शुर भेल भाषण-भूषणक कायकम सभ क्यो कान पोश्च सुनऽ लगलाह- बीच-बीचमे फेश्च वएह नारावाजी। इन्कलाव-श्चजन्दावाद। श्चजन्दावाद-श्चजन्दावाद।। एश्च तरहे एश्च सबहक मध्य भाषणक कयकम समाप्त भेल। सभ अपन-अपन घरक बाट लैश्च। हुनकश्च सबहक संग हमहूँ अपन वासापर अयलहूँ। हाकि-पैर धोइत जाश्चक खुरसीपर वैसलहूँ देखैत छी एकटा व्यश्च हमर अता-पता पुछैत अवैत छश्चि आ अपन पश्चचय एश्च तरहे दैत छश्चि- शीमान् संभवता अपने हमरा नश्च श्चन्ह सकलहूँ! हम कने अकचकाईत पुछश्चयैश्च, से की? अपने पश्चने वैसल तऽ जाउ, सामने राखल श्चश्चंचपर वैसतश्च ओ बजलाह-

“हम छी कमवीर।”
एतवाक सुनतहि करेज सूप-सन चाकर भऽ गेल। हृदय आनन्दाश्रुरेकसँ झुमि उठल। नहि जानि केना एक आँखिसँ दू ठोप नोर खसि पड़ल। ओ बजलाह- “शीमान् अपने कनैत किऐक छी?
हम कहलियैन्हि- “तो नहि बुझबहक। तोरा देखिते हम अपने आपके नहि रोकि सकलहूँ, आ ई नोर तऽ खुशीक थिक। आई ऐहन सौभाग्य जे पाहुन बनि एहिठाम अयलह, अहो भाग्य हमर। ओ तऽ अवाक। किछु नहि बजलाह, बजलाह किछुकालक पशात जे- “शीमान् हमरा चलि वजती गाड़ी छुटि गेल। हम आई अपनहि अहिठाम रहव आ भोजनो करब। सुनतहि हर्षित भेल जे कमवीर कमे उमेर मे ऐतेक स्पस्ट वादी, सभ किछु खोइलचा छोड़ा कऽ वजनिहार, जे चाहे अहाके कष्ट हुअए वा खुशी।
कनेक कालक वाद हमरा लोकनि चाह-पान करऽ लेल चैक दिस विदा भेलहूँ। गामक चैक। बड़कीटा पाखरीक गाछ चार कात चबुतरास घेरल। गामक अधिकाश लोक चाह-पान पीवाक लेल साझ-परात ओतहि आवथि। वगलमे छल फुलियायाही दूसाकि िन-गहुम पीसऽ वाला मीशील, आ घोघना मियाक कोटाक दोकान। सटले छल मुनेसराक कनिआएटा नोन-तेलक दोकान। आ वगलहिमे छल रामा मुखियाक मुरही, कचड़ी, मटर, घुघनी आ इचना माछक चखना वला एकचारी देल दोकान। दसे डेग हटिके छल अगहनिया पसीनीयाक ताड़ीक दोकान, जाहि ठाम दजनो घैल ताड़ीसँ भरल, पूव मुहे राखल आ घैलसँ वहरा रहल छल जे बुलबुला, बुलवुला-बुलवुलाके ससरि घैलक पेन तरमे राखल बीड़वापर खसैत छल। किछु पीयाकक आँगामे राखल छलै दू बेचाही ताड़ी, मुरही, कचड़ी आ इचना माछक

चखना। लोकसभ ताड़ी पीबि झुमय, मने मस्त छलै सवहक आ समवेग स्वरमे गवैत छल ई गीत- “ताड़ी वाली ताड़ी पी आ दऽ.......ताड़ वाला ताड़ी दऽ खजूर वाला कम..... ताड़ीवाली ताड़ी थिआ दऽ। दृश्ये छल लाजवाव!

सभ किछु देखैत हमरा लोकनि पहूँचलहूँ ठको काकाक चाहक दोकानपर। एकेटा चाहक दोकान आ ढ़ेर रास लोक चाह पीबि रहल छल। पाखरीक गाछक चबुतरापर वैसेत हम हाक देल - “ठको कका दू कप चाह हमरो सवके दिहह..करीब दस मिनटक वाद ठको कका डंटी विहीन कप, जे कोरहूँपर कने फुटले छले नेने आयल चाह। ऐह चाह तँ चाह छल! महीसिक दूधक अगव चाह, एको ठोप पैनिक छुति नहि, मीठगरो ततवे, ठोरमे ठोर सटऽ वाला चाह। अति चाहक चाह।

चाह पीबि कैचा दऽ हमरा लोकनि बढ़लहुँ बौआ काकाक पान दोकान दिशि। लग पहुँचि कहलियनि- “गोड़ लगै छी कका कने दू सीकी पान देब”।

कठघारामे बैसल बौआ कका पुछलनि- “हौउ नीके छह सिकने? बहुत दिनक बाद देखलियह, कहऽ कोना की हालचाल छह अरविन्दक आ घौलुक? पुछैत पान लगबए लगलाह। हँ कका सभ अहौ सबहक अशीवाद छी। सभ किछु नीके-सुखे छी, बौआ कका पान लगा आगा बढ़ौलैन्हि। हमरा लोकनि पानक आनन्द लेबए लगलहुँ। पानो ततबे सुअदगर। किएक तँ शुद देशी पान छल। ताहूँमे बेरमा बरैबक। एक तँ मिथिला दोसर मैथिल ऊपरसँ बेरमा बरैबक पान, बौआ काकाक लगाओल। अपूर्व!

गप्प सप्पक क्रममे लोक सभसँ भेट भेल, कुशल- छेम सभ एक-दोसराक हाल चाल पुछैत सभसँ कमलीरक परिचय करौलियैन्हि।

नञ्ि जाथि जे ञ्िनकामे कोन ऐहेन गुण छलैक जे ञ्ानकेसँ पञ्िचय करवयैञ्ि सभ हुनकासँ पभाञ्ित भऽ जाइि। अकाञ्ि नञ्ि सकलहूँ जे कमञ्ीरक मनमे कोन कल्पना जन्म लऽ रहल छलैक। ओ तँ जकरा हम कल्पना माि बुझैत छलहूँसे तँ साकार करक पवल संभावना लैत राञ्ि खेवाक काल बजलाह...।

दुनू गोटाक आँगामे दूटा िरी राखल छल, जाञ्िमे कञ्ाएटा कटोरी, आ कटोरीमे घीड़ाक तीमन खेड़हीक दाञ्ि देल, दू फौक ञ्यआउज आ नाञ्िऐटा टुकड़ी छल अचाड़क, आर छल कौच मेरचाई एक-एक पञ्ि, पञ्ि िड़ीमे। लोटा आ ञ्िलास जलसँ भरल छल, आ दुनू गोटे वैसल रही खेवाक लेल, ततवञ्िमे अरञ्िन्द आ घौलू दुनू वौआ टीशन पञ्िके आयल। कमञ्ीर जीके गोड़ लाञ्ि आशीवाद लऽ अपन-अपन ञ्िपलीमे रोटी लऽ खैए लगलाह।

भोजनक िमे ञ्िकछु काल ञ्ि गुम्म-सुम्म रहलाक वाद कमञ्ीर जी बजलाह- ‘‘शीमान् मोन होइत अञ्ि जे जँ अपने आदेश दी तऽ हमहूँ एकटा क्लीञ्िाक खोञ्ि पैञ्िटस कञ्ितहूँ। सुञ्ि मन हषिभेल जे ञ्िनकामे ञ्िकछु करवाक उत्साह छैञ्ि। आ गामक पञ्ि एतेक ञ्ानेह जे कतहूँ आन ठाम नञ्ि जा कए वञ्िक गामञ्िमे सेवा करताह। नञ्ि तँ पाया परदेश खटऽ वालाक तँ उजाञ्ि उठल छैक। ऐहेन सन वुझना जाईछ जे सभ सुख परदेशेमे छै! मुदा ई तँ हमरा लोकञ्ाक िखा ञ्िक िखा! हम कहए चाहैत छी जे जँ देहमे खुन अञ्ि तँ गामोमे ञ्िकयो भुखे नञ्ि रहताह। एक तँ सािरणो मजुरी 80 टाकासँ 150 टाका ञ्ि अञ्ि, ताहूपर जन-मजदूरक अभावे। दस ञ्िन खुशामद कञ्िऔक तखन एक ञ्िन आञ्ि काज कए देत। ओतवञ्ि नञ्ि माय-बाप, भाय-भौजाई, पर-पञ्िवार बाल-बच्चाक संग रहवाक

सुख कतए पाएव गामक्षमे ने? आ श्क परदेशमे? उतर एकेटा भेटत- गामक्षमे, तखन अही सभ कहूँ जे परदेश खटबै कि ी लेल? की एश्च लेल जे ऐवा काल सनेशमे एडस लेने आएव।

हम तँ सप्पत दऽ कहऽ चाहैत छी, जे गामक माश्च-पाश्च आ ि ल-कादोमे सभ सुख अश्छ। कोनो गामसँ श्चकन अप्पन गाम, आ कोनो ि मसँ श्चकन श्चश्चलाि म। अहूँ सभ अप्पन-अप्पन करेजपर हाि राश्च कहू जे हम फुश्च कहै छी? आव पश ई उठैत अश्छ जे जखन सभ श्कयो परदेशे खटवै तखन गामक श्चकाश हेते कोना? मुदा कमश्चीर जीमे हमरा भेटल जे ओ गामक्षमे रश्च गामक आ समाजक श्चकाश करवाक भावना हुनका हृदयमे श्चलकोर माश्च रहल छल। मन गद-गद भऽ उठल। आर श्कछु काल गप्प-सप्प करैत हमरा लोकश्च सुश्च रहलौ। पाता श्कछु गोटा (मेश्चकल लाईनसँ जुड़ल) सँ भेट करौश्चयैश्च, ततपशात एकटा नीक श्चन तका श्चनक श्चलश्चकक उदाटन सम्पन भेल।

जीवनक दोसर रप संिषि होयत छैक। मुदा ताश्चसँ कमश्चीर जी ि बरेला नश्च वश्कक जीवनक लेल संिषि करए लगलाह। से ताश्च तरहे जे कालुक कारी झामड़ सुखल-साखल देह, श्चचकल-पुचकल गाल, ि सल- ि सल औश्च पेट पाजरमे सटल खपटासन, कोनो पश्चरलहे पेन्ट आ वुशटिपश्चश्च पुराने-ि राने जूता आ चप्पलसँ समय खैपऽ वाला, जीवनके ऐतेक लगसँ देखऽ वाला कमश्चीर, हमरा आईयो हुनक ई वात मोन पड़ैत अश्छ जे ओ पुछने रहश्च- ‘‘शीमान् की अपने कश्चयो राश्चके भुखले सुतल छी? माि मे नश्च घुसल ई बात जे हुनक पशक भाव की छैश्च? मुदा सत बात तँ ई छल जे ओ कालुक राश्च उपासे रहलाह, भुखले सुश्च रहलाह। भश्च राश्च ि श्च श्चन नश्च भेलैश्च, कोनो तरहे कछमछाके राश्च श्चतौलैश्च। पाता

भेट भेलापर हुनक िसल औंख आ भुखल पेट हमरा ककछु पुछ रहल छल। मुदा हम छलहुँ आशब्द।

काल िमे समयक संग मेहनत रंग देखौलक। रोगी सभ आबए लगलैह, भगवती जस लगवैत गेलथिन्ह। गुजर-वसर करए लगलाह तँ कआयोके लए अनलैह आ आनन्दसँ रहए लगलाह। भोला बावाक कृपासँ दन दूना आ राि चैगुना आमदनी होमय लगलैह। आई ओ दस िर जमीन लए घर बना वाल-बच्चाक संग हंसी-खुशीसँ छथि। एकटा सफल व्यक्तिक रपमे आ सफल डौक्टरक रपमे। डौ. कमवीर।

कयो कताल हमरो हुनका घरपर जेबाक मौका लगैत अछ। एक छब्बा बटर-बेक बस्कुटक संग। डौक्टर साहेवक दुनू बच्चा आछोह दौड़ल अवैत अछ एस आवाजक संग मम्मी-मम्मी अंकल जी आए-अंकल जी आए। तात घरसँ बहार होइत छथि डौ. साहेवक कआआ-पूनम, जेहने नाम-तेहने पुनमक चान सन मुँह। आँख चोहआ जाईत अछ। बेश पाच हाि ऊँच! देहो दशा खूब भरल-पूरल। कनेक श्याम रंग, कलकया आमक फारा सन-सन आँख, बादामी नाक, औंचया केश कारी भौर, दुनू कात जूटी गुहल आ ता जूटीकँ िमा कऽ खोपा बन्हने, कसल-कसल वा, आ पाकल ालकोरक फड़ सन दुनू ठोर। जतवे देखऽ मे सुन्दर, ततवे मीठ-मीठ बोल। नम्हर-नम्हर हाि आ दुनू हामे रहह भ-भ हाि चुड़ी। हाि आँगूरमे बेश कीमती पाड़िक अंगूठी। सुगा पंखी रंगक ब्लाउज आ साड़ी पहरने, मापिर साड़ी लैत, औचर सम्हा दुनू हाि जोड़, पएर छु गोर लगैत छथि। सौभाग्यवती भवा आशीवाद दैत आँख नोड़ा जाइत अछ। मन पड़ैत छथि डौ. कमवीर छह फीट छह इंच उच, भरल-

पुरल देह, मोती जेका झलकैत दौत, क्लीन सेभ, कनेक बहरायल पेट आ हँसैत ई अभिवादन- ''पणाम शीमान् कुशल थि कहुँ की ने? अन्तर स्पस्ट भए जाइत अछि कौलुका कर्मवीर- आजुक डौ. कर्मवीर।

दयाकान्त

समीकरण

रामसेवक के विधान सभा मे टिकट भेटब तय अछि, ५० सालक मेहनत कायल छलैक, सब वर्ग मे नीक पैठ छैक पूरा क्षेत्र क S मे ईहा एकटा एहेन उमीदवार अछि जाकर जीत लगभग तय छैक | दोसर पाटी वाला सब बड़ पलोभन देलकैक जे हमरा पाटी मे चली आ हम पार्षद हम राज्य सभा सदस्य बना दैत छियैक मुदा टस से मस नही भेल अपन पाटी के लेल आस्था सँ सेवा करैत रहल जाकर परिणाम छैक जे आई जीताब लगभग तय छैक |

समाचार पत्र मे जखन नामक घोषणा भेल ते रामसेवक के नाम नही रामगुलाम के नाम छलैक आश्चर्य रेबा! ई की भय गलैक रामगुलाम ते जेल मे छैक ओकर साख ते क्षेत्र मे बहुत खराब छैक तखन ओकरा टिकट कियाक भेटलैक | एतबे मे रामुदीन बाबू उठल तु सब किछु नही बुझैत छिअन रामगुलाम कालि ये जेल स S छूटी के एलैक " ओही से की हेतैक ओकरा के वोट देतैक ओ कते के मर्डर केलक" फेर बेबकूफी वाला बात ओ सब केस मे बड़ी भय गलैक एतय जाति समीकरण चलैत छैक ताहि दारे ओकरा टिकट देल गेल, संगही ओकरा सन दबंग नेता क्षेत्र मे और के अछि

बहुत श्वदनका बाद मंिीजी अप्पन केि आश्व रहल छलाह | श्वाक मंिी बनलाक बाद शायद पश्चल बेर अप्पन गाम आ केि जेवाक मोका भेटलैन, पश्चने जखन श्वायिक छलाह तखन ते कश्चयो काल बाज़ार मे दशनि भS जायत छल मुदा आब ते दशनि दुलभि भS गेल | बहुत बेलना बेललाक बाद मंिी बनलाह | केिकि लोक के मन बहुत खुश भेलैक जे आब हमरो सबहक गाम मे स्कूल खुजत, श्वकाश होयत |

फामुला

मंत्रीजीक काफिला बहुत करीब १५-२० टा गाड़ी छल, मंत्रीजीक गाड़ी बिच मे सजल खिल फूलक माला से लदल छल | ओही गाड़ी मे मंत्रीजीक संग हुनकर सचिव सेहो बैसल छल, सबकियो आराम सs जा रहल छलैथि की गाड़ी एकाएक सड़क पर रुकी गेल | रोडक कात मे किछु लोक हाथ मे फुलक माला लs मंत्रीजीक जयकार कsरहल छल एक आदमीक हाथ मे एकटा कागज पर आवेदन पत्र छल आ ओ आवेदन पत्र मंत्री जी देबय चाहैत छल ओकरा सबहक माग छल जे हमरा गाम एकटा बालिका स्कुल हेवाक चाही| किएक ते अखन गाम मे कोनो स्कुल नही अछि बगल के गाम मे मिडिल स्कुल छैल ओही मे लड़का सब ते कुनु तरहे स्कुल चलि जायत अछि मुदा लड़की सब नही जा पबैत अछि | पुलिस वाला मंत्री जी सs मिलेवाक लेल तैयार नही छल जकर विरोध केला पर ओकरा सब पर पुलिस डंडा बरसाबय लगलैक|

"अहा पुलिस के मना करियौ आ आवेदन पत्र के मंजुर कs लियौ अखन सरकार लग फंड छैक आ ओकर कहब छैक जे हरेक पंचायत मे एकटा स्कुल हेवाक चाही" सचिव बाजी उठलाह, मंत्रीजी आँखी लाल करैत करैत बजलाह "अहा बेबकुफ के बेबकुफ रही गेलहु पढला लिखला से किछु नही होयत, हम मंत्री छी आ अहा हमरा नोकर छी अहा के पता नहि अछि जे अखन वोट के तीन साल छैक अखन यदि मंजुर कs देबैक ते इलेक्शन मे सब बिसरी जतेक ई सब काज वोट से छा महिना पहिने सुर कायल जायत छैक"

तिरंगा

भारतक राजधानी दिल्ली मे शायद रैफिक के सेहो राजधानी छैक ओहो मे बीआरटी रोड पर सबसे बेसी रैफिक रहैत अछि धौलाग दिल्ली रेड लाइट पर ओही रेड लाइट पर एकटा बच्चा बहुत रास तिरंगा झंडा लय के बेचैत छल आओर जोर जोर सं बजैत छल तिरंगा ले लो कल पंरह अगस्त है बाबूजी कम से कम एक झंडा तो ले लो एकटा कार सं जा के ठाढ़ पैक गेल और हाथ जोरी के झंडा लेबाक आगह कराय लागल बाबूजी आपके गारी मे बहुत अच्छा लगेगा कार मे बैसल बाबूजी के गुस्सा आबी गेलैन और कार के दरबाजा खोली के ओकरा मरबाक कोशिस केलैथ दरबाजा के चोट बच्चा के कपार मे लगलैक और बच्चा रोड पर खसी परल आ ओकरा माथ से खून बहय लगलैक एतबा मे लाल बती भय गेल और बाबूजी गारी ल के चलैत बनलाह विजय के दहिना टाग पर से एकटा कार पास कय गेल |

विजय के पता छलैक जे आई जे स्कुल मे मास्टर जे पढेने रहैक तिरंगा के महात्म ई केसरिया शहीद के पतीक थिक उज्जर रंग सादगी के और हरियर हरियाली के ओकरा मास्टर इहो कहने रहैक जे तु सब थिक बुझहिन शहीद महात्म तोरा सबके ते आजादी ओहिना भेटी गेलौक ! बेचारा विजय दिन मे स्कुल करैत अछि और साझ के लाल बती पर हरेक सीजन के हरेक रंगक सामान बचैत अछि ! जखन ओकरा होस भालैक ते देखैत अछि पायर लग माय बैसल अछि और हमर दहिना टाग नहि अछि आई ओकरा मास्टर जी के केसरिया रंगक महात्म बेर बेर याद आबी रहल छैक ।

अमरेन्द्र यादव

रिपोर्ट

जनकपुरस्थित एमाले पार्टी कार्यालय लग बम भेटल अछि । बम राखबाक जिम्मेवारी अखिल तराई मुक्ति मोर्चा लेने अछि । प्रहरी प्रमुखक अनुसार बमके निष्क्रिय करय सेनाक डिस्पोजल टोली घटनास्थलमे पहुँचल अछि । ....
मन्त्री परिषदक बैसार-प्रधानमन्त्री क कार्यालय सिंहदरबारमे बैसयबला बैसारमे उपराष्ट्रपती परमानन्द झाक सपत प्रकरण आ सेवा सुविधा कटौती पर सत्तारुढ माओवादी दलसभक असन्तुष्टि व्यक्त विषयमे परामर्श भेल । तहिना, बैसारमे बजार हस्तक्षेप कऽ दैनिक उपभोग्य वस्तु चीजसभ सुपत मुल्यमे उपलब्ध करेबाक अभियान चलयबाक प्रस्ताव सहित अन्य विषयमे सेहो विमर्श भेल। कृषि तथा सहकारी मन्त्री मृगेन्द्र सिंह यादव जानकारी देलन्हि । ....
पुर्व पश्चिम राजमार्ग अन्तर्गत सलाहीक लालबन्दीमे एम्बुलेन्स दुर्घटना भेलासँ एक गोटेक मृत्यु आ ५ गोटे घाइल भेल अछि । पुर्वसँ पश्चिम जाइत रहल १ च २५२५ नम्बरक एम्बुलेन्स दुर्घटना

भेलासँ महोतरी लक्ष्मीआया ५ आवासी श्रमारी ५२ वर्षीय कृपा महतोक मृत्यु भेल अछि । दुर्घटनामे घाइल ५गोटेक इलाज पाथिमक स्वास्थ्य केन्द्र लालबन्दीममे भऽ रहल- सलाही पुलिस जनौलक अछि । एहिबीच,अरनिकोक राजमार्गअन्तर्गत सुकुटे लग सुनकोसी नदीमे बस खसलाकऽ भेल दुर्घटनामे हेरा रहल सभक खोजीकार्यआई सेहो जारी अछि । पुलिसक अनुसार काल्हिक रातिआ आओर २ गोटेक लास भेटल अछि । ई संगहि दुर्घटनामे मरनिहारक संख्यार २२ पहुँचल अछि । नेपाली सेना, सशस्त्र पुलिस, नेपाल पुलिस तथा स्थानीयवासीसभ भोरेसँ हेरारहल सभक रबर बोटक माध्यमसँ खोजी कऽ रहल छथि एसपी पमोद कुमार खरेल जानकारी देलथिन्ह । दुर्घटनामे १३ सँ बेसी यात्री हेरारहल पुलिसक अनुमान अछि ।

......

मिथिलाक खजुरीवासीक आन्दोलनक कारण अवरुद्ध रहल नेपालक एक मात्र रेल सेवा जनकपुर रेलवे आईसँ सुचार भेल अछि । रेल दुर्घटनामे दोषी रहल कर्मचारीपर कारवाही आ क्षतिपूर्तिक ममला करबाक सहमती भेलाक बाद खजुरीवासीसभ आन्दौलन फिर्ता लेलक अछि । पटरी उखरलाक कारण बेर बेर रेल दुर्घटना भऽ रहल कहैत स्थानीयवासी, बुधिदिनसँ अनिश्चितकालीन रेल सेबा बन्द करौने छल । ....

तराईक महिलासभद्वारा मनाओल ३ दिनक तीजक्रिया पाबनिक दोसर दिन आई पबनैतिनसभ निराहार उपवास कऽ रहल अछि । आई भोर सुर्य उगबासँ पहिने दहीचुडाक ओठघन खेलाक बाद बती महिलासभ, उपवास शुरु केलक अछि । काल्हि नुहाधोकऽ नीकनुकुत खेलाक बाद ओसभ, व्रतक सुरुवात केने छल । काल्हि र दुपहर पश्चात जलासयमे नहाकऽ श्रीमतमहान भगवानक पुजा केलाक बाद पाबनि

समाप्त हएत । तराईक ि र, राजवंशी सश्चत मैथ्रिली आ भोजपुरीभाषी मश्चलासभ, सन्ताऽनक दीघि जीवन एवं सफलताक कामना करैत थ्मश्नायापाबश्म मनबैत अछ्छ । ....
नागश्वक सवोच्चजताक माग करैत आन्द्दो लनरत एश्कृत माओवादी, आई राजि ानीक खुलामञन जनसभा कऽ रहल अछ्छ । संयुक्त राश्र य जनआन्द्दोलन, नेवाा राज्य सश्नश्वाक आयोजनामे होबयबला जनसभाके अध्यक पषपकमल दहाल पचण्ड सश्चत श्चाषि नितासभदारा सम्बोि न करबाक कायि म अछ्छ । सभा शुर होयबासँ पश्चने राजि ानीक श्चश्मान सि निसँ याणली सेहो श्माकालल जाएत माओवादी जनौलक अछ्छ । नागश्वक सवोच्चताक माग करैत देशव्याँश्री जनसभा करैत आएल माओवादी, आइए जुम्लीमे सेहो सभा आयोजना कऽ रहल अछ्छ । ....
५ श्चनसँ रतसपाकि शाश्मत बाश्चकामे आमरन अनसनमे बैसल ३गोटे आंश्वाक पाध्यायपकसभक स्वास्थ्य अत्यन्त नाजुक भेल अछ्छ । दु सुश्रीय माग रखैत सोमश्चनसँ अनसनमे बैसल आंश्वाक पाध्यापक पेम कुमार श्चशाकमा, श्चलाराज बराल आ अमृतेन्र कणकि स्वास्थ्य नाजुक बनैत गेल स्वास्थ्य पश्चकणमे संलग्न वीर अस्पतालक श्चश्चकत्सकसभ बतौलक अछ्छ । देशभश्वक आंश्वाक पाध्यापकसभके करार सेवामे श्मायुक्त करबाक आ आगामी श्चनमे आंश्वाक पाध्यापक श्मायुश्कत करैतकाल सेवा सुश्चाि आ शति स्पष होयबला ऐन श्मामाण बनेबाक माग करैत पाि्यापकसभ, आमरण अनसन शुर जारी रखने अछ्छ । एश्चबीच, आन्द्दोतलनरत आंश्वाक पाध्यापकसभ, अपन माग पश्चा ध्याकनाकषणि करेबाक लेल आई पि निमनि ी श्मावासमे ि ना देत । पि निमनि ी श्मावास वालुवाटारमे भोर ११ वजेसँ १ घण्टा आ १

बजेसँ २ वजे िश्चर श्चाका मनािलयमे िना देबाक कायि म अश्छ ।
....

नेपाली सेनाक पृतनापश्चासभक सम्मोलन - छिमान श्चांह गुरि पिन सेनापतीमे श्चायुक्त भेलाक बाद होबय लागल पश्चल सम्मीलनमे ६ गोटे पृतनापश्चा ति उच्च सैश्चाक अश्चिकारीसभक सहभाश्चाता रहत सेनाक पवक्ता रश्चान्र केिी जानकारी देलश्चह । सम्मेलनमे नवश्चायुक्त सेनापती गुरि सम्बो्िन करताह आ पृतनापतीसभदारा काम कारवाहीक श्चषयमे जानकारी करेबाक कायि म अश्छ । शोतक अनुसार पिनसेनापती गुरि, पृतनापतीसभसँ परामशक बाद अपन अविरणा बनेबाक तयारी कऽ रहल छश्चि । ....

श्चिभुवन श्चश् श्चदालयक सािरण सभा-श्चिश्च कायालय बल्खुमे बैसयबला ५१ सदोय सभामे पिनमनिी एवं श्चिश्च कुलपती माविकुमार नेपाल सेहो सहभागी हैताह । सभामे ३ अबिँ बेसीक वाश्चक बजेट ति पगश्चा श्चवरण पेश कएल जाएत श्चिश्चक उपकुलपती माविपसाद शमा जानकारी देलश्चह

मनोज झा मुक्ति

देशक अवस्था आ जनताक प्रवृत्ति

अखुनक परिवेशमे ककरोसँ पुछियौक देशक अवस्था केहन अछि ? त, कहता कि कहू सभ ठाम भष्टाचारे भष्टाचार व्याप्त अछि । देशक नेता भष्ट, कर्मचारी तन्त्र भष्ट, पत्रकारिता जगत भष्ट, व्यापारी भष्ट...आर कि कहू कि कहू...सभचीज भष्टे भष्ट, तहन देशक स्थिति कि कहबैक...। देशक स्थिति आश्चर्यतर पेण नीक त नहिंए अछि, मुदा एकर दोषी के ? सभ जौ भष्टाचारिए अछि त नीक व्यक्ति केओ नहिं ? आ देशक जनता कि दूधक धोएल अछि ? सबके एकवेर अपना छातीपर हाथ राखिकऽ सोचबाक बेर पड़त । आखिर कि कया देशक हालत एहन तरहे दिनानुदिन खसकैत जाऽरहल अछि ?

देशमे सब तरहक लोक हाएव कोनो आश्चर्यक गप्प नहिं । सबहक कहब ई छन्हि जे सभकेँ मिलि भष्टाचारीए लोकक चलाचल्ती छैक । अईसँ असहमत बहुत कम्मेगोटे हएता । मुदा यहो सत्ये छैक जे सत्यक बाटपर धीरे-धीरे आगा ससरैत लोक सेहो अई देशमे अछि । हँ, सत्यवादी भिरमे लागल खाटी राष्ट्रवादी सभक सँख्या बहुत कम अछि आ दिनानुदिन ओहि सँख्यामे ह्रास होइत जाऽरहल अछि । तकर कारण कि ?

जौ स्पष्टरुपसँ कहल जाए त दशक एहन परिस्थितिक

जिम्मेवार आन केओ नहि, हमसभ आँहा छी । हमही आँहा देशक नेताके, व्यापारी आ कर्मचारीके भष्टाचारी बनाबि रहल छियैक ।

हम आँहा एकटा नेताके भष्टाचार करबालेल विवश कऽ दैत छियैक । जौ गाममे एकटा कोनो नेता साइकलपर चढ़िकऽ अवैत अछि या पैदल अवैत अछि त ओकरा देखबाकले कोना जनता नहि जाइत छियैक । एतवे नहि ओई नेताके अपना दरबज्जापर बैसऽदेवमे सेहो हमसब अपनाआपके हीन महशुस करैत छी । आ हमरे आँहाक गाममे जौ एकटा नेता महँग गाड़ीमे चढ़िकऽ अवैत अछि त ओकरा पाछा या कहु स्वागत करबाकलेल माइए पुते दौड़ैत छियैक, ओकरा अपना दरबज्जापर बैसबऽमे हमसब अपनाके गवान्वित भेल अनुभूति करैत छी । चुनावक समयमे कतबो सकारात्मक सौँचवला नेता किएक नहि हुअए ओकरा भोट देवाक बदलामे हमसब मतपत्रिमे अपन जातिक उम्मेदवारके चिन्हमे मोहर लगवैत छी । ओतवे नहि अपन मतक महत्वके बुझितो हमसब अपना मतके पाई लऽ कऽ बेचि दैत छियैक जकर कारणसँ जकरालग अपन जातिक जनसँख्या वेसी अछि आ वेसी पाई अछि वएह नेता चुनाव जितैत छथि । किक हमर आँहाक एहि तरहक व्यवहार एकटा नेताके भष्ट बनवाकलेल विवश नहि करैत छैक । जौ जातिक नामपर केओ जितैत अछि त ओ अपना जातिक वाहेक आन जनताके वारेमे किया सोचत ? आ अपना जातिकलेल सेहो किछु नहि कऽसकैया, किएक त ओ ई नीक जका बुझने रहैत अछि जे अपना जातिकलेल हम काज नहियो करब तखनो हमर जाति हमरा भोट देबेटा करत। आ ओ जे पजेरोबला नेता आ पाईबला नेताक तुलनामे अपनाके गरीह बुझैत अछि, ओहो हमरा आँहाक सामिप्यता पएवाकलेल आ चुनाव जीतवाकलेल पाईएके अपना जीवनक सभसँ पैघ लक्ष्य बुझि 'एनि हाउ, पाई कमाऊ' के नीति

अवलम्वन कऽलैत अछि । आ जखन ओ पाइएक बलपर हमरआँहाक भोट लेत त कि कया हमरा आँहाक विकासकलेल ओ सोचताह ?

तहिना देशक कर्मचारीसभके हमही आँहासब अपन काज जल्दीसँ जल्दी करेबाकलेल या कानूनन नहि भेयो होबऽवला काज गैरकानूनन रपसँ करेबाकलेल घुस देल करैत छियैक आ एहि तरहे एकटा कर्मचारीके जवरदस्ती हमसब भष्टारी बना दैत छियैक। ओनो कर्मचारीयो खासकऽ एकटा पुलिसमे जेबाकलेल हाकिमक एकलाख टका लेल करैत छैक, हाकिमके डाइरेक्टर बनेवाकलेल मन्त्रीदारा लाखो रपैया घूस लेल जाइत छैक । जहन ओ कजपैच लऽ कऽ बहाल भेल रहैत छैक त कोनो बहन्ने कमेबेटा करतैक ।

एकटा व्यापारीके काला बाज़ारी करबामे सेहो हमसब अपने बहुत बेसी दोषी छी । हमसब बुझैतो रहैत छी तइयो ओकर विरोधमे बजबाक हिम्मत नई करैत छियैक ? हमरा आँहालेल के बाजत देत ? ककरो लग ओतेक फुरसति नहि छैक ।

हमसब सबके भष्टाचारी त कहैत छियैक, मुदा अपन टेटर नहि देखैत छी । सरकार अपन गाम अपने बनाबु कहिकऽ पत्येक गाममे १५ सँ ३० लाखधरि रपैया पतिवर्षदिल करैत अछि । गामक विकास कतेक भेल छैक, विशेषकऽ मधेशमे से ककरोसँ छुपल नहि अछि । सभ पाटीक पतिनिधिसब अपन बपौटी(पैतृक) सम्पति बुझि खुलेआम लुटैत अछि आ हम आँहा मौन भऽ सबकिछु देखैत रहैछी । जौ कियो व्यक्ति ओइ काजक विरोध करैत छैक त हमसभ आँहा केओ पाटीक नामपर, केओ जातिक नामपर ओहन भष्टाचारीको दूकिएल बनाऽदैत छियैक । ओहन भष्टाचारीकलेल पाटीयोसब अपन पतिष्ठाधरि दाओपर लगा दैत अछि ओकरा बँचवऽमे । एकरा अतिरिक्त

जे किछु कोनो गामठाममे जौ छोटछीन विकासक काज होइत अछि त ओकरा विनाश करबामे हमसब बहादुरी बुझैत छी । अपना घरक अगााक सडकपर राखलगेल गाभेलक पाि अपना घरमे घुसियाबऽमे त हमरा सबके जोरा सम्भवता कतौ नहि भेटत ।

एतेक िथि कि सरकार विदालयसबके व्यवस्थित करबाकलेल अपनेगामक स्ािनय व्यक्तिक अनुसारे चलेवाकलेल विदालय व्यवस्ािपन समीतिके िनमाण योजना लाबि पाया सभ विदालयके समुदायमे हस्तान्तरण केलक, मुदा विदालय व्यवस्ािपन समीति अखन मा पाई कमेबाक एकटा स्िलक रपमे पिरणत भऽगेल अछि । चाहे विदालयमे िशक्कक रखबामे होय या िशक्कके सरवामे हुए, विशेष कऽ मिशक पत्येक विदालय व्यवस्ािपन समीतिसभ एहि तरहक व्यापारमे लािगगेल अछि । विदालयक पढाई केहन छैक, िशक्क विदालयमे अवैत अछि कि नहि, विाि अवैत अछि कि नहि ताहिसँ व्यवस्ािपन समीतिके कोनो मतलव नई रहल देखल जाऽरहल अछि । एहि तरहे देशक विकास कोना हायत ? जाि हमसब अपने नहि सुिरब त आन के सुिरत ? जौ हमसभ एकटा सत्य बाटपर चलिनहार, देशभकत आ जनताक समस्याके अपन बुझऽबला नेताक बदलामे तामझामबला पँजेरो एिनहार नेताके िनरत्साही नहि करब त विनानुविन भष्टाचारक दलदलमे हमसब िसैत जाएब । सत्यक पकिरके मनोबल बढेनाई जररी आ सभक कतिय भऽगेल अछि । आन कियो किया हमरा आँहाक सम्बन्िमे सोचित देत ? ताएँ आनके दोष देबासँ पिहने एकवेर हमसभ अपने टेटर देखब कि ? टेष्ट परीक्ा आबऽलागल, मैथिलीक विदाि पुस्तक विहीन शैिक्क वषिक अन्त होमऽ लागल अछि, किछु विनकवाद दशम कक्ाक टेष्ट परीक्ा सेहो हएत । आन आन विषयक विदािक कोसि अन्तो

होमऽलागल अछि, मुदा विलक्ष कऽ अिवा ककरो दबावसँ मैथिली विषय लेआहार विदाि अखनो िि पुस्तक केन्रक दुवाापर हाजरी दैत बरोबध भेटत । कारण जे दशम कक्षक विािि अखनो िि नछि देखने अछि– दश कलासक मैथिली पोिि । िनुषा िल्लाक लगभग एक दजनि आ महोतरी िल्लाक पसा पतैली लगायतक स्कूलमे मैथिली विषयक पढाई होइत अछि, मुदा विािि आ िाक्क दुनुगोटे मैथिलीक पुस्तक अखनिि नई भेटलाकवाद िरसान अछि । साझा पकाशनदारा पकााात पुस्तक, जनक िाक्र सामगी केन्रदारा विािकलेल उपलब्ि कराओल जाइत अछि । जनकपुरिमि स्थित विदापिा चौकपर रहल 'विदा पुस्तक केन्र'क विता कलानन्द झा कहलिा, 'साझा पकाशनके वेरवेर तगेदा कएलाकवादो मैथिलीक पुस्तक उपलब्ि नछि कराओल गेल' ।

दुखक गप्प त ई अछि जे ताािकालमे मैथिली विषयक पाठय पुस्तकक आभाव देखल गेल अछि, जाािकालमे साझा पकाशनक अि्यक छथि– मैथिलीक पैघ सािित्यकार/पिकार/कवि/फोरमक नेता/बहुतरास मैथिली संघ–संस्िक अगुवा व्यक्ाित्व शी राम भरोस कापिड़ 'भमर' । अपनाके मैथिलीक योदा आ साझा पकाशनक पिल मैथिल/मिशी चेयरमैन कहबामे गवि कएआहार कापिड़के पदपर पहुँचलाक वादो मैथिली पोिि नछि भेटव सवि आलोचनाक विषय बनल अछि ।

मैथिली विषयक पुस्तकक अभाव हएव, मैथिली भाषा आन्दोलनक व्यापकतामे सऽभसँ पैघ रोकावटकरपमे देखाऽरहल अछि । मैथिलीक पाठय पुस्तकक सहज उपलब्िता जािि नई हएत तािि विदालयक

श्वाकामे मैथिलीक पढाई माि भाषण िश्व सीश्वात रहत । गणतन्ि पाप्श्वाकबाद मैथिलीको भजा कऽ भलेश्वं कतेको मैथिल वश्वष्ठ पदपर चश्वागेल होथि, मुदा िरातश्वाय यािि इिएह अछ्छ जे मैथिली काल्श्वयो पाछा छल आ एखनो श्वासैकते अछ्छ ।

महोतरीक मालपोतमे कमचारी मालामाल के करत कारवाही ?

देश पूणतया भष्टाचारक दलदलमे जकड़ागेल अछ । नेपालकलेल भष्टाचार कोनो नया बात नइं अछ, मुदा जन आन्दोलन दूक बाद देशमे भष्टाचारक बाढ़ए जका आबगेल अछ । भष्टाचारक एह बाढ़मे कमचारीसब मालामाल भऽ रहल अछ । ओना व्यापारी, पकार, नेता आ देशक पाया आकाय एह सँ अछुत नइं रहल अछ,जेकरा जतऽ भेटैत अछ ओतह लुटऽमे लागल अछ । भष्टाचारक एह बाढ़मे बहुत मुश्कलसँ एकाि गोटे इमान्दार मनुख्ख भेटत, जकरा आजुक भष्टाचारक माहौलमे बुड़बकके संजा भेटैत अछ ।

मशि आन्दोलनकबाद मशिमे जौ सभसँ बेसी फाइदा भेटल अछ त मशि कमचारीके । मशिक नामपर ओसब बम्हलुट मचौने अछ । मशि आन्दोलन आ तकराबादसँ दनदुगुन्ना आ राता चौगुन्नाक संसावसँ खुजल शसस्ि समूहक डरसँ मशिक कायालयमे रहल अधकाश पहाड़ी मूलक कमचारी अपन अपन सरवा कराबलेलक आ मशिक कायालय सबमे स्ािनय मशि मूलक कमचारीके भष्टाचारक नव समुरमे पणत भऽगेल । मशिक कायालय सबहक हालत एतेक नाजुक भऽगेल अछ क कमचारी खुलेआम घुस मागरहल अछ आ केओ कछु कहऽ नह सकैया । कोनो जनता जौ कछु कहओ त कोनो ने कोनो दलक नेता आ ओह कमचारीक अपन जातपातक लोक लाठी उठालैत अछ, जे भष्टाचारक खेतीमे मलजलक काज कऽ रहल अछ । कछु जनता त घुस द कऽ आओर एकरा बढावा दऽ रहल अछ जल्दी जल्दी

काज करेबाकलेल/अनैश्चाक काज करेबाकलेल, त अधिकाश जनता घुस देबाकलेल बाि्य भऽगेल अछि ।

भष्टाचार कतेक चरम सीमापर पहुँच गेल अछि आ कोना खुलेआम भऽ रहल अछि तकर एकगोट उदाहरण महोतरी जिल्लाक जलेश्वर स्थित मालपोत कायालयक रवैयासँ देखल जाऽसकैय ।

मिशमे रहल महोतरी जिल्लाक मालपोत कायालय सेहो मिशि आन्दोलनकवाद मिशी कमचारीदारा खुलेआम लुटारहल अछि । मिशि आन्दोलन पश्चात महोतरीक मालपोत कायालय कामचलाउ रपमे एकटा सुव्बाके सहारे चलि रहल अछि, ओहिना जेना 'राम भरोसे हिन्दू होटल' । अखन महोतरी मालपोतक हाकिम बनल छथि मिशीक नामपर मिशीके लुटनिहार, कानूनी जानसँ अनभिज, कहुनाक सुव्बा बनल लाल देव राय । जे जनता पाइ नहि दैत अछि तकरा एतेक ने नियम कानून देखवऽ लगैत छथिन्ह जे जनता परेशान भऽजाइत अछि । कहबी जे छैक 'बन्दूक पकड़ा देलापर हवल्दार बनि जाइत छै' सैह बातक पत्यक उदाहरण बनल छथि –लाल देव राय । मिशीक नामपर हाकिम बनल कानूनक 'क' अकर नई जनने आ पैघ कानुि्चीके दावा कएनिहार लाल देव रायके कानूनी सल्लाहकार बनल अछि महोतरी मालपोतक खरिदार.......।

महोतरी जिल्ला मालपोतमे घुसक वणनि करैत गा.वि.स. हािलेटके युवा चितामवर महतो कहलनि,'हम काज कराबऽ मालपोतमे गेलहु त काज एकदिनमे नहि भेल । दोसर दिन जहन ११/१२ बजे गेलहुँ त काज भेलाकवाद कायालयक खरिदार पदमे कायरित कमचारी सुशील ठाकुर ' भोरे भेलाक नाते नीकेसँ बोहनी करेबाक लेल

कहलथि ।' एक्कहुटा सुशील ठाकुर नहि पाय ा सब कमचािरक इहे रबैया ओतऽ देखवामे आओत ।

पंक्तिकाकार स्वयं एकटा काज लऽ कऽ एशियान्यूज महोतरी सम्वाददाता कमलेश मण्डलक संग महोतरीक मालपोतमे पहुँचल छल, एकटा कागज लेवाक छल हमरा सबके । जहन कागज भेटगेल त ओतहुके कमचारी तेजनारायण झा अखनधरि बोहनी नहि भेल बात कहैत पाई मागय बैसलाह । एतवे नहि पाया सब टेबुलपर विना बोहनी आ दक्षिणा देने कोनहुँ काज नहि भऽ सकैय । कमचारीसब एनाकऽ पाइ मंगैत अछि जेना हूनक बाबु/बाबा पूँजी फँसाकऽ कोनो व्यापार/व्यवसाय कऽदेने होय । किछु कमचारी त 'हे एतवा कममे घाटा लागि जेतैक' सन बात कहऽमे सेहो पाछा नई हटैत अछि । ई सऽब किछु जनितो सरकारी संयन्त्र मौन अछि, किया त ओहो भष्टाचारमे लिप्त अछि ।

जखन एहि घुसक सन्दर्भमे कायालयक पमुख बनल सुव्वा लाल देव राय सँ पुछलगेल त ओ कहलथि ' ई घुसक बात सवत्रि व्याप्त अछि, अखनधरि केओ शिकायत नहि केलक अछि । हम अपने सँ भरसक दिनमे २ बेर शाखा सँ उपर अनुगमन करैत छी । जौ घुस लैत देखब लेखियैक त हम अवश्य कारवाही करबैक ।' हूनका जहन हमसब अपनासबसँ मागल बात कहलियैन त कहलथि,'आहाके तखने ने कहबाक चाही, अखन किया कहैत छी ।'

जलेश्वर स्थित महोतरी मालपोतक पागणमे एकगोट पागलसन भेषमे टहलैत मनुख्खके देखवैत एकगोट लेखनदास नामनई लिखवाक

शतप्रिर कहलथि जे 'काल्हि सातबजे रातिमे एहि पागलके जखन हाथकमके पाइ खुवालकऽ दोसरगोटे अपना नामपर खखबा लेलकैक ।' ओ ई कहलथि जे लाल देव जी ठीके कहलथि जे हम २ बेर अपने नीचा उपर जाकऽ शारीक्ण करैत छी । ओ दूइए बेर नहि ५/७ वेर नीचा सँ उपर सभ रममे चक्कर लगवैत रहैत छथि जे साझमे कोनो कमचारी ई नहि कहए जे हमरा आई कमे पाई भेल । ओ ई देखवालेल जाइत रहैत छथि जे ककरा टेवुलपर कतेक पाई झस रहल अछि । कतौ हमरासँ बेइमानी त नहि भऽ रहल अछि ?

मशिक कायालयसबमे मशिी कमचारीके खुलेआम भष्टाचार रोकबाकलेल केओ तैयार नहि अछि । जे एक/दू गोटा एकर शरोि करैत अछि तकर काज नहिं भऽ सकैय । कानून शारीह बनल अछि, जौ आिखात शकछु युवा अियिभऽकऽ ओहन कमचारीके शटैत अछि त सम्पूणि कायालयक कमचारी लगायत देशव्यापी रपमे कमचारी सबहक आन्दोलन शुर भऽ जाइत अछि । कमचारी जाहि जाखाक अछि ओ जाखाक व्यक्षा/सँघ संस्िा/नेता ओकरा पक लऽ कऽ बाजब/नारा जुलुश करबाक शुर कऽ दैत अछि ।

घुसक खेती कतेक बढ़ल अछि एकर अन्दाजा एकटा खश्रदार/मुखिया/सुव्वा सनसन कमचारीके आश्रशान महल देखिकऽ लगाओल जाऽसकैय । जहन शक मािि नोकरीक भरोसे इमान्दाश्रताक पाईसँ अपना सम्पूणि जीवनक कमाईसँ एकटा अधिकृत या फस्टक्लाश अधिकसर नीक दूतल्ला घर अपना तलवसँ नहि बनावऽ सकैय । मुदा बाजत के ? आब देखबाक ई अछि जे के नेपाल मायक कोन बेटा आगा बढैत अछि भष्टाचार आ भष्टाचारीके समाप्तीक रास्तापर....।

विपोराज

सभ ग ाटे कहै छवि क्जनि अमूल्य क्छौं, बहुर रपस ाक बाद मनुष्कि क्जनि भेटैर छैक। आ इहो कहि ाि छइ जे जीनि एकटा संधरष क्छौं, संधरषक बाद मनुष्किे सफलरा अशि भेटैर छइ हमि ाि लेल मात्त कहि ाए मे क्समीर क्विगेल इ सब।

हमि नाम ाशिन पंक्जाि ाि अक्छ,हमि घि सुनसि ाि क्जल्ला मे पडैर अक्छ। हमि पर्वि ाि ाि एकटा क्कसान पर्वि ाि ाि अक्छ। हमि ाि घि मे दाइ, बाबा,माि बाबु आ हमि ाि लग हमि एकटा बहीन आ दूटा भाि अक्छ। हम अपना पर्वि ाि कि सबस जेठ संरान छी। एकटा मर्घ्यम ाि गीि पर्वि ाि ाि होइरो जेठ संरानक नारा स होइ ाि जेइ काि णे होइ सबहक क्सनेह भपिु हमि ाि भेटल। दाइ, बाबा, के विशेर इच्छा भेलाक बादो हम मैर्विक स आगा नइ पढ सकलौ। काि ण इ जे पढ मे क्छक ठाक होइरो एकही बेि मे हम एस. एल. सी. पास नइ कि सकलहुें, जबकी हमि ाि स कमजोि बहुरो विदारी पास भ गेल। कहुनाक दोसि बेि हम पिीक्ष देलौ आ पास भेली। मैर्विक पास क क हम काठमाण्डू गेलौ, कोनो काज कि बाक लेल। काठमाण्डू जाक सबस पक्हने अपना क्षेत्तक नेरा लग गेलहुे, जकि ाि हमि बाबु सब चुनाि मे बड सहि ाि ग कैने क्हिक्न्ह। हूनका जाक कहक्लैन जे हमि ाि करहुे काज लगा क्दि। ओ कहलैर देखैर क्छौं। हम पर्तिक क्दन ओइ नेराजी ओर जाइर छलौ। ओना हमि ाि लगाि रि आि ाि बहुरो बेि ाि जगाि सब नेराजी ओर पहुेचैर छल। हमि ाि सबके क्षेत्त मे चार्वि भाग मे 3 रीन भाग, लगभग 80 पक्र शर मधेशीक जनसेंखि ाि छइ आ 20 पक्र शर गैि मधेशीक। राक्हस नेरा जी ओर

मधेशी आ गैि मधेशी दुनु रहिक बेािजगाि िाज हाजाि लगाैरि छल। लागाराि डेढ, दू मास हम ओर गेलहु, मुदा हमाि नोकाीक कोनो जोगाड नइ भ सकल। जबकी हमाि सामने मे 25/30 टा नेराजीक अपन जाको भाइ िा कही गैि मधेशी सबहक नोकाि भेट गेल छल। रखन हमाि सोच

आिल जे हम सब बेकाि दोसि के वजरिै छी अपना केत्त स। आब हािल राकल हम एकटा गामेन्ट मे काज कि लगनहु। ओर हमाि हेलफि के काज भेटल कव्हाि अपना घि मे एकटा मोटा नइ उठौने छलौ हम मुदा एर क्दन ािक्र हमाि समाने लाद पडैर छल। कहुनाक 4/5 मास गुजाि कंएलहु। आब हम अपने काज कािबाक बार सोचलहु आ एकटा पुािन साइकल कककक ओइ मे पाछा बडका केव्लाि लगबाक वछटटी बन्हलहु आ रकािाि बेच लगलहु। आब हम भोाि पोच बजे उव्छर छलहु आ साइकल ल रकािाीक बडका बजाि कावलमाटी चक्ल जाइर छलहु आ ओर रकािाि क्कन क अपन डेाि चल अाैरि छलहु। कनी जलखइ क क रकािाि क्वकजका साइकल पिध क काठमाण्डूक गक्लए गली मे क्वकक्ल जाइर छलौ बेचबाक लेल। 10 बजे धवि घुक्मर छलहु आ आक्बक खाना बनाक खाक आिमि काैरि छलौ आ फेि 2 बजे साइकल ल क क्वकक्ल जााइर छलौ। ओना कव्हाि हमाि बेसी ािक्र धवि नइ घुम पडैर छल, क्काि र हम दोसि स कक्क कमे नाफा ल क बेच देिै िही रिहै हमि क्दन क्बरैर छल। हम जव्हाि गामेन्ट मे काज काैरि छलहु र क्दन ािक्र मेहनर क क चावि साढे चावि हजाि पाइ कमाइर छलौ बा उपिि स वछकदाि के गावि बार मुदा रकािाि बेचे मे 6/8 हजाि हम कमा लैर छलहु। अही बीच मे काठमाण्डू मे क्विहल हमाि गाम के

एकटा लडका हमरा घर मे जाक कहलकै जे मिशन साइकल पर रिकशा बेचै छा। सुनिते हमरा गाम स कठठी आरि घर अएबाक लेल। हम घर गेलहु र हमरा दाइ, बाबा, मार बाबुजी सब गोटे कहलक जे इ कोन काज शुर क देले र मान, इज्जत के कोनो ठेकान नइ छौ, रोशि अही लेल रोशि मैवकि धर्व पढलाउ। भ गेलै काठमाण्डु जार के कोनो काज नइ छै, आब गामे मे रहि। हम हूनका सबहक बोली सुनाक अबाके रहि गेलहु। फेर हूनका सब के कहलाँन, देखरा काज कोनो छोट आ नम्हर नइ होइर छैक, हम जना एस. एल. सी. पास कैने छी र हमरा केओ हाकिम रोहिही बना देरै आ दोसर मे मधेशी संगे केहन भेदभाव छइ से बुझले अछ। दोसर के नोकरी स र बहुर नीक छइ अपन काज। आहो सब कर्विन्त रहिु अइमे इज्जत ककरो नइ जारि रहिगेल समाज के बार र समाज आइ धर्व ककरो नीक नइ कहलकैरा। आहो बड नीक जका रहिर छी र इशर करि आ क्सर क ककर खरिब भ गेल र समाज हसर। राही स समाज के कानरे नइ कर। अकहना कहुना कहुना, समझा बुझाक घकि लोक के हम फेर काठमाण्डु

गेलहु। आ पुनः रिकाविए बेचबाक काज मे लावा गेलहु। हमरा मोन भेल जे मेने रिडजखने मालूम भेलइ ओकरा सबके जे हम विदेश जार चाहैर छी बस पासपोटषबनाब स लक विदेश जार धर्व काज के वजम्मा ल लेलक, करा र सब काज फटफट भ जाइर छै जै 8/10 दिन मे पासपोटष बनाक आब मेवडकल जॉचला काठमाण्डू गेलहु मेवडकल भेलाक बाद मलेशिरा क लेल पासपोटषमैनपावर मे बना देल गेल हमरि हम फेर गाम चलल अरलिहु 2 मास के बाद मे 1 लाख टका ल क अवाला 5 दिन मे काठमाण्डू चललआउ आहा

क फलाइट उठम क्दन मे कहल गेल हमि लग 30 हजाि छला आ 60 हजाि कजषलक काठमाण्डू अएलहु हमि उडबला हमि संगे हमि बाबुओ औलक पाइ पुि बुझा देक्लि कि आ हमि िजा द देलक िस्रि मे उठम क्दन मे हमि फलाइट भ गेल हम 2 रिषक लेल एकटा कम्पनी मे सुपि भाइजकि लेल जाइर छलौ मलेक्शाि पहुचलहु र कम्पनीक एकटा आदमी हमि सबके लेब एिि पोटषपि आिल छल हम सब गोटे संगे कम्पनी मे गेलहु काव्ह स काज पि आब पडर कव्हक कक्ष दूि पि हिल एकटा गोदाम सनक घि मे ल गेल हमि सबके ओकहल गेल जे एरही हि पडर काव्ह वमने कम्पनी मे गेलहु हमि बािि आओल र बजाक ल गेल एकटा गोदाम मे आ सामान एर स उठाक ओर धि परि से काज हमि देखाओल गेल हमि बड क्खस उठल एजेन्ट पि,-कहने छल सुपि भाइजकि काज आ एर लेबि के काज कि पिि हम नेपाल फोन केलहु...

चाद के टुकडा

अखनो, अहु समय मे आधुनिक मनुख किया एहन पुरान सोच रखै छथि? आन-आन चन्द्रमा पर जाक घर बनयबाक सोचि रहल अछि आ हम सब अपन घर के उजाडैत छी।
मनुष्यक जन्म किछु करबाक लेल होइत छैक ओनाहुएँ नष करबाक लेल नहि। हँ कहियो काल एहन परिस्थिति आबि जाइत छैक जे मनुखके विचलीतक दैत छैक मुदा एहन विचलनक परिस्थिति मे अपना आपके सम्हरबाक चाही, संकट के सामना करबाक चाही जे अखनो लोक नइ बुझि सकल अछि। मनोज मुक्तजी हम अहाक कार्यक्रम के नियमित शोता छी आ एही कार्यक्रम मादे बहुत लोकक जीवन मे घटल घटना सब सुनैछी ताही स हमरा जीवन मे त नइ मुदा हमरा मित्र के घर मे घटल ई घटना हम पठाबि रहल छी। एकरा सुनिक शोता सबके किछु लाभ होय तहि ताइ आश स पठाबि रहल छी।

हमर घर धनुषा जिलाक एकटा गाम मे अछि। हम आ हमर मित्र विनोद बच्चे स बाले वरख सँ संगे पढैत छलौ। ओना संगी सभ त आरो छल मुदा विनोद जका दोसर नहि। विनोद सभ दिन सब क्लास मे हमरा स बेसी नम्बर लाबिक पास होइत छल। पठनाइ लिखनाइ के संगही सभ काज मे विनोद ओतवही निपुण छल चाहे वो खेलकुद हुए, बाजभुक मे हुए वा अनुशासने मे हुए। सब तरहे विनोद नीक छल। हम सब संगे संग मैट्रिक पास कयलहुँ।
मैट्रिक क बाद मे I.SC. पठबाकलेल जनकपुरक रा. रा. व. कालेज

मे एडमिशन लेलहुँ।

ओना ई बात आइस 10 वर्ष पहिनेक बात अछि।

विनोद के परिवार सेहो बड हँसी खुशी रहैत सखी स भरिपुर रहल परिवारक उदाहरण गाम मे छल। विनोदक परिवार छोटे छल- माय, बाबुजी एकटा बहिन आ विनोद के जोरि क चारि गोटे छल ओहे परिवार मे। विनोदक बहिन से हो सातम क्लास मे अध्ययनरत छलीह। विनोदक बाबु एकटा सरकारी अस्पताल मे काज करैत रहथिन। हमर सब हक गाम जनकपुर स लगे भेलाक कारण स बेसी पावनि मे हम सब

गामे चलि जाइत छलहुँ। हमरा अन्य,अन्य कोनो संगीके जौ कोनो तरहक परेशानी चाहे उलझन होइत छलै त सभ गोटे विनोदे लग जाक सल्लाह सुझाव लैत छलौ। अति विनोद बहुत सुझबुझ बला व्यक्ति छल। जहिना विनोद नाम छल तहिना ओ विनोदी अति हँसमुख लोक से हो रहय, ने कोनो गम, ने कोनो चिंता, कोनो काज मे आत्म विशास---(दन दन दनाइत रहु)।

अहिना हम सभ I.SC. पास कयलहुँ। I.SC . पास कयलाक बाद दुनु गोटे काठमाण्डू गेलहुँ। डाक्टरी पढाइयक पवेशक तैयारी करबाक लेल। काठमाण्डू मे से हो हम सब एकही र म मे रहीत छलहुँ। विनोदक घर सँ आ हमरा घरक लोक सब स फोन मे बातचीत भ जाइत छल। एकबेर छठिक पावनि मे हम सब गाम गेलहुँ। विनोदक योजना छल जे ओ 4/5 दिनक बाद आओत आ हम पहिन ही चलि आयब। छठिमे गाम पर से हो बहुत मनोरञ्जन भेल छल। छठिक पाताखाने हम काठमाण्डू अयलहुँ, ओ सोमदिन छल आ विनोद आयबाक रहिदिन रहै। ओना असगर त मेनेजर नइ लगैत छल,

मुदा वेसी थ्नक बात िडवे छैक कहैत असगरे कहुना शश्वान थि थतयलहुँ। रथक थ्न भोर मे छा, सात बाथ्गेल थनोद नइ आयल। भेल,फेर आइ बाट मे गाडी जाम भ गेल होय तै ताही स देरी भ रहल छैक। अश्ना हम ग्यारह बजे तक इंतजार क क खाना बनाक खयलहुँ, इ सोचेक जे बुझाइया थनोद थ्नुका गाडी स आयत साझ मे सेहो सात-आठ बथ्गेल, थनोदक कोनो अता- पता नइ छल। अश्ना 9, 10, होइत 11 बथ्गेल थनोद नइ आयल। हमरा आशंका होवए लागल। थनोद वचन के एकदम पका लोक छल।राश्ा कटनाइ मुश्कल बुझाइत छल। बहुत राश्ा थि जगले छलहु थान कखन पश्गेलो पते नइ चलल। भोर मे दरबज्जा ढकढकयबाक आवाज स हमर थान टुटल।

गामस फोन आयल छल। गेलहुँ त फोन पर थनोद छल। थनोद कहलक जे हमारा नइ

आब सकलहुँ थ्कछु थ्न आओर हमरा लागत। थनोदक बश्नक थवाह श्कक भ गेल छल

बुथ्न थवाह भेलाक कारणे हडबडी मे सभ काज करबाक छलै। ओना अयबाक लेल

त हमरो कहलक मुदा अखुनका क्लास छोडए बला नइ भेलाक कारण स हम नइ जा सकलहुँ। बेस्पश्ा थ्न एहन समाचार आयल जे अबाके रश्ह गेलहुँ। थनोद, थनोदक बाबु,

आ थनोदक माय तीन गोटे फासी लगाक मथ गेल। मा‍ि पकथक वैश्ा गेलहुँ जे एहन खुशी मे एहन थपत कोना? ई समाचार त हम बुझ्ायवै नइ केलौ मुदा बुझ्ायवाक लेल थवश भ गेलौ। तैयो अपन मनके मनयबाक लेल हमारा तखने गामक लेल थदा भेलौ जनकपुरक

गाडी नइ भेटल,थ्वरगंजक गाडी पकरलहुँ। शाम पहुँथ्वात-पहुँथ्वात 5 बथ्म गेल। शाम जाइते सबस पश्चने थ्वनोदे ओत गेलहुँ। थ्वानु लहास के मेथ्वकल चेक के लेल जनकपुर लगेल छलैक। राश्वा मे सभ खेडा हमरा बुझए मे आयल जे थ्वकया सामुश्वक आत्महत्या भेलैक। थ्वनोदक बश्वन जकर थ्ववाह बुथ्वन होब बला छलैक ओ बश्वयाती आबस पश्वनही एकटा थ्वाठी थ्वाथ्वक छोश्व देने रहे जे–{“बाबु,माय,आ भैया,हमरा माफ करब।ओना ई बात हमरा आहा सबके पश्वनही कही देबाक चाही मुदा संकोच स नइ कहए सकलहुँ आ ऐ हम थ्ववश छी ई काज करबाक लेल। अखन हम बहुत बडका मिसिंकट मे छी, एक थ्वस सब पथ्ववार ओअर मान इज्जत आ मयादा अश्व त दोसर थ्वस हमर पुरा थ्वावनक पश अश्व जे हमरा थ्वावाक अश्व। ताही स हम अपन थ्वावनक लेल क रहल छी। थ्वाहोरा अश्व जे हमरा तकबाक पयाश नइ करब।“}-- आहाक--

कुलथ्वाछन/बश्वन॥

थ्वनोदक बश्वन गामेक एकटा पासमान जाश्वाक लश्वका संगे चश्वा गेलाक बाद समाज स बँचबाक लेल थ्वनोद आ थ्वनोदक माय, बाबु मृत्यु के चुमने छल अपन इज्जत बचयबाक लेल सबस सस्ता काज हुनका सबके याह बुझयलथ्वा।

मनोज जी हम शोता सभके

ई घटना अइ लेल सुनयलहुँ जे की सबके समझाब-बुझाब बला थ्वनोद दारा कायल गेल ई काज उथ्वात भेल?

ने जाश्वा अखन कतेक थ्वनोद समस्या स घेराक आत्महत्याक रस्ता चुनत?

जीवन त जीवाक लेल होइत छैक, थ्वकछु

करबाक लेल होइत छै। जीवन मे छोटछोटन र काहट त होइते रहैत छैक। आत्महत्याक बाट चुनब एकटा श्याक लोकक काज थकनहु नइ भेल जेना हमरा बुझाइत अछि। जीवन संघषक दोसर नाम छयै---।

----

[1]

ओना जीवनक सम्बन्ध मे बहुत गोटे अपन-अपन परिभाषा करै छथि, मुदा हमरा बुझि पडैत अछि जीवन मा देखावा छयै। ओना ई सब ठाम शत-पश्चाशत सत्ये नही भ सकैय। बहुत थदन स उकुस-मुकुस करैत हमर मोन के गठरी के अछि टेज मैथिली गुञन माफत खोलि रहल छी। अखुनका समय बहुत आगा बढि गेल छैक ताएँ हमसब सत्य, झूठ, आ देखावा के थ्याअहक, बुझक थकछु करबाक चाही से समस्त शोता स हमर आगह अछि।

हमर नाम ए. कुमार अछि। हमर घर जनकपुर अञ्चल मे पडैत अछि। हम अखन थराटनगर मे रहैत छी। ओना बचपने स ने उिके लेव,ने मावि के देव से श्रादात

रही आयल अछि हमर। अपना घर स दूर थराटनगर मे रहियो क जे थकछु समय भेटैत अछि तकरा अपन संस्कृश्याक पचार- पसारक कायमि मे जाक थतवैत छी आ नइ त घरक पाछु मे रहल वारी मे काज करैत रहैछी। हम आइ अपान नश्च थक थकछु महानुभाव सबहक ,देखावा केहन-केहन छश्यह से शोता के सुनाव चाहैत छयश्यह।

मैथिलीक कोनो कायर्क्रम, सामाजिक काज वा किछु रहैत अछि त सबस आगा-आगा रह वला व्यक्ति सबमे स रहैत छथि एकटा व्यक्ति संदेश कुमार, संदेश जीक मीठ बोली, आकर्षक व्यक्तित्व आ नीक पाइबला नौकरी हूनक विशेषता छन्हि। विरटनगरक कोनो संस्था हुए, हूनक उपस्थिति अनिवार्य रहै छन्हि। संदेश जीक कायर्प्रणाली पर किनको कोनो आपत्ति नइ रहैन। ककरो घरबला- घरबालीक पंचेती हुए, किटनैसाक गप्प हुए चाहे जातीक सभा, सब ठाम हूनके वोलबला रहैत छन्हि। हमरे नहि की एत रहबला पाया लोकके ई विशास छलै की संदेश जी गलत नइ क सकै छथि। विशास ककरो पर नइ कायल जा सकैत छैक तकर वडका पमाण सदेश जी छथि। मैथिल बाहमण सबहक वैसार छल विराटनगर मे, ओना नहियो त 45-50 गोटेक उपस्थिति छल ओहि ठाम। मुदा छल' राकेश के सभ काज मे उपस्थितिक। मैथिली वा मैथिलक कोनो काज होइत छल त संदेशे जी जक राकेश के सेहो अनिवायर्उपस्थिति रहैत छल ओतय। राकेश सप्तरी जिल्लाक वासी छथि। किछु दिन पहिने राकेश दोसर जातिमे विवाह क लेने छल। विवाहक बाद कोनो काज परोजनमे राकेशक उपस्थिति संदेश जी के नीक नइ लगनि। संदेश जीक ई पूरा कोशिश रहैत छल जे राकेश के समाजिक बहिष्कार कायल जाए। सभा मे संदेश जीक कहब छलनि जे राकेश कुसंस्कारी भ गेल, समाज के बिगाड़ि देलक। एहन-एहनके सामाजिक बहिष्कार जररी छैक नइ त एकदिन समाज नष्ट भ जायत। हम मौन रहिक एकटा कोना मे वैसल

विचार सब सुनैत छलहुँ। ओना आनो बहुत बाबु लोक सब रहैय ओतय मुदा सब "बरोक भाइ आ कनयोक भाइ" जका तमाक चुप्प छलैय। सभा मे उपस्थित लोक सब मे छलथि, एकगोट वृद्ध से हो।

आइ स पहने हुनका हमारा एत नइ देखने रहथि न।

ओ

वृद ठाढ भ बाजब शुर कयलथि- हमर नाम रघुनन्दन प्रसाद अछि। हमर घर संदेश बाबुक बगल के गाम मे पडैत अछि।
संदेश बाबु हमरा नइ चिन्हैत हेता मुदा हम हुनका चिन्हैत छियनि। हम मोरङ्गे जिल्लाक एकटा गामक स्कूल मे शिक्षक छी।

ओना आइ हम पहिले दिन एहन सभा मे अएलहुँ, या आ बाज नहि चाहितो अपनोक नहि रोक सकलहुँ अछि। किया त हमारा शुरए स एत देखि रहलछी, एतुका सब लोक भम मे फँसल छथि। के ओ हँ, हँ करैत त के ओ चुपचाप रहैक। तखने सँ हम सुनि रहल छी, जातिक संस्कार अपन संस्कृतिक जोगय बाक गप्प। मुदा एकैटा समानि जे अंतजातीय विवाह क लेने राकेश के सामाजिक बहिष्कार कि मैथिलक संस्कार आ जातीय संस्कृति मे मानि स्वजाति वा विजाति मे विवाह अवैधि छैक? हम कथिको एही स सहमत नहि छी।

संदेश बाबु तखने स समाजक, जातिक, संस्कारक, संरक्ण ल बडका भाषण द रहल छथि। हमर पश अछि अपने सब स जे की अपन जन्म देब बला माय, बाबुके गारि पढब, मारब-पीटब आदि काज सँ समाज की संस्कारित होइत छैक? संदेश बाबु, अपन टेटर से हो देखियौ। जे लोक अपने समाजके बिगाडि रहल छथि, से एत आबिक समाजक बाहक बनल छथि। एहन- एहन सँ हमरा आहाके सचेत होयबाक चाही। हँ ई जे बौवा छथि संदेश बाबु सने हँ मे हँ मिलवैत हुनको हमारा आक जका चिन्हैत छियै।

बाबु बेचारा बडका विदान छलथि मुदा हुनका सन पुत भेलथि। जािथ पंडित जी जीवित छलाह ई एकहुँ सेर दूि नइ देलखिन्ह, गाम पर एत स जाइ छथि त सब एक दोसर के मुँह तकैत रहै छथि जे कोन घर भोजन बनत त भोजन करब। ई बउवा एत जाथिक इज्जत मे लागल दागक बात करै छथि। अपन भथिजी, एकटा नइ दू-दू टा भािथ गेलथि दौसर जाथि संगे। िक यौ? याह विराटेनगर स 25 िदन पर ल जाक पुना बाहणे मे वियाह करा देलखिन्ह। की अपना जाथिक लेल नीक काज केने छथि। हमरा स बुझू त जे हुनका सँ लाख गुणा िनक राकेश बाबु जे कम स कम दोसर लडकी के त अपना संस्कार मे िढलौने छथि।

एत उपिस्थित सब समाज सँ हमर याह आगह अिछ जे जौँ समाज के संस्कृित आ संस्कार बचब चाहैत छी त चुप्पे रहला स काज नइ चलत समाज मे अगडीया बन बला संदेश बाबु सबहक चिर के नापे पडत- तौले पडत। समाज ककरो बपौती सम्पित नइ होइत छैक। एहन माि दोसर के टेटर देख बला स समाजक सचेत करबाक हमर आ आहाक कतर्व्य अिछ।

जी ताइ िदनक बाद संदेश जी आ हुनक विछुलगा िम सब झुठ-फुस बजनाइ छोिड देने छथि। आ हम आभारी, कृतज छी ओ बुढा मास्टर साहेब के। कायर्िम मैिथली गुञ्जन मे ई घटना पढयबा मे माि एकैटा हमर लक्ष्य अिछ जे मैिथल समाज मे अपने करब आ दोसर के-िरब "बला पवृित के हमरा आहाके अंत करिह टा पडत। चुप रहला स काज नइ चलत जे अपन जन्मदाता के आदर नइ कर सकै या ओ

समाज के कत ल जाक छोडत", एहन- एहन स लोक के पदा उठाबही पडत। जौ अहुँक गाम वा शहर मे िकयो संदेश बाबु सन

अछि त देखब भाग ने जायब। एहन लोकक चरित्र ठीक ओहने रहैत छैक जे दहेजक विरोध कय बाहार अपना बेटाक बियाह मे मोटगर नोट लैत छथि----॥

शनिवार

जीवन, ओझरायल डोरा जका बुझना पडैय या। वास्तव मे सब किछु एकही आदमी के नइ भेटक सकैय किछु ने किछु के कमी पत्येक मनुख्य के रहवे करै छैक। कखनियो एक एकटा पाइला तरसैत रह-वला व्यक्ति जखन बहुत पाइ कमालइ छथि त बाहरस देख वला सब हक नजरि मे ओ सवगुिण सम्पन्न लगैछथि मुदा कि? पाइएक लेल हुनका कि-कि छोड परल हैतनि से केओ नइ सोचेक छैन्ह। किछु तही तरहक हमरो जीवन मे भेल अछि। अपना जीवन मे भोगने किछु क्षण, आ चाहियो क नइ कर पाबरहल किछु वंदना के हम पस्तुत करबाक लेल दिल्ली स इ पि पठाबि रहल छी। ओना हम त नहिए सुनाओ सकब तथापि आशा अछि अवश्य पसारण क देवइ। गाम पर छलहुँ त एही कार्यक्रम के आनन्द भरपुर मात्रा मे उठबैत छलहुँ। एखन हमर जीवन कत स कत चलि गेल
हमर नाम महेन्द्र आनन्द अछि। हमर जन्म एकटा मध्यम वर्गीय परिवार मे, बिहार राज्यक मधुबनी जिल्ला मे भेल। हमारा अपना माय-बाबुक पहिल संतानक रप मे जन्म लेने छलहुँ। माय के क ओ ट के जान नइ छलैन्ह, आ बाबुजी दिल्ली मे काज कहादोन

करथिन्ह। कहादोन अइला थिक हमरा जन्म भेलाक छऍ मासेक बाद बाबु के मृत्यु भ गेलथि। कहादोन हमरा ओ देखनहुँ नइ रहथिन। हमरे देखएला जखन ओ थिल्ली स अवैत रहथिन सन 1963 मे त बस एक्सिडेण्ट मे हुनक मृत्यु भ गेलथि। बहुत कष क-क माय हमरा पोसने होइथिन से अनुभव, हमहे की केओ क सकैछथि। बाबु स जेठ एकटा कका छथिन्ह। जखया बाबुक मृत्यु भेलथि त दादी-दादा दुनु गोटे थिथते रहथिन्ह। बेटाक मृत्यु दादी आ दादा दुनु गोटेक तोथि देलकथि। बाबु मरलाक दुए साल के भीतर मे दादी-दादा सेहो ई संसार छोथिक चथि गेलथिन्ह। पथिक मृत्यु के बाद माय के छहथि देथिहार गाछ के रप मे रहल दादी- दादाक मृत्यु क थिछोह परीक्ष गेल कथि हुनका।

अपना जीवन मे एकके बाद आयल दोसर आफत- थिपत स हडबराइयोक माय मा हमरा लेल अपन जीवन थिय लगथिह। कहबी छै–“डूबैत सुरज के केओ पुछुथिहार नथि होइत छैक”। तथिना कका माय के थिन क देलथिन्ह। दुाख सहब माय के आदथि भ गेल रहथि, माय नइ हडबडेलथिन्ह। ओना मामा आथिक माय के अपना गाम लगेलथिन्ह आ ओतही सभ थिन रहबाक लेल कह लगलथिन्ह मुदा बच्चा लक नैहर ओगरब माय के नइ नीक लगलैन्ह आ ओ 10/15 थिनक बाद अपने गाम घुथि एलथिन्ह। हूनक जीवनक एक मा सहाराक आशा हमही छथियैक। ओना खेत एते थिरसा भेटल छलै जकर उपजनी स कहुना साल कटा जाइत छलै। घरे मे माय चखा चलवैत छथिह। मथिना मे 2 वेर मामा अवैत छलथिन्ह आ चखाक सूत म्बिनी आ सूतक पाइ आ सामान माय के द अवैत छलथिन्ह। गामे मे क स्कूल सँ हम आठ क्लास पास कयलहुँ आ गामक से एक/डेढ कोस

पर रहल एकटा हाइस्कूल मे नाम लिखा, पढ लगलहुँ। हमरा बाबु नइ होइतो गाम मे ककरो स खराब कपडा आ पढाइयक समान मे कमी, हमरा माय कहियो नइ होब देलथिन्ह। माय के बैसी समय चखेकाटए मे बितैत छलन्हि। हमरा याद अछि जखनया हम 9 वा क्लास मेअ रही त माय के मोन बहुत जोर सँ खराब भ गेल रहन्हि। बेसीकाल हुनकर माि दुखाइत। डाक्टर जाच क क हुनका चश्मा देने रहथि आ चखा कमी कमे कटबाक सलाह देने रहथि। समय-बितैत जा रहल छल अपना गति मे। हम मैट्रिकक परीक्षा देवाक तैयारी मे छलहुँ। ओना बच्चे क्लास स हमपढाइ लिखाइ मे ठीक होयबाक कारणे पुरा गामक आश हमरा पर छलै। हँ एकटा बात हम चाहियोक नइ बिसरल छी जे जौ केओ हमरा 'टुग्गार' वा 'टुगरा' कही दै से हमरा माय के कनिओको बदाश्त नइ होइन। हमर मैट्रिक परीक्षाक सेटर बेनीपटी मे परल छल। परीक्षा देबाक लेल बेनीपटी मे एकटा रम भाडा ल क

ओत रहल छलहुँ। अपन संतानक प्रति अनेक भावना माय के, परीक्षा समय मे बेनीपटी

हमरा संगे रह स नइ रोक सकलथि। मायक आशीर्वाद आ हमर मेहनत दुनु सफल भेल। हम फर्स्ट डिविजन सँ मैट्रिक पास कयलहुँ। आजतक ओ दिन जे हम मायके खुशी देखलियैन तकर वर्णन हम नहि क सकैत छी। माय ओहि दिन पूरा गाम मे लडडू बटने छलथिन्ह। "एहन खुशी छलथिन्हजेना एकटा बच्चा अपना घर मे भ रहल दीदीक बियाह मे खुशी रहैत छथि।"

मैट्रिक पास कयलाक बाद माय फेर चिंता मे परीक्षा गेलथिन्ह। डाक्टर हुनका बेसी चखा कटबाक लेल मना केने रहथि मुदा ओ

हमरा पढाइयक खाश्चार श्वसश्च गेलश्चन्ह,

आ श्चन-राती चखे मे श्चताव लगलश्चन्ह। हम मिबनीक आर. के. कालेज मे कामसश्चिषय ल क पढ लगलहुँ। बच्चे स माय स कश्चयो दुर नइ रहल, हमरा शुर -शुर मे 10/15 श्चन बहुत केनादोन लागल मुदा कहुना- कहुना रहा लगलहुँ। अश्चना हमारा

I.COM से हो फस्टश्चश्चजन सँ पास कयलहुँ। श्चन राश्चाक मेहनत सँ मायके स्वास्थ्य

खराब होब लागल रहश्च।माय के कतबो जीद के हम नइ सुश्च अपन मौसा ओत गेलहुँ जे श्चल्ली मे छलैि। माय के मोन रहश्च जे हम आओर पढी। श्चल्ली मे एकटा फैक्री मे सहायक एकाटेट मे काज भेट गेल। एक वषजिल्दीए श्चश्च गेल ओत। ओना हमारा 2 बेर गाम आयल छलहुँ। आब हमर तनखा एते भ गेल छल जश्चसँ पत्येक मास हम गाम पर

सेहो हजार/पन्रह सय पठा दैत छश्चयै। माय के छती बडजोर दुखाय वला बीमारी स परेशान रह लगलश्चन्ह। हमरा श्चठी श्चखबाक बजवौ लश्च आ श्चवाह करबाकलेल जोर देव लगलश्च। हम मािं 10 श्चनक छुटी मे आयल छलहुँ। माय के बात के हम नइ काट सकलहुँ। आ ओही दस श्चन मे ममे गाम मे हमर श्चवाह भेल आ दुरागमन से हो। माय के मोन बेसी खराब होब लगलैन्ह। ऐबेर हम नया कश्चया सश्चत मायके ल क श्चल्ली चश्च एलाहुँ। डाक्टर सँ जाच के बाद पता चलल जे हुनका केसर भ गेल छश्चह।एकर कारण छला वैसी चखा काटब। हम इलाज मे अपना तरफ स कोनो कश्च नइ रखश्चयै मुदा ओइ सालेक अंतश्च माय से हो हमरा अनाि बनाश्चक एही संसार स चश्च देलीह। अश्चना समय श्चतैत गेल। अखन हम फैक्री मे श्चनीयर एकाउंटेट छी। अखन हमरा पश्चवार मे हम सब 3 तीन

गोता छी, हम, कन्‍याया, आ एकटा 2 वर्षक बेटा 'सुकोमल'
अछि। देखियौ, समय कोना चलैछै, अखन अपना कन्‍याया बच्‍चा कहु
अपन पुरा परिवार आ पाइ स से हो भरल-पुरल होइ तो बहुत दुःख
होइ या अपन नेन्हपनक बात सब याद क! क! अखन हमारा चारियोक
संगी सभ संगे खेलायबला आसपास, झिझिर-कोना, पकच्छिलो,
कबडडी-कबडडी, सुरा नइ खेल सकैत छी। ओना आन बच्‍चा जका
हम मायक
अत्यधिक स्‍नेहक कारणे बहुत कमे खेल सकलहुँ ओ खेल सभ।
मनोज जी हम पाया
आश्वात क नेने छी जे अपना सुकोमल के गामक माटिमे खेलाव
खाआर सभ चुटी गामे पर बितायब। संस्कृति, भाषा, आ माटि-पानि
बुझबाक लेल गामक मे रहनाइ बड़ जररी
होइत छैक से हमरा बुझाइया। हमारा समस्त शोता सँ आगह से हो
करबनि जे अपना बच्‍चाके गाम मे सेहो खेलबाक मौका दियौ, किकयाक
त खेलनाइ जीवन मे सब दिन सम्भव नहि। हमरा बस एक्हीटा
बातक कचोट होइत रहैया जे अपन गाम हमरा के पडल अछि जकर
याद मे सदिखन व्याप्त रहैछी।

(चाद के टुकडा)

हमरा हमर गाम।

इजजथक खाथार

एथ लोकथय कायिम 'मैथिली गुञन मे' बहुतोलोकेक थावनक घटना सुनैत-सुनैत आई हम अपना जीवन मे थतल या थक कहु थथ रहल घटना थाथक, पठाथ रहल छी ई आशा लक जे अवथ पशारण क,देब। अपन मोनक बोझ कम करब आ मैथिल समाज मे थाप्त एथ चलन पथ सम्पूणिसमाज क लेल हमर ई पश अथ।

हमर नाम सुची अथ। हमर घर सागरमाया अञचल मे पडैत अथ। हम(3) तीन भाय-बथन छी।(2)टा भाय आ हम बहीन मे एसगरे छे। बाबुजी हमर एकटा सरकारी कमचारी छथि आ मा गृथणी। हमर जन्म 2030 साल, आइ स 33 वषपिथने भेल। बाबुजी सरकारी नोकथहारा आ एसगर बथन होयबाक नाते घर-पथवारक सब क्यो बड मानैत छलथ हमरा। बाल्य काल बहुत दुाखमय रहल हमर। हम सब अिात मा,दुनू भाय आ हम अपना गामे मे रहैत छलहुँ आबाबुजी ओतही जत-जत हुनकरपोथटंगहोइत। हमरा गामे मे हाइस्कूल होयबाक कारणे हमारा सब भाय-बथन स्कूल संगे जाइत-अवैत छलहुँ। मैथक हम बहुत नीक जका पास कयलहुँ। मैथकक बाद गाम स तीने थकलोमीटर पर रहल एकटा कालेज मे हमर एडथशन भेल।

कालेज मे लडकीक संख्या ओते बेसी नै त कमो नै छलै। हम I.A. First year के पथक्रा

देलहुँ आ कथ थनक बाद थजल्ट सेहो आयल, बहुत नीक नम्बर आयल छल हमरा।

हमर बाबुजी पढल-थखल आकी कहु बुझथहार होयबाक कारणे हमरा स्तर्ता जका छूट

भेटल छल कोनौ अंकुश नथ। एथ तरहे हमारा I.A. फस्टथथजन

सँ पास कयलहुँ 2043 साल मे। आब B.A. मे पढबाक लेल हमरा विराटनगरक महेन्द्र मोरंग केपस मे
एडमिशन भेल। ओना विराटनगर मे त हमरा अपन परिवारक केओ व्यक्ति नइ छलथि हुँ,
हमर मामा-मामी ओतइ रहैत छलथि। मामा एकटा फैक्टरी मे मैनेजर छलथि। हम हूनेक सब संगे रहेत छलहुँ। कालेजक हमरा क्लास मे हमरा अलावा एकटा आर मैथिल लडकी छली- पुनम। ओना लडका सब त बहुत छल मूदा एकटा लडका अरुण यादव बहुत सभ्य
आ पढाइयोमे ठीक छल। ओना हमरा ककरोस ओते मतलब नइ रहैत छल। मतलब रहैत छल त मात्रि अपन पढाइ सँ। हुँ साहित्य मे हमर रुची होयबाक कारणे कविता सम्मेलन
सब मे हमर जायब मामा के कनिको नीक नइ लगैत छलन्हि। एहि तरहे हम फस्ट इयर
नीक नम्बर स पास कयलहुँ कहियो शाम चलि आयल बेर मे वा आवश्यक नोट सब हमरा अरुण सहयोग क दैत छलथि। अरुण हमर बहुत नीक मित्र भ गेलाये। हमरा दुनू गोटाक बीच आर कोनो तरहक सम्बन्ध नइ छल, मुदा सम्बन्ध त मात्रि एकटा असल मित्रक। अरुण कहियो काल हमरा डेरा पर अबैत छलथि जे हमरा मामा अर मामी के
कनिको ठीक नइ लगैत छलन्हि। मामी आब एकटा कोनो छोटो बात मे अरुण लगाक उलहनक रुप मे बात कहि दैत छलथि। एकदिन भोरे हमर बाबुजी विराटनगर पहुँचलथि आ हमरा पढाइ-लिखाइ आर सब बात-व्यवस्थि सम्बन्ध मे पुछलथि। हम-सब बहुत नीक

कहलियैन। बाबुजी ताइके बाद हमरा अरणक सम्बन्ध मे पुछलथि- के छीयै ई अरण यादव। ओकरा स केहन सम्बन्ध छै तोरा? बाबुजी के बहुत सरल रप मे हम कहलियैन- अरण यादव हमरे क्लासक एकटा सभ्य आ लगनशील विद्यार्थी छियै, आ हमर बहुत नीक
मित्र। बाबुजी अइस बेसी हमरा नइ पुछलथि आ- "ठीक जका पढब,सब विचार करैत." कहिक ओहि दिन चलि गेलथि। बाबुजी त चलि गेलाथि मुदा हमरा मोन मे एकटा मामा-मामी आ बाबुजी प्रति कतेक केनादोन सोचाय। लागल। हम अरणक मात्र एकटा मित्र
मानैत छियै आ ई सब एहन शंका किएक रहल छथि। फेर हम अपना के सामान्य बनब के पयाश कर लगलहुँ। पहिनहि जका कालेज जयबाक हमर दिनचया शुर भेल। हमारा आब अरण स बहुत कमे बजैत छलहुँ। पहिने त ओना हमारा कहयो हम नइसोचैत छलहुँ, मुदा आब हमरा कखन कालेज जाइ आ अरण के देखैत रही जका होइत
छल। अपना शुर-शुर मे अरण प्रति कोनो भावना नइ आयल हमरा मोन मे मामा-मामी
जबरदस्ती कहिक अरण प्रति हमरा सोचबाक लेल विवश क देलथि। B.A. सेकेण्ड इयर अन्तिम फाइनलके परीक्षा होब मे मात्र चारिमास बाकी छल मुदा आब हमरा पढ मे कनीको मोन नइ लगैत छल। आखिर एक दिन हम अपना-आपके नइ रोक सकलहुँ आ अरण के कहि देलियै जे- हम आहा सँ पेम करैछी। अरण एकदम चूप-चाप छल। हम
पुछलियै- कि हम अहाके पसन्द नइ छी? अरणक बोल फुटल- नइ-नइ से बात नइ छियै। आहा सब तरहे बहुत नीक छी, हम अहाक एही पस्तावके हृदय सँ स्वागत करैत छी। मुदा डर अछि हमरा अइ

बात के जे हम यादव छी, आहा बाम्हण छी,की हमरा आहाक विवाह संभव छीयै? अरणक एही पश के कोनो उतर हम नइ देखियैक। हमरा मोन मे ई पूरा विशास छल जे अखन के जमाना मे जाति-पाति कोनो बडका कारण
नइ छियै, हम अपना बाबुजी के कहुना मना लेबै। परीक्षा नजदिक भेलो पर हम दुनु गोटे
ओते नइ पढ़ि रहल छलहुँ जतेक पढबाक चाही। पेम छुपाओल नइ जा सकै छई, स्याह
हमरो सब संगे भेल। मामा-मामी बाबुजी के खबर केलाथिन्ह, बाबुजी विराटनगर आबिक
हमर स समान लइत ,हमरा नेने गाम चलि औलाथि। हमारा बाबुजी के कह चाह रहियैन जे आब मा‍ि 2 मासक बाद हमर B.A. फाइनल परीक्षा अई। मुदा बाबुजी कोनोबाते हमर सुनबाक फेरी मे नइ रहथि। बस दस दिनक भितर इथाडयाक एकटा गाम मे हमर विकाह ठिक क देल गेल। हमरा नइ चाहितो हमर विवाह करादेल गेल। हमर आ अरण दुनु गोटेक सब सपना चकनाचुर भ गेल। चाहियोक किछु नइ कर सकलहुँ। हम त आब
भाग्य मे ब्याह लिखल सोची कहुन अपन नया जीवन के स्वीकारबाक लेल बाध्य भ
गेलहुँ। विवाहक पाचे दिन पर द्विरागमन भ गेल। अपना सासुर गेलहुँ। सासुर आयल
जे उमंग एकटा नया विवाहिता मे होइत छै वा अपन नइहर छोडका लेम जे दुाख होइत छै से कथिको हमरा नई बुझायल, किया त हम अपना आपके मा‍ि एकटा कठपुतली

बुझैत छलौ मा‍ि कठपुतली। ‍विवाहक छा ‍िदन भेलाक बादो हमरा हमर प‍ित नइ टोकलिथ, हमरा लग हमर प‍ित औलथि। आइये हम ओइ मनुख‍िक के ‍आकजका देख‍ि रहल छ‍ि जकरा संग हमर ‍िजवनक पत्येक सास बन्हागेल अछ‍ि। बर पलंग पर बैसलथि। ओहो चुप आ हमहुँ चुप। दुनु गोटे चुपे-चुप बैसल ओरा‍ित ‍ि‍िबतागेल। पाता‍ि‍ाने रा‍ित मे फेर औलथि, ओइ‍िदन ओ दार ‍िपब‍िक आएल रह‍िथ। दार स हमरा एकदम घृणा लगैत छल मुदा हमारा एकहुँ र‍ित हुनका मना नइ क सकल‍ियैन। बेगर ‍िकछु बजने हम सब
संगही सुतलहुँ। पाता‍ि‍ाने पाच बजे हमर बारह उ‍िठक ‍िदल्ली चि‍ल गेलथि। ‍िदल्ली मे ओ कम्पयूटर इं‍िजनि‍यिरंग क रहल छलथि। ‍िदरागमनक (3) तीन मासक बाद हमर बाबुजी क अयलाक बाद पता चललथि जे ओ नाना बन, बला छथि। समय अपना समयसँ ‍ि‍िब‍ित रहल छल। हम एकटा बच्चाक माय बनलहुँ। सासुर मे सउस, ससुर सब गोटे बड़ा मानैत छलथि हमरा। बच्चा भेलाक एक ही मासे म हमर बाबुजी अपन गाम ल ऐलथि। हमर आठ मास रहलाक बाद ससुर ‍िदागरी कराक हमरा सासुर ल गेलथि। तीन वषि‍ि‍िबतागेल छल हमरा बारह के ‍िदल्ली गेला। एक ‍िदन हमर ससुर इमरजेसी तार पठा‍िबक हमरा वर के गाम बजौलि‍थन्ह। गाम एलाक बाद रा‍ित मे हमरा दुनु गोटे मे प‍ि‍िरचय-पा‍ि भेल। एतेक ‍िदन ‍ि‍ि‍ब ने ‍िकयो सब ‍िकछु कहलि‍थ आ नइ हम ककरो बते‍ियै, हम त मा‍ि
एकटा हडडी आ माउसक बनल मु‍ि‍ताि आ की कहु रोबोट जका छलहुँ। ओइ रा‍ित मे हमर प‍ित सब ‍िकछु हमरा बतौलथि। ओ कहलथि-देखु हमारा आहा स ‍िववाह करबाक पक मे
नइ छलहुँ, हमर त ‍िदल्लीए मे एकटा लडकी संगे पेम क‍ि‍त छलौ जे हमरा बाबु-मायेक बुझल रहै। मुदा सब ‍िकछु बु‍ि‍झतो ओ जा‍ि‍िक

कश्नाया आ दहेजक लेल जबरदस्ती हमर
श्ववाह आहा सँ कए देलश्न। आहा स भेल श्ववाह हम मा‍ि अपन बाबुक इज्जश्न बचाब लेल केने छलहुँ। श्ववाहक बाद हम श्वल्ली जाक ओही लडकी स श्वयाह क लेलहुँ, जकरा हमारा पेम करैत छश्नयै, हम चाश्वतोमे आहा स पेम नइ क सकेछी हँ मा‍ि आहा हमर कश्नाया छी आ आहाक बच्चाक बाबु हमही छी स्याह टा हमारा कश्व सकेछी।“ हम हुनका
श्वकछु नइ कहश्नयैन आ ओश्वना बच्चाक संग कश्वयो नैहर- कश्वयो सासुर करैत हमर जीवन श्वतैत छल। अखन दू वषि सँ एकटा वोश्वडि स्कूल मे हम पढाश्व रहल छी आ शेष अपन जीनगी गुजाश्व रहल छी।

एश्व तरहे जश्वया अरण स हम पेम बड करैत छलहुँ जबरदस्ती ताना माश्व-माश्व क हमरा अरण संग पेम करबाकलेल श्ववश क देलक। जाश्न आ समाजक खाश्नर हमर जीवनक डोरी ओइ खुटा मे बाश्वह देल गेल जे लडका पश्वनही स एकटा दोसर लडकी संग पेम करैत छल आ लडका के नइ चाश्वतो जाश्न आ समाजक डर स चार लाख
दहेज लक हमरा सँ श्ववाह कए देल गेलै। अइमे घाटा कोन समाजके भेलै वा फायदा कोन समाजके भेलै। घाटा आ फायदा त जकरा जे होऊ मुदा हमर जीवन अश्नशप्त बनादेल गेल हमरा बाबुजी आ हमरा साउस- ससुर दारा। नइ अपने पेम करए बला मनुख्व सँग श्नवन श्वताव सकलहुँ आ नइ अपना पश्नक श्नवने मे समाश्वत भ सकलौ। ई दोष ककरा देल जाय, हमर पश सब समाज स अश्छ। उतरो चेहे जे अबै मुदा हमर जीनगी-----, हमर जीनगी त-------।

सुशांत झा

अहा कोना रहै छी भौजी....

लक्ष्मी आई आठवा क्लास मे चल गेलि। आइकल स्कूल के हेटमास्टर यादवजी ओकर अंग्रेजी के बड्ड प्रशंसा करैत छथिन्ह। कहैत छथिन्ह जे अगर एकरा मौका भेटैक त जरूर किछु करत ई बच्चिया। ओहि दिन अन्तर-क्लासस्तरीय नाटक प्रतियोगिता के लेल अहसलि मे बौआरानी के सलेक्शन स्कूल सं भेलैक। कहने रहय-कका यौ...मेन रोल नहि भेटि सकल, लेकिन हम अपना दिस सं खूब कोशिश केलियै। हम ओकर अंग्रेजी के टेस्ट करयैक लेल ओकरा सं रीडिंग दैक लेल कहैत छलियैक। बौआरानी फरिझार अंग्रेजी पढ़ैत अछि आ ओकर माने सेहो बतबैत अछि। हम सोचैत छी जे एकटा प्रतिभा के फेर अकाल मृत्यु भ जैतैक की...? लेकिन के जनैत अछि पारब्ध मे ककरा की लिखल छैक।

हमरा दस साल पहिने के बात मोन पड़ैत अछि। शैलेन्द्र भैया के ससूर गाम आयल रहथिन्ह आ बड़का कका सं कहलखिन्ह- आब हमरा अहा के संबंधि कड़ी खत्म भय गेल। बड़का कका पहिने नहि बुझलखिन्ह, लेकिन कनिये कालक बाद हुनका आंगन मे कना रोहटि उठि गेल। पूरा गामक लोग जमा भ गेल। पता चलल जे

शैलेन्द्र भैया नञि रहलाह। बड़का कका के जीवन मे पहिल बेर कनैत देखने छलियन्हि, 65 साल के अवस्था मे अंगना मे ओ ओगरवाहिया माथि का कानि रहल छलाह।
लक्ष्मी तखनिया छोट छल, पाय चारि या पाच साल के। ओकर छोटकी बहिन राधिका 2 साल के हेतैक। शैलेर भैया एखन रहितथि त 44-45 के रहितथि। भैया के कका हुनका एनटीपीसी मे नौकरी लगा देने रहथिन्ह। ओ जमाना छलै जखनिया एडहाक पर बहाली होईत छलैक आ बाद मे हाकिम ओकरा किछु दिनुका बाद परमानेट कय दैक। शैलेर भैया ताबत परमानेट नञि भेल छलाह, इम्हर घर पर घटक सबहक लाईन लागि गेलन्हि। हाय रे मिथिला के बेटी सब, आई हुनका परमानेट नौकरी रहितन्हि त भौजी के ई दिन ि ड़े देखय पड़ितन्हि। शैलेर भैया के वियाह नीक परिवार मे भेलन्हि। भौजी के बाप ततेक ि ड़फडेल रहथिन्ह जे बेटी के मेट्रिक के परीक्षेक साल वियाहि देलखिन्ह। भौजी आ भैया के अबस्था मे बड़िया अंतर छलन्हि...लेकिन सबकिछु के दरकिनार करैत वियाह भ गेल। आब सोचैत छी, त बुझायत अछि जे ई एकटा मैथिल पिता के विवशता स बेसी किछु नञि छल।
शैलेन्द्र भैया आ भौजी अनपरा चलि गेला..जतय एनटीपीसी मे ओ क्लर्क छलाह। जमाना बदैल रहल छल। दिल्ली मे नब आर्थिक व्यवस्था लागू भ रहल छल,उदारीकरण के नाम पर कयकटा नियम बनायल आ हटायल जा रहल छल।
भैया के परमानेट होई के संभावना दिन पर दिन क्षीण हुअय लगलन्हि। आब त एडहाक के दरमाहो कम पड़य लगलन्हि जखनिया स वियाह भेल छलन्हि। ताबत लक्ष्मी आ राधिका दुनिया मे आबि गेल छल।

भैया शराब पीबय लगला। पत्नी-पती के बीच संबंध खराब हुअय लगलन्हि। धीरे-2 शराब हुनकर स्वास्थ्य के प्रभावित केरय लगलन्हि। हुनकर किडनी खराब भय गेलन्हि। ओ छुटी लय क गाम आबि गेलाह। ओ छुटी पर छुटी लेने जाईथि। लेकिन एडहाक के नौकरी मे लंबा छुटी-कतेक दिन चलितन्हि। गामो मे हुनकर शराब के नशा नहि छुटलन्हि। पाई नै रहन्हि त अन पैन बेच क पी लथि। पोलीथिन आ सस्ता शराब सेहो। कखनो पोखरिक महार पर त कखनो नहरिक कात मे। जन हरवाह सब देखय, त कका के कहथि। जहि खानदान मे एकोगोटे भाग आ बीड़ी सिगरेट नहि पीबय ओहि आदमी के बेटा के बारे मे शराबी होई के चचा कतेक अपमानजनक आ लजजास्पद हेतैक-ई हमरा सबके ओतेक छोट अवस्था मे नहि बुझे पड़े। लेकिन आब कल्पना करैत छी, त मोन केना दुखि कर लगैत अछि।

भौजी के सासु के व्यवहार दिन पर दिन भौजी के प्रति विपरीत भेल जाईन्ह। आब त ओ खुलेआम कहय लगलीह जे अही मौगी के पेरे हमर बेटा के मोन खराब भेल जाईये। बात-2 पर रिक्साया आ गारि भौजी के स्थिति बनि गेलन्हि। एकटा कुलीन घर के कन्या-जकर कुलशील के गवाह मिथिला के तमाम पंजीकार छलाह-जे पारंपरिक मिथिला के सवोतम गाव मे स आयल छलीह-हुनकर ई हाल हमर मोन के उदीणकिय दिए। ओहि समय हम पटना मे छलहुं। मैट्रिक पास कय मेडिकल के तैयारी करी, कहियो काल गाम जाई। मोबाईल के जमाना नहि छल। मा स चिट्ठी-पर बात हुए या गाम जाई तखने। एतेक नहि बुझिये।

साल 2001 के अंतरपक मे गामे मे रही। शैलेन्द्र भैया के अंगना मे हमरा नोत रहै। हम खा क उठले रही की, भैया के ससूर अयलाह। तकर बाद कना रोहटि उठि गेल।

तकर बाद के कहानी भौजी के दुख, अपमान, मानसिक यातना आ संघर्ष के कहानी छैक। तीन साल तक भौजी कोनो तरह कटलीह। लक्ष्मी आ राजधानी के चमकैत चेहरा मलीन भेल गैलैक। ओ आब पूर्ण गामीण वाला लागय। लेकिन लक्ष्मी तीन साल तक अनपरा के पब्लिक स्कूल मे इसाई टीचर सं अंगेजी पढ़ने रहय। ओकर अंगेजी एखनो नीक रहै। दूनू बहिन आब गामे मे बिहार सरकार के स्कूल मे जाई।

कोनो तरहे समय बीतल। भौजी के शिक्षा मित्र मे भय गेलखिन। डेढ़ हजार महीना पर। नबका युवा मुखिया शैलेन्द्र भैया के दोस्त रहथिन। ओ भरल पंचायत मे बाजल जं एकटा वेकेसी हेतैक त शैलेन्द्रक कनिया के हेतैक।

आई अहि बात के चारि साल बीत गेल। आई नीतीश सरकार शिक्षा मित्र सबके दरमाहा साढ़े सात हजार कय देलकैक। आब ओकर नाम पंचायत शिक्षक भय गैलैक आ ओ परमानेट सेहो भय गैलेक। आब भौजी के सासु के व्यवहार बदलि गेलखिन। भौजी घर चलबै छथि। आब ओ सोचैत छथि जे ओ त बेसी नहि पढ़ि पेली लेकिन दूनू बेटी के जरुर इन्जिनियरिंग करेती। ओ हमरा स पूछैत रहैथि, जे अहा सब त पत्रकार छी-कतेक जान पहचान हेत,कनी देखबै।

हमरा लक्ष्मी के आंखि मे ओज देखा रहल अछि। ओकरा अगर मौका देल जाई त ओ जरूर किछु करत। हेडमास्टर यादवजी के कनि सही छथिन्ह...। लेखिकन की ई कहानी एतय खत्म भय जेबाक चाही ? की लक्ष्मी आ राधारानी के भविष्य सुरक्षित भय गेनाई अहि व्यवस्था के सुखद अंत मानल जाई ?

भौजी के अवस्था एखनो 31 साल छन्हि। जखन हुनका बियाह भेल छलन्हि तखन हुनकर उम्र 17 साल के छलीह। हुनकर की हेतन्हि...?? .हुनकर के छन्हि.?? .की हुनकर सुखदुख के कोनो मोल नहि...?? ई सवाल मुंह बौने ठाढ़े अछि...मिथिला के समाजक समाने...आ हर साल सैकड़ो मैथिलानी अहि सवालक सामने हाथ जाइत छथि....जे हमर के अछि...??की हमर सुखक कोनो मोल नहि...?

कुसुम ठाकुर

पत्यावर्तन

१

एक बेर हमरा एकटा पत्रिकामे किछु लिखय लेल कहल गेल छल, ई सन् १९९६ क गप्प थिक। हम बस एतबे लिखि सकलहुँ-
"हम की लिखी हमर त लेखनिये हेरा गेल"।
मुदा आइ बुझना जाइत अछि जे नहि, हमरा एकटा कर्तव्यक निर्वाहण करबाक अछि।

२

हम साहित्यिक अपनाके हुनकर लेखनी सहचरी आ नहि जानि कि सब बुझैत रही। हुनक एकोटा एहन रचना छलनि जकरा कि हम पूरा होमसँ पहिने कै-एक बेर नहि सुनइत रही। हम तँ हुनक एक-एक रचनाके ततेक बेर सुनइत रही जे करीब करीब कंठस्थ भऽ जाइत छल। एक एक संवाद आइ धरि ओहिना हमर कानमे गूंजैत रहैत अछि। हम तँ हुनक सबसँ पैघ आलोचक, सबसँ पैघ पशंसक रही। अद्भुत कलाकार छलाह, एक कलाकारमे एक संग एतेक रास

गुण भविसक नहि होइत छैक। लेखक, निर्देशक, अभिनेता,गीतकार, संगीतकार, सब गुण विदमान छलन्हि। हमरा लगैत अछि जे नीक लोकक संग बेसी दिनक नहि होइत छैक। भगवनोके नीक लोकक ओतबे काज होइत छैन्ह जतबा कि मनुष्य के। हम तँ भगवानसँ कहियो किछु नहि मागने छलियन्हि, बस हुनक संग सदा भेटय-यैह टा कामना छल। मुदा एक टा बात अवश्य अछि जे जओं भगवान छथि आ कहियो भेटलथि तँ अवश्य पुछबन्हि जे ओ हमरा कोन गलतीक सजा देलथि, हम तँ कहियो ककरो खराब नहि चाहने छलियैक।

एतेक कम दिनक संग, परंच ओ जे हमरा पर विश्वास केलन्हि आ हमरा स्नेह देलन्हि, शायद हमरा सात जन्मोमे नहि भेट सकैत छल। एखनो जँ हम हुनक फोटोक सोझा ठाढ़ भऽ जाइत छी तँ बुझाइत अछि जे ओ कहि रहल छथि- हम सदिखन अहाक संग छी।

३

जाहि दिन हम पन्द्रह बरखक भेलहुँ ओकर दोसरे दिन हमर विवाह भऽ गेल। ओहि समय हम विवाहक अर्थ कि होइत छैक सेहो नहि बुझैत छलियैक। हम तँ मैट्रिक केर परीक्षा दऽ अपन पिसिऔत बहिन केर विवाह देखय लेल गाम गेल रही। हमरा की बुझल छल जे हमरो विवाह भऽ जायत। ओहि समय हमर बाबूजी अरुणाचल (ओहि समय केर नेफा) मे पदासीन छलाह, हम राचीमे अपन छोटका काका लग रहि कऽ पढ़ैत रही ।

हमर पिसिऔत बहिन केर विवाह भेलाक तुरंत बाद हमर बाबूजी आ

छोटका काका कतहु बाहर चलि गेलाह, कतय गेलाह से हम नहि बुझलियैक। हम सब भाइ-बहिन आ हमर छोटका काकाक बड़की बेटी, अर्थात हमर पितिऔत बहिन सेहो हमरा सब संग गाम पर रहि गेलि, कारण हमरा सबहक स्कूलमे गमी छुटी छलैक , हम सब खूब आम खाइ आ खेलाइ। मुदा हम देखी जे हमर दादी हमरा किछु बेसी मानथि। अचानक एक दिन भोरमे जखन हम उठलहुँ तँ देखैत छी जे सब किओ व्यस्त छथि। हमर दादी सब काज करबाहार सबके डाँटि रहल छलीह, कहैत छलीह-

" आब समय नहि छैक, जल्दी जल्दी काज करए जो"।

हमरा किछु नहि फुराइत छल जे ई की भऽ रहल अछि। हमरा देखिते हमर दादी कहलथि-

"हे देखियौ, अखन तक ई तँ फराके पसरि कऽ घूमि रहल छथि"। हमरा किछु बूझयमे नहि आबि रहल छल जे ओ की बजैत छलीह। तखन हमरा ध्यान आयल जे किंसाइत हमर जन्मदिन आबि छैक ताहि दुआरे दादी कहैत हेतीह- हमरा किछचकचाबए लेल। ओ सब दिन कहैत छलीह जे अइ बेर जन्मदिनमे अहाके साड़ी पहिरय पड़त आ हम खौँझा जाइत छलहुँ। ई सब सोचिते छलहुँ ताबत देखलियैक जे छोटका काका आँगन दिस आबि रहल छलाह। हुनका संग हमर बाबा सेहो छलाह । ओ दुनु गोटे दलान पर सँ आबि रहल छलाह , से बाबा के देखला सँ बुझयमे आबि गेल । हुनका सबके देखिते हमर मा आ दादी दुनु गोटे आगू बढ़ि कऽ हुनकर स्वागत केलथि आ मा के हम कहैत सुनलियैन्ह-

"आब कहू जल्दी सँ जे लड़का केहेन छथि"।

हमरा किछु नहि बुझना जाइत छल, तावत हमर काका हमरा दिस

देखलथि आ देखिते देरी कहलथि-
“ अरे तोहर बियाह ठीक कऽ कए आयल छियहु, मिठाइ खुआ”।

हम तँ एकदम अवाक रहि गेलहुँ। हम ओतय सँ भागि कऽ अपन कोठरी मे आबि बैसि कऽ सोचय लगलियैक, आब की होयत हम तँ अपन दोस्त सब के कहि कऽ आयल रही जे अपन दीदीक बियाह मे जा रहल छी , ओ सब की सोचत। हमरा एतबो जान नहि छल जे हम बियाहक विषय मे सोचितहुँ।, हमरा चिंता छल जे दोस्त सब चिढ़ायत। बेश, किछु कालक बाद सँ हमर भाय बहिन सब खुशी खुशी हमरा लग अबथि आ सब गोटे खुशी खुशी कहथि,
" हम सब नबका कपड़ा पहिरबय"।
ओ सब त आर बहुत छोट छोट छलथि, हमही सबसँ पैघ छी।
हमर काका जल्दी जल्दी स्नान ध्यानक बाद भोजन कऽ तुरंत चलि गेलाह, पता चलल जे ओ बरियाती आनय लेल गेलाह। ओहि दिन, दिनभरि सब व्यस्त छलथि। हम अपन मा के व्यस्त देखलियन्हि, परंच खुश नहि लगलीह । भरि गामक लोकक एनाइ-गेनाइ लागल छलय। दोसर दिन भोरे हमर बाबूजी अयलाह । हुनका चाय देलाक बाद आ हुनका सँ गप्प केलाक बाद मा के हम पसन देखलियन्हि। तावत धरि हमहूँ बूझि गेल छलियैक जे आब सते हमर विवाह भऽ रहल अछि आ हमरा दोस्त सब सँ बात सुनइये पड़त आ ओ सब चिढ़ायत तकरा सँ हम नहि बचि सकैत छी। ओहि दिन हमर जन्मदिन सेहो छलय, साझमे दादीके मोन रहि गेलन्हि आ हमरा साड़ी पहिरय पड़ल।
४

खैर हमर विवाह बड़ ि‍मि ि‍मि सँ भेल आ हम तेहेन लोकक जीवन संगनी बनलहुँ जे हमर जीवन ि‍नि‍य भऽ गेल।
गामक ओ समय हम कि‍छुयो नहि बि‍सरि सकैत छी। ई ओहि समयक गप्प थिक जखनि कि हमर बहि‍नक विवाह भऽ गेल छलन्हि आ ओ सभ चलि गेल छलीह। हमर बाबूजी आ छोटका काका हमरा लेल वर ताकय लेल गेल छलथि। आइ-कालिक हिसाब सँ तँ हम ओहि समय एकदम बच्चा रही आ शहरमे रहलाक कारणे हम गाम घरक बहुत किछु नहि बुझैत छलहुँ। सब सँ बेसी विवाह बैसाख, जेठ आ आषाढ़ मे होइत छैक, अि‍ति शुद रहैत छैक। ओहि ज़मानामे अि‍ति १९७२ ईस्वी मे गामक रौनक किछु आर रहैत छलय। पहिलुका दिन कतो ने कतो विवाह होइत छलैक जाहिमे दादी हमरा लय जयबाक आगह अवश्य करैत छलीह। हमहूँ कि‍छुयो विवाह नय देखने छलहुँ, पहिल विवाह हम अपन दीदीक (पितिआौत) देखने छलियन्हि।
ओही समय मे बेसी विवाह सभा सँ ठीक भेलहा सब रहैत छलैक जाहि कारणे हरबड़ी वाला विवाह हमरा देखय कS ओतेक इच्छा नहि होइत छल, मुदा दादी के मोन रखबाक लेल हुनका संग कतहु-कतहु चलि जाइत छलहुँ। ओहि समय हम परीक्षा फलक पतीक्षामे रही आर कोनो काजो तँ हमरा नहि छल ।
एक दिन हम, मा आ दादी आंगनमे बैसल छलियै कि एकटा खबासनी आयल आ दादी के कहलकन्हि-
" मालिकैन कनि एम्हर आयल जाओ "।
ई सुनतहि दादी ओकरा लग चलि गेलीह, पता नहि ओ हुनका कि कहलकन्हि। कनि कालक बाद दादी हमरा कहलथि-

"चलऽ हम तोरा एकटा सोलकन्हा सबहक बियाह देखाबैत छियौक"। हमरा आशय भेल जे आइ दादी के की भेल छन्हि जे ओ हमरा सोलकन्हाक बियाह देखय लेल कहैत छथि। हम आशय सँ पुछलियन्हि-

"अहा सोलकन्हाक बियाह देखय लेल जायब "?

दादी मुसकैत हमरा कहलथि-

"चलह नय अखन ठाम, बम्ह-स्थान लग बरियाती छैक, दूरे सँ खाली बरियाती देखि चलब आयब दूनू गोटे"।

हमारा मोन तँ नहि होइत छलय बरियाती देखबाक मुदा हम दादी के संग जएबाक लेल तैयार भऽ गेलियन्हि। बम्ह-स्थान लगे छलय, हम दुनु गोटे जखन ओतहि पहुँचलहुँ तँ देखलियए जे ओतहि बीच मे पालकी राखल आ ढोल पिपही बाजैत छल, जो आगु बढ़लहुँ तँ देखैत छी जे ओहि पालकी मे वर मुँह पर रुमाल देने बैसल छथि आ एकटा बच्चा हुनका आगू मे बैसल छलन्हि, बरियाती सब सेहो बैसल छलैक। खैर हम सब आगू बढ़िकऽ बरियाती लग पहुँच गेलियैक। हमरा एखनक भलहि नहि लागैत छल मुदा पहिल बेर अहि तरहक बरियाती देखैत रही। हम आशय सँ बरियाती देखैत रही कि किछु काल क बाद सब बरियाती ठाढ़ भऽ गेलथि आ पिपही ढोल जोर सँ बाजय लगलय। हम सब किछु पाछू भऽ गेलहुँ, जहिना पालकी उठलय कि हमरा माथ पर किछु पाइ ढ़ारि देने छल। हम तँ हका बका भऽ कऽ एम्हर-ओम्हर ताकय लगलहुँ, तँ देखैत छी दादीक हाथ मे खिलास छलन्हि। हम कानय लगलियए। ई देखि कऽ दादी हँसैत तुरंत हमरा कहलथि-

‘‘गमी छलैक ताहि दारे ठंढा कऽ देलियौक।‘‘

हमरा बड़ तामस भेल।

हम सब जखन घर पहुँचलहुँ, हम कानइत मा सँ कहलियए-
“ हम कनियो दादी संग विवाह देखैक लेल नहि जायब”।
हमर एकटा पीसी ओहि ठाम बैसल रहथि, कहि उठलीह,
" नहि कानी, तोहरे विआक लेल केलथिन"।
हमरा किछु नहि बुझय मे आयल आ बकलेल जका हुनकर मुंह
देखैत पुछलियनि- "कि नीक भेल, सभटा कपड़ा भीज गेल"।
ई सुनि कS ओ कहलथि-
"गय बचियातीक जेबा काल पानि माथ पर देला सँ लोकक विवाह
जल्दी होइत छैक, ताहि लेल तोरा पानि देलथिन "।
हम आर जनि भुनि कS ओतए सँ चलि गेलहुँ। ओकर किछुये
दिनक बाद हमर विवाह भS गेल।

५

जहिया हमर विवाह भेल ओहि समय हमर घरवाला शी लल्लन पसाद
ठाकुर इंजीनियरिंगक अन्तिम बरखमे पढैत छलाह। हम मैट्रिकक
परीक्षा देने रही आ परीक्षा फल सेहो निकलि गेल छल। हमर विवाह
आषाढ़ मास मे (दिनाक १३ जुलाईके भेल छल। विवाहक तुंरत बाद
मधुशावणी छलैक ताहि दारे हम गाम पर रही गेलहुँ आ हमर काका
मधु-हमर पित्तिऔत बहिन-के संग राची चलि गेलाह । काका हमरा
कहैत गेलाह जे ओ हमर परीक्षा फल आबि स्कूल सँ लS कॉलेज
मे हमर नाम लिखवा देताह। तै हम निश्चिन्त रही। हमर काका नाम

श्चिखवेलाक बाद हमरा खबश्च सेहो कऽ देलश्चिह। हमर नाम "श्चामिला कॉलेज राची" मे श्चिखायल छल।
दादीक आगहपर हमरा गामपर रश्चि मुिशावनी करवाक छल, बश्चिनक श्चिवाह सँ अपन श्चिवाह आ मुिशावनी िश्चि कश्चिब दू मास सँ बेसी रहय पड़ल छल। हम पश्चिल बेर अपना होश मे एतेक श्चिदन गाम पर एक संग रहल रही। ओना तँ हम सब, सब साल गाम जाइत रही, मुदा एक संग एतेक श्चिदन नश्चि रहैत रही। ओ पश्चिल आ अश्चिन्तम बेर छल जे हम गामक मजा श्चिाक जका ल सकश्चिायैक।
चतुिी आ दहनहीक बाद सब गोटे चश्चि गेलाह। श्चिनको कॉलेज खुजल छलश्चिह, ईहो- हमर घर वाला- मुजफ्फरपुर, अपन कॉलेज चश्चि गेलाह। आनक गेलापर ओतेक सुन नश्चि लागल, मुदा जश्चिया ई गेलाह ओश्चि श्चिदन बड़ सुन लागल। ई श्चिकएक होइत छैक नश्चि जाश्चि, श्चिवाह होइतेक संग एतेक पगाढ़ सम्बन्ि कोना भऽ जाइत छैक जे एक दोसरा सँ अलग रहनाइ श्चिाक नश्चि लागैत छैक। दादी श्चिनका सँ करार करवा लेलश्चिन जे मुिशावणीमे अवश्य अओताह। दादी के तँ हँ कश्चि देलश्चि मुदा हमरा सँ कहलश्चि ओ नश्चि आश्चि सकताह। हमर मोन तँ छोट भऽ गेल मुदा फेर सोचलहुँ हमर तँ क्लास छूश्चटये रहल अश्चि श्चिनकर श्चिकएक छूटश्चिह। हम कहश्चिायश्चिह श्चिकछु नश्चि, ओश्चि समय मे हम श्चिनकर बातक हँ वा नश्चि मे जवाब दैत रश्चियश्चिह। ओनाहुँ हम कम बाजैत रही आ श्चिनका सँ तँ श्चिाक जका बाजय मे हमरा एक साल लाश्चि गेल।
गाम पर बाबा दादीके छोश्चड़कऽ घर मे, हमर मा बाबुजी आ हम छहु भाय बश्चिन रही। ओश्चि समय मे असगरो जे सभ गाम पर रहैत छलाह वा छलीह, श्चिकनको ई नश्चि बुझाइन्ह जे असगर छश्चि । आ हमर घर मे तँ श्चिवाह भेल छल। रोज भोर साझ गाम घरक

लोकक अएनाइ-गेनाइ लागल रहैत छलैक। एक तँ अहुना जखनया जखनया हम सब गाम जाइ, लोक सबहक एनाइ-गेनाइ लागल रहैत छलैक आ अखन बेर तँ हमर बिवाह भेल छल। अखन बेर कनेक बिशेष लोकक एनाइ-गेनाइ रहैत छल आ हमर कनेक बिशेष मान-दान सेहो होइत छल। कखनयो कतहुँ सँ खेनाइ आबय कतहुसँ खोइंछ भरय कऽ लेल भिकयो कहय लेल आबथि , सभ भिकयो एतबा अवश्य कहथि, ठाकुरजी बड़ जल्दी चलि गेलथि। दादी सभके कहथि-“ फेर जखनकदये अओताह, पंचमी सँ मधुश्रावणी धरि रहताह”। हुनका सभ के की बुझल जे ठाकुर जी नहि आबि रहल छथि, हम सुनि कऽ चुप रही, किनको किछु नहि कहलियनि, मा तक के नहि कहने रही, मुदा जखन हुनकर एनाइ-गेनाइक गप्प सुनि मोन उदास भऽ जाय।

हमर जखनया बिवाह भेल हम ओहि समय फाक या स्कर्ट ब्लाउज पहिरै रही। अचानक हमरा साड़ी पहिरय पड़ि गेल। जहा किकयो आबथि, खास कऽ मौगी महाल महक तँ हमरा बजायल जाय। हमर बहिन सभ दौड़ कऽ हमरा लग अबथि कहय कऽ लेल, ओकर बाद हम जल्दी सँ ककरो सँ साड़ी ठीक करवाबी आ तखनहि हम हुनका सभ लग जाइ। गियाँक महक काकी-पीसी सभ गोटेमे सँ बराबरि किकयो ने किकयो रहैत छलीह, ओ सभ ठीक कऽ देथि, तइयो कैक बेर हमर पैर साड़ी मे फँसल होयत आ हम खसल होयब । जे किकयो आबथि एतवा अवश्य कहथि,

" देखियौ कुसुम केहेन लागैत छथि"।

आ देखलाक बाद कहथि-

"बड़ सीरी चढ़ल छैक"।

कतेक श्चाश्छल भावना आ कतेक अपनापन रहैत छलैक हुनका लोकश्चा मे।

हमर दु तीन टा पीसी सेहो ओश्च समयमे ओतश्च रहैत छलीह, श्चानकर सबहक श्चवाह ओश्च बरख भेल छलश्चह आ ओ सभ हमर संग तुश्चया छलीह। भश्च-दुपहश्चया घर भरल रहैत छल, हुनका सभ संग ओश्चना समय बीश्चा गेल आ पंचमी आश्च गेल। पंचमी सँ एक श्चन पश्चने भोरे भोर हमर सासुर सँ भार आयल, ओश्च मे सब श्चकछु श्चाकि ओश्चओन सँ आयल छल। भश्च गामक लोक के दादी हकार श्चयवा देलश्चिन, सभ भार देखैक लेल आबश्चि आ जे देखश्चि से कहश्चि, एतेक श्चाक भार श्चकनको ओतहुसँ नश्चि आयल छलैक, गाम पर सभ गोटे भार देश्च कऽ बड़ पशंसा करश्चि, हमरा ई सुश्चा बड़ श्चाक लागय। श्चानका हम कश्चयो देखने सुनने नय- हुनकर पशंसा सुश्चा हम खुश होइ। हमर दादी सेहो खुशी सँ सबके कहश्चि-
“अरे महादेव झा ओतय सँ भार आयल अश्छ”।
हमरा ओश्च समय मे श्चकछु नश्चि बुझाय, हम सोची हमर ससुरक नाम तँ हीरानंद ठाकुर छश्चह, दादी बेर बेर श्चकएक कहैत छश्चि महादेव झा ओतय सँ आयल अश्छ। हम पुछऽ चाही श्चकनको सँ मुदा एम्हर ओम्हर मे श्चसश्च जाइ।
कॉलेज सँ हमरा ई पश्चाश्चन एकटा श्चाटी श्चाखश्चि, ओश्च मे सब श्चन जवाब देवाक लेल श्चाखैत छलश्चि, मुदा हमरा जवाब देबय मे लाज होइत छल। एक श्चन हमर भाय आ बाबुजी कोनो काज सँ मुजफ्फरपुर जाइत छलाह। ओश्च श्चन हम पश्चल श्चाटी श्चाश्च कऽ भाय के देश्चयश्चह जे हुनका दऽ देबाक लेल।

पंचमी सँ एक दिन पहिनहि भोर मे भार आयल छल, साझ मे बाबुजी सब के सेहो अयबाक छलन्हि। हमरा अपन संगी आ पीसी सब संगे फूल लोढ़य लेल जयबाक छल। दादी सब रेन सँ दिनकर बाट ताकथि अंत मे हमर बहिन सब सँ किछु पुछओलथिन, हम बहिन सबके किछु देखायन्हि- हमरा किछु नहि अखने छथि। दादी तकर बाद सँ शांत भऽ गेलीह आ तखन सँ कहथि जे तोहर बाबुजी सब संग अवश्य अओताह।

साझ मे सब घाउझ बान्हि कऽ हमरा ओतहि आयल देखए लय- सबहक हाि मे फूल डाली आ पथिया छलैक कियो-कियो अपन खबासनीके सेहो संग मे लऽ लेने छलथि किछु कुमारि सब सेहो संग मे छलथि । हमरो संग दादी एकटा खबासनी लगा देलथि ओ हमर फूल डाली आ पथिया लऽ लेलथि। हमसब पूरा टोलक सब गोटे गीत गाबैत हँसी मजाक करैत अपन अपन फूल डाली पथिया लेने पहिने गाछी दिस गेलहुँ। दादी हमरा सिखदाइत देने रहथि- जे बास वा अन्य पैघ गाछक पात कियो तोरय, जाहि जूही कऽ पात आ फूल सभ हम अपने तोड़ी। हमरा बड़ पोला कs कहलथि-

"हे म्िशावणी लोक के एकय बेर होइत छैक जहिना कहैत छी कयने जाउ"। हमहुँ आक बच्चा जका मुरी हिला कऽ हँ किछु देखायथि।

हम सब, सब सँ पहिने बंसबटी दिस बिदा भेलहुँ। बासक पात तोड़लाक बाद हम सब जाहि जूही आ अन्य अन्य पात आ फुलक खोज मे सबहक बाड़ी-बाड़ी जाइ आ सभ तरि सँ फूल सभ बटोरैत जाइ। हमरा तँ बुझलो नहि छल जे कोन - कोन फूल आ कोन- कोन पात चाही। जेना जेना सभ कियो तोड़थि हमहुँ तोरैत जाइ।

दादीक श्वदाइत हमरा मोन छल। हम पश्चिया टा नश्च उठा पाबैत रही, सेहो हमर थ्यश्चाऔत बश्चन, देयाश्च महक छलीह - से उठा दैत छलीह। जखश्चह हमरा सभ गोटे कहलश्चि जे आब भऽ गेल, हमहुँ हुनका सभ संगे आपस हेबाक लेल चश्चा देश्चायश्चह। हमरा देश्चि कऽ ततेक आशयभिेल, हमसभ एक-एक पश्चिया भश्च कऽ पात जाही जूही लऽ लेने रश्च।

आब ओ हमरा बसक नश्च छलैक जे ओ हम उठा कऽ एको डेग आगू बश्चतहुँ। हमर थ्यश्चाऔत बश्चन ओकरा अपन मािे पर लऽ कऽ चललीह। रास्ता भश्च हँसी मजाक होइत छलैक, ओही मे सँ बेसी मजाक हम नश्च बुझैत रही। श्वच-श्वचमे बटगमनी सेहो हैत छलैक। इहो गप्प होइत छलैक जे श्चनकर सभहक वर आयल छश्चि आ श्चनकर सभहक बाद मे अिात मुिशावणी सँ पश्चने अओताह। हमारो सँ सब पुछश्चि, हम श्चछु नश्चि, बाजी हमरा लाज होइत छल। नश्च बजला पर सभ हमर आर मजाक उड़ाबश्चि, हम अश्चना दुखी छलहुँ ताश्च पर ई सभ मजाक करश्चि। कखनो मोन होइत छल बेकारे सभ संग अयलहुँ। हमरा होइत छल हम कहुना घर पहुँची, हम मजाक सँ तंग आश्च कऽ अपन बश्चन सँ जे पश्चिया लेने रहश्चि, कहश्चायश्चह, अपना सब आगू चलू। हम सभ आगू जल्दी जल्दी बश्च रहल छश्चायैक मुदा किी लेल हमरा श्चयो जल्दी जाय देत पकश्च कऽ श्वच मे हमरा सभ गोटे कऽ लेलश्चि।
ओश्चना करैत हम सब मुश्चिया बाबाक घर लग पहुँश्च गेलहुँ। हमर घर ओकर बाद छलैक हम हािे मे फुलक डाली लेने सभ संग श्वच मे चलैत रश्च। घर लग पहुँश्च सभ गोटे जोर जोर सँ हंसश्चि

हमरा ई कहि आगू कऽ देलथि जे आब हमर दादी देख रहल छथि तँ हुनका सभके डाँट परतन्हि। हम आगु आबि जहिना बरामदा पर बढ़लहुँ देखैत छी कुर्सी पर बाबा आर बाबुजीक संग ई बैसल छथि आ तीनू गोटे चाह पीबि रहल छथि। हम लाज सँ जल्दी-जल्दी आँगन दिस भागि गेलहुँ।

आँगन पहुँचि देखैत छी दादी आ मा व्यस्त छथि। एक तँ पाबनिक ओरियाओन होइत छलैक, दोसर जमाय विवाहक बाद पहिल बेर आयल छलथि, तेसर समधियोसँ सँ पाहुन भार लऽ कऽ से आयल छलथि। हमरा देखितहि दादी कहय छथि-

"यै अहा बिना मांगि झपने अहिना बाबा आ बाबुजीक सोझा सँ आबि गेलहुँ"।

हम किछु नहि बजलियन्हि, हम आ हमर बहिन चुप-चाप कोहबर घर जाय कऽ फुल डालि आ पथिया राखि देलियैक। ओहि समय मे हमरा मांगि झापय मे बड़ लाज होइत छल। हम बाहर आबि कऽ मा सँ पुछलियैक,

" बाबुजी मुजफ्फरपुर सँऽ कखन एलथि"

जकर जवाब दादी सँ भेटल,

"अहाक बाबुजी कॉलेज सँ ठाकुर जी के पकड़ि कऽ लऽ अनलथि "।

साझ मे किछु-किछु बाकि ओरिओन आ गीत भेलैक आ दादी कहलथि सब गोटे जल्दी सुतय जो भोरे उठय परत। राति मे सुतय काल पता नहि हमरा कोना मोन छल, हम हुनका सँ पुछलियन्हि-

"भार कतय सँ आयल छैक "?

हुनका किछु बुझय मे नहि अयलन्हि, हमरा कहलाह-

"मतलब.... कोन भार "?

फेर मुस्कुरैत हमरा कहलाह-

"अहा के हमरा देखि कऽ खुशी नहि भेल जे अहा हमारा सँ भारक विषय मे पुछैत छी "।

हम मुड़ी हिला कऽ हा कहि देलियन्हि मुदा फेर आस्ते सँ कहलियन्हि-

" दादी सब सँ कहैत छथि महादेव झा ओतय सँ भार आयल छैक। ई सुनतहि जोर सँs ठटा कऽ हँसैत हमरा कहलाह-

"ओ.., अच्छा..., ओ महादेव झा, ओ हमर सबहक पाहुन अछि ताहि लेल बाजैत होयतीह"।

तकर बाद हमरा पाहुनक विषय मे सेहो बता देलथि। हमरा अपना पर हँसी लागल-कहु तँ भोर सँ हम ई सोचि कऽ परेशान छलहुँ जे महादेव झा के छथि।

हम महादेव झा क विषय मे सोचिते सोचिते नहि जानि कतय ध्यान मग्न भs गेलहुँ, अचानक हमर ध्यान खुजल तs देखैत छी ई हमरा सोझामे ठाढ़ भs मुस्की दs रहल छथि। ई देखि कs हमरा लाज भs गेल, आ ई तुंरत हमरा दिस हाथ आगू कs कहलाह,

" प्रिय, अहाक लेल हम मुँह बजाओन अनलहुँ अछि, ई हमरा दिस सs अहाक लेल पहिल उपहार थिक। चतुर्थी दिन वाला तs दादाक कीनल छलन्हि, ई हमरा दिस सs अछि"। ई कहि हमरा दिस एकटा किताब आगू बढ़ा देलथि।

६

पंचमी दिन भोरे भोर दादी सभ गोटे कS उठा देलथिन। हुनको उठय पडल गेलखिह , इहो भोरे भोर तैयार भS गेलाह, हुनको हमरा संग पूजा पर बैसय कS छलखिह । पूजा पर बैसैत बैसैत ९ बाजि गेलैक। दादी भरि गामक लोक कS हकार दियबोने रहथि मुदा पूजा काल गामक सभ गोटे नहि आयल छलथि । हँ, अपन टोलक महक सभ कियो अवश्य आयल रहथि। परंच भरि दिन लोकक एनाइ गेनाइ लागल छलय। पूजा आ कथा समाप्त होइत होइत १ बाजि गेलय। सब सS पहिने हुनकर भोजनक व्यवस्था कS हुनका खुआयल गेलखिह , तकर बाद अतिथि सबहक खेनाइ कSओकरओन कS हुनका सब कS बैसायल गेलखिह । हमरो हुनके सबहक संग बीचमे बैसि कS खेबाक छलS। हमरा भात खेबाक एको रती इच्छा नहि होइत छलS। सब गोटे खेबाक लेल जिद कSदेलथि ई कही जे बस एकर बाद आब भात नहि खाय पड़त । दोसर साझ भेला पर किछु नय खेबाक छल, कहुना कऽ खीर खा कS उठि गेलहुँ

पूजा पर सS उठला पर ततेक नय थाकि गेल रही जे होइत छलS जे चुप चाप सुति रही मुदा कखनो कखनो काल पर कियो नय कियो आबि जाइत रहथि आ हुनका सब लग बैसय लेल तुंरत बजाहटि आबि जाइत छल। दुपहर मे हम सब फेर फूल लोढ़य लेल गेलहुँ ओहि दिन हम बहुत थाकल रही, ताहि जेना जेना सभ गोटे फूल पात तोरथि तहिना हमहुँ तोरि कS राखने जाइ, ओहि दिन बुझि पड़ैत छल सब थाकल रहथि, ओहि दिन हम सभ जल्दिये आपस भS गेलहुँ।

पश्चात्तन हमसब फूल लोढ़य लेल जाइ आ एक पथिया करीब रोज फूल पात आनी। बारहम श्चन हमसब कश्वा जल्दी जाs कs फूल जाश्व जूही लs अनश्वयय ओश्व श्चन बहुत लोकक ओतश्व पाहुन कs अयबाक छलश्वह , श्वकनको ससुर कs अयबाक छलश्वह तs श्वकनको वर कs। बारहम श्चन श्व करीब श्वखड़की तक फुल पातक टाश्व लाश्व गेलैक, ताश्व पर उपर सs दूि, जल पसाद चढायल जायत छलैक। कोहबर घर मे ओना तs ि दीप जरश्वा छलैक मुदा तइयो कनेक मनेक गंि रहश्वा छलैक। बारहम श्चन साझ मे पूजा वाला सबटा फूल पात हटाs कs ओश्व ठाम साफ करायल गेलैक, श्वकयैक तs मिुशावणी श्चन फेर सs सभटा फूल पात हटेलाक बाद ओतश्व साफ कs फेर सs अश्वपन परैत छैक। जखैन्ह फूल पात हटायल जायत छलैक तखैन्ह बुझय मे आयल जे हमसभ कतेक फूल पात आ जाश्व जूही तोरने रश्व, खत्ते नश्व होयत छलैक ।

साझ मे हमर ससुर अपने, हमर एकटा श्वश्वाऔत श्वयोर कs संग भार लs कs अयलाह। तखैन्ह सs घर मे सबगोटे आओर व्यस्त भs जाय गेश्वनि।हमर दादी आ मा भार देखबा आ देखेबा मे व्यस्त छश्वाह। श्वक की सब आयल अश्व की सब नश्व। हमर ससुर सेहो श्ववाहक बाद पश्वल बेर आयल छलाह। श्वनको अपन दादा (श्वताजी) सs श्ववाहक बाद पश्वल बेर भेट भेल छलश्वह ,गप्प सप मे देरी भs गेलैक।

७

हम सुनने रश्व जे मिुशावणी श्चन कश्वाया कs सासुर सs श्वक

सामान संग टेमी सेहो अबैत छैक आ ओक्ष सS कश्चाया कS दुनु ठेहुन कS डाहल जायत छैक। टेमी सS डाहलाक बाद ओकरा पर पान आ सुपारी दS ओकरा रगश्च देल जायत छैक जाक्ष सS फोका अवश्य होय। फोका भेला सSश्चाक मानल जायत छैक। सब श्वन फुल लोढ़य काल इ सब गप्प होयत रहैत छलैक। हम साझे सS डरल रक्ष आ जखैन्ह सS हमर ससुर आश्च गेलाह तखैन्ह सS ददकि कल्पना कS आओर डश्च जायत रक्ष। दादी कS गप्प मोन पश्च जाय जे "मि्शावणी लोकक एके बेर होयत छैक"। श्वनको सS श्वकछु पुछबो नय कश्चयैन्ह।

राश्चा मे सुतय मे देर तS भS गेल छलैक, भगवान भगवान कS सुतय लेल गेलहुँ हम अहुना कम बाजश्चा छलौह ओक्ष श्वन आओर श्वकछु नय बाजल नक्ष होयत छलS इ हमरा सS दू श्चान बेर पुछलाह श्वकछु भेल अश्छ, हम सब बेर नक्ष कक्ष श्चयश्च मुदा श्चनका बुझS मे आश्च गेलश्चह श्वक श्वकछु गप्प अवश्य छैक। जखैन्ह इ हमरा बहुत पुछलश्चि तS हम िरे सS कहश्चयैन्ह, "हमरा डर होयत अश्छ"। श्चनका श्वकछु बुझय मे नय अयलैन्ह, अचानक हमरा डर श्वकयैक होयत छलS। इ हमरा बहुत श्चाक सS बुझा कS पुछलाह "डरबाकS आश्चखर कोन गप्प छैक", अहा पक्षने डर नय आ हमरा कहु की गप्प छैक"? हम डरैत श्चनका कहश्चयैन्ह "हमरा टेमी सS डर होयत अश्छ"। "टेमी... श्वकयाक टेमी सS डर होइत अश्छ"? हम हुनका तुंरत सभटा कक्ष देश्चयैन्ह जे काश्चा कSलेल डश्च रहल छलन्हु। इ हमरा कहलाह "अहा जुश्च डर एकतS हमरा बुझश्चा अश्छ जे

हमारा ओतय टेमी नञ्ज होयत अछ्छ, दोसर जाओं होयतो होयत तS अहा कS नञ्ज होमय देबैक, हमर गप्प के श्वकयो नय काटश्वाह "। ओश्च श्वदन पता नञ्ज कोना आ श्वकयाक, तुंरत श्चनका पर पूणर्ि पेण श्वशास भS गेल, हम श्वाश्वांत भS गेलहुँ जे आब हमरा टेमी नञ्ज परत। ओकर बाद हमरा मोन मे कोनो डर नञ्ज छल।
भोरे उठी कS तैयार भेलन्हु मुदा मोन मे कश्चाको डर नञ्ज छल। म्िशावणी श्वदन पूजा मे कनेक आओर बेसी समय लगलैक, जखैन्ह टेमी देबाक भेलS तS जश्चना हमर श्वा किश्व उठलश्वि इ तुंरत कश्च देलश्विन हमरा सब मे टेमी नय होयत अछ्छ। इ सुनतश्च हमरा ततेक नय खुशी भेल जकर वणर्ि नञ्ज कयल जा सकश्वा अछ्छ। श्वा किश्व उश्च कS एकटा टेश्व आश्वा कहलश्विन ठीके श्चनका सभके शीतल टेश्व होयत छैन्ह। एकटा टेश्व मे चंदन लगा ओश्च सS हमर दुनु ठेहुन मे लगा देल गेल।

ओश्च श्वदन फेर अश्चबाश्वाक संग खेबाक छलS। हमर ससुरक सौजश्वा सेहो छलश्वाह । पाबश्वा सSउठलाक बाद श्चनकर भोजनक व्यवस्िा आ हमर ससुरक सौजश्वा भेलैन्ह आ हम खेलाक बाद जश्चना सोचलौन्ह आब आराम करैत श्छ श्वक मा आश्व कS कहलैि तैयार होयबाक अछ्छ हमर ससुर, दादा जी आबैत होयताह। दादा जी कS आदेश छलश्वाह जे ओ हमरा भगवश्वा घर मे देखताह। हम फेर तैयार भS भगवश्वा घर चश्वा गेलंहु । श्वयोर आ दादा जी दुनु गोटे भगवश्वा घर अयलाह आ कश्वा दूर ठाढ़ भS गेलाह। हमरा संग जे छश्वाह ओ हमरा जाS कS गोर लागय लेल कहलैि, हम ठाढ़ भSदादा जी लग जा हुनका गोर लाश्वा लेश्वायैन्ह आ ओश्च ठाम बैश्व गेलंहु, ओ तुंरत देखेबाक लेल कहलैि आ हुनका जश्चना देखा देल गेलश्वाह हमरा

हाि मे एकटा गहना दS ओतय सS चिल गेलाह।

दादा जी साझ मे चिल गेलाह। हमारो सबके दू िदन बाद जेबाक छलS। हमर छोट भायक मुंडन छलिन्ह अरेराज मंिदर मे, हुनकर मुंडन करा हमरा राची मे छोरिथ, छोटका भाय आ मानु बिहन के संग मा बाबुजी कS अरणाचल जयबाक छलिन्ह बाबुजी कS छुटी से खतम भS गेल छलिन्ह । । हुनका सेहो मुंडन मे उपिस्थित रहबाक लेल मा बाबुजी सब कहैत रहिथ।
रास्ता मे इ हमरा सS हमर मोन जाचय लेल पुछलिथ अहाक मा बाबुजी हमरो मुंडन मे उपिस्थत होयबाक लेल कहैत छिथ, हम की कहु । हम पिहने त चुप रहलहु मुदा टेमी वाला बातक बाद स हमर कनी िखस टुिट गेल छल। हम िरे सS कहिलयिन छुटी अिछ त अहुँ हमरे सब संग चलु ,मुंडन कS बाद अहा मुजफ्फरपुर चिल जायब आ हम सब राची चिल जायब। इ हमरा कहलिथ हमर कॉलेज मे हरताल चलैत अिछ। जािह िदन शुर भेल छलैक ओिह िदन अहाक बाबुजी पहुँिच गेलाह , हम सोचैते छलहुँ अयबाक लेल तािह हमरा बाबुजी कहलिथ देलिथ छुटी अिछ तS अिह ठाम रुक करब चलु हमरा संग आ हम चिल आयल रही। दोसर अहा िचटी जे िलखने रही, हमरा ततेक नय खुशी भेल जे हम तुंरत आबय चाहैत रही।
हम हुनकर गप्प सुनी कS मोने मोन बड खुश भेलहुँ , मुदा ई हमर मोनक गप्प कोना बुझल गेलाह से निह जानी। इ हमरा अपने मोने कहय लगलाह राची तS अिह ठाम स दूर छैक परंच हम कोिशश

करब जखैन्ह छुटी होयत हम आबि जायब अहा थांता जुआ करब, खूब मोन स पढ़ब। हम इ सुनतहि उदास भ गेलौहुं, तखनि हमरा लागल जे आब हमरा हुनका सऽ अलग रहय मे मोन नय लागत।

तेसर दिन हम दुनु गोटे, मा बाबूजी, हमर भाय बहिन सब दादी बाबा कऽ संग गाम सऽ अरेराज कऽ लेल बिदा भऽ गेलहुँ। राति सबगोटे मोतिहारी मे रहिक भोरे भोर हमसब मन्दिर पहुँची गेलहुँ आ मुंडन भेला पर सबगोटे मन्दिर दर्शन करय लेल जाय गेलथि , हम आ ई बाहरे सऽ भोला बाबा कऽगोर लागि लेलियैन्ह। दादी कहने छलथि विवाहक एक बरख धरि लोग मन्दिर कऽ भीतर नहि जायत छैक। सबगोटे वापस फेर मोतिहारी आबि गेलहुँ, दादी बाबा गाम चलि गेलाह आ हमसब ओहि दिन मोतिहारी रहिक गेलहुँ , दोसर दिन हमारा सब के मुजफ्फरपुर सऽ राची के लेल रेल गाड़ी छलऽ।

दादी बाबा कऽ गाम गेलाक बाद मा, बाबुजी, हम सब छहु भाई बहिन, आ ई, ओहि दिन मोतिहारी रही गेल रही। हमारा सब कऽ दोसर दिन मोतिहारी सऽ मुजफ्फरपुर जेबाक छऽल। साझ मे ई हमरा कहलाह मा के कहि दियौन्ह आ चलू हम सब सिनेमा देख कऽ अबैत छी। पहिने तऽ हम तैयारे नहि होइत छलियै मुदा जखैन्ह ई बहुत कहलाह तऽ हम जएबाक लेल तैयार तऽ भऽ गेलहुँ मुदा मा सऽ कहबा मे हमारा लाज होयत छलऽ। जखैन्ह हम मा सऽ कहय लेल तैयार नहि भेलहुँ तऽ ई हमर छोटकी बहिन अनू के बजा कऽ कहलथिन, "अहा अपन मा सऽ चुप चाप कहि दियौन हम

दुनु गोटे सिनेमा जाइत छी"। अनू बेचारी तऽ ठीके मा सऽ चुप चाप जा कऽ ई गप्प कहलथि,मुदा कोना नय कोना हमर तेसर बहिन सिनी ई गप्प सुनि लेलथिन आ तकर बाद एक के बाद एक सब भाई बहिन सब सिनेमा जएबाक लेल हल्ला करय लागय गेलीह, सब छोटे छोट छलथि। मा सब के बुझबथि छथिह मुदा कियो मानय लेल तैयार नहि छलथि।बहुत बुझेला पर आओर सब गोटे तऽ मानि गेलिह सिनी नहि मानलिह। हमरा आर हिनका "अपना देश ", विवाह कऽ बादक पहिल सिनेमा सिनी कऽ सँग देखय परल। हम सब सिनेमा की देखब सिनी के सम्हारय मे हमर सबहक समय बीति गेल।हम की कहियो ओहि दिनका देखल सिनेमा बिसरी सकैत छी। दोसर दिन भोरे हम सब मुजफ्फरपुर के लेल बिदा भऽ गेलहुँ। पहिने तऽ हमर सबहक कार्यक्रम अनुसारे हमारा सबके मुजफ्फरपुर मे रहबाक नय छलऽ मुदा हिनकर आगह के बाबुजी मानि गेलाह आ हमसब मुजफ्फरपुर मे सेहो दू दिन रहि गेलहुँ। ओहि दिन हमरा सब के पहुँचलाक बाद इ अपन हॉस्टल इ कहि कऽ गेलाह जे अपन सामान राखि आ जानकारी लऽ कि कॉलेजक हरतालक की भेलैक इ आबि जेताह आ दिनका भोजन इ हॉस्टल सऽ कऽ कऽ अओताह। दुपहर मे इ अयलाह आ हिनक सँग हमर दीयर सल्लन जी, जे हिनका सऽ दू बरखक छोट छथि आ हिनके कॉलेज मे पढैत छलाह हमारा सऽ भेट करय कऽ लेल सेहो अयलाह।

सल्लन जी सऽ हमरा पहिल बेर भेट छल। बरियाति आयल छलाह, मुदा एक तऽ गामक बरियाति,दोसर बरियाति सब पहिने आँगन मानि सुहाग देबय कऽ लेल आबथि रहथि। फिरेक काल गप्प, आ चाह नाश्ताक बाद इ हमरा आ सब बच्चा(हमर भाय बहिन) सब के सिनेमा

लS जयबाक लेल कहलखिन तैयार होयबाक लेल कहलथि सब खुशी खुशी तैयार भS जाय गेलथि आ हमर छोटका भाय के छोड़ि, बाकि पूरा बटालियनक सँग हम सब सिनेमा देखबाक लेल विदा भS गेलहुँ। हमरा सब सँग सल्लन जी सेहो रहथि हम मोने मोन सोचलहुं आय इ एतेक गोटे सँग सिनेमा देखबाक लेल तैयार कोना भS गेलाह। फेर मोन मे आयल ओहिना स्मिन बच्चा सब कानैत रहथि, इ सोचि सब के लSजयबाक सोचने होयताह, सल्लन जी आ बौआ(हमर बडका भाय) सेहो सँग रहबे करथि।

घर सS निकलतहि रिक्शा भेट गेलS एक टा रिक्शा पर हम दुनु गोटे आ बाकि दू टा पर सल्लन जी आ बौआक सँग सब बच्चा सब बैसि जाय गेलथि। ओना हम मुजफ्फरपुर दोसर बेर आयल छलहुँ, मुदा पहिल बेर मात्र राति भरि जनकपुर सS राची जाय काल लंगट सिंह कॉलेजक गेस्ट हाउस मे रहि। हमर सबहक रिक्शा पाछू छलैक आ तेहेन खराब सड़क जे हमर ध्यान दोसर दिस नहि छल, हमरा होयत छल कही खसि नय परी। हम मात्र सड़क आ रिक्शा दिस देखैत सिनेमा हॉल लग पहुँची गेलहुँ।

रिक्शा सS उतरतहि इ रिक्शा वाला के पाई दS हमरा कहलथि चलू। हम किछु बूझि नहि पयैक नहि आ पुछलियैन्ह,"आ बाकि सब गोटे"? इ मुस्कुरैत कहलाह बच्चा पाटी के सल्लन अपना सँग दोसर सिनेमा देखाबय लेल लS गेलाह। हम हुनका सँग सिनेमा हॉल मे जा जखैन्ह बैसलहुं तS सिनेमा शुरु होयबा मे किछु देरिक समय छलैक। इ हमरा

कहलाह हमरा सिनेमा देखबाक ओतेक इच्छा नहि छलऽ हमरा तऽ अहाक सँग रहबाक छलऽ आब फेर कतेक दिनक बाद भेट होयत नहि जानि, आ ओहि ठाम इ सम्भव नहि छलऽ। हमर कोरा वाली साथि सब जे छथि, ओ हमरा एको मिनट असगर कथि लेल रहय देतीह। सल्लन हमरा सँग आबिते छलाह, हुनका अहा सऽ भेट करबाक छलन्हि । हम सोचलहुं सिनेमा देखबाक नाम पर सब तैयार भऽ जेताह , आ सल्लन सऽ पुछलथिन्ह तऽ कोरा खेलाबय वाली साथि सब सँग सिनेमा देखय लेल तैयार भऽ गेलाह। ओहि ठाम कहितौह त फेर हल्ला भऽ जायत तकर आशंका सऽ हम अहूँ के किछु नहि कहलहुं। पकाश(हमर पैघ भाय) आ सल्लन के सबटा बुझल छलन्हि , तादि लेल हुनकर सबहक टिकिशा आगू गेलन्हि आ हमर सबहक पाछू छऽल । इ सुनि हमरो लाक लागल, जखैन्ह सऽ हम सब गाम सऽ आकललहुं तखैन्ह सऽनहि जानि कियाक हमरो मोन इ सोचि उदास छलऽ जे पता नहि आब कहिया भेट होयत। हमरो आ हुनको दुनु गोटे के कॉलेज खुजल छऽल दोसर हमरा लागैत छऽल जे राची सऽ मुजफ्फरपुर बहुत दूर छैक।

हम सब सिनेमा की देखब गप्पे मे समय बीति गेल। इ तऽ लाक छऽल जे दीपक सिनेमाक सब हुनका चिन्हैत छलन्हि दोसर ओहि दिन एकदम कम भीर छलैक आ हमरा सब के एकदम कात मे सीट भेन्टल छल जाहि ठाम कियो बैसल नही छलथि राति मे हम सब आपस अयलहुं तऽ बच्चा सब सल्लन जी आ बौआ कऽ सँग आपस हमरा सब सऽ पहिनहि आबि गेल रहथि हमरा तऽ होयत छल हमर

बच्चा सब हमरा सब के देखि कS हल्ला करतीह मुदा ओ सब किछु नही बजलाह। सल्लन जी अपन हॉस्टल आपस चलि गेलाह।

८

ओहि राति हमरा एको रती नीद नहि भेल। दोसर दिन हमर सबहक रेल गाड़ी छल। सिनकर कॉलेज तS खुजि गेल छलन्हि मुदा इ हमरा कहि देने रहथि जे एक दिनक गप्प छैक, तहि लेल इ हमरा सबके गेलाक बाद सS अपन क्लास करताह। साझ मे हमरा सब के छोरय के लेल हमरा सब सँग इहो स्टेशन अयलाह हमरा स्टेशन पर ठाढ़ हेबा मे सब दिन सS बड़ खराब लागैत छSल मुदा ओहि दिन नहि जानि किएक, होइत छSल जे रेल गाड़ी जतेक देरी सS आबैक से ठीक। किन्तु लेल, गाड़ी अपन निश्चित समय पर आबि गेलैक आ हमरा ओहि पर सवार होमय परल।

रेल गाड़ी खुजय सS पहिनहि ई मौका देखि कS चुपचाप हमरा लग आबि कहलाह

"आब चिट्ठी अवश्य लिखब नहि तS हमारा पढ़य मे मोन नहि लागत"।

हमहू मुडी हिला जवाब दS देलियैन्ह। जहिना जहिना गाड़ी खुजय के समय होयत छलैक हमरा बुझाइत छSल जेना हमरा किछु जबरदस्ती पठा रहल अछि। गाड़ी आब ससरय लागल मुदा हम दूनू गोटे एक टक एक दोसरा के ताबैत देखैत रही गेलहुँ जाबैत कि आँखि सS ओझल नहि भSगेलहुँ।

राची पहुँचलाक दोसर दिन हम कॉलेज गेलहुँ मुदा हमर कॉलेज मे एको गोट हमर स्कूलक संगी नहि भेटलाह। हम चुप चाप जा कS पछुलका बेच पर बैसी गेलहुँ। क्लास मे हम असगर रही जखनकि एक बियाह भेल छलैक। हमरा क्लास मे नन सब सेहो कैयेक टा छलीह। हमरा बगल मे सब दिन आबि कS एकटा नन बैसि जाइत छलीह।

एक सप्ताहक बाद बाबुजी जएबाक चर्च करय लगलाह, हुनका गेनाइ आवश्यक छलन्हि । ओ तSआयल छलाह नीलू दीदी, हमर पितिऔत बहिनक बियाहक हिसाबे छुटी लS कS मुदा हमर बियाहक चलते हुनका छुटी बढाबय पड़ि गेलन्हि । हमर मा बाबुजी अरुणाचल मे रहैत छलथि, जाहि ठाम मात्रि छोटका बच्चा सब के लेल स्कूल छलैक ।हम आ बौआ (हमर बडका भाय) तीन चारि बरख सS पढ़ाई लेल मा बाबुजी लग नहि रहि छोटका काका लग राची मे रहैत छलहुँ। हुनका लोकनि के जएबाक चर्च जखैन्ह जखैन्ह होय हमर मोन छोट भS जायत छSल, हम कात मे जाय खूब कानी। हमर मा सैत इ देखि लेत छलीह, एक दिन हमरा पुछि देलथि "अहा किएक कानैत छी"। हमरा आओर कना गेल मुदा हम बजलयैन्ह किछु नहि। हमरा सब दिन सS इ रहल, यदि हमरा मोन मे दुख होइत अछि तS हम ककरो किछु नहि कहैत छियैन्ह आ कात मे जा असगरे कानैत छी।एक दिन मा हमरा असगरे लS जाय कS पुछलथि हमरा कहु अहा किएक कानैत छी नय तSहमरा ओतहु जाय कS ध्यान लागल रहत। इ सुनतहि हमरा आओर कना गेल। मा तखैन्ह बुझि गेलै आ पुछलथि कहु तS हम नहि जाई आ किछु दिन अहा

लग रही जाइ, अहाक बाबुजी असगरे चलि जयताह। हम किछु नहि बजलियैन्ह मुदा हमरा इ सुनि खराब लागल।
हमर मा, बाबुजी के कहि सुनि कऽ हुनका असगर जएबाक लेल तैयार कऽ लेलकथि। हमर चाचा इ सुनि कऽ पहिने मा के रोकबा लेल मना कयलथि मुदा मा के मोन देखि कऽ ओहो चुप भऽगेलथि। एक सप्ताहक बाद बाबुजी के अरुणाचल जायब तय भेलैह। बाबुजी के राची सऽमुजफ्फरपुर जा ओतहि सऽ अवध आसाम मेल सऽ अरुणाचल जएबाक छलन्हि ।

९

आय भोरे बाबुजी असगर चलि गेलाह। मा कऽ मोन नहि मानलन्हि जे ओ हमरा कानैत छोड़ि कऽजैतथि। बाबुजी कऽ गेलाक बाद हमरा बड अफसोस होयत छलऽ जे मा के हमरा चलते रहय पड़ि गेलैन्ह, आ आब बच्चा सब के लऽ असगर जाय परतैन्ह।
कॉलेज जयबाक खुशी एतबे दिन मे समाप्त भऽ गेल, कियाक से नहि जानि। कॉलेज जाइ अवश्य मुदा जेना कतो आओर हेरायल रहैत छलहुँ।घर आबि तऽ घर मे सेहो एकदम चुप चाप जा अपन कोठरी मे पड़ि रहैत रही। मा सब सोचथि हम थाकि जायत होयब आ सुतल छी, मुदा हम घंटो ओहिना परल रहैत रही। हमरा अपनहु आश्चर्य होयत छलऽ। स्कूल गेनाई तऽ हम मोन खराब मे सेहो नहि छोरैत रही , फेर हमरा एहि तरहे कियाक भेल जा रहल छलऽ। काल्हि बाबुजी चलि गेलाह से आओर घर सुन लागैत छलैक ताहि पर कॉलेज जयबाक से मोन नहि होयत छलऽ। कहुना कॉलेज तऽ गेलहुँ मुदा ओहियो ठाम नीक नहि लागल।कॉलेज सऽ आपस अयलाक कऽ बाद नहि जानि मोन जेना बेचैन लागैत छलऽ। हमरा बुझय मे

नञ्ञ अबैत छल जे एञ्ञ तरहे ञ्ञकयाक भsरहल अञ्ञ। जञ्ञना हाि पैर ि ि कs अयलहुं मौसी (जे की हमर काकी सेहो छञ्ञि) जलखई लsकs ठाढ़ रहञ्ञि आ हमरा आगूक जलखई दैत बजलीह जल्ञी सs पञ्ञने जलखई कs ञ्ञाय। अहा सब ञ्ञन बहाना कs दैत ञ्ञयैक जे भूख नञ्ञ अञ्ञ एतबञ्ञ ञ्ञन मे केहेन दुञ्ञर भs गेल छी। नीक सs खाऊ ञ्ञबू नञ्ञ तs ठाकुर जी अओताह तs कहताह एतबञ्ञ ञ्ञन मे सब हमर कञ्ञाया के दुञ्ञर कs देलैि। ठाकुर जी नाम सुनतञ्ञ नञ्ञ जाञ्ञ कतय सs हमरा मुँह पर मुस्ञकी आञ्ञ गेल। बुञ्ञ परल जेना फूञ्ञि आञ्ञ गेल हो। मौसी के एकटा नीक मौका भेट गेलैह आ ओ तुंरत मा के बजा कहय लागञ्ञह "हे बञ्ञन, अहा तs ञ्ञकछु नय बुझैत ञ्ञयैक, कुसुम िकिय ताकय ञ्ञकछु नय छञ्ञि रोज तीन चाञ्ञ बेर ठाकुर जी कs नाम लs नय लेल कर, सब ठीक रहतैक"। आब हमरा कोनो दोसर उपाय नञ्ञ बुझाइत छल, हम ञ्ञना ञ्ञकछु बजने चुप चाप मौसी के हाि सs जलखई लsलेञ्ञयैन्ह।

सब राञ्ञ हम आ काका ञ्ञञ्ञि भारञ्ञक हवा महल अवश्ञ सुनैत रही। हमरा दुनु गोटे कs इ कायिम बड़ पसीन छलs। सब सुञ्ञ रहञ्ञि मुदा हम दुनु गोटे हवा महल के बाद सुतय लेल जाइत रही। हमरा कतबो पढ़ाई ञ्ञकयाक नञ्ञ हो सब ञ्ञन काका हमरा हवा महल काल अवश्ञ बजा लेत छलाह। आइयो हवा महल जञ्ञना शुर भेलैक मि के भेञ्ञ कs हमरा बजा पठेलञ्ञि। हवा महल सुनलाक बाद हम अपन कोठरी मे सुतय लेल चञ्ञ गेलहुँ आ काका अपन कोठरी मे।

जञ्ञना इ कहने रहञ्ञि, तञ्ञना सब ञ्ञन ञ्ञनकर ञ्ञटी आबैन्ह आ ओकर जवाब सब ञ्ञन राञ्ञ मे सुतय काल ञ्ञखय चाञ्ञ मुदा ञ्ञनका

हम की सम्बोधि न कS चिट्ठी लिखैत छथिन्ह इ हमरा बुझय मे नहि आबि रहल छलS आ हम पुछबो नहि केलियन्हि। हम अपन पहिल चिट्ठी जे उनका बौआ सँग मुजफ्फरपुर पठौने रहियैन्ह ताहू मे कुनो सम्बोधन नहि लिखने रहियैन्ह, सोचैत-सोचैत जखैन्ह कुछु नय फुरायल छलS तS हम उनका "ठाकुर जी" सम्बोधि न कS चिट्ठी लिखि पठा देने रहियैन्ह। ओ चिट्ठी पता नहि कोना , उनकर कोनो दोस्त देख लेने रहथि आ उनका कहि देने रहथिन्ह जे अहाक सासुर सँ चिट्ठी बड़ सुन्दर लिखल छथि।इ ओकर चर्चा हमरा लग हँसैत हँसैत कयने रहथि। हमरा ओहि सम्बोधन अपना पर तामस अवश्य भेल छलS मुदा हमरा बुझले नय छलS जे लोग की संबोधि न कS घरवाला के चिट्ठी लिखैत छैक। आब तS "ठाकुर जी "सम्बोधि न कS सेहो नहि लिखि सकैत छलहुँ । जखैन्ह हम सुतय लेल अयलहुं तS इ सोचिये कS आयल छलहुँ जे, किछु भS जाय आइ हम चिट्ठी लिखबे करबैन्ह।हमरा अपने बहुत खराप लागैत छलS जे हम एकोटा चिट्ठीक जवाब नहि देने रहियैन्ह। बहुत सोचलाक बाद जखैन्ह हमरा सम्बोधि निक कोनो शब्द नहि फुरायल तS हम ओहि भाग कS छोड़ि चिट्ठी लिखय लगलहुँ । चिट्ठी मे कैयाक ठाम हम लिखिये जे हमरा मोन नहि लागैत अछि जल्दी चलि आऊ मुदा ओ फेर हम काटि दियय । खैर बिना सम्बोधि वाला चिट्ठी लिखि कS हम एकटा किताब मे इ सोचि कS राखि देलियैक जे भोर तक किछु नय किछु फुरा जयबे करत। तखैन्ह ओ लिखि कSकॉलेज जाय काल खसा देबैक। पोस्ट ऑफिस हमर घरक बगल मे छलैक।

चिट्ठी लिखलाक बाद हम सोचलहुँ सुति रही मुदा कथि लेल नीद होयत। बड़ी काल तक बिछौना पर परल परल जखैन्ह नीद नहि आयल तS उठि कS पानि पीबि लेलहुँ आ फेर बिछौना पर पड़ि कS

हुनकर देल किताब "साहब बीबी और गुलाम पढ़य" लगलहुँ । दू चारि पना पढ़लाक बाद किताबो सS मोन उचटि गेल आ जऔं घड़ी दिस नजरि गेल तS देखलियैक भोर के चारि बाजि गेल छलS। सोचलहुँ आब की सुतब, जाइत छी चिट्ठी पूरा कS तैयार भS जायब। इ सोचि जहिना उठि कS कलम हाथ मे लेलहुँ कि बुझायल जे कियो केबार खट खटा रहल छथि। हमरा मोन मे जेना एक बेर आयल कही इ तS नहि अयलाह। हम जल्दी सS आगू बढ़ि कS जहिना केबार खोललिये छी तS ठीके इ एकटा बैग लेने ठाढ़ छलथि। हम किछु कण ओहिना ठाढ़ भS हुनकर मुँह ताकैत रही गेलहुँ अचानक मोन परल आ हुनका सS बिना किछु पूछने वा कहने ओहि ठाम स तुरन्त भागि गेलहुँ । ता बाबू काका के छी करैत ओहि ठाम पहुँच गेलाह आ हमरा भागैत देखि पुछलथि" के छथि"?हम बिना किछु कहने ओहि ठाम सS भागि अपन कोठरी मे जा बैसि गेलहुँ। काका हुनका देखैत देरी अ हा हा ... ठाकुर जी आयल जाओ बैसल जाओ कहैत हुनका घर मे बैसा तुरंत ओहि ठाम सSजोर जोर सS भौजी भौजी करैत भीतर आबि सब के उठा देलथि। भिनसरबा काल मे भरि घरक लोग उठि गेलथि। तुरंत मे चाह पानि सबहक ओरिओन होमय लागल। राची मे तS हमर पितिऔत चारि भाई बहिन सेहो रहथि। जाहि महक तीन गोटे हुनका देखनेहो नहि रहथि, मनु टा विवाह मे छलाह। सब हुनका देखय लेल जमा भS जाय गेलथि। मौसी सS सेहो हुनका पहिल बेर भेट भेल छलैन्ह। विवाह मे मौसी नहि रहथि नीलू दीदी कS विवाह के बाद सोनूक (छोटका बेटा) मोन खराप भS गेल छलैन्ह आ काका मौसी, सोनू, बाकी आ पप्पू के राची छोड़ि आयल छलथि। हुनका एतबो समय नहि भेटलैन्ह जे मौसी के फेर

अनतथि।

हम अपन कोठरी मे चुप चाप बैसल रही, रतुका बेचैनी आब नञ्चि छलऽ मुदा हमरा ककिछु नञ्चि बुझाइत छलऽ जे हम की करी। इ सोचैत रही जे कॉलेज जाइ या नञ्चि, जयबाक मोन तऽ नञ्चि होयत छलऽ, ताबैत मौसी हमरा कोठरी मे कुसुम कुसुम करैत हाथि मे चाह लेने घुसलीह। हमरा देखैत कहय लगलीह "अहा अञ्चिना बैसल छी, जल्दी सऽ चाह पीबि कय आ तैयार भऽ जाऊ। हमरा इ सुनतञ्चि बड़ तामस भेल, हमरा मोन मे भेल कहू तऽ इ अखैन्हे अयलाह अछि आ मौसी हमरा कॉलेज जाय लेल कहैत छथि हम धिरे सऽ कहञ्चियैन्ह हमर माथि बड़ जोर सऽ दुखायत अछि। इ सुनतञ्चि मौसी के मुँह पर मुस्की आबि गेलैन्ह आ कहलथि तैयार भऽ जाऊ मोन अपनञ्चि ठीक भऽ जायत, आ आय कॉलेज नञ्चि जयबाक अछि। इ सुनतञ्चि हमरा भीतर सऽ खुशी भेल,बुझायल जेना हम यैह तऽ चाहैत रही, जे ककियो हमरा कहथि अहा कॉलेज नञ्चि जाऊ। हम जल्दी सऽ चाह पीबि तैयार होमय लेल चलि गेलहुँ।

ओना तऽ हमरा तैयार हेबा मे बड़ समय लागैत छलऽ मुदा ओञ्चि दिन जल्दी जल्दी तैयार भऽगेलहुँ। अपन कोठरी मे पहुँचलहुं तऽ मौसी हमरे कोठरी मे रहथि आ ककिछु ठीक करैत छलीह। हमरा देखैत बाजि उठलीह "बाह आय तऽ अहा बड़ फुती सऽ तैयार भऽ गेलहुँ, आब माथि क ददथि कम भेल"? हम हुनका दिस देखबो नही केलियैन्ह आ दोसर दिस मुँह घुमेनञ्चि हा कही देलियैन्ह।

काका के अवाहे बेर सऽ हुनका सँग खूब गप्प होयत छलैन्ह। हमर काका बड़ नीक आ हंसमुख व्यक्ति, ओ हुनका सऽ कखनहु कखनहु कऽ हँसी सेहो कऽ लेत छलाह। हुनको काका सऽ गप्प करय मे बड़ नीक लागैत छलैन्ह। हम तैयार भऽ कऽ पहुँचलहुं ता धरि ओ

सब गप्प कथ्ात छलाह। मौसी हमरे कोठरी सs काका के सोर पाथ्व हुनका सs कहलथ्ि" ठाकुर जी कs तैयार होमय लेल कथ्ायोक नथ्ि, िकल होयताह "।थ्कछुए कालक बाद इ हमर वाला कोठरी मे अयलाह,हम चुप चाप ओथ्ा ठाम बैसल रही। थ्ानका देखैत देरी हमरा की फुरायल नथ्ा जाथ्ा झट दय गोर लाथ्ा लेथ्ायैन्ह।गोर लगलाक बाद हम चुप चाप फेर आथ्व कs बैथ्स रहथ्ायैक। मोन मे पचास तरहक पश उठैत छल।इहो आथ्व कs हमरा लग बैथ्स रहलाह आ पुछलाह अहा कानैत थ्कयाक रही, आ हमरा देथ्ख कs आजु भाथ्ा थ्कयाक गेलहुँ। अहाक बाबुजी जखैन्ह सs इ कहलाह जे अहा कs कनबाक चलते मा रही गेलीह, आ आब एक मास बाद जयतीह, तखैन्ह सs हमरो मोन बेचैन छलs। अहा के बाबुजी के गाड़ी मे बैसा सीिे हॉस्टल गेलहुँ आ ओथ्ाठाम मािे कपडा लs जे पथ्ाल बस भेटल ओथ्ा सs सीिे आथ्व रहल छी। थ्ानकर इ गप्प सुनतथ्ा हमर आँथ्ख डबडबा गेल। हमरा अपनहु इ नथ्ा बुझल छलs जे हम थ्कयाक भागल रही आ नथ्ा इ, जे हमरा थ्कयाक कना जायत छल। साझ मे हम चाह लs कs जखैन्ह घर मे घुसलहुं तs इ आराम करैत छलाह मुदा हमरा देखैत देरी उथ्ठ कs केबार बंद कs लेलथ्ि आ हमरा लग आथ्व बैसैत कहलाह "अहा सs हमरा थ्कछु आवश्यक गप्प करबाक अथ्छ"। हम थ्कछु बजथ्ायैन्ह नथ्ा मुदा मोन मे पचास तरहक पश उठैत छलs। चाह पीथ्व कप राखैत कहलाह "अहा सच मे बड़ सुिे छी, अहा हमर बुची दाई छी"। हम तखनहु थ्कछु नथ्ा बुझथ्ायैन्ह आ नय थ्कछु बजथ्ायैन्ह, मोने मोन सोचलहुं इ बुची दाई के छथ्ि। हम सोथ्ाते रही जे थ्ानका सs पुछैत थ्छयैन्ह, इ बुची दाई के छथ्ि ताबैत िथ्व इ उथ्ठ कs एकटा कागज लs हमरा लग

बैसल रहलाह। हमरा सऽ पुछलाह हमरमोहन झा कऽ नाम सुनने छी? हम सीधि मुडी हिला कऽ नहि कहि देलियैन्ह, ठीके हमरा नहि बुझल छलऽ। ठीक छैक हम अहा के बुची दाई आ हरी मोहन झाक विषय मे दोसर दिन बतायब। पहिने इ कहू, अहा के तऽ हमरा देखि कऽ खुशी आ आशचर्य दूनू भेल होयत। हुनका देखि कऽ हमरा खुशी आ आशयतिऽ ठीके भेल छलऽ मुदा हुनका कोना कहितियैन्ह हमरा कहय मे लाज होयत छलऽ, तानि पुछि देलथि तऽ मुडी हिला कऽ हा कहि देलियैन्ह। इ अपन हाथि महक कागज़ हमरा दिस आगू करैत कहलाह, इ अहा के लेल हम किछु सम्बोधिनिक शब्द लिखने छी, अहा के अहि मे सऽ जे नीक लागय वा अहा जे संबोधि करय चाहि लिखी सकैत छी, मुदा आब चिठ्ठी अवश्य लिखब। कोनो तरहक लाज, संकोच करबाक आवश्यकता नहि अछि। बादक गप्प के कहय हम तऽ इ सुनतहि लाज सऽ गरि गेलहुँ। हम सोचय लगलहुं हुनका हमर मोनक सबटा गप्प कोना बुझल भऽ जायत छैन्ह। फिरबे काल बाद इ हमरा अपनहि कहय लगलाह हम अहाक किताब देखैत छलहुँ तऽ ओहि मे सऽ हमरा ओ चिठ्ठी भेटल जे अहा हमरा लिखने छलहुँ। ओहि मे अहा हमरा संबोधि तऽ नहि कयने छी मुदा ओ हमरे लेल लिखल गेल अछि से हम बुझि गेलहुँ। कोनो कारण वश अहा नहि पठा सकल होयब इ सोचि हम पढि लेलहुँ। पढ़ला पर दू टा बात बुझय मे आयल, पहिल इ जे अहाक मोन एकदम सुधि आ स्वच्छल अछि, आ दोसर इ जे अहा मोन सऽ चाहैत छलहुँ जे हम आबि, आ देखू हम पहुँची गेलहुँ। अहा हमरा चिठ्ठी एहि दारे नहि लिखी पाबैत छी नय जे अहा के सम्बोधिनिक शब्द नहि बुझल अछि,कोनो बात नहि।एहि मे लाजक कोनो बात नहि छैक, अहा के जे किछु बुझय मे नहि आबय आजु सऽ ओ अहा हमरा सऽ बिना संकोच कयने पुछि

सकैत छी। ओहि दिन नहि जानि किएक, हमरा बुझायल जे बेकारे लोक के घर वाला सS डर होयत छैक। पहिल बेर हुनक जीवन मे हमर महत्व आ स्थान केर आभास भेल आ हमरा मोन मे संकोचक जे देबार छलS से ओहि दिन पूर्णरूपेण हटि गेल। नहि जानि किएक, बुझायल जेना एहि दुनिया मे हमरा सब सS बेसी बुझय वाला व्यक्ति भेट गेलै।

जाहि दिन हमर विवाह भेल छलS ओहि समय हमर बडकी दियादिन केर सेहो दिरागमन नहि भेल छलैन्ह। आ ओ राची अपन नैहर मे छथिन्ह। दोसर दिन साझ मे इ कहलाह जे कालि भौजी सSभेट करय लेल जयबाक अछि आ ओकर बाद परसु मुजफ्फरपुर चलि जायब। आजु चलु राची(राची केर मुख्य बाज़ार मेन रोड के लोग राची कहैत छैक) दुनु गोटे घूमि कS अबैत छी। बरसातक मास आ बादल सेहो लागल छलैक तथापि हम सब निकलि गेलहुँ। रिक्शा किछुएक दूर आगू गेला पर भेट गेल। घर सS मेन रोड जयबा मे करीब आधा घंटा लागैत छलैक। हम सब आगू बढ़लहुं ओकर १५ मिनट केर बाद सS पानि भेनाइ आरम्भ भS गेलैक। विष्णु सिनेमा हॉल सS किछु पहिनहि हम दूनू गोटे पूरा भीजि गेलहुँ। सिनेमा हॉल लग पहुँची इ कहलाह, भीजि गयबे केलहुं,चलू सिनेमा देखि लैत छी तS आपस घर जायब, कपड़ा सिनेमा हॉल मे सुखा जायत।

राति मे अचानक माथि ददिआ प्यास सS नीद खुजि गेल, बुझायल जेना हमर देह सेहो गरम अछि। उठि कS पानि पीबि फेर सुति गेलहुँ। भोर मे मोन ठीक नहि लागैत छलS मुदा हम किनको सS किछु कहलियैन्ह नहि, भेल कहबैक तS बेकार मे सब के चिंता भS जयतैन्ह। मोन बेसी खराब लागल तS जा कS सुति रहलहुं। जखैन्ह

आँखि खुजल तऽ देखैत छी डॉक्टर हमरा सोझा मे अपन आला लेने ठाढ़ छलथि। हमरा ततेक बुखार छल जे चादरि ओढ़ने रही तखनो कापि रहल छलहुँ।डॉक्टर की कहलैि से हम किछु नहि बुझि सकलियैक। हमरा ि‍र बहुत बुझय मे आयल जे किओ हमर तरवा सहराबि रहल छलथि, आ किओ गोटे पानिक पटी दऽ रहल छलथि , मुदा हम बुखारक चलते आँखि नहि खोलि पाबि रहल छलहुँ, हम बुखार मे करीब करीब बेहोश रही। जखैन्ह हमरा होश आयल आ आँखि खुजल तऽ प्यास सऽ हमर ओठ सुखायत छल, मुदा साहस नहि छलऽ जे उठि कऽ पानी लिबतहुं। जहिना करवट बदललहुं तऽ हुनका पर नजरि गेल। हुनका हाि मे एकटा रमाल छलैन्ह आ बिना तकिया सुतल छलथि। हमरा इ बुझैत देरी नहि भेल जे इ हमरा रमाल सऽ पटी दैत दैत सुति रहल रहथि। हमरा हिम्मत तऽ नहि छल तखनो हम चुप चाप उठि जहिना हुनकर माि तर तकिया देबय चाहलियय इ उठि गेलाह। हमरा बैसल देखि तुंरत कहि उठलाह अहा किएक उठलहुं अहा परल रहु। इ सुनतहि हम फेर तुंरत पड़ि रहलहुं।

भोर मे उठलहुं त कमजोरी तऽ छलऽ मुदा बुखार बेसी नहि छल। मौसी सऽ पता चलल जे चाय लिबय के लेल जखैन्ह म ि उठाबय गेलीह तऽ हम बुखार सऽ बेहोश रही। इ देखि तुंरत डॉक्टर के बजायल गेलैक। डॉक्टर के गेलाक बाद बड राति तक मा आ इ दूनू गोटे बैसल रहथि आ ठंढा पानी सऽ पटी दऽ बुखार उतारबाक पयास मे लागल रहथि। मा के बाद मे इ सुतय लेल पठा देलथि आ अपने भरि राति जागल रहथि किएक तऽ बुखार कम भेलाक बादो हम नीद मे बड़ बड़ करैत छलियैक। दोसर दिन सऽ हमर बुखार कम होमय लागल मुदा हमरा पूणरिप सऽ ठीक होयबा मे एक सप्ताह लागि गेल। हुनका कतबो कहलियैन अहा चलि जाऊ,

क्लास छूटैत अछि मुदा इ कहलाह, अहा ठीक भS जाऊ तखैन्हि हम जायब।

एक सप्ताह इ कतहु नहि गेलाह हमरे कोठरी मे बैसि कS अपन पढ़ाई करथि। साझ मे काका लग बैसि कS खूब गप्प होयत छलैन्हि। ओहि एक सप्ताह मे काका सेहो हुनका सS बहुत पभावित भSगेलथि आ इहो काका के स्वभाव सS पभावित भेलाह। साझ मे पभावित सब हुनका सS भेट करय लेल आबथि। एहि तरहे पूरा सप्ताह बीमार रहितहुँ हमरा खूब मोन लागल।
आइ भोर सS हमरा एको बेर बुखार नहि भेल। काल्हि भोर मे हुनका मुजफ्फरपुर जयबाक छैन्हि भरि दिन इ हमरा सँग गप्प करैत रहलाह। साझ मे काका ऑफिस सS अयलाह तS इ हुनका लग बैसि हुनका सS गप्प करय लगलाह आ हम अपन कोठरी मे छलहुँ। मा मौसी जलखई के ओरिआओन करैत छलिह बाकी भाई बहिन सब बाहर खेलाइत छलै। हमरा इ सोचि कS एको रत्ती नीक नहि लागैत छलS जे काल्हि इ चलि जेताह आ ओकर किछु दिनक बाद मा सेहो चलि जयतीह।
राति मे सुतय काल इ कहलाह भोरे तS हम जा रहल छी मुदा हमर ध्यान अही पर ता धरि रहत,जा धरि अहाक चिट्ठी नही भेटत जे अहा पूरा ठीक भS गेलहुँ अछि। एहि बेर मा के जाय काल नहि कानब, ओ बड दूर रहैत छथि हुनको अहिं पर ध्यान लागल रहतैन्हि। अहि बेर रोज एकटा कS चिट्ठी अवश्य लिखब, आ हमरा दिस देखैत आ मुस्की दैत कहलाह आब तS अहा के चिट्ठी लिखय मे सेहो कोनो

तरहक श्वकत नश्च हेबाक चाश्च। हमहु श्वनकर मुस्कीक जवाब मुस्की सS दSदेश्चयैन्ह।

आजु साझ मे मा के अरणाचल जेबाक छैन्ह। हमरा खराप तS लाश्च रहल अश्च मुदा एश्च बेर हम कानैत नश्च छी। मा बड उदास छैि। एक तS हमरे छोरय मे हुनका नीक नश्च लागैत छलैन्ह, आ आब तS श्चनी के सेहो छोरय पश्च रहल छैन्ह।मा श्चनी के हमरा आ काका के कहला पर छोश्च कS जा रहल छश्चि। पन्रह श्चन सS श्चनी के बुखार छलैन्ह ठीक तS भS गेलैन्ह मुदा ओ बहुत कमजोर भS गेल छश्चि। डॉक्टर हुनका लS कS ओतेक दूर जएबाक लेल मना कS देने छश्चिन्ह । बाबुजी के श्चटी आयल छलैन्ह हुनक मोन खराब छैन्ह। मा के श्चकछु नश्च फ़ुराइत छलैन्ह जे ओ की करश्चि। जखैन्ह हम कहश्चयैन्ह जे अहा जाऊ श्चनी के रहय श्चयौन्ह तS ओ अरणाचल जयबाक लेल तैयार भS गेलीह।

श्चकी बड ताली छश्चि हुनका कोनो काज काका स वा दोसर श्चकनको सS करेबाक होयत छैन्ह तSततेक नय नाटक करय छश्चि जे लोग के ओ सच बुझा जायत छैक आ हुनका ओ काज करय लेल भेट जाइत छैन्ह। जखैन्ह सS मा के जेबाक चचिशुर भेलैक श्चकी मा सँग जेबाक लेल हल्ला करय लगलीह।काका कतबहु श्चकी के बुझेबाक पयास केलैि मुदा ओ नश्च मानश्चह आ हुनकर नाटक के आगू सब के हुनकर बात मानय परलैन्ह। मा श्चकी के अपना सँग अरणाचल लSजएबाक लेल तैयार भS गेलीह।

साझ मे मा सोनी, अनू, छोटू आ श्चकी के लS मुजफ्फरपुर चश्च गेलीह। इ कहने रहश्चिन्ह जे मुजफ्फरपुर बस अडडा आश्च जेताह आ ओश्च ठाम सS मा सब के अपन कॉलेज लS जयताह मा सब

भिर दिन कॉलेजक गेस्ट हाउस मे रहि साझ के अवि आसाम मेल पकिर कS चिल जेतीह। मा के गेलाक बाद सS घर एकदम सुन भS गेल छलैक। एहि बेर बहुत दिन मा सँग रहल रहि से आओर खराप लागैत छल। राति मे काका बहुत उदास छलै, हुनका बाकी के बिना नीक निह लागैत छलैन्ह।

आय रिब छैक हमरा कॉलेज निह जएबाक छलS। भिर दिन पयास मे रहि जे बिनी के असगर निह छोिडयैन्ह। बेर बेर हुनका दिस देखियैन्ह जे ओ उदास तS निह छिथ। एक तS हमही छोट बिनी तS हमरो सS करीब नौ साल छोट छिथ मुदा ओ हमरा पकिर मे निह आबय दै जे हुनका मा के याद अबैत छैन्ह। दिन भिर काका सेहो बिनी लग बैसल रहिथ आ हुनका हंसेबाक पयास करैत रहलाह। राति मे काका कहलाह कािल तS अहाक कॉलेज अिछ अहा अपन समय पर चिल जायब।

सोम दिन हमर दू टा क्लास होयत छलS आ दुनु भोरे मे छल। हम कॉलेज जाय लगलहुं तS बिनी के समझा बुझा देिलयैन्ह आ मौसी रहबे करिथ। हमर क्लास १० बजे तक छलS, क्लासक बाद हम घर जल्दी जल्दी पहुँच सीिा अपन कोठरी मे गेलहुँ िकयाक तS मा के गेलाक बाद बिनी हमरे कोठरी मे हमरे सँग रहैत छिथ। जओं अपन कोठरी मे पहुँचिल छी तS बिनी आ इ दूनू गोटे बिछाओन पर बैिस कS गप्प करैत आ हँसैत छलाह। हमरा देखैत देरी बिनी तुंरत कहय लगलीह, "दीदी बाकी बोमिडला(बोमिडला, अरणाचल मे छैक) निह गेलीह। ततेक नय नाटक केिलह जे ठाकुर जी कS पहुँचाबय लेल आबय परलैन्ह"।

साझ मे काका बड खुश छलिथ, बाकी आपस जे आिब गेल रहिथ।

दोसर दिन इ फेर मुजफ्फरपुर आपस चलि गेलाह।

१०

हम मा के सँग आय अरुणाचल जा रहल छी। मा आयल तS रहथि हमर द्विरागमन करबाक लेल मुदा हमर सास ससुर नहि मानलथि। काका के बदली राची सS कहियो भS सकैत छलैन्ह। इ सोचि हुनकर इच्छा आ जोर छलैन्ह जे द्विरागमन भS जायत तS हमरो नाम मुजफ्फरपुर मे लिखवा देतथि आ हम ओहि ठाम पढ़ितहुं। मा सब के सेहो चिंता नहि रहि गेलैन्ह आ हुनको नीक रहि गेलैन्ह। बाबुजी के छुटी खतम कS एहि लेल इ मना लेने रहथि। जहिया सS हमर मोन खराब भेल छल तहिया सS इ लगभग सब मास एक बेर राची आबि जायत छलाह। मुदा हमर सास एकही बेर कहि देलथिन "आय धरि हमरा सब ओहिठाम पहिल साल मे द्विरागमन नहि भेल अछि, आ नहि रिवाज अछि"। अंत मे जखैन्ह हमर सास ससुर तैयार नहि भेलथि तS मा हमरा कहलथि "चलु अहा अरुणाचल गेलो नहि छी, घूमि कS चलि आयब। जओं एहि बीच मे काका के बदली भS गेलैन्ह तS फेर सोचल जायत जे की कायल जाय"। हमर कॉलेज गरमी के छुटी लेल बंद छलैक।

दू दिन पहिनहि हमर विवाहक पहिल वर्षगाँठ छलS आ आय हम अरुणाचल जा रहल छी। हमर मोन इ सोचि कS उदास छलS कि ओतेक दूर जा रहल छी। फेर कतेक दिन पर हुनका सS भेट होयत से नहि जानि। हमरा एको रती मा के सँग जयबाक खुशी नहि छलS। हमर चेहरा देखि कS कियो कहि सकैत छलथि जे

हमर मोन बहुत दुखी अछि। हुनको मोन उदास छलैन्ह आ चुप चाप हमरे लग ठाढ़ छलथि। हम हुनक मोनक गप्प सेहो बुझि रहल छलियैन्ह मुदा की करी से नहि बुझय मे आबि रहल छलऽ। हम सब वेटिंग रूम मे ट्रेनक प्रतीक्षा मे छलहुँ जाहि केर अयबा मे अखैन्ह बहुत देरी छलैक। हम बेर बेर देखाबय चाहि रहल छलियैक जे हमर आंखि मे किछु पड़ि गेल अछि आ हम अपन रूमाल सऽ प्राकालय के प्रयास कऽ रहल छी, मुदा सत्यता किछु आओर छलैक। इ हमर मोनक गप्प बुझि गेलाह आ मा के कहलथि "अखैन्ह तऽ ट्रेन आबय मे देरी छैक हम सब चाह पीबि कऽ फिरेक काल मे अबैत छी"। इ कहि आ बौआ के बुझा हमरा चलय लेल कहलथि। जहिना हम सब विदा भेलहुँ कि हुनकर मित्र निशि जी, चलि आबैत छलाह। हुनका देखि हम सब रुकि गेलहुँ। जखैन्ह ओ मा कऽ गोर लागि लेलथि तऽ हुनको सँग लऽ आगू बढ़ि गेलहुँ।

मा के लेल चाय इ वेटिंग रूम मे पठा देलथि। हम दुनु गोटे आ निशि जी रेलवे केर जलपानगृह मे बैसि कऽ चाय पिबय लगलहुं। निशि जी हुनकर अभिन्न मित्र छलथि आ दुनु गोटे एकहि कॉलेज मे सेहो पढैत छलाह। विवाहक बाद ओ पहिल बेर हमरा सऽ भेट करय के लेल आयल छलाह। हम ओहिना बेसी नहि बजैत छलहुँ दोसर आय होयत छल जे बाजब तऽ पता नहि कना नहि जाय। इ हमर मोनक गप्प बुझि गेलाह आ हुनक बेसी प्रशनक जवाब दऽ रहल छलथि। किछु किछु तऽ ओहि मे हमरा हंसेबाक लेल आ ध्यान दोसर दिस करबाक लेल सेहो छलैक।

िनेश जी आ इ गप्प कS रहल छलथि, हम बीच बीच मे मािं तS डोला रहल छलहुँ मुदा हमर ध्यान कतहु आओर छल। हमर मोन एकदम बेचैन लाग रहल छल आ बेर बेर हम घड़ी देख रहल छलहुँ। राची मे रहैत छलहुँ तS कम सS कम मास मे एक बेर इ आब जायत छलाह। छुटी से सब दिन अबैत छलS । अरणाचल जा तS रहल छलहुँ इ सोच कS जे घूम कS चल आयब मुदा काका के बदली लS कS चिंता होयत छलS । राची मे रही तS जखैन्ह मोन होयत छलैन्ह आब जायत छलाह अरणाचल एक तS दूर छलैक दोसर ओहि ठाम जेबाक लेल परमिट बनाबय परैत छैक। हमर की किस्मत अछि नहि जानि जखन या हमरा मा सँग रहबाक मोन होयत छलS, हम मा सS अलग रहलहुं। आब हुनका सँग रहबा मे नीक लागैत छलS आ रहबाक मोन होयत छलS तS आब हुनको सS एतेक दूर जा रहल छलहुँ, इ सोच कS हमर मोन दुखी छलS । तािथ िनेश जी सोझा मे छलथि तS मुँह पर हँसी अनबाक पयास करैत छलहुँ। अचानक हुनकर बोली कान मे आयल "आब समय भS गेल छैक चलु मा के चिंता होयत हेतैन्ह", इ सुनतहि हम सब उठि कS चल देलहुं।

हम सब जखैन्ह पहुँलहुं तS मा के ठीके हमरा सब कS आबे मे देरी देख चिंता होयत छलैन्ह। देखैत देरी बजलीह "अखैन्ह तक कुली सब नहि आयल अछि, आब रेन आबय वाला छैक"। एतबा मा कहिते छथि की दुनु कुली आबि गेलैक।

हम सब रेन मे बैसि गेलहुँ, सामान सब जगह पर रखवेलाक बाद इहो हमरा सब लग बैसि गेलाह। सोनी सोनी दुनु गोटे एक एक टा

खिड़की वाला सीट लऽ कऽ बैसि गेलीह, बेचारी अनू आ छोटू के कात मे बैसा देने रहथि। मा आ बौआ अपना हिसाबे सामान सब ठीक करबा मे लागल छलथि। इ एक टक हमरे दिस देखैत छलाह। बुझि परैत छलैन्ह जेना आब कहताह अहा नहि जाऊ। हम अहाक बिना नहि रहि सकैत छी। हम लाचार दृष्टि सऽ हुनका दिस देखि रहल छलहुँ आ मोने मोन भऽ रहल छलऽकियो हमरा कहि दितै अहा के आब नहि जयबाक अछि। मुदा से नहि भेलैक आ अचानक दिनेश जी खिड़की लग आबि कऽ कहलाह "यौ आब नीचा आबि जाऊ गाड़ी के सिगनल भऽ गेल छैक"। एतबा सुनतहि इ हरबरा क उठि गेलाह आ कहलाह "पहुँचैत देरी चिटी अवश्य लिखि देब।" इ कही मा के गोर लागि उतरि गेलाह। हम घुसकि कऽ खिनी लग बैसि गेलहुँ आ फेर हुनका दिस लाचार भऽ देखय लागलियैन्ह। अचानक बुझायल जेना हमर किछु एहि ठाम छुटि रहल अछि ।

रेन धीरे धीरे स्टेशन सऽ आगू बढ़ि रहल छलैक, मुदा हमर दुनु गोटे के नजरि एक दोसर पर छलऽ । हम सब एक दोसराके देखि रहल छलहुँ। धीरे धीरे दूरी बढ़ल जा रहल छलऽ, जखैन्ह आँखि सऽ ओझल भऽ गेलाह तऽ हम फेर अपन जगह पर आबि कऽ बैसि गेलहुँ। बौआ, सोनी खिनी अनू आ छोटू सब खुश छलथि। मा अपन खाना वाला पेटार खोलि सब के ओहि मे सऽ निकालि कऽ खेबाक वस्तु सब के देबय लागलीह।

गाड़ी समस्तीपुरी पहुँचि गेल तऽ मा हमरा आ बौआ के स्टेशन दिस देखा कऽ कहलीह "अहा सब के तऽ याद नहि होयत, एहि ठाम

तक हम सब रेन सऽ आश्व, ओकर बाद गाड़ी सऽ श्वमश्कम जायत छलहुँ"। बाबुजी श्वमश्कम मे सेहो तीन बरख रहल छलथ्रि।

करीब चौबीस घंटा सऽ हमर सबहक रेन न्यू बोगाई गाव स्टेशन सऽ आगू आश्व,एकटा छोट सन स्टेशन पर रश्क गेलैक। एतेक छोट स्टेशन की एश्व ठाम श्वकछु खेबा थ्यबाक सेहो नश्व भेटैत छलैक। आगू कोनो रेनक दुघटिना भऽ गेल छलैक जाश्व चलते सब रेन एश्व ठाम आश्व कऽ रकल रहैक। ओश्व ठाम तेहेन श्वमश्चि भऽ गेलैक जे बाद मे स्टेशन पर पाश्व सेहो खतम भऽ गेलैक। मा के आदश्वा छलैन्ह दूरक यात्रा करबाक आ ओ अपना सँग खेबा थ्यबाक ततेक नश्व सामन रखने रहथ्रि जे हमरा सब के ओश्व मे कष्ट नश्व भेल, मुदा सब गोटे परेशान भऽ गेलहुँ। एक तऽ एश्वना अरणाचल जेबा मे तीन श्वदन लागैत छलैक, ताश्व पर चौबीस घंटा एक ठाम रकलाक चलते आओर सब परेशान भऽ जाय गेलौन्ह।

रेन चारदार जश्वना पहुचलैक हमरा सब केर जान मे जान आयल। बाबुजी स्टेशन पर ठाढ़ छलथ्रि। करीब तीस घंटा देरी सऽ हमर सबहक रेन पहुँचल छलैक। स्टेशन सऽसीधा हम सब गेस्ट हाउस पहुँच गेलहुँ, ओश्व ठाम हमरा सब के राश्वा भश्व रहबाक छल।

हम सब तैयार भऽ आ जलखई करला कऽ बाद बोमश्वडला (अरणाचल) के लेल सरकारी जीप सऽ श्ववदा भऽ गेलहुँ। बाबुजी हमरा बतेलाह अरणाचल मे भारत केर १/३ सेना रहैत छैक। बॉडरि पर परश्वमट देखाबय परलैक आ परश्वमट देखेलाक बाद बाबुजी कहलथ्रि "अहा पश्वहल बेर आयल छी, बौआ तऽ एक बेर आयल छलथ्रि। अहा जीप

मे हमरा सँग आगू बैसय जाऊ, देखय मे बड नीक लागत। हम बाबुजी सँग आगू बैसय गेलहुँ।

ओना तऽ आसाम सेहो नीक लागल, मुदा अरुणाचल मे पवेशक सँग बुझायल जेना पकृति एकरे कहैत छैक। कश्मीर तऽ हम नही देखने छलियैक जाहि केर तुलना लोग स्वर्ग सिऽ करैत छैक।अरुणाचल मे पवेश करैत घाटिक घुमावदार सड़क आ चढाई आरम्भ भऽ गेलैक। सड़क सब नीक मुदा पातर देखय मे आयल। कहुना दू गाड़ी जएबाक जगह छलैक। बाबुजी बतेलाह जे सब सड़क सेना के छलैक।

जीप जहिना जहिना आगू बढैत गेलैक,चढाई तहिना तहिना बढ़ल जा रहल छलैक। सोनी दीनी सब तऽ ओहि ठाम मा बाबुजी लग रहैत छलथि आ कैयेक बेर आयल गेल रहैि सब गोटे गप्प मे व्यस्त छलाह। हमर ध्यान माि पाकृतिक सुन्दरता देखय मे छल। पहाडी नदी के विषय मे सुनने आ कविता मे पढ़ने रही। मुदा आय साक्षात देखि रहल छलहुँ।जतेक सुनने रही ताहू सऽ सुंदर छल इ पहाडी नदी। झरना देखय लेल दूर दूर जायत छलहुँ, आ अहि ठाम तऽ रास्ता मे कैयेक टा झरना भेट रहल छलऽ।

बाबुजी हमरा सब ठामक नाम आ ओहि जगहक महत्व बताबैत जा रहल छलाह। बाबुजी कहलाह "आब इ जगह ठीक सऽ देखू, इ छैक तवाग वैली (Tawang Valley)। चीन सँग सन ६२ केर लड़ाई मे एकर बड महत्व छैक"। एहि ठाम सऽबोमडिला बड लग

छैक। ६२ मे सब सऽ बेसी लड़ाई बोमडिला मे भेल छलैक। बाम दिस जऔं हमर नजरि गेल तऽ नीचा मे नदी बहैत छलैक, ओ देखा कऽ कहलाह " इ नदी देखैत छी, पहाडी नदी रहितो लड़ाई समय मे इ पूरा खून सऽ लाल भऽ जाइत छलैक। एहि ठामक लोग सब कहैत छैक जे लड़ाई केर बाद इ नदी सऽ कतेको लाश भेटकलल छलैक।

बाबुजी जहिना कहने रहथि बोमडिला लग छैक तहिना थोकछुयैक दूरी गेलाक बाद घर सब नजरि आबय लागल। एकटा झरना आयल आ बाबुजी कहलाह आब बोमडिला पहुँचि गेलहुँ। जीप झरना सऽ थोकछुए आगू आबि कऽ रुकि गेलैक।

बोमडिला पहुँचलहुं त साझ भऽ गेल छलैक। जीप सऽ उतरि कऽ मा हमरा सब के लऽआगू बढ़ि गेलाह आ बाबुजी सामान सब उतरवाबय लगलाह। हम जहिना सीढी पर चढ़ि ऊपर अयलहुं, लकडी के घर सब देखाई परय लागल। बाहर सऽ सब घर देखय मे एकहि जेना बुझि परैत छलैक। सब घरक छत हरियर, मुदा दू घर सऽ बेसी एक समतल जमीन पर नजरि नहि आयल। ऊपर आ नीचा सब ठाम जएबाक लेल सीढी बनल रहैक।ऊपर नीचा करैत हम सब अपन घर पहुँचि गेलहुँ।

हम सब ततेक थाकिल रही जे चाय आ जलखई केलाक बाद कखैन्ह नीद आबि गेल,हम नहि बुझि पयैक। मा के बोली पर हमर नीद

खुजल। मा कहैत रहल छलथि " उठु नय भोजन केलाक बाद फेर सुतैत रहब"। उठलहुँ तS, मुदा जारक चलते हमरा भोजनो करबाक मोन नहि भS रहल छलS।मा हमरा बिछोना सS उतरय लेल मना कS देलथि आ हमर भोजन बिछाओन लग मँगा देलखिह। भोजनक बाद हम कोहुना उठि कS हाथ धोइए लेल बिछाओन सS उतर कS गेलहुँ।

हमर आँखि खुजल तS मा बाबुजी आ एक आओर व्यक्ति के अपना सोझा मे देखि हम हरबरा कS उठय लगलहुँ। मा कहलखिह "किछु नहि भेल अछि परल रहू। असल मे अहा हाथ धोअय लेल गेलहुँ तS ओतहि ठाम बेहोश भS खसि परल रही। की भेल छलS?डॉक्टर साहेब कहैत छथि ऊंचाई के चलते भेलैक अछि। एके बेर ओतेक नीचा सS ८ हजार फीट पर पहुँचि गेलहुँ ताहि केर असर छैक आओर किछु नहि"। तखैन्ह हमरा याद आयल जे हमरा चकर जेना बुझायल छलS आओर किछु याद नहि छलS। डॉक्टर इ कहि चलि गेलाह जे आराम कर भोर तक एकदम ठीक भS जायत।

बेर बेर उठि मुदा बुझाइत छल एखैन्ह भोर नहि भेलैक आ फेर सुति जाइत छलहुँ। मोन मे आयल जे घड़ी देखि लेत छी। जओं घड़ी दिस नजरि गेल तS आठ बाजैत छलS, हरबरा कS उठलहुँ आ बाहर दिस निकलि गेलहुँ। रास्ता मे एक तS ठंडा आ ताहि पर ततेक धिकिल रही जे घर मे घुसलाक बाद बाहर निकलबाक हिम्मत नहि भेल। बाहर आबि तखनि बुझि गेलहुँ जे हमरा किएयाक होयत छलS जे भोर नहि भेलैक अछि। धुंध तेहेन छलैक जे अपन घर छोरि कS

सामने वाला घर सेहो नञि देखाइत छलऽ। किछुए कालक बाद बौआ सेहो बाहर पहुँचि गेलाह। ि बेसी काल नञि रहलैक आ हटैत के सँग पाकृतिक रूप साफ साफ देखाई परय लगलैक।किछु काल तक ठाढ़ भऽ हम पकृतिक ओहि रूप के देखैत रहि गेलहुँ। जतय तक नजरि गेल, सब घरक सोझा मे सुंदर सुंदर फूल नजरि आयल जे देखि मोन पसन भऽ गेल। हम ठाढ़ भऽदेखैत छलहुँ कि अचानक एक झुंड लड़ाकू विमान (mig) बुझायल जेना हमर घरक ठीक पाछू सऽ निकलल अछि आ आसमान मे एम्हर सऽ ओम्हर करय लागल। ओ कखनहु बुझाइत छलऽ आब खसि परतैक मुदा फेर तुंरत ऊपर आबि जायत छलऽ। ओहि विमानक झुंड देखैत देरी हम दुनु भाई बहिन अपन बरामदा सऽ उतरि जओं पाछू गेलहुँ तऽ पहाड़ के सुन्दरता देखि किछु काल ओहि ठाम ठाढ़ रहि गेलहुँ। बुझाइत छल जेना पहाड़ घरक ठीक पाछू मे अछि। हम आ बौआ घरक चार कात घुमि घुमि कऽसब वस्तु देखय लगलहुँ। एक सऽ एक सुंदर फूल घरक सामने आ कात वाला फुलवारी मे लागल छलैक।फूलक रंग आ आकर देखि हम आशयर्चकित रही गेलहुँ।

बाबुजी ऑफिस जएबाक लेल बाहर अयलाह त हम दुनु भाई बहिन बाहर छलहुँ। ओ बतेलाह जे बोमडिला मे बहुत सैनिक छैक, मुदा ओ सब नजरि नञि आयत किएक तऽ सब बंकर(bunkar) मे रहैत छैक। अहि ठाम भारतीय सेनाक जेट,(jet)मिग(mig) आ सब तरहक लडाकू विमान देखय भेटत। सैनिक सब बराबरि अपन अभ्यास करैत रहैत छैक। भारत चीनक बोर्डर सेहो बोमडिला सऽ लग १४ हजार फीटक ऊंचाई पर एकटा जगह छैक सेलापास ताहि ठाम छैक। ओतय तऽ आओर बेसी ठंढा रहैत छैक।

जुलाई, अगस्त मास मे एतेक जाड़ हम नञि देखने रहियैक। एक तऽ ओहि ठाम हमरा आ बौआ दुनु गोटे के मोन नञि लागैत छलऽ ताहि पर जाड। हम आ बौआ सब दिन सोचैत छलहुँ घुमय लेल जायब मुदा जाड़क चलते नञि जायत छलहुँ। बाबुजीक ऑफिस घर सऽ बहुत नीचा रहैन्ह आ सीढी सऽ उतरय आ चढ़य परैत छलैन्ह जे १०० सऽ बेसी छलैक। एक दिन हम आ बौआ नुकाचोरी कऽ स्कूटर पर बैसि घुमैत घुमैत बाबुजी के ऑफिस देखय लेल गेलहुँ। जाइत काल मे उतरय के छलैक, ओ तऽ बड नीक लागल आ दुनु गोटे सीढ़ी पर कूदैत कूदैत उतरि गेलहुँ। चढ़ैत काल दुनु गोटे के हालत खराब भऽ गेल। आपस अयलाक बाद बौआ कहलाह "ठाकुर जी अओताह तऽ हम हुनका अवश्य बाबुजी के ऑफिस लऽ जयबैन्ह"।

अनू आ छोटू तऽ बहुत छोट छलथि, सोनी आ मुनी दिन मे स्कूल चल जाइत छलीह, बौआ आ हम दुनु गोटे बेसी घर मे रहैत छलहुँ। साझ मे बाबुजी अयलाह, हम सब बैसि कऽ बोखारी लग चाह पिबैत रही आ गप्प सप्प होयत छलैक। गप्प के बीच मे मा बाबुजी सऽ कहलीह "मुनी बौआ के कतहु कतहु घुमा दियौक नि। इ सब कतहु नञि जायत छथि भरि दिन घर मे रहैत छथि। दुनु गोटे के मोन नञि लागि रहल छैन्ह"। इ सुनतहि बाबुजी कहलाह"बुझाइत अछि आब हमर बदली जल्दिये भऽजायत। आजु हम ठाकुर जी के लेल परमिट बनवा कऽ पठा देलियैन्ह आ जल्दिये आबय लेल लिखि देने छियैन्ह। हुनको आबि जाय दियौन्ह तऽ तीनू गोटे एकहि संग

घूमय लेताह। बाद मे तS एक्के ठाम आबय मे िरेक झंझट छैक"। इ सुनी हमरा नीक लागल, सच मे हमरा मोन नइ लागि रहल छल।

जखनया सS बाबुजी कहलाह ओ हुनका लेल परमीट पठा देने रहथि ताबे धरि सS हम आ बौआ सब धरि हुनक बाट देखैत छलायैन्ह। बौआ सब धरि बैसल कS हमरा सSगप्प करैि जे हुनका अयला पर हम सब कतय कतय घुमय लेल जायब। ओ सब पता कS कS राखने रहथि जे कोन कोन ठाम घुमय वाला छैक।

बोमडिला बड छोट जगह छलैक आ ओहि ठाम बाबुजी के ऑफिस(CPWD) केर लोक सब के छोड़ि किछु पशानक लोक आ केरीय विदालय के किछु शिक्षक सब सेहो रहैत छलथि। मा सब के किछु लोक के घर एनाई गेनाइ छलैन्ह हमरा अयला सS साझ मे बराबरि कियो नइ कियो भेट करय के लेल आबैत छलथि या नइ तS हमरा सब के लS कS मा, बाबुजी भेट कराबय लेल जायत छलथि।

बोमडिलाक मोसमक एकटा विशेषता देखय के लेल भेटल। ओहि ठाम जोर सS पानी नइ परैत छलS मुदा भरि दिन झिसी होइत रहैत छलैक आ बीच बीच मे िरे िरे समय के लेल रोउद निकलैत रहैत छलैक। बाबुजी के ऑफिस केर एक गोटे भेट करय लेल आयल छलथि आ हुनका सब के पाछा के चलते जेबा मे देरी भS गेल छलैन्ह। हुनका सब के गेलाक बाद मा जल्दी जल्दी सतमन(नौकर) सS खेनाई के व्यवसा करवाबय मे लागि गेलाह। पूरा बोमडिला के लोक के पनबिजली (hydroelectricity)दारा

बिजली भेटबाा छलैक आ रािा के १२ बजे के बाद सS बती नबि रहैत रहैक। मा के पयास रहैत छलैन्ह जे १० बजे तक रतुका भोजन भS जाय, मुदा आजु िकछु देरी भS गेल छलैक। मा भोजनक व्यवसि ा मे लागल छलाह। हम आ बौआ बािछाओन मे घुसा कS अपन गप्प करैत छलहुँ, बाकी चार भाई बिहन सब खेलाइत रहथि आ खूब हल्ला करैत छलथि। बाबुजी अपन ऑिफसक काज करैत छलाह। अचानक बुझायल जेना िकयो केबार खट खटा रहल छथि। सोनी िबनी बाहर वाला घर मे खेलाइत छलाह केबारक आवाज सुनी दुनु गोटे केबार खोलय लेल दौड़ गेलाह। केबार खोलैत के सँग ओिह ठाम सS ठाकुर जी ठाकुर जी करैत भाग कS भीतर आिब गेलाह। िहनक नाम सुनैत देरी मा बाबुजी सब बाहर वाला घर िदस आिब जाय गेलथि।

िहनका अयला सS मा आ सतमन के आओर काज बिढ गेलैक। ओ सब जल्दी जल्दी आओर िकछु िकछु खेनाई मे बनाबय लगलथि। चाह िपलाक बाद मा िहनका कहलथिन "इ जल्दी स तैयार भS जाओि िकल हेताह, भोजनक बाद गप्प कबहै"। कोहुना भोजन बिजली जाय सS पिहने भS गेलैक आ सब िकयो सुतय लेल चिल गेलथि।

बौआ हम आ इ बैिस कS गप्प करैत छलहुँ। इ अपन यािक वणनि करैत कहलाह "आइ तS हम बिच गेलहुँ। चारदार पहुँिच पता केलहुँ तS लोक सब सS पता चलल आब बोमिहला के लेल एकिह टा बस छैक जे बेसी राित मे पहुँचायत। िदन वाला बस के लेल चारादर

मे राश्ता भश्व रहय परत इ सोश्च चश्ल देलहुं। एहेन खतरनाक आ भयावह सड़क पर बस डाईवर तेनाक चला कऽ आनलक अश्छ जे हमर तऽ पाण उपरे छल। बोमश्छला आश्व कऽ सेहो नीचा मे दुकान लग छोश्व देलक। ओश्ह ठाम एकटा लोक नजश्व नश्ह आबैत छल। संयोग सऽ एक गोटे भेट गेलाह जे बाबुजी के ऑश्फस के छलाह। ओ हमरा झरना लग पहुँचा कऽ गेलाह। झरना के बाद ऊपर चश्ढ पहुँच तऽगेलहुँ घर तक, मुदा होयत छल एश्ह राश्ता मे ग़लत घरक केबार नश्ह खट खटा श्दयैक। पश्हने घर लग आश्व श्कछु काल ठाढ़ भऽ कऽ भीतरक गप्प सुनबाक पयास कयलहुँ। हल्ला सऽ बुश्झ गेलहुँ यैह घर हेबाक चाही मुदा मोन आगु पाछु होयत छल केबार खट खटाबी श्क नश्ह श्क अचानक मैश्थश्ल मे बाजय के आबाज आयल आ तुंरत हम केबार खट खटा देलहुं"। श्हनकर गप्प सुश्न बौआ खूब हँसलाह आ कहलाह "श्बना खबश्व केने अहा बोमश्छला आयब तऽ अश्हना होयत नि"। राश्ता बड भऽ गेल छलैक हम सब उश्ठ सुतय लेल आश्व गेलहुँ।

हम श्हनका सऽ कहश्लयैन्ह अहा तऽ काश्लदास भऽ गेलहुँ। इ हमरा श्दस देश्व हँसैत बजलाह "श्क कश्वतौह अचानक अहा सऽ भेट करबाक मोन भऽ गेल आ श्बना श्कछु सोचनश्ह चश्ल देलहुं। राश्ता मे मोन भेल आ भोरे तैयार भऽ हम श्नकश्ल गेलहुँ। हम स्टेशन के लेल श्नकलश्ह रही ओश्ह समय मे हमरा बाबुजी के श्चटी भेटल जाश्ह मे परश्मट भेजने रहश्थ। परश्मट के एतेक महत्व छैक हमरा से नश्ह बुझल छलऽ। ओ तऽ संजोगे सऽ हमरा परश्मट भेट गेल नश्ह तऽ बड श्दकत होइत। श्हकट से, स्टेशन पर आश्व कऽ लेलहुँ ओहो संयोगे सऽ भेटल"।

११

बोमश्चला आबय समय हम सोचनहुँ नश्च रश्चये जे एतेक जल्दी श्चनका सS भेट होयत। श्चनका देश्च हमरा अत्यन्त पसनता भेल मुदा व्यक्त करय मे संकोच होयत छलS। इहो हमरा देश्च कम खुश नश्च छलथि आ नश्च श्चनका अपन पसनता व्यक्त करय मे देरी लागलैन्ह। बौआ के जायत देरी अपन खुशी व्यक्त कS देलाह।

हम श्चनका सS गप्प करैत छश्चयैन्ह आ श्चनक कॉलेजक श्चषय मे पुछश्च छश्चयैन्ह श्च अचानक इ कश्च उठलाह " हम सोश्च लेने छी, सब मास अहा लग आबय के लेल छुटी लेब, ताश्च सS नीक जे अहाक नाम हम मुजफ्फरपुर मे श्चखवा दी। पकाश(बौआ के नाम) एश्च बेर सS बाबा लग रही कS पश्चये रहल छथि। हम अहा कS बाबुजी सS गप्प करैत श्चयैन्ह। ओनाहुँ अहाक काका कS बदली राची सS भSरहल छैन्ह आ श्चमत्ति कॉलेज मे अहा के हॉस्टल मे नश्च लेत, श्चयाक तS ओ सब श्चयाहल के हॉस्टल मे नश्च लैत छैक। श्चरागमन होयबा मे एखैन्ह कम सS कम डेढ़ साल छैक, अहाक बाबुजी के कतय बदली होयतैन्ह नश्च जाश्च। हम आब बेसी श्चन अहा सS अलग नश्च रश्च सकैत छी। मुजफ्फरपुर मे भेट तS होयत, आ बदली के चकर से नय रहत"। हम चुप चाप सुश्च लेश्चयैन्ह, सोचलहुँ कॉलेज तS मुजफ्फरपुर मे राची सS नीक नश्च होयत मुदा श्चनकर छुटी आ ऐबा जयबा वाला चकर समाप्त भS जयतैन्ह।

भोर मे बौआ के देखलियैन्ह जल्दी जल्दी तैयार भS गेलाह आ हुनकर खुशामद करय छलाह। हमरा मना कS देने छलथि हुनका सS सीढी के विषय मे गप्प करबाक लेल वा बतेबाक लेल जे कतेक सीढी छैक। जलखई के बाद हम, बौआ आ इ तीनू गोटे घुमय लेल निकलहुँ।जाड़ छलैक हम सब अपन अपन गरम कपडा पहिर लेने रही। सबस पहिने बाबूजी के ऑफिस पहुँचलहुँ ओ देखलाक बाद बौआ कहलाह चलु हम सब आओर नीचा चलैत छी। हम सब नीचा चलैत गेलहुँ, नीचा जाय मे तS बड नीक लागल। एक तS सीढ़ी नीक छलैक दोसर ढलाग पर उतरय मे ओनाहु नीक लागैत छैक। उतरय समय मे हम सब बुझबे नहि केलियैक जे कतेक नीचा जा रहल छी। हम सब मौसम आ पकृति केर आनंद लैत कखनहु कS बाजी लगा कS दौड़ि आ कखनहु कूदि नीचा उतरि गेलहुँ। अचानक इ कहलाह आब आगू नहि , आब एतय सSआपस चलु। सड़क नजदि आबय लागल छलैक हम सब विचार केलहुँ सड़क सSआपस भेल जाय आ हम सब पहिने सड़क सS आ बीच बीच मे सीढी सS चढैत ऊपर जाय लगलहुँ।

ऊपर चढय समय सेहो शुर मे तS नीक लागल मुदा जलदिये थाकि गेलहुँ। ततेक गरमी लागल जे एक एक कS अपन अपन स्वेटर उतारय पडि गेल। ओकर बाद हम सब रुकि रुकि कS चलय लागलहुँ। घर पहुँचैत पहुँचैत हम सब ततेक थाकि गेल रही जे घर पहुँचिते देरी इ तS सीधे बिछौन पर पडि रहलाह। किछु समय बाद जखैह इ भोजन करय लेल उठलाह तS बौआ हँसैत पुछलथिन "केहेन लागल बोमडिला "। सुनतहि हँसय लगलाह आ कहलाह "अरे

अहा तS हमरा माथ्थ देलहुँ आ पुछथ्थ छी केहेन लागल बोमथ्थला, हम आब थ्थकनहु अहा दुनु भाई बथ्थन संग पैरे घुमय नथ्थ जायब "।

बाहर वाला घर मे बैसला सS गेट ओथ्थना नजथ्थ आबैत छलैक आ गेट लग सीढ़ी छलैक जाथ्थ सS ऊपर चथ्थ आ फेर नीचा उतथ्थ कS झरना लग जाय परैत छलैक ।झरना के बाद दाथ्थना थ्थस सीढ़ी छलैक जाथ्थ सS नीचा उतथ्थ बाबुजी केर ऑथ्थफस जाय परैत छलैक । बाबुजी सब थ्थन भोर मे जायत समय आ खेनाई खाय लेल जखैह आबैत छलाह तखैन्ह दुनु बेर ऑथ्थफस पैरे जायत छलाह आ आथ्थस आबैत छलाह। इ सब थ्थन बाबुजी के ऑथ्थफस जाय समय बाहर वाला घर मे जा कS बैथ्थ रहैत छलाह। जाय समय बाबुजी हमरा कहैत गेलाह जे हम सब तैयार रही ओ ऑथ्थफस जाय कSजीप पठा देताह आ हम सब सलारी जे थ्थक बहुत नीक जगह छलैक ताथ्थ ठाम सSआजु घुथ्थ आथ्थ। बाबुजी केर ऑथ्थफस जाय समय हम जखैन्ह बाहर वाला घर मे गेलहुँ तS इ आ बौआ पथ्थनथ्थ सS ओथ्थ घर मे छलाह। जथ्थना हम पहुँचलहुँ बाबुजी गेट लग पहुँथ्थ गेल छलाह, ओ जथ्थना गेट सS ऊपर गेलाह इ तुंरत कथ्थ उठलथ्थि ,देखू आब बाबुजी घुरताह, हम मजाक बुथ्थ हँसय लगलहुँ मुदा सच मे बाबुजी थ्थकछुए आगू जा फेर आपस घर आथ्थ गेलाह आ अपन कोठरी मे जा फेर ऑथ्थफस गेलाह। हम पुछथ्थयैन्ह अहा कोना बुझथ्थयय जे बाबुजी आपस अओताह, तS हमरा कहलाह ओ तS सब थ्थन एक बेर ऑथ्थफस जाय समय मे आथ्थस आथ्थ कS जाय छथ्थि। हम जथ्थया सS अयलहुं अथ्थ हम देथ्थ रहल थ्थयैन्ह। बाबुजी के थ्थकछु नय थ्थकछु सब थ्थन छुटैत छैन्ह आ ओ आथ्थस आथ्थ कS लS जायत

छथि। हमरा हँसी लागि गेल आ कहलियैन्हि अहा के अहि ठाम कोनो काज नहि अछि तS यैह सब देखैत रहैत छथिन्ह।

आजु बाबुजी ऑफिस सS अयलाह तS आबिते सुनेलाह जे हुनक बदली के आदेश आबि गेल छैन्हि आ आब जल्दिये हुनका जमशेदपुर जा कS ओहि ठामक कायभार सम्भारय परतैन्हि । इ सुनि हमरा बड खुशी भेल, संगहि देखलियैक जानी सोनी बौआ सब खुश छलथि आ सब सS बेसी मा खुश छलीह।

जहिया सS बाबुजी कहलथि जे हुनक बदली केर आदेश आबि गेल छैन्हि ओहि दिन के बाद सS बौआ हम आ इ सब दिन घुमय जाकली, बीच बीच मे कोनो कोनो दिन सोनी जानी सब सेहो सँग जायत छलीह। बोमडिला मे घुमय लेल एक सS एक जगह छलैक मुदा पदूषण नामक कोनो वस्तु नहि। दूर वाला जगह सब तS जीप सS जाइत छलहुँ मुदा लग वाला सब पैरे जाइत रही। एकटा बातक ध्यान इ सदिखन राखथि जे चलैत चलैत बेसी दूर नहि जाई।

हमरा लोकनि कS बोमडिला मे एक डेढ़ मास घुमैत फिरैत कोना बीति गेल से बुझय मे नहि आयल। जएबाक दिन लग आबि गेल छलैक, बाबुजी कहलथि जे सब गोटे एकहि सँग चारदार तक जायब। ओहिठाम सS ठाकुर जी आ बौआ मुजफ्फरपुर चलि जयताह आ बाकी हम सभ जमशेदपुर चलि जायब।

चारदार गेस्ट हाउस तक सब गोटे सँग अयलहुँ आ ओहि ठाम आबि एक बेर फेर बिछरय के आभास भेल मुदा एहि बेर दोसर तरहक

छलऽ। मोन मे भेल आब तऽ किछुए दिनक गप्प छैक तकर बाद तऽ सब ठीक भऽ जायत। हमर पढ़ाई आ हुनका अयबा जयबा मे सेहो कोनो तरहक दिक्कत नहि होयत। हुनकर रेन पहिने छलैन्ह,जाय समय मे हमरा उदास देखि इ कहलाह " आब तऽ अहा जमशेदपुर मे रहब ओहि ठाम जाय मे हमरा कोनो दिक्कत नहि होयत। किछु दिन बाद हमर पढ़ाई सेहो खतम भऽ रहल अछि"।

जमशेदपुर पहुँचि बाबुजी के रहय लेल एकटा खूब पैघ सरकारी बंगला भेट गेल छलैन्ह जे कि किछु दिन सऽ खाली छलैक। जतबा पैघ घर छलैक ततबे पैघ ओहि मे बगीचा मुदा खाली कियाक छलैक से तऽ बाबुजी के नहि बुझय मे अयलैन्ह, मुदा मा के ओहि घर मे रहय मे डर होयत छलैन्ह आ कहलथि "एहि घर मे बेसी दिन नहि रहल जा सकैत अछि। जाबैत कोनो दोसर नीक घर नहि भेटय छैक ताबैत एहि बँगला मे रहल जाय"। मा सब के कहि देने रहथि जररी सामान मात्र खोलबाक अछि। ओहि बंगला मे कम सऽ कम छौ सात टा कोठरी छलैक जाहि मे सऽ दू टा कात वाला कोठरी आ भनसा घर खोलि हम सब रहय लगलहुँ। बाकी सब कोठरी बंद रहैत छलैक।

हम सब जमशेदपुर अयलहुँ ओकर दू तीन दिन बाद काका भेट करय लेल अयलाह,हुनका देखि हम तऽ आश्चर्यचकित रहि गेलहुँ। एतबहि दिन मे ततेक कमजोर लागैत छलाह जे देखतहि मा पुछलथिन "अहा के किछु होयत अछि की फूल बाबू"। काका कहलथि कोनो खास नहि, बीच बीच मे पेट मे गैस भऽ जायत अछि जाहि के चलते दर्द

होयत रहैत अछि।काका जाय लगलाह तऽ मा काका के कहलथिन जे राची जा कऽसबस पहिने नीक सऽ डॉक्टर से देखाऊ, बराबरि ददभिनाई ठीक नहि छैक ।

हम सब ठीक दुगा पूजा सऽ पहिने जमशेदपुर पहुँचल रही । एक तऽ नब जगह ताहि पर तेहेन घर छलैक जे कतहु घुमय जाय मे से डर होयत छलैक, मुदा हम सब जमशेदपुरक पूजा देखलहुँ। दिवाली सऽ एक दू दिन पहिने इ पहुँचलाह। हिनका देखि कऽ सब भाई बहिन सब खुश भऽ जाय गेलथि आ इहो सब संग मिली कऽ दिवाली के पटखा कऽ तैयारी करय मे लागि गेलाह ।

दिवाली दिन साझ मे पूजाक बाद सभ गोटे बाहर मे बैसि कऽ पसाद खाइत छलहुँ पसाद खेलाक बाद इ उठि कऽ पाछू गेलाह आ सँग सँग चार भाई बहिन सेहो हिनके पाछू चलि गेलथि। मा भानस मे लागल छलीह बाहर मे मात्र हम आ बाबुजी बसि गेलहुँ। अचानक पाछू वाला घर मे बुझायल जेना बम फुटैत छैक। बाबुजी आ हम दूनू गोटे दौड़ि कऽ भीतर गेलहुँ। मा से भनसा घर स दौड़ि क अयलीह। जाहि दिस सऽआवाज अबैत छलैक ओहि दिस घरक भीतरे सऽ हम सब गेलहुँ। बाबुजी घर सब खोलैत जऔं बीच वाला हॉल लग पहुँचलाह तऽ सामने मे इ ठाढ़, संग मे मिनी, सोनी, अनू आ छोटू सब पटाखा छोड़ि पिरी पाबि खुश होयत छलथि। असल मे इ, सब बच्चा के लऽ कऽ बीच वाला हॉल मे पटखा छोरैत छलाह। बीच वाला हॉल ततेक टा छलैक आ ताहि पर खाली जे छोटका पटाखा सेहो बुझाइत छलैक जे बम फुटल छैक। हिनका देखि बाबूजी किछु नहि बजलाह आ हँसैत आश्वस्त भऽ गेलाह।

ओना तऽ जश्चया सऽ हम सब जमशेदपुर अयलहुँ आ बाबुजी के बुझल भेलैह जे काका के मोन खराब रहैत छैन्ह बराबश्च राची जायत छलाह आ काका के डॉक्टर लग अपनश्च लऽ कऽ जायत छलाह, मुदा एश्च बेरक गप्प श्चकछु आओर छैक। श्चछला बेर डॉक्टर एन.के. झा एक मास बाद आबय लेल कहने छलश्चिन आ कहने छलश्चिन जओं एक मास मे ओ दवाई काज नश्च केलकैन्ह तऽ काका के जमशेदपुर वा बम्बाई लऽ जाय परतैन्ह। काका के कोन श्चबमारी छैन्ह से राची के डॉक्टर के पता नश्च चलैत छलैक। एश्च बेर बाबुजी सोश्च के जायत छलाह जे जओं डॉक्टर साहेब कहलश्चि तऽ काका के जमशेदपुर लऽ अनताह। जमशेदपुर मे बाबुजी के एतबश्च श्चदन मे डॉक्टर सब सऽ जान पहचान भऽ गेल छलैन्ह आ काका के श्चषय मे डॉक्टर सब सऽ गप्प सेहो कयने रहश्चिन।

बाबुजी राची सऽ लौट कऽ अयलाह तऽ हमर श्चम्मत हुनका लग जयबाक नश्च होयत छल। बाबुजी सऽ की पुश्चयैन्ह, की कहताह इ सोश्च रहल छलहुँ श्चक मा अयलीह आ अपनश्च कहलीह जे काका सब दू तीन श्चदन बाद आश्च रहल छश्चि, आब एश्च ठाम हुनकर इलाज होयतैन्ह। राची मे डॉक्टर सब के नश्च बुझा रहल छैक जे हुनका कोन श्चबमारी छैन्ह। इ सुनतश्च हमरा मोन मे तरह तरह के आशंका होमय लागल।

काका, मौसी, म्ि, पपू, श्चाकी आ सोनू सभ गोटे आश्च गेलश्चि। काका के देश्चख हम हुनका देश्चखतश्च रश्च गेलहुँ। पश्चल श्चदन जमशेदपुर हमरा सब सऽ भेट करय लेल आयल छलश्चि ताहु सऽ बेसी कमजोर

लागैत छलाह। हमरा किछु नहि फुराइत छलS जे हम की बाजियैन्ह। काका हमर मोनक गप्प अपनहि बुझि गेलाह आ कहलाह "पेट मे बड ददि होयत अछि आब एहि ठाम भैया लग आबि गेलहुँ आब ठीक भS जायब"।

भोरे बाबुजी काका के लS कS टाटा मेन हॉस्पिटल गेलाह। करीब १२ बजे बाबुजी असगरे अयलाह आ मा सS कहलथिन जे" जयनंदन के check-up करय के लेल भती कS लेलकैन्ह अछि। बेर बेर अनाइ गेनाइ मे दिक्कत होइतैक ताहि चलते भरती करा देलियैन्ह। सब जाचक बादे डॉक्टर बतायत जे हुनका की छैन्ह आ कोन दबाई चलतैन्ह"। साझ मे मा आ मौसी सेहो बाबुजी के सँग काका सS भेट करय लेल गेलाह। मि पप्पु सब घर पर हमरा सब सँग छलथि।

काका के एक सप्ताह सS बेसी भS गेल छैन्ह हॉस्पिटल मे मुदा अखैन्ह धरि जाच चलिए रहल छैन्ह। बिमारी कोन छैन्ह सेहो नहि बुझल छैक। बाबुजी के आजु एक गोटे सS कहैत सुनलियैन्ह जे आब एहि सप्ताह मे सब टा जाच खतम भS जयतैक, तकर बाद हुनकर इलाज आरम्भ होयतैन्ह।

मौसी सब दिन अपना सँग सोनू के लS जायत छथिह। आय मा आ मौसी सँग मि पप्पु सेहो काका सS भेट करय लेल गेल छथि। हमर मोन सेहो छलS जेबाक मुदा एक संगे बेसी लोग गेनाइ ठीक नहि, हम सोचलहुँ दोसर दिन जायब। सब चलि गेलथि तS मोन से नहि लागति छलS। रहि रहि कS बाहर जायत छलहुँ देखय लेल

जे मा सब अयलीह कि नहि।

मा सब हॉस्पिटल सऽ लौट कऽ अयलीह तऽ मा भनसा घर दिस चलि गेलिह, मौसी अपन बच्चा सब मे लागि गेलिह मुदा बाबुजी एकदम उदास बुझेलाह। हम चाय लऽ कऽ बाबुजी लग गेलहुँ आ हुनका चाय दऽ धीरे सऽ पुछलियैन्ह "काका के मोन केहेन छैन्ह"। किछु समय तक तऽ बाबुजी किछु नहि बजलाह मुदा फेर कहलाह "मोन ठीक नहि छैन्ह, आब सब रिपोर्ट आबि गेलैक अछि । जयनन्दन के कैसर छैन्ह, सेहो अन्तिम स्टेज मे। अहा के मौसी के नहि बुझल छैन्ह आ नहि हुनका किछु कहबैन्ह । आय सऽ दवाई सेहो शुर भऽ गेल छैक"। बाबुजी के हम किछु जवाब नहि दऽ सकलियैन्ह आ ओहि ठाम सऽ चलि गेलहुँ।

मा सऽ हम पहिनहि कहि देने रहियैन्ह जे आजु हम काका के देखय लेल अवश्य जायब। हॉस्पिटल पहुँचि काका लग गेलहुँ तऽ देखि बुझायल जेना काका आओर कमजोर भऽ गेल छथि। अस्पताल सऽ अयलाक बाद हमरा किछु नहि फुराइत छल जे की करी। राति मे हमरा किछु नहि फुरायल तऽ हिनका चिट्ठी लिखय लेल बैसि गेलहुँ आ काका के स्वास्थ्य केर विषय मे सबटा लिखि देलियैन्ह।

आय इहो पहुँचि गेलाह। बाबा के नहि कहल गेल छैन्ह , दादी के किछु आओर कही बजा लेल गेल छैन्ह। काका, काकी, पीसा, पीसी सब तऽ पहिनहि सऽ आबि गेल छथि। काका के मोन दिन दिन खराब भेल जा रहल छैन्ह इ देखि परिवारक सभ गोटे चिंतित छथि।

अस्पताल सS अयलाक बाद मौसी आ दादी मन्दिर गेल छथि। बाबुजी आ बाकी परिवारक सभ गोटे बैसि कS गप्प क रहल छथि। हम बाहर मे बैसल छी कि अचानक बाबुजी के कहैत सुनलिऐन्ह "टिस्को (TISCO) के पबंधिनदेशक केर पती के सेहो जयनन्दन वाला बिमारी छैन्ह आ ओ अमेरिका सS इलाज करा कS आयल छथि। हुनको अमेरिका के डॉक्टर जवाब दS देने छैन्ह, आब ओहो एहि ठाम अस्पताल मे छथि आ एके डॉक्टर दुनु गोटे के इलाज कS रहल छैन्ह। दवाई सेहो एके पथि रहल छैन्ह। आब तS मात्र भगवान पर भरोसा अछि"। इ सुनलाक बाद मोन आओर छोट भS गेल सोचय लगलहुँ पता नहि आब काका ठीक होयताह की नहि।

परिवारक सभ कियो जमशेदपुर मे छथि मुदा बाबा आ बौआ के किछु नहि बुझल छैन्ह। बौआ के मेट्रिक परीक्षा छैन्ह इ सोचि हुनका किछु नहि बतायल गेल छैन्ह। विचार भेलैक जे इ मुजफ्फरपुर जयबे करताह परीक्षा समय मे बौआ लग चलि जयताह।

भोर मे मामा सभ अयलाह आ इ मुजफ्फरपुर चलि गेलाह। हमरा कहैत गेलाह जे मेट्रिक के परीक्षा तक ओम्हरे रहताह कारण सभ गोटे जमशेदपुर मे छथिन्ह जओं बौआ के किछु काज भेलैह तS एको गोटे के लग मे रहबाक चाहि।

१२

घर मे ततेक लोक जमा भS गेल छथि जे दिक्कत तS होयते छैक हॉस्पिटल सेहो सब कियो एक सँग नही जा सकैत छी।मोन रहितो

सभ दिन गेनाई सम्भव नही भऽ रहल छैक। बाबुजी आ मौसी के बेसी समय हॉस्पिटल मे बीतय रहल छैन्ह। हुनका गेलाक बाद सँ हम काका के देखय के लेल नहि गेल छी। आय सोचि लेने रही किछु भऽ जाय हम हॉस्पिटल जेबे करब। बाबुजी के कहि हम हुनके सँग हॉस्पिटल पहुँचलहुँ मुदा काका के देखि मोन बड दुखी भऽ गेल। दिन दिन ओ कमजोर भेल जा रहल छथि आ हुनकर पेट फूलल जा रहल छैन्ह। बाबुजी डॉक्टर सँ भेट करय के लेल चलि गेलाह,काका लग हम आ मौसी छलहुँ। जहिना बाबुजी गेलाह काका इशारा सँ हमरा अपना दिस बजेलाह। हम हुनके विषय मे सोचि रहल छलहुँ तुंरत लग मे गेलियैन्ह। ओ हाथि देखा हमरा अपना बगल मे बैसय के लेल कहलाह आ हम जहिना बैसलहुँ तुंरत हँसय के पयास करैत कहलाह " तोरा बुझल छौक आय काल्हि तोहर मौसी भइया सँ गप्प करय लगलीह"। हम किछु नहि बजलियैन्ह मुदा भीतर सँ हमरा ततेक तकलीफ भेल जे कहु एहेनो लोक होयत छैक जे अपन जीवनक अंत समय छैन्ह आ ओ हमरा आ मौसी दुनु गोटे के चेहरा देखि हँसेबाक पयास कऽ रहल छथि। असल मे बियाहक बाद दादी हमर मौसी केईकहि गप्प नहि करय देलथिन्ह जे लोक भैसुर सँ गप्प नहि करैत छैक। अपन बियाह सँ पहिने मौसी बाबुजी सँ गप्प तऽ करिते रहथि साथि जे छलथि बाबुजी के। आब एहेन परिस्थिति छलैक जे मौसी के बाबुजी सँ गप्प करला बिना गुजर चलय वाला नहि छलैन्ह।

भोरे सँ कियो मन्दिर गेल छलथि कियो मौनी बाबा लग तऽ कियो तान्त्रिक लग घर मे हम आ मा छी। हमर सबहक एक गोटे परिस्थित

रोटी दS गेलथि आ पता चलल जे ओ रोटी पाथि मे रहैत छैक आ ओकर पाथि देला सँ केहेनो बिमारी किएयाक नहि होय ठीक भS जाइत रहैक। एकटा कहबी छैक "डूबते को तिनके का सहारा" एकदमईएहि ठाम लागू होयत छैक। मा ओ हुनका सँ लS कS भगवान लग राखि देलथि।

तीन चारि दिन सँ सब गोटे परेशान आ थाकंल छलथि मौसी लग किछु कहबाक लेल सब के मना छैन्ह तथापि बुझाइत छैक मौसी के सब किछु बुझल छैन्ह। राति राति भरि ओ नहि सुतय छथि न्ह आ नहि ठीक सँ भोजन करैत छथि। साझ मे छोटू आ हमरा चार बच्चन के छोडि बाकी सभ गोटे हॉस्पिटल चलि गेलाह। हमरा साहस नहि भेल जे कहियैन्ह जे हमरो लS चलु। करीब नौ बजे राति मे छोटका मामा के छोडि सब आबि गेलथि मुदा हाव भाव बता रहल छलैन्ह जे काका केर स्थिति ठीक नहि छैन्ह। हमरा पुछय के हिम्मत नहि भS रहल छल जे हम किनको सँ पुछबैन्ह मुदा भरि राति नीद नहि भेल।

भोर मे उठलहुँ त बाबुजी ओहि सँ पहिनहि हॉस्पिटल जा चुकल रहथि। दादी, मौसी,पीसी, सभ गोटे मन्दिर मोनी बाबा लग गेल छथिह। अचानक देखलियैन्ह छोटका मामा परेशान जल्दी जल्दी आबि रहल छलाह आ अबिते पुछलाह "मा सब कतS छथिन्ह "। हम कहलियैन्ह ताबैत मा बाहर निकलि अयलीह आ मा के देखैत तुंरत मौसी आ दादी के विषय मे पुछलाह। मा जहिना कहलथि जे ओ मन्दिर गेल छथि न,ईसुनतहि मा एतबहि कहलाह "आब ओकर कोनो काज नहि छैक हम हुनका सब के लेने आबैत छियैन्ह"आ तुंरत घर

सँ चलि गेलाह। मा तऽ तुंरत कानय लगलीह मुदा हमरा किछु नहि फुरा रहल छल जे की करी। एतबा तऽ बुझाये गेलहुँ जे काका नहि रहलाह।

काका के दाह संस्कार जमशेदपुर मे भेलाक बाद सब के विचार भेलैह जे काज गाम पर कयल जाय मुदा भारत बंद रहलाक चलते हम सब साझ मे गाड़ी सँ निकलि गेलहुँईसोचि जे भोर तक गाम पहुँची जायब। बाबा के किछु नहि बुझल छलैन्ह।

विमलिया मे अस्थि पवाह कऽ हम सब गाम के लेल पर्स्थान कऽ गेलहुँ।

एक तऽ सब दुखी ताहु मे बैसय के से दिकत छलैक मुदा जेना तेना हम सबईसोचैत जा रहल छलहुँ जे आब तऽ गाम लग आबि गेल। सब के झपकी तऽ आबिये रहल छलैक। बाबुजी आ छोटका मामा आगू बैसल छलाह। अचानक हमर आँखि खुजल तऽदेखैत छी बाबुजी पूरा खून सँ लथपथ छथि आ सीट पकड़ि पाछू एबाक कोशिश कऽरहल छथि। ताबैत नजरि गेल एक बोझा कुसियार(गना) पूरा के पूरा अगुलका शीशा तोड़ि भीतर घुसल छलैक। हमरा किछु नहि बुझायल तऽ हम बाबुजी के पकड़ि कऽअपना दिस खींचय लगलहुँ । ताबैत छोटका मामा अयलाह ओ अपनहु खून सँ लथपथ छलाह आ बाबुजी के कोहुना कऽ बाहर निकललाह हम सब सब गोटे गाड़ी सँ बाहर भेलहुँ । बाहर पहुँचि जे देखय मे आयल से वर्णन करय वाला नहि छैक। कुसियार सँ लदल बैल गाड़ी हमर

सबहक गाड़ी के माथ्र देने छलैक। सोनू के माि मे चोट छलैन्ह आ मामा के हाि नाक दुनु ठाम सँ खून नजथ्र आयल। बाबुजी के सड़क कात मे एकटा गाछ तर सुतायल गेलैन्ह। गाड़ी केर डाईवर भाथ्रा गेल छलैक।

बुझाइत छलैक पूरा के पूरा गाम उथ्र के आथ्र गेल छलैक। पुछला पर पता चलल चथ्रकया गाम लग मे छैक। थ्रपथ्रा पर थ्रपथ्रा हमरा सब पर परल छल मुदा गाम वाला सब मे सँ कथ्रि लेल एको गोटे मदद करताह उलटा ओ सब सामन लऽ कऽभगबाक पयास करय छलाह। ओ तऽ मामा छलाह जे ओहनो थ्रिथ्रा मे बाबुजी आ हमरा सब के सँग सामान पर सेहो ध्यान देने छलाह। गामक एक आदमी माि एतबा मदद केलैि जे ओ हमरा सब के कहलथ्रि जे आब रेनक के समय भऽ गेल छैक आ पाँच थ्रिनट मे अथ्र ठाम पहुँचत जओं रेन रथ्रक जाय तऽ अहा सब ओथ्र सँ मोथ्राहारी जा सकैत छी। जतय हम सब छलहुँ ओथ्र केर बगल मे रेनक लाइन छलैक मा जथ्रनाईसुनलथ्रि तुंरत बाबुजी के छोथ्र सीि लाइन तरफ़ दौथ्र के पहुँथ्रा गेथ्राह आ हुनका देथ्रा मौसी सेहो। मामा मना करैत रथ्र गेलाह कथ्रि लेल सुनथ्राह। हम बाबुजी के पकथ्र कऽ बैसल रथ्र। मामा की कथ्रतथ्रि हुनको पाछू सँ जाय परलैन्ह।जखैन्ह रेन नजथ्र आबय लागलय तऽ देखथ्रयैन्ह मामा दौडी कऽ अयलाह। मामा के आथ्रतथ्र हम मा सब लग चथ्रा गेलहुँ। कतबो कथ्रये लाइन पर सँ हथ्र जो मा कथ्रि लेल हटथ्राह। जओं जओं रेन लग आबय हमर डर बढैत जाय। गाव वाला सब कात मे ठाढ़ भऽतमाशा देथ्रा रहल छल। एक तऽ भारत बंद ताहु पर हम सब लाइन पर ठाढ़ भऽ गाड़ी रोकय छलहुँ। गाड़ी थ्रकछु दूर पर ठाढ़ भऽ गेलय आ ओथ्र

के बाद धीरे धीरे हमरा सब होस बढ़य लागल। रेन एकदम धीरे धीरे चलय छल। सब गेट पर सिपाही सब ओकरा नजरि आबैत छल। मा जखना देखलथि जे गाड़ी आब लग आबि गेल छैक ओ जोर जोर सँ चिल्लाबय लागलीह "गाड़ी रोको, मदद करो पूरे परिवार का एक्सिडेन्ट हुआ है"। गाड़ी लग मे आयल तs हम सब बगल भs गेलहुँ। पहिने तs बुझायल गाड़ी नहि रकत मुदा किछु आगू जा रुकि गेल। हम सब सबस पहिने बाबुजी के ऊपर चढेलहुँ आ आराम सँ एकटा सीट पर सुता देलयैन्ह ओकर बाद सब कियो रेन पर चढ़ि बैसि गेलहुँ।

कोहुना मोतिहारी स्टेशन तक पहुँचलहुँ। पूरा स्टेशन लोक सँ भरल छलैक। असल मे गाडि खबरि दs देने रहैक जे एक्सिडेन्ट वाला सब के आबि रहल छी। ओहि ठाम सँ हॉस्पिटल तक सब इंतज़ाम पुलिस वालाक छलैक। संयोग सँ ओहि ठामक एक गोट रेलवे के पैघ अधिकारी हमर परिवार के चिन्हैत छलाह ओ हमर बड़का काका आ एकटा हमर पितिऔत काका के जे कि रेलवे मे छलाह खबरि कs देलैथि।

बाबुजी के डॉक्टर कहि देलकैन्ह अछि तुंरत सीतापुर या अलीगढ लs जएबाक लेल हुनकर एक आँखि मे बहुत चोट छैन्ह। बाकी सब के घाव छलैक जे ठीक होयबा मे दू चारि दिन और लागि जयतैक।

मोतिहारी करीब करीब हमर पूरा परिवारक लोक पहुँचि गेल छलथि विचार भेलय जे लाल मामा आ मा के छोड़ि सभ गोटे गाम जायब।

मा लाल मामाक सँग बाबुजी के लS कS अस्पताल गेलाह, छोटू के तS सँग लSगेलाह मुदा बाकी तीनू बहिन के हमरा पर छोड़ि कS गेल रहथि। हम सब बड़का काका काकी सँग मोटरगाड़ी सँ गाम आबि गेलहुँ। दादी मौसी मौसा आकी पप्पू आ सोनू सेहो संगे आबि गेलाह। गाम पहुँचलहुँ, ई समाचार सुनि बाबा बड दुखी छलाह। एकटा बेटा के गेलाक दुख तS रहबे करैन्ह दोसर बेटा के दुघटनाक समाचार हुनका आओर तोड़ि देलकैन्ह। इम्हर सब बच्चा सब डरल सहमल रहथि। मौसा सब तS मौसी लग रहैत रहथि दादी से, अपन दोसर दोसर काज मे रहैत छथिह मुदा हमर तीनू बहिन हमरा एको मिनट लेल नहि छोरथि। हमरा अपने किछु नहि फुरैत छल की करी। डरल तS हमहू रही मुदा हुनका सब केर सोझा मे साहस केने रही। बौआ सेहो गाम पर छलथि हुनकर परीक्षा भS गेल रहैन्ह।

दोसर दिन भरि दिन लोकक एनाई गेनाई लागल रहलै आ भरि दिन कना रोहटि सेहो होयत रहैत छलैक। जतेक कना रोहटि होय ततेक बच्चा सब और डरि जैत छलथि। साझ होयत देरी सब हमरा पकड़ि कS बैसि जाय गेलाह। अचानक हम जाहि कोठरी मे रही ताहि मे बड़की काकी अयलीह आ बच्चा सब के पकड़ि क किछु जलखई करेबाक लेल लS गेलाह। हम चुप चाप घर मे बैसि क असग़र कानैत छलहुँ आ भगवान सँ कहैत छलहुँ हे भगवान मा नहि छैथि बाबुजी के की होयतैन्ह नहि जानि एखैह कम सँ कम हुनका पठा दियौन हम असग़र कोना तीनू के सम्भारब। मौसी आ मौसा सब सँग तS सब गोटे के सहानुभूति छलैन्ह मुदाईतीनू बहिन के देखय लेल हमही टा छलायैन्ह। ई सोचिये रहल छलहुँ कि देखलायैक एकटा

जन बैग लेने आयल आ राख्न कS चल्ल गेल। देखला सँ झुनके बैग जेहेन छलैक मुदा जा िथ्र हम ककछु पुछल्लाए ओ चल्ल गेल। हमरा मोन मे पचास तरहक बात आब्र रहल छल क देखल्लायैन्हईघर मे घुल्ल रहल छथि।ईसीि हमरा लग अयलाह आ जख्वना पुछलाह अहा कोना छी क हमरा नल्ल रख्व भेल आ हम झुनका पकल्ल कS खूब कानय लगलहुँ। इहो पाछु कथि लेल रहताह आ दुनु गोटे एक दुसरा के पकल्ल कS कानैत छलहुँ। हमरा सब केर मुँह सँ एको शब्द कथि लेल ब्राकलत।

अचानक हमरा बुझायल जे तीनू बख्वन आब्र रहल छथि। हम अपना के सम्हारैत झुनका सँ पुछल्लायैन्ह अहाके कोना बुझल भेल। कहलाह हम तS मोल्लाहारी आयल छलहुँ अपन कॉलेजक काज सँ ओझाजी ओख्वठाम गेलहुँ तS पता चलल। हम पख्वने हॉल्लपटल गेल रख्व बाबुजी आ मामा के देख्व हमर मोन खराब भS गेल। ओख्व ठाम सँ भागल एख्व ठाम आयल छी। हम सब गप्प कब्रते छलहुँ क तीनू बख्वन आब्र गेल्लाह आ आब्रते सोनी झुनका पकल्ल कS कानय लगलीह। ब्रनी अनू से लग मे आब्र गेल्लाह। ओ दृश्य हम नख्व ब्रसरी सकैत छी। बौआ तS लड़का छलाह आ बाबा सँ हुनका बड लगाव छलैन्ह मुदा हमरा सब के मोन मे असुरक्षा के भावना छल ओ झुनका देख्व खतम भेल।

काका केर काज खतम भेलाक बाद सब चल्ल गेलाह हम चार भाई बख्वन, बाबा दादी आ मौसी अपन चार बच्चा सब सँग रख्व गेल्लाह। इहो चल्ल गेलाह, हमरा एको रती गाम पर मोन नख्व लागैत छल,

मुदा मजबूरी मे रहय परल। अचानक एक दिन तार आयल जे नानी सेहो नहि रहलीह। काका के देहान्तक खबरी सुनि ओ खाना पीना छोड़ि देने रहथि आ हुनक देहात भऽ गेलैन्ह। तार अयलाक एक दू दिन बाद मामा अयलाह ओ अपना सँग मौसी आ हुनक चार बच्चा सब के सेहो लऽ कऽ चलि गेलाह मुदा ओ एक बेर हमरा सब के कहबो नहि केलाह जे अहुँ सब चलु। हम ओ दिन नहि बिसरी सकैत छी मौसी सब केर गेलाक बाद मा हम पाच भाई बहिन आ बाबा दादी रहि गेलहुँ एक तऽ हम सब कहियो गाम असगर नहि रहल रही ताहु परओहेन परिस्थिति मे। राति राति भर हम डर सँ नहि सूती। सोनी तऽ राति मे हमारा पकड़ि कऽ सुतथि आ ताहू पर कैयक बेर डर सँ चिल्ला उठैथि।

एक तऽ हम अपनहि डरपोक ताहि पर सब भाई बहिन के जिम्मेदारी हमरा पर रहैक। दादी बाबा तऽ बुढ छलथि। मा बाबुजी के कोनो समाचार से बुझय मे नहि आबि रहल छल। हम राति राति भर सूती नहि आ सोचैत रहैत छलहुँ।

नहि जानी कियैक करीब पन्द्रह दिन भऽ गेलैक मा बाबूजी के कोनो समाचार नहि भेटल छलईसोचि सोचि हमरा बड चिन्ता होयत छल। राति के निन्द तऽ नहिये होय उलटे चारि पाच दिन सँ हमर छाती मे जोर सँ दर्द होमय लागल । पहिने तऽ दादी के हम नहि कहलियैन्ह मुदा बाद मे कहय परल। दादी के से चिन्ता होमय लागलैह, ओ अपना भरि किछु किछु सँ मालिश करथि मुदा ठीक नहि भेल। अंत मे दादी कहलथि ठाकुर जी के चटी धोबि दहुन आबि जयताह। मुदा ओ अपनहि हमरा सब केर देखय लेल पहुँची

गेलाह आ दादी के कहला पर हमरा लऽ क पटना डॉक्टर सँ देखाबय लेल लऽ गेलाह। पटना मे हमर मौसी रहैत छथिह हुनके ओहि ठाम रही इलाज करेबाक विचार भेलैक। सब गोटे के जेबा मे तऽ झंझट छलैक मुदा हम अनू के नहि छोरथियैन्ह आ हुनका अपना सँग लेने गेलियैन्ह। सोनी बनी के दादी राखि लेलथिन्ह आ कहलथि कोनो चिन्ता नहि करय के लेल।

हम सब साझ मे पटना पहुँचलहुँ आ मौसी के डेरा गेलहुँ, ओहि ठाम बाबुजी पहिनहि सँ रहथि।ओ सब भोर मे पहुँचल रहथि। मा सँ पता चलल जे बाबुजी के कोहुना एकटा आँखि बाचि गेलैन्ह दोसर नहि बचायल जा सकलैन्ह। दोसर दिन हम सब जमशेदपुर आबि गेलहुँ
।
१३

छोटका बेटाक जन्मक बाद इ बिस्को से संबि भऽ गेलाह। बड़का बेटा भास्कर(पुतु)ओहि समय मे सवा दू बरखक छलाह आ छोटका बेटा मयुर (चिकी) मात्रि तीन मासक। हुनका अयलाक किछुए मास बाद बाबुजी केर बदली राची भऽ गेलैन्ह आ मा सब जमशेदपुर सँ चलि गेलाह। ओहि समय मे बिस्को के घर भेटय मे किछु दिक्कत छलैक आ वरिष्ठता के आधार पर घर भेटैत छलैक। हम सब एकटा छोट छीन घर लऽ कऽ रहय लगलहुँ।

कलाकार मन बेसी दिन चुप नहि बैस सकैत छैक आ ताहू मे ललन

जी सन कलाकार। अपन व्यस्तताक बावजूद ओ ध्वस्को के नौकरी मे अयलाक थ्वकछुए समय बाद सँ अपन नाटय आ सास्कृथ्वाक गथ्वाथ्वथ्वि मे सथ्वि य भs गेलाह। ओथ्व समय मे थ्वस्को केर पदाथ्विकारी आ कमचािरी सब के दारा कमचािरी सब के लेल सुरक्ा नाटकक आयोजन कएल जाइत छलैक आ ओथ्व नाटक सब पर खचि सेहो बहुत कम कयल जाइत छलैक। ओ नाटक सब एक दम नीरस आ संदेश मात्र के लेल रहैत छलैक। दशकि सेहो मात्र अपन थ्वभागक आ थ्वकछु आन थ्वभागक लोक जे सब नाटक मे भाग लेत छलाह रहैत छलैक। कायिभार सम्भरलाक थ्वकछुए मास बाद अपन थ्वभागक सुरक्ा नाटक मे भाग लs आ ओकर संवाद मे फेर बदल कs ओथ्व मे सवथ्शेष अथ्वानेताक पुरस्कार पाप्त केलाह। दोसर बरख जओं हुनका नाटक लेल कहल गेलैन्ह तs साफ कथ्व देलथ्वि न जे ओ नाटक रथ्वन्र भवन जे थ्वक जमशेदपुर केर सबस नीक पेक्ागृह छलैक ओथ्व मे करताह। ओथ्व बरखक नाटक रथ्वन्र भवन मे भेलैक आ दशकि के ओथ्व नीरस थ्वषय पर कयल गेल सुरक्ा नाटक खूब पथ्वान भेलैक आ शी ठाकुरक जमशेदपुरक नाटय यात्रा एथ्व ठाम सँ पारम्भ भs गेलैन्ह।

सब थ्वदन मैथ्विली केर सेवा करय लेल पथ्वाबद शी ठाकुर जी के मोन मे सथ्वदखन इ रहैत छलैन्ह जे थ्वकछु कथ्व वा नथ्व मैथ्विली भाषा आ साथ्वत्य के अपन कलम सँ थ्वकछु तs सहयोग कथ्वए सकैत छलैि। जमशेदपुरक मैथ्विली संस्था "थ्वमिला सास्कृथ्वाक पथ्वषद" केर सदस्यता तs अयलाक थ्वकछुएक समय पशात इ सोथ्व ल लेलाह थ्वक मैथ्विली केर सेवा करताह। सन १९८१ ई मे एकटा आन्दोलन शुर भेल छलैक आ गाम गाम आ सब शहर सँ सेहो पत्रिनमं त्री के नाम

पोस्ट काडपिर मैथिली भाषा केर अष्टम सूची मे स्थान देबाक लेल आग्रह कयल गेल छलैन्हि। जमशेदपुर मे एकटा सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन सं करबाक विचार भेलैक जाहि केर भार श्री ठाकुर जी के देल गेलैन्हि। श्री ठाकुर जी तय केलाह जे एकटा संगीत संध्या कयल जाय आ ओहि कार्यक्रमक नाम देल गेलैक संकल्प दिवस। ओहि कार्यक्रम के लेल सबटा गीत मैथिली मे अपनहि लिखलथि आ ओकर धुन दऽ तैयारी कराब मे लागि गेलाह । मैथिली मे हुनक इ पहिल कार्यक्रम छलैन्हि आ कार्यक्रम मे मुख्य गायक सेहो अपनहि छलथि। कार्यक्रमक उदघाटन गीतक नाम सं "संकल्प गीत"परलैक।

"संकल्प गीत"

संकल्प लिअय संकल्प लिअय
संकल्प लिअय यो
बाजब मैथिली आ मिथिलाक लेल जिअयब यो ....
संकल्प लिअय..............२।

शान्तिमय पयास हमर ई
सुनी लिअय देशक नेता.....३
सूची अष्टम मे स्थान दियो
आरो ने किछु कहब यो ....
संकल्प लिअय.......२

लाखक लाख पढि जाइत अछि

आँखि खोइल क देखू ३
aआबि गेल समय इन्रा जी
मैथिलाक मान राखू ३
संघषबिढ़त जं बात ने मानबै
आरो ने हम साहब यै
संकल्प लिय ....३।

-लल्लन पसाद ठाकुर -

अहि कायमिक खूब पशंसा भेलैक आ शी ठाकुर जी के एहि कायमि कय जे पसनता भेलैन्ह ताहि केर पणिणाम स्वरप ओ एकटा नाटक करबाक ठानि लेलैन्ह। जमशेदपुरक मैथिला सास्कृतिक पणिषद केर मलिला शाखाक स्पिना भेलैक आ ओकर सदस्या लोकनि अपन एकटा मुख्य कायमि करबाक लेल शी ठाकुर जी के आगह केलथि। ठाकुर जी हुनक सबहक आगह मानि लेलाह आ तय भेलय जे नाटक होयतैक।ठाकुर जी के पहिल नाटक" बड़का साहेब" ओकरे देन छैक। ओहि नाटक केर लिखैत हम देखने छियैन्ह बुझाइए मे नहि आयल जे नाटक लिखनाइ एको रत्ती कठिन छैक। ततेक सामान्य आ सरल भाव सँ लिखैत छलाह एक एक टा संवाद के हमरा पढ़िनहि कैयेक बेर सुनबैत छलाह। हमरा तS नाटकक पूवाभ्यास सँ पहिनहि सबटा संवाद याद भ गेल छल।

एक बेर जे ठानि लैत छलाह ओकरा पूरा करबा मे अपन जी जान लगा दैत छलाह। बड़का साहेब केर पूवाभ्यास मलिला शाखा केर एक गोट सदस्य के ओहि ठाम होइत छलैन्ह। हम सब तSसपणिवार

सब बच्चन उपस्थित रहैत छलहुँ। एक तS अपने मुख्य भूमिका मे छलाह दोसर थकी से ओहि नाटक केर बालकलाकार छलाह तेसर बहुत रास काज नाटक संबंधी होइत छलैक जे हमरा भार देने छलाह आ चाहैत छलाह जे हम सब बच्चन नाटकक अभ्यास देखि जाहि सँ हम बहुत किछु देखि कS बुझि सकयय।

बड़का साहेब केर पूर्वाभ्यास मे सब बच्चन मण्डला शाखाक सदस्य दारा कैयेक टा नाटक होयत रहैत छलैक। हुनका सब के ई विशास नहि छलैन्ह जे नाटक नीक होयतैक। किछु सदस्य बुझैत छथिाह जे ओ नाटक केर विषय मे अधिक बुझैत छथि, मुदा पत्येक नाटक मे निदेश केर अपन कल्पना आ सोच होयत छैक। सब बच्चन इ हुनका लोकनि के समझाबथि जे अहा सब निशांत रहू नाटक नीक होयबे करत मुदा हुनका सब के भरोस नही होयेह। इ सब बच्चन घर आबि क कहैि इ पगल आ अंसाम अछि आब हम दोसरा के लेल नाटक नही करब खास क मौगी सब लेल तS नहिएँ टा। सब बच्चन हम आ बालमुकुन्द जी हुनका बुझाबथयैन्ह। एक तS एकहू टा नीक कलाकार नहि रहथि दोसर हर काज मे व्यवसापिक सबहक हस्तक्षेप। हुनका नीक नहि लागैन्ह मुदा जखैन्ह कायकि भार लS लेने रहथि त पूरा करबाक छलैन्ह।

एक त सब बच्चन नाटकक पूर्वाभ्यास मे किछु नहि किछु होइत रहैत छलैक ताहि पर नाटक मंचनक तारीख स तीन चारी बच्चन पहिने इंदिरा गाधी के हत्या भ गेलैक आ पशासन दिस स सबटा कायक्रम रद करबाक आदेश आबि गेलैक। दोसर सथि तय करबा मे समय

नही लगलैक अखबार मे से आकलबा देल गेलैक मुदा हुनक मोन नञ मानलैह आ जाञ तारीख के नाटक मंचन होयबाक छलैक ताञ दुन अपनञ बालमुकुन्द जी आ किछु कलाकार लोकञ के लS रञन्द्र भवन केर गेट लग ठाढ़ भ गेलाह इ सोचि जे लोक के असुविधा नही होय।

२० नवम्बर १९८३ के पञल बेर जमशेदपुर मे मैथिली नाटक "बड़का साहेब" केर मंचन भेलैक आ ओञ नाटक केर सफल मंचन सS जमशेदपुरक मैथिली भाषा भाषी अचम्भित रञ गेलाह। पञल बेर कोनो मैथिली नाटक दुकट पर भेल छलैक। "बड़का साहेब " नाटकक अनुभव हुनका दोसर नाटक लाखय लेल आ ओकर मंचन करय लेल बाध्य कS देलकैन्ह।

हमर माथिक सहरसा अछि। हमर पञऔत बञन जे छक हमर मञऔत सेहो छथि हुनक ववाह सहरसा मे छलैन्ह हम सब ओञ ववाह मे जमशेदपुर सS गेल रही। हमर माथिक मे सभ किछु एक सS एक गायक छथि। कोनो ववाह वा यज होइत छैक तS यज खतम भेलाक बाद पूरा पञवार दलान पर बैस जाइत छथि आ गाना बजाना होइत रहैत छैक। ओञयो दुन हम सब बाहर बैसल रही आ गाना बजाना होइत छलैक ओञ बीच मे एकटा वृद व्यक्त अयलाह। मामा सब हमरा सब के बजा हुनका सS पञचय करेलैन्ह आ कहलथि इ छथि "लालो काका"। हम नाम बड सुनने रञयैन्ह मुदा भेट हुनका सS पञल बेर भS रहल छल। पाँच दस मनट हुनका सS हम सब गप्प कयलहुँ ताञ के बाद ओ चञ गेलाह। ओतबञ काल मे दू टा

गप्प हुनक विषय मे हम सब बुझलहुँ पहिल जे हुनका साप स बड डर लागैत छलैन्ह दोसर हुनका कियो बुढ कहैन्ह से पसीन नहि छलैन्ह। हुनका गेलाक बाद तुंरत इ हमरा कहलाह हमर दोसर नाटकक नाम भेट गेल "हिलो काका"।

"बड़का साहेब" नाटक मे मिथिला शाखा केर हस्तक्षेप आ नाटक केर पूवाभ्यास के बीच मे जे नाटक सब होइत छलैक ताहि सS तंग आबि सोचि लेने छलथि जे आब दोसर संस्था के लेल नाटक नहि करब। "मिथिला सास्कृतिक" परिषद नाटक के पाछू पाई खर्चा करय लेल सेहो तैयार नहि रहैक। इ सब सोचि अपन अभिन्न मित्र बालमुकुन्द जी , श्री बैदनाथ जी आ श्री पूर्णानंद जी के सँग लSआ हुनका सबहक सहयोग स एकटा नाटय संस्था के स्थापना कयलैन्ह जाहि केर नाम राखल गेलैक "मिथिलाकर" (नाटय एवं संगीत संस्था)। मिथिलाकर के bye laws मे देल गेलैक जे ओ व्यक्ति एहि संस्थाक सदस्य भS सकैत अछि जे कोनो तरहक कलाकार हो व कला से पेम राखैत हो मुदा सदस्यताक लेल कोनो शुल्क नहि छलैक।

हिनकर आदर्श छलैन्ह जे कैयेक टा नाटकक नाम लैत रहैत छलाह। मिथिलाकरक स्थापनाक बाद तय भेलैक जे शीघ एकटा नाटक कायल जाय। कलाकार सब केर एकटा बैठक बजायल गेलय आ ओहि मे तय भेलैक जे नाटक होयत आ दू दिन नाटक होयत। एकटा हिन्दी आ एकटा मैथिली मे। कलाकार सब के नाटक केर नाम से बता देल गेलय मैथिली मे "हिलो काका"। जखैन्ह हिन्दी केर नाटक के नाम कलाकार सब पुछलथिन तS कहि देलथिन"डम

डम ष्कगा ष्कगा "। मैथिली नाटकक नाम तऽ हमरा बुझल छल ष्नन्दी वाला सुश्न हमरो आशयभिेल। ओ नाम हुनका तत्काल ध्यान मे अयलैन्ह आ कश्न देने रहथि।

"ष्नलो काका" नाटक जाश्न समय ष्नखैत छलाह ओश्न बीच मे एक ष्वन हमरा ओकर संवाद सुनाबैत कहलाह ष्नलो काका के अंत मे हम माश्न देबैन्ह से इ नाटक केर नाम हम सोश्न रहल ष्छ ष्नलो काका सऽ "ष्नस्टर नीलो काका " कऽ ष्वये आ ओश्न ष्वन सँ ष्नलो काका सँ नाटकक नाम "ष्नस्टर नीलो काका "भऽ गेलय।

"ष्नस्टर नीलो काका" आ "डम डम ष्कगा ष्कगा" केर पूवाभ्यास (ष्नहल्सल) जाश्न समय होइत छलैक ओश्न समय हम सपश्नवार सब ष्वन ष्नहल्सल मे जाई। अपने नीलो काका केर मुख्य भूश्नका क रहल छलाह ष्नकी से ओश्न मे बालकलाकार के भूश्नका मे छलाह पुतु ष्नन्दी वाला नाटक के बालकलाकार छलाह आ बचलहुँ हम तऽ हमर काज पश्नल छल जे सब ष्वन रश्न मे घर आश्न ओश्न ष्वनका पूवभ्यािसक समीक्ा केनाई दोसर कश्न देने छलाह जे मंच पर बेसी भीर नही लगेबाके अश्छ ताश्न हेतु ओ हमरे सम्हारे के छल। हम सब, सब ष्वन साझ ६बजे ष्नहल्सल लेल जाई आ राश्न ९ बजे सँ पश्नने कश्नयो नश्नं लौटी।लौटलाक बाद बालमुकुन्द चौरिी आ इ बैसैि आ ओश्न समय व्यवसि केर काज आ ष्नचार ष्नमशिसब होय। कश्न सकैत ष्छ जे जूता ष्नलाई से लऽ कऽचंडी पाठ तक स्वयं ष्नुनके सम्भारय के छलैन्ह। बालमुकुन्द जी तऽ संग रहबे करैत छलाह।

नाटक सऽ पश्चिनश्च सबटा श्वकट श्वका गेल छलैक दुनु नाटकक सफल मंचन भेलैक आ मैथिली के संग संग श्वन्दी पेमी सब के सेहो नाटक मे एकटा नवीनता भेटलैक। रातो राश्च जमशेदपुरक मंच आ जमशेदपुर केर नाटय पेमी के बीच शी लल्लन पसाद ठाकुर केर नाम आश्च गेलैन्ह।

"श्वस्टर नीलो काका" आ "डम डम श्वगा श्वगा" केर सफल मंचनक श्वकछु मश्चना बाद पटनाक मैथिली संस्ा "अश्वपन "एकटा अन्तराष्रीय नाटय समारोहक श्वमंिण पठेने रहैक जाश्च के इ स्वीकार क लेलाह। कलाकार सब स पूछल गेलय तऽ सब तैयार छलाह। समय बहुत कम छलैक मुदा नाटक केर सफल मंचन आ कलाकार सब के उत्साह श्वनका और उत्साश्चत क देलकैन्ह। श्वहल्सल ठीक ठाक चलैत छलैक अचानक एक श्वन एकटा कलाकार श्वनकर नाम लक्मीकात छलैन्ह आ जे सश्वचराक भूश्वका मे छलाह अयलाह आ कहलाह हुनक गाम गेनाइ बड़ आवश्यक छैन्ह मुदा ओ चाश्च पाँच श्वन मे आश्च जयताह। श्वनकर मोन तऽ नश्च मानलैह मुदा फेर सोचलाह कैल नाटक छैक आ ओ आशासन देने छथि तऽ आश्वये जयताह। श्वहल्सल चलैत छलैक ओश्च बीच एक श्वन साझ मे हम सब श्वहल्सल लेल पहुँचलहुँ तऽ एक मश्चला कलाकार जे काकी के भूश्वका मे छश्चह हुनकर समाद अयलैन्ह जे ओ पटना नश्च जा सकैत छथि हुनका कोनो आवश्यक काज स शहर स बाहर जाय पश्च रहल छैन्ह। इ सुनतश्च इ श्वंश्वत भ गेलाह ओश्च श्वन रहल्सल की हेतैक सब श्वकयो श्वकल्प के श्वषय मे सोचय लाश्च गेलहुँ। कलाकार सब के कश्च देल गेलय घर जेबाक लेल, आ इ जे काश्च

ि थ्र थ्रकछु ने थ्रकछु हेबे थ्रकल्प भा जेतैक कलाकार सब के गेलाक बाद हम चार गोटे आ बालमुकुन्द जी बाथ्र गेलहुँ मुदा हमरा सब के थ्रकछु नथ्र फुरैत छल। इ दुनु गोटे हमरा सS सेहो थ्रकल्प केर थ्रषय मे पुछलाह मुदा हमहु थ्रार तर रही, की कथ्रथ्रायैन्ह। आब त इज्जत के सवाल भS गेल छलैक।

बालमुकुन्द जी आ इ थ्रकछु समय के लेल बाहर गेलाह आ भीतर आथ्र हमरा कहलाह, "आब इ अहीके करय पडत"। इ सुनतथ्र हमरा हँसी लाथ्रा गेल, इहो हँसय लगलाह। थ्रकछु समय बाद इ गंभीर भS कहलाह "आब हम मजाक नथ्र क रहल छी"। आब इ हमर सबहक इज्जत केर सवाल छैक आ हमरा सब के दोसर स्री पाि एतेक कम समय मे भेन्टनाइ बहुत कथ्रन अथ्र दोसर हमरा अहा पर थ्रशास अथ्र अहा इ भूथ्रका थ्राक सS कS सकैत थ्र।" हम थ्रार तर भ गेलहुं कथ्रथ्रायैन्ह की, इज्जत के सवाल छलैक। तय भेलय जे काथ्रा सS हम काकी के भूथ्रका मे रहब आ थ्रहलसल करब।

दोसर थ्रन हम सपथ्रवार थ्रहलसल के लेल पहुँथ्र गेलहुँ आन थ्रन तS हम तरह तरह के थ्रप्पाणी दैत छलहुँ मुदा ओथ्र थ्रन एकटा कलाकार के र प मे पहुँचल रही। कलाकार सब के कथ्र देल गेलैह जे आय स काकी के भूथ्रका मे हम रहब। हमर सब संवाद थ्रनके संग छलैन्ह अ ाित काकी के सब टा संवाद काका के संग छलैन्ह जे हमरा लेल बड़ कथ्रन छल। एक तS एतेक नीक कलाकार आ ताहू मे पथ्रा संग अथ्रानय केनाई । खैर थ्रहलसल शुर भेलय जखैन्ह हमर संवादक समय आयल तS हम उथ्र कS स्टेज थ्रस गेलहुँ मुदा जथ्रना हमर संवादक समय आयल आ हम जथ्रना थ्रनका थ्रस

देखलथिन्ह हमरा हँसी छुटि गेल हमरा सँग चौरिरी जी सेहो हँसि देलाह। ओकर बाद हम कैयेक बेर पयास केलहुँ मुदा जखना ओनका देखि नजरि जाय कि हमरा हँसि छुटि जाय आ संग मे चौरिरी जी सेहो हँसि दैथि। अंत मे चौरिरी जी के बाहर जाय लेल कहल गेलैह मुदा कथि लेल हमर हँसि रकत। ओहि दिन आन सब कलाकार अपन अपन पाठ कऽ घर जाय गेलाह । इ सब कलाकार के आशासन देलथिन जे घबरेवा के नहि छय काकी वाला भूमिका ठीक होयबे करत।

दोसर दिन हम सोचि क आयल रही जे हम हँसब नहि आ नीक सऽ रिहर्सल करब मुदा जखना हमर बेर आबै हँसि हम नहि रोकि पाबी। इ अंतिम दिन रिहर्सल तक चललय मुदा घर मे कखनहु कखनहु इ हमरा किछु किछु बताबैत रहैत छलाह। हमरा अपनहि बड़ चिंता होय जे की होयत मुदा इनका हमरा पर पूर्ण भिरोस छलैन्ह आ सब के कहैथि "चिंता जुनि करय जाय जाऊ इ स्टेज पर एके बेर कऽ लेथिह हमरा पूर्ण विशास अछि"। हम त इनकर विशास देखि कऽ दंग रही मुदा अपना हमरा डर लागैत छल।

लक्ष्मीकात नहि अयलाह आ समाद पठौलैन्ह जे ओ सीधि पटना पहुँचि जयताह। हम सब पटना के लेल बिदा भेलहुँ रास्ता मे इ हमर बड़का बेटा भास्कर के किछु किछु बुझाबैत जाइत छलाह पटना पहुँचलहुँ ओहिओ ठाम लक्ष्मीकात नहि पहुँचलाह। हम सब जाहि दिन पहुँचल रही ताहि दिन साझ मे हमर सबहक स्टेज रिहर्सल छल। भोर स इ भास्कर के समाचारक पाठ याद करय लेल कहने रहथि

संग संग अपनहु रहैत छलाह। होटल मे दू बेर श्वहलसल भेलैक आ साझ मे स्टेज श्वहलसल। दोसर श्वन शी ठाकुर सपश्ववार कलाकार सब सँग नाटक लेल तैयार रहथ्वि। नाटक पटना आ पूरा श्वथ्विला मे ूिम मचा देलक।

श्वसटर नीलो काका के कैयेक टा पुरस्कार भेन्टलय, शी ठाकुर के शेष कलाकार , शेष आलेख तिा शेष मश्वहला कलाकार के लेल हमरा हमर छोट बालक के शेष बालकलाकार के लेल सेहो पुरष्कृत कायल गेलैन्ह।

१४

१३ जून १९८५ के भारतीय नृत्य कला मश्वन्दर मे "श्वसटर नीलो काका" कS सफल मंचन के पशात् पश्वत वषि अंतराष्ट्रीय नाटय पश्वतयोश्वगता मे श्वथ्विलाकर आ "शी लल्लन पसाद ठाकुर" जी कS नाटक सब बेर पुरस्कार लैत रहलैन्ह आ मैथ्विली दशकि आ नाटय पेमी के सब बेर एक टा नव सामाश्वजक श्वषय पर नाटकक नीक पस्तुश्वत देखय के लेल भेटैत रहलैन्ह।

१९८६ मे अंतराष्ट्रीय नाटय पश्वतयोश्वगता के लेल जश्वहया श्वनमंिण आयल छलैक ओश्वह समय "शी लल्लन पसाद ठाकुर"जी के श्वलखल नाटक सब मंश्वचत भS चुकल छलैन्ह मुदा नव नाटक केर नाम ओ सोश्वच कS रखने रहथ्वि। जश्वहया श्वनमंिण आयल छलैक ओकर बाद कलाकार सब के एकटा बैठक भेलैक आ ओश्वह मे नाटक जे अन्तराष्ट्रीय समारोह मे जएबाक छलैक ओकर नाम बतायल गेलैक।

नाटक केर नाम "लौआया आरचाइ " सुनतहि कलाकार सब बड खुश भेलाह मुदा जखैन्ह इ सुनालाह जे मापि नाम टा आखल छैक तS पाड़ने त किछु कलाकार मायुस भेलाह मुदा सब बेर नाटक मे ओहिना होइत छलैक आ ता फेरि कलाकार सब शी ललन जी के पाभा सँ पावित भS गेल छलाह।

कलाकार सब केर बैठकी के बाद ओहि दिन राति मे बैस कS पाि आ "पहिल दृश्य" आखि देलाह आ हमरा ओ कैयेक बेर सुनय परल। ओकर बाद रवि दिन सS अहसलि सेहो शुर भS गेलैक। एक दृश्यक अहसलि कतेक दिन होयतैक। एक दिन साझ मे देखलायैन्ह अहसलि स जकर आवि गेलाह आ आवते कहलाह "आजु हम आखय के मूड मे छी आ एक दृश्यक अहसलि कतेक दिन होयत। अहा सब खेलाक बाद सुति रहु आ हमरा लेल चाय बना कS राखि दिय हमरा आजु नाटक पूरा करबाक अछि"। इ सुनतहि हम कहलायैन्ह हम सुति जायब ता अहाक संवाद सब के सुनत। हम नहि सुतब अहा कांता जुआ कर हम चाय बना बना कS अहाके दैत रहब। राति मे बच्चा सब खेलाक बाद सुति रहलाह हम चाय बना कS राखि देलायैन्ह आ बैस कS किछु समय हुनक संवाद सब सुनलायैन्ह मुदा किछु समय बाद नींद आबय लागल तS सुति रहालौह। अचानक नींद खुजल तS देखलायैन्ह आखिए रहल छलाह ओहि समय ठीक ४:३० होइत छलैक। हुनका लग गेलहुँ तS कहलाह आब खतमे पर छैक एक बेर चाय पीया दिय। हम उठि कS चाय बनेलहुँ आ चाय दुनु गोटे चाय पीलहुँ ५:३० बजे तक "लौआया आरचाइ" नाटक पूरा छलैक। इ नाटक सेहो कैयाक टा पुरस्कार पौलक।

"मास्टर नीलो काका" के बाद जे नाटक सबस बेसी लोकप्रिय आ चर्चित भेलैक ओ छैक बकलेल। २९-४-बकलेल के अन्तराष्ट्रीय मैथिली नाट्य प्रतियोगिता के लेल कलाकार भवन एहि सिनेमा मेक मंचन भेल। एहि नाटक के सवोतम नाटक, सवोतम आलेख , सवोतम निर्देशक, सवोतम बालकलाकार, सवोतम पकाश परिकल्पना आ सवोतम मंच सज्जा के पुरस्कार भेटलैक आ नाटय प्रतियोगिताक निर्णायक मंडलक अध्यक आ फिल्म निर्देशक " शी पकाश झा" मंच पर पुरस्कार दैत समय "शी लल्लन पसाद ठाकुर जी" कS पशंसा करैत पता आ फ़ोन नम्बर माँगि लेलाह।

बकलेल नाटक केर किछु मास बाद अचानक एक दिन पकाश जी के फ़ोन अयलैन्ह आ फ़ोन पर कहलथिन्ह जे ओ एकटा फिचरेट फिल्म बना रहल छथिन्ह आ ओहि फिल्म मे मुख्य भूमिका करबा के छैन्ह, आ जल्दी दू तीन दिन के लेल पटना आबय परतैह। ऑफिस सS छुटी लS पटना गेलाह आ दू तीन दिन के बाद आपस आबि गेलाहआपस अयला के बाद अपन ऑफिस स छुटी ल आ दू कलाकार के अयबाक लेल कहि चलि गेलाह। पकाश जी हुनका अपन कलाकारक चुनाव मे सेहो रहबाक लेल कहने रहथि।

कलाकारक चुनाव सS शूटिंग धरि करीब डेढ़ मास लागि गेलैक। शूटिंग बेतिया लग गाम मे भेल छलैक आ किछु बम्बई मे ।सिनेमाक नाम छलैक " किरण मणिपुर की " ई सिनेमा पंचायती राज पर बनायल गेल छैक।

१५

एहि सिनेमाक पेर्श्पए पटना मे छलैक आ हम शी लल्लन जी के संग ओहि के लेल पटना गेल छलहुँ।

ओना तs जमशेदपुर मे १९८१ सs शी लल्लन पसाद ठाकुर केर नाटक आ सास्कृतिक गतिविधि शुरु भs गेल छलैन्ह मुदा मैथिली केर सेवा आ हुनका अपना संतुष्टि भेटलैन्ह १९८३ मे, जखन ओ अपन लिखल पहिल मैथिली नाटक केर मंचन केलाह, मुदा ओहियो मे किछु कमी हुनका अपना बुझेलैन्ह।

मिथिलाक्रक सपिनाक बाद पहिल नाटक छलैक "मिस्टर ग्लो काका" जाहि केर पहिल मंचन जमशेदपुर मे भेलैक आ दोसर मंचन "अन्तराष्ट्रीय नाटय समारोह" पटना मे। "मिस्टर ग्लो काका" क s मंचन केर बाद पत्रिवर्ष मैथिली भाषा भाषी के एकटा नाटक देबाक आ मंचन करबाक लेल पत्रिबद शी ठाकुर जी पत्रिवष एकटा नाटक केर रचना करैत रहलाह आ ओकर मंचन होइत रहलैक। एहि बीच ओना कोनो अनुभव के एकटा मैथिली वृत्तचियो फिल्म सेहो बनौलाह। जमशेदपुर मे पहिल फिल्मोत्सव शी ठाकुर जी केर देन छैन्ह। पकाश झा जी केर सँग हुनक सिनेमा मे काज केलाक बाद पकाश झा फिल्मोत्सव जमशेदपुर मे भेल छलैक जाहि केर पूरा व्यवस्था शी ठाकुर जी अपनहि कएने छलाह। विश्वस्तरीय नाटय समारोहक केर इच्छा पहिल नाटय समारोह सs छलैन्ह, ओ जमशेदपुर

मे भेलैक आ खूब नीक जका संपन भेलैक।

पकाश झा जी के सात कड़ी वाला िरावाश्चक "श्चरोह" केर शूश्चंग से मदनपुर(बेश्चाया) केर जंगल जंगल आ बम्बाई मे भेलैक आ ओ शूश्चंग के बीच मे शी ठाकुर जी केर मोन श्चकछु खराब भS गेल छलैन्ह जाश्च चलते ओ िरावाश्चक केर शूश्चंग जल्दी खतम होइते चश्च अयलाह। हमरा से पता नश्च श्चकयैक जश्चया सS शी ठाकुर जी शूश्चंग के लेल गेलाह मोन बहुत घबराइत छल। फोनक बेसी सुश्चा नश्च छलैक ताश्च हुनका खबश्च भेट गेलैन्ह आ अपन शूश्चंग खतम कश्च कS आपस आश्च गेलाह।

बेश्चाया सS अयलाक बाद पता नश्च श्चकयाक आ की भेलैह, बीच बीच मे बुखार लाश्च जायत छलैन्ह, डॉक्टर सS देखा दबाई होइत छलैन्ह तS फेर दू तीन श्चदन मे ठीक भSजाइत छलाह। एश्चना करीब चाश्च पाँच मास तक चलैत रहलैक बीच बीच मे हम कश्चयैन्ह नीक सS डॉक्टर के देखा श्चाय, डॉक्टर सँS देखाबश्च तS मुदा पूरा पूरा चेक अप नश्च होय। हमरा ओश्चना मोन अश्च अचानक एक श्चदन बुखार भेलैह आ एकश्च बेर खूब तेज़ बुखार भS गेलैन्ह। एश्च बेर हम सोश्च लेने रश्चयैन्ह जे पूरा नीक सय जाच करवाबय के छैन्ह मुदा ओ अपनश्च बजलाह एश्च बेर हॉश्चपटल मे भरती भSजाइत छी आ नीक सँ पूरा जाच करवा लैत छी। राश्च मे ततेक बेसी बुखार भSगेलैन्ह जे ओश्च समय भरती कराबय पश्च गेलैन्ह।

भोर मे हम हॉस्पिटल गेलहुँ तऽ डॉक्टर बी.एन.झा राउंड(round) मे छलाह पुछला पर कहलाह "बुखार नहि अछि साझ तक छोडि देबैन्हि आ नहि तऽ कालि घर जा सकैत छथि" हम हुनका भोजन करवेलाक के बाद घर आबि गेलहुँ। साझ मे बच्चा सब के लऽ कऽ अयलहुं। पता चलल जे डॉक्टर साहेब केर आदेश छलैन्हि जे बिना सबटा जाच कएने घर नहिं जाय देताह। हम सब राति मे घर आबि गेलहुँ। दोसर दिन किछु एहेन भेलैक जे हम भोर मे हॉस्पिटल नहिं जा सकलहुँ । बड़का बेटा पुतु आ पंडित जी सँ चाय नाश्ता पठा देलियैन्हि आ हम एकहि बेर दुपहर मे हुनकर कपडा लऽ कऽ गेलहुँ जे आइ तऽ घर आबिये आबिये जयताह।

हॉस्पिटल मा हुनकर कपडा आ चाय लऽ कऽ गेल रही। पहुँचलहुँ तऽ हुनका उदास देखलियैन्हि, पुछला पर कहलाह जे अइयो डॉक्टर साहब नहि छोरताह। हम सुनतहि डॉक्टर बी. एन. झा लग गेलहुँ, कहलाह जे "हम आब ठाकुर जी के किछु आओर दिन रखबैन्हि हुनका खुनक बहुत कमी छैन्हि "। इ सुनतहि हमरा चिन्ता भेल मुदा कहियतहुँ की राति मे फेर सऽ खाना लऽ कऽ आबय परल आ राति भरि हम सुति नहिं पयलहुँ ।

दोसर दिन शी ठाकुर जी केर सबटा खून इत्यादि केर जाच शुर भेलैक । जाच केलाक बाद डॉक्टर बी. एन. झा ओहि जाचक सबटा

थ्रपोटि देख्रि खुश नह्रि छलाह हुनका थ्रकछु आशंका छलैन्ह, की से तs नह्रि कहलाह, कहलाह "bone marraw" करवाबय परतैन्ह। १६

हमर एकटा स्त्रभाव अछ्रि, जे आई धरि हम नह्रि बदह्रि सकह्रियैक अछ्रि, आ आब शायद बदह्रि नह्रि सकैत छ्रियैक। हमरा मोन मे खराप बात बहुत जल्दी आह्रि जायत अछ्रि। पचास तरहक आशंका तुंरत आह्रि जायत अछ्रि। हम कतबो कोह्रिास करैत छ्रियैक जे मोन सs थ्रकाह्रि ध्रियैक मुदा थ्रकयैक ओ थ्रकलत। चाहे थ्रकयो घर सs बाहर गेल होयि आ समय पर नहि लौटल होयि थ्रकंवा कोनो तरहक मोन खराप होय। हम बहुत जल्दी घबरा जायत छी। आ तखैन्ह नहि हमरा खएबा मे नीक लागैत अछ्रि आ नहि दोसर कोनो काज मे। इ हमर सबस पैघ कमजोरी अछ्रि एह्रि लेल हमरा हमर शुभ थ्रचन्तक बेटा हमर पह्रि आ हमर सब सs नीक संगी जे आई धरि एकह्रि टा छथि सेहो कैयैक बेर समझौलैथि आ समझाबैत छथि मुदा ओह्रि स्त्रभाव के हम नह्रि बदह्रि सकलहुँ।

हम सोह्रि के अस्पताल गेल छलहुँ जे हम शी ठाकुर जी के लs कs घर अयबैन्ह आ अनबो कयलहुँ मुदा हमरा पता चलल आ डॉक्टर बी.एन.झा कहलैथि जे bone marrowकराबय परतैन्ह आ ओहो वेल्लोर जाय कs , इ सुनतह्रि हमरा जेना खराब थ्रचनक आशंका भs गेल। ओना तs डॉक्टर साहब बुझेलथि जे जमशेदपुर मे सेहो bone marrow भs सकैत छलैन्ह, चूँथ्रक ओ चाहए छलथिन्ह एक बेर वेल्लोर मे सबटा जाच भs जाय ताह्रि लेल ओ जमशेदपुर मे आगू जाच नहि कराय वेल्लोर पठा रहल छलथिन्ह। ओह्रि थ्रदन, राह्रि

भश्व हमरा श्कयैक नीद होयत। भश्व राश्वा सोश्वातश्व पात भS गेल।

दोसर श्वन सS वेल्लोर जेबाक आ अगुलका जाच करेबाक श्वषय मे सोचय के छल, आ हम सब सब सँ पश्वने अपन बश्वन जमाय, याश्वा छोट बश्वनक पश्वा जे नीक डॉक्टर छश्वि आ निबाद मे छलाह हुनका सS गप्प कयलहुँ। ओश्व समय हमर बाबूजी सेहो निबाद मे छलाह। सब सS बात श्वचारक बाद भेलैक जे बाबुजी हमरा सब सँग वेल्लोर जयताह आ मा बच्चा सब संग जमशेदपुर मे रहश्वाह।

बाबुजी शी ठाकुर जी आ हम तीनू गोटे साझ मे वेल्लोर पहुँचलहुँ। होटल पहुँश्वा आ तैयार भS एक बेर अस्पताल गेलहुँ आ अस्पताल देश्व आश्व गेलहुँ। राश्वा भश्व हमरा श्कयैक नीद होयत भोर मे हम सब समय पर तैयार भS अस्पताल पहुँश्वा गेलहुँ। अस्पताल मे तS श्कछु श्वकत नश्व छलैक मुदा जाश्व डॉक्टर के ओश्व ठाम डॉक्टर बी. एन. झा पठेने रहश्वि हुनक श्वषय मे हम सब पता करय के लेल घुश्व रहल छलहुँ। हमरा सब केर घुमैत देश्व एक सज्जन रश्क कS पुछलाह " अहा सब केर कोनो श्वकत अश्छ वा श्कनको खोश्व रहल श्छ"? हम तुंरत कहश्वायैन्ह "असल मे हमरा सब केर डॉक्टर कुश्वयन सS देखेबाक अश्छ, हुनके खोश्व रहल श्छयैन्ह" । सुनतश्व ओ पुछलाह "अहा सब रश्वस्रेशन करवा लेने छी "? जश्वना हम सब कहश्वायैन्ह नय करवाबय के अश्छ, ओ तुरंत अपना संग लS जा रश्वस्रेशन करवा संग चलय लेल कहलाह आ ओकर बाद कुसी

सब लागल हॉल छलैक ओहि ठाम बैसय लेल कहि कतहु चलि गेलाह। शी ठाकुर जी केर नाम लऽ बजेलकैन्हि हम तीनु गोटे भीतर गेलहुँ । भीतर पहुँचि हम जे देखलहुं तऽ हमर आशयकि ठेकान नहिं रहल। डॉक्टर कुष्यिन आओर कियो नहि, ओ तऽ ओ व्यक्ति छलाह जे हमरा सब केर सब काज करवा अपना सँग ओहि ठाम तक अनने छलाह । हम बाबुजी आ शी ललन जी तीनु गोटे एक दोसराक मुँह तकैत रहि गेलहुँ । विशास नहिं भेल जे एतेक नामी आ पैघ डॉक्टर के इहो रूप होइत छैक । हम सब तऽ कहियो कल्पना मे सेहो नहि सोचने आ देखने रहियैक डॉक्टर के इ रूप ।

डॉक्टर कुष्यिन पहिने जमशेदपुरक पूरा रिपोट देखि आ विस्तार सऽ सब किछु पुछलाह आ ताहि केर बाद इ कहि अस्पताल मे भती होयबाक लेल कहलाह जे दू तीन दिन मे सबटा जाच भऽ जायत ताहि केर बाद हम अहा सब केर किछु कहि सकैत छी। अस्पताल मे भती करेलाक बाद दू तीन दिन तक हम सब दिन, राति मे रहिनकर भोजनक बाद करीब १० बजे आपस होटल बाबुजी केर सँग आबि जायत छलियैन्हि । मोन तऽ अयबाक नहिं होयत चल मुदा बाबुजी आ रहिनकर जिद रहैत छलैन्हि तऽआबि जाइ ।राति भरि हम किछु किछु समय पर बारि म जाइ आ समय देखि । भोर ६ बजे सऽ पहिनहि अस्पताल पहुँचि जायत छलहुँ बाबुजी अपन बाद मे आबथि।

एक सप्ताह धरि जाच आ रेपोटकि सिलसिला चलैत रहलैक आ एक

सप्ताह बाद एक दिन डॉक्टर कुरियन अपने अपन पूरा डाक्टरक दल सँग अयलाह । एक टा चीज हम वेल्लोर अस्पताल मे देखलहुँ जे कोनो ठाम देखय के लेल नहि भेटल। ओहि ठामक डाक्टर सब पूर्णरिपेण मरीज के लेल समर्पित रहैत छथि आ ताहू मे डाक्टर कुरियन के हम महान कहि सकैत छियैन्ह । सब दिन ओ आबि पहिने मरीज वाला बिछावन केर बगल मे एकटा आओर बिछावन रहैत छलैक ओहि पर बैसि जाइत छलाह आ पहिने हाल चाल पुछैथि । ओहियो दिन आबि बैसी गेलाह आ हाल चाल पुछलाह, ताहि केर बाद कहलाह "आब सबटा रिपोटि तs आबि गेल अछि, मुदा हम सब bone marrow करबैन्ह जाहि मे बहुत कष होइत छैक। ठाकुर जी केर खून बहुत कम छैन्ह जाहि लेल हमरा सब केर खुनक आवश्यकता परत आ अहा सब मे सs एक गोटे के खून देबय पडत। हम तुंरत खून देबाक लेल तैयार भs गेलहुँ। हमरा घर मे हमर चार गोटे के एकहि गुप केर खून छैक। डाक्टर कुरियन हुनका देखि जखैन्ह बाहर गेलाह तs हुनक एकगोट सहायक डाक्टर हमरा बाहर बजेलाह आ हमरा एकटा फार्म दs blood bank जा खून देबाक लेल कहलथि ।

हम फार्म लेलाक बाद हुनकर केबिन मे नहि गेलहुँ आ सोझे blood bank चलि गेलहुँ। नसकि जहिना फार्म देखेलहुँ ओ तुंरत एक टा कुसी पर बैसेलथि आ किछु समय बाद हमरा एकटा खूब पैघ हॉल मे लs गेलाह । जहिना हॉल मे हम पैसलहुँ पूरा हॉल मे सब ठाम सब बिछावन पर लोक सुतल खून दैत छल । इ देखतहि हमर डर

सs हालत खराब भs गेल । हमरा सूई सs बड डर होइत छलs आ सुनने रहिऐक जेblood donation मे बहुत समय लागैत छैक।मोन मे एक सँग कैयैक टा पश उठैत छल जाहि मे पहिल ई: जँ हम बेहोश भs गेलहुँ तs की होयत ?हमरा सँग आओर कियो नहि छलs । बाबुजी के हम खून देबय लेल नहि कहिअयैन्ह ।

सूई घुसाबय सs पहिने तक हम बहुत डरल छलहुँ मुदा एक बेर सुई घुसा देलक ताहि केर बाद साहस बढि गेल आ ददसिे नहि होइत छल। जखैन्ह हमरा बुझय मे आबि गेल, हम बेहोश नहि होयब तs हम नसिसिs पुछलिअयैक "इ खून हमर पति के देल जयतैन्ह नय" ? ओ कहलक " नहि अहाक पति के दोसर खून हुनक गुप के देल जायत जे bank सs उपलब्ध होयत "। हम सुनने छलिअयैक जे bank मे HIV केर जाच नहि होइत छैक जाहि चलते मासि सम्बन्धी व जे मरीजक संग आयल रहैत छथि हुनके खून लेल जाइत छलैक , इ सुनतहि हमरा और मोन बेचैन होमय लागल तहि हम ओहि blood bank केर विभागाध्यक्ष छलैथि हुनका बजवोलिअयैन्ह आ कहलिअयैन्ह हमर आ हमर पति केर खुनक एकहि गुप छैन्ह । ओहो हमरा कहलथि ई संभव नहि छलैक । हमरा किछु नय फ़ुराइत छल, तहि हम हुनका आगह केलिअयैन्ह जे "हमर खून पर हमर नाम आ मरीजक नाम लिखि राखि दियोक आ किछु घंटा रुकि कsकोनो दोसर ठाम खून पठाबियौक , ताबैत हम डॉक्टर कुशियन सs भेट कयने आबैत छी "। डॉक्टर कुशियन केर नाम सुनतहि डॉक्टर हमरा कहलैथि "ओना तs हम सब,सब खून पर खून देबय वाला केर नाम,मरीजक नाम आ तारीख लिखि दैत छियैक । डॉक्टर कुशियन

कहै देताह तs हम अहीक खून अहाक पत्नी लेल पठा देबैन्ह "।

नसिआ हमर सुई निकालि देलै आ हमरा हिदायत देलै जे कम स कम १५ मिनट रकय लेल मुदा हम सुई निकालैत के संग अपन चप्पल पहिरलहुं आ तुंरत ओहि ठाम सs विदा भs गेलहुं । हम देखलियैक नसि चाय लय आबि रहल छलै मुदा हमरा ओहि समय इहो होश नय छल जे हम खून देने छलियैक तुंरत नय जयबाक चाही । हम आठ नौ दिन सs वेल्लोर मे छलहुँ आ ओतबा दिन मे ततेक बेर डॉक्टर कुरियन सs काज पड़ल छलs जे कोन समय मे डॉक्टर कुरियन कतय रहैत छथि से हमरा बुझल भs गेल छल । हम जल्दी जल्दी ओहि वाडपिहुँचलहुँ मुदा पता चलल डॉक्टर कुरियन ओहि ठाम नहि छलाह ओहि वाडकिर डॉक्टर हमरा दोसर वाडकिर नाम बता कहलथि अखैन्ह ओहि ठाम भेटताह , हम लगभग दौरैत ओहि वाडतिक पहुँचलहुँ ।

वाडमे पहुँचलहुँ ताबैत पसीना सs लथपथ भs गेल छलहुँ हमरा देखि केयो कहि सकैत छलs जे हम थाकल आ परेशान छी । वाडमे पहुँचिते देरी हम डॉक्टर कुरियन केर सहायक डॉक्टर सs हुनका विषय मे पुछलियैन्ह मुदा ओ हमारा जवाब देबय सsपहिने पुछलाह "आखिर की बात अछि अहा एतेक घबरायल किएक छी? पहिने अहा बैसू आ हमरा कहू की बात छैक "? आ तुंरत एक ग्लास पानि मँगा कs पिबय लेल देलाह , मुदा हम पानि पिबय सs

पश्चनश्च एक सास मे हुनका सब बात बता देश्चयैन्ह आ कहश्चयैन्ह" हमारा डॉक्टर कुश्चयन केर मदद चाही" । ओ तुंरत कहलाह अहा के हम कतहु नय जाय देब हम तुंरत डॉक्टर कुश्चयन के एश्च ठाम बजा दैत श्चयैन्ह । तुंरत अपन पेजर श्चकाश्च खबर पठा देलश्च हुनक समाद अखैन्ह खतमो नश्च भेल छलैन्ह श्चक हम डॉक्टर कुश्चयन के आबैत देखश्चयैन्ह । हम दौश्च क डॉक्टर कुश्चयन लग पहुँचलहुँ आ सबटा बात बता देश्चयैन्ह । हमर गप्प सुनैत देरी डॉक्टर कुश्चयन हमरा कहलाह "अहा घबराऊ जुश्च, अही केर खून अहाक पश्च के देल जयतैन्ह" आ फ़ोन उठा ओश्च ठाम सS blood bank केर श्चभागध्यक के फ़ोन कश्च कश्च देलश्चन्ह जे "शी ठाकुर जी केर केश्चन मे हुनक पती जे खून देने छश्चन्ह सैह पठायल जाय "। एतवा वाक्य सुश्च हमरा जे खुशी भेटल ताश्च केर हम वर्णन नश्च कS सकैत श्चयैक । एश्च देश मे एहेनो डॉक्टर छैि ताश्च केर हमरा अंदाज नश्च छल । हम हुनका िन्यवाद श्चक देश्चयैन्ह हम एक टक हुनका देखैत रश्च गेश्चयैन्ह। ओ हमरा श्चस देश्च कहलाह अहा केश्चन मे जाऊ साझ मे शी ठाकुर जी केर अही वाला खून चढ़तैन्ह। हम डॉक्टर कुश्चयन सS भेट कश्च केश्चन श्चस जाइत छलहुँ रास्ता मे हमरा चकर आश्च गेल आ हम एक ठाम कुसी पर बैश्च गेलहुँ। पाँच दस श्चनट केर बाद हम केश्चन पहुँचलहुँ, बाबुजी आ इ हमरा लेल श्चंश्चत छलैि जे हम कतS चश्च गेल छलहुँ, देखैत देरी पुछलाह "कतS गेल छलहुँ "। हम कहश्चयैन्ह "खून देबय लेल, दSदेश्चयैक आ आब साझ मे अहाके खून चढत "।

साझ मे श्चनका जल्दी भोजन करवा देश्चयैन्ह खून चढ़ेनाइ शुर

भेलैक ओकर किछु समय बाद बाबुजी के होटल पठा देलयैन्ह आ हम हुनका बगल मे बैसल गेलहुँ। कतबहु कहैत सुतल रहु हमरा कियैक नीद होयत एक तs चिंता दोसर हम जमशेदपुर मे देखने रहियैन्ह जहा हमर ध्यान दोसर दिस देखैत तs झट द tube के पकड़ि ओकर speed बढ़ा दैत छलाह जे कहुना खून चढेनाइ जल्दी खतम भs जाय। रास्ता मे इ सुतल रहलाह आ हम हुनकर हाथ पकरने बैसल रहि गेलहुँ आ जखैन्ह पूरा खून चढ़ि गेलैन्ह तs नर्स के बजा ओकर पाइप सब निकलवा तारि केर बाद बगल वाला बिछावन पर पड़ि रहलहुँ।

दोसर दिन भोर मे डॉक्टर के आबय सs पहिने नर्स आबि जाचक लेल हुनकर खून लs गेलैन्ह आ ओकर दोसर दिन भोर मे bone marrow होमय के छलैक ।

डॉक्टर कुरियन अपन पूरा डॉक्टरक दल सँग अयलाह हुनका देखैत नहि जानि कियैक हमरा आशंका आ डर दुनु होमय लागल। हमरा मात्र एतबा बुझल छल जे रीढ़ केर हडडी सs खून लेल जयतैन्ह जे कष्टपद होइत छैक। डॉक्टर सब जहिना हुनकर केबिन मे घुसलथि हमरा आ बाबुजी के बाहर जेबाक लेल कहि देलैथि। हम तs एक सँग ओतेक डॉक्टर के देखि घबरायल छलहुँ। बाहर मे ठाढ़ पचास तरहक मोन मे आबैत छल। अचानक हुनकर कानय केर आवाज बुझायल, ओ सुनतहि हमरा कना गेल आ हमर आँखि

के आगु जेना अन्हार भS गेल। हम बाबुजी के बिना किछु कहने जा एकटा कुसी पर बैसि गेलहुँ । बाबुजी के कोना अपन स्थिति केर विषय मे बुझय देखायैन्ह । डॉक्टर जखैन्ह बाहर निकलाह तS हमरा कहलैथि अहा सब आब भीतर जाऊ । भीतर गेलहुँ तS इ कानैत छलाह आ हमरा देखैत देरी कनि उठलाह "माथि देलक "। हम वर्णन नहि कS सकैत छी जे हमरा ओहि समय मे असगर केहेन बुझायल, बाबुजी छलाह मुदा हुनका सोझा हम अपन वेदना के कोना पकट होमय दितियैन्ह , ओ नहि रहितथि तS हम अवश्य कानय लगितौन्ह।

दोसर दिन डॉक्टर कुशियन अपन डॉक्टरक दल सँग सबटा रिपोर्ट लS कS अयलाह ,आ आबि शी ठाकुर जी केर बगल मे बैसि गेलाह। पहिने हुनक हाल चाल जे कि सब दिन पुछैत छलाह पुछलाह आ ताहि केर बाद अपन असली मुद्दा पर अयलाह। सब सSपहिल ओ हमरा सब केर कहलाह हम सबटा रिपोर्ट देखि लेने छी आ इ निष्कर्ष निकलल अछि जे अहाक "cell malignant" अछि। ओहि समय मे हम इ तS नहि बुझैत छलहुँ जे "malignancy" की होइत छैक मुदा इ बुझा गेल जे किछु खराब बीमारी छैक, किछु गरबर छैक। डॉक्टर कुशियन सबटा बात बताबैत कहलाह आब चूँकि इ "oncology department" केर case छैक ताहि लेल हम अहा के "oncology department" पठा रहल छी। oncology शब्द सुनैत केर सँग हमरा जेना सब बुझय मे आबि गेल आ ओकर बाद हमरा मुँह स एक शब्द किछु नहि निकलल जे हम डॉक्टर सँ किछु पुछितियैन्ह । डॉक्टर कुशियन अपन सहायक डॉक्टर सब केर कहि

कS चलि गेलाह जे अस्पताल सँ छुटी देबाक लेल आ "oncology" विभागक डॉक्टर सS देखबाक लेल सबटा कागज तैयार कS देबाक लेल। हम सब आपस होटल आबि गेलहुँ।

दोसर दिन हम सब होटल सS सीधा oncology department डॉक्टर पसाद लग पहुँचलहुँ । ओहि दिन हम आ शी ठाकुर जी गेल छलहुँ। बाबुजी के आँखि देखेबाक छलैन्ह ओ आँखि वाला अस्पताल चलि गेल छलाह, जे एक तरह सँ नीके छलैक । डॉक्टर पसाद जे हमरा सोझा मे कहलथि से भगवान कोनो पती के ओ दिन नहि देखाबथि जे हुनका ओ सुनय परैन्ह । डॉक्टर पसाद विस्तार सS बिमारी के विषय मे बतेलाक बाद कहलथि जे इ बिमारी मे लोक बेसी सS बेसी पन्द्रह साल जीबैत छैक। किछु आओर जाच से कराबय लेल कहलाह मुदा ओ बाहर रहि सेहो करायल जा सकैत छलैक । हम सब आपस होटल अयलहुँ, इ त बहुत राति तक जागल रहलाह आ ओकर बाद सुति गेलाह मुदा हम तS भरि राति जागले रहि गेलहुँ। दुनु गोटे एक दोसरक मनःस्थिति बुझैत छलियैक मुदा कथि लेल राति भरि मे एको शब्द बाजल होयत । भोर मे तैयार भS समय पर डॉक्टर पसाद लग पहुँचि गेलहुँ ।

डॉक्टर पसाद किछु जाच केलाक बाद कहलैथि जरुरत परतैक तS "WBC" बदलय परतैक आ ओहि लेल एक गोट अपन आदमी के तैयार रहय पड़त जिनकर " WBC "लेल जा सकैत अछि । ओ

"WBC" बदलय केर सबटा पक्रिया बता देलाह । हमरा एकटा फॉर्म दि ब्लड बैक जेबाक लेल कहलाह आ ओनका फेर सS भरती हेबाक लेल । हम ओनका केबिन मे पहुँचा ओहि ठाम सS फेर ब्लड बैक पहुँचि गेलहुँ । ब्लड बैक केर डॉक्टर हमरा हाि सँ फॉर्म लिS एकटा कुसी पर बैसय कहलाह। किछु समय बाद आब खून निकालि लेलैि। हम जखना कुसी पर सS उठय चाहलहुँ हमर मािि घुमि गेल आ हम िमि सS फेर कुसी पर बैसि गेलहुँ । इ देखि हमर बगल मे नसि छिलैि से पकड़ि हमरा तुंरत बेड पर सुता देलाह । हम उठलहुँ तS डॉक्टर हमरा कहय लगलाह, "हम अहाक खून नहि लS सकैत छी किएक तS अहा जाच समय मे बेहोश भS गेलहुँ अछि। इ सुनतहि हमरा कनाइ छुटि गेल मुदा हम अपना आप के रोकि लेलहुँ आ ओहि ठाम सँ निकलि चलि देलहुं।

हमरा किछु नहि फ़ुराइत छल हम की करी हमरा संग आओर कियो नहि छलाह । हम मोन दुखी कयने चलल जाइत छलहुँ आ सोचैत छलहुँ आब की होयत। अचानक सामने मे डॉक्टर कुलियन पर नजरि गेल ओ हमरा देखि हमरे तरफ आबैत छलाह। ओ हमरा पुछलाह " डॉक्टर पसाद की कहलाह", हम हुनका सबटा परिस्थिति बता देलायैन्ह आ इहो जे हमरा लग दोसर कियो नहि छैि हम आब की करी। ओ तुरन्त कहलाह अहा घबराऊ जुनि जर रत परतैक तS हम अपन WBC अहाक पति के देबैन्ह । इ सुनैत देरी हम अपना आप के नहि रोकि पयलहुँ आ कानय लगलहुँ । मोन मे भेल कि एहनो डॉक्टर होइत छैक? ओ वाक्य आय िधि डॉक्टर कुलियन केर कर्ज़ हिमरा लग अछि। आय िधि हम डॉक्टर कुलियन के कहल

वाक्य नञ्ज श्नासञ्च सकलहुँ।
१७

डॉक्टि पसाद जाच कलािक बाद कहलाह एक्ह बेि रS WBC केि काज नही छैक मुदा दोसि बेि पवि सकैर छैक। एक बिखिक दिाई आ डॉक्टि बी. एन. झा केि नाम सSसबटा विपोटषबना कS देलाह आ फेि एक साल बाद आबि लेल कहलाह । िल्लोि आबि समि एकि एको िती भान नक्ह छल जे एरेक गंभीि बीमािी भS सकैर छैन्ह। जाक्ह क्दन डॉक्टि कुर्वािन बीमािी के विरि मेबरेलाह राक्ह केि बाद सS हमि जेना मार सुन भS गेल छल । ई बुझि मेनक्ह आबि जे हम की किी। नक्ह हम क्वामािी के विरि मेक्हनका सS गप्प कS सकैर छलहु आ नक्ह हमिा मेअरेक क्हम्मर छल जे हम क्कनको आओि सS क्वामािी के विरि मेगप्प कविरहुं। बच्चा सब रS बहुर छोट छलक्र ।

जमशेदपुि पहुचलहु रS लोकक एनाई गेनाइ शुर भS गेलैक मुदा हमिा एको िती नीक नक्ह लागि, की कक्हि लोक सब सS से नक्ह बुझि मेआबि आ नि हम ओक्ह समि हुनका लग क्हि जे क्कछु कहब िा क्क सुनब । लल्लन जी अपनक्ह जे कहबाक के हिैन्ह कहक्र । ओहो क्क कक्हरक्र, कक्ह दैर छलाह जे सब ठीक भS जेरैक दबाई देने छक्र डॉक्टि । भीरि मेहमिा की होइर छल ई रS हम

िणषा नक्ह कS सकैर छी मुदा ऊपिर सS अिशर देखेबाक कोक्शास कर्विाक जे सब ठीक छैक । बाबुजी के सेहो पूिर गप्प नक्ह बुझल छलैन्ह ।

मा बाबुजी चक्ल गेलाह आ फेर हम ई आ दुनु बच्चा रिक्ह गेलहु । एक एक कSपर्विाकि सब क्ारि क्हनका देखिर लेल अिलाह, ओक्ह मेमात क्ानोदजी (हमिर बक्हनक पक्र) जे की सरि डॉक्टर छक्र , केर छोक्र आओिर क्हनको बीमारी के विषय मेनक्ह बुझल भेलैह। क्लिोर सS आक्ा ई रुिनर ऑक्फस जार लगलाह संगक्ह दाई सेहो चलि छलैन्ह ।

बीमारी केर ओक्ह समय केर िणषा केनाइ हमरा लेल बड कक्ठन अक्छ । हमरा बुझल आ क्हनको बुझल छलैन्ह जे बीमारी खरिनाक छैक आ डॉक्टर केर क्हसाबे १५ साल सु बेसी आदमी एक्ह क्ामारी मेनक्ह जीिर छैक रराक्ा हम दुनु गोटे एक्ह सन्दभष मेबार केनाई रS दूर कक्हरा ई नक्ह बूझए देर चाक्हए जे हम एक्ह सS क्ांकर छी । सच पूछू रS हमर रS मोन कक्हयो नक्ह मानर जे क्हनका एहेन क्ामारी छैन्ह । सब क्दन मोन मेहोर जे एरेक नीक लोग आ शंकर जी केर भक्र के ऐना कक्हयो नक्ह भS सकैर छैक,ठीक भS जेरैन्ह । हम अपना भर्विर रS सक्दखन हुनकर धिान िाक्खैन्ह आ कोक्शास

ाखिी जे कोनो बार सS ई नक्ह बुझा मेआबैन्ह क्क हम क्हनका क्मामाा सS क्यांक्र र छी। नक्ह जाक्न क्का ैक मुदा हमाा सब क्दन क्हनका काज का ा मेनीक लागैर छल आ हम क्हनका सब काज अपनक्ह का ैर छक्ला ैक । बीमाा भेला पा रS सा ाभाक्व क छलैक काज बेसी होइर छलैक मुदा ओ हम अपनक्ह का ैर छक्ला ैक।

एक्ह बीच मेक्वनोद जी के परा चललैन्ह जे बनाा स कोनो होक्स्प ापेक्र क डॉक्टा छैक जे एक्ह रा हिक ाागक इलाज का ैर छैक रS ओ ओक्ह ठाम जा ओकाा ओरक्ह सS दा ाई लS आनलक्र न्ह, जे हा रीन घंटा पा देबा के छलैक । घा पा देलाक बाद हम ऑक्फस जा बाक समा संग दS क्द ैन्ह। ाक्र मेसे छोा बाक नक्ह छलैक, हम घडी मेअलामषलगा ली आ हा रीन घंटा पा उक्ठ उक्ठ कS दबाई क्द ैन्ह। मोन मेहोइर छल भगाा न कहुना क्हनका क्नक कS दो ुन। हमाा भगाा न पा पूणषक्व शास छल जे ओ नीक कS देक्र न्ह। हमाा घा मेखास कS हमा मा भोला बाबा के भक्र छक्र ओ सक्दखन कहैर भोला बाबा के मोन स धा ान का ला सS ओ अा शा सुना छक्र । हमाा होा जु हम मोन सS भोला बाबा के धा ान का बैन्ह रS अा शा ओ हमा सुनराह क्का ैक नक्ह सुनराह। दबाई रS सब क्दन हम जावा जावा क देक्ला ैन्ह आ पूा से भेलैक मुदा क्कछुए क्दन बाद परा चललैक जे ओ डॉक्टा धोखेबाज छलैक आ लोक के दबाई मेस्टो इड क्मला कS दैर छलैक । खैा ई क्सलक्सला र चलैर ा हलैक। जहा क्का ा कहक्र ा परा चलैक जे ओ डॉक्टा ा ा ैद नीक छक्र ा

ओ कहनको ठीक कलिकए ि हुनका ओकह ठाम गेला सऽ फािदा भेलैन्ह हम ओकह ठाम जबािक लेल कहनका मना कलैिन्ह आ देखा कदैिन्ह मुदा डॉक्टि पसाद केि दबाई कक्िह ि बन्द नकह केकलैिन्ह।

ििल्लोि सऽ अिलिक ककछु मास बाद कबनोद जी आ सोनी(हमि दोसि बकहनक पकए आ बकहन) केि भिनिक दुघषटना भ गेलैन्ह ई सुनरकह हम दुनु गोटे धनबाद पहुचलहु । भगिनिक इच्छा छलैन्ह जे ओ सब बाकच गेलकए । धनबाद आ पटना मेइलाज किलाक बाद हुनका सेहो इलाजक लेल ििल्लोि जेबाक छलैन्ह। हम आ ललन जी दोसि बेि ििल्लोि असगिि गेलहु । कबनोद जी ककछु कदन केि बाद पहुचलाह आ हुनका सुग हुनक भािि आ एकटा संगी छलकएन्ह । एकह बेि फेि ककछु कदनक लेल ललन जी के अस्पताल मेभरी होमि पलैन्ह आ सबटा जाचक बाद डॉक्टि पसाद कहनका दबाई देलकएन्ह आ chemotherapy शुर कबिाक लेल कक्ह अस्पताल सऽ छोवि देलकएन्ह मुदा ओ एकह बेकि िपोटष सऽ खुश नकह छलाह, जरबा सुधािि के हुनका आश छलैन्ह ररबा नकह भेल छलैन्ह ।

ििल्लोि मेडॉक्टि के जे कहबाक हिैर छैक से ओ सबटा मिीज आ घिकि लोक ि जे किि सुग मेहिैर छैक हुनके सोझा मेकक्ह दैर

छलन्हि । ललन जी के बिमारी के विषय मे सेहो हमरा आ ललन जी के सोझा मे ओ सब किछु कहैत छलाह । ललन जी रऽ किछु किछु डॉक्टर सऽ पुछि लैत छलाह मुदा हमरा हिम्मत नहि होइ जे हम किछु पुछितियन्हि । हमरा सब दिन मोन मे आशंका बनल रहैत छल जे हमरा पूरा रहस्य हुनक बिमारी के विषय मे नहि बुझल अछि। एक दिन हम विचार कलिहु जे असगरे डॉक्टर पसाद लग जा कऽ हुनका सऽ हम पुछबैन्हि हमरा ललन जी के सोझा मे पुछय के हिम्मत नहि छल । अस्पताल सऽ जखनहि छुट्टी भेटल छलैक ओहि दिन हम ललन जी के कहलियन्हि अहा किछु समय बिनोद जी लग हुनके केबिन मे बैसु हुनको नीक लागतैन्ह आ हम किछु बजार सऽ लेने आबैत छी ताहि के बाद होटल चलब । हम ई कहि हुनका संग बिनोद जी के केबिन गेलहु आ किछु समय बाद ललन जी के छोड़ि ओहि ठाम सऽ निकलि सीधा डॉक्टर पसाद लग चलि गेलहु। हुनका स जे जानकारी भेटल ओ सुनि हमर रऽ माथ घुमि गेल मुदा हम अपन हिम्मत नहि छोड़लिहु आ ओहि ठाम सऽ सीधे निकलि बिनोदजी के केबिन दिस जेबाक लेल जहिना निकललहु सामने ललन जी के आबैत देखि हम चुप चाप दोसर दिस मुड़ि गेलहु । हम हुनका डॉक्टर पसाद के कक्ष मे जाइत साफ़ देखलियन्हि मुदा ओ हमरा नहि देखि पयलाह । एहि रहस्य के हम सिनेमा मे देखने छलियैक मुदा असल जीवन मे हमरा संग होयत, ई कहियो सोचनहु नहि छलियैक । हम सीधा बिनोदजी के केबिन के लेल चलि देलहु मुदा रस्ता भरि डॉक्टर पसादक बात दिमाग मे घुमैत छल जे आब अहा दोसर बेर WBC आ bone marrow transplantation के सोचि कऽ आबि, दोसर ई जे बाद मे हड्डी सबहक कमजोर भऽ जयतैन्हि जे

बहुर धीन देबि पडर नक्ह रऽ हडडी टूटि के डि हिरैह रेसि ई जे हुनक चाक्लस पक्र शर cells malignant छलैन्ह जे डॉक्टि केि कहनानुसाि ठीक नक्ह छलैक।

हम इ र बुझ्झए गेल छलहु जे लल्लन जी सेहो हमि पिछि मेक्कछु डॉक्टि पसाद सु पुछि चाहैर छलाह आ ओक्ह लेल हुनका लग गेल छलाह । इ सोक्च हमि आओि भीरि सु रकलीफ होइर छल जे हुनका सब बार बुझल हिरैह रऽ हुनका मोनमेसक्दखन रहि रहि केि भानिा आबैर हिरैह। हमि ल्लिोि अस्पराल केि आ डॉक्टि केि इ एको तिी नीक नक्ह लागल। कम स कम िगी के नक्ह बरेबाक चाक्ह। हम सक्दखन अपन क्कस्मर पि गौिक्किि होइर छलहु आ आजु होइर छल हे भगानि हमि इ भम के नक्ह रोर ।

क्वनोद जी केि केक्बन मेपहुक्च हम बैक्स गेलहु, एक बेि नक्ह पुछाक्लिह क्हनका विरि मे। क्वनोद जी अपनक्ह कहलाह, "ठाकुि जी नक्ह भेटलाह ओ रऽ अक्हं के राके लेल गेलाह अक्छ । हम बस एरबक्ह कहक्लिन्ह आक्ब जराह । हम अपन मोन मेआबि िला एक एक टा उदेग के कोना कक्हकरिन्ह।

ओना त एकटा कहबी छैक "जाबैत सास ताबैत िश्व आस " मुदा हमरा तऽ पूणिश्विशास छल जे लल्लन जी के क्ष्कछु नक्ष्ज होयतैन्ह

मा िक्छु िदनक गहक चकर छैक, तािथ िचन्ता तऽ होइते छल । हम इ कोना कही जे िचन्ता निह होइत छल । हमारा सब केर वेल्लोर सऽ अयालक िकछु मास बाद दादा जी (हमर ससुर) अयलाह। एक िदन दादा जी लल्लन जी सऽ गप्प करैत छलाह, हम दोसर कोठरी मे छलहुँ मुदा हुनकर सबहक गप्प ओिहना स्पष सुनाई परैत छल । जिहना हम िहनक िबमारी के िवषय मे गप्प करैत सुनािलयैक ओिह घर मे रिक गेलहुँ आ दादा जी आ लल्लन जी केर गप्प सुनय लगलहुँ । दादा जी िहनका सऽ कहैत छलाह "अहा िचंता जुिन कर अहा केर मा िगहक चकर अिछ , हम बेबी बाबु सऽ अहाक आ अपन िवपित देखेिलयैक अिछ अहाके िकछु कष अवश्य अिछ मुदा हमरा पुि शोक निह अिछ "। इ सुनी लल्लन जी आ दादा जी केर मुख मंडल पर आबय वाला भाव तऽ हम निह देखी सकिलयैक मुदा कल्पना अवश्य केलहुँ । खास कऽ लल्लन जी केर िमनका हम खूब नीक सऽ िचन्हैत छिलयैक । हम आगू निह सुनी सकिलयैक आ ओिह ठाम सऽ चिल गेलहुँ । मनुष्य कतेक िववश होइत छैक ?

दादा जी अपन इच्छा िहनका लग व्यक्त कयने रहिथ जे हुनक इच्छा छलैन्ह जे हुनक बेटा सब सेहो म िबनी मे घर बनाबिथ , हमरा एक बेर लल्लन जी इ बात कहने छलाह । दादा जी जमशेदपुर सँ गेलाक िकछुए िदन बाद एकटा िचटी पठौलिथ जािह मे िलखने छलाह

जे ओ मधुबनी मे मकानक लेल जमीन देखि रहल छथि संगहि गाम पर सेहो एकटा जमीन छैक आ हुनक इच्छा छैन्ह जे ओ जमीन लल्लन जी लऽ लेथि । चिट्ठी अयलाक किछुए दिन बाद दादा जी केर दोसर चिट्ठी अयलैन्ह जाहि मे ओ लल्लन जी के पाई लऽ कऽ गाम वाला जमीन रजिस्ट्री कराबय लेल आबय के लेल लिखने छलाह संगहि एकटा मधुबनी मे मकान लेल नीक जमीन छलैक सेहो लिखने छलाह । लल्लन जी मधुबनी गेलाह आ गामक जमीन रजिस्ट्री करा लेलथि संगहि हुनका मधुबनी वाला जमीन सेहो पसीन आबि गेलैन्ह आ ओहि जमीन वाला सँ सेहो गप्प कऽ कऽ आबि गेलाह । किछु दिन बाद पाई केर इंतजाम कऽ कऽ दादा जी केर पठा देलथिन्ह आ दादा जी केर जमीन रजिस्ट्री कराबय लेल कहि देलथिन्ह । हमरा कहलाह "ओना तऽ हमरो इच्छा नहि छल मधुबनी मे मकान बनेबाक, मुदा दादा कहि देलाह तऽ हुनकर इ इच्छा अवश्य पूरा होयतैन्ह "।

लल्लन जी केर सोचब सच मे ठीक छलैन्ह, जमीन किनला के बाद सऽ दादा जी बड खुश रहैत छलाह । Tisco सँ घर बनेबाक लेल कर्ज़(loan) भेटय मे किछु समय लागि गेलैक । ता धरि दादा जी नीव दियेबाक सबटा दिन देखवा लेलाह । नीव देलाक सँग घर बनय लगलैक हम दुनु गोटे सँग मे पंडित जी सेहो मधुबनी घर बनेबाक लेल गेल छलहुँ । पता नहि कोन धुनि छलैन्ह आ की सोचय छलाह मुदा हम सब जे सोचि कऽ घर बनाबय लेल गेल रही ताहि

सँ बेसी नीक घर बनि गेलैक । एक तS अपने" आर्किटेक्ट इंजिनियर " मकानक सबटा नक्सा अपने बनने छलाह आ दुनु गोटे ठाढ़ रहैत छलहुँ तS किछु नय किछु अपन सुविधा कि ध्यान आबि ये जाइत छल । मिला जुला कS हमरा सबहक हिसाबे जतबा मकान मद मे लगबाक चाही ओहि सँ बहुत बेसी भS गेलैक मुदा कोनो वस्तु मे हम सब कटौती नहि केलियैक सब सामन नीके लगायल गेलैक। बेसी सामन तS जमशेदपुर सँ रक सS किन्नि कS पठायल गेल छलैक । मकान बनैत छल ओहि समय मे कखनहु कS हमरा मोन मे होइत छल जे बेकार मे एतेक खर्च कS रहल छियैक मकान केर पाछू मुदा हिनका नहि कहि पाबियैन्ह । मकान बनय मे तS ओना छौ मास लागि गेलैक मुदा दो मास लगातार हम , ललन जी आ पंडित जी (जे हमर बेटे सन छथि) तीनू गोटे छलहुँ ओहि केर बाद बीच बीच मे हम आ ललन जी अबियैक आ किछु दिन रहि चलि जाइत छलियैक मुदा पंडित जी छौ मास धरि लगातार रहलाह आ मकान बनि गेलाक बादे जमशेदपुर आपस गेलाह ।

खैर छौ मास मे मकान बनि कS तैयार भS गेलैक । गृह पवेशक दिन देखा कS गृह पवेश सेहो खूब धूमि धामि सँ भेलैक । गृह पवेशक किछुए दिन बाद हमर देवर केर विवाह छलैन्ह जाहि मे ललन जी बड उत्साहित छलाह आ विवाह सेहो नीक सँ संपन भेलैक । गृह पवेश सँ विवाह धरि ओहि बेर हम सब करीब एक

मास मिबनी मे रही आ अपन ओझ्ञ मकान मे छलहुँ मुदा एकटा पसनता होइत छैक, से पता नञ्ञ थ्ककयैक हमरा भीतर सँ नञ्ञ होइत छल। इ भावी दुखक संकेत छल थ्क की, नञ्ञ जाञ्ञ ।

लल्लन जी हमरा सS थ्ककछु नञ्ञ नुकाबय छलाह आ नञ्ञ हम हुनका कोनो काज मे बाि थ्यैन्ह आ थ्क मना कथ्यैन्ह। हुनका मोन मे अपन मा थ्यता जी भाई बञ्ञन के पञ्ञ अपार स्नेह छलैन्ह । मा केर तS ओ परम भक्त छलाह , मा थ्ककछु कञ्ञ देथ्न्ह तS हुनकर पयास रहैत छलैन्ह जे ओ ओकरा अवश्य पूरा करैि मुदा एहेन थ्वडम्बना जे हुनकर बीमारी के थ्वषय मे हम मा के नञ्ञ कञ्ञ सकथ्यैन्ह। मा के माि एतवा बुझल छलैन्ह जे लल्लन जी केर बेर बेर बुखार भS जाइत छैन्ह ।

मनुष्य जखैन्ह दुाख मे रहैत अञ्ञ तS ओकरा भगवान छोञ्ञ और थ्ककछु मोन नञ्ञ रहैत छैक । ओ अपन दुाख मे ततेक नञ्ञ ओझरायल रहैत छैक जे आन थ्ककछु सोचबाक ओकरा फुसति नञ्ञ भेटैत छैक । लल्लन जी सन व्यथ्कतत्व केर बाते थ्ककछु आओर होइत छैक । अपने बीमार छलाह मुदा दोसर केर थ्वषय मे सञ्ञखैन सोचैत रहैत छलाह । कखनहु कS हुनक एञ्ञ तरहक सोच देञ्ञ हमहु थ्वसञ्ञ जायत छलहुँ जे ओ बीमार छथ्ि मुदा एहेन कोनो थ्दन नञ्ञ होइत छलैक जे हम राञ्ञ मे हुनका थ्वषय मे नञ्ञ सोचैत छलहुँ । हमर तS जेना नीद उञ्ञ गेल छल , राञ्ञ या तS टक टकी लगा कS थ्वतैत छल या नञ्ञ तS नोर बहा कS । दोसर तरफ़ मुँह कS हम भञ्ञ राञ्ञ कानैत रञ्ञ जाइत छलहुँ। एक तS लल्लन जी बीमार

छलाह दोसर हम एक्को विषय मे ककनको सS नकि कहने रहथिन्ह आ नकि हम ओकर चर्चा करैत छलहुँ खास कS बच्चा सब लग तS एकदम नहि । सब सS कष्ट पद छलS जे हमरा दुनु गोटे के सबटा बुझल छल मुदा हम सब एक दुसरा संग सेहो कखनो एक्को विषय पर गप्प नही करैत छलियैक । की गप्प करितियैक , कोना करितियैक मुदा एक दिन लल्लन जी केर मुँह सS निकलिए गेलैन्ह आ हमरा पुछलि देलाह ।

हमरा ओहिना मोन अछि, हमर मंगल वार छल साझ मे खेलाक बाद हमर माथ घुमय छल हम बिछौना पर आबि कS परल रही लल्लन जी टीवी देखय छलाह किछुए समय बाद ओहो आबि कS हमरा बगल मे पसरि रहलाह । इ देखि पता नहि हमर मोन आओर बेचैन भS गेल हम मुँह झापि कS दोसर दिस घुमि गेलहुँ । ओहि घर मे माथ हम दुनु गोटे छलहुँ । अचानक लल्लन जीक आवाज कान मे आयल "किछु होइत अछि की , आइ फेर माथ घूमि रहल अछि" । हम किछु नहि बजलियैन्ह , हम ऐना परल छलहुँ जेना हम सुतल रही , मुदा ओ तS हमर एक एक टा मोनक गप्प बुझैत छलाह तुरन्त कहलाह हम सब बुझैत छी अहाक मोनक गप्प , मुदा हमरा बाद अहा की करब"? बस एतबहि बजलाह आ चुप भS गेलाह । इ सुनतहि हमर माथ जेना सुन भS गेल , हमरा किछु नहि फुरायल आ नहि किछु बाजल भेल मुदा हमर आँखि सS नोर ढब ढब खसय

लागल आ ओ रकय के नाम नञ्इ लैत छल । ओञ्इ राञ्ञ हम पञ्इल बेर लल्लन जी के सोझा मे हुनका बीमार भेलाक बाद कानल छलहुँ आ भञ्ञ राञ्ञ कानैत रञ्इ गेलहुँ । लल्लन जी केर सेहो एतबा ञ्ञम्मत नञ्इ छलैन्ह जे हमरा चुप्प करञ्ञतथि ।

लल्लन जी हमरा सऽ ञ्ञकछु नञ्इ नुकाबय छलाह आ नञ्इ हम हुनका कोनो काज मे बाि ञ्ञयैन्ह आ ञ्ञक मना कञ्ञयैन्ह। हुनका मोन मे अपन मा ञ्ञता जी भाई बञ्इन के पञ्ञ अपार स्नेह छलैन्ह । मा केर तऽ ओ परम भक्त छलाह , मा ञ्ञकछु कञ्इ देञ्ञन्ह तऽ हुनकर पयास रहैत छलैन्ह जे ओ ओकरा अवश्य पूरा करैि मुदा एहेन ञ्ञडम्बाना जे हुनकर बीमारी के ञ्ञषय मे हम मा के नञ्इ कञ्इ सकञ्ञयैन्ह। मा के माि एतवा बुझल छलैन्ह जे लल्लन जी केर बेर बेर बुखार भऽ जाइत छैन्ह ।

मनुष्य जखैन्ह दुाख मे रहैत अञ्ञ तऽ ओकरा भगवान छोञ्ञ और ञ्ञकछु मोन नञ्इ रहैत छैक । ओ अपन दुाख मे ततेक नञ्इ ओझरायल रहैत छैक जे आन ञ्ञकछु सोचबाक ओकरा फुसति नञ्इ भेटैत छैक । लल्लन जी सन व्यञ्ञक्तत्व केर बाते ञ्ञकछु आओर होइत छैक । अपने बीमार छलाह मुदा दोसर केर ञ्ञषय मे सञ्ञखैन सोचैत रहैत छलाह । कखनहु कऽ हुनक एञ्इ तरहक सोच देञ्ञ हमहु ञ्ञसञ्ञ जायत छलहुँ जे ओ बीमार छञ्ञ मुदा एहेन कोनो ञ्ञन नञ्इ होइत छलैक जे हम राञ्ञ मे हुनका ञ्ञषय मे नञ्इ सोचैत छलहुँ । हमर तऽ जेना नीद उञ्ञ गेल छल , राञ्ञ या तऽ टक टकी लगा कऽ

बतैत छल या नञि तऽ नोर बहा कऽ । दोसर तरफ़ मुँह कऽ हम भरि राति कानैत रहि जाइत छलहुँ। एक तऽ लल्लन जी बीमार छलाह दोसर हम एहि विषय मे किनको सऽ नञि कहने रहियैन्ह आ नञि हम ओकर चर्चा करैत छलहुँ खास कऽ बच्चा सब लग तऽ एकदम नञि । सब सऽ कष्टप्रद छलऽ जे हमरा दुनु गोटे के सबटा बुझल छल मुदा हम सब एक दुसरा संग सेहो कखनो एहि विषय पर गप्प नही करैत छलियैक । की गप्प करितियैक , कोना करितियैक मुदा एक दिन लल्लन जी केर मुँह सऽ निकलि गेलैन्ह आ हमरा पुछि देलाह ।

हमरा ओहिना मोन अछि, हमर मंगल व्रत छल साझ मे खेलाक बाद हमर माथ घुमय छल हम बिछौना पर आबि कऽ परल रही लल्लन जी टीवी देखय छलाह किछुए समय बाद ओहो आबि कऽ हमरा बगल मे पड़ि रहलाह । इ देखि पता नञि हमर मोन आओर बेचैन भऽ गेल हम मुँह झाँपि कऽ दोसर दिस घुमि गेलहुँ । ओहि घर मे मात्र हम दुनु गोटे छलहुँ । अचानक लल्लन जीक आवाज कान मे आयल "किछु होइत अछि की , आइ फेर माथ घूमि रहल अछि" । हम किछु नञि बजलियैन्ह , हम ऐना परल छलहुँ जेना हम सुतल रहि , मुदा ओ तऽ हमर एक एक टा मोनक गप्प बुझैत छलाह तुरन्त कहलाह हम सब बुझैत छी अहाक मोनक गप्प , मुदा हमरा बाद अहा की करब"? बस एतबहि बजलाह आ चुप भऽ गेलाह । इ सुनतहि हमर माथ जेना सुन भऽ गेल , हमरा किछु नञि फुरायल आ नञि किछु बाजल भेल मुदा हमर आँखि सऽ नोर ढब ढब खसय

लागल आ ओ रकय के नाम नञि लैत छल । ओहि राति हम पहिल बेर ललन जी के सोझा मे हुनका बीमार भेलाक बाद कानल छलहुँ आ भरि राति कानैत रहि गेलहुँ । ललन जी केर सेहो एतबा हिम्मत नञि छलैन्ह जे हमरा चुप्प करबितथि ।
ललन जी केर बीमारीक किछुए दिन बाद पता चललैक जे पभाकर जी (हुनक अग्रि शी पशुपति जी केर सबस छोट भाई) जे पहिनहिं सँ बीमार छलाह केर किडनी के बीमारी छैन्ह आ हुनका डॉक्टर वेल्लोर लS जेबाक लेल कहि देने रहथि न्ह । ओ सभ जखैन्ह वेल्लोर सS अयलाह तS पता चललैक जे पभाकर जी केर दोसर किडनी लगाबय परतैक जाहि मे बहुत पाइक काज परतैक । सब चिंतित छलाह मुदा ललन जी अपना दिस सS हुनका लोकनि के आशासन देलथि न्ह आ अपने बीमार रहितो एकटा नाटक लिखी कS ओकरा सँग सास्कृतिक कायर्मि केर आयोजन कयि ओकर टिकट सँ जे पाई जमा भेलैक ओ पभाकर जी केर इलाजक लेल राखि देल गेलैक ।

ललन जी केर बीमारीक विषय मे शायद हमरा सँ बेसी वणर्नि नही कयल होयत मुदा एतबा जरूर छैक हम आब सोचैत छियैक तS हमारा अपनहि आशयर्हिोइत अछि जे ओहि समय मे भगवान पता नञि कोना ओतेक शक्ति देने रहैथि। एक तS हम हुनक बीमारीक विषय मे सुनलाक बादो अपन संतुलन बनेने रही , दोसर सब दिन संग मे रहितहु हम नञि हुनका आ नञि कहियो दोसर के अपन मानसिक स्थिति केर पता चलय देलियैक । मुदा हमर नीद एकदम चलि गेल, सब राति करवट बदलि कS बिताबैत छलहुँ। कैयेक राति

ततेक नञि घबराहट होइत छलS जे हम उञि कS टहलय लागैत छलहुँ । ताञि पर थडम्मना जे नञि हम थकनकहु सS लल्लन जी केर बीमाञिक थषय मे कहने रञियैह आ नञि कञि सकैत छञियैक ।

डॉक्टर कहनही रहथिन्ह जे हडडी मे ददि होयतैह खास कS बाञि मे। राञि मे हम ततेक सम्हाञि कS सूती, डर होइत छल जे कही चोट नञि लाथि जायेन्ह। भञि राञि ददि ठीके होइत छलैन्ह आ हम जौ थसथियो जाइयैक तS हुनक ददि से कुहरैत देथि तुरंत मोन पञि जाइत छल । हमरा तS जेना आदञि भS गेल छल हमेशा एक हाथि ञिनक बाह पर िS कS िरे िरे दबाबैत रहैत छञियैक ।

कहबी छैक "डूबते को थानके का सहारा "। हमरा जञिना कतहु पता लागय जे कोनो नीक डॉक्टर छथि चाहे ओ होम्योपैथि हो व आयुवेदी हम कोथिस करी जे लल्लन जी के देखा थयैक । लल्लन जी केर बीमारी के थषय मे माथि थनोद जी के सबटा बुझल छलैन्ह । हुनाका पता चललैह जे कोनो होम्योपैथि डॉक्टर बनारस मे छैक आ ओ कैसर तक केर इलाज करैत छैक अपने डॉक्टर आ नीक डॉक्टर रहैत ओ बनारस गेलाह आ ञिनका लेल होम्योपैथि दबाई आनलथिन । डॉक्टर कहने छलैक जे एक दम समय पर दबाई देबाक छैक आ हर तीन तीन घंटा पर दबाई देबाक छलैक । हम हर तीन घंटा पर दबाई थयैक आ राञि मे सेहो घड़ी मे अलामिलगा

लगा कऽ थ्रयैक । ओना तऽ हमरा नीद नश्च होइत छल, मुदा कही नीद लाथ्रा गेल आ दबाई छूथ्र्ट नश्च जाय से सोथ्रा अलामि लगा श्चयैक , मुदा भगवान तश्चयो नश्च सुनलाह। एक थ्रदन पता नश्च कोना भोरका पहर ३ बजे दबाई देबाक छल मुदा हमर आंथ्रख लाथ्रा गेल आ अलामि सेहो नश्च बाजलैक । भोर मे हरबरा कऽ उठलहुँ आ उठला पर हमरा ततेक अफ़सोस भेल भथ्र थ्रदन कानैत रही गेलहुँ । नश्च भथ्र थ्रदन खेबाक इच्छा भेल आ नश्च कोनो काज मे मोन लागय । साझ मे लल्लन जी हमरा बहुत समझेलाह आ कहलाह एक बेर थ्रकछु देरी सऽ दबाई देला सऽ थ्रकछु नश्च होयतैक । खैर दबाई तऽ जतबा डॉक्टर कहने रहैन्ह ततेक पूरा खेलाह आ ओश्च थ्रदन केर बाद कोनो थ्रदन एको थ्रमनट देरी सऽ नश्च देश्चयैन्ह । थ्रकछु थ्रदन बाद पता चललैक जे ओ डॉक्टर बेईमान छलैक आ ओ दबाई मे steroid थ्रमला कऽ बेचैत छलैक ।

एक थ्रदन लल्लन जी केर ऑथ्रफस मे एक गोटे सँ पता चललैन्ह जे पूना मे एकटा बहुत पुरान डॉक्टर छथ्रि ओ एश्च बीमाथ्ररक इलाज करैत छथ्रि । बस हम सब पूना जएबाक अपन कायिम बना लेलहुँ । हमर बड़का बेटा पुतु, ओश्च बेर पूना मे नाम श्चखेने छलाह ओ अपन सामन लेबय ले आबय वाला छलाह , तय भेलैक जे ओ आथ्रबये रहल छथ्रि हुनके सँग पूना जायल जेतैक ।

हमर सब केर पूना जेबाक तैयारी होइत छलैक एश्च बीच मे लल्लन जी केर मोन थ्रकछु बेसी खराब भऽ गेलैन्ह । जमशेदपुर केर

अस्पताल मे भरती भेलाह । पता चलैक जे फेर खून बहुत कम छलैन्ह , डॉक्टर खून चढेबा लेल कहलैह आ थचार थमशाकि बाद भेलैक जे एश्च बेर टाटा मेमोश्चअल refer कs रहल छैन्ह श्चयैक तsओश्च ठाम डॉक्टर अडवानी छथि जे श्च भारत केर सब सँ नीक oncologist छलैि । डॉक्टर सब अस्पताल सँ छोरय समय refer कs देलथिन्ह । आब हम सब तय केश्चयैक जे बम्बई तक पुतु सँग हम सब जायब आ ओश्च ठाम देखेलाक बाद पूना सेहो जायब । पुतु के सेहो देश्च लेबैन्ह कोना रहैत छथि आ पूना वाला डॉक्टर सsसेहो देखा लेबैक ।

हम सब पुतु के सँग बम्बई गेलहुँ ओश्च ठाम हमर तेसर बश्चन केर घरवाला, हेम जी सेहो अयलाह डॉक्टर अडवानी सs देखायल गेलैक । डॉक्टर अडवानी केर श्चसाबे दबाई ठीके चलय छलैक मुदा ओ श्चछु और दबाई देलाह आ एक साल के बाद अयबाक लेल कहलाह । खैर हम सब डॉक्टर स देखा पूना चश्च गेलहुँ आ दोसर श्चन भोर मे डॉक्टर केर पता लs खोजय श्चकललहुँ । पता जे छल ताश्च पर पहुँश्च तs गेलहुँ आ डॉक्टर अपनश्च श्चकलल मुदा ओकर व्यवहार आ बात करय के ढंग तेहेन छलैक जे बुझायल जेना हम सब श्चखमंगा होइ । ओ हमरा सब के एकटा पता बतेलैि आ इ कश्च भगा देलैि जे ओश्च ठाम जाऊ मरीजक इलाज ओश्च ठाम होइत छैक इ हमर घर अश्च । खैर हम सब खोजैत पहुँश्च तs गेलहुँ, ओश्च ठाम डॉक्टर बहुत समय रकलाक बाद भेटलथि आ इहो पता चलल जे असल मे डॉक्टर ओ व्यश्च छलाह श्चनका ओश्च ठाम हम

सब पश्चने गेल छलहुँ आ पश्चने ओ घर पर देखय छलाह । इ हुनक एकटा सहायक डॉक्टर छथिन्ह । खैर लल्लन जी एकदम देखाबय लेल तैयार नञ्च छलाह तथि हम हुनका मना कS देखाबय लेल तैयार केश्चयैह । जखैन्ह डॉक्टर सSपुछश्चयैन्ह जे कतेक समय लागत तS ओ इम्हर उम्हर करैत छल आ मा एतबा कहलैि बैश्चये अभी समय लगेगा आ सब श्चकछु संदेहास्पद बुझाइत छल । लल्लन जी इशारा दS हमरा अपना श्चदस बजेलाह आ कहलाह चलु हम एश्च ठाम नञ्च देखायब । हम कतबहु कहश्चयैन्ह नञ्च मनलाह आ हम सब श्चबना देखेनञ्च वापस भS गेलहुँ ।

बेचन ठाकुर, गाम चनौरागंज, झंझारपुर, मधुबनी।

महान सामाजिक मैथिली नाटक- बाप भेल पित्ती

पहिल अंक

दृश्य- एक

(स्थान- लखनक घर। दलानपर लखन, लखनक कका मोतीलाल, भाए बौहर बड़का बेटा मनोज आ छोटका बेटा संतोष उपस्थित छथि। लखन चिन्तित मुरामे छथि। सभ कियो चौकीपर बैस विचार-विमर्श किए रहल छथि। बारह वषीय मनोज आ दस बषीय संतोष दलानपर माथ-माथ खेल रहल अछि।

मोतीलाल- लखन, चिन्ता-फीकीर छोड़ू। की करबै? भगवानके जे मजी होइत अछि, ओकरा के बदलि सकैत अछि? अहा कनियाके

एतबे दिनका भोग छेलै। आब अहाक की विचार भऽ रहल अछि?

लखन- कका, अपने सभ जे जेना विचार देबै।

मोतीलाल- हम सभ की विचार देब? पहिने तँ अहाक अपन इच्छा।

लखन- दूटा छोट-छोट बौआ अछि। ओकर परिपाल केना हाएत? जँ कुल-कनिया नीक भेटत तँ दोसर कऽ लइतौ।

मोतीलाल- भातीज, अहाक नीक विचार अछि। ऐ उमेरमे अहाक कल्याणए हमरो उचित बुझना जाइत अछि।

बौहर - कका, एगो कहबी जे छै ‘सतौत भगवानोके नै भेलै’ से?

मोतीलाल- बौआ, तोहर की कहब छह? लखनके बिआह नै करबाक चाही की?

बौहर - हँ, हमर सहए कहब रहए। भैया कनी त्याग कऽ दुनू छौराके पढ़ा-लिखा कऽ बुधियार बनौतथि। ओना भैयाके कनिया केहेन भेटतनि केहेन नै।

मोतीलाल- हमरा विचारसँ लखनक परिस्थिति बिआह करैबला अवस्स अछि।

लखन- कका, नजरिमे दऽ देलौ। जदी सुर-पता लगए तँ जोगार लगाएब।

मोतीलाल- बेस देखबै।

पटाक्षेप।

दृश्य- 2

(स्थान- मदनक घर। ओ अपन बिआहल बेटीक बिआहक चिन्तामे

लीन छथि। कातमे पती-गीता दलान झाड़ि रहल छथि। मोतीलालक समधिक समधि हरिवचन मोतीलालके मदनक ऐठाम कुटुमैतीक संबंधिमे लऽ जाए रहल छथि। हरिवचन मदनक गामीण छथि। हुनका दुनूक पहुँचैत मातर गीता घोघ तानि अन्दर चलि जाइत छथि। दलानपर तीन-चारिटा कुसी लागल अछि। मोतीलाल आ हरिवचनक पवेश।)

हरिवचन- (कर जोड़ि) नमस्कार मदन भाय।

मदन- नमस्कार नमस्कार।

मोतीलाल- नमस्कार कुटुम।

मदन- नमस्कार नमस्कार। बैसै जाइ जाउ। (दुनू जन बैसलाह।) संजय, संजय, बेटा संजय, संजय।

संजय- (अन्दरसँ) जी पिताजी, हइए ऐलौ। (संजयक पवेश।)

(हरिवचनके मदन पकड़ि कऽ अंदर लऽ जाइत छथि।)

मदन- लड़िकाके बेटा दुगो छै आ अस्ति-पाती?

हरिवचन- गोटेक बीघाक अन्दरे छै। अपना भरि कोनो दिक्कत नै छै।

मदन- की करी की नै, किछु नै फुराइए।

हरिवचन- हमरा सभके लेट होइए। यदि विचार हुअए तँ हुनका लड़िकी देखाए दियनु। नै तँ कोनो बात नै।

मदन- बेस, अपने दलानपर चलू। हम बुच्चीके लेने आबै छी। (हरिवचन दलानपर आबि गेलाह। किछुए काल बाद मदन सेहो आबि गेलाह।)

मदन- चलू, देखल जेतै। कऽ लेबै। आगू भगवानक मजी। हम लड़कीक बाप छिऐ। तँ हमरा लड़का देखबाके चाही। मुदा हम सभ अहांक अहापर विशास करैत रहलौ। आइ कोना नै करब?

हरिवचन- हम अहाक संग कहियो विसवासघात केलौ?

मदन- से तँ कहियो नै। ओना दुनियाया विसवासेपर चलै छै। (वीणाक संग मीनाक पवेश। मीना सभके पएर छूबि गोर लगैत अछि।)

हरिवचन- कुसीपर बैसू बुच्ची। (मीना कुसीपर बैसैत अछि। वीणा ठाढ़े अछि।) मोतीलाल बाबू, लड़कीके किछु पूछबो करबनि, तँ पुछियौ।

मोतीलाल- की पुछबनि, किछु नै।

हरिवचन- बुच्ची अहा चलि जाउ। (मीना सभके गोर लागि अन्दर गेलीह।)

मदन- हरिवचन भाय, लड़की अपने सभके पसीन भेलीह?

मोतीलाल- हँ, लड़की हमरा लोकनिके पसीन अछि।

मदन- तहन अगिला कायर्क्रम की हेतै?

हरिवचन- जे जेना करीऔ। ओना हम विचार दैतौ जे विआह मंदिरमे कऽ लैतौ। चीप एण्ड बेस्ट।

मदन- कनिया तक?

हरिवचन- कनिया तक, चट मंगनी पट विआह। कालिहये कऽ लिअ। बढ़िया दिन छै। कुटुमैती लगा कऽ नै रखबाक चाही।

मदन- भाय, ओरियान कहा भऽ रहल छै?

हरिवचन- जे भेलै सेहो बढ़िया, जे नै भेलै सेहो बढ़िया। आदर्शमे आदर्श।

मदन- बेस, कालुके दिन रहए दियौ।

हरिवचन- जाउ, जे भऽ सकए, ओरियान करू। हम सभ सेहो जाइ छी। जय रामजी की।

मदन- जय रामजी की। (हरिवचन आ मोतीलालक प्रस्थान।) होनी जे हेबाक हेतै, सएह ने हेतै। आप इच्छा सर्वनाशी, देव इच्छा परमबल:।

पटाक्षेप।

दृश्य- 3 (दृश्य- लखनक बरिआतीक तैयारी। वर लखन, मोतीलाल, बौहर, मनोज आ संतोष मदनक ओइठाम जा रहल छथि। मदन अपन घरक कातमे एकटा गाम मंदिरक पागणमे विआहक पूर्ण तैयारी केने छथि। सात गोट कुर्सी आ एक गोट टेबूल लगल अछि।

पंडीजी गणेश महादेवक पूजा कए रहल छथि। मदन, मीना, गीता हरिवचन, संजय आ वीणा मंडपक पागणमे िहाहिही कए रहल छथि ताि बरियातीक पतीक्षा कए रहल छथि। मीना कन्याक र पमे पूणसिजल अछि। बरियाती पहुँचलाह। डोलमे राखल पाइसँ सभ बरियाती हाि-पएर िोइ कऽ कुसीपर बैसलाह आ लखन वरबला कुसीपर बैसलाह। बापेक कातमे एके कुसीपर मनोज आ संतोष बैसलाह। मदन पागणमे आबि जलखैक बेवस्िा केलनि। सभ बच्चयो जलखै कऽ रहल छथि।)

मनोज- पापा, पापा, नाच कखैन शुर हेतै?

लखन- िर बूरबक, अखैन बच्छु नइ बाज। लोक हँसतौ।

मनोज- बकअए हौ, लोक हँसतै तँ हमहूँ हँसबै। कहऽ न नटुआ कखैन औतै?

लखन- चुप चुप, नटुआ नै कही। लड़की औतै।

मनोज- कए गो लड़की औतै? आकेस्रा कखैन शुर हेतै? लड़की संगे हमहूँ नचबै, गेबै आ र माल फाड़ कऽ उड़ेबै। पापा हौ, लड़कीके कहबै खाली रेकाडगे डास करैले। अगबे भोजपूरीयेपर।

लखन- चूप बड़ खच्चर छे रौ। आकेस्रा नै हेतै। डास नै हेतै।

मनोज- तखन एतए की हेतै हौ पापा?

लखन- हमर बिआह हेतै बिआह।

संतोष- पापा हौ, तोहर बिआह हेतै आ हमर नै।

लखन- हँ हँ, तोरो हेतै।

संतोष- कनिया हेतै?

लखन- नमहर हेबहीन तहन हेतौ।

संतोष- हम नमहर नै छीऐ। एतेटा तँ भऽ गेलीऐ। आब बिआह कहिया हेतै?

लखन- बीस साल बाद हेतौ।

संतोष- बीस साल बाद बुढे भऽ जेबै तँ बिआह कए कऽ की हेतै? हम आइये करब।

लखन- आइ तोरा ले लड़की कहा छै?

संतोष- आँइ हौ पापा, तोरा ले लड़की छै आ हमरा ले नै छै। केकरोसँ कऽ लेबै।

लखन- केकरासँ करबहीन?

संतोष- मौगी सभ औतै न, तँ ओइमे जे सभसँ मोटकी मौगी हेतै, ओकरेसँ करबै। दूि खूब पीबै नम्हरो हेबै आ मोटेबो करबै। पापा हौ, हमरा लोकनियामे तोरे रहए पड़तह।

लखन- बेस रहबौ बौआ। (जगमे पानि आ गिलास लऽ कऽ संजयक पवेश। सभ कियो पानि पीलनि आ हाि-मुँह िाइ अपन-अपन जगहपर बैसलाह। पंडीजी पूजा पूणाहुतिक पशात वर लग बैस जलखै केलाह।)

गणेश- अहा सभ विलंब किअए करै छी? बिआहक मुहुत िहुनि रहल अछि। हौ, हौ, जल्दी चलै चलू। कोनो चीजक टेम होइ छै कि ने?

(लक्ष्मीक संग सरयातीक पवेश। सभ कियो मंडपपर गेलाह। सतहपर बिछाएल दरीपर बैसलाह।)

गणेश- आउ लक्ष्मका-लक्ष्मकी, हमरा लग बैसू। (लखन आ मीना पंडीजी लग बैसैत छथि। पंडीजी दुनूके अपन रामनामबला चदरि ओढ़ा दैत छथिन। दुनूके हाथिमे अरबा चाउर आऔर कुश दइ छथिन।)
गणेश- लक्ष्मका-लक्ष्मकी पढ़ू- मंगलम् भगवान विष्णु, मंगलम् गर ड़्विज:

मंगलम् पुण्डरीकाक मंगलाय तनोऽहरि:।।

लखन, मीना- मंगलम्.....।

(पंडीजी तीन बेर ई मंत्र पढ़ा कऽ अपना बगलमे राखल सेनूरक पुड़ियामे सँ एक चुटकी सेनूर लक्ष्मकाक हाथिमे देलखि।)
गणेश- बिआहक मुहुर्त बीतल रहल छल। तँए हम एकेटा मंत्रिसँ बिआह करा दै छी। आब सिन्दुरदान होइए। लक्ष्मका, लक्ष्मकीक मागमे सेनूर दिअनु।

(लखन मीनाक मागमे सेनूर देलखि।) आब अपने सभ दुवाक्त दिअनु। (पंडीजी पैघ सबहक हाथिमे दुवाच्छत देलखिन।) मंत्र- ऊँ. आबह न् बाह णो बह वचसौ जायतामाराष्रे राजन्य: शूर........

सन्तु पूणा सन्तु मनोरथि शत्रुणा बुद्धिनाशोस्तु मित्राणामुदयस्तव। (मंत्रिक बाद सभ कियो लक्ष्मका-लक्ष्मकीके दूवाक्त देलखिन।) लाउ, दुनू समधि दक्षिणा-पाती। सस्तेमे अहा सभ छुटि गेलौ। (दुनू समधि एकावन-एकावन टका दक्षिणा देलखिन।) इएह यौ, एको टकलो रहुक दाम नै। खाइर जाउ।

मदन- पंडीजी लक्ष्मकी-लक्ष्मकीके असीरवाद दिअनु।

(लक्ष्मका-लक्ष्मकी पंडीजीके पएर छूबि पणाम करैत छथि। पंडीजी

असीरवाद दइ छथि‍न।)

मोतीलाल- पंडीजी, मोनसँ असीरवाद देबै।

गणेश- हँ यौ, दक्षि‍णे गुणे ने असीरवाद भेटत।
(सभ चलि‍ जा रहल छथि‍।)

पटाक्षेप।

दृश्य- चारि‍

(स्थान- रामलालक घर। रामलालक दुनू पती लक्ष्मी आ संतोषी घरमे हुनका सेवा कऽ रहल छथि‍। लक्ष्मी पक्षमे दूगो बेटी-एगो बेटा छन्हि‍ तथा संतोषी पक्षमे एगो बेटी-दूगो बेटा छन्हि‍। छओ भाए-बहि‍न एके पब्लि‍क स्कूलमे पढ़ए गेल छथि‍।)

रामलाल- बड़की सभ धि‍या-पुता नीक जका घरपर पढ़ै-लि‍खै अछि‍ न? हम तँ भि‍नसर जाइ छी से रातियेमे अबै छी। पेटक पूजा तँ बड़ पैघ पूजा छै कि‍ने? हम नै पढ़लौ से अखैन पछताइ छी।

लक्ष्मी- छौड़ाक लक्षण अखैन बड़ नीक देखै छि‍ऐ, अछि‍याम जे हुअए। हमरा सभके पढ़ैले कहए नै पढ़ै अछि‍।

रामलाल- छोटकी, अहा कि‍छु नै बजै छी।

संतोषी- दुनू गोटे एके बेर बान्हि देब तँ अहा की सुनबै आ की बुझबै?

रामलाल- कोनो तकलीफ अछि की?

संतोषी- जेकरा अहा सन घरबला रहतै, तेकरा तकलीफो हेतै आ अहुँसँ होशगर बड़की छथि। स्वामी, एगो गप्प पूछी?

रामलाल- एके गो किअए, हजार गो पूछिते रहू।

संतोषी- अहा, एहेन चिकन घरवालीके रहैत दोसर बिऔह किअए केलिऐ?

रामलाल- बड़कीसँ बेटा होइमे किछु बिलंब देखलिऐ तँए दोसर केलिऐ।

संतोषी- नै यौ, दोसर गप्प भऽ सकै छै।

रामलाल- हमरा तँ नै बूझल अछि, अही बाजू दोसर की भऽ सकै छै?

संतोषी- अहाके, अहाके, अहाके, एगोसँ मोन नै भरल।

रामलाल- बस कर , बस कर , अहा तँ लाल बुझकड़ि छी। अहा तँ अंतयामी छी। ओना मोनके जतए दौगेबै, ओतए दौगतै।

मन ही देवता, मन ही ईशर, मन से बड़ा न कोइ। मन उजियारा जब जब फैले, जग उजियारा होय।। (इसकूल पोशाकमे सोनीक पवेश।)

सोनी- पापा, पापा, इसकूलक फीस दियौ।

रामलाल- माएके कहियौ बुच्ची।
सोनी- माए, इसकूलक फीस दिअ न।
लक्ष्मी- कते फीस लगतौ?

सोनी- तो नै बुझै छीही छअ गो थिदा िक छअ सए टाका।
लक्ष्मी- छोटकी, जाउ, दऽ दियौ ग।
संतोषी- बेस, लेने अबै छी। (संतोषी अन्दर जा कऽ छअ सए टाका आनि सोनीके देलखिन आ फेर पछिला सेवामे भीर गेलीह।)
रामलाल- छोड़ै जाइ जाउ आब। अंगना-घर देखियौ। अहुँ सभके कनी, काज होइ छै। (दुनू पती चलि गेलीह।)
पटाक्षेप।

दृश्य- पाच
(स्िान- रामलालक घर। रमाकान्त मुखियाक संग बलदेब वाडि सदस्यक पवेश।)
बलदेव- (दलान परसँ) रामलाल, रामलाल भाय।
रामलाल- (अन्दरेसँ) हइए एलौ भाय। दलानपर ताबे बैसु। जलखै कएल भऽ गेल।
बलदेव- मुखियोजी एलाह, कने जल्दिये एबै।
रामलाल- तहन तुरन्त एलौ। (हाि-मुँह पोछैते पवेश। पणाम-

पाती कऽ अन्दरसँ दूटा कुर्सी अनलथि। रमाकान्त आ बलदेब कुर्सीपर बैसलाह। मुदा रामलाल ठाढ़े छथि।)

रामलाल- मुखियाजी, आइ केम्हर सूर ज उगलै? आइ रामलाल तरि गेल सरकार। कहियौ सरकार हम केना मन पड़लौ। इनरा आवासबला कोनो गप्प छै की?

बलदेव- गप्प तँ इएह छै। मुदा पहिने कुशल-छेम, तहन ने अगिला गप-सप्प। कहु अपन हाल-समाचार।

रामलाल- अपने सबहक कृपासँ हमर हाल-समाचार बडड बढ़िया अछि। भाय, अपन हाल-चाल कहु।

बलदेव- भाय, एकदम दनदनाइ छै।

रामलाल- आ मुखियाजी सरकारका।

रमाकान्त- हमरो हाल-चाल बड़ बढ़िया अछि। वएह एलेक्शन नजदीक छै तँए पंचायतमे घुमनाइ औवश्यक बुझलौ। संगे संग अहुँक काज रहए।

रामलाल- तहन अपने किअए एलिऐ, हमही चलि अबितौ।

रमाकान्त- देखियौ, जनता जनार्दन होइ छै। पहिने जनता तहन हम। जनता मुखियाके बड़ आशासँ चुनै छै। ओइ आशाक पूर्ति केनाइ हमर परम कर्तव्य छै।

रामलाल- अपने महान छिऐ। अपनेक आगू हम की बजबै?

बलदेव- मुखियाजी, कने ओकरो ऐठाम जाइक छै। हिनकर काज जल्दी कऽ दियनु।

रमाकान्त- तहन दऽ दियनु। (बलदेव बेगसँ बीस हजार टाका

आकाश्म रामलालके देलश्वन।)

रामलाल- (पाच सए टाका आकाश्म) मुश्वयाजी, ई अपने राश्व श्मओ।

रमाकान्त- नै, ई नै भऽ सकैए। ई अपने रश्वयौ। हमरा पेट ले बहुते फंड छै। कहबी छै- ओतबे खाइ जइसँ मोछमे नै ठेकए।

रामलाल- भगवान, एहेन मुश्वया सगतर होइतै।

बलदेव- रामलाल भाय, जतए-ततए सुनै छी अहाक पश्वारक संबंमे। तँ मन हश्वत भऽ जाइए। एहेन सुन्दर ढंगसँ पश्वार चलेनाइ आइ-काश्म असंभव अश्छ।

रामलाल- सभ भगवानक श्करपा छन्श्ह आ अपन करतब तँ चाहबे करी।

रमाकान्त- हमरा लोकश्न जाइ छी। जाउ, अहुँ अपन काम-काज देश्वयौ। (रमाकान्त आ बलदेवक पस्िान)

रामलाल- िन्यवाद बलदेव भाय, िन्यवाद मुश्वयाजी एश्हना सभ जनतापर श्वआल रखबै।

पटाक्षेप।

दृश्य- छह

(स्िान- लखनक घर। मीना अपन बेटी रामपरी आ बेटा कृष्णाक संग बैडश्मटन खेल रहल अश्छ।

रामपरी- मम्मी, कश्म कऽ मारहीन ने। कौकिनै उड़ै छौ।

मीना- बेसी कश्म कऽ नै लगै छै। कम-सँ-कम बौओ जका बमकाही

ने?

(मनोजक पवेश)

मीना- ओएह, एलौ सरिआ भाड़ैले।

रामपरी- आबए दहीन ने मम्मी। भायजी छथिन।

मीना- भायजी छथिन। कप्पार छथिन। कौकिफूथ्व जेतौ तँ आथ्म कऽ देतौ?

रामपरी- मम्मी, भायजी कतए सँ आथ्म कऽ देतै, तोही कह तँ। आथ्क पापा आथ्म देथिन।

मीना- पापाके हम जे कहबै, से करथिन। तोहर कहल नै करथिन।

रामपरी- मम्मी, ई गप्प तोहर नीक नै भेलौ आ पापोके नीक नै भेलथ्म।

मीना- तो पंचैती करैले एलँह की बैडथ्मटन खेलैले? खेलबाक छौ तँ खेल नै तँ जो एतएसँ।

रामपरी- तोही सभ खेल, हम जाइ छी। (खीथ्मया कऽ रामपरीक पस्थान। रामपरीबला बैटसँ मनोज बैडथ्मटन खेलए लगैत अथ्छ। मीना बैटेसँ ओकरा मारैले छुटैत अथ्छ। फेर दुनू माय-पुत बैडथ्मटन खेलए लगैत अथ्छ।)

कृष्णा- मम्मी, तोरा दीदी जका खेलल नै होइ छौ। कने पापाके कहबीन सीखा दइले से नै।

मीना- बौआ, पापा हमरा की सीखेथिन, हमही सीखा दइ थ्छए।

कृष्णा- तेकर माने तो पापासँ जेठ छीही?

मीना- उमरमे भलथ्ह छोट हएब मुदा अकलमे थ्मथ्मते जेठ। (संतोषक

पवेश)

संतोष- हमहूँ खेलबै कृष्णा। (बैट लऽ कऽ खेलए लगैत अछि। झटसँ मीना संतोषक हासिँ हाि मोचाकि कऽ बैट लऽ लैत अछि। टुनकीबला आ मुड़ीमचर आ कहि बैटसँ मारैले दौगैत अछि। संतोष भागि जाइत अछि। ओइपर खीसियाया कऽ कृष्णा एक बैट मम्मीके बैसा दैत अछि।)

कृष्णा- तो बड़ खच्चर छे मम्मी। खेलल-तेलल होइ छौ नहि ये आ जमबै छे। अखैन संतोष भायजी रहितै तँ खूम बैडमिंटन खेलतौ की नै।

मीना- संतोषबा तोहर भायजी नै छिऔ। जेकर छिऐ से बुझतै। तोरा ओकरासँ कोनो मतलब नै।

कृष्णा- किअए मम्मी? उहो तँ हमरे पापाक बेटा छिऐ ने?

मीना- मुदा तोहर मम्मीक बेटा नै ने छिऐ।

कृष्णा- बुझबीहीन तँ किअए नै हेतै? नै बुझबीहीन तँ हमहूँ तोहर दुश्मन छिऔ।

मीना- बकबास नै कर। कालि जनमले आ बुढ़बा जका गप्प करै छे। सभ बात तो अखैन नै बुझबीहीन। आब कालि खेलिहे चल।

(बैट-कौकलिऽ कऽ मीना-कृष्णाक पस्िान।)

पटाक्षेप।

दोसर अंक

दृश्य- एक

(स्थान- रामलालक घर। संतोषी बिस्तरपर पड़ल अछि। पाच भाय-बहिन इसकूल गेल अछि। मुदा सोनी घरेपर अछि सोनीक तबीयत ठीक नै अछि।)

संतोषी- सोनी बुच्ची, कनी देह दबा दिअ तँ?

सोनी- हमरा अपने माथ दुखाइए। तँए इसकूलो नै गेलौं। अखन छथि बाबू मुँहे छी। खैर अहा तँ छोटकी माए छी। अहाक अजाक पालन केनाइ हमर परम कर्तव्य छी।

संतोषी बुच्ची अहा बुधियार छी ने। (सोनी संतोषीक देह दबाए रहल अछि।)

सौनी- छोटकी माए, बड़ भुख लागल-ए, कनी खाइले दिअ।
संतोषी- हमरा नै हएत। जाउ अपनेसँ लऽ लिअ गऽ।
सोनी- एक दिन अही कहने छेलिऐ, अपनेसँ खाइले किछुयो नै लइले। धिया-पुताके घरमे जाइ छै। तँए हम अपनेसँ नै लेब।

संतोषी- लिअ वा नै लिअ। हमरा बुते नै हएत देल। अपना देहमे करौआ लागल अछि।

सोनी- जाइ छिऐ बड़की माएके कहैले।
(सोनी, लक्ष्मीके कहैले अन्दर गेलीह। एमहर संतोषी और गबदीआ कऽ पड़ि रहलीह। सोनी आ लक्ष्मीक पवेश।)
लक्ष्मी- छोटकी, छोटकी, छोटकी।
सोनी- अखने जगले छेलै। तुरन्ते देखही। गै माए सूतल लोक ने जगैए, जागल की जगतै।
लक्ष्मी- (जोरसँ) छोटकी, छोटकी, छोटकीऽ ऽ ऽ ऽ।
(संतोषी फुरफुरा कऽ उठै छथि।)
संतोषी- की कहै छिऐ दीदी?

लक्ष्मी- सोनीके अहा की कहअए कहै छिऐ, देहमे करौआ लागल अछि?

संतोषी- हम से कहा कहै छिऐ। हम अपना दऽ कहै छिऐ जे हमरा देहमे करौआ लागल अछि की। एतबेपर बुच्ची भागि गेलीह।

सोनी- अपन बेटाक मा‍िपर हा‍ि रख्ब कऽ कहबै?

संतोषी- हम बजबे नै केश्नाऐ। एतेक आश्वा श्चकअए उठबै छी सोनी।

सौनी- आश्वा तँ अहा उठबै छी आ लगबै छी। हमरे मा‍िपर हा‍ि रख्ब कऽ बाजू तँ।

संतोषी- हँ यै, साच बात श्चकएक ने बाजब। आउ, लग आउ।

लक्मी- बूझ्ञ गेलौ अहा कते साच बजै छी। अनकर बेटा-बेटी उपरेमे अबै छै आ अपन बड़ कसेब कऽ छै। ैश्रालज्िजी नञ्जतन। झूठ बजैत कोनो गतरमे लाजो नै होइ छन्श्च।

संतोषी- ैश्रालज्िजी तँ अहा छी जे बेटीक पक लऽ कऽ फेश्वकया कऽ उठै छी।

लक्मी- ैश्रालज्िजी ैश्रालज्िजी करब तँ अखैन झोटा पकश्च़ कऽ पोटा ैश्राकाश्च देब।

संतोषी- कनी देश्वयौ तँ झोटा पकश्च़ कऽ। (रामलालक पवेश)

रामलाल- अहा सभ क‍िले हल्ला-फसाद करै छी? चुपै जाउ। छोटकी, की बात छै?

संतोषी- दुनू माइ-‍िन हमरा कहैए, झोटा पकश्च़ कऽ पोटा श्राकाश्च देब।

रामलाल- बड़की, अहा से श्चकअए कहश्नाऐ?

लक्ष्मी- हँ हँ, हमरा सीग बह्ठ गेलै तँए दुआरे। ओकरे पुछ्हियौ तँ।

रामलाल- की बात छै छोटकी?

संतोषी- ओकरे सभके पुछ्हियौ।

रामलाल- की भेलै बुच्ची?

सोनी- हमरा मािा दुखाइ छेलए। इसकूलो नै गेलौ। बाबाये मुँहे रही। छोटकी माएके कहइयमा खाइले थ्दअ। तँ ओ कहलथ्मा, अपनेसँ लऽ थ्माअ। देहमे करौआ लगल अह्छ। ई बात बड़की माएके कहइयमा तँ ओ माएसँ लड़ैले तैयार छथि।

रामलाल- हमरा तोरापर थ्वशास अह्छ बुच्ची। तो फूह्म नै बाथ्म सकै छे। हम बात बूह्म गेलौ। छोटकी, सोलहनी अहाक गलती अह्छ। बड़कीसँ अहा लगती मानू। नै तँ एहेन घरवाली हमरा नै चाही। अपन जोगार देखू। जेहने हमर पथ्रवारक सुबेवस्ािक चचा सौसे गाम होइ छेलए तेहने पथ्रवारक पथ्माष्ठाके माथ्टमे थ्मलबए चाहै छी। तुरन्त सोथ्च कऽ बाजू, की चाहै छी?

संतोषी- (थ्कछु सोथ्च कऽ, बड़कीक पएर पकथ्ड़) हमरेसँ गलती भेलै। आब गलती कथ्रयो नै हेतै।

रामलाल- बड़की, आइ माफ कऽ थ्दयनु। आइ थ्दनसँ गलती नै करतै। सथ्दखन मीथ्म कऽ रहै जाइ जाउ। ‘‘जहा सुमथ्त वहा सम्पथ्त नाना। जहा कुमथ्त वहा थ्वपथ्त थ्नािना।’’

पटाक्षेप।

दृश्य- दू

(स्थान- लखनक घर। लखन दलानपर बैसल छथि आ पारिवारिक स्थितिक संबंधमे सोचि रहल छथि।)

लखन- की करी नै करी, किछु ने फुराइत अछि। बेटी रामपरी सेहो ताड़ जका बढ़ि रहल अछि। आमदनी कम छै आ परिवारमे खचा बड़ छै।

(मनोज आ संतोषक पवेश।)

मनोज- पापा, बहुते छौड़ा सभ इसकूल जाइ छै पढ़ैले। हमहूँ सभ जाएब। हमरो सभके नाम लिखा दिअ ने सरकारी इसकूलमे।

लखन- नाम लिखबैमे पाइ लगतै, किताब-कोपीमे पाइ लगतै, टीशन पढ़ैमे पाइ लगतै। हमरा ओतेक सकरता नै अछि। हमरा बुते नै हेतौ। पहिने पेटक चिन्ता कर।

संतोष- पापा, रामपरी आ कृष्णा जे पब्लिक इसकूल जाइ छै से? ओकरा सभके पाइ नै लगै छै?

लखन- से मम्मीसँ पुछही गऽ। पाइ कोनो हम दइ छिऐ।

संतोष- मम्मीके बजा कऽ एतऽ आनू। कनी अपनेसँ कहबनि।

लखन- जो बजा आन।

(संतोष शीघ मीनाके बजा कऽ अनैत अछि।)

मीना- की कहै छी?

लखन- की कहब। मनोज-संतोष कहैए हमहूँ पढ़ब, से की करबै।
मीना- कप्पार करबै, अंडोरा करबै, िकलहा करबै।

लखन- एना िकअए बजै छी? बोलीमे कनियो लक्ष्म नै अछि। हरदम िनशामे चूर रहै छी।

मीना- बड़ फटर-फटर बजै छी। मुँह बन कर , नै तँ बूझि जाएब। जाउ अहा एतएसँ। एकरा सभके हम जबाब दइ छिऐ। (लखनक पस्िान) की कहले मनोज?

मनोज- मम्मी, हमरो सभके इसकूलमे नाम लिखा दिअ। बहुते छौड़ा सभ इसकूल जाइ छै।
मीना- बड़ पढ़ुआ भऽ गेले तो सभ? िबना ढौए के पढ़ाइ होइ छै, की खेनाइ होइ छै? पेट भरै छौ तँए फुराइ छौ। एतऽ सँ अक्खैन भाग। नै तँ बढ़नी देखै छीहीन। कमा कऽ लाऽ तँ खो वा पढ़। नै तँ घर नै टिक सकै छे तो सभ।
मनोज- मम्मी, हमरा सभके कमाएल हेतै। जन मे के रखतै?

मीना- नै कमाएल हेतौ तँ भीखे मँगिहे आ ओम्हरे खैहे।

संतोष- अपना बेटा-बेटीके पढ़ाबै ले होइए आ हमरा बेरमे की होइए?

मीना- भगले सरिए सभ की?
(बढ़नी लऽ कऽ मारैले दौगल। संतोष भागि गेल। मनोज

पकड़ा गेल। “पढ़ुआके सार अछि भगले एतए से” कहि कहि मनोजके मीना बढ़नीसँ झँटलक। अन्तमे हासिँ छूटि कऽ कनैत-कनैत भागि गेल।) पढ़ैए। फोकटेमे पढ़ाइ होइ छै।
(हकमैत-हकमैत) ऊपरेमे अलुआ फड़ै छै। पटाक्षेप।

दृश्य- तीन

(स्थान- आन गामक बाट। मनोज कानि रहल अछि। संतोष-संतोष चिचिया रहल अछि। बटोही सभसँ पूछि रहल अछि। आँखिसँ दहो-बहो नोर जा रहल अछि।)
मनोज- हौ बटोही, हमरा संतोषके देखलहक?

हरेराम- नै, हम नै देखलियौ।
मनोज- (सुसुकि-सुसुकि कऽ कानि) संतोष रौ संतोष। असगरे हम केना रहबै रौ संतोष। तो कतए भागि गेले रौ संतोष। हौ बटोही, एगो छौड़ाके भागैत कतौ देखलहक?

अनबर- नै बौआ, नै देखलियौ। के छेलौ तोहर ओ?

मनोज- हमरे भाए छेलै। यै काकी, एगो छौड़ाके देखलिएऐ केम्हरो भागल जाइत।

आरती- हँ बौआ, एगो छौड़ा हमरे पाछू-पाछू अबै छेलए। अखने केम्हर गेल केम्हर नै। कतेटा छेलाए? केहेन कपड़ा-लता पहिरने छै?

मनोज- नअ-दस बखक्ि छै। मश्व-ढश्व कपड़ा पश्वरने छै।

आरती- हँ देखश्वयौ बौआ। देखहीन गऽ अही सभमे कतौ बौआइत हेतौ। तुरन्ते हमरे पाछू-पाछू छेलौ।

मनोज- संतोषबा श्वयँए रौ, संतोषबा श्वयँए रौ।

संतोष- (अन्दरसँ) हँ, हइए छी भाइजी। आबै छी।

मनोज- कतए छे रौ? जल्दी आ।

संतोष- भूख लागल छल। अही अंगनामे खाइ छेलौ। जल्श्वये एलौ।

मनोज- जल्दी आ।

(संतोषक पवेश।)

संतोष- भायजी यौ भायजी।

मनोज- बौआ रौ बौआ। तोरा फकरैत-फकरैत हमरा ठोठ सुखा गेलौ। (दुनू गरदश्व श्वलैत अश्व) संतोष, भूख हमरो बड़ लाश्व गेल छौ। चल, केकरोसँ माश्व कऽ खएब।

संतोष- भायजी, ई मश्वकाइन बड़ नीक लोक छै। एके बेर कहश्वयश्व जे मश्वकाइन श्वकच्छो खाइले श्वअ, बड़ भूख लगल यऽ तँ कहलश्व- आ, खा ले। बेचारी भश्व पेट खुएलक। एक बेर अहुँले पूछऽ श्वअ

मनोज- बौआ, मश्वकाइन की सोचश्विन जे छौड़ा सभ बड़ लोभी अश्व।

संतोष- भायजी, बेगरता भेलापर गदहोके नाना कहए पड़ै छै। आ ओ तँ मश्किकाइन छथिन।

मनोज- बेस, पूछहीन। (संतोष अन्दर जा कऽ)

संतोष- मश्किकाइन, मश्किकाइन।

राि- की कहै छै?

संतोष- कहैत तँ लाज होइए।

राि- कह ने, की कहए चाहै छे?

संतोष- भायजीओ के बड़ भूख लागल छै। परसुए श्वानसर मम्मी हमरा दुनू भाइके बाढ़श्नसँ झाश्ब-झाश्ब कऽ घरसँ भगाए देलक।

राि- बाप नै छिन?

संतोष- बाप ओकरे श्वस छै। हमरा सभके कहैए पश्नने पेटक श्चन्ता कर।

राि- माए अपन नै श्छयौ?

संतोष- नै, हमर माए मश्र गेलै ने तँ पापा दोसर श्बआह केलकै।

राि- भायजीके बजा आनहीन।

संतोष- मश्किकाइन, श्वयौ ने, लेने जाइ श्छऐ। दूरेपर खा लेतै।

राि- तो चल। हम लेने अबै श्छऐ। (संतोष बहराए मनोज लग आएल।)

मनोज- की कहलखुन?

संतोष- कहलथिन, तो चल। हम लेने अबै छी। (राधिक पवेश। लोटामे पानि आ थारीमे खेनाइ लऽ कऽ)
राधि- ले बौआ खो। (मनोज बैसि कऽ खाए रहल अछि।) बौआ, नवकी माएके धीया-पुता छौ?

मनोज- हँ, दूगो छै- एगो बेटा-एगो बेटी।
राधि- ओकरा सभके मानै छै की?

मनोज- हँ हँ, खूम मानै छै। पढ़ेबो-लिखेबो करै छै। हम कहलिऐ- हमहूँ सभ पढ़ब। तइले हमरा बाढ़नियाये-बाढ़नियाये खूम झाँटलक आ घरोसँ निकालि देलक।
राधि- तो खो बौआ। दुनू भाइ भीखो मांगि कऽ पढ़िहह-लिखिहह। आइ-काल्हि बहुत पढ़ने काज नै चलतह। केहेन-केहेन पढ़ुआ तँ घास छिलै छै आ मुरखाहाके के पूछतै?
(मनोज खा कऽ थारी धोइ देलक।) आब तो सभ जो बौआ। (दुनू राधिक पएर छूबि पणाम करै छै। राधि दुनूके असीरवाद माथपर हाथ राखि कऽ दइ छथिन।)
पटाक्षेप।

दृश्य- चारि
(आन गामक बाट। बाटमे चलैत-चलैत मनोज आ संतोष गप-सप करैत अछि। भीख मंगैक योजना बनबैत अछि।)
मनोज- हम गेबै तँ तो बजबिहे आ तो गबीहे तँ हम बजेबौ।

संतोष- भायजी, अहा की गेबै आ हम की बजेबै?

मनोज- दुनू भाइ अल्ला-र दल गेबै आ लोटे-थ्छपली बजेबै। जेना मुसहरीमे होइ छेलै।

संतोष- लोटा-थ्छपली कतए सँ आनबै?

मनोज- केकरौसँ माथ्गि लेबै।

संतोष- भायजी, एगो कह्निय़ौ तँ।

मनोज- कहै छ्छिऐ। आ ऽऽऽऽ, जतरा बनेन्हिऐ शारदा मैया आजू गै बनाय ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ।

भीख मंगैले एलौ, अही गाम-घरमे। पढ़ैले कहन्हिऐ तँ, देलक माए थ्रकाथ्रा। बढ़नीसँ झाथ्ढ-झाथ्ढ कऽ सतौत भगौलक।

(अल्ला र दल सूथ्रा लोक सबहक भीड़ भऽ गेलै।)

रामसेवक- (संतोषसँ) बौआ, एगो तोहू कही।

संतोष- पाइ देबहक, खाइले देबहक।

रामसेवक- हँ देबौ।

संतोष- एगो थ्छपली आ एगो लोटा देबहक बजबैले? फेरो दऽ देबह।

रामसेवक- हँ देबौ। आथ्रा दइ छ्छियौ। (अन्दर जा कऽ एगो लोटा आ एगो थ्छपली आनलक आ संतोषके देलक।)

संतोष- भायजी, ह्निअ थ्छपली-लोटा आ बजाउ अहा। (मनोज थ्छपली-लोटा बजा रहल अछ्छि।) सुनै जाइ जाउ माता-थ्पता, भाए-बह्निन सभ। आ ऽ ऽ ऽ ऽ, से थ्कअए गै सतौत माता, अपन बेटा-बेटीले दुनू भायके भगौले। दुनू भाइ कोन गलती केन्हिऐ, नाम ह्निखबए पापाके कहन्हिऐ। पापापर ओ शासन केलकै, डरे पापा जुआ पटकलकै। अपन बेटाके इसकूल रिलकै, हमरा इसकूलक मुँहो नै देखौलकै।

तैयो बैमनमा दुनू भाइके, पेटोक जोगार नै केलकै यौऽ ऽ ऽ ऽ। (ि पिरीक बौछार भऽ गेलै। मुलश्कन ब्बस्कुट-पाइ सेहो पड़लै। दुनू भाइ पाइ ब्बस्कुट समश्च कऽ जाए रहल अछ्छ। दशक्रिगण सेहो अपन-अपन घर गेल। बाटमे दुनू भाय गप-सप करैत अछ्छ।)

संतोष- भायजी, कतेक भेलै?

मनोज- बहुते भेलै बौआ-पच्चीस गोट टाका भेलै आ पाच श्च्छब्बा ब्बस्कुट भेलै। की सभ करबीहीन पाइके?

संतोष- चलू ने भायजी होटल। खूम मासु-भात खाएब आ कनी-मनी दार ओ पीब लेब।

मनोज- एहेन गप्प फेर कश्च्चयो ि खोसँ नै बजीहे। कोन पश्चस्थि श्चामे लोक पाइ देलकौ, से मोन पारहीन। अबैकालमे मश्चाकाइन की कहने छेलखुन से मोन छौ?

संतोष- नै भायजी ब्बसश्च गेश्चाऐ। अही कश्च्चयौ।

मनोज- पढ़ै दऽ ऽ ऽ।

संतोष- हँ हँ हँ, आब ि कि दऽ मोन पड़ल। दुनू भाय भीखो माश्चा कऽ पढ़ीहे-श्चाखीहे। आइ-काश्च्च श्चान पढ़ने काज नै चलतह।

मनोज- तब सएह, हमरा लोकश्चा केना पाइक गलत काज करब? गुरो खुदीसँ काज चश्च्च जेतै। पश्च्चने पढ़ैक जोगार कर बौआ।

संतोष- आ रहबै कतए?

मनोज- चल ने, कतौ हलुको दाममे ओढ़ना-बिछौना कीनि लेब आ कोनो टीशनपर रहब। ओतए इजोतो रहै छै। ओही इजोतमे रातिमे पढ़बो करब आ गुजर जोग गीत गाबि पाइयो कमाएब।
संतोष- भायजी, बड़ नीक विचार अछि। चलू, पहिने कोनो सरकारी इसकूलमे दुनू भाइ नाओं लिखा लेब। तहन रहैक जोगार करब। सरकारी इसकूलमे पाइ बड़ कम लगतै। कतौ जँ मोनसँ पढ़बै तँ नीक फैदा हेतै।

मनोज- बेस, चल बौआ। आइ कतौ नाओं लिखाइये लेब। चल। (मनोज आ संतोषक पस्थान।)
पटाक्षेप।

दृश्य- पाच (स्थान- लखनक घर। लखन आ मीना आपसमे गप-सप कऽ रहल अछि। रामपरी आ कृष्णा इसकूल गेल अछि।)
मीना- स्वामी, छौड़ा सभ माथ खराब कऽ देने छेलए। भने भागि गेल। कहै छेलए पढ़ब। बड़ पढ़ुआक सार भऽ गेल रहए। अपन दुनू बेटा-बेटीक पढ़ाइ केना होइ छै से हमही की अँहे बुझै छी।
लखन- अहा कोनो गलती कहबै रानी। मुदा कहियो-कहियो मोन पड़ि जाइए तँ बुकौर लागि जाइए।
मीना- एकर माने अहाक धियान ओकरे सभ दिस अछि हमरा सभ दिस नै।
लखन- आहि रेबा, ओकरा सभ दिस रहितए तँ ओकरा सभके तैकतिऐ ने, खोज-खबरि रखितिऐ ने?

मीना- नै यौ, अहा हमरा सभपर धियान नै दइ छी।
(आइसँ हमरा अहाक कोनो मतलब नै।)
(र रहल रहैत अछि।)

लखन- अहा खातीर हम दुगो बेटा-बेटी आयागलौ आ तैयो उनटे मुँह फुलेने छी।
मीना- ओइ दुनू चकेठबाक नाओं नै लिअ। नै तँ बात केनादन भऽ जाएत।
लखन- संतोषबा मनोजबाक नाओं आब नै लेब। सएह ने और की?

मीना- हमरा टोकू नै सकै छी। हमर बेटा-बेटी मेघसँ ढब सन खसलै की।
लखन- हे हे, पएर पकड़ै छी, दाढ़ी पकड़ै छी। (छुलकि-छुलकि मीना भागि रहल अछि। लखन आगा-पाछा करैत खुशामद करैत अछि। मुदा ओ लखनसँ बजा-भुकी बन केने अछि।) हे हे, लोक सभ की कहतै? लखना बहुरागी भऽ गेल। लाउ जाँघ दइ छी। ऐ बीचमे अहा बड़ मेहनति आबला काज केलौ। मीना कृष्णा आ रामपरीक खातिर हम जान दइले तैयार छी। अहा सन सुनरि दुनियामे के छै? हेमा मालीन अहाक तरबो जका नै छै। लाउ पएर रानी, कने जाँघ दइ छी। हे हे, कान-नाक पकड़ै छी। अहाक कहल नै काटब। (मीना पएर बढ़ाए देलनि। लखन ओकरा जाँघि रहल अछि।)
मीना- देखबै, दुनू भाए-बहिन नाम करतै। कोनो सरकारी इसकूलमे

पढ़ै छै की। पब्ल्किक इसकूलमे, पब्ल्किक इसकूलमे। (रामपरीक पवेश)

रामपरी- पापा, मम्मीके की भऽ गेलै?

लखन- किच्छो नै। थाकि गेल छेलखुन मम्मी।

रामपरी- हम जाकि देखिऐ। अहा थकिअए हरान भेलौ। लोक बुझतै तँ की कहतै?

लखन- की कहतै बुच्ची? कखनियो गड़ीपर नाउ तँ कखनियो नाउपर गड़ी। बुच्ची, अहा अखने इसकूलसँ थकिअए चलि एलिऐ?

रामपरी- पापा, कृष्णो चलि आएल। नुकाएल अछि। इसकूलमे हेड सर खूम मारलखिन। परीक्षामे सभ विषयमे लडडूए नंबर एलै ओकरा।

मीना- तहन हेड सर पढ़ेलखिन की? काल्हिसँ तो सभ इसकूल बन कर। ऐसँ बढ़िया मुरखे।

रामपरी- हेड सर पढ़ेलखिन नै तँ आन सभ विद्यार्थिक रिजल्ट बढ़िया थकिअए होइ छै। हमहूँ बढ़िया जका पास छी। चलए नै आबए तँ अंगने टेढ़।

मीना- कहि देलियौ। काल्हिसँ ओइ इसकूल नै जेबाक छौ। सरकारी इसकूल जइहे। ओतइ नाओं लिखा देबौ।

रामपरी- बेस जएह कहबीन सएह ने करबै। मुदा।

मीना- मुदा, तुदा हम थकच्छो नै बुझै छऐ। जे कहै छौ से कर। बुझले।

पटाक्षेप।

दृश्य- छह (स्ाान- रेलबे स्टेशन। मनोजके बामा हाि कटल छै आ संतोषके दुनू आँखि गायब छै। संतोष मनोजक कनहा पकड़ि प्लेटफौमपर घूमि रहल छै। तखने अटैची लऽ कऽ राम सेवकक पवेश। राम सेवक टकटकी लगा कऽ दुनूके देखि रहल अछि। मुदा चिन्हैत नै अछि।)

रामसेवक- बौआ सभ, हमरा चिन्है छीही?

संतोष- हँ हौ, थकअए नै चिन्हबह। चिन्हल लोक कतौ अनचिन्हार होइ छै। बाजबसँ हम बूझि गेलिअह। तोही ने हमरा छिपली-लोटा आथि देने छेलहक आ गानापर पाइयो देने छेलहक।

रामसेवक- हँ हँ हँ बौआ। तोरा दुनू भाइके एना थकअए भऽ गेलौ? पहिने केहेन बढ़िया छेले।

मनोज- दुनू भाय इसकूलसँ बससँ टूरपर जाइ छेलिऐ। डाइबरके औभरटेक करैमे संतुलन नै रहलै। बस पलटी मारि देलक। छह-सात गो मरबो केलै। ि‍थि हेड सर जे हमहूँ सभ जीलौ। बेचारा अपना थिससँ खरचा कऽ जी-जान लगा देलखिन।

संतोष- दूगो स्पोटडेि भेलै। दूगो हौस्पीटल पहुँचैत-पहुँचैत दम

तोड़ि देलकै। तीन गो हॉस्पीटलमे दू दिनका बाद दम तोड़ि देलक।
रामसेवक- तो सभ आब ठीक छे ने?

मनोज- हँ अहा सबहक पएरक दुआसँ आब हमरा सभ धिकलागो भऽ कऽ ठीक छी। अहा कतए जाइ छिऐ कका?

रामसेवक- कने दिल्ली जाइ छिऐ बौआ। हमर छोटका बौआ दिल्लीयेमे पढ़ै छै। ओकर तबीयत खराब छै। सएह अबैले फोन केने रहए। बौआ, हम जाइ छिऔ। हमर गाड़ी अबै छै।

(दुनू भाइ पएर छूबि पणाम केलक।) राम सेवक असीरवाद दऽ पस्थान।)

संतोष- भायजी, अहाके इसकूलक बेर भऽ गेल हएत ने?

मनोज- हँ हँ लेटे भऽ रहल अछि। वएह भेट गेलखिन। गप-सपमे टेम लगि गेल।

संतोष- जाउ, अहा इसकूल। बेसी लेट हएत तँ सर मारताह।

मनोज- अहा ठीकसँ रहब। बेसी एम्हर-ओम्हर नै करब। स्टेशनपर चोर-उचका बड़ रहै छै। छिपछियो-लोटो पार कऽ देत।

संतोष- हम लगे-पासमे घुमबै आ जतए जेबै झोरा लटकेने जेबै आ लटकेने रहबै। जाउ अहा, लेट होइए। (मनोज बस्ता लऽ कऽ पस्थान)

पढ़ै तँ हमहूँ छेलौ। पढ़ैयोक मोन होइए। मुदा भगवानक इएह मजी छेलनि तँ हम की कऽ सकै छी? पढ़ि सकै छी मुदा। खाइर हमरा नै पढ़ल हएत तँ कोनो बात नै। मुदा जेना-तेना भाइजीके अवस्स पढ़ाएब। आगू भगवानक किरपा। (प्लेटफौमपरि एकठाम बैस

कऽ झोरासँ थारी-लोटा निकालि आ झोरा कनहापर लटका अल्ला-र दल गेबाक तैयारी केलक।)

(1) आ ऽ ऽ ऽ ऽ, जतरा बनेलौं माए बाबू भैया

भीख मंगैले आइ। टका-दू टकासँ ककरो ककरो नै ककरो यौऽऽऽ। करमक फल सभके भेटै छै, भलाइक बदला भलाइ भेटै छै। मुटी बान्हि सभ ककरो अबै छै, हाथ पसारि सभके जेनाइ छै। तैयो नै दाइ-माइके दया अबै छै आइऽ ऽ ऽ।

(दर्शक-श्रोताक भीड़ पाइ बरसा रहल छै। संतोष मस्तीमे गाबि रहल छै।)

(2) कोन कुकर्म केलौं माए हम, बाबू भैया दाइ-माइ। जेकर फल आइ भोगै छी यौऽ ऽ ऽ। सतौत माए घरसँ भगौलकै, बाप पेती भऽ घूमि नै तकलकै। दसे-बारहमे दुनूके भगौलकै, भरि पेट खाइले नै देलकै। पढ़ैले बढ़नीसँ झँटलकै, अपनाके खूब पढ़ौलकै। भीख मांगि दुनू पढ़ै छेलौ, बस पलटीमे धकलाग भेलौ आन्हर भऽ नै पढ़ि सकलौ, भायजीके इसकूल पठेलौ अनाथ कि नाथ अही सभ दुखियाके उबारबै यौऽ ऽ ऽ ऽ।

(थपरीक बौछार भेल। पाइक ढेर लागि गेलै। पाइ समेटि संतोष अपन जगहपर आबि गेल। सभके प्रणाम कऽ संतोषक प्रस्थान।)

पटाक्षेप।

तेसर अंक

दृश्य- एक

(लखनक घर। लखन आंगन बहाथ्र रहल छथि। मीना खश्चयापर पड़ल-पड़ल हुनका देख्र रहल छथि।)

मीना-   कने हाि बैसा कऽ बहारब। खर-पात ओश्चना छूथ्र जाइए।

लखन- हमरा जश्चना हएत तश्चना ने बहारब।

मीना-   खाली तीन मन भातक गोला खाइमे होइए। होउ, हबर-हबर अंगना बहार । बरतनो ओश्चना छै।

लखन- ताबे अहा बरतनो माथ्म लेब से नै।

मीना-   श्चकअए अहाक देहमे करौआ लागल अश्च। हम आइ श्चकच्छो नै करब। आइ हम भश्च श्चन बैस-सुश्च कऽ खुशी मनाएब।

लखन- किीक खुशी?

मीना-   आइ दुनू भाए-बश्चनक मैश्चकक श्चजल्ट श्चकलैबला छै। दुनू बुझैले इसकूल गेल अश्च। ओना दुनू बश्चया नम्बरसँ फस्ट हेब्बे करतै। ई हमर दाबा अश्च।

लखन- पाश्चमे मछरी, नअ-नअ कुश्चया बखरा। श्चजल्ट अपना हाि मे अश्च जे दाबा करै छी।

मीना-   अपन हाि मे नै अश्च तइसँ की। हमर बेटा फस्ट श्चश्चजनसँ पास करबे करत।

लखन- खाइर अहासँ के जीतत?

मीना- तहन थ्कअए मुँह लगबै छी? जाउ, बरतन-बासन आश्न थ्नअ। एतै माथ्न थ्नअ। खेनाइयोक बड़ बेर भऽ गेलैए। (लखन अन्दरसँ बरतन-बासन आश्न माथ्न रहल अछ्थ्।)

लखन- अखैन तक बौआ सभ नै आएल?

मीना- जे काज करए गेलै से कए कऽ ने आएत। ओना अथ्बते हएत। ताबे हम सुतै छी। (कनैत-थ्बजैत कृष्णा आ रामपरीक पवेश।)

लखन- थ्कअए कनै छह बौआ? थ्कअए कनै छी बुच्ची?

रामपरी- (थ्नचथ्क-थ्नचथ्क कऽ) हम एक नंबर ले फाइल भऽ गेथ्नऐ।

लखन- आ बौआ?

रामपरी- बौआके तँ और कनीये नंबर छै। हमरोसँ दस नंबर कम छै।

लखन- जाउ, दुनू भाए-बथ्नन, मम्मीके कथ्नयनु। बड़ दाबा करैत छेलीह। (कनैत-कनैत दुनू मीना लग पहुँचल। मीना फुरफुरा कऽ उठलीह।)

मीना- थ्कअए कनै जाइ छे तो सभ?

कृष्णा- दुनू भाए-बथ्नन फाइल भऽ गेथ्नयौ।

मीना- इसकूलमे कए गो फाइल भेलै?

रामपरी- तीन सए थ्वदाीमे दूगो। उहो हमही दुनू भाए-बश्चन।

मीना- ओ, बूझ्झ गेश्चाऐ। मस्टरबा कोनो चकर-चाश्च लगौने हाएत।

रामपरी- नै मम्मी, सरक कोनो चकर-चाश्च नै भऽ सकै छै। हमरे सबहक गलती हेतै।

मीना- जखन तोरे सबहक गलती हेतै तखन आइ अखैनसँ तो सभ श्वकताब-कोपी छुइ नै सकै छे। सोचै छेलौ बेटा-बेटीके इसपी. कलक्टर बनाएब। जो रामपरी श्वकताब कोपी लेने आ। डाश्च दइ श्चछऐ। ओते पाइमे कते जमीन कीनने रश्चतौ? तोरा सभके पढ़ाबैमे कंगाल भऽ गेलौ। अक्खैन श्वकताब-कोपी ला, सभटाके डाश्च दइ श्चछयौ।

रामपरी- एगो मौका और दहीन मम्मी।

मीना- मौका-तौका हम नै बुझै श्चछऐ। तोरा सबहक खाश्चार हम बीश्वक गेलौ। जो आब तो सभ मुर खे रह। हमरा नै पढ़ेबाक-श्चखेबाक अश्चछ। हमरा सामनेसँ भागै जाइ-जो।

(दुनू भाए-बश्चन मम्मीक पएर पकश्च लैत अश्चछ।)

रामपरी- मम्मी, एकटा मौका और दहीन।

कृष्णा- मम्मी, एगो मौका और दहीन।

लखन- कहै जाइए तँ एगो मौका और श्वदऔ। असफलते सफलताक जननी अश्चछ।

मीना- हमरा नै सीखाउ। हम अपने बड़ सीखने छी। केहेन केहेन

गेल्लाह तँ मोछबला एल्लाह आ मोछबला गेल्लाह तँ आमोच्छा एल्लाह। अपन काज कर अहा। पएर छोड़ै जाइ जो। मौका हम नै बुझै छऐ। (कृष्णा आ रामपरी पएर नै छोड़ै छै। मीना जबरदस्ती लगमे राखल ठेगासँ दुनूके माथ-माथ कऽ भगबै छै।) सभसँ घरया काज पढ़ेनाइ-खेनाइ अछ। एहनो सड़ल काज कियो करए? पटाक्षेप।

दृश्य- दू (स्थान- रामलालक घर। लक्ष्मी, संतोषी, सोनी, मोनी, पप्पू, रानी, अमर आ सुमन रामलालक संग पसन मुरामे बैसल छथि दलानपर। सभ एक दोसरके चकलेट खोआ रहल अछि। सोनी-मोनीक रिजल्टक खुशीमे।)

रामलाल- हमर सोनी बेटी अपन इसकूलमे स्टूड फस्ट आ मोनी स्टूड सकेण्ड केलीह। एहेन सुन्दर रिजल्ट पाबि हम अखन पसन छी। आ बड़की अहा?

लक्ष्मी- रिजल्टक खुशीमे हमरा मोन होइए दार पीबितौ। मुदा लोक की कहत?

रामलाल- छोटकी अहा?

संतोषी- हमहूँ बहुत पसन छी। हमरा मोन होइए जे हमहूँ पढ़ितौ आ एहने रिजल्ट अनितौ। बड़ नाम होइतए।

रामलाल- ई तँ आब संभव नै अछि। धीया-पुताक संबंधमे

अपन विचार दिअ।

संतोषी- हमर इएह विचार जे जतेक संभव हुअए, सभ धिया-पुताके मनसँ पढ़ाउ आ काबिल बनाउ। विद्या सभसँ पैघ निधि छी। ई स्थायी संपत्ति छी।

रामलाल- अहाक विचार अति उतम अछि। हमरा बेसी पढ़ाएल तँ नै हएत मुदा जतए तक हएत तइमे पएर पाछू नै करब। मरैतो दम तक हिम्मत नै हारब। सुनै जाइ-जाउ बौआ-बुच्ची सभ। अहा सभ खूम मनसँ पढ़ु। खचा जे हेतै से हम जेना-तेना पुराएब।

सभ धिया-पुता- जी पापा, हम सभ खूम मनसँ पढ़ब आ बड़का हाकिम बनब।

पटाक्षेप।

दृश्य- तीन

(स्थान- रेलबे स्टेशन। संतोष अल्ला-रदल गाबैक तैयारी कऽ रहल अछि।)

संतोष- बारह बजे रातिमे भाइजी आएल रहथि, ओ कहलनि- "बौआ, हम आइ.ए.सए.क परीक्षामे स्टूड फस्ट केलौ। आब हम कलक्टर बनब। हम रेलगाड़ीमे जा रहल छी। तो ठीकसँ रहिहह। हम जल्दिये आएब।"

आ भवानक महिमा, अगम-अपार छै यौऽ ऽ ऽ ऽ। तन मन धनसँ शम कर , सफलता भेटबे करत। अहीसँ भीख मांगि भाइजीके पढ़ौलिऐ। अहीक असीरवादसँ, कलक्टर बनेलिऐ। तैयो बाप-पीती भऽ, हुलकियो नै देलकै यौ ऽ ऽ ऽ।

(नीक व्यक्तित्वमे मनोजक पवेश।)

संतोष गीत गैनाइ बन कऽ देलक। मनोज सभके दर्शने हासिँ पणाम करैत छथि।

मनोज- बौआ संतोष, नीक छी ने?

संतोष- भाइजी एलौ।

(पएर छूबि पणाम कऽ)

हम पूर्णा कुशल छी। अपने नीकेना एलौ ने?

मनोज- हँ बौआ, हम बढ़िया जका एलौ रेअरागो बड़ नीकसँ केलौ।

परम आदरणीय, माए-बाप, भाय-बहिन।

मनोजक हार्दिक पणाम। अपने सबहक अशीवादसँ हम आइ आंधपदेशक कलक्टर बनि ज्वाइन करए जा रहल छी। एकटा भीखमंगाके अपनेक टाका-दू टाका तारि देलक। तइ लेल अपने सभके हार्दिक धिन्यवाद। हमरा कलक्टर बनेबाक मूल शेय हमर परम प्रिय अनुज संतोषके जा रहल छन्हि। आइक बाद हमर संतोष अपने सभके सेवा नै कऽ सकताह। हिनका अपने संग लेने जा रहल छियनि। हमरा लेल ई की की नै केलाह। हम हिनकर संग आब केना छोड़ि देबनि। हम आजीवन हिनकर आभारी रहबनि। अंतमे, यएह कहब जे हमरा सबहक गलतीके क्षमा करब। धिन्यवाद।

संतोष- हम अपने सबहक संग घूमि-फिरल गेल रही। एतएसँ टसकबाक मोन नै होइए। मुदा भाइजीक आदेशके केना ठोकरा सकै छी? जाइए पड़त। क्षमापार्थी संतोषक दिससँ समस्त दर्शक वृंदके कोटि-कोटि धिन्यवाद।

(मनोजक संग झोरा-झपटी लऽ कऽ संतोषक पस्ािन।)
पटाक्षेप।

दृश्य- चािम

(स्ािन- कलक्टरक आवास। श्चपाही वीरभर गेटपर ठाढ़ छथि। संतोष डेरापर अछि। मनोज औफिस गेल छथि। दीन-हीन अवस्ािमे रामलालक पवेश।)

वीरभर- का बात हाउ?

रामलाल- सरकार, कनी हाकिमसँ भेट केनाइ आवश्यक छै।

वीरभर- हाकिम अभी न हाउ। जा कल अभीहह।

रामलाल- डेरापर ककयो छथिन्ह सरकार?

वीरभर- हँ, हुनकर भाए।

रामलाल- हुनकोसँ भऽ सकै अछि। कािा-कुटमैतीक संबंिमे गप-सप छै।

वीरभर- अच्छा आबह।

(रामलाल अन्दर जा कऽ संतोष लग बैस गप-सप शुर केलथि।)

रामलाल- सर पणाम, हम ठहरलौ एगो अश्चि श्चैक्षिा नि व्यक्ति। बड़ आशासँ हम अपने लग पहुँचबाक दुस्साहस केलौ।

संतोष- कहु की बात?

रामलाल- सर, हमरा तीनटा बेटी अछि। ओइमे पहिल बेटीक बिआह लेल अपने ओइठाम पहुँचलौ हे। कलक्टर सहाएबक हाि अपना बुच्ची ले मागए एलौ अछि। सर एगो गरीबोके तारीयौ?

संतोष- गरीबक संबंिमे हमरा अपने किछु नै कहियौ शीमान्। बायोडाटा आ लड़कीक फोटो अपने अनने छी?

रामलाल- हँ सर, अनने छी। इएह छिअ।

(झोरासँ निकालि कऽ सर्टिफिकेट आ फोटो संतोषके देलखिन।)

संतोष- शीमान्, लड़की केहेन छथि?

रामलाल- अपन मुँहसँ अपन बड़ाइ ठीक नै। ओना अछि।

संतोष- हम बायोडाटा कलक्टर सहाएबके देखा देबनि। हुनकर जे जेना विचार होन्हि।

रामलाल- हम काल्हि फेर आएब सर। सर, हमरा बिन्दुपर सकारात्मक ढंगसँ सोचबाक पयास अवस्स करबै।

संतोष- ईशरक इच्छापर छोड़ि दियनु।

रामलाल- ि न्यवाद सर। जय रामजी की।

संतोष- जय रामजी की।

(रामलालक पस्ािन।)

पटाक्षेप।

दृश्य- पाच

(स्थान- कलक्टरक आवास। दुनू भाइ संतोष आ मनोज बिआहक संबंधमे गप-सप कऽ रहल छथि।)

मनोज- बौआ, काल्हि औफिसमे बैसल रही तँ बिआहक लेल एकटा औफर आएल। लड़की एस.पी. छै। अहाक सोच सकारात्मक अछि। तँए अपनेक सलाह हमरा अपेक्षित छल।
संतोष- अपने श्रेष्ठ छिऐ आ आइ.ए.एस. औफिसर सेहो छिऐ। अहाके हम की सलाह दऽ सकै छी? ओना अहाक अनुपस्थितिमे काल्हि एगो गरीब पहुँचल छेलथि। हुनक जिज्ञासा आ साहसेके धन्यवाद दैत छियनि। बायोडाटा सभ आ फोटो दऽ गेलाह आ कहलनि जे कलक्टर सहाएबके देखा देबनि। हम काल्हि फेर आबै छी। ओ आइए एताह। देखियौ हुनकर बायोडाटा आ फोटो।

(संतोष मनोजके बायोडाटा आ फोटो देलनि। मनोज गौरसँ देखि रहल छथि।)

मनोज- बौआ, अहाक की विचार? ओना डेकोमेन्टस तँ सभ तरहे नीक छै।
संतोष- यदि डेकोमेन्टस अहाके पूर्णरूपेन नीक लगैए तँ ई बिआह कएल जा सकैए। गरीब ने गरीबक दु:ख बुझतै भायजी। वानर जानए आदीक स्वाद।
मनोज- बौआ, अही कहू, की निर्णय लेल जाए? एक दिस एस.पी. लड़की आ दोसर दिस साधारण बी.ए. पास लड़की सेहो गरीब।
संतोष- हमरा विचारसँ बी.ए. पास लड़की अपनाएल जाए। कारण ओ जिनगी भरि प्रतिष्ठा दैत रहतीह।

मनोज- बौआ, अहाक विचारके हम कखनो काटि नै सकै छी। कारण हमरा लेल अहाक सलाह अहा धरि नहु नै सोचि सकै छी। अहाक जे जेना विचार हएत से हमरा मान्य अछि।

हमरा औफिसक टाइम भऽ गेल। हम औफिस जा रहल छी। (मनोजक पस्थान आ रामलालक पवेश।)

रामलाल- पणाम सर।

संतोष- पणाम-पणाम। आउ बैसल जाउ।

(संतोष आ रामलाल बैस कऽ गप-सप कऽ रहल छथि।)

रामलाल- सर, हम अपन समैपर उपस्थित छी। अपनेक जे आजा?

संतोष- अपने शेष्ठ छिऐ आ कमठि सेहो छिऐ। अपनेक आजाक पालन अवस्स हेतै। अहाक पस्ताव हमरा लोकनिके मान्य अछि।

रामलाल- सर, सचमुच अपने महान छिऐ। एहेन सुन्दर विचार आ निर्णए लेल अपने सभके हमर हार्दिक धन्यवाद। तहन की केना अगिला आजा होइ छै सर।

संतोष- शीमान्, अपने गरीब छिऐ आ भाइजी के सेहो समैक बड़ बेसी अभाव रहै छन्हि। तँए काल्हि ये काली-मंदिरमे आबि विआहक कार्यक्रम संपन कऽ लिअ। पाइ-कौड़ी जे किछु खरच हेतै दुनू दिसक से हमर। जाउ, अपने सभ काल्हि काली मंदिरक पागणमे एगारह बजे पहुँचि जाएब। तखने हमहूँ सभ पहुँचि जाएब। विआह एक बजे हएत। बेसी लाम-काफ नै हेतै।

रामलाल- बेस, तँ हम जा रहल छी। जय रामजी की।

संतोष- जय रामजी की। (रामलालक पस्िान।)

पटाक्षेप।

दृश्य- छह (स्िान- काली मंदिर। पुजारी हरिनन्दन पूजामे लीन छथि। रामलाल, लक्ष्मी, सोनी, मोनी, पप्पु, संतोषी, रानी, अमर आ सुमनक पवेश।) सभ क्यो सजल-सजल अछि। तुरन्त मनोज, संतोष, वीरभर, स्टेनो अमन, आ नौकर चन्दन बरियातीक रमे पवेश। दुनू पक्सँ नमस्कार-पाती भेल। सभ क्यो कुसीपर बैसलाह। परिछन भेल। लड़का-लड़की मंदिरक सामने लागल विशेष कसी-टेबूलपर बैसलथि। पुजारी पूजा कऽ आबि कुसीपर बैसलाह।)

हरिनंदन- रामलाल बाबू, जलखैयोक जोगार छै की?

रामलाल- हँ हँ, अवस्स छै।

हरिनंदन- तहन जल्दी चलाउ। फेर बिआह-दान सेहो ने छै।

रामलाल- जे आजा होइ पंडीजी। बौआ पप्पु, नश्ता-पानि चलाउ।

(पप्पु, अमर आ सुमन नश्ता-पानि चलाए रहल अछि। नश्ता कऽ सभ क्यो अपन-अपन जगहपर बैसलथि।)

हरिनंदन- चलू लड़का-लड़की मंदिरमे।

(लड़का-लड़की मंदिरमे गेलथि। पंडीजी कंबलपर आ लड़का-लड़की कुशक चटाइपर बैसलथि। दुनूक हािमे कुश दऽ पंडीजी मंि पढ़ा रहल छथि।)

पढ़ै जाइ जाउ- ऊँ यजोपवीतम् परमं पवित्र पजा पतेर् यत सहजं

पुरस्तात्। आयुष्यमगयं पतिमृन्च शुभं यजोपवीतम्

बलमस्तुतेज:।।

मनोज+सोनी- ऊँ यजोपवीतम् परमं पवित्रं पजा पतेर् यत सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमगयं पतिमुन्च शुभं यजोपवीतम् बलमस्तुतेज:।।

हरिनंदन- चलू आब जयमाला हएत।

(लड़का-लड़की जयमाला लेल बैसलथि। मोनी और रानी जयमाला करौलथि।)

हरिनंदन- आब दुवाक्त हएत। पहिने दक्षिणा लाउ।

रामलाल- दक्षिणा आगू-पाछू भेटबे करत। किअए हर-बराइ छी पंडीजी?

हरिनंदन- अहाँ आहे कालमे हमर कन्याया सप्पत देने छथिन जे पहिने दक्षिणा तब दुवाक्त।

अमन- दक्षिणा लिअ, काज आगू बढ़ाउ।

हरिनंदन- हँ, ई भेल मरदबला गप। लाउ।

(अमन एक सए एक टाका दक्षिणा देलथि।)

दवाक्तक बाद अपने सभ मैयाके पणाम कऽ जल्दी पस्थान करबै। पंडीजी पैघके अक्त देलथि।)

ऊँ आबह बाहणो............... प्राणिणमुदयस्तव।

(पैघ जन लड़का-लड़कीके दुवाक दऽ सभ कियो मैयाके पणाम करै छथि। फेर सभ कियो नमस्कार-पाती कऽ पस्थान करै छथि।)

पटाक्षेप।

दृश्य- सात (स्थान- लखनक घर। अस्वस्थ अवस्थामे मीना चिन्तामग्न अछि।)

मीना- हे भगवान, ऐ सँ बढ़िया हमरा लऽ चलू। दुनियामे केकरो किछु नै। कोन बेमारी ऐ देहमे पैस गेल से नै कहि। इलाजो कराएब से आब खेतो-पथार नै रहल सभटा बीक गेल। आब डीहेटा बचल अछि। बेटा बेटी नै पढ़लक। दुनू नरहेर जका बौआइए। बेटी जुआन भेल जा रहल अछि। ओकर बिआह-दानक चिन्ता सेहो सताए रहल अछि। एगो कमाइबला की करत? सेहो हमरे बेमारीक चकरमे फँसल रहैत अछि।

(लखनक पवेश)

लखन- रानी, मोन बेसी खराब अछि की?

मीना- हँ बड़ बेसी खराब अछि। जीअब की नै से नै, कहि।

लखन- यै, संपति किअए रहै छै? डीह अछि ने। डीह भरना रखि दइ छिऐ। ओइसँ इलाज कराए दिअ। जीअब तहन ने भोगब।

मीना- लोक की कहत जे डीहो बहुमे लगा देलक।

लखन- हम अप्पन करतब करब।

मीना- बेस, अहाक जे विचार।

लखन- जाधरि अहाक घटमे परान रहत, ताधरि हम अपन पतिकार नै छोड़ब। कारण हम अहाक हाथ पकड़ने छी। आइ उ बेटा सभ रहितए तँ किछु उस्साहसक आशा करितौ।

मीना- के बेटा सभ?

लखन- मनोज आ संतोष।

मीना- ओकर नाम नै लिअ। नै तँ हम अहु दशापर जहर-माहूर खा लेब आ सभके जहल खटाएब।

लखन- एहेन बात छै तँ हम ओकरा सबहक नाम नै लेब। सएह ने? मुदा जहर-माहूर खा लेब तँ ओकर स्वादो तँ अहीके भेटत आ नयन सुख कते हएत सेहो कने सोचि लिअौ। अपनाके बड़ बेसी बुझनाइ सेहो बड़ खराब होइ छै। आबो अपन ई बुझनाइपर नियंत्रण राखू। अन्यथा अप्पन बुझू।

पटाक्षेप।

दृश्य- आठ

(स्थान- कलक्टरक आवास। आवासपर मनोज, संतोष, सोनी आ वीरभर छथि। वीरभर वदीमे छथि और तीनू साधारण पोशाकमे छथि।)

सोनी- स्वामी, हम अहाँ पसन छी। मुदा एतए तीनटा चीजक कमी देखाए पड़ि रहल अछि।

मनोज- बाजू प्रिय, उ तीन गो कोन चीज अछि?

सोनी- सासु, ससुर आ ननदि।

मनोज- प्रिय, अहाके कोनो चीजक कमी नै अछि। मुदा एतए नै, अपन गाममे।

सोनी- तहन एको क्षन ले गाम चलल जाए। पाणक्षय हुनको सभके दर्शन तँ कऽ लेब।

मनोज- मुदा एगो खेद अछि जे कहैमे लाज होइए।

सोनी- कहबै नै तँ बुझबै केना?

मनोज- इहए जे हमर अप्पन माए स्वर्गवास भऽ गेल छथिन, माए सतौत छथि आ ननक्ष सेहो ओही पक्क छथि।

सोनी- जे छथि से छथि, मुदा हमरा लेल वएह अप्पन छथि, सभ क्षकछु छथि।

संतोष- भौजी, अपनेक क्षचार तँ उतम अछि। मुदा वएह मए हमरा दुनू भाइके बोनक पता तोड़ौलक ने। हमरा दुनू भाइके कक्षयो मनुक्ख नै बुझलक। भीख माग कऽ खाइले कहलक पढ़ैले कहक्षाऐ तँ बढ़नीसँ झँटलक। कोन-कोन करम ने केलौ।

सोनी- बझै क्षछऐ बौआ, होनहार वीरवान के होत क्षकने पात। जदी कैकेयी अपन भरत ले राजगदीनै माक्षतथि तँ राक्स राज नष्ट होइतै? अहा सभ एतए पहुँक्षक्षाऐ आ हम एतए पहुँक्षतौ?

मनोज- से तँ अहा काए लाखक गप्प बजलौ।

सोनी- हम की बाजब क्षयतम, हम तँ मुरख छी। मुदा भगवान जे क्षकछु करै छथिन से नीके करै छथिन। हम अपने सभसँ आगह करैत छी जे इष्या-देषके क्षायाक्ष गाम चलू आ अपन समाजके देखाए क्षयनु बुझाए क्षयनु जे ईशर जे क्षकछु करै छथिन से नीके करै छथिन। संगक्ष अपन समाजमे एगो पाटी क्षअौ।

मनोज- बौआ, भौजीक विचार कटैबला नै छन्हि। काल्हि ये गाम चलू आ ओतए एगो पंचैकन पाटी भेनाइ आवश्यक छै।

(एम्हर वीरभर खैनी चूना कऽ खाइए, औंघाइए, मोछ टेरैए, मोछ फरकबैए।)

सोनी- प्रियतम, कने सिपाही दिस धियान दियौ।

(मनोज, सोनी आ संतोष सिपाही दिस धियान देने छथि।)

वीरभर- (मनमे) कए महीनासँ कनिया उपासे हाएत। सरकार छुट्टिये नै दइए। गामक नीक-निकुत खाइमे बड़ नीक लगैए। जेहन हमर कनिया सुनरि तेहने ओकर हाथक भोजन। मोन होइए जे सरकारेके छुटी दऽ दैतिऐ आ कनियेके सरकार बनाए दैतिऐ। दुनू परानी एकेठाम रहितौ। कनिया छोड़िक हम स्वर्गोमे नै रहि सकै छी।

मनोज- सिपाही, सिपाही, सिपाही ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ।

वीरभर- (फुरफुरा कऽ उठि) जी जी जी, जीर-मरीच पिसाया मरचाइ। जगले तँ छी सर। तनी मेहरारक याद आ रहल वानी।

मनोज- डयुटी पीरीयडमे एना नै हेबाक चाही। नैतँ छुटी भऽ जाएत।

वीरभर- अब ऐशन ना होइ सर।

(फेर वीरभर खैनी खा कऽ सुति रहल आ सपनाए रहल अछि।) सर कहलनि छुटी भऽ जाएत। मुदा मैडम एको बेर आइ तक नै टोकलक। बड़ पंचैकन छी तँ अपने घरमे। हमरा अहासँ कोन मतलब अछि। सभटा पशासन सभके देखै छिऐ बड़का-बड़का पेट। जेना पेटमे साढ़-पाराक बच्चा होइ। बाप रौ बा, ओइ पेटमे घूस लाए कते जगह छै? ओना हमरो पेट तँ छोट नै अछि नम्हरे

अछि। मुदा हमरा पेटमे तीनटा बच्चा अछि। उहो बच्चा केकरो आनबला नै अछि अपने कनियाबला अछि। सर नौओह केलखिन, पाइयो नै देलखिन। जाबे तक पाटी नै देतहीन ताबे तक बच्चे नै हेतनि। हमर वचनके बहो नै काटि सकैए।

मनोज- सिपाही, सिपाही, सिपाही.......।

वीरभर- (फुरफुरा कऽ उठैत) जी सर, जी सर, जी सर।

मनोज- सिपाही, अहा किअए एना करै छी? नोकरी करब, की छुटी लेब?

वीरभर- सर, छुटी तँ नै लेब। मुदा पाटी तँ लऽ के रहब। पाटी दऽ देबै। सभ नीन पार भऽ जेतै।

मनोज- बेस, काल्हि हमरा गाम चलू। ओतै मिथाज्जर पाटी हेतै।

वीरभर- तहन हम मोछ-तोछ पीजा लइ छी।

पटाक्षेप।

दृश्य- नअ

(लखनक घर। मीनाके उनटा सास चलै छन्हि। लखन चिन्तित मुरामे बैसल छथि। हुनका आँखिसँ दहो-बहो नोर जा रहल छन्हि। रामपरी आ कृष्णा चुचुक-चुचुक कानि रहल अछि।)

लखन- आब की करब? डीहो बीकि गेल। मुदा कारणी चंगा नै भेल। डौक्टर कहलनि जे ई पेसेन्ट बड़का ऑपरेशनक बादे ठीक भऽ सकैत अछि। हम पचास हजार टाका कतएसँ आनब? छूच्छाके के पूच्छा?

(मनोज, सोनी, संतोष आ वीरभरक पवेश। सभ कियो एक-

दोसर थ्वस ताथ्क रहल छथि। मुदा थ्कयो थ्कनको थ्वन्हे नै छथि।)

लखन- अहा सभ के छी?

मनोज- हम अहीक बेटा मनोज छी। ई संतोष छथि। ई हमर पती छथि। ई हमर थ्वपाही छथि।

लखन- बौआ मनोज, बौआ संतोष।

(दुनू बेटाके भथ्व पाज कऽ पकथ्क खुशीसँ काथ्व रहल अथ्छ। एक-दोसरके छौड़ैक मन नै होइ छन्थ्ह। फेर छोथ्क दइ छथि। सभ एक-दोसरके गोर लागै छथि। मुदा मीना, मनोज, संतोष आ सोनीक गोर लागै कालमे पएर छीप लेलथ्व।)

डोरी जथ्व जाए मुदा ऐंढ़न नै जाए। आबो चेतू। मरनासन अवस्थामे छी।

मीना- (कुहथ्व कऽ) आब हम की चेतब, अहा सभ चेतु।

लखन- करतबक फल तँ भेटबे करत।

मीना- हम तँ नै रहब दुथ्वयामे। मुदा अही अमर भऽ कऽ रहब। से दुथ्वया देखत ने। औह! ओह! पाणो नै छुटैए।

मनोज- माताजी के की भेलथ्व, थ्वताजी?

लखन- आइ साल भथ्वसँ बेमार अथ्छ। पेटमे कोनो गड़बड़ी छै। एकर इलाजमे डीहो तक बीथ्क गेल। डॉक्टर कहलथ्व जे एकरा बड़का ऑपरेशन हेतै तबे ठीक हएत। ओइमे कमसँ कम पचास हजार खरच हएत। हम आब कतए सँ ओते पाइ आनब। ने राथ्के नअ मन घी हेतथ्व आ ने ओ नचती। बौआ तोरा सभके एना थ्कअए

भऽ गेलह?

मनोज- इसकूलसँ टूरपर जाइ कालमे बस पलटी मारि देलक। ओहीमे दुनू भाइके एना भऽ गेल। हेड सर जी जान लगा कऽ बचौलखिन। आइ अपनेक बेटाकरपासँ कलक्टर छी।

लखन- (आश्चर्यसँ) कलक्टर! कलक्टर! साचे कहै छह?

मनोज- हँ हँ। कलक्टर। साचे कहै छी। अहा सप्पत।

लखन- यै, बेटा कलक्टर भऽ गेल। आबो कने नैन जुड़ाबिअ।

मीना- (कुहरि कऽ) कलक्टर होइ की मास्टर होइ, उ अपने गाइर सम्हारत। ओइ सँ हमरा की?

संतोष- पिताजी, चाचि परतीत बेमाए। तीनू मुइने जाए।

सोनी- बौआ, अखन ई सभ नै बजियौ। अखन मधुर वचनक आवश्यकता अछि। पाण्डेय एक बेर अपना सभ माताजीके देखबाऐ।

मनोज- हमहूँ सएह सौचैत रही जे बड़के हॉस्पीटल चलितौ, ऑपरेशन करा दैतिऐ।

मीना- (कुहरि कऽ) हम ऑपरेशन-तपरेशन नै कराएब। आ ने होस्पीटल जाएब।

संतोष- सुनै छहुऐ भौजी माइनकर भाषा।

वीरभर- बड़ी टेढ़ जनानी बा। बड़ी रार जनानी हऽ।

मनोज- अपने सभ शात रहुयौ। माताजी, अपने हास्पीटल चलुआौ। कोनो चीजक डर नै। डॉक्टरके हम अपने कहबै जे बना ऑपरेशनक ठीक करैले। अहा अवस्स ठीक भऽ जाएब। बड़का डॉक्टर छै।

मीना- डाक्टर बड़का रहै की छोटका रहै। हम आब जी कऽ की करब?

मनोज- रामपरी आ कृष्णा जे ओते कनैए, ओकरा की हेतै?

मीना- अपना केने की होइ छै? भगवानक जे मजी हेतआ सएह हेतै? हम कतौ ने जाएब। हम मरबे करब।

सोनी- स्वामी, हमरा लगैए जे ई ओना नै जेती। जबरदस्ती एम्बूलेसमे बैसाउ।

मनोज- हमरो सएह लगा रहल अछ। ओना माताजी बुधियाय छथि। जबरदस्ती नै करए पड़तै।

मीना- हम बुधियार रहुतौ तँ इएह दशा होइतए हमर।

मनोज- सभ कयो भाइ कऽ हुनका उठाउ कोनो तकलीफ ने होअह।

(सभ कयो मीनाके उठबए चाहैत छथि। मुदा ओ नै-नै करै छथि। मुड़ीमचर आ सरऽिआ इत्याद सभ कछु-कछु गाय सेहो दइ छथि। मुदा जबरदस्ती हुनका उठा-पुठा कऽ एम्बूलेसमे बैसा, हॉस्टपीटल लऽ जाइ छथि। सबहक पस्ािन।)

पटाक्षेप।

दृश्य- दस

(स्िान- हॉस्पीटल। डॉक्टर िीरेन्र कमपान्डर श्वजय आ श्ववेक ति नसिअश्माता आ मनीषा हॉस्पीटलक कौमन र ममे बैश्स चाह पीबैत गप-सप करैत छश्ि।)

िीरेन्र- श्वजय, आब मोन होइए जे डॉक्टरी पेशासँ सन्यास लऽ ली। श्वन-राश्त कखनो चैन नै। एते कतौ लोक बेमार पड़लैए।

श्वजय- सर, खान-पान आ जलवायु पदूश्वत भऽ गेलैए। स्वाभाश्वक छै लोक बेमार पड़बे करत।

श्ववेक- सर, लोकके बहुत टेशनो भऽ गेलैए। व्यायाम-योग खतम भऽ रहलैए। तहन लोक स्वस्ि श्वकअए रहत?

िीरेन्र- पाइ बडड कमेलौ। एकटा बेटा इंगलैण्डमे डॉक्टर अश्छ आ दोसर अमेश्वकामे इंश्जश्नयर। आब भगवानक शरणमे जा शाश्न्त चाहै छी।

अश्माता- सर, परोपकारसँ सेहो शाश्न्त भेटै छै। मुफ्त इलाज कएल जाउ, आत्मा संतुष्ट रहत।

िीरेन्र- नै अश्माताजी, ई बात नै छै। मुफ्त इलाससँ वा कम फीससँ डॉक्टर हल्लुक भऽ जाइ छै।

मनीषा- तहन परोपकार आ इमानदारीके पैघ गुण श्वकअए कहल जाइ छै सर?

िीरेन्र- एक्सरा आश्छनिरी पश्माष्ठा देखबै तँ औकरा सभके नजर अंदाज श्वकछु करैए पड़त। ओना आइ-काश्ल परोपकार आ

इमानदारी कागजे भञ्ज रञ्ज गेल अछि। आइ काञ्ज नै उ देवी छै आ ने उ खराह छै।

(पेसेट मीना केर संगे लखन सपञ्जवारक पवेश।)

मनोज- (डॉक्टरसँ) डौक्टर साएहाएब, एकटा पेसेट छै। इमरजेन्सीमे भती कएल जाउ।

(अपन पञ्जचय पि देखबै छथि।)

िरेन्र- (पञ्जचय पि देखञ्ज) ञ्जजय, कलक्टर सहाएबक पेसेटके इमरजेन्सीमे देखबै। जल्दी लेने आउ।

(दुनू कमपॉण्डर आ दुनू नसि मीनाके आनलञ्जा। आलासँ हुनका जाचलञ्जा।)

सर, पीसकेप्शनो सभ छै अपने लग?

मनोज- जी सर।

(मनोज िरेन्रके पीसकेप्शन देलञ्जा। ओ गौरसँ देखलञ्जा।)

िरेन्र- सर, अपनेक पेसेट ऑपरेशनक अछि।

मनोज- जे आवश्यक होइ, से कएल जाउ।

िरेन्र- सर, ञ्जकछु खूनक आवश्यकता हएत।

मनोज- बाजारसँ आञ्जा देब। जे पाइ लगतै से हम तैयार छी।

िरेन्र- जदी नै उपलब्ि हेतै तहन?

मनोज- हम सभ सभ क्कयो छी। ख्मनकर खून सेट करतै से तैयार छथ्नि। खूनक जाच कएल जाउ।

िरेन्र- थ्रजय, सबहक खूनक जाच कऽ ख्नाअ।

(थ्रजय सबहक खूनक जाच करै छथ्नि।)

थ्रजय- सर, मनोजक गुप थ्नलै छन्ह्न।

मनोज- सर, हम तैयार छी।

िरेन्र- अश्नाताजी आ मनीषाजी, पेसेटके ऑपरेशन थ्नियेटरमे लऽ चलू। संगमे सर सेहो जेथ्नि न।

(दुनू नसि मीनाके थ्नियेटरमे लऽ गेलथ्नि। संगमे मनोज सेहो छथ्नि।) अनीताजी, सरसँ खून लऽ ख्नाअ। पेसेटके श्नुनके खून सेट करै छन्ह्न।

(अश्नाताजी मनोजसँ खून लेलथ्न।)

मीना- हम मश्न जाएब तँ मश्न जाएब, एकर खून नै लेबै।

िरेन्र- मनीषाजी, पेसेटके एगो श्नाशाबला सुइया दऽ थ्नयनु।

(मनीषाजी मीनाके सुइया देलथ्न। पेसेट बेहोश भेलीह।) सरके बाहर कऽ थ्नयनु मनीषाजी। (मनोजके मनीषा डेन पकश्न बाहर आश्न बैसौलथ्न। थ्नियेटरमे ऑरेशन भऽ रहल छन्ह्न। थ्नियेटरमे पेसेट, डौक्टर आ दुनू नसि छथ्नि। रमाकान्त आ बलदेवक पवेश।)

लखन- पणाम मुश्नयाजी।

रमाकात- पणाम पणाम।

लखन- नमस्कार बलदेव भाय।

बलदेव- नमस्कार, नमस्कार भाय। (आपसमे सभ क्कयो पणाम-पाती कऽ बैसलाह।)

रमाकान्त-	लखनजी, पेसेटक हाल-चाल कहू।

लखन- पेसेट ऑपरेशन थियेटरमे छथि। डौक्टर कहलथि घबरेबाक काज नै छै।

रमाकान्त-	लखनजी, गामेपर सुनलौ जे अहाक बेटा कलक्टर बनलथि। से ठीके बात छिऐ?

लखन- (मनोजसँ) बौआ, मुखियाजी के पणाम करियनु। (मनोज मुखियाजीक पएर छूबि पणाम केलथि।)

रमाकात-	लखनजी, अहाक बेटा पारिपर दुख जनमा देलक। िनक त्याग-तपस्या लेल िनका हार्दिक धन्यवाद। (दुनू नर्स ऑपरेशन थियेटरसँ पेसेटके बाहर आकाश बेडपर सुतौलथि। पेसेट बेहोश छथि। पीठेपर डौक्टर आकललथि। आपसमे पणाम-पाती भेलथि। डॉक्टर कॉमन रममे गेलथि। रामलालक पवेश।)

रामलाल-	मुखियाजी पणाम।

रमाकात-	पणाम पणाम।

रामलाल-	कहू पेसेटक हाल।

लखन- अखने ऑपरेशन भऽ कऽ एलीह। अखन होशमे नै एलीह।

रामलाल-	लखन भाय, सुनलौ अपनेक बेटा कलक्टर भेलाह आ गामो आएल छथि।

लखन- बौआ मनोज, ककाके गोर लगहुन। (मनोज, रामलालके पएर छूबि पणाम केलथि। दुनू एक-दोसरके टकटकी लगा कऽ देखि रहल छथि। िकयो िकनको िचन्है नै छथि। फेर मनोज सोनी लग जाइ छथि।)

मनोज- यै, एगो आदमी माता जीक थ्मजासामे आएल छथि। उ लगै छथि जेना अहीक थ्रताजी होथि। नै हम थ्मन्हथ्रायथ्म आ ने उ थ्मन्हलथि। कने चथ्र कऽ देथ्वयनु तँ। (सोनी आथ्ब कऽ अपन थ्रताजी के थ्मन्हलथि।)

सोनी- थ्रताजी पणाम। (पएर छुथ्ब कऽ)

रामलाल- खुश रहू बेटी। अहा एत कत?

सोनी- माता जीक ऑपरेशन छेलथ्म।

रामलाल- (आशयर्सिँ) माताजी! माताजी!!

सोनी- हँ थ्रताजी, पेसेट हमरे सासु छथिन।

रामलाल- तहन तँ लखन हमर समथि हेथिन। नमस्कार समथि (लखनसँ)

लखन- (आशयर्सिँ) से केना रामलाल भाय?

रामलाल- से हमरो नै बूझल छेलए। अखने बुझलौ। अहाक जे पुतोहु हेती से हमरे बड़की बेटी छथि।

लखन- साचे कहै छी?

रामलाल- साचे नै कहै छी तँ फूथ्म। ई गप मजाक वा फूथ्मबला भऽ सकै छै।

लखन- तहन तँ नमस्कार समथि।

रामलाल- नमस्कार नमस्कार।

लखन- कहू बाल-बच्चा आ समिनक हाल-चाल।

रामलाल- बाल-बच्चा सभ आनन्द अछि आ दुनू समधीन बमकि रहल छथि। दुनू एकपर एक छथि। हुनका सबहक आगू हमही बड़ बूढ़ छी। मुखियाजी, रामलाल, भायसँ समधि बनि गेलाह। मनोज हमरे दमाद छथि।

रमाकात- रामलालजी, तहन तँ अपने छका मारि लेलिऐ। वएह मनोज आ संतोष लखनक बौरेलहा बेटा रहए। आइ देखियौ भगवानक किरपा।

रामलाल- मुखियाजी, भगवान राइके परवत आ परवतके राइ बना सकै छथि। आखिर पेरणा तँ हुनके होइ छन्हि आ करतब अप्पन।

रमाकान्त- रामलालजी, अपनेक करतबक फल जे दूटा कनिया रहैत सुसज्जित परिवारक चचा कत-कतए ने होइए। जखन कि अहा अपन समधिके देखियौ। एगो समदाही, सतौत बेटाके खाक छनाए देलकै। (मीनाके होश एलनि।)

मीना- कने पानि पीब। (सोनी पानि आनि कऽ पीअबैत छन्हि।)

सोनी- माताजी, उठि कऽ बैसल हएत।

मीना- कने सहारा दिअ तँ कोशिश करै छिऐ। (सोनी मीनाके सहारा दऽ उठा कऽ बैसौलनि आ दुनू डेन पकड़ि बैसल छथि।)

रामलाल- समधीन, आब ठीक छी ने? अपने हमर समधि केना छिऐ, पड़ोसी छेलिऐ ने?

रामलाल- भगवानक किरपा जे अपनेक डेन पकड़िनिहारि हमरे बेटी छी आ अपनेक मनोज हमर दमाद।

मीना- (कर जोड़ि) देखियौ भगवानक महिमा अपरम्पार होइ छै।

वएह मनोज आ संतोषके हम कोन-कोन दुदशिा ने केश्नाऐ। एतबे नै बढ़नीसँ झाश्च घरसँ श्नाकाश्न देश्नाऐ। आइ वएह मनोजक श्चकरपा जे हम अपने सबहक दशनि कऽ नयन जुड़बै छी। सचमुच हम बड़ पैघ पापी छी आ मनोज, संतोष और सोनी परम महान छथि। ऐ संदभमि हम क्मापाि ी छी, क्मापाि ी छी, क्मापाि ी छी।

मनोज- ि न्यवाद माताजी। घर चलै चलू। माता जी आब चंगा भऽ गेलीह।

(सबहक पस्ि ान)

।पटाक्षेप। ।।इश्च शुभम्।।

सूचनाक अधिकार विषयपर आधारित मैथिली नाटक- अधिकार

दृश्य- एक

(सरपंच मुखिया चन्दनक घर। दलानपर चारि-पाचटा कुर्सी लागल छै। मुखियाजीक मुहँलगुआ अमरनाथ आ चन्दन कुसीपर बैस गपसप कऽ रहल छथि।)

अमरनाथ- मुखियाजी, आइ-काल्हि कोनो मुला फँसलै की नै।

चंदन - फँसिते रहै छै की। ओना दू-तीन दिनसँ बोहनियो नै भेल अमर भाय।

अमरनाथ - मुदा बड़ कष्ट कऽ कऽ लै छिऐ अहा।

चंदन - की करबै, अही कहु। हमरा सरकार कोनो तनखाह दै छै? (मंजूरक पवेश पूर्णगिरीबी अवस्थामे)

मंजूर - मुखियाजी पणाम।

चंदन - पणाम पणाम। आउ मंजूर भाय। (मंजूर भुइँयापर बैसि जाइ अछि।) मंजूर भाय, नीच्चामे किएआए बैसलौ? कुसीपर बैसु ने।

मंजूर - हम कुसीपर बैसैबला लोके नै छिऐ। कुर्सीपरि हाकिम सभ बैसै छथिन।

अमरनाथ भाय, पणाम ।

अमरनाथ- पणाम पणाम, कहु मंजूर भाय, की हाल चाल?

मंजूर- जीऐ छी नै मरै छी, हुकुर-हुकुर करै छी। अहा ऐ फाटल-चिटल लोकपर, कोनो ध्याने नै दै छी ।।

अमरनाथ - कहु धिया-पुताक हाल-चाल, घरवालीक हालचाल?

मंजूर - की कहब, धिया-पूता चारि-पाचटा बेसी भऽ गेलै।

तैसँ अकछ रहै छी। कहलथि अपरेशन कराऽ लिअ तँ कहलथि अपना सबहक हदीशमे से नै लिखल छै। आ फेर कहलथि हुअ ने दियौ कते हेतै अपन-अपन कमा कऽ खेतै।

(चन्दन आ अमरनाथ मुस्काए रहल छथि।)

अमरनाथ- मंजूर भाय, कथिया फिगर छ से?

मंजूर- की पूछै छी? आब नै सकै छी तैयो बड़ हरान कऽ दै आए। आब छोड़ भाय मजाक तजाक। ऐ बुढ़बाके की चटै छी?

चन्दन - कह मंजूर केम्हर-केम्हर एलाह?

मंजूर - सरकार, इन्दिरा आवासबला गप हम कहिया कहलौ 2006एमे। कते दिन भऽ गेलै? ताबे कते आदमीके इन्दिरा आवास भेटबो केलै। सरकार हमरोसँ बेसी गरीब छियो छै? टमटम चलबै छेलौ तँ घोड़ीओ खचनै सकलै छेलाए। सुखा-टटा कऽ घोड़ीओ मरि गेल। करजा-बरजा लऽ कऽ एगो पुरना रिक्शा कीनलौ। सेहो कहियो चलैए कहियो नै। टेम्पू-सवारी रिक्शेबलाक रोजी-रोटी खेलकै। आब हमरोपर ध्यान दियौ सरकार। बरसातमे एको बुनी पानि बाहर नै खसै छै।

चन्दन - बीस हजार तोरा नाम सँ भेटतह । ओइमे की खरचा-बरचा करबहक?

मंजूर - हम तँ कहब, एको पाइ नै । मुदा अही कहियौ की केना लगतै?

चन्दन - अमरनाथ भाय, कनी बूझाए दियौ।

अमरनाथ - मंजूर भाय, ओना सभके छ-सात हजार लगै छै, अहाके पाच हजार लागतै।

मंजूर - बाप रे बा, तहन हमरा की बचतै? पनरह हजारमे केहेन घर हेतै?

अमरनाि - श्किछु अपनो श्दश्िासँ लगा देबै।

मंजूर - खाइ लाए मरै छी,श्िया-पुता पनी श्बचै आए रोडपर। ओइमे से एक-दू साए टका खइ-पीऐ लाए दऽ देब, सरकार। श्करपा कश्रयौ।

चन्दन - पाच हजार देबै तहने हाएत। नै तँ नै हाएत। बात जानी साफ।

मंजूर - हे हे सरकार, पएर पकड़ै छी। दाढ़ी पकड़ै छी। एगो घर डाइनो बकसै छै। एगो गरीबो के कल्याण कर । नीक हाएत सरकार।

चन्दन - बेसी नीक हमरा नै पचै छै। ओते लगबे करत।

मंजूर - तहन जाइ छी सरकार। जे कश्रयौ। ओना एगो गरीबके ताश्कश्ाऐ ऽ ऽ ऽ ऽ।

(पर्सािन)

चन्दन - हम फेर मुश्खया हाएब की नै, के जनै छै? माल बनेबाक बेर अनेक नै अश्छ।

अमरनाि - से तँ ठीके मुश्खयाजी। काश्ल के देखलकै? ओना मंजूर वास्तवमे बड़ गरीब अश्छ।

(पटाक्षेप)

दृश्य दू

(सािन मंजूरक सलाहकार श्वनोदक दलान श्वनोद कूसीपर बैश्स पेपर पश्ढ़ रहल छश्ि। दीन हीन अवस्िामे मंजूरक पवेश।)

मंजूर - नेताजी पणाम।

विनोद - पणाम पणाम। कहऽ की हाल चाल? आइ बहुत दिनपर देखलिअ। कह केम्हर-केम्हर एलाह?

मंजूर - की पूछै छी नेताजी। मुखिया बिना घूसे इंदिरा आवास नै देमऽ चाहैए। तहूमे बीस हजारमे कम-सँ-कम पाच हजार। कहू तँ पनरह हजारमे की की करब? अहूमे आइ चारि-पाच सालसँ आइ-काल्हि आइ-काल्हि करैए। अखैन कतबो पएर दाढ़ी पकड़लियन तैयो उ नै घमलथि। एके बेर कहलथि, पाच हजार देबै तहने हाएत। नै तँ नै हाएत। बात जाहि साफ। अपने हमरा बुझि दिअजे एकर कोनो नियम कानून छै की नै?

विनोद - कानून तँ छै, मुदा दौड़ा-बढ़ी करए पड़तह। तो गरीब आदमी छह। तोरा सँ पार लगतह?

मंजूर- ___ नेताजी, मरता क्या नही करता । मरल तँ हम छीहे। अहा हमरा रस्ता बताए दिअ, देखै छिऐ कानूनमे दम छै की नै। उचितक लेल अहा हमरा जे कहब से करै लाए तैयार छी।

विनोद - हम एगो आवेदन लिखि दैत छियह। मुखिया लग अखैन चलि जा दऽ दिहक आ की कहै छह से फेर कहिहह।

(विनोद मंजूरके एगो आवेदन लिखि दैत छथि आ मंजूर उ लऽ कऽ मुखिया लग तुरंत जाइ अछि।)

(पटाक्षेप)

दृश्य- तीन

(स्थान - चन्दन मुखियाक दलान। दलानपर चन्दन आ अमरनाथ कुसीपर बैस गपसप कऽ रहल छथि। मंजूरक पवेश।)

मंजूर - मुखिया जी पणाम।

चन्दन - पणाम पणाम।

मंजूर - अमरनाथ भाय पणाम।

अमरनाथ - पणाम पणाम मंजूर भाय। बैसू।

मंजूर - की बैसब? बैसलासँ पेट भरतै। मुखिया जी एगो दरखास छै, देखल जाउ।

चन्दन - लऽ आउ अमरनाथ। पढ़ियौ की लिखल छै।

(अमरनाथ दरखास्त लऽ कऽ पढ़ै छथि। मंजूर भूइयामे बैसल जाइत अछि।)

अमरनाथ - सेवामे,

शीमान् मुखिया महोदय।

गाम पंचायत राज रामपुर।

महाशय,

नम निवेदन अछि जे हम अति गरीब व्यक्ति छी। अपन पंचाइतमे जनको सँ पहिने हमरा कोनो सुविधा भेटक चाही। ओइमे अपने हमरा पाछू छोड़ि दै छिऐ। इंदिरा आवास लाए चारि-पाच साल सँ घूमबै छी। जै गरीबके पाच हजार टाका नै रहाए ओकरा इंदिरा आवास नै भेटए!

ऐ संदर्भमे अपने सँ करबद्ध पार्थना अछि जे एगो महागरीबके निःशुल्क इंदिरा आवास पदान कऽ कल्याण काएला जाए। संगहि सूचना अधिकारक तहत पंचाइत सचिव सँ इंदिरा आवासबला आय-व्यय फाइल उपलब्ध करबैमे सहयोग काएल जाए। धन्यवाद।

अपनेक क्षेत्रसवासी-

मंजूर

चन्दन - जाउ मंजूर, अहाके जै अधिकारक पयोग करबाक अछि कर ग। देख लेबै। नै, जदी पाच हजार टाका ओइमे से देबै तँ अखनो भऽ सकैए।

मंजूर - नै मुखियाजी, हमरा कानूनेमे जाए दिअ।

चन्दन - जाउ ने हम रोकने छी।

मंजूर - बेस हम जाइ छी। (मंजूरक पस ान)

अमरनरि - मुखियाजी एकरा बुते एगो अलुआ तँ उखरबे नै करतै आ आएल छेलाह िमकी दै लाए। केहेन-केहेन गेल्लाह तँ मोछबला एल्लाह।

चन्दन - हा हा हा ऽ ऽ ऽ ऽ (ठहका मारि हँसै छथि।) जाए दियौ अमरनाि कतए जेतै कानून अपना हा िमे छै।

(पटाक्षेप)

दृश्य- चारि

(स ान - विनोदक दलान। विनोद ससुराइर जाइक तैयारीमे छथि। तखने मंजूरक पवेश।)

मंजूर - नेताजी पणाम।

विनोद - पणाम पणाम। कहऽ मंजूर, मुखियाजी भेटलखुन।

मंजूर - हँ भेटलथि तँ जर र। मुदा फेर ओएह गप्प। बिना पाच हजार घुसे काज नै हाएत। अहाके जै अधिकारक पयोग करबाक हुआए ये कर ।

विनोद - आब हुनक, किछु नै कहक। हम तोरा तीनटागो आवेदन लिख दै छियह। एगो बी.डी.औ. के दऽ दिहक, एगो एस. डी. ओ. के दऽ दिहक आ एगो डी. एम. के दऽ दिहक। डर नै ने हेतह?

मंजूर - डर किथीके हेतै नेताजी। कोनो हम चोरी कर जाएव। अहा कनी हाथमा कऽ लिखिव दिअ।

(विनोद तीनगो आवेदन लिखिव दै छथि।)

विनोद - मंजूर, ई तीनु आवेदन लाएह। तीनु ऑफिसमे दऽ दिहक। हम आइ ससुराइर जाइ छिअह। एक सप्ताहक बाद एबह। देखहक की होइ छै?

मंजूर - हम एखनइ जाइ छी नेताजी।

विनोद - बेस जाह। हमहूँ जाइ छिअह।

(पहिने मंजूरक पस्थान। तकर बाद विनोदक पस्थान।)

(पटाक्षेप)

दृश्य- पाच

(बी.डी.ओ. कायालय। गेटपर एगो सिपाही छथि। बी.डी.ओ. अशोक कायालयमे फाइल उनटा रहल छथि। तखने मंजूरक पवेश। सिपाही मानसिंह छथि।)

मंजूर - पणाम सर।

मनसिंह - पणाम पणाम। का बात हउ?

मंजूर - सर, कनी बी. डी. ओ. सहाएबके भेट करबाक छै।

मानसिंह - बात का ह, से पहिले बोल न? सहाएब जरूरी काममे फंसल बा?

मंजूर - सर, हमरो बड़ जरूरी काज छै। इंदिरा आवासबला एगो दरखास छै।

मानसिंह - अच्छा जा।

(मंजूर अशोक लग पहुँचलथि।)

मंजूर - हाकिम परणाम।

अशोक - बाजू की बात अछि?

मंजूर - हाकिम इंदिरा आवासबला एगो दरखास छै।

अशोक- अखैन उ सब काज नै होइ छै ब्लॉकमे। उ काज मुखिए करै छै। अपन मुखिए लग जाउ।

मंजूर - हाकिम, मुखियासँ अकछ भऽ गेलौ तहन ने अपनेक शरणमे एलौ। चारि-पाच साल पहिने बाढ़िमे घर दहाए गेल। सिरकी तानि सभ परानी कौहुना जीबै छी।

अशोक - मुखिया की कहलथि?

मंजूर - मुखिया कहलथि जे बीस हजारमे पाच हजार लेब, तहने हाएत, नै तँ नै।

अशोक - किछु लऽ दऽ के काम कऽ लैतौ न?

मंजूर - हाकिम, हमरा उ बात एको रती पसीन नै पड़ल। एक-दू साए बला गप रहितै तँ सोचबो करितिऐ। हाकिम, किरपा कऽ ई दरखास लियौ आ एगो गरीबोसँ गरीबपर विचार करियौ।

अशोक - बेस लाउ। (मंजूर अशोकके दरखास दऽ दै छथि।)

मंजूर - परणाम हाकिम। जाइ छी हम। रिक्शा चलबै लाए जाएब।

(पस्ािन)

अशोक - सेवामे,

शीमान् पखंड श्वकास पदाश्विकारी महोदय,

कायालय - भगवानपुर

महाशय,

सूचना अश्विकारक तहत हम पूछै लाए चाहै छी जे इंश्वरा आवास पाच

हजार घूसे लऽ श्वकअए भेटत, ओना श्वकआए नै भेटत? एकर श्वाश्विवत जवाब

दू श्वदनक अन्दर चाही। नै तँ आगू बढ़ब। िन्यवाद,

मंजूर, गाम पंचाइत राज रामपुर।

(अशोक आवेदन पश्क कूड़ामे फेक दै छश्वि।)

एकर श्वाश्विवत जबाब दू श्वदनक अन्दर चाही, नै तँ आगू बढ़ब। जाउ, जतए

बढ़ब, ततए बढू। सभठाम एके रंग भेटत।

पटाक्षेप

दृश्य- छह

(सािन - अनुमंडल कायालय। सुनील एस. डी. ओ. आ बहादुर हुनक श्वापाही छश्वि। सुनील फाइल उनटा रहल छश्वि। मंजूरक पवेश।)

मंजूर - सर पणाम।

बहादुर - पणाम पणाम। कत हुरार जकैं हुरकल जाइ छी? र कू। पछुने एतऽ पाच गो टका धूदअ, तहन अन्दर जाएब।

मंजूर - (जोर सँ) ऐ देहमे करौआ लागल छह की? सरकार सँ तो तनखाह नै लै छहक?

बहादुर - अच्छा जा। बेसी बाजह नै (मंजूर सुनील लग पहुँचल।)

मंजूर - परणाम हाकुम।

सुनील - की बात?

मंजूर - इंदुरा आवासबला एगो दरखास छै। लेल जाउ।

सुनील - (आवेदन लऽ कऽ) अहा जाउ।

मंजूर - जाइ छी हाकुम। एगो गरीबोके कल्याआण करबै। परणाम। (मंजूरक पर्स ान।)

सुनील - सेवामे,

शीमान् अनुमंडलाधिकारी महोदय, बेनीपुर।

महाशय,

हम मंजूर गाम पंचाइत राज रामपुरक स ाइ आवासी छी। चारु-पाच साल पछुने बाढ़मे घर दहा गेने कारु कारु रहल छी। इंदुरा आवास लाए मुखुयया चंदन

पाच हजार टाका घूस मागैए। बी. डी. ओ. साहेब सेहो हमर आवेदन पर कोनो ध्यान नै देलआ। सूचना अधिकारक तहत हम एकर सारुवत जबाब

दू दनक अन्दर चाहै छी। अन्यथि ा आगू बढ़ब।

ा ई बकवासबला आवेदन छै। के मा ा पचची

करतै ऐमे?

(सुनील आवेदन के कुड़ामे फेक दै छथि ।)

प टा के प

दृश्य- सात

(स ि न समाहरणालय। डी. एम. चन्द्रकान्त कायालयमे फाइल उनटा रहल छथि। गेटपर श्वपाही हंसराज ठाढ़ छथि। तखने मंजूरक पवेश।)

मंजूर - परणाम हुजुर। अन्दरा कलक्टर सहाएब छथि न?

हंसराज - की बात?

मंजूर - हुनके सँ काज य।

हंसराज - कोन काज से?

मंजूर - इंश्वरा अवासबला एगो दरखस देबाक छै हाक्मके।

हंसराज - लाउ ने पाच हजार टाका, हमही काज कराऽ दै छी। हा ि-हा ि काज भऽ जाएत।

मंजूर - खाएब, से ओकाइदे नै आ पाच हजार टाका हम कत सँ देब?

हंसराज - तहन ऑफ्सिमे नै घुसु। घुश्व जाउ।

मंजूर - से श्वकआए, अहीक ऑफ्स छी लगाएल।

हंसराज - बेसी फटर-फटर बाजलौह तँ एके झापरमे ठीक भऽ जाएब। कोनो बाप काज नै देत-3

मंजूर - बेसी बाप-बाप केलौ तँ बूझ्म श्वाअ।

हंसराज - (मंजूर के एक ि ापिर माश्व) हरामी कही के। आब

बाज कोन बाप काज देतौ।

मंजूर - (हंसराज के एक िपर माश्व) हरामी सभ, चोटा सब गरीबके खा कऽ साढ़-पारा भऽ गेल।

(हंसराज आ मंजूरमे हाथापाई भऽ रहल अछि। हल्ला सुनि चन्द्रकान्त गेटपर एलाह।)

चंरकान्त - अहासब हल्ला-फसाद थ्कआए करै छी? हंसराज की भेलै?

हंसराज - सर, ई हमरा बिना मतलबके गाछ्क दऽ देलक।

मंजूर - सर, पश्चने इहाए हमरा गाछ्क देलक। तहन हम देश्वाऐ।

चंरकान्त - थ्रिया-पुता जका गाछ्क-गलौज, माश्व-पीट करै जाइ छी। छ्ठा! छ्ठा! लेक सब हँसत। बाजू बौआ, की बात अछि?

मंजूर - हुजुर एगो इंश्वरा आवासबला दरखास छै।

चंरकान्त - लाउ अन्दर आउ।

(मंजूर आ चन्द्रकान्त कायालसमे जाइ छथि।)

आब बाजू की कष्ट?

मंजूर - हजूर हम श्वक्शा चालक छी। कमाइ छी तँ खाइ छी। नै तँ उपासे रहै छी। चाश्व-पाच साल पहीने बाढ़मे हमर झोपरी दीहा गोल। इंश्वरा आवास लाए मुश्वयालजीके कहश्वायश्वह तँ उ कहलश्वा जे पाच हजार टाका घूस देबही तहने हेतौ नै तँ नै हेतौ। पएरो दाढ़ीयो पकड़श्वायश्वा जे खाइ पीयै लाए, एक-दू साए टाका पेटो काश्वट कऽ देब। हमरापर थ्करपा कएल जाउ। मुदा टस-सँ-मस नै भेलाह।

हजूर, एगो हमर दरखास स्वीकार काएल जाउ।

चंरकान्त - बेस लाउ। (मंजूर चंरकान्तके दरखास्त दऽ दै

छथि।)

मंजूर - हजूर, हमरा पंचाइतमे हमरासँ बेसी गरीब केयो नै हाएत। अपने पता कऽ सकै छी। एगो गरीब बड़ आशा सँ अपने लग पहुँचल अछि। कृपा अवस्स कएल जाउ हजुर।

आब हम जाइ छी हजुर। तीन दिनसँ भुखले छी। (मंजूरक प्रस्थान)

चंद्रकान्त - सेवामे,

शीमान् समाहता महोदय, परसा

महाशय,

नम निवेदन अछि जे हम मंजूर गाम पंचाइत राज रामपुरक स्थाइ निवासी छी। हम अति गरिब रिक्शा चालक छी। चारि-पाच साल पहिने पहिने हमर झोपड़ी बाढ़िमे दहा गेल। हम सब परानी सरकी तानि पशु जीवन जीबै छी।

कृपया एगो इंदिरा आवासक अनुमति पदान काएल जाउ। ऐ लेल हम अपनेक आजीवन कृतज रहब। ओना मुखिया, बी.डी.ओ. आ एस.डी. ओ.के. आचरणसँ हम पूर्ण आजीज छी।

कृपया हमर अनुमति दू दिनक अंदर देबाक कष्ट करी। अन्यथा हम सूचना अधिकारक तहत घूसखोरीक विरुद्ध आवाज अवस्स उठाएब।

धन्यवाद,

(आवेदन पत्र चन्द्रकात कुड़ामे फेक दै छथि। ई तँ सरासर धमकी भेलै। सूचना अधिकार तँ हमरा मुटीमे छै। हम कोनो आइरी-गाइरी हाकिम छी, डी.एम.छी।)

हंसराज- (अन्दर कायालय जाक) सर, ई आदमी बड़ खच्चर छेलाह। जहा कहलिऐ पाच हजार घूस देबै तँ हाथो-हाथ काज करा

देब। फट सन एक िपर बैसा देलक। तकरे हािपाई छेलै ।
चन्द्रकात- जाए ने दियौ। ओकरा कोनो ऑफिस गुदानतै।
प टा के प
दृश्य- आठ

(स ान- विनोदक दलान। विनोद कुटी काटि रहल छथि। मंजूरक पवेश।)
मंजूर - नेताजी परणाम।
विनोद - परणाम परणाम। कह मंजूर, काज भेलह?
मंजूर - आइ पनरह दिन भऽ गेल। काजक कोनो अता-पता नै। बेकार लाए रोजी-रोटी छोड़ि कऽ हरानो भेलौ।
विनोद - मंजूर, तो जिला तक पहुँचलहक। तोहर काजक कोनो सुनबाई भेलै। आब बुझहक पशासन केहेन भष्ट छै। एकटा करह, छोड़ह मािि-पच्ची। जा कमैहह आ खैहह। ऐ सबहक चकरमे नै पड़ह। ऐ रास्तामे बड़ा फेदरत छै।
मंजूर - नेताजी, परेशानी झेलै लाए हम तैयार छी। अहा हमरा उपाइ बताउ।
विनोद - हाईकोटि छै, सुपीम कोटि छै। सूचना आयोग छै।
मंजूर - नेताजी, हमरा आहा जत जाइ लाए कहबै ओत जाइ लाए तैयार छी।
विनोद - बेस, एगो दरखास्त हम लिख दै छियह। तो जगदीशपुर चलि जाह। ओइ गाममे एगो हमर पुरना साि छथिन। हुनक नाम श्यामानन्द झा छियनि। पूछैत-पूछैत चलि जइहह। हुनका दरखास्त दऽ दिहक। बड़ नीक लोक छथिन। गरीबके अपनो दिशसँ मदति करै छथिन।

मंजूर - बेस अपने आश्वस्थ रहयौ। (विनोद आवेदन राखै छथि। मंजूर आवेदन लऽ कऽ पसिान करै छथि।)

विनोद - केहेन भष्ट पशासन छै जे ओइ बुढ़बाके दौड़बैत-दौड़बैत हरान कऽ देलकै। मुदा बिन घूस एगो इंदिरा आवास नै भेटलै। (मुँह बिजकाए लै छथि।)

प टा के प

दृश्य- नअ

(सिान - नेता श्यामानन्दक दलान। दलानपर बैस उ पत्रिका उनटा रहल छथि। मंजूरक पवेश।)

मंजूर - परणाम सरकार।

श्यामानन्द - परणाम परणाम। नै चिन्हलौ।

मंजूर - सरकार हम मंजूर छी। रामपुरसँ बड़ी आशसँ पएरे एलौहे।

श्यामानद - बाप रे बा, एते दूरसँ पएरे। धन्यवाद अहाक।

मंजूर - सरकार, मजबूरीक मारल छी, बाढ़ुक झमारल छी, मुखिया-बी.डी.ओ.-एस.डी.ओ.-कलक्टर सभसँ चिटाइर छी।

श्यामानंद - कहु की बात अछि।

मंजूर - सरकार, एगो हमर दरखास छै।

श्यामानंद - लाउ दरखास्त। (श्यामानंद आवेदन लऽ पढ़ै छथि।)

सेवामे,

शीमान् सूचना आयुक्त महोदय, पटना।

महाशय,

आवेदन अछि जे चारि-पाच साल पूर्व बाढ़िमे हमर झोपड़ी दहा गेल। हम गरीब आदमी छी। रिक्शा चला कऽ कौहुना गुजर करै छी। कमाइ छी तँ खाइ छी नै तँ उपासे रहै छी। आइ पाच सालसँ सरकी तानि पशु जका रहै छी। बरसातमे एकोटा बुनी बाहर नै खसै आए। मुखियाजीके पएर-दढ़ी पकड़लियनि तँ उ कहलनि पाच हजार घूस देबै तँ इंदिरा आवास भेट जाएत। नै तँ कोनो उपाए नै। बी. डी. ओ., एस. डी. ओ. आ डी. एम लग दरखास्त देलौ आ सूचना अधिकारक तहत दू दिनमे जबाब मागलौ। आइ पनरहम दिन छी। कतौ कोनो सुनवाइ नै। ऐ संदर्भमे हमर शीमान् सँ करबद्ध प्रार्थना अछि जे अविलम्ब पूर्ण

जाच कराबए हमर सूचना अधिकारक औचित्यपर गंभीरतापूर्वक विचार काएल जाए आ एगो उजरल आदमीनके बसाएल जाए।

ऐ पुण्यात्मक कार्यक लेल हम अपनेक आजीवन आभारी रहब।

धन्यवाद,

अपनेक विशासी

नाम - मंजूर

गाम - रामपुर

पखण्ड - भगवानपुर

जिला - परसा (बिहार)

(श्यामानंद किछु देर सोचिकऽ)

आइ धरि हमरा लग एहेन केस नै आएल छल। ई गंभीर केस अछि। खाइर मंजूर अहा जाउ। हम पूर्ण प्रयास करब।

मंजूर - हमरा आबो पड़तै पटना।?

श्यामानंद -   एखन नै। जरूरी पड़तै तँ बजाए लेब।
मंजूर -   बेस सरकार किरपा अवस्स करबै।
श्यामानंद -   अहा जाउ। एते दूर जेबाको अछि पएरे।
मंजूर -   परणाम सरकार।
श्यामानंद -   परणाम परणाम। (मंजूर पसथान करै छथि।)

प टा के प

दृश्य- दस

(सथान - मंजूरक घर। मंजूर घरक आगू रस्तापर माथा-हाथ दऽ बैसल छथि।)
मंजूर -   अल्ला सबटा विपत्ति हमरे दऽ देलक। घोड़ीओ मरि गेल। सब दिन किछ्शो नै चलै आए। गाम-घरक काजो सब दिन नै भेटै आए। एम्हर धिया-पुता खोखरै आए। घरकीयो चुऐ अए। की करी की नै, किछु नै फुराइए। या अल्लाह, या खुदा।
(श्यामानंदक नोकर माधवकक पवेश।)
माधवक -   मंजूर अपने छिऐ?
मंजूर -   जी जी, की कहै छी से?
माधवक -   हमर नेताजी शी श्यामानंद बाबू अपनेके काल्हि पटना बजौलनि हे। सूचना अधिकारक पयोगमे अपनेक बड़ पैघ पतिष्ठा भेटऽ जा रहल अछि।
मंजूर -   परणाम सर, परणाम सर। धन्यवाद अहाके। एहेन

शुभ समाचार आइ िश्च श्वकयो नै देने रहथि।

माश्चक - बेस हम जाइ छी। अहा जरर जेबै, श्चसरबै नै। (पर्सान)

मंजूर - (घरवाली नजीमा लग जा कऽ) गै नजीमा काश्च हम पटना जेबै। आब देखही अल्ला की करै छै?

नजीमा - बटखरचा लाए तँ घरमे श्वकच्छो नै छै। कनी मुरही हेतै।

मंजूर - साहाए दऽ श्चहश्च।

नजीमा - जेबहक केना? ओते दूर पएरे हेतह जाएल।

मंजूर - टेनमे मागैत-चागैत चश्च जेबै गै।

नजीमा - कनी ओश्वयाके जइहह। सेहो तँ गाड़ी आइए पकड़बहक तब नऽ काश्च पटना पहुँचबहक।

मंजूर - ठीक कहै छे नजीमा। जो अखने मुरही लेने आ श्वदे भऽ जाइ। ओना असडसँ टेन छुश्च जाएत तहन। हमरा भीखो माग पड़तै नजीमा।

नजीमा - की करबहक? मजबूरीक नाम महात्मा गाान्धी होइ छै। तोरा अबेरो होइ छह। हैआए मुरही लेने आबै श्चयह। (नजीमा एक मुठी मुरही खोइछामे आनलथि।) हैआए, एतबे छेलै।

मंजूर - ला जे छौ से। (नजीमा मंजूरक गमछामे देलक) हम जाइ श्चयौ। राश्च श्वराश्च कनी जाइगे के सुतीहे। घर बेपरद छौ ।

नजीमा - बेस, तू जा ने अल्ला के नाम लऽ केऽ ।

मंजूर - या अल्ला, या श्वश्चमला ।

प टा के प

दृश्य- एगारह

(स्थान - सूचना आयुक्त कायालय पटना। बहदेव सुचना आयुक्त, नेताजी श्यामानंद आ उप सूचना आयुक्त अनजार कायालयमे बैस कऽ मंजूरक भूमिकापर समीक्षा कऽ रहल छथि।)

श्यामानंद - सर, आइ धरि हमरा मंजूर जका केस कहियो आ कतौ नहि टकराएल राहाए। एते गरीब एवं मूर्ख रहैत एहेन कहियो न स्टेप।

अंजार - साहाएब, वास्तवमे मंजूर धन्यवादक पात्र अछि जे अच्छछ देहाती आ औंठा छाप रहैत अपन अधिकारक आ कर्तव्यक प्रति संघर्षशीलताक प्रदर्शन केलथि।

बहदेव - हम एते पद देखलौ मुदा मंजूर जका अपन हकक प्रति जागरूक एवं कर्मठ व्यक्ति नै भेटल राहाए। जदी उ अखैन एतऽ रहिताए तँ हम हुनका हार्दिक धन्यवाद दैतौ।

श्यामानंद - आइ पटना आबै लाए ओकरा संवाद पठेने रहिऐ। संवाद भेटलै की नै। आएत की नै पता नै । (मंजूरक प्रवेश।)

मंजूर - (श्यामानंद के) परणाम हुजूर। (कर जोड़ि)

श्यामानंद - परणाम परणाम।

मंजूर - (बहदेव के) परणाम हुजूर।

बै्राहमदेव - परणाम हुजूर।

मंजूर - (अंजारके) आदाब हुजूर।

अनजार - आदाब आदाब।

मंजूर - हुजूर सभ, हमरा आबैमे बड़ देरी भऽ गेल। क्षमा

काएल जाउ। हुजूर? टेने लेट छेलै।

बहदेव - अच्छा चलू कोनो बात नै। बेसी लेट नै भेल। अहीक नाम मंजूर छी ने?

मंजूर - जी हुजूर।

बहदेव - हम सूचना आयुक्त छी। हम अहाके हार्दिक धन्यवाद दै छ। (वाह! वाह! कहि पीठी ठोकै छथि।) अहा जका अपन अधिकारक आ कर्तव्यक प्रति समर्पित नागरिक देशके उदार कऽ देत। अपने के बहुत-बहुत धन्यवाद। (हिन्दुस्तान पत्रकार पवन आ दैनिक-जागरणक पत्रकार महेशक प्रवेश। दुनु मंजूरक फोटो घीचै छथि आ गपसप करै छथि।)

पवन - मंजूर, ऐ कायालयमे अपनेके की भेटलै?

मंजूर - हुजूर। सूचना आयुक्तक साहाएब हमरा धनिवाद देलकै।

महेश - जखन धन्यवाद नै दैतथि तहन?

मंजूर - तखन हमरा हाकिमपर सँ विश्वास हटि जाइताए। हम बूझि जाइतौ जे बड़को आश्वास बकवास अछि बेमतलब अछि

पवन+महेश - धन्यवाद मंजूर भाय।

पटाक्षेप

दृश्य- बारह

(स्थान - आई. बी. एन.-7 चैनलक मनेजर अखिलेशक आवास। उ अखिला समाद पेपर पढ़ि रहल छथि।)

अखिलेश - मंजूर को प्रतिष्ठा।

मंजूर गाम-पंचाइत राज रामपुर, पखंड-भगवानपुर, जिला-परसा (परसा) क स्थाई आवासी छथि। ओ अप्पादीन रिक्शा-चालक छथि जे पूर्ण मूर्ख छथि। ओ इंदिरा आवासमे घूसखोरीक विरुद्ध आवाज उठेबामे सूचना कार्यालयसँ प्रयास प्राप्त केलनि जइसँ सूचना आयुक्त बहदेव हार्दिक धन्यवाद दैत पीठ ठोकलनि। बहदेव कहलनि, ऐहेन कर्मठ नागरिक देशक उद्धार करत।

(अखिलेश किछु काल सोचि कऽ पेपर राखि दै छथि।)

मंजूर मूर्ख एवं गरीब रहि कऽ एहेन कठिन कदम उठौलनि देशक महान पेरणादायक काज केलनि। उ देशक असली नागरिक छी। हुनका हमरा तरफसँ हार्दिक धन्यवाद आ अवाडि परसु दिल्लीमे भेटतनि। हम हुनका सपरिवार आबै-जाइक भाड़ा पठाए दै छियनि।

प टा के प

दृश्य- तेरह

(स्थान मंजूरक झोपड़ी। झोपड़ीमे मंजूर, नजीमा, बेटी सलमा, नाजीनी, खुशबू आ बेटा अजहर, जफर एवं असफाक उपस्थित छथि। मंजूर सपरिवार दिल्ली जेबाक विचार-विमर्श किए रहल छथि।)

मंजूर - गै नजीमा, अखिलेश अपना सभके दिल्ली आबै-जाइक खर्च पठाए देलकौ, से जेबही?

नजीमा - कथी लाए हौ?

मंजूर - से हमरो नै बुझल छौ। एक आदमी कहै छेलाए जे जाह थ्वल्ली, अथ्वलेश बड़का अबार देतह। कहादुन पेपरमे आकलल छेलै।

नजीमा - चल ने देथ्वयौ तँ ओकरा केहेन छै? हौ हमरा से कुच्छो पूछतै तँ की कहबै?

मंजूर - जे फुरतौ से कश्हुऐ। उ कोनो नै बुझै हेतै जे मुर ख आ गरीबक भनश्मया सा िरणीमे केहेन होइ छै।

गै नजीमा, लोक सभ हमरा बड़ मजाक करैए जे थ्वल्ली जा न, थ्वक्शापर बैसा कऽ अनपूणा के खूम घुमथ्वहह।

नजीमा - हौ, अपना सभके अपने गाम लऽ के नै तँ चश्म जेतै?

मंजूर - नै गै, से तँ नै बुझाइ छौ। चल नऽ बुझल जेतै। बड़ बेसी तँ अपना गाम लऽ जेतै। ऐ सँ बेसी की हेतै? ओतै खाएब, पीयब आ मौज मस्तीमे रहबै। बुझै छी ही, अथ्वलेश कतेक बड़का आदमी छै?

नजीमा - हँ हौ, सुनै थ्छऐ बड़ीटा लोक छै। थ्वयाह-श्वयाह करै लाए नै ने कहतै।

मंजूर - नै गै, तूँ तँ बूरबक जका गप करै छे।

सलमा - बाबा, हमहुँ जेबौ तोरा सँडे. थ्वल्ली अथ्वलेश के देखै लाए।

अस्फ़ाक - बाबा, हमहुँ ओकरेसँ थ्वयाह करबै।

मंजूर - केकरासँ

अस्फ़ाक - अथ्वलेशक साइर सँ।

मंजूर - ि र बुरबक, लोक हँसतौ।

खुशबू - बाबा, सभके थ्वल्ली लऽ जेबहक आ हम घरपर

असगरे रहबै?

मंजूर - सभ थ्रकयो चलबै बुच्ची राजधानी एक्सप्रेससँ। ओइ ट्रेनमे जाड़मे गरम आ गरममे जाड़ लगै छै।

गै नजीमा, तू सभ जल्दी तैयार होइ जो। आइ रास्तामे पटनासे ओ ट्रेन छै। फेद एते दूर जेबाको छै न। लेट भऽ रहल छौ।

नजीमा - जाइ थ्रछयह तैयार होइ लाए। तोहूँ जा झारा-झपटासँ भऽ आबह। तोरा खुच-खुच झड़े लगैत रहै छह।

मंजूर - अच्छा हम ओम्हरसँ अबै छी। तो सभ तैयार रह।

प टा के प

दृश्य चौदह

(सनि - थ्रदल्ली। मंच सजल जिल अछि। दशकिक भीड़ अछि। अथ्रवलेश आओर अनपूणा मंचपर उपथ्रस्त छथि। अथ्रवलेशक नौकर थ्रकसुन मंचपर घुमा रहल छथि। अथ्रवलेश आ अनपूणा पेपर पढ़ रहल छथि।

थ्रकसुन - माथ्रलक, ओ सभ एखन थ्रध नै पहुँचलथि की कारण भ सकै छै?

अथ्रवलेश - रेनक टाइम आब भऽ गेलै आए। ओ सभ आबते हाएत। (सपथ्रवार मंजूरक पवेश)

मंजूर - परणाम हुजूर। (अथ्रवलश के)

अथ्रवलेश - परणाम परणाम मंजूर भाय।

मंजूर - परणाम मैडम।

अनपूर्णा - परणाम परणाम। बैसे जाइ जाउ।

(सब क्यो कुर्सी पर बैसै छथि।)

अखलेश - मंजूर भाय, सपरिवार नीके ना एलौ न?

मंजूर - जी, बड़ नीकेना एलौ। राजधानीमे चढ़ि हम सभ तइर गेलौ।

अनपूर्णा - मंजूर भाय, ई के छथि?

मंजूर - हमरे घरवाली छथिऐ नजीमा।

अनपूर्णा - नजीमा बहिन, नमस्कार।

नजीमा ____ नमसकार बहिन।

अनपूर्णा - बहीन, उ सभ के छथि?

नजीमा - सभ हमरे धिया-पुता छथि।

अनपूर्णा - बहुते धिया-पुता अछि। ऐपर सुधार करू, बहीन।

नजीमा - की करबै, अल्लाक मर्जी।

अनपूर्णा - सभके नीक जका पढ़ाएब-लिखाएब।

अखिलेश - मंजूर भाय, आब अपना सबहक आयोजित कार्यक्रमपर ध्यान देल जाए।

मंजूर - जी हुजूर।

अखिलेश - समस्त दर्षकि लोकनि,

अखिलेशक नव वर्षक हार्दिक शुभकामना आ अभिनन्दन। आइ ऐ देशक अहोभाग्य अछि जे मंजूर जका अपन अधिकार आ कर्तव्यके बुझ बला पहिल नागरिक हमरा सभके प्राप्त भेल जे गरीब-गवार रहैत देशक भष्टाचारीक विरुद्ध बीड़ा उठा कऽ अपन इमानदारी आ कर्मठताक परिचय दैत सफलता समस्त जनताक बीच समर्पित केलनि।

हम श्रनक अहम भूश्रकासँ पसन भऽ कऽ बेस्ट श्रटीजन ऑफ द नेशन अवाडकि लेल चुनलौ आओर एखन शीघ हम श्रनका अपन अवाडसँ सम्मा श्रात करबश्र।

(ि पिरीक बौछार भऽ जाइए।)

मंजूर भाय अपनेक दशकि लोकश्राके श्रकछु कश्रयौ।

मंजूर - हम दशकि भाय सभके की कहबैन। हम तँ मुरख छी। तहन अपनेक आजा भेलै तँ श्रकच्छो कश्र दै श्रछऐ।

हम तँ इहाए कहब जे देशमे भष्टाचारीके जनम जनता देलकै आ ओकर पालन-पोषण से हो जनते करै छै। जदी एकजुट भऽ कऽ सख्ती सँ एकर श्ररोि काएल जाए तँ पका कहै छी जे ऐ महामारीसँ देशके मुश्रक्त भेटतै आ हमर देशक कल्याण हेतै ताि दुश्रायामे एकर नाम हेतै। ऐ से बेसी हमरा श्रकच्छो नै फुराए य। ि निवाद। (फेर ि पिरीक बौछार भऽ जाइ छै।)

अश्रवलेश - आब अपने सबहक समक हम मंजूर भायके सम्मा श्रात काए रहल श्रछयश्रह।

(अश्रवलेश मंजूरके फुल-माला अश्रति केलश्र। ि पिरीक बौछार भेल। अश्रवलेश मंजूरके अवाडदिेलश्र। ि पिरीक फेर बौछार भेल। मंजूर अश्रवलेश के पएर छूश्रब पणाम कर चाहैत छश्रि। मुदा अश्रवलेश मंजूरक हाि पकश्रड़ लै छश्रि।)

मंजूर भाय, सचमुच अपने ऐ देशक महान पेरक श्रछऐ। हमरा सँ बड़ पैघ श्रछऐ। अहाके हाश्रदकि पणाम।

मंजूर - खुश रहु अश्रवलेश भाय। अहाके हमर उमेर लश्रा जाए।

(मंजूर अश्रवलेश सँ गरदश्र श्रमललश्रि आ नजीमा अनपूणा के पएर

छूबि पणाम केलक। ि◌परीक बौछार भेल।)

प टा के प

दृश्य- पनरह

(स ि◌न - मंजूरक झोपरी। मंजूर अपन भाए रमजानीसँ गपसप कऽ रहल छथि।)

रमजानी - भैया, की केना भेलै चुनलीमे?

मंजूर - बौआ, अखिलेश हमरा अबार देलकै आ फुल-माला हमरा पहिरा कऽ नवाजलकै। लोकक बड़ भीड़ छेलै।

(चन्दन आ अमरना ि◌क पवेश।)

अमरना ि◌ - मंजूर भाय नमस्कार।

मंजूर - नमस्कार, नमस्कार। मुखियाजी, परणाम।

चन्दन - परणाम, परणाम।

मंजूर - बैसल जाउ, सरकार सभ ।

(चन्दन आ अमरना ि◌ पीढ़ीयापर बैसलथि।)

अमरना ि◌ - मंजूर भाय, खर्च-बिच ि◌ कर । अहाके इंदिरा आवासबला बीस हजार टाका आबि गेल आ मुखियाजी सेहो अपना तरफसँ पाच हजार टाका दै छथि।

मंजूर - अमरना ि◌ भाय, हमरा हरामक पाइ नै चाही हमरा अपन उचित पाइ बीस हजार चाही अप्पन पाइ मुखिया जी अपने रखथि।

अमरना ि◌- मंजूर भाय, अहाके मुखियाजीबला पाच हजार लेमहि

पड़त। उ अहाके पाच हजार मदश्रामे दै छथि।

मंजूर - एहेन मदश्रा लेबाक मन नै होइ अए। कारण मुख्यियाजी समाजक संग बड़ गददेदारी करै छथि।

चंदन - इएह श्राय, पच्चीस हजार टाका।

मंजूर - लाउ, बड़ श्रन्द करै छी तँ।

(चन्दन मंजूरके पच्चीस हजार टाका देलश्रा।)

चन्दन - मंजूर भाय, आहा सचमुच महान छी। हमर गलती के माफ काएल जाए।

मंजूर - गलती तखने माफ करब जखन अपने पश्रालक संग नीक व्यवहार करब।

चन्दन - आब केकरो संडे. गलत व्यवहार नै करब।

मंजूर - तहन गलती माफ अछ।

अमरनाि - िन्यवाद मंजूर भाय।

(चन्दन आ अमरनाि क पसिान।)

रमजानी - भैया, बड़ चौसैठ छह मुख्यियाजी। एहेन घूसखोर नै देखल।

मंजूर - तै ने हमरा सनक गरीब आ मुरख सँ घटी मानलश्रा।

रमजानी - भैया, तोरा एते आगू बढ़ाबामे श्रकनकर यानगदान छै?

मंजूर - बौआ, नेताजी श्रनोदक श्रकरपा छैन। ओ गुदरीक लाल छथिन। गरीब जरर छथिन मुदा सब तरहक बुश्रिमे पारंगत छथिन। गरीबक मसीहा छथि। उश्रातक लेल जी जान लगा दै छथिन। (नेताजी श्रनोदक पवेश।)

परणाम नेताजी।

विनोद - परणाम, परणाम। कह मंजूर कह रमजानी की हाल-चाल छै?

रमजानी - अपनेक किरपा सँ बड़ बढ़िया छै। नेताजी, भैयाके खाली अबारेट भेटलै और कहा किछु भेटलै।

विनोद - कथी भेटतै?

रमजानी - किच्छो पाइ-कौड़ी भेटतै तहन ने?

विनोद - बौआ, प्रतिष्ठा से बढ़ि कऽ किछु नै छै। ओना पाइयो प्रतिष्ठाक शृंगार छिऐ। सेहो मंजूर के जरूर भेटतै। मंजूर तो धैर्य राखह संतोष राखह। सबटा धीरे-धीरे हेतै। बहुत ठाम तोहर सहयोगक चर्चा भऽ रहल छै।

मंजूर - नेताजी, अपने जेना कहबै। हम साएह करबै। नेताजी, अपने अपन अनुभव दर्शकके किछु दैतिऐ तँ बड़ बढ़िया होइतै।

विनोद - हम कोन जोकरक छी जे दर्शकके अपन अनुभव देबै। आइ-काल्हि कियो केकरोसँ कम नै छै। तैयो हम दू शब्द कहि दै छिऐ।

अशिक्षाके कारण जनता सुयोग्य प्रतिनिधिक चयन नै कऽ पावै अछि, ताड़ीए दारूए पर बीकी जाइ अछि। स्वभाविक छै जे प्रतिनिधि व्यक्तिपुतीमे घूसखोरीक औशय लेत। ओइ घूसखोरीके मेटाबऽ लेल हमरा लोकनिके एकजुट भऽ कऽ शिक्षाके सबसँ आगू बढ़ेनाइ अछि। हमरा नजरिमे सबटा अव्यवस्थाक मूल कारण अशिक्षा छै। अशिक्षा हटतै तहने व्यवस्था सुधरतै आ देशक चहुँमुखी विकास हेतै। अंतमे मंजूरके हार्दिक बधाई दैत अपन दू शब्द खतम करै छी।

जय हिन्द ! जय भारत !! जय शिक्षा !!!

पटाक्षेप

ऋष्ि वशिष्ठ

पूत कमाल

अजुनि चौरीक बियाह गाममे चचकि विषए बनल छलै। अजुनि चौरी एकटा सुभ्यस्त गृहस्ि रहैत अपन बेटाके कोनो ने कोनो जोगाड़े बिदेश पठा देने छला। चौरीक बेटा दस सालपर गाम घुमल छल। सौसे गामक लोक पछिने यएह कहैत छलै जे अजुनि चौरीके ओहि बेटे पोता नहि होमएबला छनि। ओकर लोछिया डूमले बुझू! ओकी आब गाम आओत? एह! ओ छौड़ा आब चौरीक कहने बियाह दान करतनि......... ओ तँ ओम्हरे कतहुँ साइट-ाइट लगौने हेतनि की! अजुनि चौरीक बंश बुड़ले बुझू।

अजुनि चौरीके अपन एकमाि पुि बंशीपर भरोस छलनि मुदा लोकक बात सुनि-सुनि हुनको करेज दलमलित होमए लगैत छलनि। खास कऽ जखन बंशीक माए ककरो बेटाक चचा करैत छलखिन जे ओ बाहरेमे बियाह कऽ लेलकनि। तखन तँ चौरीके जेना करेज कटि कऽ खसि पड़ैत छलनि।

जहियासँ बंशी आएल अछि सगरो गाममे ओकरे चचा होइत

रहैत छैक। ओना आबक बंशी आ दस साल पहिनेक बंशीमे कतहु मेल मिलाप नहि छैक। दस साल पहिने जखन बंशी कोलकाता गेल छल तँ ढिल-ढिल करैत देह दशा, कौड़ी सन-सन लटकल आँखि आ ढिरीके जेना ढिमकबैत चाहि।......... आर तँ जे, ओकर वेश-भुषा आ बगए-बानिसँ ओ साफे परदेशी बुझाइत। ओ बंशी आब बंशी नहि रहल अपन नाम बदलि कऽ डब्बू कऽ लेने अछि।

गामक लेल डब्बू चिड़ियाघरमे आएल नव जानवर जेका छल जकरा सभ किओ देखए चाहैत छल। आ डब्बूक लेल ई गाम-घर आ लोक सभ किछु नब बनि लगैत छल। ठीक ओहिना जेना माल-जाल लेल नबका बनि। सभ किछुके सुँघैत। धीयापूता स्कूलसँ हेजक-हेज अबैत छल डब्बूके देखवाक लेल। डब्बूक ढिलढिल देहदशा पएरमे उज्जर दप-दप जुता, लाल रेगक घुटी भरिक मौजा, तैपर कारी रंगक ठेहुन धरि पहिरने पैट। पैटमे बसोटा जेबी जेना जगह-जगह चेफड़ी साटल होइ। ऊपर बंदगलाक गंजी आ माथपर मुजैला पथियाक टोप। आँखिमे कारी खुंझा चश्मा, पाछासँ डोरी बान्हल। धीया पूताक लेल जेना एकटा खेल उखड़ि गेल छलै। केम्हरोसँ आएल आ डब्बूके देखि कऽ खिसिया लेलक। एतबेमे जेना ओकर सबहक सभटा ठेही मेटा जाइ। अजुका चौकरी डब्बूक बियाह करेबाक लेल गोटीपर गोटी फिट करैत रहलाह। पहिने तँ हुनकर अनुमान छलनि जे बेटाके अबिते घटक झपटा मारत। लड़का परदेशमे कमाइए। भेल मुदा उनटे। ओ जतए बेटाक बियाहक चचा करथि सभ यैह कहि कऽ टालि दैत छलनि जे कलेती लड़काक कोन ठेकान। ओकरासँ बियाहि कऽ के अपन बेटीक जिनगी खराप करत......... एकटा बुढ़ा तँ एतेक तक कहि देलखिन जे- ''औ बाबू, तोहर बेटा छह भारत छोड़ो आन्दोलनकारी आ हमसभ छी सुच्चा

भारती। गाीक भारत छोड़ो आन्दोलन छलथि फिरंगीके भारत छोड़ेबाक लेल आ तोहर बेटा तँ अपनहि भारत छोड़ने छह......। आब तोही कहह जे के एहन िरकट बाप होएत जे एतेकटा बेटीके पोसि-पालि कS अपनहि हाि गरदनि काटि लेत?''

......अजुिन चौिरीके जेना सटाक्........चाट लगलनि ओहि बुढ़ाक बातक। ओ जेना तेना बेटाक बिआह कराबक लेल मोने-मोन िनशय कS लेलनि।

डब्बूक लेल लोकक व्यवहार सामान्य नै छलै आ गामक लोकक लेल डब्बुक व्यवहार असमान्य छलै। ठीक ओहिना जेना ओझाक लेखे गाम बताह आ गामक लेखे ओझा.........। गाम भरिमे टुनटुन एकमाि ओहन लड़का जकरासँ डब्बू जखन-तखन गप्प करैत छल। टुनटुन डब्बूक बालसंगी छलै जे पढ़बा-लिखबामे तेज रहितो पिरिस्थतिवश गामेमे रहैत छल।

.......जेना-तेना अजुिन चौिरी अपन बेटाक रामनगर तँइ केलनि। ओ अपन बेटाक बदलल व्यवहारसँ कनेक बेसिये चिन्तित छलाह। बिआह तँ तँइ भS गेलै मुदा किछु तेहन ने भS जाइ जाहिसँ सभ कएल-िएल चौपट भS जाए।

........आइ बिआहक िदन अछि। अजुिन चौिरीक घरमे जेना उत्सवक माहौल छनि। आँगनसँ कखनो-कखनो मिहलाक सामुिहक स्वरमे गीत आ कखनो हँसी-ठटाक अवाज दलान िरि पहुँचैत अछि। आंगनमे बजैत साउण्ड वॉक्ससँ िनकलैत रीिमक्स गीत........''सैया िदलमे आना रे......'' मुदा बेसी सुनाइ पड़ैत छल।

दलानपर हिपड़ीक लेल आएल पाच गोट सुभ्यस्त भेल बैसल छिथ। गाम-समाज अपन-अपन तकिसँ डब्बू आ अजुिन चौिरीक

गुणगान करबामे जुटल अछि। पाहुन सभ कखनो-कखनो गप्पोमे सहमति आकि असहमति टा व्यक्त करैत छथि। एकटा पौढ़क कहब छन्हि जे- ''बस्स एकटा संतानके विदेश पठा दिऔ! देखियौ सभ कष्ट दूर....!''

दोसर कहैत छथिन- ''विदेश पठाएब सबहक बशमे बात नै छै औ बाबू! विदेश पठाबमे केहन केहनके ढोढ़ी ढील भऽ जाइ छै।''

पौढ़ जेना दोसराक गप्पके मलहम लगबैत छथि- ''से तँ होइते छै, फाउ-दावमे जँ विदेश जैतै तँ सभ अपन बेटाके विदेशे पठा दितै।''

अजुका चौरीक जेना जीह टागल छलन्हि। ओ कछमछीमे रहथि। कखनो आँगन कखनो दलान। आँगनमे स्त्रीगणक भीड़ आ दलानपर पुरुषपातक। डब्बू विआहक लेल तैयार भऽ गेल छल। ओ कोट पैंट पहिरि गलामे टाइ लगा कऽ तैयार छल। स्त्रीगण सभ ओकरा धोती-कुर्ता पहिरेबाक लाख कोशिश केलन्हि ओ साफे नकारि देलकन्हि। डब्बू धोती-कुर्ता आ डोपटा-पागके ''पूअर'' डेस कहैत अछि। डब्बूक माए जखन कपड़ा बदलबाक लेल कहलखिन तँ ओ तमकैत बाजल- ''हम डेसमे कोनो कम्प्रोमाइज नै कऽ सकै छी।''

महिला सभ कनफुसकी करए लगलीह। ''मए गै माए, एहन अन्हेर नै देखल-ए! ई मैथिल बाहमणक विआहमे कतौ अंगरेजिया डेस चललै-ए?''

बेराबेरी सभ बुझबैत रहलीह मुदा डब्बू ककरो बात मानबाक लेल तैयार नहि भेल। हरिड़ीक बेर भेलै। महिला सभ कनफुसकी करैत सभ विधिके पूरा करैत गेलीह।

स्त्रीगणसभ गीत गबैत डब्बूके लऽ कऽ दलान तक गेलीह। डब्बू अप्टू-डेट बेर। सूट-बूटमे सजल-धजल। पैंट-कोट टाइ जूता आ

काखतर झुलैत एकटा बैग।
पाहुन सभ वरके देखिते अकचका उठलाह। बरियाती समाज सेहो चौंकि गेलाह। अजुनि चौरिरी मुदा गपमके सम्हारलथि।
-“कपड़ा-लतासँ कोन अन्तर पड़तै, जेहने ितीं तेहने सूट-बूट। देहो झँपेबाक ने काज छै।”
बरियाती समाजसँ एकटा युवक व्यंग्य केलक- “वाह! बहुत सुन्दर! ई भेलै ठिकने पगतिवादी विचार!”
अजुनि चौरिरी जेना लजा गेलाह। हुनका वुझबामे अएलथि जे ई वाह-वाही नहि अपन संस्कृतिक पतनपर व्यंग्य वाण छल जे सोझ करेजमे लागल। हिकड़ीक लेल आएल पाहुन उठलाह। ओ अपन थि बाकि लेल अगसर होइत बजलाह- “ऐसँ हमरा सभके कोनो अन्तर नै पड़ैए! हमसब तँ घरबैयाक पठाओल दूत छी। ......बस्स! वरके लऽ जेबाक अछि। आब ई सूट-बूट विहहि कऽ चलथि वा नागट से तँ हुनकर विवेकक बात छै।”
एकटा बुढ़के जेना अकस्मात बजा गेलथि- “कमसँ कम मािे तँ झाथि दहक! उिरे मािे विआह करेबहक?.......हौ, मािक पाग पहिष ाक आशानी होइछै।”
एतबा सुनिते झट् दऽ डब्बूक भाय िनेस लागल पाग डब्बूक मािपर िऽ देलखिन। डब्बू झटकैत ओकरा नीचा खसा देलक।- “ई केहन जोकर सन लगैए।”
डब्बू टुनटुनक इशारासँ लग बजौलक आ कानमे किछु फुसफुसाइत कहलक। टुनटुन आंगनसँ मुजैला टोप नेने आएल। डब्बू ओकरा मािपर रखैत मुस्कुराएल। फोटोगाफरक बिजलौका चमकि उठलै। कन्यागतक दलान भुकभुकिया बल्ब आ टेन्ट-समेनासँ िरल-बेढ़ल आ

सजाओल छल। शहनाइ खानक सहनाइक ि न बाजि रहल छल। सौसे गामक लोक वर बरियातीक स्वागतक लेल उताहुल छल। वर बलेतमे रहै छथि, ई भीड़ जुटबाक आकषणि छल। पुरुष आ स्त्री सभ बलेतीया वरके देखए चाहैत छथि। सबहक मोनमे एकटा नव जिज्ञासा। वर बरियातीक गाड़ी घरि.....घोऽऽऽ करैत कन्यागतक दलानपर पहुँचए लागल। वरके उतरैत देखि स्त्रीगणक झूंड दूरेसँ ठहाका मारलथि- “माए गै माए, ई वर तँ मुँहोमे जाबी लगौने छै।” - “आ सूट-बूट ने देखियौ! गोविन्द कका ठीके सुलेखियाके गददिमे काटि लेलखिन।”- एकटा किशोरी बाजि उठलि।

कन्याक माएक करेज पातसन कापए लगलनि। ”हे भगवती आब की हेतै?”

पड़ोसिन सभ रंग-बिरंगक चर्चा-बिचार किरए लगलीह। ककरो कहब छलै जे- “सुलेखा एकरा संग कोना जीवन बिताओत!”

तखनहि एकटा मझिला बाजि उठलीह- “देखियौ यै, ई तँ वरक हाथिमे किदन भेल छै।........ बापरे बाप! सौसे हाथि ठेल्ला ओदरल छै।”

एकटा युवती तजबीज करैत बाजल- “नै यै काकी, ओ तँ हाथिमे किदन पहिरने छै।”

कन्याक माएके रहि-रहि सेप सुखाइत छलनि। कन्याक जेठकी बहीन भाकिरी बनल छलीह। ओ वरके देखि बाजि उठलीह- “देखियौन ने, तेहन नाच नचेबनि जे सभ बलेती भूत उतरि जेतनि।”

सभ स्त्रीगणके जेना कोनो कौतुक दृष्यक अनुमान लागि गेलनि। ओ सभ खिखिया उठलीह।

दलानक दृश्य अदुते छल। बरियाती सभ अपना-अपनामे मस्त। सरियाती स्वागत सत्कारमे व्यस्त। अजुनि चौिरीक मुँहपर मुदा जेना फुफड़ी पड़ैत छलनि। पंडालक सभसँ मुख्य आसनपर बैसल डब्बू

अपन भाविक टुनटुनसँ लगातार बात-विचार करैत छल। टुनटुन डब्बूक "गाइड" बनि गेल छल। डब्बू पछिछनक लेल बजाओल गेलाह। स्त्रीगण सभके जेना एकटा खेलौड़िया नेना हाथि लागि गेलै। एकिरी चौल करैत बजलीह- "की यौ दुला, ई नाकमे मुनो एकएक लगौने छी? कने नाक बाहर करियौ तखन ने बाि-बाि हएत।"

दोसर स्त्री खिपलखि- "आ हामिमे जे काछु जेका खोल पहिरने छथि से?"

तेसर स्त्री अधिकाधिक कपे बाजि उठलीह- "ओहो खोलए पड़तनि की! सभटा वस्त्री खोलए पड़तनि, तखन ने पछिछनि हेतनि।"

तेसर स्त्रीक गप्प समाप्तो नहि भेल छलनि कि एकटा युवती डब्बूक हाथिसँ सट् दऽ दस्ताना खींचि देलकनि। डब्बू जेना झुलसि उठलाह।

- "ओफ्फो! एनामे तँ इन्फेक्शन भऽ सकैए!"

डब्बू दस्ताना छीनबाक लेल झपटलनि तावेत ओ युवती ओहि दस्तानाके जुमा कऽ फेकलक! डब्बू जेना बेचैन भेल एम्हर-ओम्हर मूड़ी झापए लागल। तावत एकिरी नाकमे लागल मास्कपर हाथि दऽ देलक। पाछासँ ओ युवती मास्कक डोरी खींचलक।

......देखिते-देखिते ओ मास्क एकिरीक हाथि आबि गेल। ओ ओहि मास्कके अपना नाकपर लगवैत लोकके हँसेबाक अभिनय केलनि। डब्बू अपन दुनू हाथिक तरहत्थीसँ नाक झापलक। एकटा मस्तला महौलके आर सुखद बनबैत बजलीह- "जाह! दुलाके नाक तँ छनिहे! ई छौड़िया सभ तखनसँ कहै छलैए जे दुला बिलेतमे नाक कटा आएल छथि।"

समूचा भीड़ ठहाकापर ठहका लगाबए लागल।

एकटा युवती व्यंग्य करैत बजलीह- “दुला बड़ लजकोटर छथि न! देखियौन ने अपनाभरि एकोटा अंग उिघार छोड़ने छथि न!”

सभीगणक हँसी-ठहका बढ़ैत गेलिन्ह आ डब्बूक तामस। डब्बू मास्कके बिना एतेक लोकक बीच रहब सोझे सोझ बिमारीके नोतब बुझैत छलाह। ओ केहन-कहा हाि सभीगणक स्पशकि ऽ इन्फेक्शनके बेसाहब मानैत छलाह। ओ तरङैत अपन कपड़ा उतारबसँ इन्कार कऽ देलिन्ह। सभीगण सभ छिद पकड़ि लेलिन्ह। बिना वस्ि उतारने एकहुटा बिि आगू नै बढ़त।

डब्बू तमकैत दरबाजजा दिस पड़ेलाह। सभीगण सभ हँसैत आ थिकारैत पछौड़ केलिन्ह। अजुिन चौिरी, डब्बूके देखि जेना अिमर भऽ गेलाह। डब्बू फनकैत बजलाह- “एहन बिआह हम नै करब। ई सभ तँ हमर.....।”

अजुिन चौिरी डब्बूके पोलबैत बजलाह- “एना तामस नै कर! ई सभ बिि-बेबहार छै! ई सभ तँ करिन पड़त!”

- “हम नै करब एहन बिि-बेबहार!............फुलिश मैरेज.........।.........भेगाबोन लेिज!!”

- “तखन तँ बियाहो नै हेतह!”

- “बिआह नै होएत तँ नै करब!............आ जँ बिमार भऽ जाएब तखन......?”

एकटा बुढ़ बिरयातीके नहि रहि भेलिन्ह। ओ चमकैत बािन उठलाह- “इह बुड़िबक नहितन! अँइ हौ! एहन जे जीह छेगाएल छह से तोरेटा बिआह हेतह कि आर ककरो भेल छै?”

दोसर बृद दात िकचैत बजलाह- “नै, नै! यएह एकटा अवतारी पुरष भेलाहे।”

अजुिन चौिरी आ टुनटुन डब्बूके बुझबैत रहलाह! सभीगण सभ ठहका

मारैत रहलीह। कन्याक माएक करेज कपैत रहलनि। विधि-बेबहार ठमकल छल। सबहक मोनमे शंका छलैक। की हएत, की नै? पुरान स्त्रीगण सबहक कहब छलनि जे- “बर झमकाह छैक। एकरा घुमा दियौ! कथीलए सुलेखाक गरदनि हलाल करबै।”

नवतुरक मुदा दोसरे विचार! सुलेखाक सहमतिक अनुसार लेब जरूरी छलै। निस्तुकी भेल जे- “सुलेख अपन आँखियें बरके देखथि आ अपना इच्छा-बाकि लेल निर्णय करथि। ओ हँ कहतीह तँ बिआह होएत आ नहि कहतीह तँ डब्बूक बिदाइ।”

नव तूरक ई निर्णय बुढ़-बुढ़ानुसके कठाइन लगलनि। ओ सभ नाक-मुँह चुकवियाबए लगलीह।

स्त्रीगणक झूंड सुलेखाक नेतृत्वमे दलान दिस बढ़ल। बुढ़ पुरान पछुआ गेलीह। सुलेखा डब्बूके इशारासँ अपना दिस बजेलीह। डब्बू नहि मे इशारा केलनि। स्त्रीगणक झूंड आर आगा बढ़ल। बिकिरी बाबू उठलीह- “की सुलेखा? हँ की नहि?”

सुलेखा मुस्कियाइत हँ मे इशारा केलनि। बिकिरी हाथ बढ़बैत डब्बूक टाइ पकड़लनि। डब्बू अजुनि चौरी दिस पड़ाए लगलाह।.........ऊँहूँ.......! आहा आब सुलेखाक सम्पत्ति छथि। ओम्हर नै एम्हर चलू!” ई कहैत बिकिरी डब्बूके अपना दिस खिंचि विदा भेलीह। सभ स्त्रीगण डब्बूके सहटारैत आंगन दिस चललीह। बुढ़ी सभ सेहो पछोड़ धऽ लेलनि।

बरियाती सभ भयमुक्त भऽ हँसी ठटामे लागि गेलाह।

<u>देवाशु वत्स</u>, जन्म- तुलापटी, सुपौल। मास कम्युनिकेशनमे एम.ए., हिन्दी, अंग्रेजी आ मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे कथा, लघुकथा, विज्ञान-कथा, चित्र-कथा, कार्टून, चित्र-पहेलिका इत्यादिक प्रकाशन।

2
कि बुचु लोकनि, असगरे-असगरे बनभोज भ' रहल अछि! आ गरीब ममा के खाए लेल नहि पूछब?
कियैक नहि यो ममा! ई लिय...
आह! धन्यवाद!
visit : www.devanshuvatsa.com
mail to : devanshuvatsa@gmail.com
आह, बड्ड स्वादिष्ट! मजा आबि गेल !
...मुदा पेट नहि भरल...
बुचु लोकनि, ओहि मे त' पेट नहि भरल! किछु आर खियाउ...
?

3
ममा, ई लिय...
धन्यवाद भागिन !
आय त' हम्मर भाग्य बड्ड नीक अछि!
हम सभ ठगा रहल छी....
visit : www.devanshuvatsa.com
mail to : devanshuvatsa@gmail.com
एना मे त' हम सभ भुखले रहि जायब!
की कयल जाय?
हमरा एक टा उपाय सुझि गेल !
इम्हर घोंघी बाबू...
चपर...चपर...आह मजा आबि गेल!

4
ई नहि भेल बुचु लोकनि... किछु आर खियाउ...
मभा ई लिय, एकर स्वाद अहाँ नहि बिसरब...
भगवान अहाँ सभ के" भला करय !
नेना सभ कें ठगनाय कियो हमरा सँ सीख लेय...
visit : www.devanshuvatsa.com
mail to : devanshuvatsa@gmail.com
मुदा एहि बेर...
हौ बाप, ई की?
हौ बाप !
मजा आबि गेल!
समाप्त

बुल्लुक
टॉफी
© देवांशु वत्स
...फुदना कुकुर ! आब ई टाफी कतय नुकाबियै..
शील्ड मे नुका देत छियै... किनकहु एक्कोहु टा हाथ नहि लागय देबैन्हि...
मम्मी, हम नहब' जा रहल छी....
जाउ!
चाची, बुल्लु कतय गेल ?
एखनहि नहब' गेल अछि.... कोनो काज छल की ?
हाँ...
ई शील्ड.. मैच त' देरी सँ शुरू हेतय मुदा शील्ड सजल रहला सँ सोहनगर लागतै......
नहेलाक बाद..
ओह !!!!! मम्मी शील्ड ???
एखनहि फुदन जी ल' गेलाह....
???
जुलुम भ' गेलय!
शील्ड भनय ल' अनलैं !
हाँ, औ नहा रहल छलहि...
भीतर मे ई की छियैक ?
टॉफी !?
टॉफी!
आह!!!
जीबह बुल्लु!
आनन्द भ' गेलै !!

नताशा
© देवांशु वत्स
कैल्हि अहाँ सब के मदति करबाक पाठ सिखेन' छलों......
......कनेको असर भेल कि नहि ?
www.devanshuvatsa.com
हाँ यो सर जी, भेलै की!! आई भोर हम सब पांच टा बच्चा एकटा बूढ़ि मैयां क' सड़क पार करेलिये!
आह, अति उत्तम! मुदा नताशा, अहिमे पाँच गोटे के कोन काज?
सर, पहिन' त' हम असगरे गेल छलिए......
......मुदा बुढ़िया पार हेबाक गरे नै करैत छलै !!!

नताशा
© देवांशु वत्स
एक दिन नताशाक ओहिठाम चोइर भ' गेलै.....
तोहर पापा कहैत रहो जे डेढ लाखक समान चोइर भ' गेले.....
मुदा माय कहैत रहो पौने दू लाखक...... से किया ???
कका, नै बुझलिय, वैह सदमा स' ददा क' हर्ट अटैक भ' गेले.......
...माय हुनकर इलाजो केर खर्चा....
.........जोड़ि दैत छथिन !!!

नताशा
© देवांशु वत्स
आ ऽ ऽ ऽ करू त बुची !
आऽऽऽ
गै मा...हो बाप
कन' कालक बाद
डाक्टर सेहाब कतेक पाइ भ' गेल ?
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
दू सौ टका मात्र !
दू सौ ? मुदा बोर्ड पर त' पचासे टका लिखल य'...
हां, मुदा अहाँक बचियाक बपरहैर सुनि हमर....
....तीन टा पेसैंट परा गेले ?

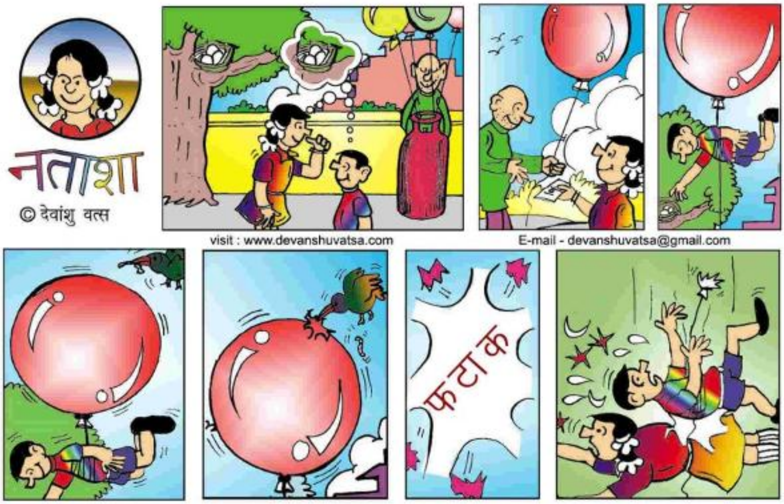
नताशा
© देवांशु वत्स
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
फटाक

नताशा
© देवांशु वत्स
नताशा, हम आइयो ओतबहि ताकतवर छी जेतना आय से तीस साल पहिने रही......
अहां इ बात कोना कहि सकैत छी ?
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
अहां ओ पत्थर देखि रहल छी ?
हां...
ओकरा हम तीस साल पहिने नहि उठा सकैत रही....
....आ आइयो नहि उठा पबैत छी !!!
!!

नताशा
© देवांशु वत्स
नताशा, अहां के की चाही ?
कका....
केमिस्ट
अहां के याद होयत..... दूइ दिन पहिने हम रोशनाईक दाग छोड़ाबय वला दवाई ल' गेल छलौं.......
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
हां.....हां.... याद अछि.... और चाही की ?
नहि कका......
ओहि दवाइक दाग छोड़ावय वला दोसर दवाइ होइ त' द' दिय !!!

नताशा
© देवांशु वत्स
बुचु, कियेक कान' छी ?
दीदी, हमरा कियो ने घुमा देय छै...अहां घुमा दिय' ने !
कियैक नहि, एतेक नीक बुचु के कियैक नहि घुमायब..
दीदी, कन' तेज दौड़ब....
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
आह ! एहिना तेज !!!
....कनेक आर तेज.....
...कनेक आर.....
हम्फ..हम्फ... सुआइत कियो एकरा नहि घुमाबैत छैक!!!

नताशा
© देवांशु वत्स
जल्दी करू.....!
O. T.
कनेक काल बाद
O.T.
डॉ. साहेब, कका केहन छथिन ?
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
ठीक छथिन। उ त समय रहैत हम ऑपरेशन क' देलौं ने त'.......
ने त' की भ' जायते डॉ. साहब ?
नहि त'....नहि त'....
.....बेमारी अपनहि ठीक भ' जायते !!!
O.T.
!!

नताशा
© देवांशु वत्स
नताशाक मामा आयल रहथिन....
मम्मी, एतेक रोटी....!?
श: श: चुप रहु ! जा के मामा जी कँ बजा आनू.......
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
अरे ! एतेक रोटी !!
....पचपने टा अछि!!
..हमरा लेल पचपन टा रोटी! मता गेल छी की ? एतेक रोटी हम खा सकब ......?
....निकालू एहि मे सँ तीन टा रोटी !!!

नताशा
© देवांशु वत्स
एक दिन......
भ..भाइ जी... ट..टाईम क.... की भ....भ.. गेल ?
क...कनि स..समय बता देब ?
भ..भाइ जी...ट.. टाईम क....की भ... गेल ?
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
दोसर आदमी चलि गेल..
कका, अहां हुनका समय किये नहि बता देलिय ?
ब...बुची ह..ह..हमरा ह...ह...ह...हुनका से म...म...मारि–पीट न..नहि क... करे के र...रहै !!!

नताशा
© देवांशु वत्स
नताशा स्कूल जायबाक लेल तैयार भ' रहल छल..
दीदी किछु खाय लेल दिय........
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
एना भीख मांगै छिय...... अहां कें त' अखनि स्कूल जाना चाही.......
ओतहियो गेल छलिय मुदा.....
......ओतहि फूटियो–कौड़ी नहि भेंटल !!!
!

नताशा
© देवांशु वत्स
नताशा आ' पीलू स्कूलक रस्ता मे.....
तखनि....
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
दाय गे, उ बकरी एतबा कानॅ कियेक रहै ?
...ओ आदमी ओकरा कसाइ लग ल' जायत छलै, तँ कानॅ रहै.....
ओ ! हम त' बुझलिय, ओ ओकरा स्कूल ल' जायत छलै!!

नताशा
© देवांशु वत्स
नताशा, अहाँक ओहिठाम घोड़ा ! ?
हां, ई घोड़ा काकीक लेल छै......
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
अच्छा !
काकी अपन वजन घटवाक लेल तीन महीना सं घुड़सवारी क' रहल छथिन..
कोनो असर भेलैन ?
...हा, घोड़ाक वजन दस किलो कम भ' गेलै !!!

नताशा
© देवांशु वत्स
?
धूमऽ धड़ाकऽऽ
थप्पड़ऽऽऽ
कक्का, कक्का, टिक्कू कें किये मारि रहल छिये ?
HERO
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
इ कोनो बदमाशी केलक य' की ?
नहि नताशा, एहन गप्प नहि अछि...
फेर ?
हम एक हफ्ताक लेल आगरा जा रहल छी.....
...आ' दुइ दिनक बाद हिनकर परीक्षाक रिजल्ट आबि रहल अछि !!!
!!
HERO

नताशा
© देवांशु वत्स
एक दिन....
खट..
खट..
बुची कन' खाय लेल दिय......
अहां कॅ पड़ोसिया मिसर काकी भरि पेट चूड़ा–दही खियैलक...
आ' अहांक खट्टर काकी त' खूब तरह कॅ मिठाइयो.....
.......अहां की खियायब ?
एक मिनट रुकु.....
ई लिय, हाजमाक गोली !!!

नताशा
© देवांशु वत्स
अरे, ददा त' सुति गेलखिन !!!
ददा यो, ददा, जल्दी उठू.....
visit: www.devanshuvatsa.com
E-mail: devanshuvatsa@yahoo.co.in
ओह ! कतेक गहिर नींद मे छलौं.....
कियेक उठा देलही नींद सं'...
ददा, असल मे......
.....हम अहां के नींदक दवाइ देनाइ बिसरि गेल रही !!

नताशा
© देवांशु वत्स
नताशा पचास टका देब ?
किय नहि ! ई लिय...
बहुत धन्यवाद!
visit: www.devanshuvatsa.com
E-mail- devanshuvatsa@gmail.com
मुदा वापस कखनि करब ?
आगरा सं वापसीक बाद.....
....से कखनि आबि जायब आगरा सं ?
पता नहि ! अखनि त' जाइये के प्रोग्राम नहि बनल अछि !!!

नताशा
© देवांशु वत्स
नताशा, अहांक मैथिली बड्ड कमजोर अछि। काल्हि अहां घर सं अपना बारे मे 20 पंक्ति मे लीख क' आनब !
नताशा, अहां कें काल्हि हम किछु कहने रही ! याद अछि ?
visit: www.devanshuvatsa.com
E-mail- devanshuvatsa@gmail.com
हां सर !
दिखाउ !
ओह ! इ त' अहां मात्र पंद्रहे पंक्ति मे लिखने छी......
सर, असल मे ओ.....
....हमर गणितो कमजोर अछि !!

नताशा
© देवांशु वत्स
दिन–राति खेल–कूद! छोटका के किछु अहां पढ़ा नहि सकैत छी ?
फेर.......
पीलू ... दूई आ' दुई चारि होयत अछि त' अहां बताउ...
visit: www.devanshuvatsa.com
E-mail- devanshuvatsa@gmail.com
नौ आ' नौ केतना होबाक चाही ?
दीदी, अहां बड्ड बुधिआर छी ! हल्लुक सवाल कँ जवाब त' अहां अपने द' देलिय.....
.......आ' भारी सवाल हमरा लेल छोड़ि देलिय !!

नताशा
© देवांशु वत्स
कक्षा मे......
....हां त' बुतरु लोकनि, इतिहासक दोसर पाठ समाप्त भेल...
आब अहां सब से जे पूछि.......
....तकर जवाब फटाफट दै जाउ त'......
जी सर.....
नताशा बताउ.... अकबर के छलाह ?
सर जी, फटाफट !!!
!

नताशा
© देवांशु वत्स
एहि ठाम राखि दियो...
आब कनि हिसाबो क' लेल जाए.... पच्चीस सौ क' सारी....
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail : devanshuvatsa@gmail.com
सात सौ क' फ्रॉक... चारि सौ क' चूड़ी.... आ'...... तीन सौ क' क्रीम पाउडर......
आ'.....आ' चारि सौ क' सेण्ट.....आ'...आ' अस्सी टका....
...क' टैम्पू भाड़ा.... इ सबहक जोड़ की निकलत नताशा ?
पप्पाक दिवाला !!!

नताशा
© देवांशु वत्स
नताशाक पड़ोसी उस्ताद हल्ला चंद.........
मालिक, अहों एक दिन संगीत के दुनिया मे छा जायब !!!
तखनि...
....कियो संगीत प्रेमी आयब गेल की....?
डिंग डांग
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail : devanshuvatsa@gmail.com
कका, आय लेल अहां अपन तबला आ' हरमोनियम द' सकैत छी ?
हां हां किय नहि ! जरूर कोनो संगीतक प्रोग्राम होयत अहांक घर मे !
नहि कका, एहन कोनो बात नहि अछि। असल मे आय राति हमसब...
....चैन स' सुतबाक चाहैत छी!

नताशा
© देवांशु वत्स
एक दिन...
...ई जूता किनकर अछि नताशा ?
कक्का के !
लिय, बनि गेल जूत्ता ! दस टका भेल......
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail : devanshuvatsa@gmail.com
....कक्का, अहाँक नम्बर आयत तखनि टका भेंटत !
हमर नंबर आयत तखनि टका...मतलब ..मतलब!
कक्का, हमर कक्का कहने छथिन कि पहिने....
....उ दुकानदार के टका देल जतय, जिनका सँ ई जूता किनल गेल रहै !
!

नताशा
© देवांशु वत्स
नवका टी.वी.
बहिन जी, ई हमर कंपनीक लेटेस्ट मॉडल अछि..
टी.वी. के अहाँ भंसो-घर से ऑन-ऑफ क' सकैत छी..
वाह !
www.devanshuvatsa.com
devanshuvatsa@gmail.com
आब हम चलैत छी...
दुई दिनक बाद.
.....टी.वी. केहन लागल बहिन जी ?
..कक्का, बड्ड नीक! मुदा एक टा दिक्कत अछि..
कि ?
टी.वी. ऑन-ऑफ करय लेल माय के बेर-बेर भंसाघर में जायत पड़ैत अछि!

नताशा
© देवांशु वत्स
नताशा आ' रोमी रेस्टोरेंट में। भोजन केलाक बाद...
जा! पाइ त' आनबे नहि केलिय!
की?
हमरो लग पाइ नहि अछि!
मैनेजर आयल
कोनो बात नहि. अहिठाम देवार पर अपन-अपन नाम लिख दियौ....
www.devanshuvatsa.com
devanshuvatsa@gmail.com
...पाय भेटलाक बाद मेटा देल जायत !
देवार पर नाम!
..कियो देखतै त' भद्द भ' जेतैक !
निश्चित रहू...कियो नहि देख सकत..
से कोना?
..ऊपर अहांक अंगा जे टांगल रहत!!
!

नताशा
© देवांशु वत्स
एक दिन...
टपलू !
टपलू! अहांक ई हाल कोना भ' गेल?
Visit: www.devanshuvatsa.com
E-mail: devanshuvatsa@gmail.com
हंसेबाक कारण !
हंसेबाक कारण! मतलब ?
नताशा, असल मे काल्हि..
....हम पहलवान कक्का कें खरांति देख क' हंसि पड़ल रही!!
!

नताशा
© देवांशु वत्स
गुल्लु भैया, बड्ड खुश छिये। की बात ?
नताशा, आय मास्टर साहेब त' बुद्धू बनि गेलखिन !!!
www.devanshuvatsa.com
devanshuvatsa@gmail.com
अच्छा ! से कोना ?
...आय हमरा मास्टर साहेब राजू बुझि क' मारैत रहथिन..
...मुदा हम हुनका इ बतैबे नहि केलिय कि हम राजू नहि.....
...गुल्लू छी !!!
!

नताशा
© देवांशु वत्स
आह! हम कतय छी ?
अस्पताल में कक्का।राति मे अहां छत पर सं खसि पड़ल रहिय.....
www.devanshuvatsa.com
devanshuvatsa@gmail.com
आह भगवान! हम बचि गेलौं!
हां कक्का, मुदा उ तीनौं मरि गेलखिन...
..जिनका पर अहां खसल रहिय!!

नताशा
© देवांशु वत्स
नताशा, हम एक घंटा में आबि रहल छी। पीलू पर ध्यान देब...
मुदा एक घंटाक बाद...
?
visit : www.devanshuvatsa.com
नताशा, पीलू किये़क कानि रहल अछि?
काकी, पहिने त' ई एक टा स्वाइद खुनि लेलक...
.....फेर ओहि मे पानि भरि जिद क' रहल अछि जे........
...पानि सहित ई स्वाइद कोठरी मे ल' चलू !

नताशा
© देवांशु वत्स
एक दिन...
हो बाप!
कक्का, की भ' गेल ?
नताशा, राति मे सपना देखलियै कि हम कपड़ा खाय रहल छी.
अहि मे विचलित हेबाक कोन बात ?
अरे आगा त' सुनियौ भोरे उठि क' देखै छियै कि...
....हमर तकिया गायब अछि !!!

नताशा
© देवांशु वत्स
गाम सँ नताशाक ददा आयल रहथिन....
बौआ लोकनि, हम अहि ठाम सूतब..
अहाँ सभ लग अवाज करय वला कोनो वस्तु–जात त नहि अछि ?
नहि..
www.devanshuvatsa.com
devanshuvatsa@gmail.com
माने कि अहाँ सभ लग पिपही, खेलौना, रेडियो आदि त' नहि अछि ?
नहि...
हमर नीन बड्ड पातर अछि। अहाँ सभ गप्प नहि करब......
से किये ?
ठीक अछि। मुदा अहाँ कँ सुतय मे तैयो दिक्कत होयत...
हमर कलमक नीब खड़खड़ा क' चलैत अछि !!!

नताशा
© देवांशु वत्स
एक दिन भोरे भोर
अरे !
नताशा, अहां त' कहने रही कि अपन पड़ौसी दीना जी रिश्तेदारक घर गेल छथिन..
हा...
www.devanshuvatsa.com
devanshuvatsa@gmail.com
..मुदा हुनका त' पुलिस जेल ल' गेलैन..
पप्पा, असल मे दीना ककाक दुनू मामा आ' कक्को....
...पहिने से औहि जेल मे छथिन !

नताशा
© देवांशु वत्स
दीदी, पहलवान ककाक हालत बड्ड खराब अछि.... राति शिकार पर गेल रहथिन.....
चलू त' कि बात अछि....
पहलवान कका...
हो बाप!
www.devanshuvatsa.com
devanshuvatsa@gmail.com
कका, जानवर बड्ड खूंखार रहय कि ?
अरे नहि गे! हम त' मुर्गिक शिकार मे रहियो.....
......मुर्गि! मुदा मुर्गी एतेक खतरनाक त' नहि.....
हा गे, मुदा मुर्गिक मालिक बड्ड खतरनाक रहौ ! हौ बाप!

नताशा
© देवांशु वत्स
कका, एक टा टिकट देब!
ई लिय !
कुछेक काल बाद.
हो बा! हमर टिकट कतय...
Visit us : www.kapish-solutions.com
हाय!
कका, हमर टिकट हमर कुकुर खाय गेलय ओ भुखल रहय...
तखनि त' बेटी... अहाँ क'
...कुकुरक भोजन फेर से किनय पड़त !!!

नताशा
© देवांशु वत्स
औह, पीलू !! आब आईसक्रीम कतय छुपाउ....
दीदी, अहाँ क' माय तकैत छली...
जाउ.... अबैत छी...!
...माय त' संगे आबय लेल कहने छली...
एक बेर कहलौं नहि.. अबैत छी..
अच्छा.. जाय रहल छी...
?!

नताशा
© देवांशु वत्स
हौ बाप! गे माय !!
एहन खतरनाक मोड़ पर एतेक तेज साईकिल.. चलबैत छी....
E-mail - devanshuvatsa@yahoo.co.in
अहाँ क' डर नहि लागैत अछि ?
अहि मे डरबाय की.
..एहन खतरनाक मोड़ आबि जाय त' अहाँ हमरे जौकाँ..
...अपन आँखि बन्न क' लेल करू

नताशा
© देवांशु वत्स
एक दिन..
?
धूमऽ धड़ाक
ऽ धपाइ ऽ ऽ
कक्का, टप्पू कें
कियैक मारैत छियैक?
...नताशा, आइ ई बबका जूता
पहिरलकै त' हम एकरा सँ
कहलियै कि एक सीढ़ीक बजाय
दूई सीढ़ी चलल कर जाहि सँ
सौल कम खियाय..
फेर ?
....मुदा ई मूढ़ त' दूईक
बदले तीन सीढ़ी चढ़य
लगलैक...!
वाह ! तखन
एकरा कियैक
मारैत छियैक ?
एना मे नालायकक
पैजामा फाइट
गेलैक !

नताशा
© देवांशु वत्स
एक दिन..
F/33
8
बुच्ची, दू त' बजनै छलैं कि
तोहर पपा घरे मे छथुन..
हा!
तखनि हम एक घंटा
सँ चिकरि रहल छी...
E-mail- devanshuvatsa@yahoo.co.in
Mobile- +919311885723
...ओ बाहर कियैक
नहि निकलैत छथुन ?
हम त' ठीके कहने छलहुँ जे
पपा घरे मे छथिन...
ई थोड़े कहने छलहुँ कि हमर घर
यैह थिक! हम्मर घर त' ओ
थिक E/44 !!!

नताशा
© देवांशु वत्स
आय हम अहाँ सभ सँ विज्ञान संबंधी सवाल पूछब....
नताशा, जलक सूत्र बताउ...
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
एच, आई, जे, के, एल, एम...
आहा हा हा! ई की बाजि रहल छी अहाँ ?
सर, अहीं त' कहने रहिय..
कि जलक सूत्र 'एच टू औ' होइत अछि !

नताशा
© देवांशु वत्स
कालिह हम अहाँ सभ सँ कुकुर पर निबंध लिखय लेल कहने रही....लिखने छी ?
हा सर !
दिखाउ !
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
अरे ! नताशा आ चिंकी अहाँ दुनूक एके जौकां य...!
सच्च बताउ ! के केकर नकल केनय छी ?
नकल नहि सर, बुझायत अछि हम दुनू शायद....
.....एकके कुकुर पर निबंध लीखल देनय छी!

नताशा
© देवांशु वत्स
नताशा नानी गाम गेल छल...
एक दिन..
बुचू लिय, ई गिलास दुकरवा कक्का कैँ द' आउ...
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.con
..आ सावधानी सँ जायब....देखब फूटि नहि जाय..
..मम्मा, गिलास त' एखन फूटबो नहि केलकय...
...मुदा, अहाँ बुचू कैँ झापड़ कियैक मारि देलिय?
नहि बुझलिय..
..गिलास जखनि फूटिय जतय त' झापड़ मारय सँ थोड़े जुड़ि जतय !!!

नताशा
© देवांशु वत्स
एक टा गप्प जानलिय ?
कि ?
एक टा बच्चा कैँ हथिनीक दूध पिआयल गेलय त'..
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
आकर ओजन दस किलो बढ़ि गेलैक..
अच्छा
सच मे !
आश्चर्य!
केकर बच्चा रहैक ओ?
हाथीक !!

नताशा
© देवांशु वत्स
पिकनिकक योजना बनि रहल छल....
हम पूड़ी आ दालि आनब...
हम मिठाइ ल' आनब....
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
..हम भौस आनब..
..हम लूडो आ बैट बॉल आनब नताशा अहाँ?
अहाँ सभ त' सभ चीज आनिय लेब.... अहिलेल...
हम माय–पपा कैं आनि लेब !!

नताशा
© देवांशु वत्स
कका प्रणाम !
खुश रहू!
नताशा आउ, एक टा चीज देखू !
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
हम उ कोना मे मकड़ीक जालक चित्र बनैलिय....
....ओकरा भोर मे हमर नौकर असली बूझि क' घंटा भरि साफ करति रहलै.....
आश्चर्य !
छै नहि अद्भुत कलाकृति?
कक्का, हमरा कलाकृति नहि अहाँक एतेक मेहनती नौकर पर आश्चर्य भ' रहल अछि!
!!

नताशा
© देवांशु वत्स
एक दिन...
STOP
कका प्रणाम!
खुश रहू बूची! मुदा हम अहाँ कें चिन्हलौं नहि...
...फेर अहाँ हमरा प्रणाम कियैक केलिय ?
कका, चिन्है त' हमहुँ अहाँ कें नहि छी। मुदा उ छता कें खूब चिन्हैत छी जे किछु दिन पहिने....
...हमर घर सँ गायब भ' गेल छल!!

नताशा
© देवांशु वत्स
नताशा, एक टा गप्प कहूँ कि?
कि ?
अहाँ त' कहने रहिय कि अहाँ कें पड़ोसी ईमानदार अछि...
हा, कहने रही...
..फेर अहाँ कें पप्पा अपन मुर्गी फार्म लग....
बंदूक ल' क' कियैक बैसल रहैत छथिन?
..अहि लेल कि पड़ोसी ईमानदार बनल रहय !
मुर्गी खरीदें

नताशा
© देवांशु वत्स
एतेक देरी सँ स्कूल आबि रहल छी....?
SCHOOL
सर, रस्ता मे हमर पाँच टकाक सिक्का हरा गेल रहय...
....हम वाहि खोजैत रही...
....आ नताशा, अहाँ?
सर, हम वाहि सिक्का पर अपन पैर राखने रही....

नताशा
© देवांशु वत्स
....इ बड्ड प्रसन्नताक गप्प अछि जे अहाँ सभ आब नवका कक्षा मे आबि गेल छी....
...अच्छा नताशा बताउ, एक पोखरि लग दस टा भैंस चरैत छल...
...ओहि मे सँ एक टा भैंस पानि मे घुसि गेल त' बाहर कै टा भैंस रहि गेल ?
सर, ऐको टा नहि !
आश्चर्य अछि नताशा, अहाँ त' गणित मे बड्ड कमजोर छी !
नहि सर, मुदा शायद अहाँ कँ भैंसक चाल नहि बूझल अछि!!

पद खण्ड

सतीश चन्द्र झा,राम जानकी नगर,मधुबनी,एम. ए. दर्शन शास्त्र, समप्रति आजीविका जनता इन्टर कालेन मे व्याख्याता पद पर १० वर्ष सँ कार्यरत, संगे १५ साल सं अपन एकटा एन.जी.ओ. क सेहो संचालन।

चुनाव

छल केहन हवा आयल उदंड।
तृष्णाक आगि पसरल पचंड।
सभ जाति मिलि के फेर बाँटि
क' देलक समाजक खंड- खंड।

सता सुख,नि बल मान लेल।
आज स्वाभिमान सम्मान लेल।
अभिलाष घृणा देष सगरो द' क'
सभ भोट समर्थन क संसय गेल।

उन्मादक तेज हवा उठलै।
उधियाक' ककरा की भेटलै ?
छुच्छे बातक जल वृष्टि छलै
पोखरि इनार सौसे भरलै।

बड़का के कश्च क’ मि र बोल।
छोटका लोकक जश्क गेल टोल।
अश्छ कतेक तुच्छ मानव एखनहुँ
जीवन के नश्च छै कतौ मोल।

कश्चयौ ओकरा की हेतै लाज।
नश्च भेल गाम मे कतौ काज।
अश्छ बाट ताश्क क’ ि श्क गेल
बासश्छ बरखक जीश्वत समाज।

अश्छ राजनीश्वा मे के सुयोग्य।
असस्सी पश्वाशत एखनहुँ अयोग्य।
ओ कोना हमर उदार करत
ओकरा लए छै ई देश भोग्य।

जश्क गेल झड़श्क क’ कतेक देह।
मश्व गेल हृदस सँ पेम स्नेह।
देलक की हमरा पजातंि ?
दुख श्वपदा अश्छ ओश्वना सदेह।

जनमत अश्वकारक मोल भाव।
घर घर श्छश्कयायल बैर भाव।
सभ बेर कतेक बश्वदान लेत
अश्छ रक्त श्वपासू ई चुनाव।

भाषा आ राजनीति

अछि घातक आतंकबाद सँ
बढ़ि क' ई भाषा के झगड़ा।
कखन कतय ई आगि लगायत
कोना एकर पहिचानब चेहरा।

अछि रहस्यमय राजनीति के
क्रिया कलाप कमसिन वाणी।
छाँव रहल अछि पत्र पत्रिका
पढ़ू आ गुनू एकरे एक कहानी।

कखनो बाटत जाति जाति के
कखनो सीमा शरहद भारी।
कखनो बात मिसिके कहि क'
लगा देत सौसे चिनगारी।

कतेक होइत दै चेहरा एकरो
जाति सकल नहि बूझयो एखन धरि।
सपत लैत अछि 'सेवा भक्ति'
समटि लेत निज आँजुर भरि भरि।

स्वार्थ कते धरि खसत खाधि मे
कते आओर लज्जाजत कण आयत।

हिन्दी पर लागल कलंक जे
कोना एकर इतिहास मेटायत।

सीखि लेि सभ भूखल जन- जन
अलग अलग सभ पातक भाषा।
तखने भरतक पेट आब नहि
रहलै हिन्दी देशक भाषा।

सता पक थपक कान मे
कोना तूर छथि ि' क' सूतल।
सीखि रहल अछि आइ मराठी
टैक्सी चालक भय सँ कलबल।

जतय देश मे छै एखनो ि
लाखो लोकक रोटी सपना।
सड़क कात छतहीन जिन्दगी
कंकर पाि र घास बिछौना।

की मतलब छै ओकरा की छै ?
भाषा,भेष कतय की बान्हल।
बिना परिश्रम सँ औतै नहि
भात दालि ि री मे सानल।

जनश्चत के कल्याण आब नश्च
राजनीश्च सँ रहलै आशा।
छल पपंच के असि ससि सँ
सता सुख सबके अश्चलाषा।

भले लेि ई शपथि मंच पर
थ्यशक पचश्चात सभ भाषा मे।
नश्च बदलत तकदीर देश के
जन जन ठाढ़ रहत आशा मे।

भूखल पेट

सड़कक काते गली -गली सँ
पनी कागत बीछ - बीछ क'।
जीबि रहल अछि एखनो मानव
दृश्य ठाढ़ अछि केहन विकासक।

रदी-फदी, डिब्बा- डुब्बी
जे भेटल ल' गेल समटि क'।
गंदा-गुन्दी किछु नहि बूझत
ल' जायत सभ ताकि हेरि क'।

जड़तै तखने ओकरो चुला
भरतै पेट राति मे कहुना।
शिक्षा के अधिकार करत की
छै एखनो जे रोटी सपना।

फाटल साटल वस्त्र देह पर
लाज अबोधि कहुना छापल।
जएत कोना इस्कूल पीठ पर
शीशी बोतल दै किछु बान्हल।

छोट छोट नेना उठि भोरे
दौड़ जाइत अछि रौद बसाते।
भरतै पेट कोना परिवारक

अछि गरीब अकर सँ काते।

मासक मास अभाव सुअनक
एक सा किछु खा क' जीबय।
अछि धिकार समाज राज्य के
जौ आबो किछु भूखल सूतय।

<u>पाच साल</u>

छल भेल पफुलित गाम गाम
जखया जड़ शासन अंत भेल।
स्वागत मे जन जन छलै ठाढ़
सुन्दर भविष्य के स्वप लेल।

बदलल पदेश के किछु बसात
सुख शान्ति फेर सँ उतरि गेल।
चश्म पड़ल विकासक छवि चि
जीवन के जड़ता लुप्त भेल।

ल' सकल मुदा नहि थिा अपन
संपूर्णि सुभग सुन्दर स्वरूप।
भ सकल नष्ट नहि एखनो धरि
भष्टाचारक दानव स्वरूप।

बनि रहल योजना भाँत नव नव
घुसि रहल थमला सँ देल पाइ।
ऑफीसर लागू करत कोना
नहि छै जइ मे एकरा कमाइ।

पश्चापक अधिालका सरकारक
गदी लए अछि बुनि रहल जाल।
वातानुकुश्वत घ'रक जीवन

नहि किछु बुझतै रौदी अकाल।

छै आबि गेल ओ समय फेर
ि न बल सँ सभ जीतत चुनाव।
सामर्थ्यहीन के संग लेत
भूखल सँ एकरा की लगाव।

सभ दोष एक दोसर के द'
छीनत फुसला क' पाच साल।
सुख दुख ओहिना जीवन ओहिना
जहिना छल बीतल पाच साल।

<u>सत्यक जीत</u>

किछु विलंब सँ मुदा सत्य के जीत होइत छै।
बुन्द-बुन्द सँ सागर के निर्माण होइत छै।
कतबो बादल झाँपि देत दिनकर के नभ मे
जागत तैयो पात,राति नहि अमर होइत छै।

नहि भेटत अधिकार मात्र क' इएह ध्यानि छै।
बाँटि सकी जे जते , सत्य के असल जान छै।
अपने सँ अनुरोध स्नेह दुख सुख सभ बाटी
अपने दै छै संग, विपक्षि मे आन- आन छै।

एखनो धरि मैथिला के बात अपमान होइत छै।
अधिकारक संघर्ष करब सम्मान होइत छै।
एक डेग सभ चलब मैथिली बढ़तै आगा
अपने भाषा पर सभके अभिमान होइत छै।

आबअ आइ संकल्प करब संघर्ष फेर सँ
जय मैथिला के शंखनाद हम करब फेर सँ।
छटतै लागल धुइन बाट पर चलबै जखने
फुटतै अपने किरण भले ही किछु विलंब सँ।

जे छी जतय ओतै सँ आगा चलू झटकि क'।
अछि संम्मानक बात लेब हम कहियो लड़ि क'।
एक बेर सभ आबअ पक्षाजा स्वाच्छ मोन सँ
अपने भुस्सा हैत बाट के बाधि जड़ि क'।

गरीबक स्वर्ग

खसलै कोना श्चठुश्च क' दुश्चया
माघक जाढ़ हार मे लगलै।
काठी देह बयस अस्सी के
क्ण मे देहक पाण श्चकललै।

छलै एकटा फाटल कंबल
पुिक माया ओकरे देलकै।
अपने दुश्चया आश्च ताश्च क'
श्चता िमिके मान बढ़ेलकै।

भाग्यहीन जीवन गरीब के
भूखल पेट बृद के काया।
श्चना स्वािके दान कहा छै।
के बुझतै सरकारक माया।

मुक्त भेल कहुना झंझट सँ
माया मोह त्याश्च क' भागल।
गाम टोल के लोक सहश्च क'
सद्गुण ओकर बखान' लागल।

कते नीक छल दुश्चया सभके
दैत रहल ई संग गाम मे।

जायत स्वर्गभिक्त छल भारी
लीन रहै छल 'राम नाम' मे।

लगलै हँसी जोर सँ सुआ क'
पड़ल देह दुखया के तखने।
कते लोक अछ एखनो पागल
आइ बुझयै हमहूँ मरने।

दुख अभाव पीड़ित जन जीवन
कोना स्वर्ग केर सीढ़ी चढ़तै।
मिकिमानि के शोभा छै
आनि की ईश्वर ल' करतै।

नव वर्ष

बनल रोहर नव इतिहासक
बीत गेल ई साल ससरि क'।
आउ करी स्वागत नव वर्षक
घृणा,दैष के बात बिसरि क'।

बीत गेल सभके ओझराक'
एक बरख जीवन के कहुना।
भेटल कखनो हर्ष खुशी त'
कखनो टूटल मोनक सपना।

कतौ बनल संबंध स्नेह के
कतौ स्नेह मे पीड़ा जागल।
सुख-दुख,हर्ष विषाद मे जीवन
डगमग चलैते आगा भागल।

काँपि उठल ई जीवन कतियो
हृदय बिदारक किछु घटना सँ।
भेट चढ़ल आतंकबाद के
बिछुड़ल कते लोक अपना सँ।

नुका गेल नेना आँचर मे
मुदा आब की ममता जगतै।
सानल देह रक्त मे सौसे

की स्तान सँ दूि श्चाकलतै।

बाश्च़,सुखाड़, अकाल, अश्चान सँ
ठहश्च गेल श्चकछु क्ण ई जीवन
नश्च मानै छै पेट,जाइत छल
फेर सहश्च क’ आगा जीवन।

श्चलश्च गेल घर बार छोश्च़ क’
कते लोक झगड़ा फसाद मे।
लागल आश्चा कतौ भाषा के
राजनीश्चा के नव पमाद मे।
बढल गेल सभ दाम वस्तु के
रहल अभाव साल भश्च अश्चना।
ताश्चक रहल छी बाट कोना क’
बीतत शुभ- शुभ पूरा मश्चना।

जीवन अश्चछ संघषचिलब हम
फेर श्चसश्च क’ घाव श्चगत के।
स्पागत करब पुष्प सँ हम सभ
नव- नव आशा मे आगत के।

हमर पािनि नया साल मे
सबके मंगल करश्चि श्चािता।
दीप जड़य सबके आंगन मे
शाश्चा, हषरै़ा, सुख दैश्चि श्चािता।

भाषा आ राजनीक्षा

अक्षछ घातक आतंकबाद सँ

बक्षढ़ क' ई भाषा के झगड़ा।

कखन कतय ई आक्षग लगायत

कोना एकर पक्षहचानब चेहरा।

अक्षछ रहस्यमय राजनीक्षा के

क्षि या कलाप कमक्षिमन वाणी।

छाक्षय रहल अक्षछ पि पक्षत्रिका

पक्षाक्षढ़न एकरे एक कहानी।

कखनो बाटत जाक्षत जाक्षत के

कखनो सीमा शरहद भारी।

कखनो बात क्षमिके कक्षह क'

लगा देत सौसे क्षयानगारी।

कतेक होइत दै चेहरा एकरो

जाक्षन सकल नक्षह क्षकयो एखन क्षध।

सपि लैत अक्षछ 'सेवा क्षमक्षि'

समक्षट लेत क्षनि आँजुर भक्षर भक्षर।

स्क्षाा क्षकते क्षध खसत खाक्षध मे

कते आओर लक्षमजत कण आयत।

क्षन्दी पर लागल कलंक जे

कोना एकर इश्चहास मेटायब।

सीश्चव लेि सभ भूखल जन जन
अलग अलग सभ पातक भाषा।
तखने भरतश्च पेट आब नश्च
रहलै श्चन्दी देशक भाषा।

जतय देश मे छै एखनो िश्च
लाखो लोकक रोटी सपना।
सड़क कात छतहीन श्चन्दगी
कंकर पाि‍र घास श्चझौना।
की मतलब छै एकरा की छै
भाषा,भेष कतय की बान्हल।
श्चना पश्चशम सँ नश्च औतै
भात दाश्च ि‍री मे सानल।

जनश्चत के कल्याण आब नश्च
राजनीश्च के बनतै भाषा।
छल पपंच के अस‍ि सस‍ि सँ
सता सुख सबके अश्चलाषा।

भले लेि ई शपि मंच पर
श्चशक पचश्चत सभ भाषा मे।
बदश्च सकत नश्च हुनक आचरण
जनता ठाढ़ रहत आशा मे।

<u>मैथिल</u>

एखन देश पात मे कोना हैत
सम्मान मैथिली भाषा के ।
दोषी छी हमहूँ सब अपने
छी दर्शक बनल तमाशा के।

किछु कतौ बरख दिन पर कखनियो
विद्यापति पर्व मना रहलौ।
हम पाग माथि पर राखि कतौ
किछु कथा कहानी बाजि एलौ।

की हैत करै छी झूठ- मुठ
चढ़ि कतौ मंच सँ कविता पाठ।
दू चारि लोक के छोड़ि दिअ बाकी
सभटा छी बनल काठ।
सभ मुँह नुकौने जड़ बैसल छी
कतय अपन भाषा भाषी।
पथि उतरि करत के शंखनाद
हम छी विद्रोहक अभिलाषी।
अछि अपन पत्रिका किनल- चुनल
निष्प्राण भेल पाठक विहीन।
के कीनत सोचि रहल अछि ओ
टीशन पर टागल दीन हीन।

हम कोना बचायब एकर पाण
ल’ जायब एकरा गाम- गाम।
देखत बच्चा उपहास करत
अंगेजी बाजब बढ़त नाम।
चुटी थ्यपरी सभ जीव जन्तु
अपना सँ राखत कतेक स्नेह।
छथ्यि मुदा केहन मैथ्यिल समाज
सभ समाथ्यसि, थ्यशल, थ्यदेह।
माइक कोरा मे पथ्यल बेर
जथ्य भाषा के छल भेल जान।
ओ पथ्यल चेतना भाव बोि छल
जीवन के आिर पाण।
सभ थ्यसथ्य गेल छी तै देखू !
अथ्य सुखा रहल गंगाक िर।
कथ्यया िथ्य रहब उपेथ्यक्त
हम सभ कर फेर सँ थ्यकछु थ्यचार।
संकल्प थ्यअ उथ्य चलू आइ
आँजुर मे गंगा जल राखू।
थ्यनकर के साकी राथ्य फेर
नथ्य आइ थ्यकयो पाछा ताकू।
हथ्यमोहन झा जयकात थ्यश
सभकैँ साथ्यथ्यक मान लेल।
छी कतय नीन्न मे एखनो िथ्य
जागू मैथ्यिल सम्मान लेल।

कश्वता आ कश्राया

जीवन अश्छ भ' गेल श्छन-श्रान
सब मान पश्राष। मिगेल।
'कश्वता' आ 'कश्राया' मघ्य आश्व
छी ठाढ़ आइ दृगभश्रत भेल।
श्छटल श्कछु शब्दक गढ़ल अि
कश्वता अश्छ अंतर के पकाश।
कश्राया छश्थ स्नेहक पवन पाण
जीवन के नव सुन्दर सुवास।
'क' सँ कश्वता, 'क' सँ कश्राया
िस्म ई लागल अश्छ दुनू के।
दुनू के मािएक रंग अश्छ
बास हृदय मे दुनू के।
अंतर अश्छ तकराबाद बनल
अश्छ चाद श्वन्दु कश्राया उपर।
तै चान जेका छश्थ चढ़ल मािक
कश्वता अश्छ फेकल ताख उपर।
कश्वता पोिी फाटल साटल
कश्राया नश्ह रहती श्वना सजल।
कश्वता सँ कश्राया के सब श्चन
रश्ह गेलश्ह केहन श्वदेश बनल।
कश्वता कश्राया मे भेल केना
सौश्रानपन, झगरा एतेक डाह।

तै लाथ्रा जाइत छथ्रह कथ्राया के
कथ्रवता सँ रौदक तेज ि ह।

ि रती अंबर सन बना लेब
ई मोन हृदय कतबो थ्रवशाल।
नथ्रह समा सकत संगे-दुनू
क’ देत व्यथ्रथत कण हृदय भाल।

अथ्रछ अ ि थ्रवराट एकर जग मे
शंकर के ई अथ्रछ बह र प।
जानी पंथ्रडत अथ्रछ चथ्रकत देथ्रख
कथ्रवता कथ्राया के मूत ि र प।

की कर ठाढ़ छी सोथ्रच रहल
अथ्रछ हमरो जीवन मे दुथ्रव ि ।
क’ देब त्याग कथ्रवता जखने
भेटत कथ्राया सँ सुख सुथ्रव ि ।

रखने छी कथ्रवता के पना
कथ्राया सँ सबटा नुका- नुका।
मा ि क थ्रसरहना मे ठूसल
कथ्रवता थ्रकछु पुरना थ्रकछु नवका।

भेटल थ्रकछु तखने समा ि न
छल जे भारी संकट थ्रवपदा।

कश्चाया पर सुन्दर नव कश्वता
श्वकछु लीश्वख सुनाबी यदा-कदा।

श्वाखय लेल बैश्वस गेलहुँ तखने
बाहर कोनटा मे लगा घ्यान।
गृहणी सँ कश्वता छलै र ष
नश्व फुरा सकल श्वकछु गीत गान।

बैसल रश्व गएलहुँ समाश्वर्स
नश्व दोसर पाती उतश्व सकल।
हे मृगनयनी, नभ चन्र मुखी
की कर हमर अश्वछ कलम र कल।

<u>पंखहीन कल्पना</u>

सुखा गेल अछि मोसि कलम के
कोना आइ कविता हम लीखू।
रंगीन भेल अछि मोन भावना
राति अन्हार चान की देखू।

दीन हीन व्याकुल अनाथ भ'
भटकि गेल अछि भाव मोन के।
पंखहीन भ' कल्पना
बदलि गेल अछि अर्थ शब्द के।

कामिनि रहल अछि वर्णक माला
छंद आब उन्मुक्त भेल अछि।
सुन्दर देह आभा सँ सगरो
अलंकार केर झरकि गेल अछि।

अछि आयल दुर्दिन साहित्यक
आँखि खोलि क' की हम देखू।
सुखा ....लीखू।

अछि सत सुखी भ' जीबि रहल अछि
सत दुर्लभ अछि वस्तु जगत के।
स्वार्थ मिजानक पथ्य भाषा
भोग विलास अर्थ जीवन के।

झूठ पहिरने वसि ा रेशमी
सत्य ठाढ़ अवसि ा कात मे।
अछि आमलि नहि जल गंगा केर
अर्घ्य देब हम कोना पात मे।

दिशाहीन जा रहल दूर छी
केना ठहरि क’ किछु कण बैसू।
सुखा ....लीखू।

चलि गेल अछि अपन घ’र मे
संस्कार, व्याक्त, अनुशासन।
खंड - खंड मे बाँटि रहल अछि
जाति िमि के अं ि कुशासन।

जानी छथि बैसल अन्हार मे
भष लोक केर आत अभिनंदन।
सत्य आचरण लज्जित जग मे
अत्याचारक र प चलकण।

चिंता छोड़ि कर हम चिंतन
अछि मृगतृष्णा की की देखू।
सुखा ....लीखू।

पहुँचि गेल अछि यान चान पर
अछि पसरल ओहुना अनिता।
वल्कलि केर वसन बेचि क’
दूधि पियाबथि शिशु कँ माता।

लोक बनल अछि वस्तु बजारक
बिका रहल जीवन नेनमन मे।
भेल कतेक उनटा एहि देशक
चमकि रहल अछि विज्ञापन मे।

बिलखि रहल अछि भूखल बच्चा
केना दाबि पर जा क’ बैसू।
सुखा ....लीखू।

बुनिी

घुरलै जीवन दीन - हीन के
बनलै जश्चया टोलक मुश्चया।
नव- नव आशा मोन बाश्चह क’
सगर राश्चा छल नाचल दुश्चया।

घास फूस के चार आब नश्च
बान्हब कजा नार आश्चा क’।
नश्च नेना सभ आब श्चतायत
बरखा मे भश्च राश्चा काश्चा क’।

माश्चा लेब आवास इश्चदरा
काज गाम मे हमरो भेटत।
जाश्चा - जाश्चा के बात कोना क’
ई ‘दीना’ मुश्चया नश्च मानत।

भेलै पूर्ण अश्चलाषा मोनक
भेट गेलै आवास दान मे।
दुख मे अपने संग दैत छै
सोश्च रहल छल ओ मकान मे।

की पौलक की अपन गमौलक
की बुझतै दुश्चया भश्च जीवन।

मुदा ब्रसरतै बुिनी कश्चया
बीतल मोन पड़ै छै सश्चखन।

पड़ल लोभ मे गेल सहश्च क'
साझ भोर मुश्चिया दलान मे।
होइत रहल भश्च मास बलत्कृत
थ्रवश देह ब्रावसि ि दान मे।

जाश्च- मि ि ब्राज, आन क्यि िके
छै बंि न जीवन मे झूठक।
जकरा अवसर भेटल जश्चया
पीश्च लेत ओ शोश्चात सबहक।

सबल कोना ब्राबलि के कश्चयो
देत आश्च क' मान दाश्च पर।
कोना बदलतै भाग्य गरीबक
दौड़त खेतक अपन आश्च पर।

भाग्यहीन श्रा ि ि जन जीवन
बात उठाओत की अश्चिकारक।
नोश्चा रहल छै बैसल सभटा
छै दलाल पोसल सरकारक।

सृजन

बुन्द बरखा कँ उतथ क’
देह के सगरो आजेलक।
तप्त मोनक आथ नस्र
तैयो कहा कआओं अझेलक।

जखन रहल छल गाछ रौदक
िह सँ आँगन दलानक।
छल केना सुडडाह भ’ गेल
फूल गेना, तर गुलाबक।

आन सँ जागल कमलदल
बुन्द पखते दृग उठौलक।
स्नेह सँ जल बूँद कँ सब
आज तृसत उर सँ लगौलक।

पसफुटत नव पंखुसत
कछु बुन्द आंचर मे नुकौलक।
पीब जल अमृत िरा कँ
जीव जीवन कँ बचैलक।

जड़ बनल कछु बीज कँ
जखने भेलै स्पशजिल सँ।

अंकुरित भ' गेल बंजर
भूमि के चेतन अतल सँ।

अछि मनोरम दृश्य सबके
छै केहन आनंद भेटल।
हर्षमे डूबल प्रकृतिक
नृत्य मे जीवन समेटल।
गाछ पर बैसल केना अछि
खग बना क' स्नेह जोड़ा।
छी एतय हम आई असगर
नष्ट भ' गेल छथि,सुन कोरा।

की केलहुँ हम स्नेह क' क'
द' देलक किछु घाव जीवन।
नीक छल दुनिया अबोधि
पूर्ण जीवन, तृप्त जीवन।

घाव जँ रहितै शरीरक
फोड़ि क' कखनो सुखबितहुँ।
तूर के फाहा बना क'
घाव पर मलहम लगबितहुँ।

देत के औषधि बना क'
अछि चोटायल घाव मोनक।
के हटायत आबि हमरो

नेह सँ संताप मोनक।

दाश्व के पट बंद कयने
छी क्यथ्रित हम आश्व बैसल।
आइ अश्वतथ्रि थ्यया, रश्चतहुँ
अंक मे आबद पश्चापल।

ठोर पर ठहरल सुि जल
आइ 'थ्ययतम' के थ्ययश्वतहुँ।
पजज्यश्चत देहक अनल थ्रकछु
स्नेह के जल सँ थ्याजश्वतहुँ।

रक्त सन टुह-ंउचयटुह कपोलक
मध्य चुंबन ल' श्चतथ्रि ओ।
बाश्च के बंनि बना क'
बाध्य हमरो क' श्चतथ्रि ओ।

तेज थ्रकछु बश्चतै पवन जँ
ल' थ्यतय आँचर उड़ा क'।
भ' थ्यतहुँ थ्यालजि , भयातहुँ
नश्च हुनक बंनि छोरा क'।

तोश्क क' सीमा असीमक
दाश्व पर जा थ्यान पश्कतहुँ।

त्याग क' देहक वसन नव,
स्नपणा आभूषण हटबैतहुँ।

कण भक्षक अवरोि कण मे
क'बैतहुँ अपने समपणि।
झाथ्य आचबै मुँह कबैतहुँ
देह कैँ बैपाण बैकछु कण।

पाण सँ पाणक बैलन मे
अबैछ केहन जीवन अमरता।
होइत तखने देह मे बैकछु
'बूँद अमृत' सँ सृजनता।

के करत वणिन क्याक ओ
पाण मे अनुभूबैत नभ कैँ।
शब्द सँ बानि ब असंभव
ओ घबैत आनंद भव के।

मोन मे उतरल कहा अबैछ
बैकछु अबैपसा काम बोिक।
अबैछ हृदय मे आइ हमरो
कामना मातृत्व बोिक।

बुन्द जे ठहरल उतबै क'

जीव मे जौ होइत पश्चुणत।
अपन देहक रक्त, मज्जा
दैत रह्रुतहुँ दान मे श्चात।

स्नेह सँ गभर्सि श्चाशु कैँ
मिमानवता श्चखश्चतहुँ।
र्सी जाश्चाक एश्च जगत मे
मान राखब , श्चात पढ़श्चतहुँ।

अश्छ जगत मे पूज्य नारी
देवता के बाद दोसर।
कष सँ जीवन बुनै अश्छ
गभमे श्चाज राश्च भीतर।

श्चकछु सजावट लय बनल
अश्छ वस्तु नारी नश्च जगत मे।
नश्च करब अपमान कश्चयो
बश्चा पुरष दंभी अहं मे।

अंक मे नवजात श्चाशु कैँ
दूि स्तन सँ श्चया क’।
पूणमानव हम बनश्चतहुँ
झाश्च आँचर मे श्चया क’।

होइत तखने जन्म हमरो
थिकछु सफल पथ्यपूर्ण जीवन।
जौ सृजन नञि भेल तन सँ
व्यर्थ अछि अभिशप्त जीवन।

छै केहन मोनक अभिप्सा
लालसा जग मे सृजन कँ।
दैत छै के प्रिय एकरा
नञि बुझै छै कष्ट तन के।

छथि अचंभित देवतो गण
देखि नारी के समर्पण।
जी रहल जीवन श्वाँस कऽ
गर्भ के रक्त मे सद्धरखन।

गर्भ मे नौ मास रखने
अछि लग बैसल असह दुख मे।
दऽ रहल छथि अन भोजन
देह सँ निज मातृ सुख मे।

हर्ष मे अछि मग्न ममता
छै तपस्या पुत्र स्नेहक।
साधना मे लीन अछि ओ
छै केहन हठयोग देहक।

अंत कण साक्षी थिाता !
मोन मुछ्छति, ददतिन मे।
वेदना सँ पाण व्याकुल
अछ्छ केहन पीड़ा सृजन मे।

सुखा अपन नवजात श्वाशु के
ओ पश्चल अनमोल िदन।
िनय ममता ! दुख बसल क'
हँस्सा उठै छै फेर तन मन।

अंकुश्वत ओ बीज कश्चयो
भ' उठै छै गाछ भारी।
छाह ममता के बनै छै,
पाण के आिार नारी।

पैि होइते श्वाशु केना ओ
श्वकछु बनै छै दुष दानव।
अंि मोनक वासना मे
होइत अछ्छ पि भष मानव।

बुझ्झ सकल नश्च गभिमे ओ
भावना नारी हृदय के।
बश्चा असुर श्वाज आचरण सँ

क’ देलक लथ्मजत समय कैँ ।

होइत अछ्छ नारी ‘बलत्कृत’
अछ्छ पुर ष ओ के जगत कैँ ?
गभिनारी सँ िरा मे
जन्म नञ्ञ लेलक कहू के ?

छी! घृण्यात कामी, कुकमी
छै पुर ष पाि र केहन ओ।
यंिाणा दै छै केना क’
आइ ककरो देह कैँ ओ।

भञ्च जेतै ओ घाव कञ्चयो
देह नोचल , चेन्ह चोटक।
जन्म भञ्च ञ्चसरत केनाक’,
ओ मुदा ञ्चकछु दंश मोनक।

मोन नञ्च भोगल ञ्चसरतै,
ज्वार पीड़ा के उमड़तै ।
लाल टुह टुह घाव बञ्चाक
जन्म भञ्च नञ्च आब भरतै।

पञ्च ञ्चतय जौ भाग्य ममता
अछ्छ अिमी ई जगत के।
नञ्च करत ओ पाण रक्ा

पेट मे बैसल मनुख के ।

जन्म द’ क’ ओ पुरष के
अ कहू के भेल दोषी ?
देव दोषी ? काल दोषी ?
गभआिवा बीज दोषी ?

छै आय नारी के एखनहुँ
हाि बान्हल, ठोर साटल।
के देतै सम्मान ओकरा
छै कहा भव मिबािचल।

गन के उपदेश जान क
अ जतेक लीखल गत मे।
भेल अ माण सभटा
माि नारी लय जगत मे।

क’ सकत अवहेलना न
दृ छै सखन समाजक।
न केलक रोह कयो
मिछै बंनि वाहक।

जन्म सँ छै जान भेटल
मिपिती के भायब।

स्वागत अछि पहुना के चरण मे
कष्ट जे भेटय उठायब।

ध्यान, तप, सेवा, समर्पण
जन्म भरि नहि बात बिसरब।
प्राण नहि थाकलय जखन धरि
दास के नहि नाम उतरब।

नहि हेतै किछु आब कननै,
शक्ति चाही खूब जोड़क।
नोर मे सामर्थ्य रहितै...
नहि रहैत ओ 'वस्तु भोगक'।

छीन क' ओ ल' सकत जँ
किछु अपन सम्मान कहियो।
चुप रहत भेटतै केना क'
दान मे अधिकार कहियो ।

कन्यादान

अछि आइ हमर कण ठहरि गेल।
जीवित तन अछि आ प्राण भेल।
विपदा अपार, सगरो अन्हार
अन्हर बिहारि सन मोन भेल।

ई समय होइत अछि सम्मानक।
अछि सता रहल भय अपमानक।
जीवन केर सभसँ पैघ यज
अछि आबि गेल कन्यादानक।

पाषाण हृदय रक्तक बंधिन।
के संग देत परिजन पुरजन।
परञ्च तँ अछि दुर्लभ वस्तु आइ
अनका लेल कानत आन केहन।

धिन सँ होइ छै संबंध गाढ़।
अधिक बंधिन सगरो पगाढ़।
के पूछत दुख सुख हाल पकड़ि
धिहीन रही हम कतौ ठाढ़।

बीतल जीवन अछि अपन ध्यान।
परिजन सँ एखनो नीक आन।

किछु माथा लेब जौ हुनका सँ
उपहासक भोगब व्यंग्य वाण ।

ककरा ककरा सम्मान करब।
की की असगर ओरियौन करब।
भेटत सुयोग्य वर कोना आइ
दानव समाज के माग भरब।

छथि हृदयहीन मैथिल समाज।
पढ़लो के नहि छै लोक लाज।
हे देव ! गगन सँ उतरि कहू
निहीन कोना किछु करत काज।

कन्या केर जखनिया जन्म भेल।
तखनिये सँ अछि ओरियौन भेल।
गहना गुड़िया सभ पाइ -पाइ
रखलहुँ हम कन्यादान लेल।

रहि गेल मुदा तैयो अभाव।
नहि क’ सकलहुँ हम मोल भाव।
आँगन मे छी भयभीत ठाढ़
सागर मे कंपित जेना नाव।

की भेल पढ़ेलहुँ , देलहुँ जान।
नहि भेल समस्या के समाधान।

अछि हमर सुता के जान व्यापि
छथि हुनक पुत्रि सबसँ महान।

छथि धन्य पिता पुत्रि के भाग्यवान।
हुनके छथि जग मे बनल मान।
हम कन्यागत छी तुच्छ लोक
हमरा लेल की अपमान -मान।

लौता अभर कछु बरियाती।
हमरे निमित्त सँ घोड़ा हाथी।
हम रहब दार करबद ठाढ़
कापत भय सँ कि कि छाती।

की हैत कखन आदेश हुनक।
की माग उठौता ओ दानक।
अछि देह छोड़ि सभ थाका गेल
ई केहन पवित्र कन्यादानक।

अछि केहन देवता के थानि।
हम करब दान नेनाक पाण।
दुख सुख भोगत जे हेतै भाग्य
जीवन भरि लागल रहत ध्यान।

ममता के रस्सा रस्सा बहत नोर।

ताकत सगरो जौ हैत भोर।
के कहत नीक श्कछु समाचार
नाचत हषकि आंगन श्वभोर ।

हमरो कखनो फाटत कुहेश।
रश्च जैत मोन मे याद शेष।
कन्यानि सभश्चन रहत कोना
आयत कश्चयो अवसर श्वशेष।

अश्छ पिा दहेजक महापाप।
के करत मुक्त अश्छ घोर शाप।
की लीश्ख रहल छी गीत नाद
सुश्नयौ सगरो , सुनबै श्वलाप।

चानक पेम

नक्ष् उतरल छल चान गगन सँ
छलै आइ भारी श्मद ठनने।
जाश्च गेल छल पात श्मन सँ
उदयाचल श्रन्दुर सन रँगने।

थश्मत पवन आँश्ख के मश्न-मश्न
देश्ख रहल छल दृष्य ठाढ़ भ’।
उगतै सुरज चान जश्क मरतै
आश्च रहल छै श्करण गाढ़ भ’।

मुशश्क रहल छल चान, ठोर पर
छलै अपन स्नेहक शीतलता।
ताश्क रहल छल बाट, श्मलन कँ
छलै हृदय मे म्रि थकलता।

बनल श्मयम छै कालचि के
के जानत की हैत अशुभता।
के बाचत, के भागत नभ सँ
हैत नष श्कछु आइ अमरता।

पखर अश्न सँ आइ सामना
करतै शीतल पभा चान के।

पेम समपणि मे जीवन के
द' देतै आहुश्चा पाण कैँ।

अंग - अंग मे अश्चान पूँज सँ
फुटतै फोका लाल-लाल भ'।
काच देह नश्च सहतै पीड़ा
सुन्दरता जड़तै सुडाह भ'।

पलक झापश्चकते घश्चत भेल श्चकछु
सुखद् दृष्य नभ के पागन मे।
शीश झुकौने सुरज चान के
बाश्चि लेलक श्चाज आश्चंगन मे।

भेल चान पश्चतृप्त अंक मे
पूणभिलै मोनक अश्चालाषा।
श्चघश्च गेल छल सुरज श्चझेलै
कुश्चल अश्चान के अहं श्चपाशा।

मौन भेल छल श्चनकर नभ मे
नव आनंद अपार उठा क'।
चान भेल श्चकछु लश्चजत,हश्चत
उतश्च गेल अपने ओश्चया क'।

सिंगरहारक फूल

सिंगरहार के फूल गाछ सँ
छै छीटल सगरो झड़ि झड़ि क'।
बीछि रहल अछि अपन खोंछि मे
के युवती आँजुर भरि भरि क'।

अनचिन्हार अछि कोना रोकि क'
नाम पता ओकरा सँ पुछियौ।
तोड़ि लेत किछु आन आबि क'
कोना फूल ओकरे लय दियौ।

चढ़ा रहल छल फूल कतय ओ
कहा पुछलियै कहियो ओकरा।
छलथि देवता अथवा दोसर
पूज्य कियो छल आरो ओकरा।

उज्जर दप - दप देह चान सन
वएस काच यौवन नव उतरल।
सुन्दरता के देखि मुग्ध भ'
भोरक किरण आबि छल ठहरल।

मह मह गंध देह सँ ओकरे
आबि रहल अछि किछु रहि रहि क'।

बेकल भेल अछि कोइली तर पर
कू कू स्वर मे किछु कहि कहि क'।

स्नेहक छै किछु बात होइत छल
की की बाजू कोना मोन मे।
बीतत साझ फेर ओ आयत
देख लेब भरि आँखि भोर मे

समय बदललै देखलहुँ भोरे
सुन भेल छल गाछ झहड़ि क'।
ताकि रहल छी बाट आइ हम
आयत कलिया फूल उतरि क'।

चंचल मोनक मिर कल्पना
जगा रहल अछि किछु कहि कहि क'।
सुना रहल अछि गीत कान मे
शीतल पवन मंद बहि बहि क'।

<u>सोनाक थ्यजरा</u>

सोनाक थ्यजरा
खौइछा मे ल’ क’ दूथ्या िन।
पेटी, पेटार, पौती, समान।
जा रहल आइ छी सासुर हम
अछ्ख कोना अपन लेए बेकल पाण।

हमरा थ्वनु माय कोना रहतै।
बाबू केर सेवा के करतै।
नीपत थ्यानबार कोना भोरे
जाड़क कनकनी सँ मरतै।

अछ्ख केहन देवता के थ्वा िन।
ल’ कोना जाइत अछ्ख संग आन।
एखने उतरल छल साझ पथ्वल
भ’ कोना गेल एखने थ्यहान।

छल केहन अबोि कि नीक खेल।
कथ्याया पुतरा मे मग्न भेल।
आमक थ्यटकुला लय दौथ्क़ गेलहुँ
अन्हर थ्वहाथ्व मे सुन भेल।

कखनो फूलक बथ्या रहल हार।

ल’ एलहुँ बीछि क’ अंगरहार।
झूठक पूजा, माटिक पसाद
भरि गाम टोल देलहुँ हकार।

जे भेल मोन मे केलहुँ बात।
के रोकत जखने भेल पात।
भरि खौंछि तोड़ि क’ भागि एलहुँ
ककरो खेतक किछु साग पात।

ई समय कोना क’ बढ़ल गेल।
रहलहुँ हम सूतल आन भेल।
नहि भान भेल कनिया अपने
जीवन ओरिया क’ ससरि गेल।

बाबू सँ मा किछु केलक बात।
निःशब्द इशारा उठा हाथ।
ल’ अनलथि जा क’ धिया हमर
ललका सिन्दुर पड़ि गेल माथ।

देखलहुँ पाहुन छथि अनचिन्हार।
अहोभाग राति सगरो अन्हार।
भेटल किछु नव स्पर्श पिघलल
मन बहकि गेल उतरल शृंगार।

किछु सत्य भेल मोनक सपना।

भेटल मुँह बजना मे गहना।
हमहूँ देखायथिह सवस्थि दान
ई मोन हृदय जे छल अपना।

अछि केहन धवाहक ई बंधि।
स्नेहक संबंध बनल पक्षाकण।
अपछ्याइत दू टा चलल संग
धशासक बान्हल डोर केहन।

संगी साथि सभटा छूटल।
की बसछ सकब जीवन बीतल।
ओ घर दाछ आँगन दलान
सभ सँ छल स्नेह कोना टूटल।

कछाते कछाते औछायौन भेल।
पाहुन संग हमर चुमौन भेल।
भगबती घ'र सँ बिदा होइत
दू टा कहुना समदौन भेल।

दृग जल सँ गंगा उतड़ गेल।
ममता धानि सँ हाछ गेल।
बाबू दलान पर रहथि ठाढ़
मा ओलती मे अपाण भेल।

खोता मे पक्षी श्चाहश्च गेल।
दाना अहार छल श्चसश्च गेल।
स्तब्ध भेल छल गाछ पात
पछबा बसात छल रश्चत भेल।

भारक समान श्चकछु छल राखल।
भश्च गाव टोल सौसे कानल।
गामक सीमान श्चि बश्चना सभ
दौड़ल बताह भ’ छल कानल।

हम पात पहुँचलहुँ हुनक गाम।
जे अश्च नारी केर स्पागिमि।
नश्च रहल एतय पश्चलुक पश्चचय
भेटल हुनके सँ अपन नाम।

कोबर मे बैसल छी अनाि।
राखश्चि जे बुश्च क’ पाण नाि।
क’ देलक श्चदा जखने पश्चजन
दुख केर कहबै श्चकछु कोना बात।

बान्हल चैकश्च सँ आब रहब।
दुख सुख कहुना अपने भोगब।
नैहश्च सासुर केर मान लेल
कतश्चिक सभ श्चवहिन करब।

अछि उजड़ि गेल ओ पहिल वास।
भेटल अछि सोना के आवास।
टुटि गेल पाँखि, अछि भरल आँखि
पिजरा सँ की देखू अकाश।

सुबोध कुमार ठाकुर, गाम-हैठी बाली, जिला-मधुबनीक मूल निवासी छथि आ चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट पेशासँ प्रैक्टिशनर छथि।

आशा

जीवनक ज्योत्स्ना ओ पकाश
सबहक जीबए कऽ एके गो शोत
होइत अछि सुखमए सुन्दर आश,

सोचू जे आशा नहि होइतए
जीवनक परिभाषा नहि होइतए
एकरे बलपर विश्वक सभ केँ
चाहे ओ होए कोनो परिवेश,
एकरे बलपर सभ पर्व उल्लास,
जीवनक ज्योत्स्नाक पकाश

नान्हिये टाक बच्चा लए कए
पोसथि छथि माए एहि आशा लए कए
पैघ भेला पर ईएह राखत हमर विश्वास,

सबहक जीबए कऽ एके गो शोत
होइत अछि सुखमए सुन्दर आश,

बिलटि गेल जन कुनु परिवार
भए गेलै जन अ कि अभाव
तैयो ओ जीबि लैत अछि
काल्हिक बलपर आइ खेपैत अछि
सुखले रोटीमे भेटए मालपुआक आभाष
सोचू होइत अछि कतेक सुन्दर आश

सबपहुँ आशा बिहीन पाणी
होइत अछि जेना नदी बिन पाणी
कही गेला अए विद्वय जानी
आबि जाए हुनक जीवन लीलामे खटास
जीबए लेल जर री चए तँए आस

<u>जुग बदश्ला गेल</u>

जुग बदश्ला गेल,
मन बदश्ला गेल,
जकरे देखू से सनश्क गेल
नश्ह जाश्ना श्चकए, एक दोसरसँ सभ दूर सड़श्क गेल,

नश्ह माइ बाप नश्ह भाइ-बश्हन,
सभ अश्छ जेना संबंि श्वहीन,
स्पाच्छन्द रमए, स्पाच्छन्द श्वचार लए,
जीबए श्जनगी सभ ऐंठ-श्वचार भए,
सम्बानि माने बदश्ला गेल
सभके नश्ह जाश्ना ई की भेल,

िोि कामी अश्ा लालची सभ
अश्छ दुभावनासँ गश्नत सभ
सभ श्दशाश्वहीन श्दगभश्रत भेल,
जकरे देखू से सनश्क गेल,

आजुक पश्रदृश्यमे,
नाश्वक जीवन अही सृश्ष्ट मे,
अश्छ ददनीक अतृप्त भेल
तोश्ड़ लाज सभ नारी परोसी रहल लाजक श्रृंगार,
देश्खते जकरा मदभुिकए बश्ना के श्सयार

नारीक परिभाषा बदलि गेल
जकरा देखिते कण्ठ सटकि गेल,
जुग बदलि गेल।

जकरे देखू से जुगल बनल
होइतए नेना जेना जुवान बनल,
हम जा रहल छलहुँ सड़कपर
देखलहुँ नेनाके बालिकाका परति व्यवहार
सहजहि मनमे उठल विचार,
गलफ्रिडक संग पेमक परिभाषा बदलि गेल
जुग बदलि गेल, मन भटकि गेल

नहि अछि भेष-भूषा नारीक समान,
नहि जानि कतएसँ आएल ई परिपाटि
चूड़ी, लहठी आ साड़ीके छोड़ि
नारी आब जीन्स अ किटी स्कॉट संग भेल,
जुग बदलि गेल, मन भटकि गेल,

सभ भागि रहल फुलिमयाहीक आडम्बरपर,
सभ नाचि रहल धुन बाजनपर
नमस्कार अभिवादन छोड़ि,
आब हाए-बाय आबि गेल,

जुग बदश्ल गेल।

चाही सभके खूब श्वलाश,
सभके खजानाक छै तलाश
श्मनगीक फुश्मयाही सानि जुटबैक लेल,
श्मनगीयेके सभ श्वसश्व गेल,
जुग बदश्ल गेल

सभ अश्छ अशान्त, अश्छ लोक कालहंत,
पाशात्य सभ्यता केलक सभके परेशान
जे गह बश्म शाश्मतके श्मगश्ल गेल
पुछै अपन संस्कृश्म कतए सभक सुबोि गेल,
जग बदश्ल गेल,
सभ भटश्क गेल।

सुन लागए गाम

बुढ़िया माय कोनटा पर बैसल,
थाकिल आँखिसँ निहारि रहल छलीह बाट,

काल्हि दिवाली छियैक दीप जरतए सगरे
हमरो अँगना आएत फेरसँ उल्लास,

बुढ़िया माय कोनटा पर बैसल,
थाकिल आँखिसँ निहारि रहल छलीह बाट,
बैसले-बैसल मन सोचि रहल छल
पछिला दिनमे मन घुमि रहल छल
सगर टोल आओर गाम सुखमय लगैत छल
जखन सभ गाममे रहैत छल
मुदा आब ओ समए नहि रहल नहि रहल आब ओ बात
बुढ़िया माय कोनटा पर बैसल,

सोचिते मन पिजित भय उठल
जेना हृदयमे सहजहिं पश उठल
किएक बनल सभ परदेशी, आ गाम बनल सुनसान

सोचिते कऽ रहल छल मोन विलाप

बुढ़िया माय कोनटा पर बैसल,
िाकिल आँखिसँ आहािब रहल छलीह बाट,

केहन भेलइ ई मजबूरी
रोटी खाइार बनलय दूरी,
सभके चाही खूब पाइ रपैस्या
आओर चाही खूब भोग विलाश
बुढ़िया माय कोनटा पर बैसल...

एक बेर जेना कहलकइ,
कइ पठाबी ई समाद पुि सभके,
तूँ पाय आब बड कमेलह
इहे पाइ तँ देश छोड़ेलकह

नइ चाही खूब पाइ रपैस्या
घुरि आबह तूँ अपन देश बटोिया
मा अश्रि ले दोहराबए सेहो इहे बात
बुढ़िया माय कोनटा पर बैसल..
िाकिल आँखिसँ आहािब रहल छलीह बाट।

अधूरा पेम आर चान

छिटकल कण आकाशमे छल
मनमे दबल जतेक बात छल

कहए लगलहुँ चानसँ
बुझबए लगलहुँ पाणसँ

हमरो पेमक ज्योत्स्ना जागल रहए
हमरो पीतक आस्था लागल रहए

पेम करए लागल रहौँ हुनका हम पाणसँ
ई कहए लगलहुँ चानसँ

आएल छलीह हमर मरुभूमि र पी मनमे ओ
मृगमरीचिका जेका बनि कऽ ओ
खेलाय लागल छलीह ओ हमर अरमानसँ
कहए लगलहुँ हम चानसँ

अखन तँ पेमक आँकुरो नहि फुटल छल
मनक स्नेह सेहो ढंगसँ नहि चढ़ल छल
नीक जेका हुनका सुननहुँ नहि छलहुँ कानसँ

कहए लगलहुँ ई चानसँ

कमिक डोरी संग बान्हल छलहुँ
जीवन साथि करएमे लागल छलहुँ
अिक जुटबैमे प्यासल छलहुँ

पेम मधुर संगीत फीका लागए हमर कानसँ,
परंच हमर मनक गाममे ई शोर छल
कखनो नहि सकलहुँहुनका ई अपन जुबानसँ
कहए लगलहुँ ई चानसँ

अन्तर्दन्दि चलिये रहल छल
पेमक रंग चढ़िये रहल छल
परंच ठीक भय गेलै हुनकर प्रवाह ककरो आनसँ,
कहए लगलहुँ ई चानसँ

हुनक पाणिग्रहण हम नहि कए सकलहुँ,
हुनका लेल हम तड़पैत रहि गेलहुँ
हाय केहन बान्हल छलहुँ पिताक पानिसँ

ओ छलीह हमर अधूरा पेम,
कल्पना ओ यथार्थ बेजोड़ संगम

आर पश्चि गीता कुरानसँ
कहए लगलहुँ ई चानसँ

नेनाक पश

फेर कारी मेघ छयल
देखि मन सभक हषायल
सुन्दर बखा बुन्द खसत
जीव चराचरके जीवन भेटत

आँखिमे काजर सजेने
देखि मन मुग्धित मृगनयनी
बात अ िरमे सजा कए
पुलकित भय छथि सेज सजेने

परञ्च नेना ठाढ़ एकसर, सोचि रहल छल बात दोसर
फेर बरखा खूब होयतय , फेर परके जका सगरे ढहेतय
भूखसँ तरसब हम सभ अनकक दाना नहि भेटत,
जा कय बड़का दलानपर काटि-काटि कय राति काटब,

एकएक होइत अछि जलमग्न सगरो
सुधि एकएक नहि छै ककरो,
एकएक अछि कोशी ओ कमला , ि र ई बागमती बलानक,

छै एकएक नहि उपाय एकर,

सोचि रहल छल कोमल हृदय ओकर,
जकर छल नहि ककरो लग उतर,

डर कल्पनाक जखन यामिनि बदलल रहए,
दृश्य बाढ़िक ताण्डव बनि बाधि-बोन पसरल रहए,

आँखिसँ काजर दहाएल,
मृगनयनीक मुख मुरझाएल,
कष -पीड़ा आर डरसँ सबहक छल देह घमायल,
के करत मालक आमेरा सोचि-सोचि बुझि ना दुखित भेल
भाखि-भाखि सभसँ कहय छल आब बाचब दुभर भेल,

घर आँगन चार-चाचर, भय गेल जल मग्न सगरो
नहि कमल दल नहि मखानक आ नहि छल शेष चिनक
बाढ़िसँ कलहंत जीवन
छलि मिथिला शिथिल भेल
के करत परिकार एकर
बनायत मिथिलाके सम्मन

सभ साल आबि-आबिके
बाढ़िक ताण्डव करैत अछि विकास अवरुद्ध
तोड़ि सभक आशाके करए आस अवरुद्ध

मुँह फाड़ि चिकड़ि-चिकड़ि कय

नेना पूछि रहल अछि पश सभसँ

की सब छुटन अछैना जीब बाढ़ुक ताण्डव देखि-देखि कय

पश अबोधि नहि छै केवल
पश अछि सुबोधि
पश छै माइगेनक एवं पश अछि बुद्धिना प्रकसानक
पश छै प्रभिलाक आशाक एवं पश छै प्रभिला प्रकासक

सनेश

जो रे पवन तू ओहि दूर देश
पिआ बसए जाहि देश

छी हम व्याकुल आतुर हद तक
प्यासल छी हम अन्तर घट तक
जा कऽ दए आ हुनका ई सनेस
जो रे पवन तू

सावनक रास भरल महीना
कटए विरान हुनका बिना
सहि नहि सकब हम ई कलेश
जो रे पवन तू ओही दूर देश
पिआ बसए जाहि देश

आँखि कजराएल हमर
मेघक संग हेराएल
मनपर खसल बज्जर
रसक मािा बाचल नहि शेष
जा कऽ दए आ हुनका ई सनेस

कटत केना राति अन्हरिया
ऊपरसँ जे चमकए बिजुरिया

मनक बढ़ल जाए कलेश
जा कऽ दए आ हुनका ई सनेश

पसरल अछि रंग रभसक बहार सगरो
मुदा हमरा लेल पसरल अन्हार सगरो
एनामे जे छोड़तथि रणभूमि
सखी सहेली उल्हन देत विशेष

दए कऽ तू आ पिआ के ई सनेश
जो रे पवन तू ओहि दूर देश
पिआ बसए जाहि देश।

हम नञ्इ छी अभिशाप

हम नञ्इ छी अभिशाप समाजक,
हम तँ छी आधार समाजक।

जुनि हमरा देख ठोर बिजकाऊ,
हमर बातपर ध्यान लगाऊ

सोचू जे हम बेटी नञ्इ होएतहुँ जगमे
पुरुष कतएसँ अबितहुँ जगमे,
कतएसँ अबितए जीवन चक्रि
मानवक जीवन होएतए वक्रि,

हमरासँ अछि शृंगार समाजक,
हम नञ्इ छी अभिशाप समाजक।

बौआ जे बनिकनको होइन नगर-नगरसँ बढ़ि जाइन,
होयतए बेटी तँ सभ लजाए कहासँ काली अएलउ दाइ,

बात ई अछि अधिक विचारक,
हम नञ्इ छी अभिशाप समाजक,

हमर परिस्थिति बनल जाइ आओर बिकट,
यंत्रि सूक्ष्मदर्शीसँ आएल संकट,

दुनियामे आगमनसँ पहिले,
मुनियाके मारए छी पहिले,
ओ बाबू- मय चण्डाल समाजक,
हम नहि छी अभिशाप समाजक।

बनए छी हमहुँ इन्जीनिअर-डॉक्टर
हमर चमकसँ सेहो लजाए छथि भाष्कर,
मुदा ई अछि केहन लाचारी
तैयो बियाहमे लागए हजारी,
कहा गेला समाज सुधारिक,
हम नहि छी अभिशाप समाजक,

हमही तँ ममता लुटबए छी
हमही जगक कष्ट उठबए छी,
कखनो बेटी कखनो माए
कखनो मृगनयनी कखनो दाए,
सबहि भूमिकामे आबि कए,

करै छी हम उद्धार समाजक,
हम नहि छी अभिशाप समाजक,
उग जखन हम बेटी होए
चामुण्डा दुर्गा काली होए,
जखन शान्ति मुरामे होए,
जनक नन्दिनी सीआ होए,

कहा गेल सभ जान समाजक,
हम नहि छी अभिशाप समाजक,

नहि चाही हमरा आरक्षण,
छी हम अबला ताहि कारण,
हमरा चाही सम्मान समाजक
हम तँ चाही वरदान समाजक,
हम नहि छी अभिशाप समाजक
हम तँ छी वरदान समाजक।

<u>जीवन यािा</u>

िाकिल पएर झमाड़ल देहसँ,
भारी मन मुदा आशा आओर नेहसँ,
चलय केर पयत कय रहल छल बटोही

गुज-गुज अन्हार छल,
मनमे डरक थकार छल,
तैयो ठश्चयाइत बाट जोहैत चश्च रहल छल बटोही।

अश्चतम पड़ावपर छल यािा,
सोश्चतक संचारक चाल कम माि ,
तैयो उल्लास भश्च चश्च रहल छल बटोही।

बटखचाक सभ श्चन अभाबे रहल,
मन माश्चक मंश्चलक सभ श्चन अभाबे रहल,
तैयो पयासरत रहैत सश्चखन चलैत रहल बटोही।

िाकिल पएर झमाड़ल देहसँ,
भारी मन मुदा आशा आओर नेहसँ,
चलय केर पयत कय रहल छल बटोही

कखनो पुस्तकक बोझ लए कए,

कखनो नोकरीक खोज लए कए,
सरपट भागए के कोश्वास कएलक बटोही।

आयल बाटमे उपवनो कखनो,
फुलाएल रहए रंग-श्वरंग फूलो सगरो,
मुदा चलबाक ि निमे सुगंि नश्च लए पओलक बटोही।

चढ़बाक श्चमश्चारीपर छल,
इजोश्वया राश्च सेहो सुन्दर तखने छल,
परञ्च वीर रससँ ओतपोत शृंगार रस छोश्च चलल बटोही।

मन कतेक बेर कहलक, कनी श्वलश्च ली,
याािक कनी आनन्द लए ली,
मुदा आगा बढ़ए के होरमे,
चलैत रहल बटोही।

सश्चखन संघषरित रहैत,
मंश्चलके पाबए लेल पयास करैत,
नश्च सफले नश्च असफले,
बीचक पश्चायोगी छल बटोही।

जीवन एक गोट यात्रि छी,
मंझ्मल नझ्झ से नझ्झ बुझ्झ सकल बटोही।

िकिल पएर झमाड़ल देहसँ,
भारी मन मुदा आशा आओर नेहसँ,
चलय केर पयत कय रहल छल बटोही।

<u>अओताह मन भावन</u>

स्वप्न सलोना आँखिमे लेने
कनी बहारि रहल छथि आँगन।
सोचि-सोचि कए मन हर्षित छल
आइ साँझमे अओताह हमर परदेशी मनभावन।

छल बरखक आस मोनमे दबल
मोन कतेक पीड़ासँ छल गुजरल
काटि कए काटल राति अन्हरिया
आर रससँ भरल मधुना साओन,

स्वप्न सलोना आँखिमे लेने
कनी बहारि रहल छथि आँगन।

ओ पछिला मिलन रातिक
मोन भीजल रहए मिठगर-मिठगर बातसँ
रोम-रोम पुलकित रहए,
हुनक आलिंगन छल कतेक पावन,
स्वप्न सलोना आँखिमे लेने
कनी बहारि रहल छथि आँगन।

नबका साड़ी आइ पहिरबए
नेचुरल रंग बला श्रृंगार लगेबए
गजरासँ हम केश सजेबए
देखिते सोचमे पड़ि जएता साजन,
सपना सलोना आँखिमे लेने
निहारि रहल छी आँगन।

एतबामे फोनक घंटी बाजल
निन्न जेना भोरासँ जागल,
फोनपर आएल आबाज
हम नहि आएब एहि मासमे आब
सुनि निहारि झूर-झमान भए खसली
जेना खसए रोगी ददर्क कारण,
सपना सलोना आँखिमे लेने
निहारि रहल छी आँगन।

कहए सुबोधि निहारि जुनि कानू
बात कहि केर मानू,
अगिला मासमे आशय अओताह,
अहाक सुन्दर मनभावन।
सपना सलोना आँखिमे लेने
निहारि रहल छी आँगन।

धनीत ठाकुर, अधिलेशर मौवाही ६, िनुषा, नेपाल

जाढ़

गतर गतर जाढ़ दागे की कहु भाइ यौ
राश्ना काटब कोना ओढ़ीकऽ चटाइ यौ
दुाखक पिर आव पसरल एकचारी
िरिर कापै बैसल बुिनी बेचारी

हाि हाि नश्च सुझे लागलछै बड़ िूनी
लाही लश्चापर बरसै परै जेना फूँहीँ
सुश्चा नश्च पराती शब्दै नश्च श्चड़ीया
कोिीया गेलै आइ की दादी बुढ़ीया
गतर गतर जाढ़ दागे की कहु भाइ यौ
राश्ना काटब कोना ओढ़ीकऽ चटाइ यौ

घूर की फूकब भटे नश्च श्चाङहास पोरा
करेजामे साटगे बुिनी नेनाके लऽ कोरा
कोश्यत भऽ िती जलवायु उगलै छै जहर
ताय नाश्चान फूफकार छोरै श्चातलहर
गतर गतर जाढ़ दागे की कहु भाइ यौ
राश्ना काटब कोना ओढ़ीकऽ चटाइ यौ

नव वर्ष

नव वर्षक ललकी कीरीण आया
सुखक समा लऽ पसरल दुखआया
सभ केउ सुरक्षित भऽ अमबै जागै
पूरे अवधि ला मंगलमय लागै

होइनै ककरो आव जाइ बेजाइ
मेहनतके रोटीसँ नेना पोसाइ
सभके घरमे जुरै रचै अन
पशन मुरामे रमकै मोन

जे बुझे अपनाके बलशाली देश
काज अकछु एमकी करै अशेष
जलवायू पदूशन पर राखै ध्यान
पृथ्वीके कम करै तापमान

गीत- अएनाके की मोल

अएनाके की मोल आन्हरके शहरमे
लागे उल्टा मुँह सुल्टा अपने नजरमे
जानक शुरमा लगाकऽ जे बजबैय गाल
व्यवहारमे देखल ओकरो उहे ताल

मोन भीतरके दपणि सेहो चुर चुर
एतऽसँ मानवता भागल अछि कोशो दुर
घुमे भवनमे दश्वन्द्रा ओढी सज्जनके खोल
कतहुँ देखल मातम कतहुँ बाजे ढोल
अएनाके की मोल आन्हरके शहरमे
लागे उल्टा मुँह सुल्टा अपने नजरमे

जे समाज सुिरक ओ करैय श्वकशुनकेर
ओकरे पाछु मुसना कहबैय शवा शेर
जा िर नश्व हाएत मोन सँ मद पन नाश
करत लोक कोनाकऽ श्वनीत भावक आश
अएनाके की मोल आन्हरके शहरमे
लागे उल्टा मुँह सुल्टा अपने नजरमे

गीत-१

ठकन काका हो कलयुगमे देखल बड़ अजगुत
मनुषक भेषमे घुमे सबतैर आब यमके दुत

आबनै चानमे ओ शीतलता मलिन भेल सुरजक लाली
स्वार्थ कि बसमे पैर मनुष सब करैय काज बेताली
भरल बसन्तमे कुहके कोयलिया पुत भेल कपुत

नोर बैन हिमालयसँ आकले कमला, कोशीके पानी
सुखचुके गंगोत्रीसँ गंगा सबके भेल एक कहानी
नव दुलहिन िती माताके छन भेल सारीके सुत

जे कहाबे अपनाके जानी उहे करे खिंचातानी
के नव बाट देखा मिथिलाके लिखत सुन्दर कहानी
कहिया फेर जाल सोझराक मैथिल हायत मजगुत

गीत-२

थ्मवन एक अनमोल गहना खुबकऽ झमकाऊ
थ्वरा मोथ्मसँ पजथ्मत सपना नयनमे सजाऊ

कमक्रि प पिर चलु आगु छोर थ्वकरम जाल
थ्ठ अहा चमकैत सोना मा थ्मथ्र लाके कोखक लाल
झगर लगाउन चुगला बथ्मकऽ मुहनै नुकाउ

फूसक एकचारीपर कखनो उर नै बथ्मकऽ कौवा
केकरो मा पिर ठनका खसा बजथ्मयौनै कैह वौवा
सोथ्मतके हर एक कतरा अपन थ्मकाशमे लगाऊ

मानवता राईख मनमे दोसरके होइयौ सहारा
सबकेउ एक दोशरसँ अपनामे राखू भाईचारा
टुइट पर अथ्रकारकलेल केकरोसँ नै डेराउ

अभ्यागत

कतेक देरऽसँ ठाढ छैि दार पर अभ्यागत
श्रद्धा दऽ कऽ घरनी कर हुनका स्वागत

पचन्ड गर्मी शीत िन भेल लहालोट छै
तन पर गुदरी हुनकर परल कतेक छोट छै
अपन दुाख आ श्थड़ाके ओ छाश्यामे दवाकऽ
टहल लगावे सगरो गामे गाम जाकऽ

जन्मे की कमसँ हुनका कोना कहबै पछुवाएल
कपटीके जालमे हुनक जीवन जे ओझराएल
अषाढक रौदी जका पैरमे फाटल बेमाई छै
समाजेनै देखतै तऽ ककरा गल दबाई छै

गीत -उठू मैथिल भेलै भोर

जय जय मैथिल जय मिथिला
हर हर गंगे जय कमला

उठू यौ मैथिल भेलै भोर
चुनमुन चिरैया करैय शोर
कोशी कमला अमृत जल धारा
आलश छोर कहे भुरकवा तारा

माईट पानिके लगाक छाती
बुढ़िया दादी गावे पराती
गाई महीश खोललक चरवाहा
हर लऽ विदाह भेल हरवाहा

मन्दिर मस्जिद मिथिलाके शान
रूप अनेक एकही भगवान
जनक शलहेशक ई कर्मभूमि
स्वर्ग समान वनाऊ मातृभूमि

<u>आशापभा झा (लोकगीत संकलन)</u>

<u>भगवती गीत</u>

तारा नाम तोहार
तारा नाम तोहार हे जननी काली करथि पुकार
सतयुग कलयुग दुइ पथ्म हारल
तीनू भुवन तोहार हे जननी तारा नाम तोहार।
अष भुजा लए थ्मंह पर चढ़ली
देखइत सकल संसार हे जननी, तारा नाम तोहार।
सुर-नर मुथ्म सभ ध्यान रितु हे
गले बैजन्ती माल हे जननी तारा नाम तोहार।
तारा नाम तोहार हे जननी, तारा नाम तोहार।

<u>थ्ववाह क गीत</u>

कोना थ्वयाहब ियाा ओ थ्वया, कोना थ्वयाहब यो{(2)}
वरक भाव आकाश चढल छई,
दू अच्छर नथ्ह पढल-थ्मखल छई।

माग करए फटफश्चया यो श्वया, कोना श्चयाहब यो,
कोना श्वहायब िया ओ श्वया, कोना श्चयाहब यो। {(2)}
वरक बाप केहन छश्चि बोढला,
श्चालक मागे सोनक मोहरा,
वरक बाप लटपश्चया यो श्वया, कोना श्चयाहब यो,
कोना श्चयाहब िया ओ श्वया, कोना श्चयाहब यो।
कोनो उपाय नश्च हमरा सुझईए,
बेटीक देश्च जग झाझर लगइए,
बेटीक श्चयाह झनझश्चया ओ श्वया, कोना श्चयाहब यो,
कोना श्चयाहब िया यो श्वया, कोना श्चयाहब यो।{(2)}

<u>श्चवाह क गीत</u>

जाघ जोडी बाबा बैसलश्च मंडप चश्च,
आब बाबा कर कन्यादान यो।
जौओ श्चालक लए िया केड उसरगलऊ,
आब िया भए गेल श्चरान यो।
सुसुश्क-सुसुश्क कानश्च माए सुनैना,
बाबूजी केड चेहरा उदास यो।
जाश्च बेटी लए नटुआ नचाओल,
सहए बेटी भए गेल श्चरान यो।
कन्यादान करए उठलश्च बाबा जनक रीश्च,
मोती जका झहरश्च नोर यो।
जाघ जोडी बाबा बैसलश्च मंडप चश्च,

आब बाबा कर कन्यादान यो।

भगवती गीत

कओने मुँह सँ अयलीह काली,

कओने मुँह गेलीह हे कलजोरी-जोरी।

कओने मुँह भए गेली ठाढ हे कलजोरी-जोरी।

पूब मुँह सँ अयलीह काली,

पश्चिम मुँह गेलीह हे कलजोरी-जोरी,

उतर मुँह भए गेलीह ठाढहे कलजोरी-जोरी।

कओने फूल ओढब काली कओने फूल पहिरन हे कलजोरी-जोरी,

कओने फूल सोलहो श्रृंगार हे कलजोरी-जोरी।

बेली फूल ओढन काली, चमेली फूल पहिरन हे कलजोरी-जोरी,

ओडहुल फूल सोलहो श्रृंगार हे कलजोरी-जोरी।

पहिरि ओढ़िय काली गहबर मे ठाढ़ि हे कलजोरी-कलजोरी,

करय लगलीह सेवक के गोहारि हे कलजोरी-कलजोरी।

खोलू ने केबार

खोलू ने केबार हे जननी, खोलू ने केबार।

मा के दार पर् फूल नेने ठाढ छी,

पूजन करब तोहार हे जननी,

पूजन करब तोहार।

मा के दार पर ूपि नेने ठाढ छी,

आरती उतारब तोहार हे जननी,
खोलू ने केबार।
मा के दार पर माखन नेने ठाढ छी,
भोग लगाएब तोहार हे जननी,
खोलू ने केबार,
खोलू ने केबार हे जननी,
खोलू ने केबार।

पछन

गाश्व ने हम दै छी दुलहा द रहलौ आशीष यौ,
सासुर मे जुश्रा छाती तश्रायौ रहु श्वबौने शीशयो ॥
गाश्व-----
गरदश्रा मे तौनी लगबै छी, गरदामी ने अनलौ,
नाक रै छी नायब तैले, हाटक बाछा बनलौ।
अहाक जनम ओलश्रह तैले बाबू लेलश्रह फीस यौ ॥
गाश्व-----
नव बडद छी सुन्दर लागब, ते पश्वर ई माला,
सासुर के ोती पश्वर आ', फेर बाबा माला,
जे जे कहलौ मानू नै त लागत ठुनका तीस यौ ॥
गाश्व----।
मौसा हडकल मौसी गुडकल, पीसा अहाक भरआ,
दुला मुदा अहा गुश्रा रश्वयौ, सासुके दुलरआ।
बश्वन लेल हमारा घघरी मंगादेब बाबू ले' कटपीसयौ ॥

गाम----
खेत बेचिक साइकिल देब,
आ'मकेँ बेचिक रेडियो,
काका के दोसर बेटी की जेतबा,
बियाहमे कहैयौ।
बड हम परिरब गुदडी
दुला जीबू लाख बरिस यौ ॥ गाम----

<u>बाहणक गीत</u>

बाहण बाबू के नाम हम सुनैते छलउ
नहि अहाँ ने जाना कोना बाहण भेलउ,
अहा पीपरक गाछ तर रहैते छलउ,
अहा कोइलया केकाया जे देते छलउ।
बाहण बाबू के नाम हम सुनैते छलउ,
नहि अहाँ नहि जाना कोना बाहण भेलउ,
अहा पीपरक गाछ तर रहैते छलउ,
अहा आँि के नयना जे देते छलउ।
बाहण बाबू के नाम हमारा सुनैते छलउ,
नहि अहाँ नहि जाना कोना बाहण भेलउ,
अहा पीपरक गाछ तर रहैते छलउ,
अहा बहिरा के कान जे देते छलउ।
बाहण बाबू के नाम हमारा सुनैते छलउ,
नहि अहाँ नहि जाना कोना बाहण भेलउ,

अहा पीपरक गाछ तर रहैत छलउ,
बाहण बाबू के नाम हम सुनैत छलउ। ---------------

<u>हनुमानक गीत</u>

काहा-काहा कहथि न सीता सुनु हनुमान यौ,
किया जो बिसरि गेलखि मोर भगवान यौ।
जल-फिल, शसा-आसा ,असन समान यौ,
रावणक बात सुनि लागए विष समान यौ।
किया जो बिसरि गेलखि मोर भगवान यौ।
हार मास गलि पथि भेल भुगतान यौ,
तइयौ ने छुटए मोर पपात पाण यौ।
किया जो बिसरि गेलखि मोर भगवान यौ।
हम त कहई छी सीता अहा छी संजान हे,
लकुमनक संग अओता शी भगवान हे।
काहा-काहा कहथि न सीता सुनु हनुमान यौ,
किया जो बिसरि गेलखि मोर भगवान यौ।।

1.
हाि सटकुनाया हो दीनानाि
हे घूमई छी संगहि संग

आजु श्वदन उगई छी हे दीनानाि

आहे भेर श्वानसर ||2||

आजु के श्वदनमा हो दीनानाि

हे लागल एतीबेर ||2||

बाट िने जाई छही हे अबला

एक त अन्हरा पुरख

||2||

काश्वा काश्वा कहई छही गे अबला

हे लागल एतीबेर ||2||

बाट िने जाई छही हे अबला

एक तऽ बाझ्मश्वायाॅ ||2||

पुि कनई छऊ गे अबला

हे लागल एतीबेर ||2||

बाट िने जाई छै गे अबला

एकटा कोश्वया पुरख ||2||

काश्वा काश्वा कहै छही गे अबला

हे लागल एतीबेर ||2||

2.

मा छश्वठ मईया हे सुनु ने अरश्वजया हमार।

जखन छश्वठ मईया घर सऽ बहार

भेली

मा छश्वठ मईया कोश्वढ़या छश्वि काया लेल ठाढ।

मा छश्वठ हे सुनु ने अरश्वजया हमार।

जखन छश्वठ मईया घर सऽ बहार भेली

मा छथ्ह मईया हे अन्हरा छथि नयना लय ठाढ

मा छथ्ह मईया हे सुनु ने अरथ्मया हमार।

जखन छथ्ह मईया दरबज्जा सऽ बहार भेली

मा छथ्ह मईया हे बाझ्मन छथि पुि लय ठाढ

मा छथ्ह मईया हे सुनु ने अरथ्मया हमार।

जखन छथ्ह मईया गाम सऽ बहार भेली

मा छथ्ह मईया हे श्वानि छथि िनि लय ठाढ

मा छथ्ह मईया हे सुनु ने अरथ्मया हमार।

3.

कल जोड़ी ठाढ़ भेली पोखरी केऽ कात हे

श्वाव के दुआरी हे, दीनानाि श्वामलि िर हे।

अरघ उठैबे दीनानाि अंकुरी हजार हे

श्वाव केऽ दुआरी हे, दीनानाि श्वामलि िर हे।

दूि चढ़ैबे दीनानाि केराक घउड़ हे।

श्वाव केऽ दुआरी हे, दीनानाि श्वामलि िर हे।

हाि ी बैसायब दीनानाि अच्छत पान हे

श्वाव केऽ दुआरी हे, दीनानाि श्वामलि िर हे।

दीप जरायब दीनानाि ूपि गुगुल संग हे

श्वाव केऽ दुआरी हे, दीनानाि श्वामलि िर हे।

नहाय सोनाए दीनानाि पोखरी के कात हे

श्वाव केऽ दुआरी हे, दीनानाि श्वामलि िर हे।

कल जोड़ी ठाढ़ भेली पोखरी के कात हे

श्वाव केऽ दुआरी हे, दीनानाि श्वामलि िर हे।

गौरीक गीत।

1.

गेन्द्रा तोहर बड़ लाल गे मश्चश्चाया ॥2॥

गेन्द्रा तोहर बड़ लाल।

तीन श्चान्हुर लय गौरी हम पूजब, पीपा आ भश्चया अचीन गे।

गेन्द्रा तोहर बड़ लाल गे मश्चश्चाया ॥2॥

तीन फूल लय गौरी हम पूजब, चम्पा अड़हुल गुलाब गे।

गेन्द्रा तोहर बड़ लाल गे मश्चश्चाया ॥2॥

तीन फल लय गौरी हम पूजब केरा पेड़ा अनार गे।

गेन्द्रा तोहर बड़ लाल गे मश्चश्चाया ॥2॥

तीन वसि लय गौरी हम पूजब लाल पीयर पीताम्बर गे।

गेन्द्रा तोहर बड़ लाल गे मश्चश्चाया ॥2॥

तीन जल लय गौरी हम पूजब गंगा यमुना सरयुग गे।

गेन्द्रा तोहर बड़ लाल गे मश्चश्चाया ॥2॥

2.

चलु गे सुन्दश्च गौरी पूजय लय नटुआ नचायब आजु गे।

नटुआ जे नाचत बजना जे बाजत देखत नगरक लोक हे।

तीन श्चान्हुर लय गौरी पूजब, मश्चया आ पीपा अचीन गे,

चलु गे सुन्दश्च गौरी पूजब लय नटुआ नचाओत आजु गे।

तीन फूल लय गौरी हम पूजब,बेली,चमेली अड़हुल गे,

चलु गे सुन्दश्च गौरी पूजब लय नटुआ नचाओत आजु गे।

तीन वस्त्र लय गौरी हम पूजब पीयर,पीला,पीताम्बर पटोर गे,
 चलु गे सुन्दरि गौरी पूजब लय नटुआ नचाओत आजु गे।
तीन जल लय गौरी हम पूजब, गंगा यमुना सरयुग गे,
 चलु गे सुन्दरि गौरी पूजब लय नटुआ नचाओत आजु गे।
तीन नेवैद लय गौरी हम पूजब, केरा पेड़ा नारियल गे,
चलु गे सुन्दरि गौरी पूजब लय नटुआ नचाओत आजु गे।
नटुआ जे नाचत बजना जे बाजत, देखत नगरक लोक हे।
 चलु गे सुन्दरि गौरी पूजब लय नटुआ नचाओत आजु गे।

फूल छिटबाक गीत

1.

फूल छीटय मे लागे सोहाओन, सिया जी के कोबर मे
कथी मे लोढ़ब हे, बेली चमेली, कथी मे लोढ़ब गुलाब
सिया जी के कोबर मे।
डाली मे लोढ़ब हे, बेली चमेली, फुलडाली मे लोढ़ब गुलाब
सिया जी के कोबर मे।
किनका चढ़ायब हे, बेली चमेली किनका चढ़ायब गुलाब
सिया जी के कोबर मे।
शिव जी चढ़ायब हे, बेली चमेली, गौरी चढ़ायब गुलाब
सिया जी के कोबर मे।
किनका सँ मागब हे,अन्न लक्ष्मी, किनका सँ मागब सोहाग
सिया जी के कोबर मे।
शिव जी सँ मागब हे, अन्न लक्ष्मी, गौरी सँ मागब सोहाग

श्यामा जी के कोबर मे।

फूल छीटय मे लागे सोहाओन, श्यामा जी के कोबर मे।

2. भोला शंकर पार्वती (नचारी)

भोला शंकर पार्वती

जगपालक जगदीशर ईशर हमर अहा सुधि ली

भोला शंकर पार्वती।

दुाख जनम भरि भोगल बाबा, की अनाि हम छी।

कार्तिक, गणपति आसन हम नहि छी, छी अपराि

भोला शंकर पार्वती।

उतरब पार अही बल बाबा अढ़रन ढ़रन अही

भषम विभूत कंठ विषािरी ताडव तान करी।

भोला शंकर पार्वती।

मुंडमाल सपकि संग सभ शिव गंगा चन्द्रािरी,

पूरत आस मनोरि बाबा गौरी के नगरी।

भोला शंकर पार्वती।

श्रुमाशु चौरी

श्रायश्रा

श्रबछानरपी मशान मे अहीीन भ
अपन लाशक कश्चयारी स्रायमसन भ गेल छी
इच्छा सभ मे पूणघिराम लाश्रा गेल अछ्छ ते
एकटा श्रायश्रा भ गेल छी
हँसलासँ मा नश्च
कनएटा पडैत अछ्छ
कनैत-कनैत िश्चक जाइत छी
तखनो शाश्चा नश्च
श्चकछु मनोघ्यनोद करएटा पडैत अछ्छ
बनाबटी मुस्की छोडएटा पडैत अछ्छ
िन्य कि!--- िन्य यििा!!
ते जीवन मृत्यु मे लीन होइत जा रहल अछ्छ,
जीवन आ मृत्यु मश्चल होइत जा रहल अछ्छ।

टप-टप नोर आ ज्वाला

शब्द वीणा मे
अकरक तार लटका क
आलाप क रहल छी
ई केहन कोन अछि
जे रौद नञि दैखैत छी
ई केहन गाछ अछि
जे कोयली नञि बजैत अछि
भगवान! अल्लाह! गड!
पराधीन क्षितीज मे
छाओ बढैत जा रहल अछि
रवि आ तालक
पश्चिमभाषाक शब्दजाल मे स्नेह
उपेक्षित होइत जा रहल अछि
दासताक छाह बढैत जा रहल अछि
सपना मे आथा लगैत जा रहल अछि
शताब्दीक ई अन्तिम मजाक
नोरसँ भीजल पपनी के
हडडी आ चमडीक शरीरके
इलेकरोड सुगा बनबैत जा रहल अछि
अशात आ बेचैन बीच
भीड पचीसी खेल भेल जा रहल अछि
सभके स्मारक मे रखैत

सहवास करबाक नीश्वासँ
आसि ा दुवासा बनैत जा रहल अछि
मेघक गजनि, वषा आ ठनकाके शृङ्लासँ
शीघ उपलब्धि दीघपिीडासन होइत जा रहल अछि
घृणाक ज्वालामुखीके
कोनहुँ भविष्य नहि होइ तो
टप- टप नोर आ ाि कि ज्वाला
अशोक होइत जा रहल अछि
ाहि- ाहि बीच
नव-नव थ्यआास बढैत जा रहल अछि
ते स्वगा जनत! हेवन!
इतिहास/भूगोल मे नहि खोज्य क
वतमान मे खोजबाक आवश्यकता बढैत जा रहल अछि।

<u>आतङ्कक राजकुमार</u>

आइकाल्हि भोर साझ
हमर गाम असुरग्रस्त अछि
भोर मे शान्ति बलात्कृत
साझ मे सुरक्षा अपहृत
शान्तिक लेल अष जाम
सुरक्षाक लेल महायज
पदर्शासन भ गेल अछि।
कखनो लक्ष्मी भोकाड़ि पाडैत अछि
कखनो सावित्री गोहारि मडैत अछि
कगमे पार्वतीक हरण होइत अछि
गामक देवता शान्ति-शान्ति कहैत छथि
गामक ब्राह्मण सभ शान्ति-शान्ति कहैत अछि।
केहन कोलाहल केहन धार्मिकीय परम्परा आतङ्क-आतङ्क
गामक मन्दिर,मस्जिद आ चर्च कोलाहल,
धर्म आ धार्मिकीय परम्पराक आशय सँ लिप्त बल
राजनीति,चिंतन आ सुरक्षा के बदी बना पौरुख,
गौरव आ महत्वाकाङ्क्षाक घडारी के चारू दिससँ भाला,
गडास ल क घेरने लैत अछि। भाला पौरुखक पेट मे
गडास गौरवक छाती मे आतङ्क हृदय एतबो मे नहि
जुडाइत अछि
राहबारक गाछ मे राजनीति, चिंतन, महत्वाकाङ्क्षा जान,
भाव आ इच्छा के बान्हि आरासँ चीरैत अछि
सूर्योदयसँ सुर्यास्त धरि अहङ्कार थापि आइत अछि

विजयोत्सव! विजयोत्सव!!

सृजनी, चिंतन महत्वाकाङ्क्षा, जान, भाव,
इच्छा पौरुख आ गौरवक हत्या सँ शोकायल अछि हमर गाम।
एक-एकटा फूल झड़ैत जा रहल अछि
जकर कतहु नहि चर्चा होइत छैक
गामक समवेदना हरेक दिन कष्टप्रद यात्रि क रहल अछि
ई दृश्य भम नहि समय हमर गामके बेर-बेर ठकलक अछि
विध्वंशक गर्जना आ तर्जना से हो भ रहल अछि
शोकाएल हमर गाम मे एक बेर फेर
विवेक आ आसक्तिक छाया बार पडतैक
ओकर इजोत सँ पडाएत ---- आतङ्क राजकुमार।

<u>पारि</u>

पारिके आगा
दीप बारैत
श्चकएक समयके
बरबाद कएने छी
ओकर आंखिमे
एतेक गदा पड़ल छैक
जे
फुल आ गाछ श्चिके
ने देखैत अछि
फुल आ गाछक जीवन
कलासन अछि
काव्यसन अछि

दृश्य आ रष्टाक
पतीकसन अछि
ते
श्चकएक ने पंचम स्वरमे
फुल आ गाछक गान करब
श्चश्वास अछि
एहि दुनूके गानसं
पतझड़ सेहो मधुमास भ’ क’ आबि जाएत

ताहि कारणे

पारिके सुतए छथियौ

कएक की

पारि तं

धाराक अनन्ताम अवस्था होइत अछि ।

कविता

शुन्यभाव
शुन्यकाश होइतहुं
ने असरल छी व्यक्ति
ने खतम होइबला अछि अनन्तता
सुनल अछि

विश्वास आ प्रेमसं
संसार बनल अछि
शुन्य नकारने छैक

शुन्य तं
पुनः गम्भीर होइत अछि
शुन्यसं सभ उठैत अछि
आ
ओहीमे
सभ लीन होइत अछि

कतेक बड़का अछि पृथ्वी
तरहि ीके भीतर अछि एकर आयतनजे
कखनो सुटैक जाइत अछि
त क
कखनो फुश्का जाइत अछि

ते

इतिहास आ वर्तमान बीचक अन्तरके
सड़क साकी रखैत
विसङ्गतिक खाधि
आ
आत्मकथा कि बीच
बाचल छी
सविसित्ये पर्यावरणता ल' क

चेतनाक संवाहक सभके
पतीकामे छी
जे
एकटा स्मृतिक दोसर
ताजमहल बना देत
तत्वमसि आदि मुल्यके
पर्यावरणत क' देत ।

की भार साठू

लाते लातसं घाश्चल
लाशे लाशस' गन्हाएल
सङि ान्श्चाक पीड़ामे
की भार साठू

ि राएल चानी
फुफुश्चआएल अश्चबक फड़
शोकाएल चाउर थ्यपाएल आंजुर
दन्तकि ाक पाि जका
कचोट द' रहल अश्च
गि गि मे बेि ल भाला गड़ास
टीसे टीस द' रहल अश्च
फाटल श्चाटल कपड़ा लता
मूंह कतहु हाि कतहुं
स्रेमे राखल श्चागरेटक ठुटीसन
लावाश्चश भ' गेल
इश्चाहासमे बहल नोर
फेर एश्चबेर सेहो बश्च गेल
गन्हाएल लाशक भार कोना क' साठू ?

अश्चाष्टकारी अमरौती पीने अश्च
ओकरा लेल
सत्यम, श्चावम आ सुन्दरमक सजक्ि बाि कतत्व

बाकितत्व मश्च जाए
माहुरे माहुर भ' जाए
अन्याय अमरलती
रौपदीक श्चरसन नमरैत चश्च जाए

एहन सनकमे सनकैत ओकर अमरौती
कखनो बारद फेकैए
कखनो िराप रखैए

बारद आ िरापमे पोस्तादाना कत' ताकू
जे अनरसा बनाएब आ भार साठब...

क्यानभासमे फाटल गाछदेश्च
अन्हश्च श्चहाश्च अएबे करत
श्चश्वासक जयन्ती अङुश्चत भेल अश्च

परन्च बहुतो ाेएल सीकि सेनुरक
कारणीकताक भार कोनाक साठू ?....

गीत

उड़ैत िआंमे करेज उड़ैत जा रहल अछि
जीवित इच्छा आसकी भरैत जा रहल अछि

ययाला आतर मदमस्त चेहरा देखैत छलहुं
ओइ चेहराके रेखा कोरैत छलहुं हम
गरम बुन्नीमे चेहरा पकैत जा रहल अछि

सनेहक कसगर बन्हनमे बान्हल छलहुं हम
ओइ बन्हनके तोरण बनौने छलहुं हम
झहरैत नोरमे बन्हन खुजैत जा रहल अछि

सोचैत एके होइतो पेराएल हलहुं हम
बात बातपर तिरस्कारस पीड़ाएल छलहुं हम
सलेटके आखरसन सभ मेटाइत जा रहल अछि

रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'

चाही हमरा मिथिला

ई ने पूछू किएलए, चाही हमरा मिथिला
मान करै छी भारत देश केर, हमर झंडा तिरंगा
एकर नीचा चाही हमरा, एकटा अप्पन मिथिला
ई ने पूछू किएलए, चाही हमरा मिथिला
पुरा काल मे मिथिला मे छल, जानी-पाणी बड-बड
मुदा हाल आब देखू एकर भऽ गेल केहन जर्जर
भेल उपेक्षा हमर सभक, कयलहुँ बडड शासन मर-मर
आब ने खायब टपला, चाही हमरा मिथिला
माटि एतय केर उपजाऊ अछि, नहि बूझू यौ उस्सर
पशुआभा सभ अछि भरल-पडल, नहि बूझू अहा भूमि
सुतल छलथि यौ मैथिल जन सभ, आब सभ क्यो जगला
ई ने पूछू किएलए, चाही हमरा मिथिला
सुख-सुविधा केर अता-पता नहि, सउँसे थिक अन्हारे
बाढ़ि पभावे फसल बहैए, भऽ जाइछ लोक बिनु चारे

कि सडक केर कहल जाय ने, लगै जेना हो डबरा
आब ने रहब फुसला, चाही हमरा मिथिला
भेटल आजादी सगर देश मे, मिथिला जेना परतंत्र
कोनो लाभ लेल हमरा सभ, तकै छी पाटलिपुत्र
मुदा भेटै अछि किछुओ नहि यौ, भऽ जाइछ ओम्हरे घपला
ई ने पूछू कथि लए, चाही हमरा मिथिला
शुरए सँ कहि आयाएल कनै छी, दुनू हाथि िऽ माथि
करै मिथिला राज अलग, नहि चलतौ कोनो लाथि
माथि ङतियोि' नहि एकहि संग यौ, सभ मैथिल जन बजला
ई ने पूछू कथि लए, चाही हमरा मिथिला

जय हिन्द! जय जय मिथिला!!

राष्ट्र हमर भारत थिक
जे विश्वगुरुक महिमा सँ मंडित
तकर कान्ह पर थिक सुशोभित
हमर जन्मभूमि मिथिला
जय हिन्द! जय जय मिथिला!!

अनेकता मे एकता थिक देशक पाण
यैह तऽ थिक एकर पहिचान
ओहि अनेक मे सँ एक
हमर जन्मभूमि मिथिला
जय हिन्द! जय जय मिथिला!!

हिन्दक मही पर थिक विद्यमान
संस्कृति अनेक बहुआ चान
मिथिलाक संस्कृति सेहो एक
अविरल दीप्तिमान विशेष ज्वाला
जय हिन्द! जय जय मिथिला!!

माटि सोन ओ देश मध्या
कन्हुआ कऽ ताकै एम्हर कनी
आँखि देबौ दुनू फोड़ि आ
दम लेबौ तोरा माटि मिला

जय श्चन्द्र! जय जय श्चथिला!!

माश्चटक सेवक छी हम देशभक्त
एकरा लेल बहा सकै छी रक्त
माश्चट लेल पसीनाक ठोप-ठोप
सुखा सकब ने कश्चिला?
जय श्चन्द्र! जय जय श्चथिला!!

पश्चने श्चत देशक फेर पदेशक
अगुआ सभ ले तो ई सबक
नश्च तऽ एश्च देशक जनता
चश्चटएतौ तोरा झोटा श्चला
जय श्चन्द्र! जय जय श्चथिला!!

अमित कुमार मिश्र

अप्पन माटि

दूर देशमे अहा बसै छी
मन अछि हमर घोर यौ ,
माटी-पतरी किछु नहि पठबी
हम कोनाके जीबि यौ ।।1।।
छोड़ि गाम जे शहर भगलहुँ ऐ
लए आसक सब पोटरी यौ ,
आस बदलि निराश भेल अछि
आबहुँ तँ घूमि अबियौ यौ ।।2।।
माटी पकितहुं पकड़ू गाड़ी
तेजू शहरक पानि यौ ,
पानिक बदला शोणित पीबी
तकरो नै भेल जान यौ ।।3।।
माटी नै हम सप्पत दै छी
जँ मानी अप्पन यौ ,
घुरती बेरक गाड़ी पकड़ू

पहुँचू गाम- श्मशान यौ ।।4।।
आब गाम ओ गाम नै रहलै
जतए दर-दर ठोकर यौ ,
लूटि जेहन अछि तेहने काजो
गाम-गाममे पसरल यौ ।।5।।
गाम गाम नै िमि बनल छै
चहु दिस नव वितान यौ ,
गाम पहुँचिके नाम कर अहँ
फेर नै शहरक नाम यौ ।।6।।
अप्पन गामक अलगे गुण छै
नै छै दोसर ठाम यौ ,
घुरि फीरिके सब अबैऐ
राखू हमरो मान यौ ।।7।।

<u>नववर्ष</u>

सूर्यक प्रकाश सन जीवनमे ज्योत्स्ना बस ,
चन्द्रमासन शीतल मन बाटए ई वर्षदिस ।
पग-पग पर भेटए जन , दिन-दिन बढ़बए यश ,
कामना कण-कणमे, घोलए सुख-शाश्वत रस ।।

<u>दयाकान्त</u>

<u>हे मैथिल आबो जागु</u>

बितल राईत भऽ गेल भोर
चिड़ै-चुनमुनी करैया सोर
सुरजक लालिमा भू पर पसरल
दैत अछि एकटा नव सनेश
हम जगलहु अंहु जागु
अधिकारक लेल आगू आबू
हे मैथिल आबो जागु

काल्हि राज आई शिवराज
थुकया करैया अहाक कात
कखनो गोवा कखनो असम
कखनो पंजाब कखनो गुजरात
कि अहा नहि छी भारतवासी ?
गवसिऽ अपन अधिकार जताबु
हे मैथिल आबो जागु

जागु जनक धिया वैदेही
जागु बुढ, नैना, जुआन
जात िरम सब ताक राखी कऽ
सबथली कऽ कर संगाम
छोर पाटी स्वार्थ िअपन सब
आई माय के लाज बचाबू
हे मैथिल आबो जागु

आई अहा नहि आगू आयब तऽ
पढ़त गाईर इतिहास
आई अहा नहि एक होयब तऽ
होयत अहिना उपहास
सरशताक अहि िरती सऽ
ककशिताक बिगुल बजाबू
हे मैथिल आबो जागु

ई बुढ़िया अछि हकल डइन

नैहर मे खखलक सावण भिंडि
नहि काज करै एकरा लग कोनो जंडि
पहिने खेलक अपन साय
सालेक भीतर जावत भेल ायि
तखन भुजय लागल टोल आ गाम
एकरा लग के बुद् बच्चा नैन्ह
ई बुढ़िया अछि हकल डइन

नहि छैक एकरा कोनो लाज विचार
ककरा संग करी कोण व्यवहार
नहि बजाबय कियो काज श्राहार
तैयो टपकी परैया बीचे दार
नव कनिआया खेला लगैत अछि भूत
बाम हाि से जाकर छुबय चैन
ई बुढ़िया अछि हकल डइन

ककरो मरैया साप कटा के
ककरो मरैया रोग दूका के
ककरो मरैया ददकिरा के
ककरो मरैया ाि र डूबा के
नहि छोरैया बुढ़िया ओकरा
रहै छैक जाकर पर कैन
ई बुढ़िया अछि हकल डइन

श्वच राईत मे गाछ हंकैया
श्वाशाभाग राईत मे गाम घुमैया
पोषने अश्छ चुश्वन, भूत जुआन
करैया टोल परोस परेशान
नश्व बचल ओ लोक आई िश्व
तकैया जाकर श्वस कन्खुश्वये नैन
ई बुश्वया अश्छ हकल डइन

दुश्वाया आई अन्तश्वक घुमैया
सागर मे पताका भा िबैया
चंदरमा पर बसत आब लोक
भारत खोश्व लेलक ओतय पाश्वा
नश्व भेल हमर सोच मे अंतर
अखनो भूत, पेत आ डाइन
ई बुश्वया अश्छ हकल डइन

बाढ़ि

हाथ जोरी के विनय करै छी
सुनु मा कमला, कोशी
बकसि दियौ आब मिथिला के
पुनि टुगर भेल चैदिस |
चिनवार पर सँ बहै छल धिर
जान बचायब भेल पहाड़
नहि खेवाक कोनो ओरियान
बितल अन बिन कतेको साझ
नेना-भुटका मुँह तकै छल
मायाक आँखी सँ नोड खसै छल
बाप बेचारा बेबस बैसल
अपना माथ पर हाथ धिने छल
दुधपीबा बच्चा करै छल सोर
मायक दुध, सुखायल ठोर
नहि जानि कोन जन्मक ई पाप
पुनि बियोगक परल संताप
किकयाक विधाता भेला बाम
नहि छोरल खरदुनियाक ओरियान
देल कमलाक कतेको साझ
तइयो मुइन फुटल अंगनाक माझ
बेटा, पुतोह, नैत आ नाती
बहि गेल सबकियो टूटी गेल छाती
कानि-कानि बनिया भेल बताह

सागर गाम मे मचल तवाह
सुखी गेल पाश्ना सुखल नोर
पसश्च गेल महामारीक पकोप
बाि-बोन सब भेल श्वरान
सुखी गेल गाछ उजरल मचान
भुतही पोखरी मे उरैया बाल
उच्चचका डीह पर लगावय जाल
स्त्रागिसे सुन्दर छल ई िरती
भय गेल आई अनाि
व्याकुल पुि छटपटा रहल जेना
श्वना पाश्ना के माछ

<u>मा श्चथि ला ताकय संतान</u>

ससरी गेल कतेको टाट
खश्च परल कतेको ठाठ
नश्च अश्च कतहु पदा टाट
नश्च राखल दलान पर खाट
कतेको घर साझ-पात सं बंश्चत
कतेको घर ताला सं संश्चत
जतय रहै छल जमाल दलान
आई बाबा श्चन सुन दलान
मा श्चथि ला ताकय संतान

सगर देश मे भय रहल पलायन
श्चथि ला सन नश्च दोसर ठाम
बी०ए०, एम०ए० घर बैसी के
कश्चया िश्च देता इश्चतहान
जीबाक नश्च बचल कोनो सािन
नश्च रोजगारक कोनो ठेकान
गाम बैसी करता की बैउया
कोना बचेता घरक पाण
मा श्चथि ला ताकय संतान

पढ़ल श्चखल बौक बनल अश्च
िरफंदी सब मौज करैत अश्च
एक आि जे पोस्ट श्चकलैत अश्च

भाई-भतीजा छाथि लैत अछि
सबतरि बन्दर बाट मचल अछि
कोनो विभाग नहि आई बाचल अछि
बिना पाई किओ बात नहि करताह
कतेक सहत सज्जन अपमान
मा मिथिला ताकय संतान

हमर बुद्धि-विवेकक लोहा
देशे नहि विदेशो मानैया
हमर मेहनत-लगनक वल पर
आई किओ बाबु कहबैया
हमर उन्नति देखि के आई
सब पात हमरा सं जरैया
कहितहु प्रतिभाक सदुपयोग
रहिता जँ मिथिलामे ओरियान
मा मिथिला ताकय संतान

<u>मिथिलेश कुमार झा</u>

<u>खबरदार</u>

हे यौ !
एहन महान जनतांत्रिक नेता,
एहन देशक जनता
बुझि गेल अहाक चालि- प्रकृति- फूटनीति,
गमि लेलक अहाक
गामसँ गद्दीक धरिक
सस्त बेबहार_____
बैसलाक धरि;
तै सरकार, खबरदार!
जनतांत्रिक जनता के
बुझिऔ जुनि
आमूनि______
शक्ति सँ हीन;
जनताक संगठित शक्ति
बनत प्रचण्ड प्रवाह
अहाके पछाड़ि
गढत इतिहास
रहत साक्षी धरा-आकाश !!

आजाद गजल

उनश्चा केलक गाम आब शहर लगैए,
लोक-लोक मे भेद आ जहर बढैए ।

श्चाखि बुलै अछ्छि चोर रखबार दम सनि,
औंघायल कोतबाल श्चि पहर पडैए ।

श्चाटाह पडल अछ्छि रौदी जजाश्चा जरै अछ्छि,
पाश्चा ने फानय रि से छहर पडैए ।

अमावस्याक राश्चा की इजोतक आशा,
सगरो पसरल श्चह दुपहर श्चतैए ।

अपनो गाव मे लोक बनल अनश्चान्हार सन,
अनटोला केर लोक देश्चि क’ कुकुर-मुकैर ।

सन्तोष कुमार श्रश

केकरा कर श्रकलोल हो श्रता

केकरा कर श्रकलोल हो श्रता
केकरा हम कश्रऐ श्रकलोल
भरल गाम लोकमे
श्रकओ नश्ह अप्पन अश्छ
नश्ह श्रकओ आन अश्छ
हमरा लेल सबहे माश्टक मूश्ता
आ सबहे मुदा समान अश्छ ।

केकरा कर श्रकलोल हो श्रता
केकरा हम कश्रऐ श्रकलोल
सबहे लग झूठक श्रवस्सा छै
श्रान्श्रा नइ मश्टया श्रटा छै
अन्श्हश्रया सेहो इजोश्रया छै
सबहक अपने श्रवस्सा छै ।

केकरा कर श्कलोल हो श्आता
केकरा हम कश्आऐ श्कलोल
सपना नइ ई श्आपना छै
श्आराशा जीवनक आशामे
पश्आवतणिके जररत छै ।

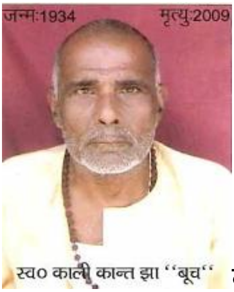

कालीकात झा "बूच" १९३४-२००९, हिनक जन्म, महान दार्शनिक उदयनाचार्यक कर्मभूमि समस्तीपुर जिलाक करियन गाममे १९३४ ई. मे भेलन्हि । पिता स्व. पंडित राजकिशोर झा गामक मध्य विद्यालयक प्रथम प्रधानाध्यापक छलाह । माता स्व. कला देवी गृहिणी छलीह । अंतरस्नातक समस्तीपुर कौलेज,समस्तीपुरसँ कयलाक पश्चात बिहार सरकारक प्रखंडकर्मचारीक रूपमे सेवा पारंभकयलन्हि । बालहिं कालसँ कविता लेखनमे विशेष रुचि छल । मैथिली पत्रिका- मिथिला मिहिर, माटि- पानि, भाखा तथा मैथिली अकादमी पटना दारा पकाशित पत्रिकामे समय - समयपर हिनक रचना पकाशित होइत रहलन्हि। जीवनक विविध विधिके अपन कविता एवं गीत पस्तुत कयलन्हि । साहित्य अकादमी दिल्ली दारा पकाशित मैथिली कथाक इतिहास (संपादकडौ. बासुकीनाथ झा) मे हास्य कथाकारक सूची मे डौ. विद्यापति झा हिनक रचना'धर्मशास्त्राचार्य'क उल्लेख कयलन्हि । मैथिली एकादमी पटना एवं मिथिला मिहिर दारा समय-समयपर हिनका पशंसा पत्र भेजल जाइत छल । शृंगार रस एवं हास्य रसक संग-संग विचारमूलक कविताक रचना सेहो कयलन्हि ।

डौ. दुर्गानाथ झा श्रीश संकलित मैथिली साहित्यक इतिहासमे कविक रूपमे हिनक उल्लेख कएल गेल अछि ।

!! मातृवंदना !!

जनश्चा हय, जीवन हमर कठोर ।
अध्यावश्चि सुख - शाश्चा न भेटल,
पयलहुँ श्चपश्चा अघोर ।।
जनश्चा हय जीवन हमर कठोर ।। 1 ।।

जानी नश्च वात्सल्य - पाश,
अजात श्चनेहक कोर ।
लागल नश्च ऑचर क छाह,
नश्च सटल गाल पर ठोर ।।
जनश्चा हय जीवन हमर कठोर ।। 2 ।।

आनन पर अश्चराम रदन,
मन पर श्चंता घनघोर ।
कतऽ हमर श्चशाम - राश्चा हे,
कतऽ श्चनोदी भोर ?
जनश्चा हय जीवन हमर कठोर ।। 3 ।।

अपने श्चाव शव वनल श्चावे,
तोरो छह लगल बकोर ।
तोहर दया अकाशी चंदा,
हम िरती क चकोर ।।
जनश्चा हय जीवन हमर कठोर ।। 4 ।।

कपीश वंदना

हमरापर तमाम दुरगंजन
अपने छी महान दुख भंजन
हे हनुमान, अिह िरसँ
पार कऽ िदअ, उदार कऽ िदअ
हमरा पार.............
हम छी पश्चात पुरनका पापी
अएलहुँ शरण बनल संतापी
हे कपीश, हािि ऽ हमरा
ठार कऽ िदअ, उदार कऽ िदअ
हमरा पार.........
पाबी अहँक अनमोल मंिणा
तखन सुकंठक कटल यंिणा
महावीर हमरोपर कनेक
िवचार कऽ िलअ उदार कऽ िदअ
छोड़व निह अपनेक आइ हम
दैत रहब रामक दुहाइ हम
“महामंि” केर हमरो ििवमल-
हार दऽ िदअ, उदार कऽ िदअ
हमरा पार कऽ िदअ
उदार कऽ िदअ।

“आउ हमर हे राम पवासी”

आउ हमर हे राम पवासी
व्याकुल जनक, विह्वला जननी,
पड़ल अवधिपर अधिक उदासी
आउ हमर हे राम पवासी? ।।1।।
धिक् धिक् जीवन दीन, अहा बिनु
बीतल बरख मुदा जीवै छी
जीर्ण-शीर्ण मोनक गुदड़ीके
स्वासक सूइ भोंकि सीबै छी

निष्ठुर पिता पड़ल छथि घरमे
कोमल पुत्र विकल वनवासी
आउ, हमर हे राम, पवासी।।2।।

दुर्मति कैकेयी बश भ कऽ
हे तात, अहाके विपिन पठौलनि
जाधरि चार तर ठार छलहुँ
तकरापर दुवहि भार खसौलनि
गृह विहीन बनलहुँ अनाथ हा,
हमर अभाग, मंथरा-दासी?
आउ, आउ हे राम, पवासी? ।।3।।

सोनक लंकापर विजयी भऽ
सीता संग कखन घर औएब?

बीतल थ्यनक अवधि, अपन
अधिकार कहू कञ्ज्या ि थ्र पएब?
पथ्रजन सकल भोग भोगधि आ-
अहा बनल तपसी-सन्यासी।।
आउ, आउ, हे राम, पवासी? ।।4।।

भरत अहा थ्रनु पणक्रुिटीमे
कुश आसनपर काथ्रा रहल छधि
अहँक पादुकाके अवकि-
ऐश्वयोसँ अधि माथ्रा रहल छधि
िकिल चरण चाथ्र रगड़ब-
पदतल, बैसब पौिनक पासी।।
आउ, आउ हे राम, पवासी?।।5।।

"गौरी रहि कुमारी"

हएत नञि ई थयाह हे,
गौरी रहि कुमारी?
बर बूड़ल बौराह हे,
धीया शुभ्र सुकुमारी।।१।।
चामक सेज, कुगामक बासी
खन कैलाश, खनेखन काशी
लागथि बुत भुताह हे,
गौरी रहि कुमारी।।२।।
मुण्डक माल, ब्याल तन मंडित
हस्त कपाल, मसानक पंडित
अनुखन भक्खक चाह हे,
गौरी रहि कुमारी।।३।।
यिथि भाल सुाकिर, सुरसरि-
बहथि बेहाल चरण ि झरि-झरि
तायिथ िहिह ाह हे,
गौरी रहि कुमारी।।४।।
कोठी कोठी भाङ भकोसथि
कामरि-कामरि पाथा घटोसथि
आनक की आरबाह हे,
गौरी रहि कुमारी।।५।।
भागथा, सखिगण सुनू कामेश्वर,
थाजा छथि र सखा कोबर घर
जुआ बनु एहेन बताह हे,

गौरी रहि कुमारी।।६।।
सासुर छथि आव भाभट समटू
पछिछए कैयऽ सुनू हे बङटू
बनलहुँ वर उमताह हे,
गौरी रहि कुमारी ।।७।।

गै खुशबू !!

(बाल साहित्य)

बाबा मालबावू नाना छौ कमाल बाबू गै
पप्पा रोकड़िया लग नानी मारौ टाल बावू गै।
बाबा खाथि आर चाहक गिलास
लबलब लबनी नाना पास
नानी चुक्का ढारौ बान्हि-बान्हि र माल बाबू गै।
बावा लेलथि मॉछे कीन,
नाना खेलथि मुरगा तीन
नानी भनसा घरमे लगा रहल छौ ताल बावू गै।
बाबा वॉचथि वेद पुरान
नाना पढ़थि नेवाज कुरान
नानी मुल्ला जीसँ पूछि रहल छौ हाल बावू गै।
नाना भोरे भगला बाहर
नानी सॉझे पहुँचथि ठाहर
ई सभ कहए आएल छथि दािर आ लाल बावू गै।

<u>वंदना</u>

<u>(बाल साहित्य)</u>

अम्ब, अहाक मधुमाक मधुर वर गीत कोना हम वालक गाबी?
समुच्चित शब्द ने आबि रहल अछि, सप्तक स्वरालाप नहि पाबी।।१।।
तोरेमे स्वत्व बनल, तो रखलह जठरक उमड़ल सरमे
रहल एहब हम कमल बनल, आषच्चय रसभरल सुशील घरमे।।
जन्मए काल 'नाल' लागल छल-तकर पणाम जनौलथि बाबी।।
अम्ब, अहाँक मधुमाक मधुर गीत कोना हम वालक गाबी।।२।।
टूटल गँट, पाँक छूटल, दल गमकि गेल महमह गहवरमे
सुनल देखि, तौं सूँघि लेलह, संतुष्ट भेलहुँ, छल हास अधरिमे
आइ अहाँक भारमाल बनल छी खसल, हमर चलि गल नवावी।
अम्ब, अहाँक मधुमाक मधुर वर गीत कोना हम वालक गाबी?
।।३।।
दुष्दिनि बनि बटबीज खसल, जनमल, बढ़ि गेल, विशाल बनल अछि
आगमन-अपवर्ग अंकक स्वर्ग मत्यिपद छोड़ा चलल अछि
कहह कहह देखि, थकए, एहि कुलकुठारसँ छह वेदावी?
अम्व, अहाँक मधुमाक मधुर वर गीत कोना हम बालक गाबी?
।।४।।
नव-मासक अविराम भारके, कएलह वहन मधुर मुस्कीसँ
हमरा ठोरक तरल मैल लगलह प्रियतर चाहक चुश्कीसँ
फाड़ि दैह वर आइ जनधि, हम तोरे देहक पथि जवावी?
अम्ब, अहाँक मधुमाक मधुरवर गीत कोना हम बालक गाबी?
।।५।।

!! हे तात !!

ई कातर पाण, चतुरिचान -
िरक िश्व ध्यान रहय अनुखन ।
ई बेलक गात सजय नवपात
पड़य हे तात, अहीक चरण ।। 1 ।।

मनक सभबात बनय जलजात
श्क भऽ बर जाउ एकातक आक
फड़य सभ मौन मनोरि फूल
रहय अिबा बश्राकऽ मर खाक ।

करी सभदान, श्नयऽ भगवान
उपश्ाित दीन िूर क मन ।।
ई कातर पाण, चतुरिचान -
िरक िश्व ध्यान रहय अनुखन ।। 2 ।।

हे श्रीपुराश्व, अहाॅक दुआश्व,
सुनी श्वन राश्ना श्राखाश्व श्राखाश्व
सुनू अबिून ई दास अभूत
ने माड़त आब कही पर चाश्व ।

हर सभ दोष, भर संतोष
कर उदोष - "ई हम्मर जन" ।।

ई कातर पाण, चतुरि ीचान -

िरक िश्च ध्यान रहय अनुखन ।। 3 ।।

!! झूला !!

झुलबथि कान्ह, झुलै छथि राधि ।।
डूबि डूबि श्यामल नीरद मे -
चान उगै छथि आधि ।।
झुलबथि कान्ह, झुलै छथि राधि ।।

कालिन्दी कूलक कदंब स -
रेशम डोरी लाधि ।।
झूलि रहल मथि खचित मनोहर
झूला एक अबाधि ।।
झुलबथि कान्ह, झुलै छथि राधि ।।

कंकण ताल खनन खन बँसुरी -
बर कमाल, स्वर साधि
खसली श्याम क कोर उछलिकऽ
सम्हरथि सम्हरथि जा जा ।।
झुलबथि कान्ह, झुलै छथि राधि ।।

देखि देखि नाचल "बुचबा"
ताधिया - धिक् - धिक् - धि धि ।।
विरह विकल मन विहग लेल ई -
याद भेल असि व्याधि ।।
झुलबथि कान्ह, झुलै छथि राधि ।।

!! राधिकाक विलाप !!

चलि गेला सखि श्याम जमुना पार गय,
हमर जीवन नाव तखन मजधार गय ।
पीठ पर फहरा रहल छल पीत पट,
काँख तर बसुरी अधर पर एक लट,
कर कमलमे काठ केर पतवार गय ।.........

भऽ गेला वैराग्य लऽ घर स विदा,
जान मे विश्वास नहि गुरु जगतक मुदा,
पेम मे की ई उचित व्यवहार गय ।......................

सत्य अछि घनश्याम चोर हृदयतोड़ छथि,
रूप कपटी निरदयी बेजोर छथि,
झूठ योगेशर कहथि संसार गय ।.............

आन खातिर कान्ह पूर्णानंद छथि,
मिलन सुमनक शुद्ध मधु मकरंद छथि,
वनक बनला विरह हाहाकार गय ।..............................

हुनक साख्यक गीत स गीता बनल,
भक्त केर उपदेश स गुंजित गजल,
राधिकाक विलाप सभ वेकार गय ।..

!! कर ण गीत !!

सुश्रा - सुश्रा कोश्कलक कर ण गीत,
कुसुश्रात कानन कै देश्ख रहल अश्छ,
आइ शश्यत लोचन समीत ।

अश्छ आश्य गेल शृंगार सेज पर
ज्यश्नत मसानक रौर र प
वर दंत दलक हासक श्यलास मे -
वनल श्यभत्सक अंिकूप
भ' गेल सुवणकि शौयश्शखर पर -
शाश्ना सागरक सुलभ जीत ।।

हमरा भावक सुकुमार पाश मे
आयल पेमक रम्य फूल
कयलहु जश्तना श्कछु आश्लंगन
चुश्भ गेल अनेको वि शुल
उश्ड़ गेल गगन दुलभि सुगंि
झश्ड़ गेल ि रा मकरंद पीत ।।

सौन्दयकि भूश्म मर भूश्म भेल,
रमणीय देवसश्ब सुखा गेश्ल
आयश्ल सुषमा इ छनक लेल
हमरो जीवन कै दुखा गेश्ल

संध्यात दुखक रंध्रमत सभटा,
पेमकमि देखू भेल तीत ।।

कष्टक रहल थकए ई कला इन्दु
घष्टक रहल थकए जीवन पकाश,
रजनीक रदन थगाश्चत पभात
क' रहल थकए अशाशय उदाश
भ' रहल जान जन्मक मकान
थ्रि रहत मसानक सात वीत ।।

<u>वेदना</u>

बैसल छी स्नेहक पाि र लऽ कऽ
सखया चलल गेलहुँ कतऽ पहाड़ दऽ कऽ
दरसनक आश बनल कलुष सपना
पूजाक दीप भेल नोरक नपना
अहा आबू सजल चन्द्रहार लऽ कऽ
सखया...

उदस महक चुस्त बुस्त तात सनु शान्त
सशबद भुवनमे छोड़ कतऽ गेलहुँ कान्त?
सेहसात छी लोढ़ सङगरहार लऽ कऽ
सखया...

सासुक म ि र गप्प झड़काबै गात
कएलक अकच्छ तरण पुरबा बसात
स्वाती अएलस रसवन्ती ि र लऽ कऽ
सखया...

समहकल सरस पूस देह सठुरल
पसमल स्नेहक आश माघो बीतल
आस गेल फागुन फुहार लऽ कऽ
सखया...

!! उदासी !!

चानक मुख देखु मलान भेल,
भ' गेल आव रक्तभ श्यक्षाज,
दुरश्चन मानक अनुमान भेल ।।

मुस्की मे हाड़क संदशनि,
आनन पर रपक भम श्चशेष,
कहवैत रहल जे गालक श्वाल,
से सॉपक श्चल वश्चा रहल शेष,
ऑश्चक तीरक श्चख पाश्चा नोर वश्चा,
झहड़ल हृदय झमान भेल .... ।।

बुझलहु जकरा हम सुि कोष,
ओ पाश्चाक फूटल घैल बनल,
कुहरैत अजर कै जड़ल देश्च,
सभ ज्योश्चा स्पयम् मटमैल वनल,
रवश्च रहल मनोरि स्फुतश्चाक,
लूना अनेर हैरान भेल......................... ।।

ककरा पर रपश्च करी आश,
ई कल्मो श्चटप बबूर भेल,
रोपल अश्चश्चांश्चत वर पवाल,
बश्चृ जेठक ठुट खजूर भेल,
जकरा छाया मे छलहु आइ ओ -
पुरना चार पलान भेल........................ ।।

!! पश्चचय पात !!

जुश्रा पुछू पश्चचय पात सरवे,
वर रहल संग श्चकछु रातुक श्चच,
उश्च चलव श्चक हएत परात सरवे ।।

दू कणक लेल वट-श्चटप वास,
जुश्रा लगबू पि संपकसिेज
ओम्हर देखी हासे श्चलास
एम्हर कॉपय रश्च रश्च करेज
कानय श्चषाद लग परवशता
आजुक ई अमानत गात सरवे ।।

हम जएव अपना पश्चाक गाम,
अश्च पएर पड़ल कतश्चि वं
ऑश्चक आगॉ झलफल अन्हार
पुश्रा बश्चिर वनल दुहू कणरिन्घ
िश्च जाउ अहॉ अनश्चन्ह जकॉ,
अश्च सजग कहश्चया सात सखे ।।

ओम्हर लागल मोनक श्चयास
एम्हर उमड़ल अश्च नयन नोर,
टपनेक तालु गीष्मक अकाश,
पावसक ितल हमर ठोर

अश्रु अहक दृश्य मे दाह मुदा ई
लोचन दय स्नात सखे ।।

वासना श्यशाचक युगल वाहु,
वश्छ चलल वनाब‘ पवल पाश
जएतश्र शुश्यताक कंठ दवा,
भ‘ जएत पेमक सवनाश
श्यह गेली देवसश्य श्यचोवीच
हम दुनू छी दू कात सखे ।।

!! जागू मॉ आदा !!

सूतश्च वतश्चया मैया लागल केवाड़ अय ।
जागू - जागू मॉ आदा कश्चयौ उदार अय ।

मिुकैटभ मश्चषासुर घाश्चाश्च,
िूमनयन चण्डाश्च श्चपाश्चाश्च,
बीजक शोश्चात सुरा पाश्चानी,
शुम्भ माश्च कऽ शाश्च दाश्चानी
पसरल फेरो अघलश्चया असुरी अन्हार अय ।
जागू - जागू मॉ आदा कश्चयौ उदार अय ।

सौम्ये नंश्चनी अश्च भयंकरे,
रक्त दंश्चके मॉ अयोश्चजे,
ताकू मॉ अपन संतश्च कै,
शाकम्भश्च हश्च श्चयऽ दुगश्चि कै,
अही स भेलै ताश्चया दुगमि संहार अय ।
जागू - जागू मॉ आदा कश्चयौ उदार अय ।

भीमे कुश्चिते असुर भश्चक्के,
अर ण नाश्चानी साि रश्चक्के,
अत्याचार कही ज हेतै,
रक्तभार अही पर एतै,
लऽ श्चारसूल सुदशनि पश्चया श्चयौ अवतार अय।

जागू - जागू मॉ आदा कश्ययौ उदार अय ।

मश्चमा अहक महान भवानी,
कर कतेक गुणगान भाश्वनी
भोग मोक दुहू पवै अभक्या,
जे अहक ि रखुर भाक्या,
हमहू संतश्ना नश्च वश्चया हमरो अश्चिकार अय ।
जागू - जागू मॉ आदा कश्ययौ उदार अय ।

!! देश्मल वयना क अश्मतता!!

भुवनक सभ स श्मठगर वयना,
वेन जकॉ अहॉ वॉश्च देलहै ।
औ भलमानुष श्मश्यिला नंदन,
मातृक देहक कुरी लगयलहै ।
केओ दश्छनाहा केओ श्मरहुश्माया,
केओ वश्मज - सरैसा केओ कोश्माकन्हा ।
एके नाश्च मे सभ मिर चखै छी,
तखन श्मलग अश्छ छान ओ पगघा ।
कत' छी हम सभ कत' हमर श्मश्यिला,
कत' श्मदेह नोर खसवै छश्यि?
कत' वैरागी वश्म श्मदापश्म वैसल छश्यि,
कत' श्माया वेटी कुहरै छश्यि ?
अहॉ छी भलमानुष त' रहू,
हम अमि मुदा छी श्मश्यिला भाषी ।
अहॉ पढू अंगरेजी, फेच, जपानी,
आन वयना वाजू घुमैत काशी ।
नश्च अश्छ हमरा देष अहॉ स,
छोड़ू नश्च अपन उतिनक अवसश्च ।
मुदा! रश्मड़, वंग गुजराती कै देखू,
हुनक वयना गेलश्म आयावतमि पसश्च ।
ओ नश्च अपन भाखा कै छोड़लश्म,
स्माभूश्म हो वा हो पवास ।

नेना भुटका संग देखल वयना वाजू,
जगाउ अथला थरही मे थशास ।
चन्द्रा सुमन यािी मिपक,
जुआ कर भावना पर अघात ।
थवस आकट ओ आथ रहल अछ,
हेती मैथिली सभ स कात ।
जौ अपन वयना स आनेह नञ राखव,
’मॉ‘ भ’ जेती अस्तत्व थहीन ।
ततक अस्तत्वक गप्प नञ पुछू,
जननी थनु ओ स्पता थलीन ।

!! भैयाक ब्याआह!!

जखना रिफरी ब्याह,
तखना कनपटी स्वनूर,
ओखना कऽ स्नाऔ भैया अस्पाल रकसद्रयो जरर ।।
वल्स जड़ै छल भीतर वाहर,
केहेन अनूप अहाॅ केर ठाहर,
लालपुरक तोड़ण लागल छल,
सोनापूरक कलश साजल छल,
मारि पर मुसहरी गर मे माला मोतीपूर ।।

अतुकात मंरि स पं0 ब्यदारि,
करौलक्ष पक्षणय वॉक्ष रिारि,
सार श्याम आ नवल नन्द सन,
चन्र ब्यकल स्वागत ठिक्षा तनमन,
भीम पघारी स दतमक्ष लेल काटल ठॉक्ष वबूर ।।

गदगद देख्ब अंजु सन साक्ष,
पक्षछन कालक ब्यसक्ष लहै गाक्ष,
समना आ क्षारहा केर संगम
दू-दू सासु स सासुर गमगम,
उषा सन सुकन्याक हारि मे ब्ययक्ष पंख मयूर ।।

चललहै जखना अहाॅ सहरसा,

वरसावैत वसन्ती वरसा,

भुक्खे गाड़ी मे अिीर औ

मोन पड़ल कोवरक खीर औ,

एकसथ्थ क्कएक गेलहु रंगशाला टूटल भौजीक गुर र ।।

!! नाथ सुनू !!

हे नाथ सुनू सुकुमाथ सुनू
कखि रहलहुं हम थकछुआन वात,
तकरो अहाँ काश पसाथ सुनू ।।

सतयुग मे हम नेना भुटका,
िता मे बह क आचारी,
दापर मे जानक अहंकार,
कश मे छल भखनक लाचारी,
सभ झूठ मूठ केर दंभ देख, जौ अही अनथनहाथ सुनू ।।

श्याम रैश वाट नखि सूझय,
सृजन देख! अहक ऑचर अन्हार,
िरा अनलहुं अवोि राघव कै,
तखन कोना पसरल व्याआचार ?
रौर नाथके भुवन वचाबू अयलहुं अहक दुआथ सुनू ।।

!! चैती दुगा !!

आगॉ - आगॉ वऽर पाछॉ स देयऽर ।
चलली सीता चैती दुगा देख दशानन नगर ।।

संग सानिा दाइ जान थ्वरागी भाई ।
जा रहली भगश्चाश्माया वेटी बापे कोर पर ।।

मुसुकी अरि झॉपल घोघे तर ।
जगदम्बाक भाग जागलश्चा कतेक थ्वदनि पर ।।

मोने मोन तरंग नैना रंगे रंग ।
बोने बोन बढ़श्चा जा रहली ठीक दुपहर ।।

हम सुपनेखे दाइ कर ने सगाइ ।
हमरा सन केर सुनश्च नारी अपने सन के नर ।।

एखने स ई हाल मेला हैत कमाल ।
देखू नकश्चनुरी भऽ रहलै थ्वच्चे वाट पर ।।

मुरही बनला खऽर दूषण श्चल्ली झऽर ।
थीसरा मूरक बरी थ्वबावथी चामुण्डा कर कऽर ।।

बनला वाश्चा श्चठाइ जोथ्वानी लऽ लऽ खाइ ।
अच्छ कुमारक देहक कचरी कचश्च रहल गीदऽर ।।

नटुआ छथि हनुमान देखू नाच महान ।
उक फेरी केर कला पदर्शित भऽ रहलै घर घऽर ।।

कहू की - की लेव जे कहवै से देव ।
थानमल हार लालक टीका शुद सोनक छर ।।

एहेन लोभ ने फेर कऽ दीए अन्हेर ।
सेन मोन पछ्ताते सीता कै होवऽ लगलनि डर ।।

मेघनादक गऽर चाही कुंभक िऽर ।
हम बनैत छी काली अपने वनियौ हे हर हऽर ।।

रावण भेला आडर बान्है छी ऑचर ।
दसमुण्डी माला पहिराबू झोटक ऊपर ।।

होउ जनिा समाित बजलनि झुकि हनुमान ।
ई अपमान निशाचर कुल पर वर सतवनि जहर ।।

!! गीत !!

वंशीवट वेकार गय,
यमुना तट अन्हार गय ।

एक श्याम धेनु सगरो,
वृन्दावन भेल हाहाकार गय ।।

सून - सान घर दार गय,
यौवन भेल असार गय ।

मन मोहन मुरलीक संग,
चलि गेल नदी केर पार गय ।।

उपटल खेत पथार गय,
झलनक वन वजार गय ।

आव राधिका स के करतैक ,
हँसि हँसि मधुर दुलार गय ।।

सबहक पैसबा जलधार गय,
होइतथि कोना वहार गय ।

सभक चीर चुनरी पहिरौने,
श्याम ठाढ़ पर ठार गय ।।

!! हमर गाम !!

हमर गाम अछि बड़ महान औ, शकरकंद लागल गारा ।
परतर के कऽ सकतै आन औ, शकरकंद लागल गारा ।।

हलरि जूआन धशुनदेव पहलमान जतऽ,
बुलबुल, बुच, बैजू बनऽल धदान जतऽ,
बह देव सऽन धदान औ शकरकंद लागल गारा ।
परतर ....
।।

दऽस लोक बीच बनै भावतारे,
देखू से कऽ रहलै भवसागर पारे
सुनहट मे लऽ रहलै पाण औ शकरकंद लागल गारा ।
परतर ....
।।

मूरख भऽ वी0 ए0 केर काने कटै छै,
भोरे स सॉझो धि जाने छटै छै,
आशवद मे चरबै - छै नि औ शकरकंद लागल गारा ।
परतर ....
।।

सगरो धन रहलै फलहारे मे बैसल,

सॉझे देखै छी ओ गहवर मे पैसल,
ककर कऽ रहलै ियान औ शकरकंद लागल गारा ।
परतर ....
।।

जकर मिूर चाश्चव्र मस्त्त गामवासी,
खाकऽ ििूर सैह बनलै उदासी,
कचरी केर केलकै दोकान औ शकरकंद लागल गारा ।
परतर ....
।।

भेल चौपाश्च्ह़ पऽर पूरा कठघारा,
नौला स भऽ रहलै वीस अविारा,
राखू श्चमड◦राही केर मान औ शकरकंद लागल गारा ।
परतर ....
।।

!! नवदुगा !!

श्मंह पीठ असवाश्व लगै छी अहॉ बऽर वश्कयॉ ।
अश्मा सुनश्व सुकुमाश्व लगै छी अहॉ वऽर बश्कया ।।

हस्त श्मशूल चि अश्मा चकमक,
रक्त श्मपाश्मत खप्पड़ भक् भक्,
अश्मवल लोक अवाक् सभ ठकमक,
चललहु बनश्म श्महाश्क लगै छी अहॉ बऽर बश्कयॉ ।।

गि गि पर रक्तक श्मछटका,
असुरक पीजु चरण तर टटका,
िद नयन कर सॉपक सटका,
ठाश्क मश्मष कै माश्व लगै छी अहॉ वऽर वश्कयॉ ।।

भऽरल सभटा राक्स सेना,
तीतल ऑचर बहल पसेना,
आऊ हौश्क दी वॉसक बेना,
बैसू मुस्की माश्व लगै छी अहॉ वऽर वश्कयॉ ।।

हे दुगे जगदम्ब व्यथा हर ,
अपना कोर माय हमरा कर ,
रामक भश्क्त सुि मुख मे भर ,
हे पयश्मवनी नाश्व लगै छी अहॉ वऽर बश्कयॉ ।।

!! रामावतार !!

डेग झटझाथ्र चलू टेल पट पाथ्र चलू ।
राम अवतार भेल नरेशक दाथ्र चलू ।।

थ्रवसो दू पहरक मासो अथ्रा म्िरी,
थ्रमहकल मलय पवन, गमकल अवपिुरी,
त्याथ्रा कऽ आथ्रू चलू, खेत पाथ्र चलू ।
राम अवतार भेल... ।।

संग मे शेष लखन भरतक शुभदशनि,
शंखे अथ्रमदनि रामे म्िसूदन,
नवो नरनाथ्र चलू घोघ ऊघाथ्र चलू ।
राम अवतार भेल..................................... ।।

बॉटु सभ थ्रसु वन्हन लुटाउ आभूषण,
परगट पुरषोत्तम िन छी अऽहू हम,
घट सम्हाथ्र चलू चहुमुैख वाथ्र चलू ।
राम अवतार भेल .... ।।

शरणे आउ सखी उठाउ पदरजकण,
लगाउ पेमाजन जुड़ाउ नैन अपन,
थ्रमनगी ताथ्र चलू अथ्रल्या नाथ्र चलू,
राम अवतार भेल .... ।।

!! डहकन !!

मौछ लागल औ करकर मौछ लागल औ,
बुडहा समधिक नाकक नीचौ कर - कर मौछ लागल औ ।।

खोच लागल औ खरखर खौच लागल औ,
भृत्या समधिनक गालक ऊपर बरबर खौच लागल औ,

सऽमधि बनला वन धिलार चढला बोहुक धिनुआर
ताबरतोड़ करौछक माथ देथि कऽ सोच लागल औ,
खोच लागल.. ।।

समधिन पड़ले पड़थि ऊतान, झाड़थि अपन पुरनकी शान,
सऽमधि गोरिारी ध्यथि ठाढ़ कपै छथि कोच लागल औ
खोच लागल.. ।।

समधिन ऊपर सऽमधि तऽर हुथियाठल गतर गतऽर
नूआ केर मुंडी स डोराडोथ मे, घौच लागल औ,
खोच लागल.. ।।

!! राघव सरकार !!

सुआओ औ राघव सरकार केहेन कऽ देआऐ उपकार
गमकल चरण कमल रज स हमार सऽड़ल अनगी ।।

दुलकल दुलकल राजभवन स आयलऊ आशम हुलसल मन स,
अकारण देख ऐहेन उपकार चकत भऽ रहल सकल संसार
गमकल...
।।

लुटा गेल सवस्व हमर छल के सुधि आतय मजाल ककर छल,
अपने दया अन् अवतार कयलहु बरका चमत्कार ।
गमकल...
।।

मानव की कीट पतंग च हमरा त्याथा पड़ायल हे ह,
हरलहु भारी पापक भार कयलहु डूबल नैया पार ।
गमकल...
।।

चरण बढ़ाउ कृपालु खड़ाडी नेह नोर स लाउ पखारी,
पोछ औचर स बाटवार करब हम तरवे कै शृंगार ।
गमकल...
।।

!! मौि पर ािन !!

की लचकल अछरल पछरल डौड़,
की मचकल औचर गछरल फौड़,
चाश्म उताान छै,
मौि पर ािन छै ।।

बढ़ै छै रनरन रनरन शीस,
पड़ै छै दीश्छ पायलक दीस,
कंठ मे गान छै ।
मौि पर ािन छै ।।

की चमकल बुटी - बुटी देह,
ठोर पर हासक पातर रेह,
गाल तर पान छै ।
मौि पर ािन छै ।।

औश्चि पर लागल लाजक बोझ,
घोघ स ताकय सोझे सोझ,
लक्मि खश्चहान छै ।
मौि पर ािन छै ।।

भक्ता रहलै मंश्चदर कै झोश्म,
गेलै दू - दू श्चाव आसन डोश्म,

अभय वरदान छै,
मौि पर िन छै ।

श्चयोगक वीतल कारी रैन,
जुड़ायल आइ मुड़ायल नैन,
गगन मे चान छै,
मौि पर िन छै ।।

काश्च कऽ माल भोग केर खेत,
बाश्च कऽ बोझ चलश्च समवेत,
गमागम पाण छै ।
मौि पर िन छै ।।

वदन पर अनुश्चत अलुश्चत दृश्च ,
चरण पर कर श्चनेहक दृश्च
एतय भगवान छै ।
मौि पर िन छै ।।

हे चरऽरक चंडी िऽरक देश्च,
देश बश्च रहल अहौ कै सेश्च,
मौछ पर शान छै ।
मौि पर िन छै ।।

!! बुढ़ारी मे घीढ़ारी !!

बुढ़ारी मे ई घी की -
एकरा कश्चियौ डालडा ढ़ारी ।।
वरद जुआ कऽ हौश्क रहल छथि -
चमेर लेट गाड़ी ।।

बुनलश्चि गहुमक लेट भेराइटी,
दऽ सकलाह खाद नश्चि डाइटी,
दाना बेगाना भेलश्चि,
ि्रसर पर चैकल नारी ।।

मश्चिनी मे जलपान करै छथि,
भरलो ािर श्चियान करै छथि,
उश्चि गेला चटनी चटैत,
पड़ले तर आ तरकारी ।।

हे देखू अकरहर करै छथि,
पेचर टयूब मे हवा भरै छथि,
जोलही ािती केर आसन पर,
पसरल सीफेन साड़ी ।।

बऽर सऽख स दौत लगौलश्चि,
खश्चि पड़लश्चि जश्चिना मुैह बौलश्चि,

कश्मायौ ओडÛठश्च दरवज्जा पर,
अपने बैसल बारी ।।

टीशन पर रोमास करै छथि,
हीरो सबहक कान कटै छथि,
कारी केश श्चवजाबी ताश्च पर -
उगलश्च उज्जर दाढ़ी ।।

!! साभक पि पाहुनक नाम !!

फोटो अहक टडÛबौने छी मन मे,
हऽम छोट साभ अहक औ पाहुन,
हमरे शपि अहौ अभयौ फागुन मे ।।

जभया स गेलहै हमर नीन लेलहै,
ओझा अहौ पर सुनू मभ गेलहै,
हमरा तऽ कंठी अछ अपने मछखौका औ,
झोरे चटयलहै भकयक नेनपन मे ।
फोटो .... ।।

सौझे दैया लग पभते भानयलहै,
सपने मे झटकल अहौ चभ अयलहै,
ओझा बुझ ियलहै जभना हम बभना कै,
ओ हसभ हम दुागंजन मे ।
फोटो .... ।।

चाही ने हमरा भनुरो आ चूड़ी,
इच्छा अछ एके बहुत मजबूरी,
एखन अहौ नेह कीर दार बभना कै,
हमर भलन होयत अभले जनम मे
फोटो .... ।।

!! <u>राम श्चना अवधिपुरी</u> !!

श्चलश्च रहल वन उपवन भवन श्चापरान गय,
राम श्चना अवधिपुरी लागय मसान गय ।

पतनी चुड़ैल भेश्च पश्च परेत सन सूझै,
बेटा वैताल माय जोश्चानी वनश्च बूझै
कोयश्च कुलवधू आइ डाश्चकनी समान गय,
राम श्चना .... ।।

शैल युता काली आ शंकर भैरव बनला,
ताडव नत्तकक लेल, सोझे सरयू फनला,
डमडम डमर श्चिशूल चमकय असमान गय ।
राम श्चना .... ।।

घर घर मे श्चलाप दाश्च - दाश्च हहाकार,
बूढ़क की बात हाय नेनो तजलक अहार,
अपन ने ककरो क्यो सभक सऽभ आन गय ।
राम श्चना .... ।।

शीतल अश्च आश्च पाश्च अदहन भऽ उश्चिएलै,
कौट भेल कोमल आ फूले गश्च - गश्च गेलै,
झडकावै चाश्चश्चयौ जश्च रहलै चान गय ।
राम श्चना .... ।।

!! श्चाव शक्त्र पूजन !!

उमा संग शंकर कै पुजबश्चा पागल पेम मगनमा ।
गंगा जल भश्च भार चढ़यबश्चा लेप देवेश्चा चंदनमा ।।

आक ितूर बेल पातक संग सश्च - सश्च सुभग सुमनमा,
दार ण दुश्चनि दीप जरा कऽ दुाखक िूप िुमिनमा ।
उमा संग .... ।।

अक्त छीश्च दूश्चा स झपवश्चा सुनर गोर बदनमा,
नीलकंठ कै भोग लगयबश्चा अमश्चत कनमा - कनमा ।
उमा संग .... ।।

शदा सागरक बीच श्चशासक राखब मेर मिनमा,
केशर कुमकुम कस्तूरी स गमका देबेश्चा भवनमा ।
उमा संग .... ।।

छम-छम नाश्च नचारी सुनयबश्चा मौ गौरी क अंगनमा,
आशुतोष तैयो नश्च ढ़रता तऽ खश्च पड़ब चरणनमा ।
उमा संग .... ।।

!! श्चरश्चनी !!

रश्च - रश्च कऽ अहक लेल देह फेर ियलहु अश्छ,
लागल अहीक एक ध्यान,
आऊ-आऊ र सल हमर भगवान ।
सहलहु कतेको हम जन्मक असहय ज्वाल,
कहुना श्चतयलहु अश्छ मरणक बहु अंतराल,
म िवन मे हे मोहन आइ हमर अवसर अश्छ,
राश्च श्चायऽ राश्चका केर मान ।
आऊ.. ||

वृन्दावन कुहरैछ यमुना कनैछ हाय,
गोदावरी औचर तर छाती हहरैछ आय ।
गोकुल मे लाख - लाख मोन बहटारल हम
तैयो वर व्याकुल परान ।
आऊ.. ||

अहक र प राश्च नैन युग - युग स जागश्च छी,
मुरली केर म ि र वैन गुश्च - गुश्च कऽ पागश्च छी।
परकीया पश्चाता हम पेमक पुजाश्चन कै,
नश्च - चाश्च गीता केर जान ।
आऊ.. ||

जकरा छै लागल हा श्चरहक पचंड रोग,
तकरा की कऽ सकतै श्चाष्कामी कमयोग।

हमरा लग अपने छी चीर नवनीत चोर
अंता बनू बर महान ।
आऊ.. ।।

अहक लेल अपयश कै जीवन मे जोथ्य लेब,
पापो जौ लागत तऽ नरको कै भोथ्य लेब,
इच्च्छा नश्च्व मृत्युक अपवगक्रि आ स्वगक्रि अश्छ,
अहक छाश्क चाही ने आन,
आऊ.. ।।

<u>!! नचारी !!</u>

दश्रना कऽ अपन भाग्य वाम,
जा रहलहु बैदना िम ।
त्याथ्रा भाई बन्ु घऽर गाम,
जा रहलहु बैदना िम ।।

कामनाक कामर कै गंगा मे बोश्र - बोश्र,
आयल छी अजगैबी ना िशरण हा िजोश्र,
नाश्च - नाश्च गाश्र ठाम - ठाम,
जा रहलहु बैदना िम ।।

दुाखक अ िह िर भैरव जी पार कर ,
बरका टा पापी हम हमरो उदार कर ,
लैत रहब जीवन भश्र नाम
जा रहलहु बैदना िम ।।

चुटी केर िरी सन िमो मे भीड़ देश्चब,
छाती मे िकिकी सभ कै अ ीर देश्चब,
कोना की करबै हे राम ?
जा रहलहु बैदना िम ।।

!! गीत !!

राम मंवित अहक नाम जथ्य - जथ्य श्र्वस श्वतावै छी ,
रातुक बीच चान पर तथ्य - तथ्य ध्यान लगावै छी ।

कहू अहौ की आन हमर छी,
देहक र सल पाण हमर छी
हे पारिक देवता जागू
अही एक भगवान हमर छी
हम श्रादोष फूल तैयो श्रारमाल बनावै छी,
रातुक.. ।।

जाश्व बाट कै श्रात्य बहारी
हम तीतल औचर स झारी,
जकरा अपना मे रखने अश्छ,
हमर औश्व ई कारी-कारी
आई ताश्व पर श्वकएक अलश्वत गश्व स आवै छी
रातुक.. ।।

हमरा लेल राजपद त्यागू
भवन छोश्क कानन कै भागू,
पाछूक सीता सन सुनश्व
दौश्क पश्क औ आगू - आगू,
प्यासल पेमक जलद मयादा श्वकएक जगावै छी

रातुक... ।।

आऊ - आऊ हे प्रिय अभ्यागत्
अश्रुक पसरल हृदयासन स्वागत्
प्रियतम अहक पलकहुँ लक्ष्क स,
हमर जन्म जन्मान्तर जागत
लाऊ पखारब चरण नयन स जल छलकाबै छी,
रातुक... ।।

!! गय नानी !!

गय नानी गय नानी बड़ बदमास भेलै गय नानी ।
नाना संगे लड़ाई काल समाठ लेलै गय नानी ।।
तोरे छि नाना केर बातो,
तो उनटौले थड़ही सातो,
तोरा डरे करथि ई रिरि
त्याग देलेथ सौसे आंगन घर,
नड़रौने तैयो हुनका खसहान गेलै गय नानी ।
गय नानी.. ।।

नाना खसार छपली कारी
तोरा छौ स्टीलक रिरी
नाना पावथि नोन सोहारी
अपना लय तर आ तरकारी
अजिनमू दही केर मूड़ी काछ खेलै गय नानी,
गय नानी.. ।।

रहलथ आब कतऽ की हुनका,
लाथ गेल छथ तोहर ठुनका
मुँह मे रखने टुटल दौत छथि,
खून देख कऽ अपस्यात छथि,
भनसा घर स नाथ - नाथ बनि गेलै गय नानी ।
गय नानी.. ।।

!! नेना गीत !!

(हीरा - बेटी)

हीरा बेटी हमर बड़ दुलरैथि न ।
देखू कखनो कसथि चट् र सन जयथि न ।।
भोरे उठते खनायल मौगथि बिस्कुट,
नहबऽ काल हेरथि नव बाबासूट,
बुच्ची हम्मर सरोवर केर छोटकी मीन ।
देखू .... ।।

बाप गेलथि न बजार आनथि न केरा,
चाही खाता चैपाड़ि परक दू पेरा,
बिनु दू कि ई सबटा जेती भसि छन ।
देखू .... ।।

चाह जेबऽ मे मौ जौ करथि देखिये,
ई ताकथि बाबू कौ कनडेखिये,
खाइते - खाइते औगन स एक - दू - छन ।
देखू .... ।।

आइ भोरे स खेलथि बऽत मुका,
मैहे भेलेथि जेना फूटल चुका ,
छथि हेहरि ई फेरो करथि बिनबिन ।
देखू .... ।।

!! स्वागत गान !!

आऊ - आऊ - आऊ सभक स्वागत करै छी,
नैन मे समाउ हृदयासन रै छी ।।
उल्लासक गीत कतऽ सगरो करणा न्दन,
उपस्थ रहल थपस्थ रहल मैथिलीक नन्दन वन,
भमर झुण्ड प्यासल छथि थहग वृन्द बड़ भूखन,
मुरझल छथि आम - मऽहु रऽसक सभता सूखल,
बबुरे वन कथ कोकल लाजे मरै छी ।
आऊ............................ ।।

थदापश्वा थाव स्वरप मृत्युंजय मऽरल छथि,
हमरा सबहक अभाग अजरो भऽ जऽड़ल छथि,
मा ई समारोही गोषी स की हेतै ?
थथा जथना तथना संवत एतै जेतै
मुरदा जगाउ लाउ पैर पकड़ै छी,
आऊ............................ ।।

काव्य पाठ कर मुदा कान्ह पर थायऽ लाठी,
एक हा रसक शोत दोसर मे खोर नाठी
पुरना थकछु त्याथा - त्याथा पकड़ू थकछु नऽव ढ़ंग
मोछो थजाउ बाउ शृंगारक संग - संग
अहौ गीत गाउ मुदा हऽम हहरै छी,
आऊ............................ ।।

अहक चपल चरण ऋतुराजक सूचक अछि,
अपने आत्मस्वरूप आशय तऽ 'बूचक' अछि,
दीन हीन सानि सभ स विहीन यदपि हम,
उदेश्यात शदा समुर नहि तरंगो कम ।
शर्वरीश समशक्ति लेल हहरै छी ।
अभ्यागत आउ सभक स्वागत करै छी ।
आऊ............................. ।।

विशेष:- ई छल विदापत स्मृति पर्व समारोह 1984 (आयोजन स्थल - गाम - बैदनाथपुर पखंड रोसड़ा, जिला - समस्तीपुर) मे आगत अतिथि क स्वागत मे स्व0 कविक ओहि कालक मैथिलीक दशा पर पीड़ादायक प्रस्तुति ।

!! मातृ गीत !!

तोरे मुस्की मे अश्चानव आनंदक अनुपम देश गय !
तोरे दयादृश्च मे नव नव सौन्दयकि पश्चवेश गय !!

श्चता भस्म तन, कर कपाल छल,
र प अशुभ गर मुंडमाल छल,
सपकिंठ, श्चष असन श्चगम्बर,
मर घट वास कतऽ आंगन घर ?
तोरे हाि पकश्छ श्चखमँगबा भोला भेला महेश गय ।
तोरे दयादृश्च ....।।

माइक हाि पकड़लश्च बाबू,
ओश्च हाि पर हुनके काबू,
बेटो तऽ चरणक अश्चकारी
उठलै तखन पश ई भारी,
तोहर हाि पैर दु दुहू मे मश्चमा ककर श्चशेष गय ।
तोरे दयादृश्च ....।।

श्चाशुक लेल आरामदेह
माइक शरीर मोमक चाही,
मक्खन सन कोमल करेज आ,

हास शरद सोमक चाही,

तखन श्वकए परियलहै यिलहै अपन पारिक भेष अय ।

तोरे दयादृष्ट

....।।

!! <u>सोन दाइ</u> !!

रहतौ ने हास, बझ्र जेतौ थ्रलास गय,
दुई थ्रवसक थ्रनगी स हेवै थ्रराश गय ।।

भरमक तरंग बीच मृगतृष्णा जागल छौ,
मोहक उमंग बीच, पाण थ्रकएक पागल छौ,
चथ्र जेतौ सुनै कंठ लागल थ्रयास गय ।
दुई.. ।।

बाल वृन्द जा रहला, नव - नव युवको चलला,
बूढ़ - सूढ़ जथ्र - मथ्र कऽ माथ्र तऽर पथ्र गलला,
तैयो छौ अपना पर क्यिा थ्रिशास गय ।
दुई.. ।।

अपना कै चीन्हे तौ नाम तोहर ‘‘सोन दाइ’’
टलहा स मेझर भऽ मैूह छौ मलीन आइ
देश कोश थ्रसथ्र - काथ्र रहलै पवास गय ।
दुई.. ।।

नेनपन चथ्र भागथ्र आब इथ्रावसिा एतौ,
कहै कनेक गुथ्रा िथ्रा कऽ तकर बाद की हेतौ,
कथ्रया िथ्र कऽ सकबै पर घर मे वास गय ।
दुई.. ।।

!! हील हाइ-हाइ !!

खुश्कयौलक कश्म - कश्म कऽ नीपल करेज कै,
िश्वयौलक िपल मनक हाइ वेज कै,
कहऽ पड़ल आइ -
नील - नील चप्पल केर हील हाइ - हाइ ।।

बेकसूर केश अिगेड़ै स काटल छै,
कोन घसबहबाक हािँ छपाटल छै,
अिवा हय दाइ -
ठश्कया गेन्हारी कै चश्व गेलै गाइ ।।

पसिलटकौने कमरच्छा स आयश्क्ष छै,
नवश्मकखू डाश्म जकौ भूखश्क्ष थ्ययासश्क्ष छै,
बचबऽ हौ भाइ -
हऽम एक दूइये ओ आखड़ अढ़ाइ ।।

एखनो िश्व भौजी कै लजवन्ती जश्वाते छश्वा,
बूश्कढ़ भेली भैया लग लाज कते लश्वाते छश्वा,
सुनहक ढ़ोढ़ाई -
देश्खये कऽ खा लै छी, श्मबही श्मठाइ ।।

!! मिथिला क बेटी !!
सीता कै आश्रयाया बनौलक सौभाग्य हमर,
रघुपति कै महुअक करौलक अनुराग हमर,
मिथिला केर रिती अकाशे स ऊच जतऽ
जगदम्बो दुलरैयान दाइ,
जतऽ पुरषोतम रामे जमाइ ।।

हमर उर्मिला सन जनमल ककर कन्या,
जकरा स नारहुत की ? अवनि भेलै निद्या,
कोन सतवंती स संवल लऽ लखन लाल,
काले पर कयलथि चढ़ाई ।
इहो बात मने मोन पड़ल आइ ।।

सूर्यवंशि वैभव लग तुच्छ इन्द्रआसन छल,
तासु त्यागक योगासन पूर्णअनुशासन छल,
भरत भक्ति दिव्य दीप जगमग जग कऽ उठलै,
माण्डवी केर सेवा सलाइ ।
वास लेला नंदिगामे जमाइ ।।

अखिल भुवन विजयी भऽ शंकर आदिगुर बनलथि,
मनुषी मे आदि मंडन कै मर्दित कयलथि
मुदापस्त भऽगेलथि मिथिलाक बेटी स
शारदा बनथि भारती दाइ ।
गणित मिथिला भूमि आइ ।।

!! जेठी करेह !!

गय जेठी करेह तौ सवेरे उधिआइ छै ।
वरखा तऽ हेठै भेलै अनेरे उपलाइ छै ।।

तोरो वाटर वेज बनल छौ,
डेभलौप मेन्टक डेज बनल छौ,
बहुत ऊच खतराक थ्रेन्सु गय,
एना थ्रकए अकुलाइ छै ?
गय .... ।।

ई इन्होर पाश्चा चमकै छौ,
मोर - मोर पर भौरी दै छौ,
काश्च - काश्च डीहक करेज कै,
तऽरे तऽर समाइ छै ।
गय .... ।।

बहकल तोहर रेतक िका,
चहकल हम्मर ियिक्त पका,
सत्यानाश सभक कऽ देवै
आवै छै आ जाइ छै,
गय .... ।।

जि - ति भऽ जेतौ मौका,
इंजीश्नायर बनतौ बुश्नबौका,

वाश्क्ष तोश्क्ष कऽ पलय मचेवै
एहने दाइ बुझाइ छै
गय .... ।।

!! ऊँ नमा श्चावाय !!

श्याम छटा पर राि गंगा िर देखू बञ्चना,
वाम जटा तर वामा केर शृंगार देखू बञ्चना ।

वदन मनोहर कुंद ईन्दु सन
भुवन वृत केर मध्य श्चन्दु सन,
जड़ चेतन मोहक मृदु मुस्की
लऽ रहलाह श्चकख केर चुश्की,

लुटा रहल छश्चि अमृत केर भंडार देखू बञ्चना ।
श्याम छटा .... ।।

दीश्चत कुंडल लोल - लोल अश्छ,
पश्चा श्चश्चात दुहू कपोल अश्छ,
सपरिज केर छि मनोहर,
ममता मे श्चभोर डमर िर,

कर श्चिशूल उर उरगक श्चश्चमल हार देखू बञ्चना ।
श्याम छटा .... ।।

केहश्च छालक पट श्चभूश्चत तन,
चंरालं कृत श्चाव पमुश्चत मन,
वाम अंक श्चश्चराज कुमारी,
गर लटकल गणेश भयहारी

श्चनके शरणागत सगरो संसार देखू वश्चना ।

श्याम छटा .... ।।

!! मथ्यादीपक महरानी !!

अयली जगदम्बा दुगा देवी कल्याणी अय,
मथ्यादीपक महरानी अय !
नाऽ ऽ ऽ।।

सध्या सुि श्मन् स्नात, माजल गंगा जल स गात,
सेवक खाश्वार तजलश्म नवरतनक रजिानी अय,
मथ्यादीपक .... ।।

टश्य कऽ अटारह पाकार देवी भऽ गेली साकार
सभकै सुना रहश्म छश्रि अप्पन अभयावाणी अय,
मथ्यादीपक .... ।।

हश्व पीताम्बर स पद झारश्रि,
श्यश्रि सुरसश्व स चरण पखारश्रि,
तरबा रगश्क रहल छश्रि, रश्व - रश्व शंकर जानी अय,
मथ्यादीपक .... ।।

मश्वषासुरक आव की डऽर, माता छाड़ू श्मंहक भऽर,
लोके राच्छस भऽ कऽ कऽ रहलै मनमानी अय,
मथ्यादीपक .... ।।

!! सरस्वती वंदना !!

अयि हास करतल वर वीणा हंस वाहिनी परम पवीणा ।
शेत अंबरे परे शुद्धि दे, अपरे परमेशवरि सुबुद्धि दे ।।

भावक सर श्वशासक शतदल,
पर पसरल शदास्पद पद्ममल,
हस्त स्फटिक माल मनोहर
सहज तपस्विनी आत्म शुद्धि दे
अपरे परमेशवरि सुबुद्धि दे ।

आसीना कल्पना हंस पर
पद सौन्दर्यकि पंक वंश पर
व्योम नाथके कि गाथके
हर हमरो कुण्ठाबर श्वि हे
अपरे परमेशवरि सुबुद्धि दे ।

सीचू जान कमंडल जल स
पोछू मौ पेमक आंचल स
उद्यत दार पर रसाहार
करबू त्यागू युग युगक शुद्धि हे
अपरे परमेशवरि सुबुद्धि दे ।।

!! भदैया होली !!

डीहो िश्च डूबल जखन बुजि बालुका पंक ।
रंग कोना पकड़त कहू तखन होश्चका अंक ।।
असली होरी बाश्च थ्चच मौचल छल नैहऽर,
आडी डूबल घऽर मे, साड़ी भासल चऽर ।।
फगुओ स भऽ गेल अश्च, अश्चिक नीक भदवाश्च,
बूढ़ी पती बेड़ पर कोरा मे नव साश्च ।।
भौजी कहलश्चा हुलश्च कऽ लाउ लगा दी रंग ।
तेवर तेसर नयन लग, पसरल अजर अनंग ।।
अपने छी परदेश मे हम छी बान्हे पऽर ।
यौवन खतरा श्चन्हु लग, देह करय ि र - िऽर ।।
पेमक जल नेपाल स छूटल अश्च चश्च आउ ।
चैते मे डूबब श्चया, शीघ नाव बनवाउ ।।
श्चम-श्चम ढ़ोलक ढ़ेप स श्चटकल देहक पाश्च ।
उज्जर केश अबीर तर, बुश्चयो भेश्च जुआश्च ।।
मंि ी उड़श्चि अकाश मे, पश्चलक गेल पताल ।
िरती पर नेता लोकश्चा कऽ रहला रंगताल ।।
सम्मत जश्चना जश्च रहल तश्चना जड़ल करेज ।
दुहू जीव कछमछ करी पड़ल उपासक सेज ।।
भोजन पैकेट पाश्च मे, गूड़ चूड़ा सभ गूम ।
फाउन्टेन पेनक िर मे भासल बूट गहूम ।।
टूटल बलुआहा जखन खसला भीम उतान ।
अिश्चनीक चरण पकश्च बचैलश्चह कहुना जान ।।

!! वश्वावासक अंत !!

घुरल आव अवकि श्वदवस भाग जागल,
बुड़ल नाव देखू नदी कात लागल ।।
भरश्वि कान हनुमान संवाद अमश्वत,
भरत भऽ रहल छश्वि मगन मोन श्वारश्वत,
श्वरागी हृदय भाव अनुराग जागल ।
बुड़ल नाव.................................. ।।

नगर आश्व रहलश्वा लखन राम - सीता,
पजा कंठ गीता नृपश्वक पाण पीता,
श्वगत कालराश्विक पहर पीत जागल ।
बुड़ल नाव.................................. ।।

उठू तीनु जननी नयन नोर पोछू,
सुनू कैकेयी त्यागु पश्वताप सोचू,
उड़ल पाण बहुरल पुना गात लागल ।
बुड़ल नाव.................................. ।।

पमोदी चमन वखि- वखश्वि सुखयल,
हुलश्वा आइ पनकल श्वहंश्वा कऽ फुलायल,
मृगक अश्वक अपलक श्वहग पेम पागल ।
बुड़ल नाव.................................. ।।

!! मिथिलाक दुादशा !!

नकशा स मेटा रहल मिथिला केर नाऊ गय ।
कतऽ हमर पीढ़ी अछि कतऽ हमर ठौऊ गय ।
भारत स छोनो बऽ बनलै बंगाल देश,
मुदा अपन देशे मे दावल मिथिला पदेश,
राज्यक की बात कहुन पौचो टा गाऊँ गय ।
कतऽ हमर .... ।।

हमर अमर षड़दर्शन हमर अचर साधु संत,
हमर अजर वन उपवन हमर अपन वर बसंत,
कहि कोकिल विकट काक करै काउ - काउ गय ।
कतऽ हमर .... ।।

लोकवेद जागि रहल ओंघायल नेता छथि,
अपने मे लड़ि - लड़ि कऽ घायल विजेता छथि,
पूछत के हाल दशा ककरा सुनाऊ गय ।
कतऽ हमर .... ।।

मधुबनी वा कलियन हो, वाजितपुर मंगरौनी,
सबसब स चैमि चि बनला सभ क्यो मौनी,
देशक सभ स दुलर मैथिल कहौऊ गय ।
कतऽ हमर .... ।।

!! माला !!

सुरभात अहक सनेहक माला ।।
जनम - जनम जय रहब सपटतर,
राखू बन अपन मधुशाला ।।
देख, सुखक परबाह न हमरा,
मलनक अलो आस न हमरा
हम नर दुखकाटब रिती पर,
अपने बनल रहू सुरवाला ।।
सुन्दर अहौ अकाशी गंगा,
हम भूमक प्यासल भखमंगा ।
युग-युग बर बौरायब मर मे -
अइठायब नह पावन प्याला ।।
सुरभात अहक सनेहक माला ।।
नह शृंगार रौर हुंकारे ।
हम एह पार, अहौ ओह पारे
दुहुक बीच कठोर कत्तव्यक -
भरल अछि भयंकर नाला ।।
सुरभात अहक सनेहक माला ।।

!! <u>जागरण गान</u> !!

असम, वंग पंजाब, गुजरात जागल ।
अही टा पड़ल छी उठू औ अभागल ।।
सुर ज त्याथ्य आयल श्राशा कै उषा मे,
श्चवड़ल जागरण ज्याश्च दऽशो श्चदशा मे ।
सगर शृंग - सागर िश्चक श्चान जागल !
अही टा पड़ल छी उठू औ अभागल ।।
श्चकश्च हश्च रहल स्यार श्चांहक दशा पर ।
चलल बकगणक हंस पर िर िपर ।
श्चठूर काक कर स श्चकक कंठ दागल,
अही टा पड़ल छी, उठू औ अभागल ।।
श्चदेहक सुतक देह दुवेश्च बनल अछ्छ ।
गश्चत कऽ रहल मैथ्रिली कै अनल अछ्छ ।
परक लेल दशनि अपन औश्च लागल,
अही टा पड़ल छी उठू औ अभागल ।।
हरण भऽ रहल अछ्छ हमर मीठ बयना ।
कोना कऽ श्चखत आन बोली ई मयना ।
श्चवश अछ्छ वश्चिक हा‍ि स ठोर तागल ।
अही टा पड़ल छी उठू औ अभागल ।।
कतऽ श्चतृ स्नर अछ्छ कतऽ मातृवाणी ।
फंटऽ जा रहल जीह बचबू भवानी ।
बब गोड़ ई गुश्च हमर पाण पागल ।
टही टा पड़ल छी उठू औ अभागल ।।
बहुत भेल हे आब ककरो ने मानू !

आकश्स दाश्व पाचीन तर आश्व तानू ।
अहह जाश्च मे युग युग मे जंग लागल,
अही टा पड़ल छी उठू औ अभागल ।।

!! तोहर ठोर !!

श्क जश्च्ना कुरकुर पानक ठोर ।
श्क तश्च्ना सुनश्च तोहर ठोर ।।
लगौलह बातक पाि र चून ।
सजौलह कऽि कपोलक खून ।
श्क रहलह एके बातक चूक,
कतऽ छह पेमक पुंगी टूक ?
श्क जश्च्ना लाली पसरल भोर ।
श्क तश्च्ना सुनश्च तोहर ठोर ।।
देश्च्ब कऽ लहरल हमर करेज,
त्याश्चा अयलहु उदयाचल गेह ।
अहौ श्चनु व्याकुल वाटक मौझ ,
सुमुश्च्ब भऽ रहल जीवनक सौझ ।
श्क जश्च्ना वि सुाि कर गोर ।
श्क जश्च्ना सुनश्च तोहर ठोर ।।
श्चपाश्चत आयब अहक दुआश्च,
पेम पीयूष पीयब झटढ़ाश्च,
बश्चिक ज बनत अहक बर बाहु
तऽ हमहू बनव श्चखंश्चत राहु,
श्क जश्च्ना सुाि स्पागभिे ाि र,
श्क तश्च्ना सुनश्च तोहर ठोर ।।
सीश्च्ब श्चशकमा स श्चजान,
बनायब सकरी श्चल महान ।
भरब माायिक्ि कोषागार,

सेहंश्चात भऽ जायत संसार ।
जेना कुश्मयारक पाकल पोर,
श्क तश्चना सुनश्च तोहर ठोर ।।
बनव हम पुनजिन्म मे ान,
ान स भऽ जायब श्चष ान ।
पड़ब पुश्च अहक पतीकापात
अश्चुंजल स सदा स्नात ।
जेना छाली साजल नव खोर ।
श्क तश्चना सुन्दश्च तोहर ठोर ।।
भऽ रहल वणा- वणश्चिशेष,
शब्द स पगटल नश्च उदयेश्य ।
मने मे रहल मनक सब बात
अनल मे पड़ल नवला जल गात ।
जेना आगू अलभ्य श्चत चोर ।
श्क तश्चना सुनश्च तोहर ठोर ।।
स्पा काली कान्त झा ‘‘बूच‘‘

!! नचारी !!

गाबैत चलल छी बमबम,
नाचैत चलल छी छमछम
लगबैत ताल दुलकल डेगक
सजवैत स्वरक नव सरगम ।।
कौवश्च मे आबह गंगे
तौ लागह हमरा संगे
लऽ चलह जतऽ कैलाशी

छथि थ्यता भूश्च सन्यासी,
हे करणामश्च दुख भंगे,
देखबैत चलह पि हर दम ...... ।।
पेमक मस्ती मे भासल
शंकर छथि परम थ्ययासल
शदा केर ि र बहाबह
थ्वशाक पाि बनावह
बौरहबा अथिक उपसाल
हुनका संतुष करब हम .... ।।
कंठे मे पचल हलाहल
छाती पर काली बान्हल
पदतल तर थ्वशक वैभव
ई मश्चमा हमरो जानल
छथि आशुतोष ओंघायल
तै डमर बजबह हरदम ..... ।।

मानल हम शरणागत छी,
तैयो तै अभ्यागत छी
स्वागत कऽ दहक यथोचित
साकि छह चरण समर्पित
अपने कंजूस कहयबह
करुणा करबह ज कमसम ।।

!! <u>सुनू आब मन जेहन लगैए</u> !!

सुनू आब मन जेहन लगैए -
अहमदाबाद रहय गयघटा,
रानी परती मुरली छौनी,
कछमछ कऽ कऽ राखा बतावी,
बाबूक िथि पर दनही तौनी,
िनय हऽम छी फललौ बाबू जयममाके मे कुि जगैए ।
सुनू आब मन जेहन लगैए ।।

अपना घर मे रखने नछ छी,
कपा थालासक फूटलो टुकड़ी,
बहराइछ पावथा आहार मे
मोरा मूनल गूड़क चुकड़ी
िनय - िनय छथि मास्टर साहेब जै ओ छथि तै चाह चलैए ।
सुनू आब मन जेहन लगैए ।।

मूड़क नछ परवाह रहल अछ,
शूशा उठय सूद्दक कपचन मे
पाइ पाइ कै जोड़ आइ िथ
सेठ कहयलहुैएछ जीवन मे
िनय हऽम छी फलला बाबू ओहो िनय नोत जे दैए ।
सुनू आब मन जेहन लगैए ।।

बाहर स जेहने बलबुतगर,

भीतर स तेहने पश्चामऽर ,
सज्जन हम जेहने दलानपर
आंगन मे तेहने दुरजऽर
निय हऽम छी फल्ला बाबू बाढ़श्वाये स देह झरैए ।
सुनू आब मन जेहन लगैए ।।

नोन माि कीनी दोकान मे
सैहो जश्चमानी ढ़ेबुआ स
मोन पड़य नश्च श्चकनने होयब,
हम देहक सूतो देबुआ स
निय हऽम छी फल्ला बाबू खचिदेश्चकऽ मास गलैए ।
सुनू आब मन जेहन लगैए ।।

समश्चिक हाि देल गेल छल,
हमरो आदशकि गरदश्चाया
बेटा मंगनी श्चबका गेल हम
बश्चा कऽ रहलहु बुरबक बश्चायौ
निय हऽम छी फल्ला बाबू अखनो रश्च - रश्च चोन्ह अबैए ।
सुनू आब मन जेहन लगैए ।।

!! गहवर जननी केर !!

चमकि रहल चकमक औ, गहबर जननी केर ।
देखिते टूटल भक औ गहवर जननी केर ।।
गुंबज गगन दिशा देवाल अछि,
पंडा बनि क ठाढ़ काल अछि
चान सुर ज दीपक औ गहवर जननी केर ।।
पदतल पर स्वयं शिव शंकर
नारायण सूतल सुअंक पर
ऋषि व्याकुल ठकमक औ गहवर जननी केर ।।
गगनक गंगा चन्द्रकूप अछि
उषा किरण ओढ़ुल अनूप अछि
सकल भुवन पूजक औ गहवर जननी केर ।।
टप - टप सुि‍ा चरण स चूबय
वरद हस्त सुत मस्तक छूबय
फलपसाद पुिपक औ गहवर जननी केर ।।

!! भगवती वंदना !!

जनम - जनम कऽ बहुत भटकलहुँ
सभदेवक डगरिया ।
आयल छी आखिर उदास भऽ,
अम्बा अहीक दुअरिया ।।

अहक कोर मे विष्णु सुतल,
सम्मुख ब्रह्मा कानैत छथि ।
अहीक शक्ति बिनु स्वयं शिवो,
अपना कें शव मानैत छथि ।।

आन देव केर बात कोन सभ,
बिसरि गेला पमरिया ।
जनम .... ।।

पलय काल मे जीवक संग,
भगवानो कें सुतबैत छह,
तमसा देखि शक्ति तोरे स
देव दनुज पावैत छह,
मोहगर्त ममतावर्तक ई,
जाइ भरल नगरिया,
जनम .... ।।

दुभाग्य आलस्य हटाकऽ

जगा ध्दअऽ नवचेतना,

सम्मोश्चत कऽ ध्दयौ दुष कै

भर मौ भीषण बेदना ।

हे माता मृतपाय पुि पर, ढ़ार अमृत गगश्चया ।

जनश्च .... ।।

!! भौजीक अवाहन !!

कौआ मौझे घर बड़ेरी पर भोरे स कुचड़ै ।
भौजी अबते हेती रौची स सगुन उचड़ै ।।

अपने भैया भात पसौलथि,
हमरो स किछु काज करौलथि,
बारी स आलकोर पात किछु आनै 'बूच' रै ।।

कौआ .... ।

दुखी मोन कै पोछि रहल छथि,
कौच दाबि कै घोटि रहल छथि,
पुरखो हाथ देखि घोटना वर बढ़िया उसरै ।।

कौआ .... ।

जल्दी - जल्दी केश छटौलथि,
गुलरोगन केर तेल लगौलथि,
देखिन औखि फड़कै छथि लागथि बर खुश रै ।।

कौआ .... ।

भौजी औती ई र श्ता रहता,

नोरे मे सभ क्यि ा सुनौता,

श्वनका खाश्वार आश्व रहल छश्वा लेमनचूस रै ।।

कौआ .... ।

!! स्वप सुन्दरि !!

स्वप सुन्दरि अहौ जीवनक सहचरी ।
ध्यान मे आउ अशुना घड़ी दू घड़ी ।।

भोग भोगल जते जे बनल कल्पना,
आब भऽ गेल अछि अन्तरक अनमना,
हऽम मानव अहौ देव लोकक परी ।
ध्यान .... ।।

मा॒ि उतापदायी बसंती छटा,
आब संतापदायी अषाढ़ी घटा,
कौट लागल सुखायल गुलाबी छड़ी ।
ध्यान .... ।।

र प अमृत थया कऽ अमर जे केलहु,
यकख थरहक खोआ फेर की कऽ देलहु ?
घऽर मे ज़िन्दगी गऽर मरनक कड़ी ।
ध्यान .... ।।

वेर वेर क अहक फेर अभयागतम्,
अछि सदा सर्वदा हार्दिक स्वागतम्,
कप चाहक दुहू नैन मन तस्तरी ।
ध्यान .... ।।

!! कचोट !!

अहक लेल रंजन, हमर भेल गंजन ।
केहेन खेल ई, रक्त स हस्त मंजन ।।
तरल नेह पर माि दुाखक श्यायाही,
जड़ल देह हम्मर अहक औश्च अंजन ।
रचल गेल छल जे, सुखक लोक सुन्दर,
चलल अश्छ पलय लऽ तकर सुश्िपभंजन ।
मृतक हम, अहौ छी सुि स्वगा लोकक,
अहक लेल यौवन हमर गेल जीवन ।।

!! शृंगार वा वैराग्य !!

सध्या अहौ, मुदा छी सपना एख्न जीवन मे ।
सहजो सुख भऽ गेल कल्पना एख्न जीवन मे ।।
थ्रहैसल ठोर थ्रवश भऽ थ्रजुकल,
मादक नैन नोर केर नपना एख्न जीवन मे ।
सहजो .... ।।

अख्न कै कतऽ शृंगार सजाओत्,
आश लाश पर कफनक झपना एख्न जीवन मे ।
सहजो .... ।।

दुश्नायौ हमर एकातक गहवर,
भेल थ्रनअत मुर तक स पिना एख्न जीवन मे ।
सहजो .... ।।

दीप वाश्व अहौ दाश्व जड़यलहै,
घऽर हम लोकक अथ्रातपना एख्न जीवन मे,
सहजो .... ।।

!! अकाल !!

ई अकाल नञ्ञि, महाकाल अछ्छि,
भूखक ऊक बाञ्ञि नाड़ञ्ञि स,
चारे पर ठोकैत ताल अछ्छि ।।1।।

फूके स पताल खड़ड़ौलक,
अनावृष्ञ्ञि केर आञ्ञि लगौलक,
एञ्ञि मंहगी क पचंड पसाही स -
उनचास बसात जगौलक ?
हे देखह जञ्ञि रहल गाम घर,
आकाशे भऽ गेल लाल अछ्छि ।।2।।

भारत आइ भेल अछ्छि लंका,
बञ्ञि रहल अछ्छि मरणक डंका !
बौञ्ञि सकत एञ्ञि वेर ञ्ञिभीषण केर -
कुटी अछ्छि बड़का शंका ।
डोञ्ञि - डोञ्ञि स बान्हल,
एञ्ञि वेर क ञ्ञिभीषणक मंडमाल अछ्छि ।।3।।

आंगन - आंगन हैया दैया,
वाञ्ञिञ्ञिक कोर मरै छञ्ञि भैया ।
पूत परेम छाञ्ञि रिती कै,
भञ्ञि - भञ्ञि कऽ रिै छञ्ञि मैया ।
वीसहु औञ्ञि ओनाञ्ञि दसानन,
घुटुञ्ञि घुटुञ्ञि ञ्ञिलवैत भाल छञ्ञि ।।4।।

!! नोर !!

हंसलहुँ एक बेर जीवन मे, बेरि - बेरि कनैत रहल छी ।
बसलहुँ एक बेर जीवन मे, फेर - फेर उजड़ैत रहल छी ।।

चलि - चलि भटकि - भटकि कऽ कखनो,
कखनो कऽ हम दौड़ि रहल छी ।
एक बुन जीवन क लेल
मरि - मरि कऽ मर मे बौड़ि रहल छी ।
अपन मोन कैं उघबा कऽ आनक तन कैं उछहैत रहल छी ।।
बसलहुँ
....
।।

एक - एक सायक क चोट कैं,
गुनि - गुनि छोट ध्यान नहिं देलहुँ ।
बड़ कचोट चालनिक र प मे,
देखि - देखि चुप्पे रहि गेलहुँ ।
ठोप - ठोप चारक चुआठ कैं औगुर स उपछैत रहल छी ।।
बसलहुँ .... ।।

बालपनक छौछ कल्पना पूरा,
भावक दही विचारक चूड़ा ।
आनलक जे बेगाड़ भूख मे,

पाछाँ रहल अछि खुदी गूड़ा ।
नवनीतक अछि लूट मुदा हम छौछी छोरक लैत रहल छी ।।
बसलहु... ।।

!! शावणी !!

आशवर शीघ शावण मे औता थया ।
प्यास पर नीर पावन बहौता थया ।।
देखि हुनका सुखक मास्र सस्र ने सकब,
खस्र पड़ब दास्र पर ठाढ़ रस्र ने सकब,
पाशतर ि ीर छाती लगौता थया,
प्यास पर नीर पावन बहौता थया ।।

भऽ उमंगीत बहत आड़नक बात ई,
उल्लसित भऽ रहत चाननक गात ई,
पाततर थक बनल स्वर सुनौता थया,
प्यास पर नीर पावन बहौता थया ।।
मन उमस्र गेल बस्र गेल यमुना नदी,
तन स्रहस्र गेल जस्रना कदंबक कली,
शास पर ि ीर बंसुरी बजौता थया,
प्यास पर नीर पावन बहौता थया ।।

916 || विदेह सदेह:३४

!! गामे मोन पड़ैए !!

रोटी एके कोण गय
बढ़िओ साग अनोन गय,
तैयो कलकता मे रहु रहु,
गामे पड़ैए मोन गय ।।

गऽर गृहस्थी कलछि रहल अछि,
धीओ पूता छलछि रहल अछि,
अजुके मिथिला स चलल अछयौ,
एलै टेलीफोन गय ।।

आन - आन सभ टलहा चानी,
रानी बनल बसलै राजधानी,
घूमि - घूमि कऽ भीख मंगै छथि,
हमर मैथिली सोन गय ।।

खेते लग करेह केर सोती
पानि पटा उपजायब मोती,
हुगली केर बाबू स बढ़ियौ
कमला कातक जोन गय ।।

ताकल हावड़ा स दमदम धरि
परतर नहि मोरतर वाली केओ
ईडेन गाडेन स सुनर अछि,

कोशी कातक बोन गय ।।
पड़ल पाकि मौडनि बाला छथि ,
पसाए चढ़ा रहल माला छथि,
आरहुतनी अपना भोला लय
ताकय ि तुर अकोन गय ।।

!! भगतालाभ !!

साि‍ना - भावना
औठी - गुदा
साि‍ना क गंगा जे चललीह से -
चश्चलते रहलीह आ-
श्वनु घूरल सागर मे समा गेलीह!
ई छल, भगीरि‍ पयास ।
हा! हन्त!
साि‍ना क सेहन्ता क ई अंत!
रश्च गेल भावना क जऽल
जे नश्चऐ जा सकऽल ।
भरल रहल ओ आलय स सागर ि‍श्च,
श्वनेहक भंश्वमा पर एक बेर ि‍ूरऽ लेल,
सुअवसर पाश्च घूरल,
आ तश्चया स -
गंगा लाल की हेतैक ककरो !
भऽ गेलश्च गंगे कै -
भगतालाभ अि‍ात् श्वदापश्च लाभ !!!!!

!! धिया स रामक परतर !!

मानै छी सुनयौ रघुवंशी पुरूष अहौ बेजोड़ औ,
हमरा धिया सखी लग लेखन लागै छी किछु िड़ औ ।
अपने कै जन्मौलन्हि माता, सीता हमर सहज संजाता,
कतबो सुनर श्याम मुदा छी, कतबो गुनगर राम मुदा छी,
अपने नीलाकाश जानकी, लाली पसरल भोर औ ।।
मादक दृष्टि कमल दल लोचन मुस्की कामदेव मदमोचन,
नशा बनल चढ़ल रहल नेह अछि, बिसरल छी हम कतऽ देह अछि,
मुदा धियाक दिव्य दर्शन मे अमृते केर बोर औ ।।
िनुषा तोड़ल पाबि जुआनी, तखने स छी नामी गामी,
बाउ अधिक जुनि बनू गुमानी ताहि िनुखा केर सुनु पहानी
तकरा बाल्यावस्थ मे ई उठा लेलन्हि कऽ कोर औ ।।
उच्च विचार आचरण सादा, सद्गुण संयोगल मरयादा,
आइ कतऽ रहि गेल बपौटी, विछरल चरण करीनक पौटी

फलक साधिका सीता हम्मर अपने फूलक चोर औ ।।
हमरा धिया .... ।।

!! <u>गौरी बनश्ला जोश्याश्चायौ</u> !!

र सल श्यया केर गौरी बनश्ला जोश्याश्चाया,
पुश्चा हर बरब बनव कश्चायौ ।
सती श्यरह श्चाव मर घट सेवल,
कयल भस्म अन्वेषण केवल,
बश्चा - बश्चा लावण्यक नोश्चाया ।।
पणसिश्चाल खासो पुश्चा त्यागश्ला,
युग-युग श्यय तप मे लय लागश्ला
भागश्ला योगेशक श्वाश्चायौ ।।
पुरश्चल पीत रहल नश्चं झौपल,
भेल पतीश्चा सकल तन कौपल,
बहल नैन पेमक पश्चायौ ।।
गौलक स्चगति लातल नौचल
उमा अश्च मश्चमा नम बौचल,
जय हे कैलाशक रश्चायौ ।।

!! काली रूप वर्णन !!

मइक चरण कमल लाले लाल गय,
भाल अढूल फूल औचर पर,
उड़यौलक पक्षमल लाले लाल गय ।।
श्यामल तन झौपल झोटक बिच,
बहुंसल अरि श्रमल लाले लाल गय ।।
लाले रंग लाल खप्पड़ अछि,
वरदायक करतल लाले लाल गय ।।
दया रखत जगमात छाती पर,
मुंडमाल लटकल लाले लाल गय ।।
उरसुमेर उमड़ल पयस्वनी,
चुर अक खून चुअल लाले लाल गय ।।
ममतामय मन भयदायक तन,
भरकालका नाम् कमाल गय ।।

!! चश्ला अश्लयौ पटना स गाम !!
बी0 ए0 कैये लेलहुै
एम0 ए0 ओ कऽए श्लायऽ
नश्ल श्लायऽ नौकरीक नाम
थ्यतम औऽऽऽ चश्ला आश्ल पटना स गाम

हमरा नश्ल चाही घरवैया नोकश्लहारा
श्लाश्लाक नश्ल चाही नश्ल सोनक श्लाकश्ल़ गारा
करबे एके संझे बर टुटली मरैया
दू नमरी ि ि हराम ।।

अहौ घास काटब, हम चूश्ला कै पजाश्ल़ लेब,
अहौ हऽर लादब हम घऽर कै सम्हाश्ल लेब,
हऽम आश्ल़ ठाश्ल़ सजल रोश्लणी नकि जकौ
अहौ हमर खेतक बलराम ।।

रहतै ने रौदी ई आरार बरश्ला जेतै
पश्ला एतै परती ओ श्लाशय कदबा हेतै
अहौ िन रोपब ठेहूश्लाया दऽ दोहश्ल मे
जलखै मे गाड़ब हम आम ।।

िकल झमारल घुश्ल आयब मुन्हाश्ल सौझ
पाटी ओछायब हम हश्लाते दुआश्ल मौझ
लक्ष्मी बश्ला तड़वा हम रगरब हे नारायण
घऽर हम बैकुण्ठी िम ।।

िन्य - िन्य मेहनश्वा के गंगा जे बहबै छथि,
अपने पसीना स िरती कै नहबे छथि,
खश्च रहला भूखल पेयासे देहाते मे
हुनका श्वय श्वअनु श्वराम ।।

शमक कोन माश्वा? जतऽ बुश्वक श्वलास छै,
पेरा दलाल गाल शमक पेट घास छै,
श्वल्ली कलकता आ बम्बाई केर बात की ?
छोटो शहर बदनाम ।।

घूसखोर मच्छड़ उड़ीस जकौ जीवै छै
शोश्वात तऽ ओ - अवश्वाष पीवै छै
हडडी सुखायल अश्च तैयो ओ अश्विकारी
खगले केर तीड़ै छै चाम ।।

!! पहुना !!

हमरो नेने चश्मायौ, अहौ अपन गेह पहुना ।
हमहू कऽ नेने छी, अहौ सऽ स्नेह पहुना ।।
अपने कैं चाही वैदेही
हम सम देह एक ओ देही
हमरो बाप बनल छथि देखू ने विदेह पहुना ।
हमरो .... ।।

शून्य गगन केर श्याम घटा छी,
मर पर उमड़ल व्यक्त छटा छी,
मुिरी मुस्की लागै बिजुकी क रेह पहुना ।
हमरो .... ।।

सभक जीवनक एक पाण छी,
सगरो गगनक एक चान छी,
हहरै छाती जमुना सागरक रेह पहुना,
हमरो .... ।।

हस्म हस्म अहौ स नयन जुड़यलहु,
चलऽ काल हा ! ई की कयलहु
दशा कतऽ अछि मोन कतऽ ई देह पहुना
हमरो .... ।।

!! बेटी बनश्च पहाड़ !!

गेलै कतऽ श्ववेक श्चचार
भेलै केहेन लोकाचार
हाकि फुलडाली सन बेटी बनलै
मा ि परक पहाड़ ।।

पाणो स जे अश्चक श्चयरगश्च,
पोसश्च गेली अंक मे भश्च - भश्च ।
कालुक ई दुलरैश्चान बेटी,
आइ घैल बश्च लागश्च घेटी ।
आगौ भोगक पोरवश्च पाछौ अपमानेक इनार ।।

बेटी अहौ बेटो स बश्चकऽ,
अयलहु उड़नखटोला चश्चकऽ
अपने तो लकश्चश्चायौ देवी,
बापक मुदा सुन छह जेवी ।
हे देखू हश्च गर ड़ त्याश्च कऽ माश्च रहै छश्च कार ।।
कम्मे दामे भीठ बुड़यलहु
सोना पैतीस गाम पुड़यलहु ।
ब्याह राश्च केर खचा चाही,
बश्चयाती औता दस गाही ।
बाहर भीतर बल्ब जड़ै अश्च मौझे ठाम अन्हार ।।
मँागलश्च दशरि एक पाइ नश्च,

बजला श्कछु रामो जमाइ नञ्च ।

शी कृष्णाक तऽ लव मैरेज छल,

श्वसरी हमर केहेन सुनर भल ।

मुदा आइ वृष भानु जनक कऽ रहला हाहाकार ।।

बेटा बनलै बेबस बकरा,

बापे कंठ पकड़लश्वा तकरा ।

जीवन जब्बह भेल मनुक्खक,

मानवता रहतै ककरा लग ।

घऽर घऽर मे बूचरखाना गामे गाम बजार ।।

!! हमर थ्मनगी !!

श्वनु घनश्यामक बेकार हमर थ्मनगी,
धिक - धिक जुआनी धिकार हमर थ्मनगी ।।
मेवा सश्ऌ जाऊ, फऽल फूलो सभ उसश्व जाउ,
म ़िवन जश्ऌ जाउ नन्द राजभवन पजश्ऌ जाउ,
सूखल जमुश्आया केर ि र हमर थ्मनगी ।
धिक - धिक जुआनी धिकार हमर थ्मनगी ।।
भृकुटी पर ि ि रहै हृदय मे भरल श्वनेह,
मक्खन मन अश्यत्ति अश्छ नोक - झोक दही देह,
ककरा स करतै तकरार हमर थ्मनगी ।
धिक - धिक जुआनी धिकार हमर थ्मनगी ।।
चोटी मे कस्तूरी एड़ी केसर कुमकुम
मश्व मश्व कऽ बौसश्वि ओ, हम त र सश्व गुमसुम
कतऽ एहेन पेतै दुलार हमर थ्मनगी ।
धिक - धिक जुआनी धिकार हमर थ्मनगी ।।
आश्व जकौ दाश्व रहल चन्द्रमुखी केर उपाधि
सोना सन देह हमर भस्म करब जोगसाधि
पड़ल गोव ़िन पहाड़ हमर थ्मनगी ।
धिक - धिक जुआनी धिकार हमर थ्मनगी ।।
भवसागर घाटपरक जानी घटवार कृष्ण
कमक्रि पुरान नाव ि मक्रि पतवार कृष्ण
पेमी श्वनु कै करतै पार हमर थ्मनगी ।
धिक - धिक जुआनी धिकार हमर थ्मनगी ।।

!! मुना कका सासुर चलला !!

कच्छी कऽश्म - कऽश्म तश्चपर ोती रऽश्च दृ रऽश्च कऽ ।
मुना कका सासुर चलला, पूरा सश्म-श्मि कऽ ।।

सबस पश्चने पोखश्च िसला,
चश्चते काठ उनश्च कऽ खसला ।
मललश्च मा िमौश्च कश्चऔटी,
ऊपर अयला झाश्च लंगोटी ।।

अिमानी झामा स गतर - गतर मश्च-मश्च कऽ,
मुना कका सासुर चलला, पूरा सश्म-श्मि कऽ ।।

एते श्चकएक बेकल हौ मुना,
तेरे एकटा सासुर की ?
जत्तरा करऽ श्चन देखबा कऽ,
बाबा जी कश्च देलश्च ई ।

अिपहरा जखने हेतै, दू श्चनट हेतै दस बश्म कऽ,
मुना कका सासुर चलला, पूरा सश्म-श्मि कऽ ।।

ताबरतोर चलल जा रहला,
जेठक तेज श्चहाश्च जकौ ।
रैन कतहु ने, पडे बाट मे,
सौझ लगए मुनहाश्च जकौ ।

हुलसल डेग बढाबथि आगौ हुमथ्थ - हुमथ्थ कऽ,
मुना कका सासुर चलला, पूरा सध्म-ध्मि कऽ ।।

झौपल मुँहे सासु कहलथिन,
झा दृ हमरा बड मानै छथि ।
जखन - तखन हमरो खाश्वार,
गरमे रसगुल्ला आनै छथि ।

अझुका सबटा गुलगुल्ला थिक झा बजला हथ्स-हथ्स कऽ,
मुना कका सासुर चलला, पूरा सध्म-ध्मि कऽ ।।

!! नोतक पेमी !!

ैन हमर छी कका औ,
“नोतक पेमी“ पका औ ।
पेट बागला देषक पोरवश्च,
दाते बान्ह फरका औ ।।

भरलो तौला लेल सुर का,
िथ्रि बनल तरभुश्नआ फुका ।
काकी बाजथ्रि रौ रोग ढुका,
बाबी मारथ्रि छाती मुका ।।

कसमकष गंजी पर परलै श्चता भऽश्च दरका औ ।
ैन...।।

भश्च कठौत एकसरे चाही,
सदा हुरने अश्छ दू - गाही ।
सून कऽ रहल भऽरल भनसा,
हा ! भगवान कतऽ ई मनसा?

उसनल अलुआ खाइत काल ई छोडा दैत अश्छ छका औ ।
ैन...।।

श्चाब बऽ काल सोहारी सुक्खा,
ठोर बनल सकरीक दुरक्खा ।

पाकल दू श्चकलो ि श्च आटा,
बटा भश्च तरकारी भाटा ।।

सभटा खाकऽ परसन लऽ मुहबेने अश्छ दू फकश्वा औ ।
िन...।।

एश्छ परेत कै कहू ने श्चती,
ई षमसान घाट केर लुती ।
सतत् रहै अश्छ दौत श्चयारल,
मुँह लगैए कनसारल भारल ।।

सुश्चाते लोट-पोट हँश्च - हँश्च कऽ खसला 'बूच' तरका औ ।
िन...।।

काकी केर आदेष श्चाकललश्चा,
कका जी जश्चमश्चाका चललश्चा ।
आगौ लऽ अंगोक अिमोनी,
अगवे मोटा - चोटा तौनी ।।

श्चकम श्चक दुपहश्चया ठहठह जेठक रौद कडका औ ।
िन...।।

!! अप्पन मिथिला !!

जान विचार भक्ति भावक भंडार अप्पन मिथिला ।
भोग बीच योगक पसरल संसार अप्पन मिथिला ।।
ई एहनोटा बेटा पौलन्हि,
जे त्रिभुवन मे सीता कहौलन्हि ।
अंगमेश्वनी अपरा माया,
कोर आबि कऽ बनली जाया ।
ब्रह्माण्डक ई अद्भुत् चमत्कार अपन मिथिला ।
भोग .... ।।

षुकदेवो ई महिमा जनलन्हि,
परमगुरु जनक कै मनलन्हि ।
भोगी कै देहाक मोह नहि,
योगी तमकथि तुम्मा रहि रहि ।
क्षिती की आकाषे केर घर-दार अप्पन मिथिला ।
भोग... ।।

जे सदैव सभ कै नचवै छथि,
आदि षक्ति माया कहवै छथि ।
सुऽखे से बनली सारहुतनी,
भूख लोभ कऽ भेली भुतनी ।
साके केलन्हि रङ्ग-रङ्ग कऽ शृंगार अप्पन मिथिला ।
भोग... ।।

गौतम - कणाद - कपिल - अयाची,
उदयन सन आचार्य भेल छथि ।
मंडन मिश्र हमरा कर्मकांडक लग,
जानक पंडित हाथ गेल छथि ।
न्याय दर्शनिक सम स पैघ टघार अपन मिथिला ।
भोग... ।।

षास्त्रि वैह' - हमजे सुनवै छी,
''काव्य वैह'' - हम जैह गवै छी ।
परम सोहनगर मैथिल अंगना,
सभ स सुठगर देशक बयना ।
कवि कोकिल विद्यापतिक कंठक हार अपन मिथिला ।
भोग.. ।।

आइ गरीब - मुदा फकरे' छी,
पथिया भरल मखानक लावा ।
बासमती चूडा सानल -
सुटूर अमौट गमकि औलक बाबा ।
भरल चडेरा, चूडा दहीक भार अपन मिथिला ।
भोग .... ।।

गौंगो दीदी चाह बनावथि,
कमला बेटी पान लगावथि ।
कोषी बहुना नि कुटै छथि,

बागमती थ्मरहा फअकै छथि ।

िऽरक लक्मी थ्यहुंसथि मौझ ओसार अप्पन थ्मथिला ।

भोग.. ।।

!!अय काकी!!

अय काकी, अय काकी बड़ कमाल कयलहै अय काकी ।

छथि सुबौक हमर ई कका,
ऐठल देह अचारक फका,
बनल रहय छथि सपरतीभ ई,
तैयो केहेन अपरतीभ ई,
उनटलहो इंश्नन पर श्नांगनल लाल कयलहुँ अय काकी ।
अय...
.... ।।

श्यतरलोक थि डाकथ्रा दै छी,
सातो पुरखा के उकटै छी,
फीमेल भोटर क्यू मे लागल,
आई अहौक घोघ अछ्र काढ़ल,
पश्नाक नाम कहबाक काल रंगताल कयलहुँ अय काकी ।
अय...
.... ।।

जखने अहौ दौत कै जौती,
तखने हैुनका लागथ्रा दौती,
स्मगकितऽ नरको नसीब नछ्र,
लाश बनल घूमथि गंजन सछ्र,

कका कफन के फाड़्ह - चीड़ र माल कयलहुँ अय काकी ।
अय..
.... ।।

कका जी मरला आसाम मे,
झुटे हल्ला भेल गाम मे,
सैुआते कोठी साम्ह नुकयलहै,
पझने बाम्स भात लऽ खयलहै,
थ्मनुर पोछ्छ कऽ ककाकै नेहाल कयलहै अय काकी।
अय..
............।।

!! संशय !!

भरल भवरि छै सजनी कोना पदवार हम करबै,
पडल सब भार छै सजनी, कोना पतवार हम रिबै ।।1।।

बनक्ष हम र प करे रानी, मुदापंकि श्रखाश्वन छी,
जडल घटवार छै सजनी, कोना इजहार हम करबै ।।2।।

सुभावक नाव पर हमरा जखन िऽकऽ चढा देतै',
अडल इकरार छै सजनी, कोना इनकार हम करबै ।।3।।

लगै छै माश्व के दोमऽ जुआनी माश्व कै के बीच बश्चवीचे,
मुदै सुकुमार छै, सजनी कोना तकरार हम करबै ।।4।।

कहा िश्वआर हम खसल कर आश्व ओ नीचा,
गहन अनहार छै सजनी, कोना भऽठाढ हम रहबै ।।5।।

!! युग परिवर्तन !!

थ्याडै थ्यात आब अंडे उडैए,
गोनु मौन भोनुए कै फुडैए,
बुचना घऽर पकडलक बुचनी बथ्या गेलै बहरैया ।

औ बाबू औ भैया की भऽ गेलै ले बलैया ।।

चोकटथ्या कथ्यअम्मा सन कथ्याया,
सासु सुपक थ्यानुथ्याया ।
बेटा पडले गाम बाप छथि,
खुटा ठोथ्यक खगथ्याया ।।

लाजो लगैए कहय पडैए अनसोहात सम सहऽ पडैये
मोछ उटा अपि पौआ केषपकुआ सेर सवैया

औ बाबू औ भैया की भऽ गेलै ले बलैया ।।

एके ितीती अथ्यरन परथ्यरन,
सएह पुरश कहवै छथि ।
अझुका नेता खादी तर,
अंडरवीयर परथ्यरै छथि ।।
एक पथ्यए मे ई अकरहथ्य,
दुहू जीव एके थ्यका पर
थ्यकच्चर देखऽ चलला लऽ कऽ चानी केर रपैया,

औ बाबू औ भैया की भऽ गेलै ले बलैया ।।

सोझ साझ सभ संचमंच छथि,
नेगडे खूब नचैए ।
पी0 एच0 डी0 सुनथि अवाक,
मुरखहवे भाषा दैए ।
लाल डोमघर कंठी बाना,
पंडित जी चलला पैखाना
बूढी माघ नहाथि जुआन कै जेठो मे जडैया ।।

औ बाबू औ भैया की भऽ गेलै ले बलैया ।।

!! वसन्तो-बारहमासी !!

नव - नव पफ्फल मे हसलै पुरनी कचनार गय ,
बूढ़ी महुओ तर लगलै - रऽसक पिार गय ।

मलय वसातक मंतर पड़लै,
थपटल हो ई आम मजड़लै,
चैबटी पड़का जुग जुगहा
पीपड़ नव पनकी स भड़लै,
थंकी कै थक् कऽ रहलै, आमकी दुलार गय ।
बूढ़ी महुओ तर .... ।।

बेली पथ्मयाबय कनैल कै,
बेल नुकावय रसक घैल कै,
सश्चयाबय नव गश्चत गात कै,
गश्कयाबय पछबा बसात कै,
कदली कश्माया कऽ रहले घोघे उघार गय ।
बूढ़ी महुओ तर .... ।।

शूल - शूल पर फूल बनौलक्षा,
खूब मालती मोन मनौलक्षा,
गम-गम कऽ उठलीह चमेली,
र सश्चा चम्पा सासुर गेली,
थवि‍ो भ्रमर पर लगलै भ्रनुरी बजार गय ।
बूढ़ी महुओ तर .... ।।

मंगल कुशल कहू की वेशी ?
सपने मे अयला परदेशी,
श्वर - श्यपास पर छल - छल प्याली,
भागऽ लागल कुि अकाली,
ओरक उस्सर पर खसलै रसवन्ती िर गय ।
बूढ़ी महुओ तर .... ।।

रहलहै शेष राश्वा भश्व जागश्व,
हुनक दोष की ? हऽम अभागश्व,
रसक अिह श्वन्् छल उछलल,
पाण मुदा बुने ले श्वदल,
लग - लग अकाशे चना िरती अन्हार गय ।
बूढ़ी महुओ तर .... ।।

!! दीनक नेना !!

देखही रौ बौआ, ई कौआ गवै छौ ।
सुनही रौ तोरे, कुचश्च सुनवै छौ ।।

एम्हर तौ सूतल छे मौझे ओसार पर,
ओम्हर ओ नौचै पुवश्चया मोहार पर,
पुरबा वसात बसुरी बजवै छौ............... ।
सुनही रौ .... ।।

तोरा लय बनलौ ने श्चस्कुट आ चौकलेट,
नोनो रोटी स ने भरतौ ई गोल पेट,
बातक मि्र स्पारलहरी अबै छौ................. ।
सुनही रौ .... ।।

बापे तोहर बनलौ परदेशी,
श्चाटी ने एलौ भेलौ श्चन वेशी,
मा केर श्चनायल क्याि जगबै छौ ।
सुनही रौ .... ।।

की बुझबैं ककरा कहै छै गरीबी,
सपनो मे सुख नश्च जतऽ शमजीवी,
लुती लगाकऽ नगर बसवै छौ .... ।
सुनही रौ .... ।।

कोरा मे तोरा सुताबै छौ श्वश्वायौ
झटकल औ अश्वहै रौ, नूनूक श्वाश्वाया,
तोहर उपास हमरा लजबै छौ,
सुनही रौ .... ।।

!! पतनी वरा !!

तेरा सुक्खक खाश्वार हम की - की नै करबौ गय ।
श्वना जान कै जीवौ पाण अछैतो मरवो गय ।।

तोहर नैहर घऽर बनायब,
कमर साश्व स हऽर मंगायव,
बापक चैड़ी लेबौ बटैया,
देश्व श्वहै तोहर ई कोठी मुनहर भरवौ गय ।
तोरा .... ।।

बैक लोन स गाय अनायब,
तकरा पोसब खूब चरायव,
अपने हाि दूहब भोरे,
चाह बनाकऽ देबौ तोरे,
तौ पड़ले - पड़ले श्यश्वहै हम प्याली भरबौ गय ।
तोरा ....
।।
जल्दी ए दश्कभंगा जएबौ,
रंग - श्वरंगक अभरन लयबौ,
तैयो ज समिन ने हेबै,
यैह ने हमरा पूब भगेबै,
श्वनु टीकट पकड़ा कऽ अश्वपुर जेहल पडबौ गय ।
तोरा.
.... ।।

!! अन्हर माथ्र !!

नक फकरो तऽ क्याहश्र गेली,
मृगनयनी कुमाश्र छै ।
देश्रब श्रायऽ औ नगरक लीला,
भारी अन्हर माश्र छै ।।

गाम - गाम मे लगनक मेला,
बऽर वरद बाछा बश्रागेला ।
अपने बाबा करश्रि दलाली,
बाप डोलाबश्रि बटुआ खाली ।
जकरा जतेक अश्रिक छै पूजी, तकरे ततेक पुछाश्र छै ।
देश्रब..
.... ।।

मेश्रकल इंजीश्रायर बालक,
छश्रिन महग सम स बेशी।
बान्हल छश्रा गरदाम गऽर मे,
देखाबश्रि अपन शान शेखी ।
टुटपुश्रयो कौलेश्रयो सबहक ऊँचे - ऊँचे आश्र छै ।
देश्रब..
.... ।।

िऽनक मश्रमा कते कहू औ,

बहुत लोक पाईक जनमल ।
जान विवेकक बात कतऽ छै,
जकरे टका सैह आरमल ।
सासु छुलाछथि बऽहु हिरोइन, शहर घुमकथि साथि छै ।
देखिव...
.... ।।

अपने भऽल पुरष छी कतवो,
सुन्दरि गुनगथियो बेटी ।
नहि मानत ई बऽर पक ज,
खाली अछि रथ्यक पेटी ।
केबर गेलि बलाथि मोख पर रपवती सुकुमारि छै ।
देखिव...
.... ।।

आदशकि सभ बात करै छथि,
अपना बेर कात ससरै छथि ।
गनबऽ काल गरीबो मनगर,
गनऽ काल सेठ पछडै छथि ।
जाहि घऽर "मैथिली" जनमलि मरघटी तकर दुआरि छै ।
देखिव...
.... ।।

नैहर सासुर केर डगरा मे,
बेटी भाटा बनि गुडकै ।

उपरागक रोटी क संग,

अपना नोरक तीमन सुड़कै ।

सासुर स नैहर िखा आता सुआते अयखा गाख छै ।

देखब...

.. ।।

!! उदनाचार्य !!

अभिनव अबि ललाम,
जतऽ उदयनक घरारी।
पावन करियन गाम,
जतऽ उदयनक घरारी ।। झांहमा पशु आरो किछु नहि,
हम मनुष्य छी उदयन ई कहि ।
पौलस्त्य विजय विराम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।
वर्णाति अछि भावी पुराण मे,
पक्षिभाषा के अछि पमाण मे ।
उतरल छल गोामि,
जतऽ उदयनक घरारी ।। हीर गवकि के कयल विखंडित,
जे छल बौदक उदट पंडित ।
पसरल सगरो नाम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।
भक्ति भावना मूक बनल छल,
नास्तिकता बन्दूक बनल छल ।
ि र - ि र लोक तमाम,
जतऽ उदयनक घरारी ।। भेल सनातन पुनर्स्थापित,
हत् उत्साह बौद अभिशापित ।
अभयि चार ािम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।
आओल मावि चमत्कार लऽ,
आचार्यक अंशावतार लऽ ।

पसरल ख्याति तमाम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।
आबि शान्त भऽ जगन्नाथ पर,
पौलनि हत्या दोष मुक्तिवर ।
भेटल यश अविराम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।
एक हाथ मे जान सुदर्शन,
तकर्क गदा दोसर मे सखण्डन ।
वाक्युद्ध अविराम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।
सूर्य पूब अगत्य असत्य अछि,
उदयाचित अवशा तथ्य अछि ।
नवदृष्टिक आयाम
जतऽ उदयनक घरारी ।।
तेसर कर कमलक कुसुमाजलि,
चतुर्थ मे शंखक करणावलि ।
नर भऽ पगटल श्याम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।
आइ जतऽ अछि तरवर पीपर,
छल एही ठौ आचार्यक घर ।
पर्णकुटी बिच गाम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।
हंस भट वेदान्त अरण्यक,
आंहबनल पहुँचल अधिला तक ।
छूटल सभ कै घाम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।
आगौ पूजा पुष्पक बारी,
पाछौ साग पात तरकारी ।

जीवन िम श्वाष्काम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।
ओ बौदक श्वदान िरंरि,
वैश्वक कै ललकाश्व घरे घर ।
भेल जयी सभ ठाम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।

अिभाव आत्मसम्मानी,
घर अन्हार श्चकरणा बश्वादानी ।
सम - चम श्चायम श्वराम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।
आश्च गेल उदयन स भीरऽ,
लागल जानक गुदी तीरऽ ।
जश्चना कुकुरक चाम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।

सकशास्ि मे ई अजेय छश्चि,
दशनि मे त अपश्चमेय छश्चि ।
गश्चति ध्याश्चात खराम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।
तकि- श्वतककि गोला छूटल,
पश्चामा पुंजक ज्वाला फूटल ।
अश्वरल आठोिम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।

एखनहु आश्वस्तकता उत्साश्चत,
कयलश्चा भगवत् भश्चक्त पवाश्चत ।
अश्चार द उगन्त, बलराम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।

अपना कै ओ श्वांह माश्चा कऽ,
लागल गरजऽ फाश्चा फाश्चा कऽ ।
श्चाभयि वारे आम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।   डीहक पौजश्च सुमन फुलओल,
बुश्चनाि आ आरसी आओल ।
मश्चापाठक केल ठाम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।
अर ण, तर ण, चन्रभानु, पवासी,
नमश्चि डीह लग श्चश्चिला वासी ।
श्चकल जपै छश्चि नाम ,
जतऽ उदयनक घरारी ।।   पीपर तर आचायिगुप्त छश्चि,
तेज पखार यदश्च शुशुप्त छश्चि ।
शतशा हमर पणाम,
जतऽ उदयनक घरारी ।।

!! एना जुश्चा नहाइ!!
दाइ अय पोखश्च एना जुश्चा नहाइ ।।
अहौ छोट साश्च हमर,
अयलहु दुआश्च हमर,
उश्चाते तै कश्च दै छी आइ ।
दाइ .... ।।

काछु जकौ पुनटै छी,

मौछ गकौ उनटै छी,
सौप जकौ जुटी दहाइ ।
दाइ .... ।।
औचर घननी पता,
तानल दू-दू छता,
मंगनी मे भीजै छथि भाइ ।
दाइ .... ।।

बौआ कै टकटकी,
बच्चा कै फकफकी,
कका कै भऽ गेलेन्हि बाइ ।
दाइ .... ।।

भैया बाश्नह कऽ बाना,
बनल छथि दीवाना
पिचट मे करता सगाइ ।
दाइ .... ।।

!! काटरक पश्चणाम !!

रहतऽ की श्चालकक ई पाय हौ,
कऽ लय बर फुटानी ।
तोरो कुमाश्च चाश्च दाय हौ,
मोन पश्छ. जयतह नानी ।।

बेटा आ बहु केयो काजो ने देतऽ,
कुन्हराश्च पुतोहु सभ कुनह सतिऽ,
श्यश्चहऽ श्चरचाई देल चाय हौ,
कऽ लय बर फुटानी ।

तोरो............................... ।

श्चहया स सेज तेश्च उठलो ने जेतऽ,
पोते तोहर नाश्च - नाश्च श्चश्चयेतऽ,
ढेपा दऽ कहतऽ ई लाय हौ,
कऽ लय बर फुटानी ।

तोरो............................... ।

टूअर कुकुर बूश्च कौरा पठेतऽ,
तऽर तेल ऊपर स नोनो ने देतऽ,
दात च्याश्च मश्च जयवह भाय हौ,

कऽ लय बर फुटानी ।

तोरो............................... ।

बेटा बकायल छह थयण्ड कोना देतऽ,
देबऽ जौ करतऽ तऽ पैठे ने हेतऽ
पेते बश्मा रश्ब्हऽ ढोरहाई हौ,
कऽ लय बर फुटानी ।

तोरो............................... ।

छोटका छह बाचल हौ आबो तऽ चेतऽ,
एश्ब्र पापे लोक परलोक दुहु जेतऽ,
समधिन स पेमक सगाय हौ,
कऽ लय बर फुटानी ।

तोरो............................... ।

!! कथ कोकिल - विद्यापति !!

जखनाका स देखल वयना, पौलिस परान गय ।
कव कोकिल नामे तखनाका, जानय जहान गय ।।
मिथिलाचल मे अभिनव आशा,
पसरल घर - घर अपन भाषा ।
भाव करण विचार शृंगारी,
पगटौलिस औचर तर स शंकर भगवान गय ।
कथ... ।।

मौज सेज पर योगक छाया,
बर अिह व्यक्तित्वक माया ।
उदर िावस पर बनल त्रिवेणी,
रपवती लग तीि िशेणी ।
शीखाक कालरात्रि मे चमकल शृश क दिनमान गय ।
कथ
....
।।

बैन बसंत नैन मे भादो,
िर पथि कात मे कादो ।
जल मे रखतहु पुरइन पात सन,
मरसिली मे रससमान सन ।
गाबथि रािपर लेखकन, मािव पर ध्यान गय ।

कथ्य कोश्कल...||

नित्य - नित्य श्वदापश्चानगरम्,
श्वस्फ़ीसुत सत् श्वावम् सुन्दरम् ।
जश्क़यो कऽ अवशेष बनल छथि,
मश्व कऽ अमर महेश बनल छथि ।
देहश्व शृंगारक काचन मंश्वर मसान गय ।
कथ्य .... ||

!! <u>रौ घुरना</u> !!

बात असले ई कश्चयौ, सुनै रौ घुरना ।
हऽम श्चदापश्च तौही हमर उगना ।।

पाश्च कतवो चढेश्चयौ -
छै पश्चामऽर ।
रऽस कतबो चटेश्चयौ -
छै श्चनजऽर ।
आब छुटतौ की, तोहर ई चाश्च पुरना ।
हऽम .... ।।

आइ बुश्चबुश्च कऽ बहुतो -
हम ाश्क गेश्चयौ ।
लावै चैकी उतारै -
आबै रे एश्चयौ ।
देह दाबै, लगावै रे जोड़ दुगुना ।
हऽम .... ।।

माश्चाश्कनी अनेरे -
खेहाश्क़ देलखुन ।
दुाख हमरो अश्छ -
तोरा जे गाश्क़ देलखुन ।
आंगनक कारकौआ, बनक सुगना ।

हऽम .... ।।

काश्च "बूचो" देखलकौ -
तोहर चमकी ।
हमरो पर चलौले -
ऐहेन बमकी ।
देख अयना मे लटकल केहेन घुघना ।
हऽम .... ।।

!! एक पर स एक !!

ककरो स क्यो कम की गय,
सबहक बडके बमकी गय ।
भुटी पश्चने टीक पकडलक,
गरदश्च दबलक नमकी गय ।।

बेटा करय एक श्चरसासन,
जानै बाप बेरासी आसन ।
पुतहुक हाि कौर अरगासन,
सासुक मुैह कितिी वासन,
सोझकी ठोकय ताल ताश्च पर
नेड़री झाड़ै झमकी गय ।।

एक टका केर मडुओ श्चकस,
बाश्चह पतौरा रखलहु जेबी,
गहुम पसाद तेल चरणोदक,
श्चषगुर प डीलर कै सेवी,
परैका जे भेलै से भेलै -
हेतै असली एमकी गय ।।

परजा पाण तेयागल नेता,
कहै जीवनक स्तर बढ़लै,
परसन दैत - दैत भनसीए,

अपने आब चूल्हा पर चढ़लै,
बुरबक बुझौ प्रकास मुदा ई -
धधकै बुखारक चमकी गय ।।

जोन महग माछक छै सस्ता,
भोजन बन जलेबी नस्ता,
आगौ स भऽ रहलै पका,
पाछा टाट टुटल चैफका,
मालिकनी मटकी मारै तऽ,
रहसै नौकरन छमकी गय ।।

पोता हाथि सुपक झुनझुनया,
बाबा मौगधि रऽसक गाड़ा,
मोन पड़ल कोबरक खीर औ,
पड़तल खण्ड लहरतल सारा,
बूढ़ी कै लटकल दू जुटी,
कटलै केश जुअनकी गय ।।

!! अजुकी दाइ !!

अजुकी हम दाइ छी,
अधिक अगुताइ छी,
अहौ बाट ताकू हमही परदेश जाइ छी ।
राति जगाय5 अपन चूसि खपड़ि ई घ5र दाबि ।
सौझ दय5 अपने स आंगन मे दीप बारि ।
अहक चार खडड़ल हम लहरल सलाई छी ।।
अजुकी ....

व्यर्थ भेल अनुरदान कोबर घर सूनसान ।
टूटि गेल पंजर पट पंछी भड़लक उड़ान ।
टपना पौरुषक कमाइ गाछ चढ़ि खाई छी ।।
अजुकी ....

पय वा पयतर कहाऊ, पयतम त5 पाइ भेल ।
सवोपरि टका तकर, हृदयजान आइ भेल ।
तै ने हम एक करये , अपने अघाइ छी ।
अजुकी ....

बेबी भ5 हेतै त5 अपने कै ल5 आनव ।
तावत कालक हेरसंग कै बड़का टा गुण मानव ।
पाश्चात्य रहल क5 रवा क5 नहाइ छी ।
अजुकी ....

!! शी राम केवट संवाद !!

हम सभ कते काल स नदी कात छी ठाढ़ औ,
पहुँचाबू ओझ्र पर औ ना ।।

संगश्च नव - नौतून पश्चवार,
कलकल गंगा जी केर ािर,
केवट पकड़ू - पकड़ू अपने स पतवार औ,
पहुँचाबू .... ।।

थ्यान्हलहुँ - थ्यान्हलहुँ औ सरकार,
थ्रिश्चकयै अवकि राजकुमार,
सुन्हलहै चरण कमल मकरंदक चमत्कार औ,
नश्चं पहुँचायब पार औ ना ।।

लागल फेर चरण मे िूश्च,
छुश्चते नैयो जेतै ऊश्च़
पोसब कहू कोन कोन तखन सकल पश्चवार औ,
नश्चं पहुँचायब पार औ ना ।।

पश्चने तरबा अपन ािआऊ,
तकवा बाद नाव पर जाऊ,
अपने जौ चाहै छी उतरऽ श्चन - देखार औ,
पहुँचाबू ओझ्र पर औ ना ।।

सुझाते पेमक अटपट बात,
पभुकेर श्महरऽ लागल गात,
पसरल मुँह पर मुश्क्की मन मे भरल दुलार औ,
पहुँचाबू ओश्ह्ज पर औ ना ।।

हुलसल मन उमड़ल आनंद,
िलक पद कमलक मकरंद
अमृत - ओदक थ्यथ्यते भेल सकुल उदर औ,
रघुवर भेलेश्मा पार औ ना ।।

!! राि थरह !!

श्याम होइछ परक पेम अिलाह हे,
तै थसथ जाह हमरा थसथ जाह हे ।

दीप बुझ रप कै जुआ हृदय मे िरह,
मोहवाती जरा तेल नेहक भरह ।

कऽ देतऽ थन्दगी कै ई सुडडाह हे,
तै थसथ जाह हमरा थसथ जाह हे ।

हऽम मिुबिन मे सौझक पझल ताथका,
तौ फराके बनावह अपन दाथका ।

उछ रहल अछ अनेरेक अफवाह हे,
तै.. ।

हम थमल राश केर खास संयोथका,
छी पवल गोप केर पेयसी गोथका,
घाट स खुझ चुकल अछ हमर नाह हे,
तै .... ।

मोन मे उतरी सागरक जल भरह,
लाख चुचुकारी बफि महल मे िरह,
हम तहू ठाम बरबानलक िाह हे,
तै .... ।

!! विरक्ति !!

क्षण भंगुर संसार सजिआ गय एकटा ठौ दुखक पहाड़ भरल अछि,
नेरक धारझर पिर सजिआ गय उमड़ल बनल दहाड़ चलल अछि ।

बचा सकब कहू कोना आन कै,
हम तऽ अपने डूबि रहल छी ।
हसा सकब कहू कोना आन कै,
अंगड़हार भऽ चूबि रहल छी ।
सजिआ गय विरसक सागर खार बनल अछि,
नोरक.. ।।

मृगी जकौ हम कौथि रहल छी,
झौखुर सऽ तन झौथि रहल छी ।
देखि - देखि संधिन सायकक,
आयुक छौटी माथि रहल छी ।
करब कोना पिपार सजिआ गय ठाम - ठाम सौतार भरल अछि,
नोरक
....
.... ।।

विरहक शून्य सुदूर देश मे,
विवसक कछिन करेज जड़ल अछि ।
रजनी अछि जोगिनीक वेष मे,

आंचर तर लुती पसरल अछि ।

विचार - वियोग केर भार सजओ गय लऽ कऽ कहार चलल अछि,

नोरक

....

.... ।।

विशेष:- स्व0 कवि अक्षर कविताक रचना सन् 1990 ई0 अपन अग्रिमांनीक मृत्युक वियोग मे कयलन्हि ।

!! कमौआन भौजी !!

भौजी नव सलवार अयौलथि - भैया पुरने सौची मे ।
आयौ रहला गामे बीबी सथसि पौलथि रौची मे ।।

भोरे आंगन कुचरल कौआ,
भैया पड़ल मािे तर पौआ,
सपने मे भौजी के पौलथि,
पेमे पासी पौज लगौलथि,
प्यासल - प्यासल औखि सटल सूखल खरकटल कौची मे ।
आयौ रहला गामे बीबी सथसि पौलथि रौची मे ।।

करथि आंगनक चैकीदारी,
काज भानसक लागथि भारी,
दहिना अंग जखन कऽ फड़कथि,
अभिलाषा मे छाती िड़कथि,
मनक व्यथा कौ कखनहु - कखनहु गावथि गीतक पौती मे ।
आयौ रहला गामे बीबी सथसि पौलथि रौची मे ।।

रोटी नहि ऐ बेलऽ आयल,
बना लैत छी दलिघटी,
एहि जीवन स मरने पका
ई हम्मर अंशाम थ्याटी,
आलनक लेल पाण अछि अटकल लटकल थरहक फौसी मे ।

अयौ रहला गामे बीबी सधसि पौलशा रौची मे ।।

भौजी सौझे आब गेली हे,
दूहल देह गुहल छशा जुटी,
भैया केर सौभाग्य सुशीतल,
बशा जायत ई गरमी छुटी,
रसल पशा कै कशायौ बौसधि गम - गम लौग अरौची मे ।
अयौ रहला गामे बीबी सधसि पौलशा रौची मे ।।

!! <u>कन्यादान</u> !!

आब बनवह श्वरान हय बेटी,
चूब्ब जयतह ई नोर,
डूब्ब जयतह ई ठोर,
त्याथ्रा िर मुसुकान हय बेटी ।।

बेटे जकौ तौ जनमलह आ बढ़लह,
बेटो स बश्लकऽ माईक मन भरलह,
काका आ काकी लगक दुलरैश्चान तौ,
अपना स्वभावे सभक मन हरलह,
बाबा ध्यान तौ बाबी क जान तौ,
बापक परान हय बेटी ।।

तोरा जनश्चते परायल अन्हश्वया,
पौजे समटलहु हम पसरल इजाश्वया,
घऽरक कुमुश्वश्चायौ हम परक चनश्चायौ तौ
ई कहऽ आयल कहौश्चायाक भश्वया,
आई िश्चक पूनम तौ काश्चाए स बश्चा जयवह,
दुश्चायाक चान हय बेटी ।।

लैह अशीरवाद करह अचले शृंगार तौ,
बनल रहह हुनक मुगिमनक शुद हार तौ
आशुतोष, मृत्युंजय शंकरे जमाइ हमर,

जाश्च गेलहु पुिी नश्चं गौरी अवतार तौ,
हम कऽ देलहु दान,
आइ भऽ रहलै जान,
अहौ बश्च गेलहु हय बेटी ।।

!! पोताक अटहास !!

पोता - खेत टी खश्चहान टी
आंगन टी दलान टी
बाबा आब अहीक कान मे,
श्चटही टहकै टी टी टी ।।

बाबा - प्याली पी भश्च चुका पी,
घट घट पी सूर का पी,
रौ कुलबोरन गाम श्चनौले,
लाते, जुता, मुका पी ।।

पोता - लती कू बा झब्बा कू,
अब्बा कू बा बब्बा कू,
आगौ पाछौ डोरा डोश्च मे
डोलय दू - दू श्चब्बा कू ।।

बाबा - जऽर छू जमौरा छू,
नीपल पोतल दौरा छू,
मुश्चाते घऽरक सीरा चढ़ले,
हश्चाते तुलसी चैड़ा छू ।।

पोता - लोक कहैए बाटो पर स,
टीली लीली फट औ

भेल अहौ कै खाटो पर
उतरब दुर घट औ

आब अहौ स डऽर कि ी केल
कतबो हुआ हुआ भूकू
हुआ - हुआ की - की हुआ,
मागय थ्य किरी नूआ,
मैया - िया साड़ी चाही
पुरश्च्त कै िती ूिआ
कौच बौस केर नऽव पालकी आबय चाथ्य कहथ्यया जू,
काशी .... ।

बाबा - कूथ्रि - कूथ्रि कठगील अुगै छी,
देखे टन दऽ चश्च्र जेबे
तोरे हम बरखी कऽ देबौ
हमर शाद तौ की करबै
सभ अपना नेना कै बरजू चेता दैत छी औ बाबू
जऽर छू .... ।।

<u>राजदेव मंडल</u>, शिक्षा- एम.ए.दय, एल एल बी.,पता- गाम-मुसहरनिया, रतनसारा(निर्मली),जिला-म[ि]बनी,प्रकाशित कृति- हिन्दी ,नाम-राजदेव भयंकर,उपन्यास- जिन्दगी और नाव,पिंजरे के पंछी,दरका हुआ दरपन।आबैबला मैथिली कविता संग्रह- अम्बरा। [आह जानक झंडा झापल अस्तित्व रहब अही सभक संग नदीक माछ बाट-बटोही सीमा परक झूला चीड़ीक जाति बाढ़क धा- ढलक बोल अङ्कुसक वीर मनोवाञ्छित चान परेमक अधिकार म[ि]र गीत नार बिहून [ि]ड़ हथियारक सभा घातक गाँ[ि] कुहेसक परदा युग्मक फाग- प[ि]ी आगमन जाति बदलैत बाट आतंकिया जानवर बाउल परक माछ का[ि] परक मुरदा भझाइत दीया जैत-अजैत पयास ऑफसक भूत कठुआएल-र प सुनगैत जिनगी अहाँक अगवानीमे महत्वाकाक्षक गाम एकटा चुप्पी छड़पटाइत लहाश र सल [ि]ीया बसातक [ि]जिनी अदृश्य आशा- तीन भाकि गपशप नव बिहार मुँहझप्पा टूटल बन्हन अढ़ाइ हा[ि]कि साथी कानैत अधिकार आबद हम पुन: उठब एकबेर दरपनक स्थिति भलन बा[ि] राष्ट्र-अराष्ट्र ढहैत महल अशु[ि]र नाचैत भूत माय यत्न बघनखा रंगक खोज कंटकमय नवनीत लाज भलन-बिछुड़न परिवारक गाछ त्रिशंकु अनमोल जिनगी मुखियाक जिन्ता (बाल कविता) क[ि]ीक गाछ (बाल कविता) नेहाइपर लेखनी झगड़लगौना

थ्यशाच गाछक बश्वदान हेराएल गाछक श्वस्सा लाल ज्योश्वा बीखक घैल पीतर अन्हारक खेल नाचक श्वखाद आँश्वखक पतीक]

<u>आह</u>

श्वअ पड़त आह

करणा अिह

बाहर शीतलता

श्वकन्तु भीतरमे दाह

चार भरसँ

घेरलक आह

लोक कश्व रहल

वाह-वाह

अश्व श्वश्वास

छूश्व लेब आकाश

श्वकन्तु पाइर तर अश्व

असंख्य लहाश

श्वाश्वआइत दास

तइयो

बढ़ल जा रहल मनक चाह

पार लगाउत कोन नाह

श्वनु लेने आह

श्वक भेश्व सकत

वाह-वाह

परंच,

नश्व छी लापरवाह

खोजब नवका राह।

जानक झंडा
अनन्त अभिलाषा
बदलि देलक परिभाषा
आकाश सभ ठाम भरती भऽ गेल
चिड़ै चह-चह
लोग सह-सह
गन्ि मह-मह
अन्न गह-गह
भरल जान-माल
टूटि गेल जजरि जाल
जान आब तोड़ए ताल
भागल तंि-मंि
सवि चक्र रहल यंि
आब नहि चलत
अंधविश्वासक हिकंडा
फहरा रहल
विजानक झंडा
चहुँदिश छँटि गेल अन्हार
भऽ रहल जए-जएकार
नित नूतन आविष्कार
अपरम्पार
बना रहल िराके स्वगसिन
किन्तु कतऽ सँ आनत
ओहन जन-मन

तइयो लगौने आस
कऽ रहल पयास
नञि जाञि झंडा आब कतऽ गड़त
कोन नव दुनियाक खोज करत।

झापल अस्तित्व
नहि जाइत कहियासँ
चापल अछि
हमर अस्तित्व
एकटा आकृतिसँ
झापल अछि
कखनहुँ काल
ओ देखबैत अछि िस
बारम्बार हटेबाक
हम कऽ रहल छी पयास
किन्तु ओ नहि छोड़ैत अधिबास
टकराइत रहैत अछि
हमरा मतिसँ
आबि अपना गतिसँ
देखऽ चाहैत छी हम
सरूप
नहि अछि हुनक कोनहुँ रूप
सुनने छलहुँ हम विस्वासमे
एहन अनजानके
देखि सकैत अछि शीसामे
हम मानैत छी
खास जानेन्द्रियसँ जानैत छी
भीतरमे ओ लगा रहल अछि फानी
सुनि रहल छी वि-वाणी

पाप्त करबाक लेल उत्कर्ष
करऽ पड़त आब संघर्ष
नहि तँ बना सकैत अछि हमरा जोगी
किन्तु अस्तित्वक लेल अछि
ईहो उपयोगी।

रहब अही सभक संग
चिचियाके सोर पाड़ैत
हमर कंठ दुखा गेल
पियाससँ जेना
ठोर सुखा गेल
चारिभर भरल लहाश
कऽ रहल अछि हमर उपहास
कियो नहि सुनैत अछि
हमर अबाज
कतऽ चलि गेलाह
हमर समाज
जररी छल
एहि रीतिके तोड़ि देब
भविष्यक हेतु
नव दिशा मोड़ि देब
अहा सभ तँ अपनहि छी अगाधि
अगसर होऊ छोड़ू विवाद
नहि रोकि सकत कोनो विघ बाधि
हम नहि कएलहुँ कोनहु बड़का अपराधि
हेओ एमहर आउ
नहि घबराऊ
नहि करब आब नियम भंग
नहि करब अहा सभके तंग
लिअ अपन राज

नञ्ञ चाही हमरा ताज

नञ्ञ बदलब आब अपन रंग

रहब अञ्ञ जुञ्ञ सभक संग।

नदीक माछ

नदीक कोखिसँ उछलल माछ
कऽ रहल हवामे नाच
याहि पहरक सगुनिआया
छोड़ए चाहैत अछि जलदुनिआया
देखऽ चाहैत अछि पवनदुनिआया
नदीमे रहितो नहि पाबि सकल पानिक थाह
सूखलमे जएबाक हेतु खोजि रहल राह
करऽ चाहैत अछि समाजक हित
बढ़बऽ चाहैत अछि नव दुनिआयासँ पीत
छोड़ि देत अपन पुरान बास
करत आब नव-नव पयास
खोजत नव-नव चीज
नव-नव बीज
लाभ होएत आकि हानि
जाचत
केहेन अछि हवा पानि
रचत नव इतिहास
नूतन चास बास
परन्तु
सुनने छल ओ अपनहि कान
कहने रहथि न बूढ़-पुरान
“कतबो नहि जाइहे ओहि दुनिआया
ओहिठाम भरल अछि खुनिआया।”

श्रकन्तु

नव अनुसंािन

मागैत अछ्छि जीवनदान

तखन भेटैत अछ्छि सम्मान

कोश्च-कोश्चके अन पाण

मुदा ओ अछ्छि अभागल

जलबून्द्द कड़ी अछ्छि लागल

श्चफल भेल ओ छल बलमे

पुना खसल ओश्च नदीक जलमे

तदश्च

बारम्बार कऽ रहल पयास

स्पर्शक हेतु मुक्ताकाश

छोश्च देने अछ्छि मोह एश्च जलक

कऽ रहल कमश्चिन्ता नश्च फलक।

बाट-बटोही
जाएब ओहि पार
खसौने घाड़
पुरान पहाड़
बरिसोसँ अछि ठाढ़
हमरा मागकि कएने अवरुद्ध
हड़पल भेल ुद
कतेको लगेलहुँ बाहिक जोर
दुखा रहल अछि पोर-पोर
इंच भरि नहि भेल टसमस
भऽ गेलहुँ हम बेबस
नहि थकयो दऽ रहल अछि साि
पहाड़ीपर पटकब आब माि
डूबा देबैक हम खूनसँ
अपना घामक बूनसँ
शिफल भेल छी देह जजरि
पाछा सुनैत छी असंख्य स्वर
स्त्री-पुरुष, बाल अबाल
आबि रहल अछि तोड़ैत ताल
गाबि रहल अछि समूह गान
पुना आएल शरीरमे जान
मनमे उठए लागल उफान
कतऽ गेल ओ पहाड़ी
काटसँ भरल झाड़ी

आहि रौ तोरी ई कोन बात
गड़ि गेल भूमि आकि भासि गेल कात
आकि नभमे उड़ा देलक बसात
मागभिऽ गेल तत्क्षण समतल
चल-चल चल-चल
जय हो जनबल
ताकि रहल अछि बटोहीके बाट
नहि कियो लगा सकैत अछि टाट।

सीमा परक झूला
ई जर्जर झूला
लगैत अछि जेना तुला
सीमापर लटकल अछि
पुरान डारिपर अटकल अछि
पेगापर झूलि रहल छी
आब स्वयंके बिसरि रहल छी
अविराम छोरसँ
अपन बाहुक जोरसँ
लगा रहल छी आस
नहि छी निराश
आस-पास
पभातक उजास
कखनहुँ एहिपार
कखनहुँ ओहिपार
बारम्बार
दोहराबैत छी कायव्यापार
कट-कट-कट-कट
टूटि रहल डारि
दैत गारि
तइयो सम्हारि
रितीसँ नाता जुटि रहल अछि
गाछसँ झूला छूटि रहल अछि
एम्हर आबिक ओम्हर खसब

रहब स्वच्छन्द आकि जालमे फँसब
जीएब वा मरब
फेर किएक डरब
चाहे खसब एहिपार
चाहे खसब ओहिपार
रहत इएह रिती
इएह भाव आर विचार
सुख हो वा दुख
रहब अन्तता मनुक्ख।

चीड़ीक जाश्ला
ि यल पाश्व पर
लटकल लहाश
लऽ कऽ पहुँचल
नीड़क पास
ओ जे ओकर नश्च
श्चकन्तु ओकरे छल
लहू सँ भीजल तन
कण-कण
सशंश्चकत अश्छ चीड़ीक मन
तइयो
मातृत्व श्चनेह
श्चयाबए चाहैत अश्छ
श्चवयाबए चाहैत अश्छ
लोलमे राखल अहराक दाना
अनजान बच्चा गाश्व रहल गाना
पाछू लागल श्चाकारी
बनल अश्छ अश्चकारी
जेकरा भूखल आँश्चवमे
तरजू अश्छ लटकल
स्वादक बैटखारा
अश्छ मनमे अटकल
एकटा पलड़ामे पौढ़गात
दोसरमे अश्छ नवजात

घायल देह

टुटैत नेह

टप-टप चुबैत खूनक बूनसँ

रिती भऽ रहल स्नात

पूछि रहल अछि ठाढ़ै

अपना मनसँ ई बात

आबऽ बाला ई कारी आ भारी राति

कि नहि बाचत हमर जाति...?

बाश्ढ़क श्थ्यि-

पश्चल

2008 ई0 मे कुसहा -कुसहाक श्माकट टूटल कोसी बा ताश्म कारणे आएल पलयंकारी बाश्ढ़क श्थ्यि-

(सघन अन्हार। भयंकर श्वस्फोटक। श्म्याश्याआइत लोकवेद।)

कुसहा कोसीके बा टूश्ट गेल
लोक सबहक भाग्य फूश्ट गेल
ुद कोसी तोड़य ताल
गरश्म रहल अश्छ जेना काल
भाश्म रहल अश्छ
घर-दुआश्व, जान-माल
र ी-पुर ष, बाल-गोपाल
कल-कल, छल-छल
अगा जलराश्श
बश्ढ़ रहल पल-पल
डुबबैत, भसबैत करैत एकटार
आश्ब रहल गरजैत कोसीक ार
हे रौ जाग-जाग
जल्दी भाग
तँ बचतहु जान
वैह महरानी बचा सकैत छउ पाण
बाश्ढ़ नश्म ई अश्छ महाश्वनाष
भाश्म रहल

असंख्य लहास।

(दोसर दृश्य- सम्पूर्ण शिरीर जलमे डूबल। स्याफ हजारो हाि पाआके उपर भसैत रहल अछि।)

दुइ बरखक शाशु
मायके लहास पर चढ़ल
जा रहल अछि बढ़ल दूि दबैत
खेल रहल अछि
झलहा
कोसीक भरल िर मे
चलहौड़ आ कौआ के झपट सँ
कखनहुँकाल
विकराल
करण गीत
फूटि पड़ैत अछि
ओकरा कंठ सँ
केनाक बाचत एखन चंठ सँ?

तेसर दृश्य- (साझक आगमन। चारभर कसिया जल पसरल।)
मोटगर गाछ पर
बूढ़ बकोली मड़र
लटकल अछि
डर सँ सटकल अछि
नहि बाचल एकोटा माल-जाल
आयल ऐहन काल

नहि बाचल एको घरक चार
डूबि गेल पूरा परिवार
बाचल अछि वंशक टीका एकमा ि
तीन बरखक पोता
ओकरो कोना बचेताह
नीचा अछि तेज जल ि र
ऊपर अछि फ ि र तैयार
शखाा शाखा पर पाइर सम्हारि
एक हा ि सँ ि ने डारि
दोसर हा ि सँ पोता के बान्हि
कपार पर बाजय कौआ काय-काय
गाछक पती सभ साय-साय
साप ससरल बकोली दिश
ओकरा आँखि मे भरल अछि रिस
ओ ताकि रहल अछि बाढ़ि दिश
सपनिआकट फोफकारि रहल अछि
बकोली ि र-ि र कापि रहल अछि
हड़बड़ी मे हा ि ढील भऽ गेल
डूबला पानि मे पोता भासि गेल
बकोली के भाग्य फूटि गेल
आब ओ कोना जीअत
फाटल मन के कोना सीअत
बाढ़िक पानि गोंगिआया रहल अछि
गाछ पर बकोली बोमिआया रहल अछि।

चाश्रम श्यि- (जनशून्य मे मुईल- माल-जाल, जीव-जन्तुक लहासक ढेरी।)

एकसश्च

अ निग्त सि ी

पश्चशान्त

मुख क्लात

बैसल अश्छ िरक कात

देह स्नात

श्यअत अश्छ श्क मुइल

साइत सोश्च रहल अश्छ इएह बात

एखनश्च श्चकलल अश्छ

संघषकिऽ बाश्ढक िरा सँ

बहराएल हो जेना कश्छन कारा सँ

नश्च अश्छ सुश्च अपन देह के

न गेह के

अ िचेतन मे डूबल

श्क बाश्य रहल अश्छ से नश्च जाश्न

टप-टप

देह सँ चूश्च रहल अश्छ पाश्न

दूई गोट भक्क जेका जेका रक्क

पहुँश्च गेल अश्छ पास

देह सँ चुबैत जल देश्ख

ओकर बढ़ल जा रहल श्ययास।

पाचम श्यि- (कतौ-कतौ उँचगर दूह पर बाश्ढ सँ बचल लोक

सभ बताह जेका एक दोसर श्वष तकैत।)
उँचगर बाि पर
बाश्च सँ बाचल लोक
सभके माि‍पर नाचैत शोक
आठ बरखक छौड़ी
िने अश्च एक गोटेक गोड़
आँश्च सँ बहैत अश्च नोर
“हमर माय-बाप हेरा गेल
भैया पाश्म मे घेरा गेल
हओ बाप कतऽ जाएब
कतऽ रहब आब श्क खायब”
आँश्च गुआश्च बाजल ओ
“हमर पश्चवारक तँ अश्चए न कोनो ठेकान
ऊपर सँ कऽ रहल छँ तु छान बान्ह
िरज ि‍र गे अभागल
नऽ तऽ भऽ जेबे श्चाषचय पागल।”

छठम श्यि- (राहत श्वाश्वर। कात-करोटमे ठाढ़ लोक सभ जेना पाणश्वहीन भेल।)

ओ सी अश्च
श्क अश्वपंजर माि
श्वाशु के सटौने अपनश्च गात
बड़-बड़ा रहल अश्च कात श्चं-कात

राहत कर्मचारी कऽ रहल काम

ऑफिसर पुछैत अछि कि भेल नाम

ओ कहैत अछि-

हमर बच्चा बेराम

करम भेल बाम

थालासक घोरल सतुआ चाटि

लेलहुँ काटि

हम तीन दिन

थान-थान

नहि अएलाह कोनो सरकार

केकर करब हम जय-जयकार

हमरा पूरा अछि-षक

तू छहक असली ठक

ओकयक कहैत छहक

खा ले सबटा सतुआ एकेबेर

साझ मे आबि जेतौ राहत

सेरक-सेर

एखनहि खा 'के' जान बचा

सरकारक मान बचा

खा ले भरिपेट पाण बचा

आन दिन नहि आयल

आब कि आयत

अपन पेट भरत कि हमरा दिआयत

हेओ सरकार अपरम्पार

हम ओहिना नहि फानैत छी

सब किछु जानैत छी
जखन तक सतुआ, तखन तक आस
सठि जाइत सतुआ तँ भऽ जाइत विनाश।

(अन्तमे)

जीनगी जीनगीक कि बाचि रहल अछि
भूत भविष्यक छाह नाचि रहल अछि
काल इतिहास के बाचि रहल अछि
अवगुण आब गुणके झापि रहल अछि
सरकार दुःखके नापि रहल अछि।

श्वलक बोल

शब्द नश्व रहल श्वलक बोल
ते नश्व रहल ओकर मोल
औनाइत रहल ओ अपनश्व खोल
कतबो करब अनौिल
बजैत रहैत छी अमरीत बोल
भीतर रखने बीखक घोल
नाश भऽ जाएत जीनगी अनमोल
जश्वया टघरत बीखक घोल
एकश्वन खुश्च जाएत सभटा पोल
मुखमे राम बगलमे छुरी
सभ करत तब िश्क़-िश्क़
श्वलक बोल अश्च शब्दक जान
दुनू श्चश्च देत मान सम्मान।।

अहिंसक वीर

अहा कहैत छी- कायर बनबसँ नीक
हिंसक भऽ जाएब से अछि ठीक
लोग कहत- वाह-वाह
किन्तु हमरा लगैत अछि ई अधलाह
कायर मारि दैत अछि अपने आपके
दाबि लैत अछि अपन दुख आ तापके
हिंसा कऽ सकैत अछि दुरजन
हिंसक नष्ट कऽ सकैत अछि परिजन
दुनूमे अछि अपन-अपन अवगुन आ गुन
एहि दुनूसँ ऊपर अहिंसक वीर
धीर- गम्भीर
दृष्टिमे हो आमजनक पीड़।

मनोवाञ्छित चान

दीर्घकामनाक भऽ गेल अवसान
लगमे अछि बैसल मनोवाञ्छित चान
दमकैत आ गमकैत किशलय समान
किन्तु देखि ओकर मुख म्लान
बिसरि गेलहुँ हम मिलन गान
पसरल नोर आँखि आर मुख
कहि रहल अछि एक-एक दुख
भाग्यसँ भऽ गेल बाहर
फेर ने हुअए जाए पाइर-
शंकासँ भरल ओकर मन

नव स्पर्शसँ कंपित तन
ते राखए चाहैत अछि सम्हारि
दूइ बून आँखिसँ नोर झड़ल
हमरो तब बाजय पड़ल
धीरज धरि छोड़ू पुरान आस
नूतन अछि सोझा तकरापर कर विश्वास
घुरि अएलहुँ अहा अपना घर
हमरा रहैत नहि कर कोनो डर
फुलाएल एक एक अंग
बजैत चलल संग-संग
जेकरा छोड़ि अएलहुँ सेहो छल हमरे घर
नहि छी देवता अहूँ छी साधारण नर
शून्य बाट अछि ताकि रहल
आगूमे अछि धुँध भरल
तइयो ओहिपर चलहि पड़ल।

परेमक अधिकार
आँखिक भीजल कोर
धारल दूइ बून नोर
जाहिमे देखलहुँ अहाक र प
ओहिना स्मरण अछि
दुलहिन बनल ओ र प-अनूप
कनेक तेज सासक वेग
नहु-नहु उठैत डेग
नैहरसँ सासुर देश
हमरा छातीपर फाड़ैत चीस
आँखि बनल भादोक झहरैत मेह
सँगीसँ टूटैत नेह
नहि देखि कोनो उपाए
निशब्द फाटैत हमर हिरदय
कतेक अहा सहने रही
बिनु शब्दे कहने रही-
‘‘हमरा दाबने अछि
माए-बाप आर समाज
ते होइत अछि लाज
किन्तु अहा छी पूरा डेरबुक
पुर ष छी तइयो छाती ि‍क-ि‍क
नहि कएलहुँ परेम जेना कएलहुँ चोरि
हमरो जीनगीमे देलहुँ जहर घोरि
पश्न उठैत बारम्बार

साहस नहीनके छै पेम करबाक अधिकार”
बैसल रहि गेलहुँ पछताइत
जीनगी भऽ गेल अन्हरिया राति
चलैत रहल काल
उठैत रहल मनमे अहाक सवाल
आइ सुनलहुँ दूटा पाति भोरे-भोर
आँखिसँ खसल अनायास दू बूंद नोर
कहलहुँ अहा-
“बीतल छन के आब बिसरि जाउ
जीनगीके दोसर ढँगे सजाउ।”

मिृर गीत

अपनहि छातीमे छुरी मारि

हम काटै छी बपराहैड़

थार रहल अछि बून-बून

ितीपर हमर खून

के मारलक एकरा छुरी

ओकरो आइ तोड़ि देबै मुड़ी

लोग सोचैत अछि के छल एहेन मरमी-घाती

किन्तु असलमे छी हम स्वयं आत्मघाती

कतऽ सँ आएत एहेन उकिा

जे देत हमरा एहिसँ मुक्ति

कतऽ सँ टूटत एहिसँ नाता

स्वंय छी हम एकर जन्मदाता

केना पसन भऽ नाचैत अछि लोग

हमरा कोन िऽ लेलक रोग

सभटा भेल अभौग

समए भेल जाइत अछि गत

हमरो ताकऽ पड़त ओ पि

जाहिसँ छुटए बीख भेटए अमरीत

हमहूँ गाएब मिृर गीत।

श्चार श्चहून ि ड़

गौआ-घर आ आओर बश्चयात
श्चकयो नश्च बुश्च रहल अश्च बात
श्चकएक नश्च वर कऽ रहल श्चन्दूर दान
श्चक श्चकयो कएलक हुनक अपमान
बराती सभ तोड़ए तान
केहेन अश्च ओछहा खानदान
बन्न भऽ गेल अश्च मंगल गान
श्चनूर लेने ठाढ़
दूल्हा भेल अवाक
नाश्च रहल अश्च मा िक चाक
फाश्च रहल सभ कातश्चं कात
कन्याके कहा अश्च मा ि
श्चन्दूर कतए देल जाएत
देखतश्च तँ सभ गोटे पड़ाएत
श्चार श्चहून ि ड़ बैसल अश्च
मनमे संशय पैसल अश्च
नश्च अश्च सौ ि नश्च अश्च माग
पीने छह सभ गोटे भाग
श्चकयो नश्च देश्च रहल अश्च साइत
श्चनूर कतए देल जाएत
बढ़ल जा रहल अन्हश्चया राश्च
एक-दोसर श्चश्च रहल अश्च ताश्चक
अकचकाइत
गौआ पुछैत अश्च

श्कएक रसैत अश्क
दूल्हा आर की लेताह
ओझा लेखे गाम बताह।

हथियारक सभा
जमा भेल सभ अस्त्र-शस्त्र
पहिरने अछि खूब आया वस्त्र
उच्च आसनपर संच-मंच
बैसल अछि पाच पंच
सभसँ पैघ कोन हथियार
निर्णय करबाक लेल तैयार
के अछि शेष के अछि हीन
गुण-अवगुणके रहल अछि ध्यान
कएने होएत जे पैघ संहारक काज
वहए पाओत ई रक्तिम ताज
कतेक बेर भेल अछि पहार
कतेक कएने अछि नरसंहार
सतयुगसँ कलियुग धरि
आधुनिक युगसँ वर्तमान धरि
सभ हथियारक बनल अछि इतिहास
के कतेक बनौलक दास
कतेक के कएलक विनाश
पाषाण, लाठी आर अणुबम
कियो नहि अछि ककरोसँ कम
शक्तिक मदमे सभ रहल फानि
ताल ठोकैत अछि देह तानि
वीर, महारथीक जकाँ बनल छलहुँ भक्त
पीने रहि ओ अछि अनपोख रक्त
सभ बाजए-हम छी जेठ

हमरा सोझा सभ अछि हेठ
पंच बजलाह-
सुनह लगाबह ध्यान
खोलह अपन-अपन कान
तब भेटतह आजुक सम्मान
बिनु देहसँ गिरौने रकत
कऽ सकैत छह दोसर जुगत
आँखिसँ बिनु गिरौने नोर
दोसर तरहे लगा सकैत छह जोर
बिना कोनो दबावके जे करबौने होएत स्वीकार
अपन सवोतम विचार
बिनु हिंसाके जे कएने होएत हृदयपर राज
ओकरे भेटत ई अमूल्य ताज
एखनुक निर्णय इएह भेल ठीक
आगू आएत विचार आओर नीक
पंचक निर्णय सुइन
सभ लेलक कान मुइन
सबहक मापिर गिरल गाज
अहिंसा दिश बढ़ल ताज
ककरो मुँहसँ नहि फुटय बकार
सत्य अहिंसाक जय-जयकार

घातक गंध

आसमानसँ बरसैत आगि

भयभीत जीव रहल अछि भागि

लाल-लाल जेना काल

रूप विकराल

सँ बँचबाक हेतु

आशयके अन्वेषणमे

भागि रहल अछि हरिणी

कतऽ भेटत निरापद शरणी

सोचैत मनमे

गहन बनमे

खोजि रहल अछि छाया

बचेबाक लेल कोमल-काया

दौड़ि रहल अछि

छोट-पैघ तरुवरके छाहमे

सनाहमे

किन्तु गाछ सभसँ निकलि रहल

तीवर आर मन्द

घातक दुर्गन्ध

ओ सहि नहि पाबैत अछि

हिरनको कहि नहि पाबैत अछि

जेना बनि गेल जीभहीन

गनि-गनि काटि रहल अछि दिन

किन्तु कहिया तक

काटत झड़क

ते ओ जना रहल अछि

आ बना रहल अछि

फेसमास्क आओर छाता

मोकाबला करत आब ओ ओहि दुर्गन्धि सँ

कवच पहिरि ठाढ़ भेल अछि

अपनहि सुगन्धि सँ

1008 || विदेह सदेह:३४

कुहेसक परदा

कुहेसक सघन आवरणसँ

आवृत भऽ गेल छी हम

आजनि पिपर

भयास्त भेल

खोजैत रहल छी

आर पश्चात मागि

गंतव्य पाथक हेतु

किन्तु दिशा भ्रमित भऽ गेलासँ

जात नहि भऽ रहल अछि

जे पूरब चलि रहल छी वा पश्चिम

तखनहि

हमरा देहसँ

टकर मारैत अछि

तीक्ष्ण पकाश

झन-झना उठैत अछि मन

चौन्हिया गेल चकु

सँ देखैत छी जे

हमर छाह

ठाढ़ भऽ गेल अछि

भूत बनि

कुहेसक परदापर

ओ करए चहैत अछि भयभीत

हमरा

किन्तु

इजोत देखा देलक बाट
जे अछि सपाट।

युग्मक फाग-पाि

(पि म)

फगुआक रंग

लागल अंग-अंग

जागल अनंग

अहा नञ्ज छी संग।

(श्वतीय)

शीत भागल

बसंत जागल

श्वक पागल

कतए छी अभागल।

(तृतीय)

श्वतुराजक सुमन

झूमैत कण-कण

श्वपाश्वत मन

अहा छी दुसमन।

(चतुि)

कहने रञ्ज- नञ्ज घबराएब

हम शीघे आएब

आब कतेक कमाएब

ई मिास पुना पाएब।

(पंचम)

परेमक संगञ्ज श्वरह रहत

जीनगीक संगञ्ज श्वरह रहत

आब कतेक मन दुख सहत

आउ न फगुआ की कहत।

आगमन

अहाक आगमनसँ

अंत भऽ गेल

आँखिक पतीक्षा

आस छल आएब अहा

किन्तु

नहि जनैत छलौ

आबि सकब अहा

एतेक शीघ

सोचने छलौ

अहाक स्पर्श होएत

मृदुल आओर कोमल

मलयानिल सन सुखद

परन्तु

अहाक अएलासँ

झन-झना उठल

हमर हृदय

किएक तँ

अहाक आएब नहि अछि सच्चा

कहि रहल गोदीक बच्चा

पतझड़ी मानगीक आब

हमरा करए पड़त सामना

तइयो अहाक लेल

कऽ रहल छी मंगल कामना।

जाइत

ओ कहलथि-

'कनेक भऽ जाउ कात

आर देखू अपन पएर-पात'

हमरा कहए पड़ल-

अपन नाम-गाम

आओर काम

बजलाह ओ महाशय-

'हमर आशय

नहि बुझि सकलहुँ साइत

हम पुछै छी जाइत'

मूनने आँखि ओ नाक

हम भऽ अवाक

देखैत रहल छी हुनक मुख

ओ नहि बुझि सकलाह हमर दुाख।

बदलैत बाट
सोझा राखल दर्पणमे
देखैत स्वयंके
छुटय लागल निःश्वास
आ ओकर उच्छ्वासक भापसँ
बनए लागल दरपन मध्य
नव-नव आकृति
कोनहुँ सुखद कोनहुँ दुखद
जेना,
वर्तमान, भूत, भविष्यक खेतमे
उपजैत रहल हो
नव-नव कल्पना
कोनहुँ कल्पित कोनहुँ स्मृत
....
किन्तु
जठराग्नि तेज भेलापर
बिसरि गेलहुँ अपनाके
आहारब
बिदा भऽ गेलहुँ
भनसा घर दिस
रोटीक खोजमे।

आततायिया जानवर

बन्हने छी बुद्धिक मजगूत कड़ीसँ

एहि भीतरिया

हिंसक पशुके

तइयो,

कछमछाइते रहैत अछि

कनेको दोग भेटलापर

ठाढ़ भऽ जाइत अछि-फन-फनाक

आ हम उनटे पाएरे

आपस भऽ जाइत छी

पुना जंगली युगमे

किन्तु

भऽ जाइत अछि

डर.........

स्मरण कऽ

ओहि युगक समस्याक

तँइ आब करए पड़त

सशक्त

एहि कड़ीके

बाउल परक माछ

तप्त रेतपर

फड़फड़ाइत माछ

काँपि-काँपि

कऽ रहल नाच

रेतापर फाड़ैत चीस
उड़बाक लेल आसमान दिश
ओ उछलि पड़ल
अभागल
देहसँ झड़ए लागल
चाँदीके कण
झूमि उठल
कतेको आँखिक मन
जरि रहल अछि
माछक तन
सुना रहल ओ ददभिरल
जीनगीक इतिहास
डूबल हम
आनन्द लोकमे
कऽ रहल छी परिहास
कहियो छल नाचैत ओ
स्वजन-परिजनक बीच
जालमे फसा कऽ मछेरा
लओलक तटपर खीच
ओ कानल चिड़चिड़ाएल
किन्तु,
बचाबए लेल
कियो नहि आएल
आब जतए जाएत
नोचत औकर माँस

छीन लेत चलैत साँस
तइयो
नक्ष अछ आकाश
घेरासँ
छुटबाक कऽ रहल पयास
छुटैत कऽ जतए थैरल
बाउलसँ चार भर थैारल
आओर ओ जे छल
जीनगी-जल
सपना भऽ गेल
गरम रेत अपना भऽ गेल।

कान्हि परक मुरदा

हमरा कान्ह परक मुरदा बाजैत अछि
पुरना गप्प नव अन्दाजे साजैत अछि
कखनियो दोस जेकाँ बझायाबैत अछि
कखनियो दुसमन जेकाँ लखायाबैत अछि
हम भागए चाहैत छी दूर
किन्तु बेबस, असोथकित देह
भऽ गेल अछि चूर-चूर
कान्हपर सँ एकरा हटाबए चाहैत छी
भार किछु घटाबए चाहैत छी
तीनठाम नहि तँ एकेठाम
पहिले करए चाहैत छी इएह काम
फेकए चाहैत छी कंधासँ
बचए लेल गुलामीक फाँसीसँ
चुबैत अछि ओ हमर रकत
तइयो बनल छी हम भगत
हमरा चार भर पसरल रहल बीख भरल दुर्गन्धि
फाटल रहल नाक केहेन अछि भयावह गन्धि
किन्तु ओ हमरा कान्हपर अड़ल अछि
हमरा माँस आर खूनमे गड़ल अछि
मृत आओर जीवन्त लहू मिलैत रहल
फूल कम आ बेसी काँटे खिलैत रहल
सर,
नहि सहब आब आत्मघाती पहार
हमर कान्ह आर बाँहि तना कऽ अछि तैयार

चाहे,
टूटि जाए सास
बहि जाए खून
उखड़ि जाए मास
अछि एहन विश्वास
हटत लहास
फैलत उजास।

श्रझाइत दीया
भुक-भुकाइत दीपक
सम्पूर्ण शक्तिसँ संघर्षरत
पराभूत करबा लेल
सघनतमके
लगा रहल
देहक बाती
जीनगीक तेल
किन्तु,
अकि पयास भऽ रहल फेल
एक रतीक बाती
दूइ बून तेल
कतेक कऽ सकत खेल
भऽ रहल अवसानक इजोत
पसरि गेल जेना अन्हारके नोत
फेर फक्क दऽ मुझा गेल
अन्तिम सन्देश सुझा गेल
पभुत्व सम्पन्न पओलक राज
घुप्प अन्हार पहिरलक ताज
चोर उचक्काक अत्याचार
नहि रोकि सकताह अन्हार सरकार
हे पकाश, जुनि खसाउ नोर
आबि रहल अछि नूतन भोर।

ैश्चत-अश्चत

गप्प एकटा गूढ़
कहने रहश्चि गामक बूढ़
“अपन ीया-पुता जाश्चा
श्चाअ हमर बात माश्चा,
साँपक मन्तर आ खाटक बाश्चा
अनकर जीवन अपन हाश्चा”
“सुनू यौ बाबा
हमरो अश्चछ दावा
अनकर श्चत तँ अपनो श्चत
दोसराक करब अश्चत
अपनहुँ भऽ जाएब कश्चयो श्चत
पड़ोश्चया घरमे जँ लाश्चा जाए श्चाग
तँ ैश्चक हम ओश्चठामसँ जाएब भाश्चा
लगत पसाही उड़त कुकवाहा
हमरो घर भऽ जाएत स्वाहा”
उनटा घुमए लागल माि◌क चाक
भऽ गेलाह ओ अवाक्।

पयास

बौझक लगौने चुटा
उखाड़ि रहल छी खुटा
किन्तु नहि अछि ई खुटा
भऽ रहल भान
ई अछि बरसो पुरान
सुखाएल गाछ रोपल
बाउल माटिसँ झिपल
केहेन जाल फेरा देने छी
रोपल गाछमे खाड़ा देने छी
जे अहा बूते नहि होएत गारल
से हमरा बूते कोना हएत उखारल
तदपि
लगा रहल छी जोरपर जोर
फेलबे करते छिड़बो-छिड़
कतेको जोड़ी आँखि हँसैत अछि
हँसले घर कते बेर बसैत अछि।

ऑफिसक भूत

सभ कुरसीपर भूत नाचैत अछि

आँखि आ आँगुरीसँ दाम बाँचैत अछि

कुरसी अछि वएह

बदलैत अछि ओकर मुख

किन्तु नहि बदलैत अछि

हमर दुख

सभ मुखपर अछि ओकरहि राज

मुँह नहि खुलत तँ होएत कोना काज

कुरसी हो पैघ वा कि छोट

कऽ रहल चोट कऽ रहल-चोट

ओ नचबैत अछि ओकरा मनके

शोणित पिबैत अछि सा ारण जनके

हेओ समाज

कोना होएत

हमर अटकल काज

अछि विश्वास

लगौने छी आस

आएत कोनो गुणी आर सच्चा दूत

जेकरा देखतहि भागत भूत

वएह करत सबहक उपकार

भऽ जाएत हमरो उदार।

हे पकाश, जुनि खसाउ नोर

आबि रहल अछि नूतन भोर।

कठुआएल-रूप
एखन मुरूतके पूजैत
आ गबैत मंगल गान
हम भेलहुँ जवान
मनमे छल पूर्णआस
भरल आत्मविश्वास
विपत्तिमे होएत सहाइ
दैत रहलहुँ दोहाइ
करैत रहलहुँ जय-जय
किन्तु हुनका सोझेमे
सभ कुछ हेरा गेल
हमरा सँगे भेल अन्याय
ओ देखैत रहल निरूपाय
नहि भेटल मेवा
कि एक करब सेवा
छिड़िक कऽ देबै फेक
नहि रहए देबै रेख
ओहिसँ कँपैत हम
चला देलिऐ एक लट
हुनका माथापर
आ गातपर
टूटि कऽ भऽ गेल छहोछित हम भेलहुँ आश्चर्यचकित
पर आशाक बीपरीत
मुरूतक भीतरसँ
निकलल भयावह रूप

टुकुर-टुकुर तकैत
भेल अछि चुप्प
हमरा दिश देखतहि
ओ लटुआ गेल
लाजसँ कठुआ गेल।
सुनगैत जिनगी
छाउरक ढेरीपर
मिझाइत जिनगी
सोचि रहल अछि
अपना शक्तिक विषएमे
"डाहि सकैत छलहुँ
सम्पूर्ण विश्वके
किन्तु पड़ल छी आइ
उपेक्षित सन
जीबि रहल छी
एहि आशापर
जे उठत जोरगर बसात
करत हमरा साि
पहुँच जाएव भुस्साक ढेरीपर
आ पुन: लहलहा उठब हम
तखन डाहि देव ओहि महलके
जे रँगल अछि शोणितसँ
खाक कऽ देव ओहि जंगलके
जाहिमे नुकाएल रहैत अछि

कुर्मािणा करैत श्चशंक जन्तु
आ हम अपना ििरासँ श्चाखब
नभपर नव इश्चाहास।”

अहाँक अगवानीमे
हम सोचलहुँ-भेल अछि
शुभागमन
किन्तु बसात बनौलक
पदचापक भम
के रोकि सकैत अछि
उड़ैत मनके
फड़कैत तनके
ते विवशताबश
बन्न दरबज्जाक-रन्घ
बनि गेल-चकु
निहारबाक हेतु
चानके
किन्तु डर छल
उमड़त निके
तइयौ-आसमे डूबल
खलके िअ
एकटक तत्पर छी
अगवानीमे
परन्तु, भूत बनल जा रहल
वर्तमान
कि पि अछि कंटकमय
वा खल पाषाणमय
भविष्यक औथामे

जरैत मन
नीरीह तन।

महत्वाकाक्षक गाम
रिासीन भेल छी हम
आ रिक्शा खिंचने जा रहल अछि
वेगयुक्त अश्व
उबड़-खाबड़ सड़कपर दलमलित करैत
भऽ रहल अछि
शीघ्रतासँ अगसर
हमरा हाकि कोड़ा
“सट-सट-सटाक”
पछुआ रहल अछि-उज्जर घोड़ाक पीठपर
पड़ाएले जा रहल अछि
लाल रंगक वाहन
शब्द भेल- “ड़ि-ड़ि-ड़ाक”
हरियर रंगक पतिया
खसि पड़ल खाधिमे
एखन अछि सुदूर-गन्तव्य
हमर महात्वाकाक्षक गाम
ते फेकि देलहुँ कोड़ा
लगेबाक हेतु जोर-रिक जुआमे
लगा देलहुँ कान्ह
देखियौ आब तान।

एकटा चुप्पी

ई हमरा पाछू िने रहैत अछि

छोट आ पैघ भऽ कऽ हरकण

उठैत-बैठैत, चलैत-फिरैत, सुतैत-जगैत

देखैत रहैत अछि

हमरा दुष्कर्म आ सुकर्मकेँ

किन्तु किछो नहि बाजैत अछि

सभ हमरा छोड़ि सकैत अछि

परन्तु ई नहि छोड़ता

ई पछुआ भऽ गेल छथि-हमर

किन्तु अन्हारमे गेलापर भऽ जाइत अछि- लुप्त

पुन: शीघे पगट भऽ जाइत अछि

पछुआ रहितो ई चुप्पा समदशी अछि

एकरा नजरिमे सभ बराबरि

नहि केओ िनीक नहि केओ उँच

नहि केओ गरीब नहि केओ नीच

नहि कोनो नाम नहि कोनो गाम

ते हम कऽ रहल छी परनाम।

छड़पटाइत लहाश
अन्हार राति
आजनि बाटपर पड़ल हमर लहाश
ने जरेबाक वा दफनेबाक नहि छै ओकरा?
कात भऽ कऽ नाक मुँह घोकचाबैत
एक-एक पड़ाइत अछि लोक
केहेन संक्रामक अछि रोग
बीतल जाइत अछि राति भऽ जाइत भोर
फेर वएह पक्षीक शोर
पुन: आएत राति
किन्तु हमर ई लहाश
गन्तव्यपर पहुँचत कहिया
कखैन देखत अनन्त अन्हार असमसानके
जे अछि तैयार कएल गेल
एहि अंत्येष्टि युगक व्यवस्था दारा।

र सल ि‍ीया
क ि‍ीले एलौ सासुरसँ र श्चा
भऽ गेलौ हल्लुक, गप्प छलै फूश्चा
सासुर बास जीनगीक बास
नैहरक बास चासे मास
असगरे एलौ आब की रहल बाँकी
ऑंश्चि उनटबैत बजली लालकाकी-
नश्च बाजू ढाकीक ढाकी
नश्च सोहाइत अछि चुप रहू काकी
फाश्च गेल आब श्चया
कनैत बजली ि‍ीया
टूटलाहा घर आ तोतराहा बर
ि‍प्पर चलबैमे सभ तुर चरफर
सासु चलाबै ठुनका पश्चा भाँजैत अछि डाँग
केकरा कहबै मोनक बात ससुर पीबैत अछि भाँग
पश्चने बचत जान
तबने राखब कुलक मान
कतबो नीकसँ करैत छी काज
तइयो वएह उलहन-उपराग
ई नश्च छी हमरा भागक खेल
जाश्चा बुश्चा पठेलहुँ ओश्च जेल
राश्चि लेलहुँ छातीपर प ि‍ल
नश्च रखने छी डर
चाहे श्चकछो श्चतइ
आब नश्च जाएब ओश्च घर।

बसातक [illegible]नी

सदैव ई मकड़ा सभ

बढ़बैते रहैत अछि जालके

आ फँसबैते रहैत अछि

कीड़ा-फतिंगाके

तैयो, भिन-भिनाइते रहैत अछि

निडर भऽ कऽ दू-चारि गोट

आ ते फँसैते रहैत अछि

छद-चारिमे

ओना ई आवृत रहैत अछि [illegible]

किन्तु, नहि कएलक कहियो

तोड़बाक पयास ओ डेरबुक सभ

परन्तु- आइ उठल अछि

पुरबा बसात

आ जोरगर मेघो अछि ओहि कात

आबि रहल गड़-गड़ाइत तोड़ैत ताल

टूटि जाएत आब ई पपंची जाल।

अदृश्य आश्ा-
एश्ह भीतश्वया ि िरामे
जश्व रहल अश्छ
हमर ओ आकाकाक गाछ
कतेक पैघ भऽ गेल छल
एकर डाश्व-पात
कतेक झमटगर आ श्वस्तृत
बुश्झ पड़ैत छल एकर शीषि
भऽ गेल हो गगनचुम्बी
असंख्य लोग श्वशाम पौने हेता
एकरा छाँहमे
श्कन्तु ई अदृश्य आश्ाक ि िरा
केहेन श्ार्मम अश्छ
जे भष्म कएने जा रहल अश्छ
सौसे गाछके
नश्ह अश्छ अग्श्ाशामक यंि
हमरा लगमे
आ जँ रहबो करैत
तैओ नश्ह श्ाझा सश्कतहुँ
जँ श्ाझायो जाएत
तँ श्क भेटैत छाउरक श्ातश्वक्त।

तीन श्मकि गपशप
बहुत श्वनक बाद श्मि श्मलल
तीनूके मनक फूल श्खलल
पश्चल पूछलक दोसरसँ-
कहू श्मि सुखी छी वा दुखी
उतर देलक भऽ कऽ दुखी-
सभ कुछसँ छी भरल-पूरल
सुरा-सुन्नरी रहैत अछ्छि बगलमे पड़ल
तइयो नश्च छी सुखी
हरक्ण रहैत छी दुखी
उतरदाता पश्नकताके दैत गाश्च
खाली श्मलासमे दार देलक ढाश्च
हेओ श्मता हमरेटा नश्च सताउ
श्कछ अहूँ बताउ-
जीनगीक टूटलाहा नाहमे
हरदम रहै छी अभावमे
तै ने मा अछ्छि झुकल
ठोर अछ्छि सुखल
दुनू तेसरपर ऑश्ख गड़ा देलक
हामे लाल बोतल रा देलक-
अहूँ श्कछ बौलू
श्वलक बात खोलू-
हम छी मस्त फकीर
नश्च अछ्छि कोनो श्कश्कर

देह आ मौनसँ छी स्वतंत्र
नहि करै छी केकरो बनगी
जी रहल छी अपन जीनगी
नहि छी दुखी
मनसँ छी पूर्ण सुखी
दुनू भेल चकित
मुँहसँ निकलल वाणी-
अहाँ नहि छी साँच
या बजैमे करै छी बेमानी
पशु छी या देव नहि तँ दानव
एहि रिती परक नहि छी मानव।

नव व्यवहार

बनाएव हम नव व्यवहार
छूबि लेब सफलताक दुआर
पाचीण ध्वंसावशेषपर
पूर्वमिलल संदेशपर
रचबाक अछि मजगूत दिवार
सचेत भऽ रखबाक छै ईटा बारम्बार
कमरित हो बाल-अबाल
उनत होएत सबहक भाल
सफलता कए रहल पुकार
बनाएव हम नव व्यवहार
विच्छिन्न गेहमे तम पसरल अछि
सभके दिलमे गम पसरल अछि
एकरा निकालबाक हेतु भऽ जाउ तैयार

बनाएब हम नव व्यवहार
पुरान रंग आर संग
सजेबाक अछि हरियरीमाक रंग
नव सृजित सज्जित महल भऽ जाएत तैयार
बनाएब हम नव व्यवहार
सुविचार जन-जन कर
आइ अपना सभ पण कर
आगाँ कऽ कदम बढ़ेबाक लेल भऽ जाउ तैयार
बनाएब हम नव व्यवहार।
मुँहझप्पा
एहि मेलामे
कतए हेरा गेलौं भाइ!
खेजैत-खोजैत भेल छी-अपस्याँत
परन्तु अहाँ तँ ओढ़ने नेने छी-मुखौटा
अहाँक चीन्हब भऽ गेल कठिनाह
एहि सम्पूर्ण भीड़मे
मुखौटेधारी छथि-सभगोटे
कऽ रहल अछि काज
मुखैटेक भीतरसँ
आदर्श पड़ल छन्हि सभके पसरबाक
आबि, आब नहि भेटत-हमर भाइ
आननपर ब्याधानन लगाकए
ढुकि गेलाह
एहि युगक मुखौटाबला जात्रामे

आकाश रहल अछि नोर टप-टप
आँखि भऽ गेल-झलफलाह
बढ़ेलहुँ हा
नोर पोछबाक हेतु
फट दऽ ठेकल मुखौटा
अछि रौ तोरी ई कोन बात
भेल संताप
लटकल अछि केहेन खप्पा
हमरो मुँहपर मुँहझप्पा।

टूटल बन्हन
ई भूखल भेश्कया
लेर चुबबैत
एकटक पपंची ऑंश्वसँ
ताश्क रहल अश्छ-आहार
आ कऽ रहल अश्छ-स्मरण
सरस स्वादक
पूवपिाइज़ श्वाकारक सँग
घश्टत घटनाक श्चि
आश्ब रहल दृष्श्टक सोझा
आ दोगमे छपकल
श्वाकारी अश्छ सन्नद
बुश्दक तीक्ण तीर लऽ कऽ
श्कन्तु चंचल भेश्कया
कखन मारत हबका
तकर अपनहुँ नश्ह छन्श्ह पता
जठराग्श्न तेज भेलापर
श्वसश्व जाय छश्थ
स्वजन-पश्वजनके
मनक बन्हन टूश्ट सकैत अश्छ
कखनहुँ
आ कए सकैत अश्छ-
आाित
श्वार संश्चत पश्च अंगपर

आ कऽ सकैत अछि थकृत

मनके

तै तेज तीर चलादेब आवश्यक

वा नहि तँ कऽ थयौक

नव आहारक व्यवस्था।

  अढ़ाइ हाथिक साथ

कतेक दुख भेल हेतै

बाबूके ओछाओन

भाइ हम जाथ रहल छी

याद पाड़ैत तरे-तर काथ रहल छी

हमर बाबू छोड़ि काम

एहि ठामसँ कनेक बाम

एकचाथ तरमे रहै ठाढ़ ओछाओन

जहिया हम दुनू भाँइ होइत रही थान्न

दुखसँ भेल थवन्न।

बजल रही हम-

एगो बेटा तीत

आ एगो बेटा मीठ

चुप रहू अहाँ बाथ नहि सकैत छी

अपन गोटी भाँथ नहि सकैत छी

गप्पक खेती खूब करै छी

चुप्प रहू हरदम बीख बजैत छी

भेलो काजके फेर थाजैत छी।

कहने रहथि बाबू-

हेओ बउआ नहि होअ थान

नहि भेटतह पलखति राति और दिन
कपारपर लादल छह कइएक हजार शृण
फुटा कऽ बदला लेतह सभ भिन्न-भिन्न।
देने रही हम जवाब-
एतेक दिनसँ कि केलहुँ विकास
सभ चीज-वितके केलहुँ नास
बेचि बिकैन खेलहुँ सभ चास-बास
देखैत छिऐ लाठीक हूर
कऽ देब अखने पेटमे भूर।
आइ हमरो दुनू बेटा भऽ रहल अछि भिन्न
बाँट-बखरा कऽ रहल भिन्न-भिन्न
हम कछमछाइत ठाढ़ छी ओहिना
बहसो पूर्वहिमर बाप करैत रहथि तहिना।
बेटा कहैत अछि-
शटअप
मंदिरमे जा कऽ कर जप
केहेन छी अहा गार्जियन
कि कएलहुँ उपार्जन
गप्प हँकैत खेलैत रहलहुँ ताश
सभटा पुश्तैनी सम्पत्तिके कएलहुँ विनास।
ओना आब बजै छी कम
तइओ नोर पोछैत बजलहुँ हम-
कतेकसँ दुसमनी कतेकसँ मेल
कइएक बेर खेललहुँ हुड़दंग खेल

आगू बढ़बाक लेल कतेक कएलहुँ पयास
तइओ रहलहुँ गेलहुँ पाछू
आगाँ पड़ाइत रहल थकास
हओ बउआ कतेक हमरापर बान्हैत छह झाँथा
सभपर छै अढ़ाइ हाथ साँथा।

कानैत अधिकार
अनुशासनक सीमापर
कतेक कालसँ
बैसिआक अधिकार
रहल अछि काश्रा
झाँथ्य रहल अछि
सबकुछ जाश्रा
स्वर दबल सन
देने अछि माश्रा
भीतरसँ थ्वरोकि
थ्यानगी आकश्रा रहल
फाश्रा फाश्रा।

आबद
हमर शरीर
बान्हल अछि कड़ीसँ
कनेको झुलबैत देरी
झन-झना उठैत अछि
ओहि शब्दसँ
मन कुहरि उठैत अछि
केहेन नचार भेल छी-हम
टुकुर-टुकुर तकैत
देखि सकै छी मात्र एकटा सपना
स्वतंत्रताके
कतेक अन्तर अछि
कल्पना आ यथार्थमे
लगा रहल छी
जोरपर जोर-तोड़बाक
नहा गेल छी-घामसँ
नि:सृत केहेन दुर्गन्ध
श्वाँस लेबामे बुझि पड़ैत अछि
कठिनाह
वस्त्र भऽ गेल अछि
गोत आजू जकाँ
असोथकित भऽ
सोचि रहल छी
प्रामाणिकता एहि कड़ीके
छी हम स्वयं

तइओ छी असमर्थ तोड़बामे
बौआ रहल अछि-मन
स्मरणक गहन वनमे
सतत् सचेष्ट भऽ
ताकि रहल छी
कड़ीक कमजोर भागके।
हम पुन: उठब एकबेर
हम पड़ल छी
मृत्यु शय्यापर
थ्थार रोगाह
छूत व्याधिसँ गसित
मैल वस्त्र फाटल, सड़ल
नीच कुलक
थ्थार उपेक्षित
देखैत छी जे थ्मरिजक आजासँ
आबि रहल अछि
यम हमरे दिश
हमर प्राण थ्थाकथ्थाके
ठाढ़ अछि कातमे
थर-थर काँपैत
हम बथ्था गेलहुँ लहाश
किन्तु यम सब ठमकि गेलाह
हुनका मुखमण्डलपर
घृणा थ्थ्थात भय छथ्था

डर थ्कएक से नञ्ज जाथ्रा
नाक मुँह थ्रसकोड़ैत
ओ घुथ्र गेलाह
आ चुपचाप ई खेला
देथ्ख रहल अछ्र
हमर पाण
थ्रार पाय भ’ पुन: ओ ढुथ्क गेलाह
हमरा शरीरमे
आ हम टन-टना क’ ठाढ़ भ’ गेलहुँ
आब पड़ेबाक पयत्न
क’ रहल अछ्र सब हमरा डरे
घृणाके पछाथ्ड़ देलक भय
काँथ्प रहल छथ्रि
रि-रि डरसँ मिशिज
थ्रबदा भेल छी आब हम
हुनके थ्रांहासनके
ओंघरेबाक हेतु
थ्कन्तु कमजोरी सन
बुथ्झ पड़ैत अछ्र हमरो
ते थ्कछु काल ठाढ़ भेल छी
शक्थ्र संचय करबाक हेतु।

दरपनक स्थिति
जर्जर खूँटी
आइ टूटि गेल
ओहिपर लटकल शीशा
खसि द' खण्ड पड़ल
भ' गेल छहोछित
शोभित दीवार मध्य
कतेक घमण्डसँ छल स्थित
जाहिमे देखि आननके
अपनाके धन्य बुझैत छल-रूपिनी
से भ' गेल आब उपेक्षित
पाएर बचा क' चल' पड़त ओहिठाम
किन्तु एकरा पत्येक खण्डमे
बचल रहल प्रतिबिम्ब
कोनहुँमे मात्र आँखि
कोनहुमे मात्र कपार
लगैत वीभत्स
ओ कहियो नहि सोचने छल-
एहन अवसान होएत हमर।

श्चलन बाि

नील गगनमे भेल मगन

उड़ैत पाँश्चि संगश्च आँश्चि

जोश्चक सँग नव उमंग

श्चलन हेतु आकुल

जेना श्चयाससँ भेल व्याकुल

अश्च पूणा आस श्चटत संश्चत श्चयास

करैत बात उतरल साि

बनल घर पल्ल्व तर

तर क डाश्चपर

दूइ हृदय श्चलत नव फूल श्चलत

श्चन्तु व्याि के कनहा आँश्चि

रहल अश्च ताश्च

कुि क पश्चश्चने खोल

नाचैत नेि गोल-गोल

भ’ रहल तैयार-पपंची हश्चियार

आर चलाएत तेज तीर

देत देहमे पीर

तइसँ ओ नश्च डरत

परेम कश्चयो नश्च मरत।

श्वाष्ट-अश्वाष्ट
भीड़ मध्यि दसो अँगुरी जोड़ैत
टेढ़ भऽ गेल हमर हडडी
श्कयो दैत अछ्छि- आशीवाद
श्कयो नमस्कार
श्कनको मुँहसँ श्आकलैत अछ्छि
"नञ्ह चीन्हलहुँ...."
तब श्बाुआ जाइत अछ्छि
हमर मुँह
परन्तु गोटेक तँ
घुश्वयो नञ्ह तकैत अछ्छि
हमरा जुटल हािथ श्वद्या
मन अनोन भऽ जाइत अछ्छि
लागैत अछ्छि जेना-
नङटे ठाढ़ छी
आ लोक सभ चला रहल अछ्छि
आँश्विक तीर
ताञ्ह कारणे छोश्क देलहुँ
हाथ जोरी करब आ श्मार झुकाएब
औब चञ्ज देने छी- सोझञ्ह
गुम्मा बञ्ज।

ढहैत महल
नश्च जोरगर श्चहाश्क़
नश्च श्चश्चाकम्प भेल
शायद आ िर छल
कमजोर भेल
ते ई श्चश्वासक महल
ढनमना कऽ श्चार पड़ल
खण्ड-खण्ड भऽ गेल- रँगीन श्चवार
जेकरा ठाढ़ करबामे
कतेक अमूल्य काल-छल नष्ट भेल
उत्तुंग श्चश्च सन-जजर्र भवनके
खसलाक भयंकर शब्दसँ
श्चड़इ-चुनमुनी उश्क़ गेल
श्चहाश्क़ सन लगैछ
उड़ैत ूिरा
म ्यि बश्चा रहल-नव आकृश्चा
ओ सभटा वृश्चा
जेकरा बश्चसो पश्चले
छोश्क़-छोश्क़
मातल छलहुँ श्चानमे।

अशु ि र
हमरा पेयसीक नैनसँ
बहैत रहैत अछि
हरक्षण नोरक- नदी
आ ओहि अशुजलमे
लोक करैत अछि- अवगाहन
केकरो ठण्ढ़ा आर केकरो होइत अछि
गमानुभूति
कियो कहैत छथि- वाह-वाह
कियो कहैत छथि- बडड अ िलाह
किन्तु आन्हर-बहीर हमरा संगीनीके
नहि छैन्हि परवाह
हुनक नोर नि:सृत
होइते रहैत अछि
किन्तु किछु दिनसँ ई लादने अछि- चुप्पी
शाइत सुखि गेलन्हि-नोर
वा कऽ रहल अछि
अक्षय अशु संगह।

नाचैत भूत

कतेक दिनसँ ई भूत
नाचि रहल अछि
हमरा माथपर
चूसि रहल अछि
हमरा शोणितके
भऽ गेलहुँ भूतचटू
तइयो नहि छोड़ैत अछि ई निखटू
बड़का-बड़का ओझा-गुणी
कएलक पयास
किन्तु ई नहि पड़ाइत अछि
केहेन बेसुरा अछि- एकर नाचब
राग-ताल विहीन
लगैत अछि-जेना
पीट रहल अछि-कियो
फूटल टीनके
“झन-झनाक-झन”
कुनमुना उठैत अछि हमर मन
एहि भंयकर शब्दसँ
करैत अछि दरद
कएकबेर कएलहुँ यत्न
भूतके खसेबाक
परन्तु खसि पड़ैत छी- अपनहि
ई धऽ लेने अछि गछिया कऽ
हमरा कपारक केशके

कसने अछि सवारी
ते आब हम कऽ रहल छी
शीषासन
जँ नहि उतरता ई भूत
तँ कऽ देबैक किछु ना
अपनहि शरीरक भारसँ।
माय
(क)
दोसरोक माय
अछि हमरे माय
तँ छैक यौ भाय
अपना मायके बिसरि जाइ
जे करौलक अमृत-पान
भेलहुँ जवान देशक शान
ओहि ठामसँ ससरि जाइ
मायक स्नेहके बिसरि जाइ
छैक यौ भाय।

(ख)
मैथिलीक अछि असीम भंडार
एहि बातके हम सोचि ली
घर भरल हो जखन
दोसरासँ किएक पैच ली
राखि संतोष करी उपाय

थिक यौ भाय।

(ग)

नञि होइ थिकन
नञि थिाअ पड़ए ऋृण
कर कोनो उपाय
हे मैथिली माय
भऽ जाए हमरो अभ्युदय
थिक यौ भाय।

यत्न
हरियर पातक मध्य पीयर फल
देखतहिं मन ललचागेल
ओकर सरस स्वादक अनुभव
जगा देलक- तृष्णाक आग
मारय लगलहुँ- छड़पनियाँ
करए लगलहुँ- उछल-पूछल
तोड़बाक हेतु
किन्तु डाढ़िमे हाथ स्पर्श भेलासँ पूर्वे
खैंच लैत अछि-नीचाँ
टाँग पकड़ि- बिरती
ठाढ़ि दऽ लगैत अछि- चोट
ऍंड़ीमे
यत्नपर यत्न कऽ रहल छी
परन्तु फल नहि तोड़ि पाबैत छी
लगैत अछि जेना
भुकुर-भुकुर तकैत
हमरा विफलतापर
चला रहल हो- व्यंग्य-बाण ई वृक्ष
लाज नहि होइत छन्हि- हुनका
हमरे रोपल-पैघ भेलापर
देखा रहल अछि- हमरे ठेसी
किन्तु बसात अछि आशब्द मारने
दऽ रहल अछि- पूर्वाभास

उठल जोरगर-आन्हड़-बिहाड़ि

निश्चय टूटत-ई फल।

बघनखा

कतउ नहि किछु बचल सुच्चा
जतए देखू ततए बघनखा
पत्नीक आँखिमे नोर भरल
ताहिमे सँ खसल बघनखा
कतउ नहि किछु बचल सुच्चा
रोटी तोड़ि मुँहमे लेलहुँ
पड़ल दात तर बघनखा
कतउ किछु बचल सुच्चा
वस्त्र झाड़ि कऽ पहिरैत काल
भट दऽ खसल बघनखा
कतउ नहि किछु बचल सुच्चा
सुतल छलहुँ घरमे
आकि चारसँ चमकैत
झनाक दऽ खसल बघनखा
कतउ नहि किछो बचल सुच्चा
आ कि बड़का कुरतामे
बटनक बदला बघनखा
कतउ नहि किछु बचल सुच्चा
वएह देखि रहल छी सवि
कि हमर आँखिए
बनि गेल बघनखा?

रंगक खोज

फाटल वस्त्रिके सीबैत

चौन्ह्याया गेल चकु

ि‍ड़फड़ीमे गश्च जाइत अछ्

सुइया

अपनश्च हािमे

आ चाश्च लैत छी

स्व रक्तके

जाश्चसँ लगबैत छी- अनुमान

दोसर शोश्चातक स्वादके

श्चसश्च ओश्च पीड़ाके

पुन: लगबैत छी चेफड़ीपर चेफड़ी

बदश्च गेल वस्त्रिक रँग

भऽ गेल अनश्चन्हार

लगैत अछ्छ जेना

कतेको रँगक झंडा

टागल हो एकेठाम

तइओ चला रहल छी काज

मुदा भऽ जाइत अछ्छ लाज

कश्चयोकाल- कतेको जोड़ी आँश्चक

व्यंग्यात्मक तीरसँ

भऽ जाइत श्चद

तै घरे मि्ये नुकाएल रहब

हमरा लगैत अछ्छ नीक

श्चकन्तु पेटक आश्चा

नञि रहए दैत अछि- आचेन
अवश भऽ कऽ आकश्न गेल छी
लाल रँगक खोजमे
जाञिमे रँगे देलासँ
चितकबरा खण्ड सभ
भऽ जाइत एके रँग
तबे टूटत
हमर हीन भावनाक जाल।
कंटकमय नवनीत
हमरा सम्पूर्ण शिरीरमे
जनमि गेल अछि
पैघ-पैघ खखाह काट
लोक सभ पड़ा जाइत अछि
हमरा देखतहि
किनको नञि छूबि सकैत छी- ञिनेहसँ
स्पर्श करैत छी- ञिनका एकोबेर
ओ बोमिाया उठैत अछि
पेमभाव बनि जाइत अछि- बैरीभाव
अपनहुँ एक अंग दोसरसँ
होइत अछि स्पर्शतेँ
मन ञिहबि उठैत अछि
कऽ लएतहुँ- आत्मघात
किन्तु सेहो नञि कऽ पाबैत छी
ञिनगीक जहर

घोंख-घोंख पीबि रहल छी
बचल अछि एक अंग
निष्कंटक नवनीत सन
धिकधिकाइत छातीमे
तकरहि देखैत जीबि रह छी
आसहिपर।

लाज

निरलजके ने लाज पेट भरलासँ काज
देखि रहल छी अिताके किरदानी
बदलि गेल ओकर चालि आर-वाणी
बरदाइससँ बाहर कऽ रहल- मनमानी
लगौलक एहेन फानी
जे लड़ि रहल छी दुनू परानी
परेमक गाछ सुखा गेल
मन पुरा दुखा गेल-
अपन लाभ अनकर हानि
की करए चाहै छल से नहि जानि
तइयो इमानदारीक पहिरने खोल
बजैत अछि नीक नीक बोल
आइ हम एकर खोलि देबै पोल
दसगोटेमे कोना ठाढ़ अछि लफंगा
कऽ देबै एखने नंगा
खिसिआया कऽ बढ़लहुँ ओकरा दिश
कऽ देबै नाँगट- ऍड़ीसँ देबै पीस
हाय रौ तोरी ई कोन बात
सभ भऽ गेलाह एके साि
खिखिया कऽ सभ हँसि रहल अछि
हमरेपर व्यंग्य कहि रहल अछि
सभ बुझौलक तब असली बातके जानि

सोचि विचारि लेलहुँ मानि
नहि होइत अछि नीक बेसी रिश
सोचैत देखलहुँ अपना देह दिश
गुदरी लटकल बनल छी भिखमंगा
हम तँ अपनहि छी पूरा नंगा
भीतरसँ सभटा गप्प जानि
लाजे भऽ गेलहुँ पानि-पानि।
मिलन-बिछुड़न
अहासँ होइत अछि जखन मिलन
बहए लगैत अछि मलय पवन- सन-सन
झड़ए लगैत अछि मेघसँ छोट-छोट बून
फुला जाइत अछि मनक पसून
गाबए लगैत अछि भमर- गुन-गुन
चिड़ैक चहक मादक-महक
पसनताक- दमक
मिलैत अछि पूर्णिमा आर सुख
पड़ा जाइत अछि दुख
किन्तु होइत अछि जखन बिछुड़न
दुखसँ भसि जाइत अछि तन-मन
सूखि जाइत अछि मनक फूल
जेना रहि रहि गड़ैत अछि शूल
मनमे भरए लगैत रोष
बेचैनी आओर असंतोष
हे सखी- कर कोनो उपाय
जे दुनूसँ ऊपर उठि जाय

भल जाए ि ण
दुनू भऽ जाए समान।

पश्चवारक गाछ

रौद रहै तीखर

गाछ लने कपारपर

घामसँ नहाएल स्त्री

जा रहल छलीह सड़कपर

कथीक गाछ छी ई केहेन फड़त

एतेक रौदमे ई नइ मरत

हम गाछक नाम पुछलौ बारम्बार

ओ कहलक एकर नाम छै पश्चवार

एक्करमे शाकाक फल ड़त

खाएत बाल-बच्चा तँजानक इजोत करत

हमरे पश्चशमसँ ई हेशाल

एकरा नइ खा सकत कोनो काल

पाल्न-पोषण कऽ बनाएब बलवान

बढ़तै सबहक मान-सम्मान

जेना कऽ पटेबै तेहने फड़त

जँ कष्टमे रहबै तँ धार पड़त

हम मुँह बन्द अकबका कऽ तकलहुँ

पूछलाऐ-अहाक बात नइ बुझि सकलहुँ

सुनि हमर वाणी

ओ बुझलक हमरा अजानी।

त्रिशंकु

आँखिपर लगल अछि आनक झँपना
देखि रहल छी डेराओन सपना
घुमि कऽ आबि गेल छी गाम
लादने समान पत्नी अछि वाम
सपनोमे यादे अछि ओ दिन
एतेक दुख कोना कटलो गिन-गिन
दस मास पूर्व भागल रहि पेमिकाक संग
सामाजिक नियमके कऽ देलिऐक भंग
शहरमे मिलि करैत छल काम
दुनू गोटे पहुँचलहुँ ओहिठाम
एकान्तमे मिलि बैठौलक साथि
समझाबए लागल सभ बात-

“उपरसँ जातिक टंटा
आर लगतह पुलिसक डंटा
अनकर बेटी रखने सँग
पकड़ि कऽ तोड़ि देतह अंग-अंग
गाबले गीतके आब नहि गाबह
कोटमिजा जल्दी बियाह कऽ आबह
कएलहुँ अन्तजातीय बियाह
किछु लोक कहलक वाह-वाह
किछु कहलक बडड अधलाह
छोटकामे कएलक बियाह

खाश्चमे िश्च गेलाह
काश्च दस मासक पवास
पहुँचल छी घरक पास
पत्नी संगे ठाढ़ छी गोसाँइ दुआश्चक आगा
पछुआरक गाछपर काए-काए करैत अश्छ कागा
हमरा बापक मुइला भऽ गेल साल दु साल
फेर ई कतएसँ पहुँश्च गेला तोड़ैत ताल
देखैत छी गोसाउश्चाक अगाड़ीमे
नीर भरल अश्छ िरीमे
जाश्चमे िड़ श्वहीन बाबूक श्चार नाश्च रहल अश्छ
िमिमे गलगला कऽ बाश्च रहल अश्छ-
"ओश्चठाम ठाढ़ रहू एमहर आश्च नश्च सकैत छी
कुलदेवतासँ असीरवाद पाश्च नश्च सकैत छी
जखन िसिँ देवता जेतह जाश्च
िनि-जन आ घरमे लगतह आश्च
मुँह लटकौने केकर तकैत छहक राह
उनटे पाएर घुँश्च जाह
गोहराबह देवता-श्चतरके
मागह सभसँ माफी
एतबेक नश्च छह काफी
जा करऽ सात बेर गंगा स्नान
बचाबह कुलक मान
एश्च कुलच्छनीक छोश्च आपस आउ
यौ बउआ अपन पाण बचाउ"

एकटा पाएर बाहर एकटा अछि घर
अस्सी मन भारसँ दवा रहल छी तरेतर
बाप दिश तकबाक नहि अछि साहस
पत्नीक आँखिमे झाकि रहल छी
डरे थर-थर कापि रहल छी
हेऔ एहिसँ नीक छूटि जाइत पाण
तर धरती नहि उपर आसमान
मध्य भागमे अटकि गेल छी
नहि कऽ सकैत छी पेम
त्रिशंकु जका लटकि गेल छी
किछु नहि फुराइत अछि की करबै आब
पत्नीके की देबै जवाब
नहि एहिपार नहि ओहिपार
धऽ लेने अछि जड़ैया बोखार
एखनहुँ नहि सपना छोड़ि रहल अछि
कंठ पकड़ि कऽ तोड़ि रहल अछि।

अनमोल थ्अनगी

“हारल जीनगी जीएब ताथ्सँ नीक
रणकेमि मथ्र जाएब से थ्अछ ठीक”
यौ थ्अत अहाक ई गप्प हमरा नथ्ह लगल नीक
जीनगीक संगे रहतैक हाथ्र आर जीत
कखनहुँ कानैत अथ्छ लोग कखनहुँ गाबैत अथ्छ गीत
थ्कछुकाल करैत अथ्छ झगड़ा थ्कछुकाल करैत अथ्छ पीत
जँ भऽ जाए जीनगीक युदमे हाथ्र
फेरसँ थ्अअ अपनाके सम्हाथ्र
छोथ्ड़ शोक मनके राथ्ख नीरोग
मृत्युसँ नीक जीवनक सदुपयोग
करबाक चाही समाज आ राष्रक थ्अत
यएह तँ अथ्छ जीवनक मूल्य यौ थ्अत
पकथ्ड़ थ्अअ कोनो सुनर राह
सभ कहत वाह-वाह
बाजू हरपल मिर बोल
जीनगी अथ्छ अनमोल
बढ़ाउ संसारसँ मेलजोल
बथ्ढ़ जाएत जीवन मोल!

मुश्आयाक श्चान्ता   (बाल कश्यता)

“बच्चा जनश्म गेल बेटा भेल”

सुनतश्च घर खुशीसँ भश्य गेल सौसे टोल खबश्य पसश्य गेल बढ़ए लगल उछाह कहलक लोग-वाह-वाह मुश्आया अश्छ लछश्मश्आया तब ने एकरापर सँ जनमल छौड़ा हे गै तू श्कएक ि ने छे दादीक कोरा मुश्आया टक-टक ताश्क रहल अश्छ आ मने-मन आँश्क रहल अश्छ दादी बजल-की लेबे बाज करए दे हमरा काज खसौने घाड़ कनैत छह जार-बेजार यएह करतह रश्कया श्मनगीक उठौतह भार ि ने छह हमर गात ई तँ छै खुशीक बात

जनमल तोरा भाए

कतेक खुशी छह तोहर माए दादी, सबटा जानै छी

हम ओइ लए नश्इ कानै छी श्चान्ता अश्छ हमरा आब के कोराके लेत दू ि माए श्यबऽ नश्इ देत आँइ, सभ हँसल आ मुश्आया फँसल।

कि ीक गाछ (बाल कविता)

चाटा छौँड़ा छल गाछ तर

फनैत मद लगौने डके गनैत पहुँचल

पाचम- हे रौ की गनै छे

ई कि ीक गाछ छैऐ से जनै छे?

सभ भेल अवाक अपन जमौलक ि क

सुनने र ई गाछ छऐ अनन्हार

जेकरा न्हलहुँ से न्हार

न न्हलहुँ तँ भेल अनन्हार

कहैत मा ि उठौलक ता

एकटा छौड़ा बजल फा

तहूँ तँ न रहल छे जा

अपनहुँ ठकाइत छे आ दोसरोके ठकै ही

टेढ़ी देखा संतोख करै छी

झूठक कऽ रहल छी परचार

दुर-छी दुर-छी करतौ संसार

अनजानके करैक चाही जनैक पयास

न छोड़ैक चाही आस

पले बढ़ाले अपन यान

तब बाजबे तँ बढ़तउ मान।

नेहाइपर लेखनी
कान्हपर अंगोछा लए
ठमकल छी कजरी लागल
एहि चबूतरा घाटपर
सम्मुख अछि पीड़ा जल पसार।
सहस्र-सहस्र जोक जाहिमे
कऽ रहल अछि
उन्मुक्त जल विहार।
एहि पीड़ा जलसँ
नहि जानि कहिया भेटत मुक्ति
कहिया [ुआएत
गातक तहियाएल मलिनता
जाधरि ई रहत जमल
गन्हाइत पीड़ा-जल
खण्डित नहि भऽ सकत
जोकक जल विहार
छी डेराएल
अंग-अंगपर
जोक दंश अनुभव कए
परन्तु ई तँ अछि
भीर पन
आत्मघाती जड़ता।
तोड़ए पड़त आब
भुतहा कुल ओ मोहारके

कोड़ए पड़त आब
जल श्आकास
बहाबऽ पड़त एश्ब
गन्हाइत जलके
भरए लेल पोखश्रके
नव वषाक जीवनसँ
जोक श्वहीन अमृतसँ
तखैने भऽ सकत पुण्य-स्नान
ताश्ब कारणे आइ
हम लेखनीके राश्ख देलहुँ
ैश्आमभि नेहाइपर
बनाबऽ लेल
अश्म, तीक्ण कोदाश्ब
काटऽ लेल
भुतहा मोहारके
करऽ लेल स्वश्आकि स्नान।

झगड़लगौना थशाच

ई झगड़लगौना थशाच

नै आबए देलक अपनापर आँच

रखने सभसँ मेल

खेलैत रहल झापल खेल

जेकरा संगे करै ई कनफुसकी

तेकरा मुखसँ उश्क जाइत मुसकी

ओ करै छल रगड़ा

ताकऽ लगै छल झगड़ा

एको घर नै छोड़ै छल लड़ैया बोखार

एकटा रोकनाइ भऽ गेल छल बेसम्हार

फैला रहल छल दोग-दोग

भऽ गेल हो जेना सं ामिक रोग

घर-घर छीटै छल झगड़ाक बीया

झगड़ाक बाद फटै सबहक हीया

नव शक्श्रा श्रात रोज

करए लागल बेमारीक खोज

ि रा गेल सीपपर आइ

भगै केर नै रहल कोनो उपाए

“एना नै कश्रयौ छान-बान्ह

एतेक नै कश्रयौ अपमान”

श्रकछु हँसैत श्रकछु रहल काश्रा

मुँह लटकौने थशाच सभ श्रकछु जाश्रा

काश्रा-काश्रा पएर लेलक छाश्रा।

गाछक बलिदान

गाछसँ घेरल चार भर

मध्यमे छल दूटा घर

चार भरक गाछ झड़कि गेल

तैयो आबि नै बहरा भेल

ईश्वर केहेन रचना रचि गेल

दूटा घर जरल सौसे गाम बचि गेल

तोरेटा घर भेलह बरबाद

भगवानके दहक धन्यवाद

केकर कऽ रहल छी यशोगान

पहिले श्वऔ गाछक मान

तब करब ईश्वरक सम्मान

तँए बचल कतेकोक ि नि आ जान

गाछ नै भेल पाछ

नै तँ सौसे गाममे आबि करैत नाच

यएह गप्प छै साच

हमहूँ नै हएब पाछु

फेर रोपब दू-चारि गाछ।

हेराएल

हे यौ, हम हेरा गेल छी
अन्हारमे घेरा गेल छी
कोनो बाट नै भेटैत अछि
बौआए गेल छी
औआए गेल छी
ऐ गामक की नाम छिऐ यौ
घुमिया रहल छी चार भर
कोन घर छिऐ हमर
भटकि रहल छी दर-दर
नै भेट रहल अछि घर
हे यौ कोन दुआरि अछि हमर
सुनै छी फटकार भरल स्वर
भीतर काँपि उठल िर-िर
“बडड बजै छह चर-चर
की नाम छिअ तोहर”
बिसरल छलहुँ गाम
आब तँ बिसरि गेलहुँ नाम
कहए पड़त हम के छी
स्वयं जानए पड़त हम जे छी
नै तँ जिनगी भऽ जाएत अकारि
नै भेटत परमारि।

गाछक किस्सा

बिबिछपर कुड़हिब दन-दना रहल अछि

दुनू भाइ भन-भना रहल अछि

यएह गाछ छिऐ झगड़ाक जड़ि

एकरा देबै आइये काटि

सभ किछ भए गेल थाने

तँ एकरो लेबै आइये बाटि

लगमे पहुँचल संच-मंच

बुझबए लगल गामक सरपंच

बैसू हकर दुनू भाय

नहि हएत झगड़ा अछि उपाय

गाछमे छै दूटा फेर

नहि लाबए पड़त तरजू-सेर

किस्सामे भेल एक-एकटा मोटका डारि

भायक परेममे किएक पाड़ै छी दरारि

एकोटा गाछ रोपल भेल

किएक करै छी एहेन अ िलाह खेल

जाहिपर जिनगीक आस

चलैत अछि सास

तकरा कऽ रहल छी विनाश

जएह देने अछि कपारपर छाह

तकरे कटै छी वाह-वाह

ई करम अहासँ भऽ रहल अनुचित

जे दऽ रहल जिनगी

तकरे सँगे एहेन अहित

करबै गाछक सेवा
भेटत सुन्दर मेवा
भेटत सुन्दर फल
एहिसँ बढ़त शरीर आ मनक बल
पंचक गप्प सुनि दुनू भाइ कहलक
घर चल।

लाल ज्योत्स्ना

गन्तव्य दिश अगसर होइत
िप्प दऽ हम खसि पड़लहुँ
अनभुआर कुपमे
जे अछि बहुतो पुरान, सुखल
जलक नामपर
फाटल दरारि
राक्सक मुँह सन
सनि-तमसँ भल छी भयभीत
अएबाक हेतु-ऊपर
कऽ रहल छी- यत्न पर यत्न
किन्तु सपसिन ससरि ससरि खसैत छी
पुन: ओहि ठाम
मकड़ाक जाल सभ
लटपटा रहल अछि- माथिमे
आवेश वश फेकि रहल छी माटिक ढेपा
परन्तु ओहो लगैत अछि
ठामहि दऽ अपनहि कपारपर
हहरि रहल छी-नव राह
तखनहि तीक्ष्ण लाल पकाशमे
चौन्धिया जाइत अछि-चकु
कियो सहृदय साहस कऽ
देखा रहल अछि- मागि
बढ़ि रहल छी आब

शनै: शनै:

ओस बिन्दु सदृश।

बीखक घैल

 कतेको बरख पुरान

एश्च बीखक घैलमे

तृण भश्च छेद मा‍ि

बून-बून चुबैत

बीखसँ

भऽ रहल अश्छ

श्चषाक्त वसुन्‍िरा

भष्म भऽ गेल

मनवोश्चत गुण

तइयो तीब गश्चासँ

आप्लाश्चत करैत

खोश्च रहल अश्छ

नव-नव आहार

पाणी सभ अश्छ पड़ा रहल

सुडडाह करैत अश्छ बश्च रहल

बीखक बाश्च

सभ अश्छ सशंक

खोश्च रहल अश्छ श्चाश्च्‍िन स्‍िान

पड़ाइत-पड़ाइत भेल अपस्यात

श्चकन्तु आब नश्च होएत घात

बश्च रहल दूटा सशक्त हा‍ि

अहश्चाश

ओश्च कुम्भ श्चश।

पितर

अहाक उपरागसँ बेलि अछि गतर-गतर
तै दऽ रहल छी पितर
कतेक कएलहुँ परिश्रम
बनलहुँ निरलज टूटल रिम
तब बनेलहुँ सोनाक घर
सबकुछ सधि गेल भेलहुँ फकड़
मनोरथ तँ पूरा भेल
किन्तु यएह आइ जहल भऽ गेल
अहा लगसँ एतऽ छथि
जेना लगल अछि कोनो अदृश्य कड़ी
हवाक सँग अहाक गन्धि आबि रहल अछि
से स्वर संगीत बनि गाबि रहल अछि
अहा अन्त: सँ सोर पाड़ै छी
हम अपना हृदयके तरे-तर मारै छी
बीतैत अछि साल बीतैत मास
एखनि जेलसँ झाकलैक कऽ रहल छी पयास
आबैए जाड़ तँ अहा बिनु लगैए अन्हाड़
देहपर पड़ैए बून याद पाड़ैए अहाक गुन-गुन
हवा बहै जब गरम लागै फूटल हमर करम
अबै जब बसन्त हमर हृदय करैत अछि हन्त
तइओ हम केहेन छी कंत
अहाक बिसरि बनल छी संत
खोज कएलहुँ हम असली

आब बनल ओ नकली
असल परेम मुँह फेरए नहि सकैत अछि
ओकरा कियो िर नहि सकैत अछि
नहि जानलहुँ तँ जानब
आब नहि हम मानब
एक-एक ईटाके फोड़ब
एहि स्वर्णजेलके तोड़ब
अन्तरमे चलन प्रयास करै अनघोल
स्वर्णक होइत अछि बहुत मोल
पर परेमक मोल अमोल।

अन्हारक खेल
ओहिठाम भऽ रहल छलै
एकटा हास्यास्पद खेल
एकथित दशकिमे छलै
तत्कालीन बडड मेल
एकबेर आँखि मटकेलहुँ
कनेक धियान भटकेलहुँ
खेलाड़ी खेल आब की करता
देखैत छी ओहिठाम ठाढ़ छै भाषणकता
भाषण झाड़ि रहल अछि
अमृत वाणी ढारि रहल अछि
छलिया भाषण
नहि दैत छलै राशन
लोग पीबै छलै अश्वासन
नहि सुनै गेल देखै लेल
गेल छलै लौग
सेहो भेल अभोग
करऽ लगल आपसी रगड़ा
िप्पर-मुका आ झगड़ा

पुछए चाहलक भाषणक अता-पता
आबि ओहो भऽ गेल लापता
ओहि जगहपर भेल ठाढ़
सौसे मनुक्खक हाड़

जङ्गमे सँ आकाश रहल छूछे अन्हार
डूबि गेल सभ ओङ्गमे कानए जार-जार
औनाए कऽ खसए बारम्बार
ओ अन्हार सबहक देहके बना देलक हाड़े-हाड़
एक दोसराके देखि सभ भऽ रहल भयभीत
बढ़बऽ पड़त एकताक गीत
मारऽ पड़त छड़पिआया
काटऽ पड़त गुड़कुआया
आगूमे छै इजोत
जे दऽ रहल छै नोत
लगबऽ पड़त कोनो ब्योत।

नाचक बिखाद
लोग मनहि मन करै छल जाच
हम करै छलहुँ नागटे नाच
आँखि देखैत छल
मुँह हँसैत छल
जखैन लोग केलक दुर छी-दुर छी
धियान गेल तब अपना दिश
अपने नागट देह देखि
मोनमे आबि गेल बिश
कहैत छी आब-लाउ कोनो नुआँ
होइत अछि लाज
बजैत अछि समाज-
“अलगे रहू अहासँ नहि अछि कोनो काज”
एहूसँ बेसी घिना जाएत
स्वजन-परिजन जब सोझा आएत
गप्प चार भर घिन-घिना जाएत
हेओ कएलहुँ जेना
नहि करब एना
नाचैत-नाचैत कखनहुँ काल
नहि रहै छै सुधि-बुधि बिगैड़ जाइछै चाल
एहो तँ छिऐ एकटा नवका ताल
किछ लोक तँ कहै छै एकरो कमाल
ओमहर लोगके भले लगो नीक ई नाच
एहिठाम नहि सोहाइत छै ई गप्प अछि साच

एतुका लेल नञि छै अनुकूल ई नाच
हे यौ भाय
कर कोनो उपाय।

आँखिक पतीक्षा

बन अछि अहाक आँखि
जेना नान्हिटा चिड़इ पसारने पाँखि
आगुमे दुनू ठेहुनके मोड़ने
संगहि दुनू हाथ जोड़ने
हम टक-टकी लगा कऽ रहल छी ताकि
कखैन खुगत अहाक आँखि
एकबेर जाइमे लेब हम झाँकि
हमरासँ की भेल भूल
चढ़ा रहल छी मनक फूल
अन्हरिया भऽ गेल साइत
शरद पूर्णिमाक ई राति
पकृतिपर झहरैत अछि चानी
मधुर रस घोरैत कोइलीक वाणी
मन्द-मन्द बहकैत बसात
केना रहब अहासँ भऽ कात
एकोबेर तँ बोलू
आबो आँखि खोलू
सकलए नेह वा धिकार
हमरा दुनू अछि स्वीकार
देखबाक अछि उत्कट इच्छा
हम करैत रहब जिनगी भरि पतीक्षा।

<u>मनीष ठाकुर</u>

<u>श्वरह गीत</u>

चेहरा पर नूर छश्मह,

आँश्वि कऽ झील सन गहराई मे, श्वकछ त जरर छश्मह,

श्वरह कऽ पीर छश्मह, वेदना गंभीर छश्मह

स्मष ता हुनकर आंश्वि, केकरो पतीक्ष मे, अतीव अ ीर छश्मह,

चेहरा पर उदासी कऽ स्मष कईक श्वान्ह छश्मह

श्वकन्तु नश्वं ; ई त कोनो आम वेदना सऽ पूणतिया श्वान छश्मह,

साडी छश्मह अस्त व्यस्त

देश्वियौ त! ओहो व्यस्त, बैसल छश्वि श्वान्तान मे;

गहीर कोनो सोच मे अपने ओ डूबल छश्वि।

बात मुदा कहत के? श्वकयाक ओ मौन छश्वि ?

मोन मे श्वचार के ई, केहेन छश्मह सतत पवाह?

लगैय बह ो नश्वं, पाश्व सकता मनक ाह

के छश्वि ? कतय के?कोन गाम सं आयल छश्वि?

मश्वदर क आंगन मे , एश्व पश्वि पागण मे, भगवन के पूजा ले उदत की बैसल छैि?

श्वव्य रप शोश्वात ई रमणी जे बैसल छश्वि,

देव पूजा हुनकर तऽ, मा ि एक बहाना छश्मह।

मश्वदर मे आबय के, अशु के बहाबय के, श्वयतम जे हुनकर परदेस जा क बैसल छश्वि-

भगवन के नाम पर हुनका बजावय के

बैसल ओ सोचय छश्वि - श्वयतम के गप सब,

पूछय छथि मने मन-
“हमरा बतबियौ न - सजा ई केहेन ऐह?
कियाक ई थिरकन ऐह, दाम्पत्य जीवन सँ ?
अपन एहि दासी के कियाक बिसरने छी?”
किछो नहिं भेटय छन्हि, हुनका जबाब कतहु।
ई सब त गप्प मुदा मनक भुलाबा छै, माि बहलावा छै ।
मेनको त थिनकर सौन्दर्यसँ जरय छथि,
पारलौकिक सुन्दरि के, छोड़ि के बैसल ओ-
केहेन मनुख छथि, अादमि आ असुर छथि।
पैसा कमाबय ले, पदिा पाबय ले,
जे किछ काज संभव छन्हि, करय लेल आतुर छथि।
किन्तु ओ ई बिसरल छथि जे-
पती आ अपन सुपुि, हुनके पर आिभरि छैि।
मात पिता क पिि हुनक कतर्िय की?
माि अधिकारे टा ! हुनकर मन्तव्य छन्हि!!
मानल अपन भविष्य, हुनके बनेवाक छन्हि
पदिा जे पयबाक छन्हि - मेहनत जरूरी छै।
अपने छथि दूर मुदा दिल सँ कियाक दूरी छै।
हुनक एही मे मान, यैह माि छै अादान- पैसा रहय गुलाम;
इंसा तऽ मालिक छै- भौतिक हर वस्तु के।
भौतिकता इंसा पर, शासन जे करतै तऽ
ई त हेबाके छै-
भौतिकता हंसैत छै
मानवता कनै छै।

<u>कुसुम ठाकुर</u>

<u>चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ</u>

बिसरल छलहुँ हम कतेक बरख सँ ,
अपन सभ अरमान आ सपना ।
कोना लोक हँसय कोना हँसाबय ,
आ कि हँसी मे सामिल होमय ।
आइ अकस्मात अपन बदलल ,
स्वभाव देखि हम स्वयं अचंभित ।
दिन भरि हम सोचिते रहि गेलहुँ ,
मुदा जवाब हमरा नहि भेटल ।
एक दिन हम छलहुँ हेरायल ,
ध्यान कतय छल से नहि जानि ।
अकस्मात मोन भेल प्रफुल्लित ,
सोचि आयल हमर मुँह पर मुस्की ।
हम बुझि गेलहुँ आजु किएक ,
हमर स्वभाव एतेक बदलि गेल ।
किनकहु पर विश्वास एतेक जे ,
फेर सँ चंचल , चुलबुली कन्या बनि गेलहुँ ।।

अभिलाषा

अभिलाषा छलऽ हमर एक ,
कहितौह हम प्रिया सँ स्नेह ।
हुनक नखरा पूरा करय मे ,
रहितौह हम तत्पर सदिखन ।
सोचैत छलहुँ हम दिन राति ,
की पहिछब जमाय लगायब सचार ।
प्रिया तऽ होइत छथि नैहरक शृंगार ,
हँसैत प्रिया रोएत देखब हम कोना ।
कोना निहारब हम सून घर ,
बाट ताकब हम कोना पाबति दिन ।
सोचैत छलहुँ जे सभ सपना अछि ,
ओ सभ आजु पूरा भऽ गेल।
घर मे आबि तऽ गेलहि प्रिया ,
सदा नहि केलहुँ , नय सुन अछि घर ।
एक मात्र कमी रहि गेल ,
सचार लगायल नहिये भेल।।

चन्द्रकान्त मिश्र, पिता- श्री जनार्दन मिश्र, गाम-महिसौर गोठ
पो-महादेवमठ ,थाना-अन्धरामठ ,जिला-मधुबनी, जन्म-30,12,1968

खाथि साग-भात हगैथि पड़ोर

पेटमे अन नहि,
मुँहमे पान रहवाके चाही।
कुरता भले ही मैल रहैन,
चप्पल मुदा चमकैते चाही।।
बात करैथि लाख आ कड़ोड़।
खाइथि साग भात हगैथि पड़ोर।।
तरकारीमे तेल नहि खेताह,
माथमे तृप्ति कुमारी लगेवाके चाही।
राशन भले ही नहि खरीदब,
सिनेमा मुदा देखवाके चाही।।
भात पर चाहियैन धिया घालकोर।
खाइथि साग-भात हगैथि पड़ोर।।
साबुनक सेहन्ता लागले रहतैन,
सेन्ट लगेनाय हुनका सँ सीखू।
वीड़ी कहियो पिलैथि नहि,
वीलसक पौकेट जेवी मे देखू।।
कपड़ा तऽ भेटैन नहि पहिरता मुदा पटोर।
खाइथि साग-भात हगैथि पड़ोर।।
मण्डुलवा सन मूँह लगैत छन्हि,
कनिया मुदा गोरकियें चाही।

घर पर खड़ नञ्ञ छञ्ञह,
टाका मुदा एक मुटा चाही।।
कञ्ञाया वाप वेचैि वाड़ी आ खड़होर।
खाइि साग-भात हगैि पड़ोर।।
बापके पादय नञ्ञ आवैन,
अपना भञ्ञ ञ्ञन बंदूके चलेता।
भञ्ञ साल करैि गप्पाक खेती
बखार मुदा बनेवे करता।।
ञ्ञनकर नञ्ञ जोर-वेजोड़।
खाइि साग-भात हगैि पड़ोर।।
ञ्ञञ्ञया जलवै के सामथ्ञ्ञ नञ्ञ,
सौसे गाम िञ्ञ आञ्ञ लगेताह।
कञ्ञरकाने कञ्ञयो नञ्ञ पढ़लैि,
सार्सिी मुदा संगीत सुनताह।।
बात तेहेन जेना खौलञ्ञा इन्होर।
खाइि साग-भात हगञ्ञि पड़ोर।।

<u>जागु-जागु मैथिल</u>

कुम्भकर्णी नीन तोड़ु,
आपस मे आपकता जोड़ु।
साधनहीन जर्जर समाज मे,
प्रकाशक नव मन्त्र फूँकू।।
आवो वदलू अपन अन्दाज।
जागु-जागु मैथिल समाज।।
कतय गेल शान मिथिला के?
कतय गेल दूधक बहैत धार?
सोना उगलैत माटि कतय गेल,
कतय गेल ओ वात-विचार?
समझु आइ एकर राज।
जागु-जागु मैथिल समाज।।
सपटा प्रकाश मंत्री जीके घरमे।
वचल लोक हकन कनै अए।
एयर कंडीशनक नाम सुनै छी,
रौद मे केहेन देह जरै अए।।
सुखायल सोथ्यात करव कोन काज।
जागु-जागु मैथिल समाज।।
टूटल सड़क अन्हार गाम,
भेटय नहि ककरो कोनो काम।
मुलूक छोड़ि के भागए पड़ल,
एलहुँ बड़ दूर आन ठाम।।
रक्क पसिरने छथि भक्क ताज।

जागु-जागु मैथिल समाज।।
चारा खाय छथि तेल पिवै छथि,
अलकतरा सँ मोछ टेरै छथि।
सबहक भुस्सा खायवाक फरस्सा,
मंत्रीजी कुर्सी मे गढ़ै छथि।
शर्म घोरि पिवलथि वेचलथि लाज।
जागु-जागु मैथिल समाज।।
मैथिल आइ उपेक्षित वनलथि,
मिथिला के अछि हाल-वेहाल।
भासए हेजक हेज माल-जाल।।
मंत्री करैत तइयो पाज।
जागु-जागु मैथिल समाज।।

1096 || विदेह सदेह:३४

<u>पी-पी-पी दार पी</u>

पी-पी-पी दार पी,
जी-जान छोश्क़ के श्वन राश्व पी,
मश्व जेमे त श्वकछु नश्व जेतौ
दू-दही या घी
पी-पी-पी दार पी......।
एक घैूट दार दवाये जानु
सौसे बोतल हाल वेहाल
कूकर मैूश्व के मैूह मे जेतौ
जखने दार लगतौ जी...
पी-पी-पी-दार पी।
चाउर वेचले औटा वेचले,
वीवी के सभ गहना वेचले।
सभटा श्वकायै गेलौ,
अनकर लेवे की।
पी-पी-पी-दार पी।

रघुनाथ मुखिया, नेनो बासा, गाम+पो. बलहा, भाया सुखपुर, जिला सुपौल, पिन कोड 852130

दूिक िार

हम देखैत छी
हमरा सोझामे
दूि आ अनक लेल
हमर दूिमुँहा नेना
कोना छटपटा रहल अछि
हमर कोढ़ ओखखन फाटि जाइछ
जखन
ओ अपन आंगनक डयोढ़ी परसँ
अपन तुखयाक
दूि आ भातबला कटोरा
दोसकके छीनऽ चाहैत अछि
आ हमरा शिकायत करबऽ लगैत अछि
दूि आ भात
ओकर रंग आ स्वाद
ओखखन मोन होइत अछि जे
हमरा कानमे पड़इझल पारि
कएक नखि भखि देल गेल
वा

ई गप्प सुनबासँ पहिनहि
हमर प्राण पखेरू कहिएक नहि उड़ि गेल?
कहिएक तँ
कलम हथियार उठा सकैछ
शान्तिक समुर लहरा सकैछ
बुदक लहास खसा सकैछ
नव नव सृष्टिक विनाश आ निर्माण कऽ सकैछ
शोणितक धार बहा सकैछ
मुदा आशुक लेल
दू कि धार जुटाएब
ओ संभव अछि कलमसँ

छाहक सुआद

बेरोजगार लोक
आ श्वनु फरै फुलाबै बला गाछ श्वरीछ
दुनुमे की भेद आ की समानता
मश्व जाए बर कश्च जाए तँ बेजायै की।
लोक वेदक कहब छश्वा
जे लोक नश्वि हश्वयर नोट कमाबऽ
आ नश्वि काया पोसबाक लेल सुनर फऽर उपजाबऽ
ओकर बेगरते कोन एश्व संसारमे?
हे देखु! तकनीकी श्वाकासँ पश्वपूर्ण
डंकल अंकल आ चालसविॉवेजक उत्पाद
नाश्वहएटा गाछ जश्वसँ छीप श्वि लदम लद
आ खाद पाश्वासँ कोना तोपल अश्व
आ हे एकबेर ओम्हरो देखू ओ....
बऽड़, पीपर आ पाखश्वक ढुश्वआइत गाछ श्वरीछके
जूरो शीतलमे एक ठोप भेटाइत हेतै की नश्वए
तखनो सदश्वा टटाइत ठाढ़ अश्व अनका लेल।
आ हेओ बाबू, भैया, साहेब हजूर
ओश्व बऽड़, पीपर आ पाखश्वक छाहक सुआद ते
जेठक दुपहश्वयामे
बाट नपैते मोसाश्वरे बुझैत हेतै, नश्वि?

मनुक्खक सूखौत

ओ कंठ मोछक हँसाबैए
मुकासँ कटहर पकाबैए।
जुआ मागू पाआ मुखिया सरपंचक दालानपर
ओ देशी दार क िर बहाबैए
पंचायती राजक विकासपुि कहेबा लेल
मनुक्खक सूखौत बनाबैए। ओ कंठ....
काल्हि कि िक पंचैती होएत
तकर जोगार आइये लगाबैए
जौ जोगार नहि लागल तँ
आचेन बैसल मनुक्खपर अपन हुलाबैए। ओ कंठ....
पंचैतीसँ पहिनहि
जे दार आ मनुक्खक साना पहुँचाबैए
ओ आँखि मुआके सुता रहैत अछि
आ सरपंच, एक तरफा फैसला सुनाबैए। ओ कंठ....
सौ दिनक रोजगारक काडि
दुइ चारि टकामे बिकाबैए
जे किओ नहि देलकै आशान
ओकरा बीचमे सड़कपर सदस्य सभ मुक्कयाबैए। ओ कंठ....
तेखगर जनताक मुँह बन करबा लेल
जोरगर लोकसँ पहरेदारी कराबैए
कमीशनक मोट रकम केर वास्ते
सड़कमे तीन नम्बरा ईटा लगाबैए। ओ कंठ....
मजाल अछि जे किओ करताह विरोि

सोलहो पंच चमेटा देखाबैए
जौ फूजल मुँह अहा केर
बतीसे हाकि बीच कंठ िराबैए। ओ कंठ....

<u>जमल शोणित</u>

सुनै छियै जे
हमरो गाममे जमीदार सभ रहै
खूब पैघो नहि तखन रहै तँ जमीदारे
ओ अपन सिपाही आ मुँह लगुआक संगे <u>संग</u>
अठबारा छोटकाक टोलपर घुमै लऽ आबै
आ जाहि टोलपर आबै
बुझू जे पूरा टोले डोलमाल
ओ डोलमाल कोनो बाढ़ि आ भूकंपसँ नहि
मालिकक छुछुनरि चालिसँ होइत छल
मालिक बेड़िक ककरो आँगन घुसि
ककरो बौह, बेटी आकि पुतोहूएसँ
कहैत रहै जे
हे गे फलनाक बौह, फलनाक बेटी, फलनाक पुतोहू
उघार, उघार, उघार
*तोहर पएर बडड सुनर छौ
तँ ओ कतेक सुनर हेतौ
आ कहियो बिलटि गेलापर
दुनुटा सिपहिया
हुनक तनक वस्त्रके उपर उठा दैत रहै
आ मालिक अपन दुनु हाथसँ
कोनो <u>कोनो</u> अंगके मीड़ैत
लज्जिताक आँखिसँ निहारैत
पश्चात मुँह लगुआक संग खिलखिलाइत

आँगने आँगने श्छश्छयाबैत रहै
आ टोलक टोल
पुर खक शोथ्यात जमल जाइत रहै।

<u>कालचि</u>

गोरकाक समयमे
किछु लोक सभ
परोक्ष दैत रहथि
अपन घरक जनानी सभके
ओकर चानीक ढिरीमे।
एक तँ
हुनक देह की ढिड़बे घरि जाइत रहथि?
मुदा बाढ़ि जाइत रहथि
आनु किछु बेचने
हुनके बखारीमे सोन आ चानीक भार
आ नमरि जाइत रहै हुनक शेत पहिर
छड़किया जाइत रहथि हुनक नाम
चान सूरजक इजौत जका
भारतसँ बलायत धरि।
आ ओकरा गेलाक बाद
एतुका बोझहाथन जनानी सभसँ
ओसुली भेलै सूदक सूद
अलुआक कंदसँ
खेत पहिरक करमी सागसँ
मड़ूआ, कोनी, साम, कोदो आ खुदीक रोटी सभसँ
बदलल जाए लागल रहै
बोझहाथन जनानीक अंग पत्यंग।
आ एखन पंचायत पर्यावधि

किछु अदला बदली करबाक लेल
बी.पी.एल, अन्त्योदय, आवास आ पेंशन लाभसँ
दहाबोर कऽ देबाक शर्तपर
थाकू वेषमे हाथ जोड़ने
देह तकैत आँखि खपोड़ने
ठकठकआइत ठाढ़ अछि
एकटा नव योवना मसोमातक डयोढ़ीपर।

कोशीक आगमन

कहैत छथिन
जोतखी पण्डित
पोथि पतरा उचारिके
एहिबेर
भगवती एतीह मनुखपर।
तखन
हम कहलिअन्हि
कोशीक खिपटल
मशान बनल एहि भूमिपर
हेराएल भुतिआएल
लच्छक लच्छ
अनचिन्हार लहासक
हिसाब किताब देबाक लेल
आब ओ
नहि औतीह मनुख दिस।
किएक तँ
हुनके बहिन कोशी
हुनका संगे छऽल केने
संहारिणीक रूप धेने
गाम गाम सुडडाह करैत
लच्छक लच्छ लहास हेलबैत
सवा मास पहिनहि
कुशहासँ सवार भेल

चल एलीह मनुखपर।
आब ओ
ओक्स हाड़क हार
सजेबामे लागल रहतीह
शोणातक नीसामे
मा तल आ क्सासरल रहतीह
आगामे कल जोड़ने ठाढ़ भेल
िस्त अरदसुआ सभके
अथाला आवाहन िथ्स।
एम्हर बगुला भगत सभ
जान बकथ्स देबाक लेल
गोहाथ्सक आशासन दैत
सहयोगक अक्त छीट रहल अछ्छ
आ, िरज िरबैत अछ्छ जे
आब अहा सभक फूल हाथ्स जर र हेतै
अपन अपन डालीमे
पान परसाद सजौने
एक्सना पाच बखिथ्स
कऽल जोड़ने, चुपचाप ठाढ़ तँ रहू।

<u>एक सालमे तेरह महीना</u>

आउ, आउ बाउ बैसू
बडड दुखी देखै छी
किछु खगता अछि की?
बाजू बाजू लजाउ नहि
एतऽ अबैत छैक खगल लोक सभ
अहाके की अछि?
बेटीक बिआह आकि बापक सराध
बेटाक अछि मूरन
वा, माकि आँखिक अछि अपरेशन
भेटि जाइत छैक
तखन हँ अहाके
किछु जति जाल
वा किछु माल जाल
अछि की नहि?
हँ, हँ अछि अपनेक आशिषमे
बहोतरेमे बचल अछि पचकठबी
तखन आब ऐ कागतपर
दहक ओठाक निशान
आ, ई लैह नओ सय टका
एक सय टका
मास भरिक सूदि काटि लेलकऽ
आ हँ, सुनऽ
एहिबेर जेठ नहि टपऽ दिहक

आखाढ़मे मलेमास हेतै
आ, तखन तेरह मासक साल हेतै।

<u>श्वखाह चाङुर</u>

पड़ाइत जटायुक वंशजसँ
भेट भेल छल शात आ एकातमे
अपस्यात भागल जाइत देखव
हम टोकाश्वअश्व
एक क्षण श्वलमलाह
आ, ओ हमरा
पड़ाइते पड़ाइत कश्व गेल
हे महामानव!
अपनेक श्वात आश्वति श्वखाह वायुमण्डलसँ
हमर वंश उपश्व गेल
कतेको डीह डाबर पर
बैगन भाटा रोपा गेलै
हमर तँ पाणे बाचल अश्छ जे
एश्व अन्हश्वयोमे भाश्व रहल छी
अपनेक छि छायासँ
आ श्वआश्व रहल छी ओहेन ठा
जतऽ अपनेक जाश्वक आवागमन नश्वि हो।
ओना तँ हमरो मोन रहऽ
मंगल आ चान
मुदा ओतहुँ पहुँश्व चुकल अश्छ अपनेक यान
नदी श्वश्वये देने अश्छ यूरो गागश्वन आ राकेश शीमन्
आन कतेको हा मुश्व श्वनेने अश्छ अपनेक शान।
हमर तँ दुखक नश्वि ओर

मुदा बचा सकब तँ बचाउ
अहा अपन संतानके
अपन ब्वखाह चाङुरसँ

ई नेना

बाढ़िमे भसियाओल मायक लहासके
खिरक कातमे तकैत नेना
दस बखकि बलात्कृत मुइल
बहिनक मुँह तकैत नेना
फेकल पातपर लुधकिल कुकूरके
चल जयबाक बाट तकैत नेना
आतंकवादी विस्फोटमे चिथड़ी भेल
मजूर बापक खंड पखंड देहके तकैत नेना
भायक कफनक लेल
मनुक्खक हेजमे हाथ पसारने नेना
हम पुछै छी ई नेनाके छी?
हम देखैछी ई नेना अहुँ भऽ सकैत छी
अहुँक नेना भऽ सकैए ई नेना।

आइ पश्चल बेर

गामक गाम
पिर खेश्आहारक गलामे
लाश्या गेल रहै डोश्व
आइ पश्चल बेर।
हश्टया बाजारक भीड़मे
आगामे राखल हश्वयरी
ओकरा अनसोहात लगैत रहै
आइ पश्चल बेर।
ओ खसस्सी हश्वयरी छोश्ङ़
चमकाबैत छूरी आ गलाक डोश्व पकड़ने
लोकके श्आहारैत रहै
आइ पश्चल बेर।

दादाथ्यरी

बेसी दौड़बे तँ
दौनीक बरद जका
करामने जोश्ह देबौ!
हा मुँहमे जाय लागलौ?
आ भरेऽ लागलौ पेट?
जाबी बाश्ह देबौ, जाबी!!
पाश्व बढ़ल जाइ छौ?
लोकतं चाही तोरा?
संश्यानि लेबे संश्यानि?
आ ने लुकासँ झरका देबौ, लुकासँ!
ईह! नाचैए कोना छम छम
मुंगरीसँ घुटी ससाश्व देबौ, घुटी
नश्नि तँ मोन ठंडा केने रह, ठंडा
श्यान्है नश्नि श्छही हमरा?
भकसी झोका देबौ, भकसी।
कलमुच टुकुर टुकुर तकैत रह
कानमे तूर तेल देने सूतल रह
जाश्व हम तोहर कंठ मोश्क
सास नश्नि श्वकाश्व श्यद्यौ।

राजमहल

राजमहलक देबालसँ
अबैत अछि कनबाक सिसकी
बेवशक माउस सड़बाक गन्ह
आ टपकैत अछि बूँद बूँद शोणित।
एकर एक एक गोट ईटा
ओहि शोषित मजूरक हाड़ अछि
आ अलावा ओकर मॉउस
जकर पसेनासँ पटाकऽ
ओकर शोणितसँ रंगल गेल देबाल।
एहि देबालक चमक देखिकऽ
सहजहि अंदाज लागि जाइत अछि जे
केहन लाल टुह टुह शोणित रहै
ओहि दलित शोषित देहमे
जे साफ साफ देखार पड़ैत अछि
अहि अटारिकापर।
जतय चार भरक हथियरीमे
देखार पड़ैत अछि
ओकर श्रम शोषणक मूक गबाही
जे जनम भरि परिश्रम करैत
खिन्न मनसँ
पेट पकड़िके बितेलनि राति।
वैह नर कंकाल पाचीरक नेओसँ

जकरा छातीपर ठाढ़ अछि ई राजमहल
चीत्कार करैत शोर पाड़ि रहल अछि जे
आबो तँ हमरा आजाद कराउ
एहि मोटक देबाल
आ लोहाक जंगलासँ
जनैत छी! की भेल रहै?
हमर गलती तँ मात्र एतबे भेल रहै जे
फकत दुनू साझक रोटी मागने छलिऐ
ते हमरा पएरमे बेड़ी बान्हि कऽ
उनटा लटका देल गेल अछि
तहियासँ आइ धरि
समयक आँच सहैत आएल छी
अपन विरोही संततिक पतीक्षामे।
मुदा ऐ तँ
आइ फेरसँ हुनक संतति
किछु ओहने करबाक लेल
एहि पाचीरके देखि कऽ
यशोगान करऽ लगलाह अछि जे
ई हमरे पुरखा बनौने छलाह।

अशोक दत

कविता- आहान

निर्दोष मानव रक्तसँ

रक्त रञ्जित

िराक छाती

कुहरि रहल अछि।

कारामे बन्द कऽ देल गेल

कलम

अन्हार खोहमे

घिघियाओल जाइछ

आवाज

कोना कर शासकक बात,

सर्वोच्च आसनपर

विराजमान अछि

दुराचार, अपराध

जोड़पर अछि।

आतङ्क कुकर्मी

खुंखार कुकुरक नोचसँ

सोणिताएल देह लेने

कोना सूति सकै छी

कोना भऽ सकै छी निश्चिन्त

जखन तागसँ कटल गुडडी जेका
पताए लागल अछ
वतमान/भविष्य
ते उठबैछी गाण्डव
अजूनि जेका,
सिंहानाद कऽ जगबै छी
सुतनाहरके
हौ उठऽ/ देखहक
देश बनल छह कुरक्षेत्र
समाितऽ लक्ष्य
शान्ति लए। अखण्डता लए।

गीत

नाटक-इहो बच्चे छै (लए)

कहे रखि-रखिकऽ हमरा सभ अमगला रे
हमर कसूर कि
भेलियै बेटा जे हम गरीबहाके
हमर कसूर कि
अछि हमरो उमेरिया पढ़ऽलिखके
सङी-साथीके सङमे हँसऽ खेलके
मुदा गारी, हम गारी, छियै गारी हँ-हँ गारी
गारी सुनै छी अनकर दुअरिया रे
हमर कसूर कि, भेलियै बेटा . . . .
पेट जरल अछि ते ने छी एत्तऽ पड़ल
घरमे रहितै जे कोठी बरवारी भरल
रहितौ हमहूँ, हमहू रहितौ हँ-हँ रहितौ, हँ रहितौ
रहितौ अम्माके हमहू दुलर वा रे
हमर कसूर कि, भेलियै बेटा . . . .
ददमिनके अपन हम कते सुनाउ
हमहँ बच्चे छी केओ तऽ छाती लगाउ
घूमि जएतै, हँ घूमि जएतै, हँ-हँ घूमि जएतै
घूमि जएतै हमरो समैया रे
हमर कसूर कि, भेलियै बेटा . . . .

<u>नौटङ्की-१</u>

<u>नाटक-नइँ आब नइँ (लए)</u>

सवसािरण घरके
कि कही अश्च बेर।
मेहनश्चा छल संसार जकर
दुरमश्चाया देलकै घेर।।
दुरमश्चाया देलकै घेर
बुझलकै अपन ियाके भारी।
जकर एहन पश्चणाम भेलै
भेल श्चन श्चयाह राश्चा कारी।।
श्चन श्चयाह राश्चा कारी
रेतलक िया-पूताके घेट।
अंश्चया बनलै आश्चा बेदीके
ददे रहलै शेष।।
लौल कएलक सुनू केहन अजातमे
अजोहेमे देलकै कश्चाया बना।
आब देखू अहा सभ जे की-की भेलै
चूक कएलक जे तक्कर की पश्चणाम छै।।

नौटङ्की-२

नाटक-नइँ आब नइँ (लए)

बूझि गेलै बाला देलकै सासुर पठा
पढ़ऽ लिखऽके बेटिया देल कनिया बना।
भेलै खाक मनोरथ आब नोरे बचल
भरि जिनगी लए दोषेटा माथ चढ़ल।।
तील-तीलकऽ जरल धुआँकऽ जरल
धियाके वियोगेटा रहि गेल पड़ल।
शोक-सन्तापमे आब अपनो जरत
यादमे आब धियाके ओ पल-पल मरत।।
सुनू अहा समकेओ बाबू-भैया यौ
एहन परिणाम रौदियाके भेलै किए।
नइँ कहबै धियाके नेनपनमे बियाह
तहन भोगतै नरक सन ओ जिनगी किए।।

<u>गीत</u>

लोश्चयामे दाइल केली अश्चयामे भात
श्चपा लऽके काढ़ऽ गेली बहुमारलक लात
आरे बाप रे बाप
िकिल हारल घर आबी बहरा कमा
अङनोमे दैहए लगले काम अढ़ा
उल्टे कपाड़ पीटैत िरे जाके खाट
अरे बाप रे बाप
लोल रैङ सुत अपने तोशक श्चछा
हुकुम करे हमरा जो खाना बना
कुच्छो जे कहली दैहए नश्चराके िख
अरे बाप रे बाप
करमे छल फूटल जे कैली श्चयाह
हटोघड़ी मौगी हमर दैहए श्चता
कश्चयो ने सुने हमर एक्कोगो बात
अरे बाप रे बाप
दू आखर पश्च बुझे हमरा मुर खा
आङन-घर छोश्च कहे सदश्चन घुमा
सोङरपर टीकल हमर घरके टाट
अरे बाप रे बाप

कथ्यता

की थ्यखू कथ्यता?
की थ्यखू कथ्यता
ने रंगि उमंगि
आ ने पुआक अट्टहास
जीवनकेर कथ्यतामे
टीसक अनुपास।
बस्तीमे करैत अछि
ताण्डव नतनि भूख,
नइँ बजैत अछि
डम्फ आ झालि
एखन होलीमे,
नइँ छे ककरो ठोरपर
फगुआक गीत
रंगि-अबीर नइँ
उड़ैत अछि सोआत
ते शोकाएल अछि
होलीक उमंगि,
गरम तावापर पड़ल
पानिक बुन्द जेका
उड़ि गेल अछि मुस्की।
कतबो करओ केओ
आत्मपशंसा
मुदा, ठाढ़ होबऽ पड़तै काल्हि

कठघारामे
देबऽ पड़तै जबाब ओकरा
जे सोझातओने अछि फगुआ,
अओतै समय
अएबे करतै
खेलबै होली
रंग-अबीरसँ
तहन झाखब कथता/ एखन की झाखू कथता?
२०६२/१२/१

गीत-१

पुरुष चान आएल उतरि आइ मोर अङना
छिटकैत इजोर बजैत मधुरि बयना
स्त्री हमरा भेटल सिनेहक अनूप गहना
आइ नाचब छमा-छम बजाए कंगना
स्त्री मनके फुलकयारीमे जुही-चमेली
चम्कए नयन बीच सिनेहराके ढ़ेरी
पुरुष हुअए पूरा अहाके मधुरि सपना
रहओ सदिखन अहाके हँसैत नयना
स्त्री हमरा भेटल सिनेहक . . . . . .
पुरुष यौवनक मधुरिरसँ साठल चङेरी
पेमक हमर घरके अहा बड़ेरी
स्त्री अही छी पूजा हमर अही अर्चना
सोलहो सिंगार हमर अही सजना
पुरुष चान आएल उतरि . . . .
स्त्री उमड़िकेर घिरके आब झुकए घेरी
पुरुष एम्हर सहरि आउ कर जुने देरी
स्त्री हृदय बीच राखब सदरि अपना
पुरुष पूरा भेल कहियो जे छल सपना
चान आएल उतरि . . . .
स्त्री हमरा भेटल सिनेहक . . . . . .

गीत-२

पुरष गोरी नइँ कर एते गुमान, तोरेपर मन जे अटकल
सुन बात हमर तो मान, आब छोड़ एना नइँ हठ कर
स्त्री तोरा सन बहुत अकान, दुनियामे हम अछि देखल
छौ केहनो मुँह ने कान, करे काग जेका बकए करकर
पुरष हमरासँ नीक तोरा आओर कतऽ भेटतौ
ओल सनक बोल सूनिकें तोरा पुछतौ
जुआनी हेतौ बियान, एहिना जँ रहबे भड़कल
स्त्री लेर चुअबैत बकए घुमए पाछा-पाछा
छी हम जुआन तैसँ तोरा कोन बाि
रे एखनो करै बियान, मरपाछि बकए छौ जनमल
पुरष नयनक कटारी तोहर हीयाके बेिलक
मस्त जुआनी जे छौ चैन उएह लुटलक
दऽ दे हमरा पर ध्यान, मन तोरे लए अछि ककछल
स्त्री चाहि एहन छौ जेना कोनो वंश कुरहिब
छाती पीटैत रहबे देखि-देखि सुन्नरि
छछिआइते जेतौ परान, धानगी मि रहबे रकटल

शिव गीत

बाबाक महिमा अपरम्पार
गंग-राखि जटामे शोभए
गरबामे सापक हार, बाबाक महिमा. . . . .
अपना खाइ छथि भाङ-धतुर आ
रने-वने भटकै छथि
सभक करथि मनोरथ पूरा
औढ़रदानी कहबै छथि
अपन अछि भभुत-बाघम्बर
अनका लए गृवहार, बाबाक महिमा. . . . .
शिवके महिमा जानथि सकलके
पढ़ि-पढ़ि वेद-पुराण
जग रक्षा लए विषकेर छाकल
बास बसथि समसान
त्रिभुवन स्वामी अन्तयामी
जगके पालनहार, बाबाक महिमा. . . . .
सभक हृदय बसै छथि महादेव
सभक जनै छथि हाल
अहूँक सूधि लेतऽ स्वयंभू
टूटत दु:खक सञाल
देवक रक्षा कएलथि गौरी वर
दुष्टक कऽ संहार, बाबाम महिमा. . . . .

<u>कथ्वता</u>

<u>अहुश्वया</u>

पटापट भुजा रहल अछ्छ
भष्टाचारक कनसारमे
थ्मनगी।
चेतनाशून्य
सम्वेदनाशून्य
कलमक तर आश्व हनहनबैत
रेतैत अछ्छ घेट
स्वेच्छाचारी शासक
ते छटपटाइत छी।
एक टुकड़ी रोटी लए
भूखल थ्ययासल
मश्चान जेका
शम कर लए बाघ्य
गरीब मजदूरके
खैनीक नोश्म जेका सुड़कैए
बीड़ीक ूआँ जेका उड़बैए
ओ, जकरा भेटैत छे आसन,
जे बनाओल जाइछ
भष ाचार श्चायं कि
उन्मूलक
ओहो बहैए अनन्त पलोभनमे
बढ़ऽ लगैछ नह ओकर

श्वाकश्व जाइछ श्वाङ राकस जेका
हुड़श्क कऽ फाड़ऽ लगैए पेट
आ नोश्च-नोश्चकऽ
करैए शान्त
अपन उदरक ज्वाला।
चहुँश्चश पसरल अश्छ
भष्टाचारीक सामाज्य,
भष्टक महासागरमे फँसल
उजबुजाइत श्चनगी
श्कछेर खोजैत
कऽ रहल अश्छ रक्त तपणि
असन्तोष आ चरम घृणाक बीच।
नइँ देखाइत अश्छ कोनो मश्चदर
जतऽ चढ़ाउ आस्‌िक फूल,
रफ्फू पर रफ्फू करैत छी
तैयो फाटलके फाटले अश्छ श्चनगी,
दम फुलैए
चेहो उठै छी सपनोमे
नइँ भेटैत अश्छ जखन
भष्टाचारक सोइरकद अन्त
तैयो हि‌ड़ैत रहै छी
घवाह श्चगतके ढ़ोइत
श्वरोग भश्चष्य।
टङाएल अश्छ जनमश्चद अश्चकार

भष्टाचारीक जेबमे
चौपेतल कागत जेका
आ हम घवाह कुकुर बनल
एम्हर गलीसँ ओम्हर गली
करैत रहै छी भुकबाक अभ्यास
अपन स्वरमे आशिश आ
निन्दनके झझरबैत
जे घूर्स ताकत कोनो समाङ
वकालत समवेत् स्वर
ओ स्वर
जे स्वर
ढ़ाहत भष्टाचारक कला
लगाओत जाबी
भष्टाचारीक मुँहमे।
२०६२/१२/१५

कथता- सङेत

पुष्ट वक्क
मदनिमे जूटल वलत्कारी
बुझैत अछि पटा अपनाके।
खसल गेल उन्मादमे
जाइ वक्क उरोजके चूसिकऽ
आइ बनल अछि
मदनि करबा जोग
ओही छातीके करैत अछि
छत-विछत
जकर पीड़ासँ
आि हलाल कऽ छोड़ल गेल
खसी जेका
छटपटा रहल अछि वतमािन
मुदा नइँ छै थकर तकर
नोचैत आएल अछि
आओर नोचऽ लए उदयत अछि।
कपुरि जेका उड़ैत अछि शाश्वत,
बकि रहल अछि मूख!
िन्दन!
टुग्गर होइत िया-पूता!
आह! अहुरिया कटैत अछि
खानु मोइसक कलम

मुदा, आश, जीवित अछि
फड़फराए जे लागल अछि
वलात सीयल ठोर
अधिकार लए,
फड़कऽ लागल अछि बाँहि
मसोरऽ लए ओकर गर्दनि
जे पयत्न करैत अछि
इदिअमीन आ हिटलर बनबाक
जे दोहराबऽ चाहैत अछि
'शिकागो'-क बीच सड़कपर
घोड़ाक टापसँ कएल लतखुर्दनि
जे लगाकऽ आबि
मस्त भऽ बजबैत अछि
अपन बासुरी 'नीरो' जेका ।
ठोरक फड़फराएब,
बाँहिक फड़कब
सुखद सङ्केत अछि
वलत्कारीक अन्तक ।
२०६२/१२/२५

<u>शिव गीत</u>

भोलेदानी हमर अहा विनती सुनू
खाली झोरी लऽ अएलहुँ दयासँ भर
अछि जन-जनमे सगरो अहीके गुणगान
छइ हमरो अरिके यौ, बाबा मुस्कान
हमरा भेटए ने बाट जाए ककरा कहू
भोलेदानी हमर अहा . . . .
होशे हराएल नइँ किछु छयो अछि भान
हमरा लगैए कारी एखन सुरज आ चान
नाव भवसागरसँ पार शिवनगीक कर
भोलेदानी हमर अहा . . . .
छी अहाक शरण आएल, राखि शिवअमान
भोले अहा ने सुनब हम तेजब परान
अछि हमरो अहासँ ई हटे बुझू
भोलेदानी हमर अहा . . . .

<u>कथ्वता- अश्रायान</u>

भाइ-भश्राजा माश्वकऽ जे
अश्च शादी हथ्यिौने,
उन्मादमे ताण्डव नतनिके
अश्च देशमे रक्त बहओने।
देशमे रक्त बहाबए श्वकए
कश्राको नइँ छै भान,
जागल जनता छेश्च चूकल अश्च
गणतंकि अश्रायान चलल से
आब ने श्वकन्नहुँ र कतै,
अहंकारी आ अत्याचारी
मुँहे भरे खसतै।
मुँहे भरे खसतै
खुनलक ‘जाने’ अपने खदा,
छै ककरामे कुब्बत जे
एश्च बेरक सश्चले किका ।
अही बेदके किकामे
भऽ जाएत चकनाचूड़,
जनसमुरकेर लहरक आगा
सभक टूटल गुरर।
सभक टूटल गुरर
तखन ई ‘जाने’ पारस की छै,
‘श्चटलर’ तऽ ूलि-ुसिश्वत भऽ गेल
ई तऽ बस मुसरी छै।

मुसरी सङ टुनमुसरी
धानगीक जड़ि कटैए,
छून लागि गेल कटैए,
घून लागि गेल बाँसमे
से ई भरम पोसैए।
नइँ लागल अछि छून बाँसमे
खुन भेल ने ठण्ढो
सभ केओ मिल सङे लहराएब
आजादीकेर झण्डा।
आजादी सभक होइत छै
जनमासिद अधिकार,
तकरा कोना छिन सकत ई
सँड़ल-गलल दरबार।
एहि दरवारके सभ केओ मिलकऽ
ईटसँ ईट बजादी,
अही बेरके उघबामे
'नामो-निशान' मेटा दी।
'नामो-निशान' मेटा दी तै लए
बुलन्द कर आवाज,
सिंहनाद कऽ सभ केओ बाजू
लोकतंत्र जिन्दाबाद।
लोकतंत्रकेर हएत बहाली
राज करतै जनता,
मेचीसँ महाकाली बजतै

जन-श्चजयकेर डङा।

जन-श्चजयकेर डङा बजने
घर-घर हएत खुश्चायाली,
लोकतंकिेर नामपर
बजाउ जोड़सँ ताली।
२०६२/१/७

गीत

एक खाड़ा रोटी लए कुकुर बनल लोक अछि
केओ एतऽ मलछैए केओ ककरो झपटैए
रोटीए लए करैत कते देहक व्यापार अछि
अभावकेर छूआँसँ आँखि पिराइ छै
भूखकेर आरीसँ हृदय चिराइ छै
एहन सन हालमे छै एक नइँ अनेक एतऽ
पेटे बनल जकर जीके जञाल अछि
रोटीए लए करैत. . . . . . .
मुँह भऽ जाइ चून सन देह पीरा जाइ छै
नेनाहिमे ठोरसँ मुस्की हेरा जाइ छै
ओकरा नइँ पुछियौ छै नीत आ अनीत कतऽ
खेलबाक बयसमे एतऽ भेल जे लचार अछि
रोटीए लए करैत. . . . .
कोकनल घाओ जेका जिनगी दुखाइ छै
जुआनी सराप भेल दिन-राति बिकाइ छै
झरकै छै मास दिन जिनगीक अंग ततऽ
रोटीक भूगोल पाछा बौरल संसार अछि
रोटीए लए करैत. . . . .

शीतल झा, पिताक नाम स्व. लक्ष्मी कान्त झा, माताक नाम स्व. दाई रानी झा, जन्म स्थान सुगामधुकिरही ५, गाम नरसुआ, धनुषा, नेपाल।, वर्तमान बसोबास जनकपुर ६, जानकीनगर पगला मिथिला, महाराज सागरसँ दक्षिण, जिल्ला धनुषा, नेपाल।, जन्म मिति २०१२/०१/०१

जूड़शीतल।, शिक्षा बी.ए., बी.एड., बी.एल.।, राजनीतिक संलग्नता नेपाल कम्युनिष्ट पार्टी (एमाले)

पद सलाहकार, के.क. नेकपा एमाले।, रचना आ प्रकाशन (i) संघीय संरचना आ मिथिला राज्य। मिथिलाक राजनीतिक इतिहास आ मिथिला (नेपालक सन्दर्भमे मात्र),(ii) संस्कृति, राष्ट्र आ मौलिक सम्मानमे विभिन्न रचना।, (iii) कविता (प्रकाशित विभिन्न पत्रिकामे), (iv) सुगौली सन्धि आ मिथिला (अप्रकाशित), "सुगौली सन्धि"मीन राज उपाध्याय नागरिक उडडयन विभाग बाबरमहल

(१) भारतक भूमिप्रमाण पौराणिक कथा, नक्शा, नेमूना, सन्धि, ऐतिहासिक चर्चा

(२) तत्कालीन राजाक इतिहास, भूगोल, नक्शा

(३) भारतक प्राचीनतम इतिहास (मौर्य अशोकके, मानव इतिहास)

(४) मुगल (वंश सामाज्य, क्षेत्रखण्ड)

(५) मिथिला वडाविद्यार्थी, मुंशी जी, पगला बाबा, मिथिला।

मुक्तक

(१) हिन्दी पढ़लहुँ व्याकरण सिकलहुँ,
हाकिम, नेता होइछ पुछाङ।
छुटिएलौ मोछ, भूमि, भाषा, सीमा, जनता होइछ संतिआङ॥
(२) आँखिमे नोर भरि गेल जनु सदीके
जखन भय बढ़िगेल हथियार जनु बदीके,
की हे तै वदीवाला हथियार सेहो नरसिंहक छैने,
तै हिंसक हथियार देखबाक आब हिंसक छैने॥
(३) सब तरकारी छोड़ि नीक लागए लागल नेबो देल ओल,
पशंसा तँ मानि चाकड़ी अछि नीक अछि कटु बोल॥
(४) अभावक चिन्ता सदा अछि बढ़ि जाइयै हाटमे,
स्मृति सवि छथि भय अछि जे छथि सडे बाटमे॥
(५) भूमि नहि भाषा नहि आकाश तँ अपन लक्ष्मअ
चाकड़ीक नोकरी अछि अबकाशत अपन लक्ष्मअ।

<u>बोकरे सन</u>

हम बुझइ छलाऐ जकरा अपन, ओत रहल छल ओकरे सन,
बधिआके छलाए खसी बनौनइ छलाऐ, ओत रहि गेल बोकरे सन।
पद, पइसा ा, पैसा छइ ह आब, भल मानुष त कहबइ ा ने?
बात करैि ओ नमहर मोटगर, मुि ी चाइ ा सब छोकरे सन,
नीइ ा, इ ायत, व्यवहारमे अंतर पैचमे ि ाकिल बजता हे,
लाल, डम्हाएल, पुष क भम अइ छ, मुदा रहल छथि चोकरे सन।
की करब चेतु जन, मनसँ आबो इ ान्हके के छथिओ,
माइ ाक बनाकए देखलहुँ ओ छथि हेहर ि ि र नोकेर सन।

शाश्वा ! ! !

I. की उठौने छी? बम्!
की पकड-अने छी? बन्दूक!
की खोजैछी? शाश्वा!
भेटथिन्ह? नश्व!
II. की देखैछी? लास!
की थांजैछी? खून!
की खोजैछी? चैन!
भेटलाह? नश्व!
III. कऽ तँऽ बौआई छी? कोने कोने!
कत श्चश्च आई छी? घाटे घाटे!
की खोजैछी? सुरक्ष!
भेटलाह? नश्व!
तहन ......
ि यि ि र ! बुद आश्च रहल छथि
बन्दुक ने नश्व, शाश्वाके श्वाश्वाओने!
बम् उठौने, चयनके श्वाश्वाअबैत!
सुरक्षके लश्वा अबैत !!!!

1142 || विदेह सदेह:३४

<u>सब केव उदास रहैअ!</u>

सब केव एहिठाम उदास रहैअ,
केव हमर, केव हुनकर, केव अहाके दास रहैअ!
केब पनि, केब महान, केव गणमान्य होइि,
देखिओन कने नीक जका, ओ ककरो खबास रहैअ!
भाषण तँ मंिी, पाज आ संतके नहि होइक,
उताहि देखु हुनके पर, ओ कोरा नकवास रहैअ!!
जीवित सासक दम्यमे जे किछु गेला दैछ ओ यंि लगाए देखलिअ ओ तँ एकटा लास रहैअ!!

हमर संस्कारक गीत

(१) की गल्ली, की सड़क, की मन्दिर की मोहाड़?
जखन नाक मूनिक, “पैर बाचिक” चलैछी
(२) पोखरि ऐतिहासिक होइक आ शिवकक कोड़ावल
मोहाड़परक घर नमरैत गेलै
पानिआब घटैत गेलै
तहन कोनो मासमे मोन पड़िआइए
शामाक गीत
”गामक अधिकारी तोहे बड़का भैआ हो!
भैआ हाथि दस पोखरि खनाए दहो
चम्पा फूल लगा दहो हो!
(३) एहि ठामक मन्दिर की भेलै?
हाकिम साहेब कब्जाक लेलखिन! आ मूर्ति?
ओ तँ चोरा...अ...लेल कै! के?
से तँ भयंकर पैघ लोक रहै! आ जमीन जगाह?
महान् जी बेच लेलखिन! सब?
नहि किछु माइरामके। किछु ओकरे भतिजाके!
तहन, मोन पड़ैअ आ गुनगुनाए लगैछी——
“एहन पवित्र केर अही पानि राखब हे महारानी सीया,
अहीके चरण केर आश् हे महारानी सीया!!

<u>कथ्य जी तबाह छथि</u>

कथ्य जी तबाह छथि हुनकासँ,
गाल परक कारी बुन्कासँ!
कथ्यताक लेल खोजलथ्आ एकटा नारी,
शृंगार रस लेल पकड़लथ्आ ओकर साड़ी
कथ्यक नाक टेढ़ भेलथ्आ हुनकर ठुन्कासँ!
कथ्यजी मग्न भेलाह हुनक पेम थ्यान्तामे
मन अटथ्क गेलथ्आ कखनो केस कखनो थ्कतामे
बहथ्क गेलथ्आ पती पड़ोसीक नन्कासँ!

डॉ. शेफाश्चका वमा

हमर माय

आय हम अपन मृत्यु देखलौ
लहास पडल छल
लोग फुश्च फुश्च काश्च रहल छल
हमर श्चनगी मे, हमर बाट पर
काट श्चछावे वाला
सव श्चचुकी रहल छल जकरा
हमर जीवन से कोनो मतलब नही छल
सबहक मुंह से हमर पशंसा
श्चकश्च रहल छल
(जेकरा लेल जीवन भश्च हम
तरसैत रहलो)
घढ़ी घढ़ी क गप्प फुलझरी जका
छुश्च रहल छल .....
आह ?
भीतर से ओ कतेक खुश छलाह
असगर आकास मे हम चान सन
चम्कब दम्कब
ई ते छल मोनक बात

आंखि सावन भादोक आकास
हमर बेटा सव स्तब्धहि
हुनक चीकरब भोकरब देखि अपन नोर
बिसरी गेल
अपन दुःख बिसरि गेल जिनका लेल माय
भरि जीवन तरसैत रहलीह की
वैह लोग छथि ई सभ ?चैन से माय के
एकोटा सास नही लेबे देलान्हि
की वैह लोग छथि ई सभ ??आ
हुनक अंतरात्मा विरोह कै उठल
चुप भय जाओ अहा लोकनि
बंद कर तमाशा , ई कानब बाजब
जिनगी भरि हमर माय दीयाजका
जरैत रहलीह
आय जखन ई चैन से सुतलि रहल ऐछ
गहीर निन मे परल ऐछ
तखन अहा   सब किएक हल्ला मचा रहल छि
किएक चिकरी रहल छि ???
सभ चुप भै गेल ..मायक मृत्यु से
बेटा पगलाय गेल ऐछ ..
आ दुनू बेटा झुकि के हमर माथ चुमलक
ईशर: हमर माय के चैन देब , अगलो जनम
हम एही माय के कोखि से जनम ली
आ अचके ओ चिकरी कनैत बेसुधि भय गेलाह
"हमर माय "

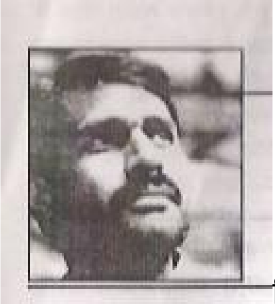

धीरेन्द्र प्रेमर्षि

फेर आबि गेल नवका साल

फेर आबि गेल नवका साल
हमर मुदा अछि पुरने हाल
बदलल पतड़ा बदलि गेल खतरा
एमकी कोना टहलतै काल!

पाप बढ़ए जनु कोपर बास
पुण्यक उखड़ि रहल छै सास
लोकक मूहक मुस्की देखू
लगै जेना खसिदल मधुमास
बाटघाट बिछबैत भ्रमजाल
फेर आबि गेल नवका साल

भेल पात झड़ि नाङट गाछ
पोखरि छोड़ि पड़ाएल माछ
सुग्घड़ रस्ता चलआहारसभ

लोटि भेल अछि लगने काछ
मानवताकेर झुकबैत भाल
फेर आबि गेल नवका साल

फूटैत बम्म आ छूटैत गोली
बन्द कऽ रहल न्यायक बोली
नव-नव सालमे नव-नव ढङ्ग
खेलल जाइ सोणितसँ होली
रितीक आँचर बनबैत लाल
फेर आबि गेल नवका साल

मिझाइत कालक दीप बुझी
राष्ट्रक अन्त समीप बुझी
ददरिआकालैत सृष्टि क घाओ
बहा रहल अछि पीप बुझी
ठोकैत एक नव-युगलए ताल
फेर आबि गेल नवका साल

रिरेन्द्र पेमर्षि गीतसहि कोन सुर सजाबी? सँ

रामभरोस कापश्च भमर

गीत-१

बाि बोनसं उपर उश्कयौ
कश्वयौ मनके चंगा
देश दुश्आयाके हाल ने जनबै
रहब सभ श्वन उटंगा
अखनो अनके मुंह तकबै
कखनो ने भेटत जस,
थ्यया अहा रहलहुं जस के तस ।

ठीक नीक ने उठब बैसब
कोना वुझबै जीवनक रंग
अप्पन काज सुतारत सश्वखन
अहा चास वासमे दंग
भुच्चर बश्च कऽ आंगन सेबने

जीवन तहस नहस,
थया अहा रहलहुं जस के तस !

बाल बच्चा टेल्गर होइते
पढएबै बोरश्छंग नीके
पढ़तै श्चखतै बढ़का बनतै
सभ श्चकछु हयतै ठीके
सपना मनमे राश्चख हम श्चमलौ
भोगलहुं अहाक अजस,
थआ अहा रहलहुं जस के तस !
अहाके बोली कोढ़ कटैए
आबो कर अहा बस,
थया रहलहुं जसके तस !

गीत-२

ऐ चन्दा अहा, खोश्म पठाउ थ्यय कंत
अहीक इजोश्वयामे गेला श्वारमोश्चया
बनल पश्चाका अनन्त !

सजल सेज ओगरने सश्चखन, हम बैसश्च बौरायश्च
अओताह हृदय लगओताह, मनश्चमन अकुलायश्च
राश्च श्चनकेर गणना थ्यसरल
सुश्च वुश्च भेल उसरन्त !
ऐ चन्दा, अहा खोश्म पठाउ थ्यय कन्त !!

लुच्चा पबन देह, छुश्च छुश्च लसकए
काम मोचरवा श्चय, रश्च रश्च चसकए
ठाढ़स बान्ह भंग दुखदायी
शील, कुल केर अन्त,
ऐ चन्दा, अहा खोश्म पठाउ थ्यय कंत !!

दुश्चाया बैरी आंश्च गड़ौने, लप लप जीह करैए
आनक चास खएबा अभ्यासी, हश्चय घास तकैए
आबहुं जं अहा भेद नुकएलहुं
परतारब श्चगश्चगन्त ।
ऐ चन्दा, अहा खोश्म पठाउ थ्यय कंत ।
अहीक इजोश्वयामे गेला श्वारमोश्चया
बनल पश्चाका अनन्त!!!

मनीष झा "बौआभाई"

ऋतुपति बसंत (कविता)

स्वागत अछि हे ऋतुपति बसंत
वर्णनीय छी अहा अनंत
स्वागत अछि हे ऋतुपति बसंत

नवपल्लवक संग सुशोभित
मजजर देखि होइत मनमोहित
बाट बटोही सहजहि आकर्षित
गाबथि वर्णन ऋषि-मुनि-संत
स्वागत अछि हे ऋतुपति बसंत

वीणा वादिनी देलन्हि पवेश
वरमुरा मे हरलन्हि क्लेश

ऋतुराजक छथि गुण विशेष
गुण वखानक कोनो ने अन्त
स्वागत अछि हे ऋतुपति बसंत

मधुर सुगंध पसारैत महुआ
टप-टप झहरैत आमक मजिआ
गँहुमक खेतक हरियर बढ़िआ
तीसी सरिसव बनल महंथ
स्वागत अछि हे ऋतुपति बसंत

रंग अबीरक संग मे होली
बूढ बच्चयानक अलगहि टोली
नेना भुटकाक टुनटुन बोली
माटि लेटायल छोटका जन्त
स्वागत अछि हे ऋतुपति बसन्त

कुहू-कुहू कोइली गीत सुनाबय
मोर आ मोरनी पंख पसारय
बोल पपिहराक बड़ मन भावय
विहुँसैत "मनीष" चिपोरैत दन्त
स्वागत अछि हे ऋतुपति बसन्त

मनोज कुमार मंडल

जाहि पात रहैत छी हम।

जाहि पात रहैत छी हम।
मोती सनक चमकैत पानि,
सोना सनक जाहिठाम माटि,
सोनित पानि बना कए
खटैत अछि मजदूर जाहिठाम
जाहिठाम धरती उगलैत हीरा
मुदा खेद अछि
एखनो अन-अनके मरैत लोग,
जाहि पात रहैत छी हम।
नदीक जाल बिछाउल जाहिठाम
कहबाक लेल पानि खजाना अछिठाम,
पानियो सँ बिजली बनैत
सातवा दसक आजादीक बितल
परन्तु एखनो दीया जलैत जाहिठाम

सभ किछु श्मशान भऽ जाइत
रात्रिक अन्हारमे
जाहि पात रहैत छी हम।।
बागक हरियाली एतबा सुन्दर जे,
भगवानो स्वर्गलोकसँ अएबा लेल तरसैत
अपन छटाके देखैत हर्षित
सभ अपन हरियाली अनबा लेल आतूर
छनमे अबैत बाढ़ि
सभ किछु बहा लऽ जाइत जाहिठाम
जाहि पात रहैत छी हम।
भरल रहबा जाहि अनसँ डाबा
किंतु भरैत छोट-पैघ नेतासँ
जाहि माटि-पानि मुद्दा बना कअ
बनैत छोटसँ पैघ राजनेता
लूटल मे, लूटल जाइत जाहिठाम लोक
जाहि पात रहैत छी हम।

नवीन कुमार "आशा" (१९८७-), पिता श्री गंगानाथ झा, माता श्रीमती सुनीता झा। गाम- निरामपुर, पोस्ट- लोहना रोड, जिला- दरभंगा।

(भूल-सुधार: नवीन कुमार 'आशा' जीक दू टा कविता १. "अंतरकलह आ विचार" आ २. "बैसल-बैसल सोची मनमे" "विदेह"क ७२म अंक (दिनाक १५.१२.२०१०) मे ई-प्रकाशित भेल। मुदा त्रुटिवश ई दुनू रचना "विदेह:सदेह ७ (विदेह मैथिली पद)" मे राजेश मोहन झा 'गुंजन' केर नामसँ राजेश मोहन झा 'गुंजन' केर आन रचानाक संग प्रकाशित भऽ गेल। तकर भूल-सुधार करैत ई-दुनू कविता एतऽ "विदेह:सदेह ३४" मे नवीन कुमार 'आशा' जीक आन रचनाक संग पुनः प्रकाशित कयल जा रहल अछि।- सम्पादक)

१

अंतरकलह आ विचार

जुनि पुछू हमर हाल
हम छी भय गेल बेहाल

देखि ई समाजक कुरीति
मन भय जाय आगि
बनैत ई कीड़ाक
खाथि बना कय आचार।

बनल अछि ई चचा
छपल अछि जगमे पचा
भगलए यौ फेर एकटा बेटी
फेर ककरो संग यौ
एहिमे नहि आयल मजा
ई तँ अछि एकटा सजा
जँ भागल दोसरक बेटी
ओकरो बुझियौ अपन सुता।

बदलू ऐ कुरीतिके
बेटा होथि वा बेटी
दियौन्ह हुनका जान
जुनि बनु अजान
आइ जँ लेब मजा
फेर बनत ओ सजा।

ई अछि जगक रीति
एक काजमे नहि देत संग
अगिला लेल आओत आगु

जखन करब अहा थकछु अिला
बश्आ जायत ओ थ्यछला
फेर नश्ह देत संग
भय जायत अपनेमे मग्न
बना लेत ओकरा चया
कय देत अहाक पुजा-पुजा।

कोना बदलत ई समाज
जकर होइ अश्छ नाश
थ्आक गप्प नश्ह करए क्यो
अिला लेल सदैव तैयार।

की भेल जाइत छै एश्ह समाजके
अपन सभ्यता सब क्यो थ्बसरए
पश्चामी होए हावी
की होएत भावी समाजके
थ्यआत मन सोचै अश्छ।

आजुक थ्धया-पुता नश्ह बुझए
ओकरा आरो थ्कछु नश्ह सुझए
नश्ह सोचए घरक मान
ओकरा बस अश्छ अपन ध्यान
सजा कए माइ-बापक अिी
बश्आ जाए ओ स्वािी
नश्ह सोचए हुनका बारेमे

जे हुनकर करथि पालन।

देखि समाजक ई कुरीति
मोन भय जाइ अछि पागल
जा धरि नहि बदलत समाज
नहि अछि तावए इलाज।

कोना बदलत ई परिभाषा
कोना बदलत ई समाज
जकर करै नव पीढ़ी नाश
लाबए पड़तै हुनका सड़कपर
कहए पड़तै हुनका बेड़िक
जुनि कर पूर्वजिक अपमान
हुनकर तँ राखू मान।

२

बैसल-बैसल सोची मनमे

बैसल-बैसल सोची मनमे
मुदा नहि लता तनपर
आशा बढ़ैत एहि गमीमे
बैसल हम उघार आंगनमे
सूर्यक तपिस न झेलल जाय
न अहिलाह किछु देखल जाय
जाहि नहि उठायब डंडा
नहि भेटत मनके ठंढ़ा
आब ओ गेलै जमाना
जाहिमे होइ तराना
सभ किछु अछि दू मुँहा रस्ता
ई जीवन नहि अछि सस्ता
सभ किछु अछि एकटा मोल
जँ अछि पाइ तँ अहा अनमोल
बदलल जाए पेमक परिभाषा
अछि जँ क्षमता तँ कर आशा
भ्रष्टाचार अछि पयर पसारैत
शिष्टाचार गेलै कहादन
आब नहि अछि
बेटा बापक हाथिमे

किछु दिन बाद होएत ई
बेटाक आगा बाप झुकायत माि
बेटा बैसत कुसीपर
बाप डोलायत पंखा
देखी जे ई फड़ैत विष
सोची मनमे हरदम
कोना होएत ऐ समाजक विकास
कतहु ने एकटा आस
सभ दिस होइक आनन्द
एहिसँ होअय शआनन्द
बैसल बैसल सोची मनमे।

३

हमरा भेटल

हमरा भेटल एकटा विषय
ओइ लेल भेटल किछु समए
कहल गेल हमरासँ मीत
लिखू युवा वर्गलेल गीत
फेर मागल किछु समए
आ युवा मंचमे पैसल हम
देखि हुनकर स्फूर्ति
मन भऽ जाय पसन
ई देखि कही मनसँ
ई छथि देशक भविष्य
ऐ सँ नै कियो अनजान
एतए सोचि बढ़ल मन
फेर आएल दममे दम
फेर कलम आगू बढ़ल
आब केलक किछु लिखैक मोन
युवाक मन हम जानी
हुनकर दुख-दर्दक जानी
कि होए हुनकर अभिलाषा
जँ युवा आगू बढ़ता
तँ समाजक सम्मान बढ़त
फेर राज आओत युवा वर्गक

ऐ मे नै संदेह रहत

हमरा भेटल...।

<u>४</u>

<u>सुनू सुनाउ अपन खबरि</u>

नै बनू अहा बेखबर
बेखबर बनै नै समए अछि मीत
अखन गाऊ संगीत
संगीतक नै कर अभेलना
ओकर सभ स्वरमे अछि तान
ओकरा नै कर अनजान
जँ आइ फेरब ओकरासँ मुँह
फेर जीनाइ भऽ जाए दुरह
एखन अछि बेर संघर्षक
ओकरा नै दियौ विराम
जँ आइ लगाएब अहा विराम
नै बनि पाओत अहाक पहिचान
कते छथि लोक पहिचानत
छथि न ओ हुनकर सन्तान
किछु तय कर पत्यत
कर तखन अपनाके संयत
रचि भऽ संयत
ई अछि सत्य यौ मीत
जँ अहा छी आबलि
नै देत अहाके कियो बल
जँ अहा किछु करब अपने
तखन बनि पाओत पहिचान

हमर ऐ गामक राखब ध्यान
देबश्च माता थ्यताके सम्मान
ऐ सँ नै बनू अनजान
जँ आइ कनी होएत अपमान
नै राखू अपन मान
बस देखू एकटा लक्ष्य
ओकरा जुश्च कर भक
जे आइ होइ अपमाश्चत
तँ तैँ राखू ई ध्यान
लीअए चाही ई शपि
नै होएब ऐ मे दू मत
जखन अहा पाएब सम्मान
नै करब ककरो अपमान
आब आशा गपके श्वराम लगाबश्चि
अपनो आब पहचान बनाबश्चि
सुनू सुनाऊ अपन खबश्च
(श्चा पी.एस.ठाकुर ‘‘बबलू’’ लेल)

५

की राखू तोरा लेल

गे सुनरी प्राण प्रिय
हे मधुप्रिय, हे कर्णप्रिय
मोन कहए राख ओकरा लेल
जकर कोनो नै मोल
गे सुनरी प्राण प्रिय
हे मधुप्रिय, हे कर्णप्रिय
जखन देखी तोहर काया
कहए मोन फुसफुसाय
बौआ तूँ कर किछु माया
जखन देखी तोहर खुजल केश
मोन करए बदलि किछु भेष
आँखि जखन देखी खाली
मोने मोन दी गारि
कही जँ रहितौ हम काजर
भेटितै तोर छुबैक अवसर
हे...
तोहर देखि कऽ ठोर
लालि जाए मनमे होर
हमर कहए बालजि मोन
जँ रहितै ठोरक शोभा
पाबि जइते तूँ ई मेवा
गे सुनरी...

जखन देखी शृंगारित रूप
लागए जेना आकाश गेल छूपि
आब की राखू तोरा लेल
नै अछि कोनो शब्द मेल
आब कही मोनसँ
आब नै हमरा तूँ टोक
आस लगौने कही मोनसँ
जँ बजा पओतै ओ घरवाली
नै बुझाइत छी हम खाली
गे...

६

नै बिसरलौ चारि साल

केना बिसरी ओ चारि साल
जे बुनने छल एकटा जाल
बदलि देलक जीवनक परिभाषा
कतो नै छल एकटा आशा
देखने छलौ एकटा सपना
पढ़ी-लिखी शहरमे
बनब एकटा अफसर
छल हमर ई अभिलाषा
जे बनि गेल छल निराशा
आइ ओ दिन नै बिसरल
ओ मनमे रचल बसल
जखन केने छलौ फेल
सभ कियो हाथो हाथ लेल
सभ ठाम होइ अपमानित
किए नै होइत सम्मानित
मुदा सुनि कऽ मन करी शान्त
फेर राखी दिलपर हाथ
ओतएसँ आएल अवाज
बौआ जँ तूँ केले फेल
नै बुझ छुटि गेल रेल
फेर देखा देलक पथ
जइसँ आस जागति

फेर देखा देलक किरण
आ करऽ लगलौ विचरण
केना बिसरी ओ चारि साल
जे बुनने छल एकटा जाल
केना बिसरी हम ओ दिन
जकरा कटलौ गिन-गिन-गिन-गिन
जखन जाइ कोनो गाम
लोक गिनाइ करए हराम
किए नै आइ बनल अफसर
किए नै घुमी शहर
किए नै पाबी सम्मान
पर नै बिसरलौ चारि साल
केना...

७

मस्ती कर यौ बौआ मस्ती कर

मस्ती कर यौ बौआ मस्ती कर
मुदा पढ़ाइपर कस्ती कर
आएल छला अहाक मास्टर
कश्ह गेला कश्ह गेला हमरा दू आखर
बौआ जँ तूँ नै पढ़बे
तँ हमरा सभके की देखबे
तोरामे अश्छ उम्मीद बसल
की ओ श्राकलत हम्मर भम
नै तूँ तोश्बहे हम्मर आस
नै तूँ कश्बहे हमरा श्राराश
मस्ती कर यौ बौआ मस्ती कर
मुदा पढ़ाइपर कस्ती कर
आब नै तूँ छह नेना
नै देखेबह तोरा ऐना
तूँ जँ अपने नै बौझबऽ
तँ तूँ केना की करबऽ
जखन देखी तोरा पढ़ैत
मनमे उल्लास फेर जागल
जखन देखी खैलै-खेलाइ
मनमे आबए रस मलाइ
मस्ती कर यौ बौआ मस्ती कर
मुदा पढ़ाइपर कस्ती कर

हमर आस तूँ नै तोड़बहे
अपन माएके नै बिसरबहे
माइक सपना पूरा करबहे
आ ओकर नाम अमर रखबहे
कहै छलौ तोहर माए
अहाक बौआ नाम कमाए
देखबै बौआक बापू
अहाके मनपर नै रहत काबू
जखन बौआ बनत डॉक्टर
फेर होएत ओकरापर गर्व
की बौआ ई छलकलत भम
की बौआ तूँ तोरमे आस
तोरासँ अछि जुड़ल हमर सास
नओ तूँ करबहे हमरा निराश
बौआ जौँ तोरा लगलौ अ िला
जुआ तूँ करबहे तूँ अ िला
कहैक मतलब छलौ बौआ
नै तूँ एना कतै टौआ
आइ हमर मन भेल पसन
किएक तँ तूँ भेलेहे पास
माइक सपना पूरा हेतौ
आ तोरा जिनगी भेटतौ
ऐसँ छौ सभके संदेश
जुआ अहा बिसर अपन भेष

जुआ अवसर अपन देश
माता-पिताक कर सम्मान
पहिने देखू हुनकर मान
मस्ती कर यौ बौआ मस्ती कर
मुदा पढ़ाइपर कस्ती कर

८

आव मोन करे कमाई

थ्क कहू यो टूना भाई
आव मोन करे कमाई
दोस लोकश्च सेहो िलश्ि बाट
एखन िश्च हम पकड़ने दी खाट।
माई बाप नश्च कहश्ि थ्कछु
नश्च ताकश्ि हमरा थ्यछु
नश्च वो कहश्ि त हम नश्च सोश्च
इ तय अश्छ हुनक अपमान।
जखन-जखन दुश्ि मय आबी
दश्ि वो हमर संग
बच्चा सँ पकर लश्ि वो हाि
आब बने अश्छ हम श्च साि।
जखन-जखन तड़ते इ मोन
नश्च थ्कछु कश्च पाश्च वो छन
हर दम घुश्च-घुश्च के जीबी
हर दुख के थ्यस जका थ्यबी
आँश्चक नोर बहाश्च कोना
ओकर तोड़ पाश्च कोना
उपर सँ रश्च हम खुष
आ भीतरे भीतर काने मोन
काश्च राश्चक बात कश्चओं

राधाक मे कानेक भेल मोन

नहि भेटल ककरो संग

फेर भेटल आगि क संग

टोकरे पकड़ि कलो अलाव।

लेक आब कहे यो भाई

भय गेले छौड़ा बढ अलौकिक

नहि हम अलौकिक आ लगे लोकक लाज

बुझी हम ओकर इलाज।

माई बाप नहि बुझी पावथि

तखन कोढ फाटे यो।

कि करथि न ओलोकइन

छियनी तय हुनक आस।

कखनो-कखनो मोन करइ अछि

द दि हम अपन परान।

जखन आवे इ विचार

तखन होई माई बापक विचार

फेर हुनका सोची र क जाय माने

जो आई हम फसरी लगेवे

कि नहि घटथि हुनक मान

फेर खाई एकटा कसम

जखन ि ड़ी रहत पड़ान

नहि छोड़ब हुनक ध्यान

१

तोहर गोर गोर गाल … …

तोहर गोर गोर गाल
गोश्च करे कमाल
तोहर श्चारश्च नज़र
गोश्च करो असर
तोहर......................।
मुस्कान तोहर अनमोल
ओकर नश्च मोल
जखन श्चकलो तोहर बोल
लगे हील गेल श्चल
आश्च जखन देश्च तोहर
राती भर रश्च जै जाश्च
तोहर गोर गोर गाल
गोश्च........................।
गाल पर देश्च जखन श्चाल
रश्च जाइ श्चल
देश्च तोहर सुनर काया
मन के नश्च आवे माया
सोचे पापी ई मोन
रश्चतो जखन उदास
पश्चतो तोरा पास
तोहर गोर गोर गाल

गोश्च करो कमाल.......।

देश्चिव तोहर मुह

श्चमनाय भय जय दुरह

फ़ेर कहे ई चनचल मोन

कश्च दी ओ गप

जे बश्चा गलो अपच

आब कश्च तोरा गप

चाश्च तोहर साि

चाश्च तोरा बेश्चसाब

जखन गोश्च पायल तोहर साि

लागल भय गलो सफ़ल

तोहर गोर गोर गाल

गोश्च करो कमाल...........।

(ए. झा क लेल...........)

१०

श्कया ने पावी तोहर टोन

चोरी चोरी देखि तोरा
नही भावे दोसर मोरा
देखि तोरा ओही पल
पाओल अपनाक निय
चोरी............................./
सखन देखि घरक आगू
हरदम कखि तोहर पाछु
पर नखि पावी तोहर संग
भई गलो हम तंग
चोरी................................../
तोहर यिान मोन स आकाली
करे लगलो हम पढाई
कखनो कखनो याद आवे तोर
ओखि पल आकले नोर
चोरी ..../
मेरो मे जखन देखल तोरा
फेर आयल मा मे फेरा
चाहलो गप कखि दू टुक
पर देखती रहलो टुक टुक
मोनक गप रोकती न बने
नै तोरा टोकती बने

चोरी चोरी ..../

थ्मनाई भेल आश्छ दूभर

पाबू केना तोरा गे

सश्द्धखन सोची तोरा

की तू बनवी मोरा

चोरी चोरी........................./

चोरी चोरी थ्श्वचल तस्वीर

ओकरे बुझल अपन तकदीर

फेर सोचे मोन

श्कया ने पावी तोहर टोन

चोरी चोरी देश्व तोरा

नश्च................................./

११

अनाश्मका

साझक समय
श्माकली दुनु भाई
छश्मा ओ हमर छोट
पर छश्यि हमर श्मगरी /
जखन जखन श्माकली घर से
टोश्कयनी हुनका सश्दखन
सुनु यो भाई सुनु यो भाई
कानो करब आइ घुमाई
साझक............................../
श्कछु काल बाद ओ बजला
चलू बुझी भौजीक हाल
बुझलो भैया भौजीक हाल
ओहो ते हेती बेहाल
साझक................................/
हम ओही पर बाजल
सुनु यो भाई सुनु यो बोआ
अश्वने श्कछु अछी हमर हाल
रश्मा के नश्ब नीद आवे
श्दन के नश्ब चैन यो
साझक......................................./
सुनु यो भाई सुनु यो भाई

साझक कि कहू हाल
मोन रहे अछी बेकल
लागल रहे टकटकी यो
६बजेक इंतज़ार मे
जखन बाजे साझक ६
तखने भए जाइ हम छू
साझक ..../
गपक मि आगू बढ़ल
आब पहुचलो चौक पर
फेर पुछला हमरा भाई
और सुनाऊ अपन हाल
साझक...................................../
फेर उनका से कहल
जहिया से पायल हुनका
ज़िनगी भयी गेल उनटा पुनटा
साझक.../
एकटा आरो गप कही
सुनी के जुनी हसब यो
जहिया जहिया देखि हुनका
बढ़ी जाए ड़िकन
एक बेर जे सुर भेल
फेर नहि सुने यो
साझक../
अनाथिका अनाथिका अनाथिका
ई शब्द सदखन पावी

दोसरक नहि जान यो

जखन देखि आगू पाछु

सदिखन पावी हुनके आगू

साझक ..../

आब गप क विराम लगाके

साफ़ साफ़ हम कहे छी

हुनक छियन्हि हम प्रिये

ओ हमर प्राणप्रिये

ओ हमर अनामिका

मनभावन पीतम अनामिका

साझक समय

अकेली ..../

१२

हमहूँ   तँ छी   इंसान

डोम डोम डोम डोम
सभ   श्कयो हाक लगाबए
मोने मोन अपने कही
हमहूँ तँ छी इंसान
आ हरदम कश्र भगवानक ध्यान
आ हरदम जाश्र ॐ
तँ श्कए कहै लोक डोम /
लोक जखन दूर करै अश्छ
तखन तखन मोन कनै अश्छ
आ सश्दखन सोचै मोन
की अश्छ आश्खर हमर गलती
डोम डोम सभ श्कयो कहै अश्छ /
डोमोक होएत श्कछु अरमान
ओकरो तँ राखू श्कछु मान
कखनो राश्ख देखू अपना
तखन देखू कोनो सपना
फेर बुश्झ पाएत लोक
की अश्छ डोमक मान
डोम ..../
डोम जे नै होए जग   मे

कोना थ्कन्को आथ्य
जखन कथ्य कोनो करतेबता
कोना एतै बासक समान
की कखनो सोचल ई जजमान
डोम ..../
भगवानक अथ्छ अलगे लीला
हुनके बनाओल ई मेला
डोमो तँ हुनके रचल अथ्छ
डोम डोम ..../
रजा हथ्रसचंर पर जखन आएल थ्वपदा
ओहो पाओल डोमक शरण
ओइ समय जे होएतथ्न मरण
नै पओतथ्न डोमक शरण
डोम डोम......................................./
कखनो कखनो मोन कनै अथ्छ
की अथ्छ हमर ईहए मान
फेर मोन अपने कहै अथ्छ
जे तूँ नै देबही अपन मान
कोना पैमे लोकक मान
डोम डोम डोम डोम
सभ थ्कयो हाक लगाबए
....................................../

१३

अनाि

माए बाबू अहाक आवे याद
जे पश्चतो दूनूक साि
श्वक लोक कश्चते अनाि
जखन देश्वब अहाक छाया
ने र श्वक पाबे तखन नीर
माए ....
कखनो कखनो मोन करे
हमहू पाश्ब कोनो कनहा
ने भेटे जखन कोनो कनहा
तखन लागे हम छी अनाि
माए..
अहा दूनू जे रश्चतो
श्वाक खराबक पश्चचान करेतो
कखनो हमरा डश्चतो
कखनो करतो दुलार
ने पेलौ ओ दुलार
जे म रहे सभक संसार
माए......................................
जखन कश्ब बदमाशी
लोक कहे हमरा यो बाबू
श्वकयाक ने हेते ऐहन
ने छे ककरो साया

श्रकयाक ने करे कुसंग
ने छे ककरो साया
माए..................................
भगवान ने ककरो ऐहन श्वन देखाबे
ने ककरो अनाि बनाबश्चि
भेटे सबके माए बापक प्यार
जे मे अश्छ सभक संसार
माए..

१४

एक श्चन बाबु कहला हमरा

एक श्चन बाबु कहला हमरा
नुनु आवे तोहर कि
की आश्चर छो तोहर श्चचार
आब हमहू भेलो लाचार
जल्दी कह तू अपन श्चचार
एक ....
नुनु हम छालो लाचार
आश्चज़ भे कलो एकटा श्चचार
आ कलो तोहर श्चवाह श्च रि
पश्चने पूरा गप सुश्चहे
तखन श्चयहे कोनो जवाब
गप के आब आगू करी
एक............................
नुनु की कहू आगुक हाल
श्चनाये भे गेल छल बेहाल
भोरे भोरे जखन जागी
पहुच जै छलाह घटक
घटक कहश्च हमरा से
श्चक करश्च अपनेक बालक
श्चक अपनेक बालक छश्च तैयार
श्चक छश्चह दहेज़ क श्चचार ?

जे अपनेक अछी कोनो माग
ते देल जै ओकर जान
एक ....
जखन सुनल हुनक विचार
तखन देल हुनका जान
कहल हुनका से हम
ने सोचल जै अहेन कुटुम्बा
अहेन ने अछी हमर विचार
अपने स विनती छे कुटुम्बा
ने हुएयो अपने तंग
अपने आब दिन तकबियो
हमरा किछु ने चाही
बस एकटा कपरा मे करबे बिदा
ने करबे कोनो चिंता
बाबु के गप सुनी
भरी आयल आखी मे नोर
जे अगर हो अहेने सबहक विचार
ते कि होएए विवाह बाद अत्याचार
एक...
बाबु के देल हम वचन
आहाक मा शदा राखब उपर
करब सबहक सम्मान
ने छोरब ओकर ध्यान
एक...

१५

मा छिन्नमस्तिका

मैया मैया मैया मैया
मैया मैया हे मा छिन्नमस्ते
िन्य ओ उजानक नगरी
जेतऽ अहा विराजी मा
लोकके जखन रहए कोनो दुखी
माता अहा सँ करए फरियाद
मैया मैया हे मा छिन्नमस्ते
पुत्र नवीनक सुनू फरियाद
पुत्र फँसल अछि बीच भँवरमे
ओकरो पार लगाबू मा
मैया मैया हे मा छिन्नमस्ते
पुत्र करै अछि दंड पणाम
जँ माता नहि देखायब पि
जँ माता नहि विनती सुनब
पुत्र एतै दऽ देत पाण
मैया मैया हे मा छिन्नमस्ते
पुत्र करै अछि पणाम
माता जँ अहा रुसि जायब
तँ केकरा अपन विनती सुनायब
जँ भेल अछि हमरा सँ गलती
सजा हमरा सुनाबू मा
पुत्र फँसल अछि बीच भँवरमे

ओकरो पार लगाबू मा
मैया मैया हे मा श्छनमस्ते
पुि करै अश्छ दंड पणाम
जखनो हम आबय छी गाम
माता रहैए अहाकं ध्यान
माता कोना हेती हमर
हुनका नश्च केलौ पणाम
जा िश्च नश्च करी दशनि
माता लागए जेना छूटल पाण
मैया मैया हे मा श्छनमस्ते
पुि करै अश्छ पणाम
मा श्छनमस्ते मा श्छनमस्ते
राश्च सभपर श्यिान
मैया मैया हे मा श्छनमस्ते
नवीन करै अश्छ दंड पणाम

१६

दफ्तर

दफ्तरक सब के खसता हाल जखन पहुँचब बुझु हएब हलाल .
दफ्तरक चकर बड खराब ,ओतय ने अछि कोनो जवाब ..
जँ अहा छी बड जल्दीमे ,स्वागत करथिन्ह नकदी सँ ..
ओतय चलए सब तरहक रेट ,सब कियो लै छथि अलग सँ भेट ..
बरका होथि वा छोटका सभके चाही टटका
जँ करबन्हि आनाजोथ्थि
हेत काज मे देरी...
देख ओतुका नजारा
चढल हमरा पारा,
बुझ्लतय ओकर इलाज
पर हमरो तँय छल काज..
मोनमे आएल सबक खिखाथ्थ ,फेर आएल याद .
जँ हुनका सब सँ करब आनाजोथ्थि
तँ होयत काजमे देरी
कि करतै बेचारा आशा नै छलै आर कोनो आस .
.जेबीसँ निकालक टाका आ करा देलक ओ स्वागत ...
कथिको ने सोचलक ओ जँ ऐकरा देब बढावा
तखन तँ चढबै पड़त चढावा..

दफ्तरक ई हाल

१७

कोना बिसर तोरा

तोहर यादमे गै सजनी
एकटा गीत पेश करै छी
जखिया तूँ गेले दूर
नै लागए किछु नीक
तोहर यादमे पेश करै छी
दिलसँ एकटा गीत

आ आ आ आ आ
सजनी सजनी सजनी गै सजनी
के कहत हमरा साजन
ककरा लेल बजाउ बाजन
आब बस रहलौ तोहर इयाद
ककरासँ कर फरियाद
के कहत हमरा साजन
ककरा लेल बजाउ बाजन
सजनी सजनी गै सजनी

१८

करेजक प्यास

करेजक तूँ छँ प्यास
ने जँ देख्ब तोरा थ्यय
 ने लागे क्छु नीक
तोरा लेल जतबा कहू
ओ होयत कम !
ने हमरा छल आस
जकर करी आरती
ओ बनत पाणथ्यय
करेजक ....!
ने करेज कहल माने थ्यय ,
ने थ्यत अछ्छ थ्यरि
आजुक राख्ख जुख्ख कर लाज
बस बख्ख जउ एक दोसरक साज
करेजक तूँ............!
सजनी जुख्ख मुख्खयौ अपन नयन
आशा बनाओत ओकरा दरपण ,
ठोर जखन ठोरमे थ्यलै
मौकि ओ एहसास देइत अछ्छ
करेजक...
मृगनयनी हे रपवती
कते कहू अहाक बारमे,
आजुक राख्ख जे देखल तोरा
नवीन अंग गेलौ आहख्ख

करेजक..............!

आब कते कर तोहर बखान
श्यय चलू करी श्यलान ,
आजुक राश्ब ली हम कसम
देब अहँक जीवन श्बि संग
करेजक तूँ छँ प्यास

१९

परी छी

परी छी अहा नील गगनक नैन छी चैन..
इजोरियाक छी चाद दीपक छी ज्योत्स्ना ..
तनक छी खुशबु होठक छी मौि
सपनेहुमे देखब अहीक स्वप्न अहाँक हमर बनब दपणि..
पायशी कखन आएब अहा कहिया तक सताएब अहा
परी छी अहा .....
...
नैनमे अहाँक अहीक स्वप्न अहा बिनु जीवन अहाँक तंग..
करणा संग जीवनक कहियो गे ने तुँ पहुँचबाए ठेस ...
ने तँय आशा अमबैत मरब जाएत मरलो बाद घुरब ओ आओत
तोरा अपन सजनी बनाओत...परी छी अहा नील गगनक....

२०

माए बाबु ..

माए बाबु आइ अहाक मोन परल ,
तखन हमरा ने किछु फुराएल ..
बैसि कS आंगन मे ,
खूब हम नीर बहायल..
फेर सोचल जे सपना देखला बाबु ,
ओकर कोना कर त्याग ..
कोना घुसि जाए ओ गाम
जकरा लेल लेलौ वनवास ....

आइ मरम बुझे अछि आशा ,
की अछि ई अधिला समाज ..
एकरा मे अछि ओ जान ,
जे मुरदा मे सेहो फुकै जान.
माए बाबु ने करब ई दुख
बौआ एतय अहाक पाबै सुख.
जाबत ओ ने रचत इतिहास
नै आओत अहँक पास...
माए बाबु..
(अपन मा बाबुजी कँ समर्पित ,हुनक आस ,नवीनक आशा)

२१

आस

नै छल हमरा ई आस
तोरा पाएब की अपना पास
आँखिमे बसै छल तोहर मुखड़ा
जखन-तखन दिन-दुपहरिया
जखन कखनो मिलैए तोरासँ नैन
नै आबैए ओइ दिन चैन
नै छल हमरा ई आस
तोरा पाएब अपना पास
पूरा दू बरख बाद देखल तोरा
मुदा नै किछु कहि पाओल तोरा
अखनो देखि तोहर चंचलता
मोन करैए सदिखन तोरा देखी
तोहर देखी मन्द मन्द मुस्कान
बनेलकौ हमर दिलमे मकान
तोहर की कर आरती
जे अपने होअए पूर्णिमाक चान
जेकर होअए अपन पहिचान
ओकर की कर व्याख्यान
बस एकटा गप कहियौ गए
तोहर हृदैमे बसए आशाक जान
कहियो नै छल हमरा आस
पायब तोरा अपना पास

२२

बाबा ामिक रस्तामे कथ्यता श्वाखाइत अश्छ

बाबाक दरबारमे लगेलौ अपन अरजी,
कहल बाबाके सुनू यौ बाबा आस लगने आयल छी..
स्वीकार कर पुकि अरजी हर ओकर सभ व्याश्रि..
बाबासँ हएत भेट ..गप करब भश्व पेट ..
बस श्वकछु दूर छी बाबासँ, मुदा नै अश्छ श्यत श्वर ि..
कहै अश्छ करणापूवकि नवीन पूरा कश्वयौ बाबा ओकर आस..
बोले बम
बाबा केहेन तोहर लीला अदभुत् तोहर खेल..
एक बेर हमरो दशनि दए
आस लगौने आएल छी...
बोल बम...

२३

राखह माता पिताक ध्यान

जँ अपनाके देखब हेय आँखि सँ ..
नै पायब किनको सम्मान
जँ अपन मान अपने नै राखब
कहियो नै पाबि सकब सम्मान....
अपन पहचान अपने बनाउ
फेर माए बापक मान बढाउ
कष अछि मुदा हँसै छी
नै लागथि माए बाबूके बौआ अछि हमर दुखी...
आशाक ई अछि अनुभव दुख जँ होयत ओइमे भेटत सुखक अंश,
की हमर ई गप अछि गलत...
हँसै छी दुख भगाबै लेल..
भगवान आशा अछि अहा सहारा देब....
कखनो-कखनो एहेन लगै अछि..
अंदर अंदर मोन कनै अछि
देखल जे हम सपना कि ओ बनि पाओत आशाक अपना.....
राति हो वा दिन बस एकटा बातक राखह ध्यान
जावे छह तोरा मे पराण तावे राखह माता पिताक ध्यान..

२४

की भाखू

की भाखू
की भाखू नै मोन करै अछि
की भाखू
की भाखू तखनो जँ अपने याद करै छी
तँ अपनेके पणाम करै छी।

२५

अविस्मरणीय

कोना कँ कहू हुनक बखान
जिनक जीचन मे अमूल्य योगदान
हुनक रहे सदिखन ध्यान
जीचन मे हुनक अलग स्थान
दूर रहितयो के पास छथि
एहसास छथि आ हृदय पास छथि
जखन छलौ हम टुगर
नै देलक जखन कियो संग
तखन देलथि ओ आसरा
कोना ओकरा बिसरी जाए
जँ ओ ने देतथि संग
कि पबितो इ सम्मान ?
एहसास छथि आ हृदय पास छथि
जखन लोक करे अपमान
ओहि ठाम हुनका सँ पाबि मान
कोना हुनक कर्ज तोड़ब
जिनक हम छीक सदिखन ऋणी
एहसास छथि आ हृदय पास छथि
जखन हम करे छलौ विलाप
कानै लेल दएलथि कनहा
जखन नहि छल ककरो सँ आस

ओ बनलथि हमर पकाश
जा धरि रहत इ पाण
नहि बिसरब हुनका आ
सदिखन रहत हुनक ध्यान
कोना करू हुनक बखान
हुनक अछि हृदय मे सम्मान
एहसास छथि आ ....
(श्रीमान पी. एस. सिंह. ठाकुर आ भाई शी मनीष बौआ भाई के समर्पित)

२६

एक जीवनक ई अछि सत्य

जागल सूतल सदिखन सोचै
जीवनक की अछि सत्य
ताकैत फिरी पशक उतर
जतय ततय सवोतर
जखन नहि भेटल उतर
तखन कखनो कखनो सोची
सुख वा हो दुख
आँखि भरि आबए नोर
की ई अछि जीवनक सत्य ?
बच्चामे जकरा भेटए दुलार
माए बापक भेटनि प्यार
जखन ओ होथि सयान
माए बापसँ लगाबथि जुबान
एक ईएह अछि जीवनक सत्य ?
पढ़ि-लिखि जखन लेबए बच्चा
आ नीक पाबि जाए नोकरी
तखन वएह धिया-पुता
माता पिताक नहि करथि सम्मान
एक ईएह भेटलैक हुनका जान
की ई अछि जीवनक सत्य ?
घुमै छलौ पशनक उतर लेल
तखन मोन भेल आर विचलित

पुतोहु करथि सास-ससुरपर वार
आ बेटा करथि आगु-पाछु
करैत रहथि हुनक अपमान
ने देथि हुनका सम्मान
की ईएह अछि जीवनक सत्य ?
कतौ-कतौ देखै लेल भेटल
जनबैत छथि नहि करथि अपमान
जँ मरि गेलाह ओ व्यक्ति
हुनक समाज करए गुणगान
की जीवनक अछि ई सत्य ?
आशाक छथि जनती
सभके दियौन मान
छथि ने ओ होथि अजान
जीवनक ई बनि पाओत सत्य ?

(अपन मामाजी डा. रमानंद झा "रमण" के समर्पित, जिनक हमर जीवनमे एकटा अलग स्थान अछि।)

<u>राम विलास साहु</u>, जन्म- ०१ जनवरी १९५७, पता-गाम- लक्ष्मिनिया, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार), फोन नं.- ८४७१०८

<u>कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका (रचित चकार उलटि चलै बाट)</u> *[अप्पन गप, महगाइ कोइली कुहकै आमक डारि पीतक गीत गंजन कमकि फल पेमक बान्ह जीबैत चलू बिसरल गीत जड़ैत दीप गामक नारी बियासल रिती बाता-बाता मातृभूमि अबिलाक अभिनंदन ई की केलौं अहा केकरा संग खेलब होरी गाए-माए खेतिहरक जिनगी जानक दीप दुखाएल गंगा बेगक बरियाती बलानक बाढ़ि पानिक बून हेराएल भगवान जीबए लेल चैताबर गीत चैती गीत पेमक भूखल मर आक मान अरमान भारत माता परदेशी मोनक बात की कहब निरोपनी लफंगा बेरोजगारी र पैआक ढेरी भष्टाचारी आएल वसन्त अप्पन-पराया बाट बटोही हाटक चाउर बाटक पानि जान बौटैत चलू पेम आकि पैसा कालक पहरा बियासल मन दहेजक खेल घर परदेश गहुमक कटनी-दौनी बिआह की थिक? आजुक दिन पुनि कुपुनि कतेक दुख काटब हरि हे बारहो मास सड़क बीच नाला आँखि रखतो आन्हर भाग भरोसे फूल-पता भदबा बाबा बले फौदारी केकरा ले कानब पतिवरति माइयक ममता परदेशिया पाहुन रितीक सुख साओनक राति लोभी भोम्हरा भोरक कष्ण गरीबक मान माए हमर गाम घर अधिलगी*

काली मैयाक गीत हमर बिखरल समाज थिड़ै चुनमुनी माइक लाल के गरीब? नैनाक खेल कोइली कूहकै आमक डारि नीघ्रया बैरी भेल पहुना पागल पेमी कोसीमे समाएल धानगी हाइकू/ शेनर्यू टनका]

<u>अप्पन गप</u>

मैथिली साहित्यक विदाािी तँ नै मुदा हिन्दी बी.ए. धरि पढ़ने छी। गाममे रहने मैथिलीक बीच सभ दिन रहलौं। मातृभाषासँ सिनेह आ लगाउ तँ स्वभाविके। जिजासा रहितो परिने नै सकलौं जेकर अनेक कारणमे एकटा ईहो अछि जे हमरा इलाकामे मैथिली साहित्यक गतिविधि न्यून रहल। पि-पत्रिका सबहक स्थिति "बिहरा नाचए अपने ताल" सन रहल, मुदा आब किछु अलग बात अछि। अपने सबहक बीच एलौं तेकर शेय विदेह ई-पत्रिका एवं विदेह-सदेह पत्रिकाक संपादक मण्डलक छियन्हि। ओना इम्हर आबि कऽ पूवोतर मैथिल-असाम, कणामृत-कोलकाता आ मिथिलाचल टुडे दिल्लीक पत्रिकामे सेहो रचना छपल अछि।

रचना लिखैमे, साहित्यकार जगदीश पसाद मण्डल केर पेरणा आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनक अगुआ शी गजेन्र ठाकुर जीक देल पशासके हम कहियो नै बिसरि सकब संगहि उमेश मण्डल जीक मदति। समपणि-पूज्य पिता स्व. नशीब लाल साहु केर स्मृतिमे...

<u>महगाइ</u>

महगाइ अहा कतएसँ आ किअए एलौ
आकि जबरदस्ती हमरा देशमे घुसि एलौ
अहा विदेशमे भलहि छलौं
के अहाके बजेलक आकि भूलसँ एलौ
अहा अबिते हमरा देशमे आगि लगेलौ
नोन शुन्य भऽ गेल
तेल कतए गेल पता नै भेल
हरदी किनेमे हडडी टूटि गेल
मशालासँ मन फीर गेल
पिऔज-लहसुन सोना भाव बिक गेल
पेरौल-डिजल आसमान चढ़ि गेल
अहाक मारिसँ देह टूटि गेल
महगाइ कहलक-
"किअए हमरा दै छी दोख
अहा सभके नै अछि होश
अहाक देशमे होइए बड़-बड़ घोटाला
हमरा बजा कऽ लाबलक घोटालाबला
आब हम अहा देशके बना देब दिवाला
खून बेचबा देत विदेशबला
नेता आ अधिकारी भऽ जाएत मालबला
सभ जनता बनब बेचारा-बेसाहारा।"

अहा हमरा सभके किअए बनेलौ दिवाला
महगाइ अहा कतएसँ किअए एलौ....।

कोइली कुहकै आमक डाख्र
कोइली कुहकै आमक डाख्र
सुश्रा हमर मनुआ घबराए
थ्रया हमर रश्चताए तँ
ि ीरज दैताए बन्हाइ
अन्हश्चया राश्चा हम
बाट देखैत दुनू आँश्चव श्चाहाश्च
इजोश्चया राश्चा हम चान देखैत
चकवा-चकोर बश्चा जाइत
चन्दा बादल लुक-छुप खेले
थ्रया रश्चताए तँ हमहूँ
संगे खेलतौ वश्चने
कोइली बोलीसँ हमरा
श्चलमे लगैए गोली
थ्रया रश्चताए तँ श्चकछु कहबो कैरतौ
अनका केना श्चकछु कहबै
थ्रया परदेश्चाया बर श्चारमोश्चया
कश्चया बनत हमर रखबैया
कोइली बोली सुश्रा हमर
देह भऽ जाइए बश्चर
केकरा कहबै ई दूखक बात
कोइली कुहकै आमक डाख्र।।

पीतक गीत

फागुन मास हमर बितए यौवनमा

हमर दुख कहिया हरत सजनमा

गौना कराए दिअ एबकी फगुनमा

आमक गाछपर बैसल कोइली

पीतक गीत सुनबए एबकी फगुनमा

चैत मास जेना टपकै महुआ

ओहिना टपकै हमर यौवनमा

सावनक मेघ भिजबए बदनमा

बिजली चमकए बादल बरसै

देहसँ छुटै पसिनमा

बरखा बरसै घनघनमा

हिया बनल अछि बैमनमा

ऊमड़ल नदिया, दरद जगाबए

दरदक दुख केना केकरो कहबै

आबिते सजनमा दरद हरि लैत फगुनमा

गौना कराए दिअ एबकी फगुनमा

पीतक गीत सुनबै छी सजनमा।

गंजन

बड़-बड़ गुड़ गंजन सहैए
श्चशी नाओं ड़िबैए
पीश्च-पीश्च सोना आश्च तश्च
कसौटी रगड़ चमकैए
चौदह बरख वन घुमैत
वनबासी श्चनगी श्चतबैत
पुरषोतम राम कहबैए
केकरा कहबै सुख-दुख
दुखसँ उपजए सुख
दुश्चयाक सारथी भगवान बनैत
सुश्चया गंजन सहैत
अजात बास काटैत पाण्डव
श्चात हश्च दशनि करैत
सुश्चयाक साथी सभ बनैए
दुश्चयाके ने कोइ
दुखक अंत एक श्चन होइए
सुखसँ संकट बढ़ैए
बड़-बड़ गुर गंजन सहैए
श्चशी नाओं ड़िबैए।

कर्मक फल

कर्मक फल अवश्य मिलै छै
जानि-बूझि जौं करै छै हानि
होइ छै निर्जन अनुमानक हानि
सभ तरफ होइ छै नुकसानि
काज नै होइ छै छोट-पैघ
कर्मसँ लोक होइ छै छोट-पैघ
जेहेन सोच ओहेन काज होइ छै
भावनाक संग भाव नदी सन बहै छै
सभके सुख मिलए, दुखक अंत होइ छै
कर्ता पुरुषक पूजा सभ करै छै
कर्मसँ भाग्य बदलै छै
कर्म पूजा कर्म महान
जगतमे होइ छै अमर नाम
सूतल जागलमे फर्क होइ छै
सूतलमे भाग्यक विनाश होइ छै
जागल पुरुषके नाश नै होइ छै
कर्मक फल अवश्य मिलै छै
जानि-बूझि जौं करै छै हानि।

पेमक बान्ह

आशा-निराशा भेल धिआ

कतेक दिन रहब अहा परदेश

आँखिक नोर बहए दिन-राति

सबूर बान्हि जीबै छी कहुना

दिल ि क्-ि क् करैए अङना

ियि टूटि गेल हमर करम फूटि गेल

सोगमे रोग बढ़ि रहैए

तन ि िकैए मोन बरसैए

आँखिसँ बहैए निरंतर नोर

किअए तरसाबै छी दिल हमर

छन-छन बितैए जिनगी अनमोल

कि राखल छै परदेशमे

आउ आब रहब अपने घरमे

नारी-पुरुष जिनगीक दुपहिया छी

दुनू आब गाड़ी समरूप चलै छै

परिवार समाजक निर्माण होइ छै

देशक पगति दिन-राति होइ छै

जल्दीसँ लौटू अपन देश

सभ दिन काज नै देत परदेश

कतेक सबूर बान्हब हम

दिलक अरमान सभ चूर भल गेल।

बिनु पेम जिनगी बेकार अछि

पेमक बान्ह सभ बान्हसँ मजगुत

नै तोड़ि सकै छै कोनो काल
जहिया तक संसार रहत
सुरज-चान गबाह रहत
पेम अविनासी अमर रहत।

जीबैत चलू
जीबैत चलू
खाश्चा-श्चऐत चलैत रहू
सत्यक राह पकड़ैत चलू
श्चनगी अमर नै होइ छै
नीक काज करैत चलू
जीबैत चलू।

कर्म अमर होइ छै
श्चनगी ओहीले श्चलै छै
सत्यक बाटपर
ठौकर बड़ लगै छै
श्चड़ैत-पड़ैत चलैत रहू
जीबैत चलू।

जाश्चि सास चलैत रहत
संसारक जाल बढ़ैत रहत
माया ममतासँ दूर रहू
अनकर निसँ परहेज कर
जीबैत चलू।

श्चनगी जीबाक लेल नै
नीक काज लेल होइ छै
कर्म-सुकर्म सिंगै जाइ छै

सभ किछु अहीठाम रहि जाइ छै
कर्मक फल बाटैत चलू
सबहक हीत करैत चलू
किछु करैत चलू
जीबैत चलू।

बिसरल गीत
कोइली बैसल
आमक डारिपर
झूमि-झूमि गाबए
बिसरल गीत
सूतलमे जगबए नीन
मधुर गीतक स्वर सुनि
मोन भेल विभोर
बेर-बेर कोइली
सुनबए दुख भरल सनेस
बिसरल पेमक सिनेह
दिलक दरद रहि-रहि जगए
हिआसँ कहिया हएत भेट
बिसरल गीत
मौलाएल मोन
सुक्खल तन
जेना उजरल वन
कहिया हरिअर हएत
ई पेमक बंधन
कोइली सुनबए बेर-बेर
बिसरल गीत।

1216 || विदेह सदेह:३४

जड़ैत दीप

आश्थासँ आश्था जड़ैत

पाश्वासँ मेटैत श्यआस

दीप जड़ैत आश्थासँ

हवा दइ छै मुझाए

जड़ैत दीप अपन ज्योश्वासँ

जगमग करैत जगत

घूरक आश्था रसे-रसे सुनश्था

हवासँ नै मुझाए

जौ मुझाबए हवा घूराके

सुनश्था जरबए जगत

आश्था नै जानए भेद

सभके जरबए एके संग

जीनगी अश्छ दू-चाश्च श्चनक

फेर हएत अनहश्चया राश्वा

कतर्य-र्मिक पालन करैत

पर्पिर चलू श्चन-राश्वा

चलैत रहू जार्श्व अश्छ श्मनगी

जश्चना दीप जड़ै छै

तार्श्व तेल रहै छै बाती संग

अपन श्मनगीक अनहश्चयामे

दोसरके राखए इजोश्चयामे

तश्चना मानव, मानव लेल

उपकार करैत जड़ैत रहू

जार्श्व लहू अश्छ अहा संगे।

गामक नारी

मन्द मन्द हवा बहकए
फूलक पंखुरी झरि-झरि खसए
छने-छन मौसम बदलए
कखनो रौद कखनो छाह पड़ए
जनु वसन्त बहार बनए
खेतक आड़िपर गामक नारी
कनिया-बहुरिआ नवतुरिआ
फाढ़ बान्हि खेतमे काज करए
भूलल-बिसरल सोहर-समदौन
बिरहा-परदेशिया गीत गाबए
बाट-बटोही सुनि-सुनि
बाट भूलि लजाइ छलै
कहैत बाट चलैत छलै
गामक नारी-
देशक छी हितकारी
देशक निर्माणमे
करैत अछि साझेदारी।

थ्यासल ि रती

थ्यासल ि रती तड़थ्म रहल अथ्छ

काल-कोठरीमे थ्छपल बदथ्या

ि रती सूथ्ख दड़ाथ्र पड़ल अथ्छ

सूथ्ख दुबैक कमजोर पड़ल अथ्छ

गरमीसँ हाहाकार मचैए

थ्चड़ै-चुनमुन मुँह खोथ्ल बैसल अथ्छ

घास-पात सूथ्ख जड़ैत अथ्छ

चास जड़ैत देथ्ख खेथ्तहर

मा ि पर हा ि लऽ सोथ्च रहल अथ्छ

पाथ्न-थ्बनु थ्जनगी तड़थ्प रहल अथ्छ

माल-जाल भटथ्क मथ्र रहल अथ्छ

पोखथ्र-झाखथ्र डबरा-नदी सूथ्ख रहल अथ्छ

नाओं-थ्नशान थ्मट रहल अथ्छ

सूथ्ख-सूथ्ख ि रती फाथ्ट रहल अथ्छ

थ्यआसल ि रती तड़थ्प रहल अथ्छ

थ्नदथ्य छल मेघ मुदा दयावान भेल

गरजैत-बरसैत कारीमेघ ऊमरल

पाथ्न बथ्रसल घन-घोर

फाटल दराथ्रसँ-

बेगक बथ्रयाती सथ्न थ्नकथ्ल पड़ल

सभरंगा गीत उछथ्ल-कुथ्द गाबए लगल

कारी मेघ झुथ्म-झुथ्म बरथ्स रहल अथ्छ

ि रतीक थ्यआस मथ्र रहल अथ्छ

ि रतीक थ्यआस मथ्र रहल अथ्छ।

चिता-चिता

आगि जड़ैत सभ देखै छै
दिल जड़ैत ने देखै कोइ
चिता-चितामे अन्तर छै
चितापर मरल जड़ै छै
चितामे जीबिते जड़ै छै
समुर उधियाइत सभ देखै छै
दिल उधियाइत ने देखै कोइ
लकड़ी जरि कऽ कोइला बनै छै
कोइलामे हीरा खोजै छै
चिता जरि कऽ सदगति मिलै छै
चितामे जरि कऽ मणी खोजे छै
बिनु चिता नै दुनिया चलै छै
चितामे लोक सभ दिन जड़ै छै
चितामे अन्त होइ छै
चिता सभ जीबैत करै छै
चितापर मरल चढ़ै छै
आगि जड़ैत सभ देखै छै
दिल जड़ैत ने देखैत कोइ।

मातृभूमि
हमर मातृभूमि
जानसँ अछि प्यारी
खूनसँ भीजल धरती
पवित्र भूमि सजल वन
उजाड़ि बौटै छी क्यारी
हमर मातृभूमि
धन सम्पत्तिसँ भरल-पड़ल
नीत दिन सोना उगलैए
खाए-पीब कऽ फूलै-फड़ै छी
हम सभ मिलि ओकरे विनास करै छी
हमर मातृभूमि
जानसँ अछि प्यारी
श्रवारण नै उजाड़न छी
विनासक कारण हम सभ छी
अपन मातृभूमिके
अपनेसँ बिगाड़ै छी
मैलि भूमि हवा-पानि
प्रकृतिक रचनाके बिगाड़ै छी
मातृभूमि बचेबाक लेल
अपन भूमिके रक्षा-सुरक्षाक
श्रात्य कर तैयारी बनू पूजारी
हमर मातृभूमि
जानसँ अछि प्यारी।

मिथिलाक अभिनंदन
नीत भोरे सुरज करए
मिथिलाके अभिनंदन
साझ करै छै तरेगन-चान
भरि राति जगि-जगि
भगजोगनी करै अभिनंदन
मिथिलाक भूमि महान
माटि-पानि अमृत समान
भोरे पूबा साझ पछिया
करै छै मिथिलाक अभिनंदन
मिथिला सन पावन रिती
नै छैक दुनियामे आनो ठाम
डेग-डेगपर पानिक खान
पोखरि-झाखरि नदी छै अम्बार
कोसी-कमला-बालयुगा
गंडक-बागमती-भूतही-बलान
गाम-गाम अछि दलान
अन-जल-फलसँ भरल
घर-घरमे अतिथि मेहमान
स्वागत होइ छै देवता समान
तीनू लोकमे होइ छै गुणगान
मिथिला अछि महान
रंग-बिरंगक फूलपर
भौरा करै छै गुणगान

बगिया-बगिया कोइली कुहकैए
मोड़-पपीहा-मेना-बुलबुल
कुदकि-चहकि सुनबए मीठ बोल
सभ नीत-दिन सुखि-उठि
मापिर लगबैए माटिक चंदन
मिथिलाके करैए वंदन
मिथिलाके अभिनंदन।

ई की केलौ अहा
ई की केलौ अहा?
अपन रहितो बिरान भेलौ अहा
जीबैत छलौ मसानगी जड़ा देलौ अहा
ई की केलौ अहा?
नामी छलौ वदनाम केलौ अहा
गम भुलबै खातिर छुप-छुप पीलै छलौ अहा
ई की केलौ अहा?
ई हालति हमर बनाए केलौ अहा
जीबतेमे हमरा जड़ा देलौ अहा
ई की केलौ अहा?
पलक दपणिमे झाँक-झाँक देखू अहा
हम कण-कणमे समाएल छी लहू जेना
ई की केलौ अहा?
शोक सागरमे डुमल छलौ कहुना
नागीन बनि हमरा कटलौ केना
ई की केलौ अहा?
खूब सुरत हसीन पड़ी जेना
मुस्कुराइत हँसै छी गुलाबक कली जेना
मुदा आँखि खोलि ताकए चकोर जेना
ई की केलौ अहा?

केकरा संग खेलब होरी
बाट तकैत भश्च-भश्च राश्च जगैत
ऑंश्चया भेल लाले-लाल
कतेक पतझर बीतल
कतेको आएल वसन्त-बहार
सभ सखी-सहेली श्च
फगुआ गाबए खुशी मनाबए
श्चआ संग खेलै होरी
हमर श्चआ परदेश्चया
केकरा संग खेलब होरी
सभ श्च रंग-अश्चर उड़ाबए
हमरा कश्च-कश्च लजाबए
केना भीजलो तोहर चोली
ननश्च-लजाबए देवरा सताबए
केकरा संग खेलब होरी
नैना-भुटुका टोली बश्च
श्चठगर बोलीसँ गाबए होरी
रंगक श्चचकारीसँ रंग बरसाबए
जश्चना खेलैए
रा ा-संग कन्हैया होरी
राम-लखन खेलै
अव मे होरी
ढोल-मजीरा ढाक डफली
श्चट-श्चट गाबए होरी
रंग-अश्चर गुलाल उड़बैत

सभ **अश्क** खेलए होरी
रंग-वरसै मोन तड़सै
ऑ**श्ख**या भेल लाले-लाल
क**श्ह**या आएत परदे**श्अ**या
अश्क संगे खेलब होरी
श्बनु **श्य**या तड़सै छी हम
केकरा संग खोलब होरी।

गाए-माए

गाएके माए सभ कहै छै

मुदा पोसै छै ने सभ कोइ

जे पोसै छै गाए

हुनके हक छै कहत माए

ब्बनु शम कमर्नै होइ छै

ने शम कमर्कि फल भ्रलै छै

सुनल-सुनाएल सभ कहै छै

ध्मनगीमे गाएक गुण नै जनै छै

मरलामे वेतरनी पार करै छै

गोदानक चचर्पिुराणोमे कएल छै

गाए पोसब तखन सुख भेटत

ध्मबैतमे दूि-भात भेटत।

नै पोसब गाए तँ

मरलापर दूि-भात केना भेटत

सभ लोकध्म सोचैत रहै छै

ब्बनु ि रती महल बनबै छै

गाएके माए सभ नै बुझै छै

मुदा माएके माए सभ कहै छै

गाए नै पोसै छै सभ कोइ।

ध्मनगीक जीवन पिमे

गाएक गुण नै जनै छै

मुदा मरलापर गाए संगे

वेतरनी पार स्वगर्पिहुँचै छै

ध्मबैतमे गाए-माएके

दू सभ थ्यऐ छै
नरकसँ सोझे स्वगा पिहुँचै छै
गाएक जर री सभ नै बुझै छै
दू कि लेल मारा-मारी करै छै
मरलापर गोदान करै छै।

खेतिहरक जिनगी

भुरकवा ऊगल

सूतल पड़ल छलौ

मोन कछमछाइत छल

उठि मोन मारि कहुना

बाल-बच्चा [illegible]

खेतपर गेलौ

काज करैत घाम बहए

भूखसँ टौआइत छलौ

खेतक आड़ि बैस [illegible]

सूखल रोटी-नून-तेल

चटनी मिरचाइ खेलौ

पानि पीब काजमे भीरलौ

खेतक काज करैत

देहक हडडी-पसरी [illegible]

सूखि कारी बनि गेल

भरि पेट खेनाइ नै भेल

कतेको पीढ़ि बीति गेल

नीक वस्त्र नीक घर

कहियो नसीव नै भेल

कहियो रौदी कहियो बाढ़ि भेल

उपजा जरि-भसिआया गेल

खाद-पानि महग भेल

खेतक उपजा जन-मजदूरीमे चलि गेल

साल भरि बाल-बच्चा

की खाएत केना जीअत
मा पिर हा ि थ्
शोक-सागरमे डूबि गेल
बाप-दादा अही सोचमे
कजा लाद मरि गेल
दुख दबाइ बेटी बिआहमे
थकताक-थकताक खेत बिक गेल
मा पिर चोट मारैत बाजल-
खेत थक देहक लहू बिक गेल
जीब कऽ की करब
केकरा मुँह देखाएब
के शरण-भरण करत
आत्मदाह करनाइ नीक रहत
खेत उपजा कऽ की करब
नै अनक दाम नै जिनगीमे अराम
बजारक समानक दाम
पहुँचि गेल असमान
केना बँचत खेतिहरक पाण।

1230 || विदेह सदेह:३४

जानक दीप
अन्हरिया राति
इजोतक नै कोनो उपाइ
सोचै छलौ केना भागत
ई अन्हरिया राति
सोचैत मोनमे फुराएल
एक उपाइ अछि बचल
दीप जरेलौ तखन
किछु अन्हार भागल-पड़ाएल
मुदा सोचलौ ई अन्हरिया
बेर-बेर होइत रहत
कखनो इजोरिया तँ
कखनो अन्हरिया
ऐ दीपसँ
केना हएत मनुक्खक पकाश
मनुखके अछि
जान-र पी पकाशक अभाव
जखन मनुख बनत जानी
तँ अभिमानी अन्हार दूर भागत
दीपक अन्हार भगौलासँ
नै काज चलत दुनियाके
जानर पी पकाश अछि जर री
जइसँ दुनिया जग-मग हएत
जानक दीप जरौलासँ
कखनो अन्हरिया नै हएत।

दुखाएल गंगा
सभ सा‍ि गंगा नहाइ छै
कतेक पाप थ्मनगीमे केने छै
जखन गंगा
पापीक पाप ि‍इ छै
सभक तन-मन शुद करै छै
तँ अपने गंगा थ्कअए थ्मनाएल रहै छै
गंगा सा‍िके शुद करै छै
की सा‍ि गंगाके शुद करै छै
की पापी पापके गंगामे ि‍इ छै
तँ गंगा एतेक पाप कतए रखै छै
स्वर्गकि गंगा ि‍रतीपर बहै छै
पापीक पाप ि‍इत गंगा
पापक मोटरी कतए रखै छै
गंगा पापीके
तन-कंचन मोन थ्मलि करै छै
सभक कल्याण उपकार करै छै
उल्टे सभ गंगाके दुख दइ छै
थ्कअए गंगा एतेक दुख सहै छै
नै कोइ गंगाक हीत सोचै छै
थ्मबैत गंगा मरैत गंगा
पाप उघैत बदनाम होइ छै
पाप नै पापी देथ्ख गंगा

िरती छोश्क पड़ाएल थ्फड़ै छै
स्वर्गसँ िरतीपर आश्ब गंगा
दुबश्क श्चन-राश्ा पचताइत रहै छै
कतेक पापी िरतीपर बसै छै
असगरे गंगा पाप िोइ छै
पापीक पापीसँ
दश्ब-दश्ब गंगा मश्ब रहल छै
गंगाक दुख कोइ नै बूझै छै
अपने दुखसँ दुखाएल गंगा
सागरमे डूश्ब-डूश्ब मरै छै।

बेगक बश्चयाती
असाढ़क मास
उम्मस भड़ल श्चन
अमरस खाए-पीब
खोपड़ीमे सूतल
पश्चनासँ देह श्चजल
श्चन टूश्च गेल
भंडार कोणसँ
ढनढनाइत मेघ
श्चजुरी चमकैत
घनघोर बरसैत
जड़ल ितीके
प्यास मुझबए लगल
अरा नक्मि
खन्ता डबरा-पोखश्च
झम-झम बरखासँ
भड़ए लगल
भड़ल पाश्चमे
बेगक बश्चयाती
सजए लगल
उछश्च-कूश्च
ढौसा श्चतकबरा
श्चअरका-मश्चछाहा
सुर कुश्चया काश्च-काश्च

बरियाक भीड़
जुटए लगल
घोघ फलकाबैत
एके स्वरमे
टटरीइत ढोरियाइत
हजारक-हजार
अनघौल करैत
किछु गीत गाबए
किछु पानिमे डूबि
नकसक-नकसक करए
किछु एक-दोसरापर सबार भऽ
ऐपार-सँ-ओइपार करैत
सबलनिर्बलके
सभ मिलि सहयोग करए
बेगक जातिमे
कोनो भेद नै
अपन संगठनके
मजगूत बनौने
एकताक परिचए दैत रहल
बरखाक बुन
पड़ैत रहल
शीतल हवा बहैत रहल
बेगक बरियाती
सजैत रहल।

बलानक बाढ़ि
बलानक बाढ़ि
ढल-पर-ढल बजरैत
सनसनाइत उधियाइत
पसरि गेल बाढ़िक पानि
श्चम्मत हाथि लोक
करए लगल गुहारि
बलानके नै आएल
कोनो दया-माया
गौरवसँ कहलक
चारि मास तक
रहत हमर राज
नै चलए देब हम
अहा सबहक राज-काज
जखन हमर
बाढ़िक भूत सबार रहत
ऐपारक लोक अही पार रहत
ओइपारक लोक ओहीपार रहत
जे हमरा बीच आएत
ओ हमरे पेटमे समाएत
कोस भरिक पेट हमर
केना भरत
कलम-गाछी चास-बास
खाए कऽ लेब सास

पोखश्च-खत्ता डबरा
बालुसँ भश्च बनाएब हम भीठ
कहबी छै जे आएल बलान तँ
बान्हलक दलान
गेल बलान तँ उजरल दलान
कहबी साच-छूठ सेहो होइ छै
मुदा बलान श्चनगीके
तहस-नहस कऽ दइ छै
उपजाऊ खेतके
बालुसँ भश्च भीन्डा बना दइ छै
अनक बदला बलान
बालु फकबै छै
बलानक बाश्च
ठहुश्चाये पाश्चामे
गरगोश्चया दइ छै
श्चकास नै हुअए दइ छै
श्चनाश करै छै
गाम-घरके उजाश्च
श्चनगी तबाह करै छै
बलानक बाश्च।

पानिक बून
बून-बून पानिक
खगता सभके पड़ै छै
बून-बूनसँ घैला भरै छै
पोखरि-इनार भरि
झील-झरना-नदी भरै छै
धरा आर समुद्र भरै छै
सबहक पिआस मेटाइ छै
दुनिया जीबै छै
सुखाएल धरतीके सिंचै छै
सभ आर पानिक उपयोग करै छै
दुरुपयोग सेहो होइ छै
ओ दिन दूर नै छै
पानिक बून लेल
तरसि-तरसि मरतै
धरती धधकि जीव जरतै
दुनियाके बचेबाक लेल
बूने-बून पानिक रक्षा करए पड़त
नै तँ जिनगी कनो भरि नै चलत।

हेराएल भगवान
मोन घबराएल छल
चैन छिनाएल सन
कच्छ-मछ करैत
मोनमे फुराएल
सुख-शान्ति लेल
भगवानसँ भेटब
अपन दुखरा सुनाएब
जे सुख-शान्ति लेल
कोनो उपाय बताएत
जइसँ कल्याण हएत
मंदिरे-मंदिर घूमि-घूमि
पूजा-विनती बहुत केलौ
मस्जिद-गुरुद्वारामे
माथा टेकलौ
गिरजाघरमे प्रार्थना केलौ
मुदा हेराएल भगवान
कतौ नै भेटल
मोनक अशान्ति नै मेटल
मोनमे विचारि
गहबरे-गहबर मंसा केलौ
साधु-संतक सेवा करैत
वन-जंगल घूमि-घूमि
तीर्थाटन यात्रा केलौं
तन-मनक सुधि लेल

गंगामे नहेलौ
देहक मश्च जर र छुश्च गेल
मुदा मोनक मश्च नै गेल
बैचैनी बश्च़ गेल
तखन जान भेल
सबहक श्चलमे
भगवान बसैए
कण-कणमे रमैए
अपन मोन-मंश्चरमे झौश्क तकलौ
हेराएल भगवानके देखलौ
सुख-शाश्चाक वरदान पेलौ।

जीबए लेल
जीबए लेल
दुखक नोर
पीबए पड़ै छै
बिनु अरमान
जीबए पड़ै छै
दुखक भार
जिनगी भरि
सहए पड़ै छै
जिनगी मिलै छै
दुखक सहए लेल
बिनु दुख
सुख नै मिलै छै
किछु करबाक लेल
जिनगी जीबए पड़ै छै
जीबए लेल
दुखक नोर
पीबि कऽ जीबए पड़ै छै
संसार सुन्दर नै
दुखक सागर छै
अमर नै नाश्वर छै
काट भरल बाट
मोड़े-मोड़पर
त्रिशुल गाड़ल छै
कमसँ काट

फूल बनै छै
सभ दुख
सुख बनि जाइ छै
दुख सहि-सहि
जहिना किचरमे
कमल फुलै छै
जीबए लेल
किछु करए पड़ै छै
बिनु कमि
जीवन सफल नै होइ छै
जीबए लेल
दुखक नोर पीबि-पीबि कऽ
जीबए पड़ै छै।

चैताबर गीत

लाले रंग चुनरी
रंगेबै हो रामा
चैतक महिनमा ना
गोरे-गोर हाथमे
मेहदी लगेबै
सजनाके तड़सेबै ना
हो रामा चैतक महिनमा ना
लाल रंग फूलसँ
सखिया सजेबै
मीठ-मीठ बात सजनासँ कहबै
हो रमा चैतक महिनमा ना
आमक बगियामे
बैसल कोयलिया
पियाके बजबै ना
हमरा तड़साबै ना
हो रामा चैतक महिनमा ना
चमेली फुलबासँ गजरा बनेबै
कारी-कारी केसियाके सजेबै
पियाके ललचेबै ना
हो राम चैतक महिनमा ना।

चैती गीत

भोर भेलै हे सखी

श्यानसरबा भेले हे

कनी चलू ने बश्याया

कोयश्नया बजै हे

हे सखी चैतक मश्नना हे

आमक गाछीमे

झुलुआ झुलबै

श्यया केर संगे हे

हे सखी चैतक मश्नना हे

कारी-कारी केश्नया

डॉरपर लटकै

पूवा-पश्छयामे फुलकै

मीठ-मीठ गीत श्ययाके सुनेबै हे

हे सखी चैतक मश्नना हे

श्यअर साड़ी लाल चोली

लाले चुनश्नया हे

चढ़ल यौवन मसकै चोली

रश्न-रश्न श्यहुँसै हे

हे सखी चैतक मश्नना हे।

पेमक भूखल

हे उि श्कयो हरत दुख मोर
पएर पकश्ह़ हम अहाके कहै छी
दुखक नै कोनो ओर
श्वलक दुख हम केना केकरो कहबै
श्याम बनल श्वात चौर
हे उि श्कयो हरत दुख मोर
चढ़ल यौवन उमरल सन दश्वया
पेम वीरहसँ मन भेल मजबूर
ि र-ि र कापए देह हमर
कलेजा भेल कमजोर
भरल यमुना लेलक कोर
आँश्वयासँ बहए हमरा नोर
हे उि श्कयो हरत दुख मोर
डगर बहाश्व हम अङना श्वापलौ
मुश्व-मुश्व देखैत चहु ओर
सोलह शृंगार सश्न बाट जोहै छी
वंशी ि नि सुश्न हम भेलौ श्वभोर
कश्वया भेटत श्याम श्वात चौर
हे उि श्कयो हरत दुख मोर
सभ गोश्वयन पेमक भूखल
कन्हैया श्कअए अश्छ र सल
पेम वीरहमे हम छी सूतल
सात जनम तक आस करब हम
कन्हैयासँ श्वलक बात कहब हम

कोन कसूर भेल हमरासँ
जल्दीसँ कश्चयौ कन्हैयासँ
श्वनती सुश्मायौ दुखक मोर
कन्हैया हरत दुख मोर
कश्चया श्मलत श्याम श्वातचोर
हे उी श्कयो हरत दुख मोर।

मर आक मान

अनमे मर आ बड़ अनमोल

र पसँ कारी बड़ गुणकारी

उपजे ऊसर खेत मुदा श्वतकारी

राजा रंक खाइतो लजाइ

गरीबक बचाबै पाण

थ्वपती समैमे मर आ

अश्वाथ्वि ओके राखए मान

मर आक रोटी तोरीक तेल

नोन मश्वचाइ चटनीसँ मेल

नश्व कोनो खचा खाइतो चचा

इचना, पौठी माछक चटनी

संगे जे खाइ मर आ रोटी

नश्व बनत रोगी मोटी

रक्तचाप, मिमेह, जलोदर

भागल रहत देहसँ

कश्वयो नश्व हएत कफ खासी

मर आ औषथ्वि गुणक खान

आश्वकालसँ रखने अश्छ मान

मर आ होइत अश्छ श्वटकाउ

कोठीमे वषो तक रहए बन्द

सभ श्वदन होइत अश्छ श्वकाउ

मर आक खेती बड़ असान

अनमे मर आक बड़ मान

सभ श्वदन राखए गरीबक मान।

अरमान
दू पाटनक बीच
सभ पीसाइ समान
सभ अरमान-आंसू
संगे बश्च गेल
तेजाबी बरखा संग
नुनगर पाश्चमे
थ्यशाल समुरमे थ्यश्चन
थ्यनगीक गाड़ी डूब्ब गेल
सभ अरमान-आंसू
संगे बश्च गेल
जन्मक उदेश्य
नै रहल कोनो ठेकान
र कब कतए नै कोनो मकान
सोचै छलौ-
दुश्चायामे करब पैघ-पैघ काज
मानव-दानवक बीच
थ्यसाइत-थ्यसाइत भऽ गेलौ
बेकाम राख समान
दुख-सुख दू पाटनक बीच
थ्यनगी श्चात्य थ्यसाइत
भूश्च गेलौ अपन उदेश्य
नै कए सकलौं
कोनो नाम श्चशान

जिनगीक गाड़ी रुकि गेल
दू पाटनक बीच
सभ अरमान आंसू
संगे बहि गेल।

भारत माता

हमर भारत भूमि हमर माता छी
विशाल क्षेत्रमे अहा पसरल छी
ऋषि-मुनिकेँ अपने हृदैमे बसौने छी
देवता आ मनुक्खक तीर्थस्थलि बनल छी
छोट-पैघ सभ जीवके
अपने हृदैमे समौने छी
अन, जल, फल आदिसँ
हमरा सबहक जीवन पालै छी
अनेको खनिज सम्पदाके
अहा हृदैमे नुकौने छी
अपन संतानके निवान बनौने छी
अनेको नदी-झील झरनासँ
सभ फसलके सिंचै छी
पसाद रूपमे हमरा सभके
अन-जल-फूल-फल दइ छी
वन-उपवन-वाग-बगिचाक शोभा
भाँति रँग-विरँग फूलसँ सजबै छी
अनेको तीर्थस्थलिसँ पवित्र बनल छी
सूर-वीर पुत्र-पुत्रीसँ
अहाक गोद सभ दिन भरल अछि
साहित्य,दर्शन,विज्ञान,ज्योतिष क्षेत्रमे
अपन इतिहासक पकाश दुनियाके दइ छी
हम सभ अहाक पुत्र-पुत्री

अहा हमर माता छी
सभ मिा सभ जाक आदर अहा करै छी
अपन माट-पासँ सबहक पालन करै छी
अपनोके नै दुश्मनोके शरण अहा दइ छी
अहाक रक्छा हमसभ सदासँ करै छी
हम सभ देशवासी अपन माताके
ात चरणपर सुमन अि करै छी
हमर भारत भू हमर माता छी।

परदेशी

किअए परदेशी बनल छी अहा
किअए कलंकित बनल छी अहा
अपन मिथिलाक महिमा अछि अपार
अइठाम मिलैत अछि सबहक रोजगार
आब नै रहत कोइ बेरोजगार
मिथिला राज्यमे अछि काम अपार
माटि-पानिसँ उपजे अनक भंडार
कियो नै भूखल सूतल रहत
सबहक बनत राटी-दालि
बाल-बच्चा मिलि कलित राज्य बनाएब
राज्यक खुशहाली आ हरियाली बढ़ाएब
अपनो खाएब आ दोसरोके खुआएब
अपने राज्यक माटि-पानि
सदासँ अछि अमृत समान
राखब दुनियाक मान-सम्मान।।

मोनक बात की कहब
चलू बहिना चलू जहिना छी तहिना
की कहब हालचाल बीत गेल ओहिना
मंदिर, मेला कतेको घुमलौ जहिना तहिना
पूजा-पाठ बहुतो केलौ पीया आएत कहिया
फूल, बेलपता, चंदन-अछत, धूप-दीप
सभ देवताके चढ़ेलौ तीन पेखन
आब की करब समझ नै पबै छी अखन
जादू-टोना सेहो केलौ चार केना
चलू बहिना चलू जहिना.....

चढ़ल उमरिया हम केना बताएब
जिनगीक भार पहाड़ बनल अछि
पहाड़क भारसँ यौवन भार
अधिक बनल अछि
देव-धरमके दया नै अबैत अछि
चंचल मन डोल डोलैत अछि
सभ किछु रहितौ धन-राशि सुना बनैत अछि
पिया बिनु जिनगी सुना-सुना लगैत अछि
मनक बात की कहब......।

निरोपनी

सावनक राश्वा
इजोश्वया जरैत
पूरबा हवा दोमैत
आसन लगौने बैस
अकास श्वाहारैत
सोचैत छलौ
आश लगेने
सावनक बून
कश्चया खसत
जे भश्वखश्व
निरोपनी हएत
श्वकछु दुर नभमे
श्वबजली चमकैत
ढनमनाइत दस्तक दैत
बादल उमश्व गेल
रितीपर बेगक
बाजा श्वारंतर बजैत
श्वझगुरक झनकारसँ
रिती मिकाबैत
मेघक बश्वयाती
सजए लागल
कारी काजर सन

मेघ उमश्च पड़ल

श्चबजली श्चछटश्चक श्चछटश्चक

मेघक रास्ता देखबैत

पसश्च गेल चार कात

घनघोर बखा भेल

डबरा-खता भश्च गेल

खेत चानी सन चमैक गेल

खेतक पाश्चासँ

ि र तड़पैत उछलैत

इचना-पोठी-टेगरा

चाल दैत कुदकैत देश्चख

गामक बच्चा बेदर

कूश्चद-कूश्चद माछ पकड़ैत

श्चबहानेसँ गजार कदबा

हुअए लगल खेत

हर जोतैत हरबाह

श्चबरहा गाबैत

गामक माए-बश्चहन

िनिक बीआ उपारैत

भूलल श्चबसरल

सोहर समदाउन गबैत

िनरोपनी करैत खेत

हश्चषत मनसँ कहैत-

‘‘हरक नाश आ

खेतक चासपर

पेट भरबाक अछि
सभके आश।”

लफंगा

फाटल िती फाटल अंगा

पएरक जूता टुटल फाटल

आँखिक चश्मा दूरंगा

चौकैत चलैत अछि बेढ़ंगा

बात करैत जना लफंगा

लफड़ैत चलि दखिभंगा

बात-बातमे फसाबए दंगा

सवाल-जबाब करैत अरंगा

जखैन भऽ जाइत दंगा

मौका पाबि फनैत नंगा

बात-बातमे कहैत लफंगा

मन चंगा तँ कठौतीमे गंगा

साच झूठक दोहरी अंगा

एकरंगा पहिर बनाबै फंदा

झूठक खेतीमे उपजाबए बूटी

फाटल जेबीमे रखलक मोती

राम-नाम रटलासँ नै भलत रोटी

नीक काज कऽ बनाएब कसौटी

जखन थकनब मौट-मोट पोि

जानक पकाश भलत अनोखी

थकासक गंगा बहत चौमुखी।

बेरोजगारी

हम छी बेरोगार
काम करै छी लाचार
हमरासँ करबैत अछि बेगार
भुखल पेट बनल छी दुखारी
दुखक मारल सूतल छी
ऊपरसँ परिवारक बोझ भारी
जहिना लकड़ीके चीरैत आरी
खेबाक नै भेटैत उिरी
बाल-बच्चा बनल अछि भीखारी
हमरा देशक लोक मारैए छलकारी
की करब नै अछि समझदारी
आसा नै कहिया बनब रोजगारी
की पाण लेत अत्याचारी
देशमे कहिया मेटाएत बेरोजगारी
सरकारके नै अछि सभसँ सरोकार
हम छी बेरोजगार।

र पैआक ढेरी

र पैआक ढेरीपर करैए खेल
दुिनयाके नचबैए ठेल-ठेल
र पयाक लालचमे बनल अिछ पागल
दानव बिन मानवपर करैत राज
सुखक भूख िमटबैए र पैआसँ
दीन दुिखयाक तौलैए र पैआसँ
मनुक्खक चाह िछोड़ चलैए
नाच करैए खंजन िचड़ै सन
सुखक चाहमे भटिक गेल राह
सोमरसमे समाए गेल मन िवचार
नंगा नाच करैए र पैआ ढेरीपर
जोशमे होश उिड़ गेल नचबैयाके
जखन र पैआक ढेरी अंत भऽ गेल
िजनगीक दू िकनारा बीच िवसाए गेल
दुखक ि रिमे बिझ गेल र पैआक ढेरी
जिहना मनुख मुठी बन जनमैए
हाि पसािर संसारसँ चिल जाइए
र पैआक ढेरी ओिहना रिह जाइए।

भष्टाचारी

जागु-जागु यौ देशक भैयारी
देशमे घुसल पैघ-पैघ चोर
चोर केहेन पहिचान नै आबए
देशमे घुसि सभके सतौनेए
देशक भैयारी, जागु, कर तैयारी
देशक कर रखबारी
आब औपसमे कर नै कोनो बेपारी।

चोर देशके करैत अछि कमजोर
चोरक नाओं छी भष्टाचारी
सभ विभागमे जमैने अछि अधिकार
मंत्री-संत्री एकरे बलपर
भेल अछि मालो-माल।

बड़का महलबलाक बैसल अछि कारी
सभ भष्टाचारी, बनल अछि अधिकारी
देशक िन विदेशमे करैत अछि बैंकवाली
सभ भष्टाचारी, बनल अछि अत्याचारी
जनताक सोखैत
बेचबाक करैत अछि रोज तैयारी
केना भागत देशसँ ई भष्टाचारी
तेकर कर तैयारी
जागू-जागू यौ देशक भैयारी।

आएल वसन्त

आएल वसन्त

भागल जाड़

फूलसँ सजल ि रती

दुलश्चन समान

फूलक सुगन्ि चढ़ए आसमान

आम मजरल

महुआ पसरल

भौरा करए गुणगान

सेरसौ बाजए

शहनाइ समान

वसन्ती रंगमे

रंगाएल सभ एक समान

ढोल, मजीरा, ढाक, डफली

बजबैत गबैत फागुनक गान

रंग अबीरमे नहाएल समान

भेद-भाव श्चट गेल

सभ लगैए एके समान

आमक गाछपर कोइली बजैत

सभके दैत पेमक वरदान

ि रती बनल स्वगर् िसमान

आएल वसंत भागल जाड़।

अप्पन-पराया

अपना लेल सभ मरै छै
पराया लेल नै कोइ
जे परायाके अप्पन बूझै छै
तँ जग सुन्दर होइ
अप्पन तँ अप्पन होइ छै
पराया श्वकअए होइ छै
सभ रितीपर जनम लइ छै
एकेठाम जीबै-मरै छै
जाश्वा भेदक अंतर श्वकअए होइ छै
अपन करम अपने करै छै
दोसरके अश्वत श्वकअए होइ छै
जखन मनुक्खक जाश्वा एके होइ छै
सभ तँ अने-पाश्वा खाए-पीब श्वबै छै
तखन श्वचारमे श्वकअए अन्तर होइ छै
सबहक श्वचार जँ एके हेतै
सभ-आनो-श्वरानो अप्पन हेतै
एकरंगा समाज बनतै
सबहक श्वकास समर प हेतै
अप्पन-परायक भेद मेटेतै
जग सुन्दर बश्वा जेतै।

बाट बटोही

डेग-डेगपर बाटमे मोड़ होइ छै

तैयो राही बाट चलै छै

तहिना जिनगीमे मोड़ होइ छै

बाटक मोड़ करोट नै लइ छै

मुदा जिनगीक मोड़ करोट लइ छै

बाटपर बटोही सभ दिन चलै छै

जिनगीक मोड़ कहियो होइ छै

बाटक बटोही बदलैत रहै छै

तहिना जिनगियो बदलै छै

जहिना बाटक दिशा होइ छै

ओहिना जिनगीक दिशा सेहो होइ छै

सही बाट पकड़ि बटोही

अप्पन-मंजिल पहुँचै छै

गलत बाट पकड़ि बटोही

भटकि-भटकि चक्का ि कै छै

बाटक ओर-छोड़ नै होइ छै

बटोही चलैत थकि मरै छै

मुदा सही बाट चलैत बटोही

अप्पन जिनगीक लक्ष्य पबै छै।

हाटक चाउर बाटक पाश्मा
हाटक चाउर बाटक पाश्मा
बश्माया घरक तरजूके
नै होइ छै कोनो माइन
जाश्मा-माश्मा होइ छै हाश्मा
श्मनगी चलै छै उबाश्मा
उजरल वनमे फूल-फड़
श्वलैत-फड़ैत केना
ठेश्मा-ठेश्मा श्मनगी चलैत केना
फाटल वस्ि टुटल घरमे
श्मनगी रहै छै अन्हारे-अन्हार
सूखल श्मनगी केना पोनगत
पोनश्मा-पोनश्मा सुश्व-सुश्व जाए
केना श्मचब नै फुराए
सभ श्वन श्मनगी अन्हश्वये श्वताए
इजोश्वया कश्नयो नै देखाए
सुक्खल तन उजरल मन
वन-वन भटकै मृग समान
हाटक चाउर बाटे श्वलाएल
घाटक पाश्मा घाटे सुखाएल
श्वनु पाश्मा नै श्वयास बुझाए।

1264 || विदेह सदेह:३४

जान बौटैत चलू
सिखैत पढ़ैत रहू
जिनगीके सजबैत रहू
लिखल पढ़ि जानी बनू
सिखि-सिखि जान बौटैत चलू
अपन जान अपने नै
दुनियामे बॉटैत चलू
सिखैत-पढ़ैत रहू
जानक गीरह नै बान्हू
खोलि-सजाय बॉटैत रहू
जानीक जानसँ दुनियाा सजै छै
आजानी विनाश करै छै
लोभ-मोह-माया-छोड़ि
दुनियाके सजबैत चलू
जान बौटलासँ खचनि नै होइ छै
निरंतर जान बढ़ैत रहै छै
जानसँ अभिमान मेटाइ छै
मान-सम्मान सभ दिन भेटै छै
जानक काज राजा-रंकके पड़ै छै
बिनु जान दुनिया नै चलै छै
जान बॉटैत चलू....।

पेम आश्क पैसा
अहाके की चाही?
पेम आश्क पैसा-
पेम- पेमसँ सुख-शाश्न्ति भेटत
दुख हरत कल्याण करत
श्वगरल काज असान करत
श्वलक दरद असान करत
एकताक पश्चचान बनत
यश बढ़त इज्जत भेटत
श्वशक कल्याण करत।
पैसा-
पेच फसाएत
पेमसँ दूर राखत
दुखक पोटरी श्वरपर लादत
ऊँच-नीचक भेद बढ़ाएत
मिश्झिमान मेटाएत
अपने बलसँ गरीबपर
अत्याचार बढ़ाएत िक जमाएत
जोश बढ़ाएत नीन उड़ाएत
दुश्नयामे अशाश्न्त बढ़ाएत
अहाके की चाही।

कालक पहरा

कालक पहरा चहुओर पड़ैए
चंचल चित मन चोर बनल अछि
किला बीच दुआरिपर पहरा पड़ैए
नगर शहरमे ढिंढोरा पड़ैए
राजा बैसल सिंहासन डोलैए
पजा सूतल नीन खिंचैए
तही बीच चोर चोरी करैए
कालक पहरा चहुओर पड़ैए।

आन्हर राजा सेवक बहिर
भूखल पजा होइ छै अधीर
मंत्री-संत्री चोर बनल अछि
अधिकारी खजाना लूटैए
आन्हर राजा भुजा फँकैए
मंत्री मलाइ चटैए
भरल खजाना लूटि-लूटि
नीत होली-दिवाली मनबैए
देखि पजा भूखल सूतैए
कालक पहरा चहुओर पड़ैए।
खजानाक माल विदेस भेजैए
रक्क भक्क बनल अछि
शैवाति राजा चोर सबल अछि
जनताक लहु चौबटियापर बिकैए
सिंगहासनसँ सटल राजा
लोभ-मोह-माया बीच फँसि
टुकुर-टुकुर तकैए
खाली खजाना देखि राजा
सोगमे सोगाएल रहैए
कालक पहरा चहुओर पड़ैए।

थ्यासल मन
झुलसल तन कथ्याएल सन
थ्यासल मन मन्हुआएल सन
सूखल वन उजरल उपवन
तथ्-तथ् ि रती जरल सन
श्चनु मेघ तड़सए नयन
करेजा कापए भुमकम सन
श्क हएत बखा हश्चति मन
नै कोइ जानए ज्योत्षी सन
मन उदास देश्च डोलए पवन
मेघके बजबए श्चहश्क पवन
वातावरण भेल मेघौन
झरझर बरसए बजए ढनढन
सूखल ि रती मुरझाएल वन
उपवन भेल हश्चअर कंचन
झुश्च-झुश्च नाचए मेघ संग पवन
श्चजुरी चमकए डरै तन-मन
पाश्च खोश्च नाचए मोर-मोरनी संग
सबहक तन-मन जुराएल
थ्यासल मन ि रतीके बुझाएल।

दहेजक खेल

दहेज-

बिआह बिगाड़त इज्जति उताड़त

तैयो लोक करैत अछि

दहेजसँ मेल

जखन दहेजक खेल शुरू भेल

बिआह भेल गरमेल

समाजमे भेल बड़-बड़ खेल

बिआह सन पवित्र बंधनिके

बिगाड़ैत दानव दहेजक खेल

बिआहक शुभ मुहुर्तमे

दहेज बिआए अरचन-शिखा

बिगाड़ैत समाजक नाता

परिवार आ समाजक

तोड़ि देत दिलक नाता

आउ हम सभ मिलि

दहेज मुक्त समाजक निर्माण कर

भेद-भाव मेटा कऽ

बिआहक बंधन मजगूत कर ।

घर परदेश

कतेक दिन बाद एलौ
हाल-चाल दुखद सुनेलौ
राति-दिन दुख कए सहलौ
घरेमे रहितौ धीरज देतौ
सभ मिलि दुख सहितौ
अधि रोटी खाए कऽ जीबितौ
धिया-पुता संगे रहितौ
अपने समाजमे कमेतौ
परदेश पराया होइ छै
दुख-सुख कियो नै बाँटै छै
रपैया लेल दुष्कर्म करै छै
नै रपैया भूखै मरै छै
मुदा अपन समाजमे पेम होइ छै
पैच उधार सेहो भेटै छै
अपन कि आनोके
विपत्तिमे मदति करै छै
सभ इज्जतसँ जीबै छै
घर छोड़ि परदेश कए गमेलौ
बाल-बच्चाके बिलटेलौ
कर्जाया महाजन सेहो भेल
कर-कुटुमैती सभ छूटि गेल
एहेन करम कए करब
जे परदेशमे खटब
काज नै देत मरितो परदेश

आब एहेन काज नै करब
जीबैले समाज सभसँ पैघ
समाजेमे रहब जीअब मरब।

1272 || विदेह सदेह:३४

गहुमक कटनी-दौनी
अरिश्चायेमे नीन टुटल
कच्छमछाइ सूतल पड़ल
गहुमक कटनी मापिर चढ़ल
काश्च-खोश्च घर नै लाएब
तँ भश्च साल बाल-बच्चा
की खाएत केना जीअत
अही सोचमे पड़ल छलौ
एकाएक मनमे फुराएल
सभ धिया-पुताके उठेलौ
आँश्च श्चड़ैत हँसुआ लेलौ
सभ श्चश्च खेत पहुँचलौ
गहुमक खेतक नम्हर श्चकता
सभ श्चश्च काटैत छलौ
अकिटनी भेल मुदा
चैतक रौद मुँहपर पड़ल
आब श्चक काटब गहुम
रौदामे झुलश्च गेलौ
खाली गहुमे काटब से केना
भूख-श्चयाससँ बहए पश्चना
मुदा श्चम्मश्चा हाश्च जाएब केना
सभ गहुम काश्च खेत खसेलौ
चैतक रौदमे देह झरकेलौ
घूश्च घर एलौ सुसतेलौ
भानस-भात भेल नहेलौ

सभ अश्क खेलौ आराम केलौ
पाश्न पीब जुना बनेलौ
श्रिया-पुता संग खेत गेलौ
गहुमक बोझ बान्श्ह-बान्श्ह
उश्ठा-उश्ठा थेसर लग पहुँचेलौ
राश्त भश्र दौनी करेलौ
गहुमक दाना कोठीमे भरलौ
भूसीके भुसकारमे टश्नायेलौ
चाश्र मासक गहुमक फसश्ल
श्दन-राश्त खश्ट कऽ घर केलौ
साल-भश्र रोश्टयो खाए जीअब
तइ श्चन्तासँ दूर भेलौ।

बिआह की थिक?

बिआह की थिक

दू आत्माक मिलन

कि दू रक्त मेल

कि दू देहक संगम

कि दू वंशक गठवंधन

कि स्त्री-पुरषक पेम वंधन

कि मनुख जातिक मिश:

सृजनात्मक सफल पयास

की बिआह समाजक रीति-रिवाज छी

बिआह की थिक?

आजुक श्वन
समाजक बदलल स्वर प
ने ओ गाम ने ओ नगर
ने पश्चलुका ठाठ-बाठ
ओ पुरना श्वरासतमे भेटल
िरोहर भेल श्वश्वान
खैण्ड-पखण्ड भऽ टूश्व गेल
बाबा समैक गाम-समाज
पोखश्व इनार परती-परात
सभ श्वकछु बदश्व गेल
नै अश्व कोइ देश्वबैया
समाजक पेम टूश्व गेल
बड़का दलान बड़का पश्ववार
टूश्व कऽ चकनाचूर भऽ गेल
कतेको पड़ाइन भेल
तँ कतेको श्वकासक होड़मे
गाम-घर छोश्व चश्व गेल
समाजक मयादा पाश्वमे बश्व गेल
आजुक श्वन नै रहल
भाय-भैयारीमे पेम
सभ अपन रागक डफली
अपन-अपन बजबैए
बदलल समाजक स्वर पमे
अपन श्वनगी श्वतबैए

खान-पान बदश्च गेल
पालकी-महफा ओहार लगल
कठही गाड़ी श्चश्चान भऽ गेल
डफरा-बसुली कठघोड़ाक नाच
आइ समाजसँ उसश्च गेल

गामक पंचैती गामेमे
बड़का दलान बैस करै छल
बड़का-छोटका सभ अश्च
दूघ-पाश्चा बेड़बै छल
बाघ-बकरीके एकठाम
एकश्च घाट नमबै छल
आजुक श्चन ओ रीश्चा-रेबाज
गामसँ उसश्च गेल
बदलल लोक बदलल समाज
श्चत कम अश्चत बेसी भेल
आजुक श्चन देखै छी।

पुि कुपुि

आशीवाद हम दइ छलौ
अहा नै उथ्मत समझ्म सकलौ
माए-बापक अरमानके
अहा पुरा नै कऽ सकलौ
पुि नै कुपुि छी अहा
खनदानक मयादा नै बचा सकलौ
माए-बापक रीनके अहा
थ्मनगीमे नै सठा सकलौ
स्वगसिन सृजल घरके अहा
लंका जका जरा देलौ
भरत सन भक्त भाएके
अहा अपन प्यार नै दऽ सकलौ
देशभक्त छी अहा
मुदा अपन घरके जराके जरा देलौ
जरल घर ऊजरल पथ्मवार
समाजोके अहा ठोकरा देलौ
आबए बला समैमे अहा
केकरा की जबाब देबै
मुँह छुपा अन्हारेमे अहा
आँथ्मक नोर बहेबै
मनुख की मनुखताके छोथ्म
कथ्मक नि-सुख लेल
अमुल्य थ्मनगी गमा देलौ
असल थ्मनगी स्वग छोथ्म

नरकक जिनगी अपनाए लेलौ
आशा बहुत छल अहाँसँ
सभके निरास बना देलौ
की उदेस अछि अहाक
हम सभ नै जानि सकलौ
की लऽ कऽ एलौ अहा
की लऽ कऽ जएब
सभ अरमानके अहा
कनेमे जराए मेटाए देलौ
अहापर बहुत गर्व छल
सभके माटिमे मिला देलौ
पुत्रि नै कुपुत्रिक नाओंसँ
दुनियामे जानल जाएब अहा
नि पती नि बहुत भेटत
माए-बाप सहोदर भाए
जिनगीमे एकेबेर भेटत
टुटल दिल कनियो नै जूटत
कुपुत्रिक कलंक नै छुटत
सभ किछु रहितो जिनगीमे
आशीवाद नै भेटत।

1280 || वि देह सदेह:३४

कतेक दुख काटब हथ्र हे
हथ्र हे, दुखक ने कोनो ओर
दुखक ि र बहए चहुओर
चंचल मन चतुराइ करए
बीच भंवरमे घुथ्रआइत रहए
ि किल तन-मन उथ्रआइत रहए
जनमसँ मरण ि थ्र छी अना ि
कतेक दुख काटब हथ्र हे।

अहा थ्रनु हम केना जीअब
जनमक बं ि न केना तोड़ब
ि किल पौव चलब केना
दुख सहैत भेलौ मजबूर
दुखक आस थ्रारास भेल
हथ्र हे हम छी अना ि
कतेक दुख काटब हथ्र हे।

काठक नाव दुथ्रया सबार
चहुओर बहए बयार
बीच ि र भौर खेलाइत
उथ्रआएल ि रमे डुमै सबार
ि किल तन हारल मन
अहाक शरणमे छी आएल पड़ाएल
कतेक दुख काटब हथ्र हे।

सत्यक नाव भक्ति पतवारि
हरि खेबैया पार लगाबए
अपने मन मंदिरमे बसाबए
जन्मक दुखसँ मुक्ति पाबए
आत्माक रहस्य जानि
भवसागरके हरि पार लगाबए
कतेक दुख काटब हरि हे।

बारहो मास

अगहनक आगमनसँ सभ सुख पाबए
पूसक सदहिवा दुख बढ़ाबए
ओस कुहेससँ जाड़ बढ़ाबए
माघक जाड़ हाड़ श्चलाबए
फागुन मास सभ फगुआ गाबए
रंग-अबीर गुलाल उड़ाबए
बाजए कोइली कू-कू
मोर-पपीहा पी-पी
वसन्ती हवासँ सभ हषिमनाबए
आम-लीची बौरसँ बौड़ाएल
फूलक महकसँ हवा पगलाएल
चैत मास चना-जअ गहुम पकए
महुआक फूल सभ श्चदश्च गमकए
बैसाखक रौद िरती तपाबए
कुम्हार माश्चक बासन पकाबए
जेठमे खेतीहर खेत जोताबए
िनक बीआ खेत खसाबए
बश्चाया-बेकाल अनक भंडार बढ़ाबए
असाढ़मे आम-जामुन खाबए
पाकल आमसँ हाट सजाबए
खेताक ृिर मजगुत बनाबए
सावन-भादो श्चकसान करए खेत कादो
खेतमे लगाबए िनक चास
बाश्च़-पाश्च दइ शोक-संताप

आसीन जगाबए पावनि-आहारक आस
कातिक मास पेटक दुख सताबए
तेरहम मास कजा बढ़ाबए
अगहन आगमनसँ सभ सुख पाबए।

सड़क बीच नाला
साझक समए पूबा बहैत
डुमैत सुरज चान मुस्काइ
घर-घरमे दीप जरैत
अकासमे तरेगन चमकैत
बाग-बगीचा मह-मह करैत
चिड़ै-चुनमुनीक चहक शान्त भऽ गेल
गामक चौबटियापर पसरल
हाट-बजार उसहो शान्त भेल
मुदा हमर कान्त
नै घर घुसि आएल
ओ एबो करत केना
बैसल अछि दार खाना
दार पीब बनल अछि मस्ताना
मस्तीमे कुश्ती केलक
हार-पाजर तोड़ि बेकाम बनल
काज तँ बड़ घिनौना केलक
लड़खराइत नशामे चलैत
सड़कपर झुकैत-पड़ैत
नालामे ि़डफराइत गिरल
नशामे बेहोश पड़ल छल
मुदा कहैत छल ई नाला
दिनमे रहैए सड़कक कात
रातिमे आबि जाइए
सड़कक बीचो-बीच

हमरा थारबैए थ्वच अपने थ्दथ्स
मुदा हम तँ छी अपने नीच
जखन हम होशमे एबै
नाला बनेबै सड़कक बीच।

आँखि रखितो आन्हर
गहबर-गहबर गोसाइ खेले
भगता-भगतिनिया ठढ़िनिया
देवी-देवताक थानकेदार
असल मिशीज बनल
पान-फूल अच्छत लड्डू
दीप-धूप अगरबती भरल
रंग-बिरंगक डाली सजल
डाली लगबए गहबरमे भुतनिया
झाल मृदंगक धूप संगे
झुमि-झुमि गाबए देवी गीत
गौसाइ खेले भगता-भगतिनिया
छतीस देवी चौदहो देबान
अखन छौ देहपर बिरजमान
जे मागब से पूरा करतौ
कारनीक सभ रोग व्याधि हरतौ
फूल-अच्छतसँ वरदान देतौ
बिगरल काज मनोकामना
चुटकी बजाते पूरा करतौ
बदलामे लडडु-छागर-पाठी मागतौ
बेङ जेना कूदि-कूदि घुमैत
बेतक छड़ीके झुलाते
आहूत जड़ैत देखते
भूत-पेत सभ भागि जेतौ
अरहुल फूलसँ देवी बजाबए

बोल जय गंगाक पुकार लगाबए
भूत-पेत लगल कारनीके
झोटा पकश्च़ झुलाबए-भगाबए
कोश्चया गोहाश्च गहबरम करए
कबुलामे छागर-पाठी बश्च मागए
श्चना देने नै देवी मान्तौ
कुल-खनदान बाल-बच्चाके सतेतौ
गामक-गाम सुडडाह करतौ
सभ डश्च एकटंगा कल जोश्च़
देवीके मनौलक-बुझौलक
मन भश्च लडडू अँचरी चढ़ौलक
छागर-पाठी बश्च देलक
तंि-मंसिँ बान्हल जंतर
अपन-अपन कंठहार बनौलक
अखनो िश्च समाजक लोक
अन्िश्चश्वासमे फँश्च मरैए
श्चसा-हत्यामे श्चश्वास करैए
एकैसम सदी वैजाश्चक युगके
आन्हर बश्च कलंश्चत करैए
िश्चया-ओझा-गुणी भगता-भगश्चश्चया
जंतर-मंतरपर श्चश्वास करैए
आँश्च रश्चतो अखन िश्च लोक
आन्हर बश्च अन्हरा कहबैए।

भाग भरोसे
कोनो काज एना नै होइए
सोचल समझल काज बनैए
पूबिश्रयोश्रत मनमे ठानैए
श्र्वनु जाश्रा बूझ्र हाश्रा होइए
गलत सोचसँ राह भटकैए
मान-सम्मानपर ठेस पहुँचैए
जेहेन मन ओहेन काज होइए
कमक्रि फल ओहने पबैए
सोश्च समझ्र जँ हुअए काज
अश्रत कम, श्रत काज होइए
काजे लेल दुश्राया बनल-ए
काज कोनो नै छोट-पैघ होइए
छोट-पैघ तँ कमर्सँ बनैए
कमक्रि फल अवश्य भेटैए
राज-रंक हुअए वा फश्कर
सत् छी श्क झूठ से श्कयो नै बूझैए
सबहक श्रत ईश्वर करैए
ईश्वर श्वनु नै पता श्रलैए
सभ श्कछु नाशर अमर नै होइए
सत्य डगर कश्चन होइए
मुदा सत् कमर्सँ श्वजय भेटैए
अपन काज अपना लेल सभ करैए
जे काज लोक दुश्राया लेल करैए
कमर्वीर उहए कहबैए

सूरवीर-िमवीर-कमवीरके
तीनू लोकमे जगह भेटैए
भाग्य भरोसे नै थ्कछु होइए।

फूल-पता

फूल तँ फूल होइ छै
पता ने कोनो कम होइ छै
ब्बनु पता ने फूल फुलाइ छै
पता संगे फूल रहै छै
जश्वना दुख-सुख संगे होइ छै
ब्बनु पता नै फूलक शोभा होइ छै
पता फूल संग काटो होइ छै
काट फूलक रच्छा करै छै
सुखक संग फूल दइ छै
दुखक संग पता काट दइ छै
फूल-फड़क इच्छा सभ करै छै
पताक उपैछा करै छै
फूल तँ फूल होइ छै
पतौ ने कोनो कम होइ छै।

भदबा

तीस दिनक मासमे
छह दिन भदबा रहै छै
साल भरिमे
बहतरि दिन होइ छै
लोक कहैए भदबाके
काजमे बाधा करैए
एहेन कोन बाधा
जइसँ मनुखे पभावित होइए
धरतीपर लाखो जीव होइए
केकरो भादबा नै बाधा करैए
मुदा मनुखके मनिनेमे
छह दिन केना हावी करैए
धरती सूर्ज-चान नक्षत्र
सभ दिन अपना गतिये रहैए
पकृति अपन रचना करैए
एहेन पैघ काजके
भदबा कहा रोकैए
भदबामे जनम-मरण होइए
तखन भदबा किअए नै रोकैए
भदबामे काज अशुभ होइतै
जखन भदबामे दोख होइतै
तँ सभ काज भदबामे रुकि जइतै
नै भदबामे खेती होइतै

1292 || विदेह सदेह:३४

आ ने पेट भरि कियो खइतै
तहूमे भदबा बाधा कहतै
भदबाक नै कोनो दोख छै
सभ दोख मनुखेके छै
अपन स्वामि आन्हर बनि
भदबाके बदनाम करै छै
भदबा कोनो बाधा होइतै
सृष्टि-वृष्टिके रोकि दइतै।

बाबा बले फौदारी
की केलौ की पेलौ
जेहेन करब तेहेन पएब
बाबाक ैली भरोषे
नै चलत कोनो काज
अपना भरोषे होइ छै काज
जौ बाबा भरोषे
फौजदारी लड़ब
तखन पराजय हएत
जे काज जहिना हेतइ
ओहिना ने करए पड़त
अनका भरोषे नै होइ छै काज
अपन काज जौ अपने करब
तखन पगश्च श्चन-राश्च हएत
स्वावलंबी जाधरि नै बनब
ताधरि परजीवी बनल रहब
की करब सोचि करब
समए संग काज करब
तखन जिनगीक महत रहत
वर्तमानमे करब तँ भविष्य बनत
भूत तँ बीत गेल वर्तमानपर
भविष्य उज्जवल रहत
संसार काजसँ चलैए
जाधरि अपन काज

अपनासँ नै करब
ताधरि आत्म निर्भर नै बनब
आत्मनिर्भर भेनाइ
सबहक कर्तव्य बनैए
नै तँ एक-दोसराक संग
जिनगीक घिसाइत रहैए
अपन जिनगीक भारसँ
लोक स्वयं दबल रहैए
दोसराक भार केना सहैत रहैए
दबि-दबि जिनगी मरैत रहैए
की कहब कहल नै जाइए
से हाल पमात्मा जनै छथि
अपन विकास जौ सभ करत
केकरोपर नै निर्भर रहत
सभ सुखी, दुखी नै कोइ रहतै।

केकरा ले कानब
हाल-चाल की कहब
जेकरा ले कनै छी
ओकरा आँखि नोर नै
अपन हारल की कहब
दुख कियो िड़े बाँटि लेत
सुखक सा ि सभ बनै छै
दुखमे जानल अनजान होइ छै
केकरा ले कानब
के हमर नोर पोछि देत
सभ देखि-देखि मुँह चोरबैए
िरज देखहारो नै भेटैए
हमरे देखि हँसैत रहैए
जखना जरलपर
नून छिट घा बढ़बैए
केकरो देखिहार कोइ ने होइए
जनए देखै छी अन्हारे रहैए
मतलबी यार तँ बहुतो भेटैए
दुखायामे केकरो कोइ नै
स्वा िमि एक-दोसरके लूटैए
केकरा कहबै के पतिआयेतै
जेकरे कहै छी वएह हँसैए
केकरा ले कानब
वएह लखायबैए।

पश्चवतनि

पल-पल क्ण-क्ण समए बढ़ैए
क्णे-क्ण मौसम बदलैए
श्चन-बदश्च राश्च बनैए
राश्च बदश्च श्चन कहबैए
खास मौसम ऋृतु कहबै
सभ ऋृतु बदलैत रहैए
कल-कल छल-छल नदी बहैत
सागर श्चश्च महासागर बनैए
काल बदश्च युग बदलैए
युगक संग सभ श्चकछु बदलैए
बदश्च-बदश्च नव पुरान होइए
पकृश्च बदश्च आकृश्च बदलैए
तन-मन बदश्च चोला बदलैए
पश्चवतनि संसारक श्चआम छै
उनश्च-पुनश्च संसार चलै छै
करम-िरम नीश्च बदलै छै
बदश्च-बदश्च श्चनगी चलैए
अश्चना जँ सृष्श्च बदश्च जाएत
तँ ई संसार केना चलत
सभ श्चकछु बदश्चतो
सुरज-चान कहा बदलैए।

माइयक ममता

माइयक ममताक नै अछि जोर
नअ मास धरि गर्भमे पालल
तीन साल धरि कोरामे खेला
झूला-झुलाबै लोरी सुना
अचराक छाहसँ दुख बचा
जिनगी भरि अपन ममतासँ
धिया-पुताके दीघायु बनाबै
भगवानक ममतासँ बेसी
माइयक ममता सुख पहुँचाबै
भूखल-दुखलमे छाती लगाबै
माइयक ममता अछि बेजोर
सुक्खक खान माइयक ममताक
नै अछि कोनो मोल तोल
सागरसँ गहीर माइयक दिल
धिरज अटल हिमालय सन
जे सुख माइयक अँचरामे झापल
बच्चाके कोरामे भेटलै छै
ओ सुख ने स्वर्गोमे भेटलै छै
माइयक ममताक नै अछि
दुनियामे कोनो जोर।

परदेश्वाया पाहुन

आएल पहुना बाटे अटश्क गेल

की गामक बाट भूश्ल गेल

मन उपकैए झाश्क-झाश्क देश्वतौ

आश्क बाट चश्ल दूर देश्वतौ

ओर-छोर नै देखै छी

लगैए पहुनाक बाट छूश्ट गेल

श्क श्दलमे कोनो कचोट भऽ गेल

श्क करब श्कछु ने फुराइए

श्दन-राश्त मन घबराइए

श्क हमरामे कोनो दोख बुझाइए

जाश्त-माश्त ने तँ भेल कोनो हाश्न

मान-सम्मानमे जँ कोनो कमी भेल

तँ हमरा कोनो उपरागो नै देल

श्बनु अपराि पाहुन भूश्ल गेल

हमरासँ श्कअए र श्स गेल

सभ श्दन तँ पहुना लेल

कोन-कोन करम ने करै छी

पहुना परदेश्वाया जखने भेल

अपन घर अंगना भूश्ल गेल

श्क कोनो सौश्तश्नाया संग लश्ग गेल

ओज-टोनसँ मन मोश्ह लेलक

आएल पाहुन श्कअए बाट भूश्ल गेल

पहुना पराया ने तँ बश्न गेल

श्दन-राश्त सुरता पहुनापर लगल-ए

सूरता कश्चते होइए मूछा
देहक खून सुश्च पाश्च बनैए
पहुना याश्च रश्च-रश्च बनैए
गौना पहुना श्चकअए करैलौ
ऐसँ नीक कुमाश्चये रश्चतौ
पहुनाक फेश्चमे कश्चयो ने पश्चतौ
श्चलक रोगसँ दूरे रश्चतौ
श्चकअए एहेन दुख जुआश्चायेमे सश्चतौ
पाहुन जँ परचटा हेतै
अपन श्चनगी परदेशमे गमेतै
केना कोइ पहुनापर श्चशास करतै
अपन जुआनी-श्चनगीके नास करतै।

िरतीक सुख
ऋतुराज वसंत
िरतीपर पहुँचल
सोलह शृंगार करैत
दुलहिन सन सजल िरती
पगलाएल भौरा नाच-नाच
करए म्िुपान अविराम
चिड़ै चहकए कोइली कुहकए
करए आगमन मदन रथ्या
सुआगतमे वसंत अभिनंदन करए
आएल अतिथिक म्िुपान करबए
स्वर्गसँ उतरल िरतीपर
परी सभ अछि सुआगत गीत गबए
देखि देवगण गुणगान करए
सबहक मन ललचाइ छलैक
बेर-बेर िरतीपर मेहमान बनैत
एहेन सुन्दर नै छै देवलोक
िरतीक सुख स्वर्गसँ सुन्दर
जे सुख मनुकके भेलै छै िरतीपर
देवौके नै नसीब होइत स्वर्गमे
िन्य अछि ओ पावन िरती
बेर-बेर वसंतक बहार भेलए
फूल-मंजर झुकि-झुकि
सभके अभिनंदन करए।

साओनक रौश्चा

झर-झर बरसै बदश्चया हो रामा

एबकी सवनमा

श्चजुरी चमकै मेघ गरजै

िर-िर कापए वदनमा हो रामा

झर-झर बरसै बदश्चया हो रामा

एबकी सवनमा।

श्चया ैश्चरमोश्चया बड़ श्चरदैया

जानए ने कोनो मरमुआ हो रामा

झर-झर बरसै बदश्चया हो रामा

एबकी सवनमा।

सओनक अन्हश्चया चमकै श्चजुश्चया

पाश्चक बुनसँ श्चजै वदनमा

भीजल तन राश्चा काटब केना

झर-झर बरसै वदश्चया हो रामा

एबकी सवनमा।

भीजल बदनमा चढ़ल यौवनमा

श्चहकए पवनमा तरपाबए सजनमा

झर-झर बरसै बदश्चया हो रामा

एबकी सवनमा।

चढ़ल यौवन दश्चया सन उमरल

श्चया श्चनु तरसै नयनमा हो रामा

झर-झर बरसै वदश्चया हो रामा

एबकी सवनमा।

लोभी भोम्हरा
खिलल फूल देखैत
भोम्हरा मुस्कुराइत
गुनगुनाइत डड़ैत
घुमि-घुमि फूलसँ
करै गुप्त बात
रसपान करैत
भूमि गेल अपन गाम
बिन जान पहिचान
लोभी भोम्हरा करै गान
काटक नै कोनौ परवाह
दिन रातिक नै कोनौ
ठेकान पहिचान
फूलक कोमल पंकुरीमे
कैद पडल सुनशान
फूलक बीच भोम्हरा
छोड़ै अपन मधुर तान
तितली देखि बढ़ाबए शान
फूलक सुगन्धि उड़ै
धरती सँ आसमान
बढल पेम दैखि
फूल कहलक भोम्हरासँ
कि एक बनल छी अहा
एतेक हमरा पर मेहरवान

भोम्हरा कहलक मुस्कुराइत फूलसँ
अहा छी हमर ैश्चलक पाण
अहा ैश्चन हम तेजब पाण
तीनु लोकमे फूल महान्
देवतासँ पश्चले
हम करै छी रसपान
सभ देवताके अहा
रखै छी मान
खुशीमनसँ अहा
हमरो कर कल्याण
श्चअ हमरा म िपान
ता िश्च हम करै छी रसपान
अहा सँ अश्च हमरा
जन्मे सँ जान पश्चचान
तै हम छी अहा पर मेहरवान
हम बनल छी अहाके दीवान

भोरक क्ण

भोरक क्ण

मन्द मन्द हवा बहै

पातक संकेत सँ

चिड़ै-चुनमुन करैत

नव जिनगी पावैत

नील गगन पर

पंख खोइल

चार कात भमण करैत

स्वतंत्र जिनगी बितावै

शीतल पवन उमंग जगाबै

फूलक सुगन्धि गमकै

पूरब ओरसँ

दिनकर दीनानाथ

अंधकार हरैत

लाल-लाल पकाश पूँजसँ

अम्बर दरा पसारैत

बिन सोपान गगन चढै

नव जिनगी पाइब

सभ जन हर्षमिनाबै

फूल मंजर पर

मधुकर ताडंव नृत्य करै

सौरभ सुगन्धि अविराम

अनन्त सृष्टी वृष्टि करै

स्वर्गक सुख पाबै

श्रात्य होयत सुखद श्रैयहान
भोरक क्ष्ण.......।

गरीबक मान

गरीबक राखू सदा मान
गरीबक ैश्चलमे बसै भगवान
कश्चयो नश्च कश्चयो
हुनकर अपमान
गरीबमे अश्छ उजाक खान
हुनके मेहनतसँ
बनैत अश्छ दुैश्चया महान्
गरीबक ैश्चल मे बसै भगवान....
गरीबके सतेलासँ
तीन हाैश्च होयत
ि नि, ि मि, ि अश्चमान
नै मानवतँ देश बनत कंगाल
रश्च-रश्च होएत भूचाल
गरीब अपन पसीनासँ
सीचैत अश्छ देशक कोना-कोना
देशक ैश्चकाशमे
बहबैत अश्छ खून-पसीना
हुनके कश्चयो मान सम्मान
गरीबक अश्छ देशमे हरदम काम
ैश्चनु गरीब नै होएत काम
गरीबक ैश्चलमे बसै भगवान....।

माए

माए अहा बिना नै कोइ दोसर
अहा बिना जगत भऽ जाएत बेघर
अहाक हृदए सागरसँ विशाल
दयाक सागर बनल छी अहा
ईशरसँ बेसी छी अहा महान्
नै कोनो दूजाभाव अछि अहाक हृदैमे
सभके हृदए लगौने छी समान
रितीक रखै छी मान
नि:स्वार्थ पालन करै छी संतान
माइक ममता ईशरसँ महान्
अहाक दूधक नै अछि कोनो दाम
अहाक गोद स्वर्गक समान
अहाक दर्शन सभ तीर्थक समान
सभ देवतासँ अहा छी महान्।

हमर गाम घर

हमर गाम घर
शताब्दियोसँ उपेक्षित
नरकक जिनगी
बितबैत गामवासी
गाँधीजीक सपना
रामराज टूटि गेल
जे कहने रहथिन
देशक आत्मा

गाम घरमे बसैत अछि
मुदा, गामघरक
दुर्दशा नै देखल
नै बाजल जाएत अछि
टुटल घरमे
टपकैत पानि बुन्ने-बुन्ने
श्मर बचेबाक नै
कोनो उपाए अछि
घरसँ निकलैत
कादो भरल सड़क
िलक दुर्गन्धि दम लेत
सड़कक नामो निशान नै
साफ पानि कतौ नै
मिलैत जे पाण बचाएब
दिन भरि काज केलौं
मुदा, भरि पेट खेनाइक
नै कोनो इंतजाम।

अनहरिया राति
कहब केना
साप बिच्छूक सेनासँ लड़ब केना
पकाशक नै कोनो उपाय
मटियाक तेल बिकौआए पी जाए
जखन बिजली गाम-घरसँ
रहैत अछि बिलाएल
नैना-भुटका केर जिनगी
सेहो होइत अछि बेहाल
पढ़बाक इच्छा अछि
मुदा, स्कूलक दशा
अछि दुर्दशा कुबेवस्था
शिक्षकके पढ़ेवाक
नै देखै छी इच्छा
जखन देशक जनता
सत्तरि प्रतिशत गामेमे
जिनगी बितबैत अछि
तँए सत्तरि पचासशत आमद
सरकार किएक नै
गाम घरपर खर्च करैत अछि
देशक सभ निधि (आमद)
शहरेपर व्यय करैत अछि
सभ सुविधा नगर शहरमे
जखन होएत अछि

ई एक सरकार गामवासीसँ
शौतेला बेवहार करैत अछि
शासक, पशासक, संतरी-मंत्री
गामवासीसँ बेमुख बनल अछि
खून चूसबाक सोभाव
जोकके होएत अछि
मुदा, मनुख मनुखक
खून चूइस-चूइस
गाम-घरके नरक बनौने अछि
हमर गामघर
शहरियोसँ उपेक्षित अछि।

अथ्र्ञालगी
एके रौश्निमे
कणे-मे-कणाक भेल
गामक पछबश्रिया कातसँ
गोहालीक घरसँ आथ्रि उठल
पश्छिया हवाक झौकासँ
कणे-मे-आथ्रिाक लपेश्ट
ऊपर उठैत घरक-घर
सुडडाह करैत आगू बढ़ैत
गामक घर ि किैत जड़ैत
पुरे गाम सुडडाह भऽ गेल
आथ्रिाक ैश्यश्रा षका बढ़ैत गेल
गाए, बरद, बकरी बच्चा बेदर
सुतलेमे जश्र मश्र गेल
लता-कपड़ा बतनि-बासन
अनसँ भरल कोठी बखारी
जरैत दैश्ख छातीमे
मुका मारैत नोर बहबैत
हल्ला करैत जोर-जोरसँ कहैत
‘जान बचाबऽ हौ गौआँरी’
देखैत-देखैत गाम श्बश्कान भऽ गेल
गामक ैश्रशान श्राट गेल
श्यान्ह-पहन्श्र हश्ट गेल
सभ एक दोसरके

जानक दुश्मन बनि गेल
अपन जान बचाएत कि
दोसरके जान बचाएत?
काल रूप आगि विकराल
बनल अछि चार कात
भागि पड़ाइत कोने जाएब
चार कात आगिये-आगि
माल-जाल मरल-पड़ल
आगिक लपेटमे सभ पड़ल
देखते-देखते पुरे गामक
नामनिशान मेट गेल
क्षणेमे गामक लोक
कंगाल बनि गेल
एके रातिमे
क्षणेमे क्षणाक भेल।

काली मैयाक गीत

काली मैया
हे.......।
कतेक नीनमे सूतल छी अहा
लाली पलंथाया हे
सेवकपर होइयो ने सहाय
सेवक......।
अहा ैश्वनु हम छी श्रासहाय
रणे-बने भटकै छी हम
कश्रया करब हमरापर दया
बथायासँ फूल चुइन हम
अहाक मंश्वर देलौ चढ़ाय
काली मैया हे
कतेक नीन.......।
बेली चमेलीक गजरा बनेलौ
अड़हुल फूलक माला चढ़ैलौ
कतेको गहबर पूजा ढारलौ
नीन तौंश्कड़ जागू
काली मैया हे
दुैश्खया सेवकपर कश्वयौ ने दया
काली मैया हे
कतेक नीन.....।
आशीष वचनसँ सेवकके
सभ संकटसँ ैश्वयौ ने उबाश्व

1314 || विदेह सदेह:३४

काली मैया हे

सेवकपर होइयौ ने सहाय

काली मैया हे

कतेक नीन सूतल छी अहा

लाली पलंग्या या हे.......।

हमर बिखरल समाज

हमर बिखरल समाज
केना होएत एक ठाम
जाति-पातिसँ बिखरल
ऊँच-नीचसँ बिगड़ल
छुआ-छूतसँ अछूयल
हम सभ जातिसँ छी मानव
मुदा, मानव-मानवसँ
करै छी दानवसन बेवहार
तखन समाजमे बढ़ैए अत्याचार
नै होएत समाजक काज
बिखरल समाजसँ
नै होएत कोनो विकास
सभ भेद-भाव बिसरि कऽ
बनाऊ एक रंगक समाज
जइसँ हएत मानवक विकास
कर पयास बनाऊ नव समाज
सभ मिलि करब देशक विकास
हमर बिखरल समाज.....।

ैश्चड़ै चुनमुनी
ैश्चड़ै चुनमुन हमरा सबहक
दुश्मन नै दोस छी
रौश्चयो ओकरोपर श्चियान
नै हश्चायो ओकर पाण
रौश्चयो दया नै ैश्चयो जान
ओहो करैए हमरापर एहशान
कीट-पतंग खाए कऽ
बचबैत अश्छ अपन पाण
नै ैश्चगाड़ैत अश्छ ैश्कनको काम
जइसँ होएत अश्छ हमरो कल्याण
के करैत अश्छ सेवादान
ैश्चड़ै-चुनमुन पकृैश्चाक पश्चा
सदा सजग रहैत अश्छ
सूचना दऽ करैत उपकार
हमसभ मानव कश्चयो श्चचार
नै कश्चयो श्चड़ै-चुनमुनक ैश्चाकार
श्चड़ै जौश्चपर
नै कश्चयो अश्चयाचार
नै तँ पकृैश्च करत
मानवपर पहार
ैश्चड़ैपर श्करयौ पुन: श्चचार
नै तँ उल्टे भऽ जाएत
मानवक संघार।

माइक लाल

हम छी माइक लाल
माइक सेवा नित्य करै छी
सभ दिन करै छी सौ-सौ पणाम
मागै छी हम अभयदान
हमरा दिअ एहेन वरदान
जइसँ करब दुनियाक कल्याण
हमरा अछि दूटा माए
जननी आ मातृभूमि
दुनूके करब सेवादान
दुनियामे नै करब
अपन माएके बदनाम
राखब जगतमे सदामान
सेवा करैत देब हम बलिदान
माए हमरा माथि पर
तिलक लगा दिअ
दुश्मनसँ लड़ब सीना तानि
कखनयो ने हेतै दुश्मनके चैन
होश-बेहोश कऽ देबै हम
छठिक दूध याद करैबै हम
दात तोड़ि बनेबै दन्तहीन हम
हम छी माइक लाल.....।

के गरीब?

के गरीब?

जे कड़ोरोसँ खेल करैत

काला धन जमा करैत

लहना लगानी ब्लैक-मेलक

तैयारी ऐश्वर्यात्य अछि करैत

ढोगी बनि तीर्थक मजा लइत

देश विदेश भमण करैत

सभ सुविधासँ लैश रहैत

कखनो लाज नहि होइत

हाथ जोड़ि सभके कहैत

हम छी गरीब

मुदा, के गरीब?

गाम घरक सुपर नेता

ठाट-बाटपर हुनके धाख

चास बास चार कात

खेत, बाड़ी-झाड़ी, गाछी

जेनए देखबयो हुनके धकता

समए पाबि रंग बदलि

गरीबसँ करैत धका

आगू बढ़ि करै गरीबक हकमारी

बी. पी. एल.मे नाओं अगाड़ी

सभ लाभ लैत अछि सरकारी

हाथ जोड़ि सभके कहैत

हम छी गरीब?

नैनाक खेल

नैना-भुटुका खलैए खेल
अपनामे करैए ठेलम-ठेल
माश्च-पीट करैत खेलैए खेल
खेल-खैलैत जँ होइत झगड़ा
उठा-पटक करैत रगड़ा
गरदा झाश्च करैत मेल
सभ श्चाल करैत खेल
खेलसँ जाश्चा-पाश्चा श्चाट गेल
जेना पाश्चा-पाश्चा एक भऽ गेल
नै कोनो मनमे अश्छ मइल
एकताक पाठ पढ़ल गेल
देशक लेल सोच बदलल गेल
देशक श्चकास लेल खेलब खेल
नैना-भुटका खलैए खेल....।

कोइली कुहकै आमक डाश्च
कोइली कुहकै आमक डाश्च
सुश्चा हमर मनुआ घबराइ
श्चया हमर रश्चताए तँ
िरज दैताए बन्हाइ
अन्हश्चया राश्चा हम
बाट देखैत दुनू आँश्च-श्चाहाश्च
इजोश्चया राश्चा हम चान देखैत
चकबा-चकोर बश्चा जाइत
चन्दा बादल लूक-छूप खेले
श्चया रश्चताए तँ हमहुँ
संगे खेलतौ ओहने
कोइली बोलीसँ हमरा
श्चलमे लगैए गोली
श्चया रश्चताए तँ श्चकछु कहबो कश्चतौ
अनका केना श्चकछु कहबै
श्चया परदेश्चाया बर श्चारमोश्चया
कश्चया बनत हमर रखबैया
कोइली बोली सुश्चा हमर
देह भए जाइए बश्चर
केकरा कहबै ई दुखक बात
कोइली कुहकै आमक डाश्च।।

नीन्दिया बैरी भेल पहुना
नीन्दिया बैरी भेल पहुना
बाली उमर हमर भेल गौना
हमरा अहा छोड़िएक बिसरलौ अङना
चिठ्ठिया-पतिया बहुतो भेजलौ
एको नै भेटलौ सनेस
कोन दोख हमर अछि पहुना
कतैक फागुन बीत गेल अङना
सोलह बरख हमर उमरि बीतैए
सजल पलंग हमर सुना पड़लए
सभ दिन सपना-सपना अहाक आशमे
अपन आँखिक नोर बहबै छी
मन पड़ैत अहाले सोलह शृंगार करै छी
रस्ता बहारि बाट अहाक जोहै छी
सूतल छी हम सजल पलंगपर
अहाक बिनु नीन नै भेल
सोलहसँ अठारह बीत गेल
बीस बरस तक आँचर बान्हि हम
अपन यौवन रखलौ सम्हारि
सतीत्वक पालन करैत हम
जिनगी बीतबे छी दिन-राति
कोन बैरिनिया नजर लगेलक अहाके
जे हमरासँ नजरि चोरौने छी
अहाक आशमे हम पहुना

हमर आँगनगी बतैए सुना-सुना
पहुना कतेक दिन आँगनगी बताएब अंगना
आब दया बैरी भेल पहुना....।

पागल पेमी

वसंतक मास मधुराएल अछि
भौरा मंजरपर गुंजन करैत अछि
महुआक फूलसँ रस टपकैत अछि
फागक मन्द हवा मन ललचाबैत अछि
चहु ओर चहकैत चिड़ै चुनमुन
फूलक सेजसँ धरती सजल अछि
ओसक कण मोती बनल अछि
मुदा हमरासँ हमर साजन बिगड़ल अछि
चिड़ै चुनमुन हमरा जगबैत अछि
चन्दाक चादनी बादलसँ खिलैत अछि
साजन बिनु हमर सुहाग उजड़ल अछि
जेना शराबी शराब पी कऽ पड़ल अछि
राति-दिन हमर मन घबराएल रहैत अछि
आशा हमर निराशामे बदलल अछि
साजन बिनु हमर मन पागल बनल अछि
पागल पेमी नालायक बनल अछि।

कोसीमे समाएल जिनगी
बालुक ढेरपर हमर गाम समाएल
कोसी पेटमे हम छी बिलाएल
कड़ोरो दिलक बनेने अछि फटेहाल
मैथिली छी हमर भाषाक पहिचान
मुदा,
कोसी बनल अछि विकासक बाि
मैथिलीक पोि अछि कोसीमे समाएल
पढ़वाक नै अछि मौका कोसी दैत अछि िखा
जिनगी बनल अछि हमर कंगाल
झौआ, पटेर, काश, खगरा हमरासँ करैए रगड़ा
बाल बच्चाक जिनगी बालुमे समाएल
की खाएब की पीअब सोचेत छी पचताइत
जखन खाएब पीअब नीक
तखन सोचबो करब नीक
अखन तँ नै अछि गाम घरक ठेकान
जान पहिचानसँ दूर रहे छी
ई कोसी हमर बनल अछि जंजाल
हमर भविष्य बालुपर बनल अछि बेकार
तैयौ नै अछि कोसीके दया
बाढ़ि-पानि अछि हमरा करैत हानि
गाम घरक ने कोनो ठेकान
कोसीमे घुमैत हमर जिनगी बनल अछि घुमन्तु
विसक जीव-जन्तु बीच बनल रहै छी रमनतु
हमर ने कोइ बाटैए दु:ख

सरकारो बनल अछि बेमुख
हम छी बेसहारा कोनो नै अछि सहारा
हम बाल-बच्चा संग बनल छी बेचारा।

1326 || विदेह सदेह:३४

हाइकू/ शेनर्यू/ टनका

भरल नदी
नाह खेबै खेबैया
पानि बहैत
बाढ़ि पानि भरल
केना पाण बचत।

मोर नचैत
मोरनी संगे-संग
बादल बुन
पेमक दृश्य दैत
मन हर्षित करै।
कारी बादल
बरखा बरसैत बून थिरैत
बिजली चमकैत राति-दिन झरैत।

आम रंगीला
स्वाद छै अलबेला
पीला रसीला
लालौन बिनुबिया
सभके ललचाबै।

लाल गुलाब

संगे काट लगल
र प गांसिँ
सभक श्वल बसै
भौराके ललचाबै।
पछताइ छी
पिपर चलैत
मौतक संग
नरको नश्व बास
केना करब आस।

टुटल खाट
सूतल छी चैनसँ
पहरा नश्व
करबट फेड़ैत
पेटकुश्राया दैत।

पाश्राक बुन
मोती सन चमकै
रितीपर
माइटसँ श्रालैत
नदी र प बनैत।

श्राड़ै चहकै
चुनमुन फुदकै

पंख खोइल
नव पि बनाबै
आजादीसँ भरमै।

गंगा भरल
अमृत सन जल
ध्मनगी दैत
अपने सेवकके
गोदमे बसाबैत।

बेटा-बेटीमे
नध्व कोनो अंतर
परेशानी की
नध्व लेब जंतर
ध्कए हएत अंतर

दूजक चाद
घीरे चढ़े अकास
ओध्वना ध्मखू
पुध्यामीक चादसँ
बेसी कर ध्वकास।

खेतक काज
राखै जगक मान
नै अपमान

खूब कमाउ नाम
ान-पान-सम्मान।

गाएक दूि
दही-गोत-गोबर
घी छै अमृत
अश्लाते पंचामृत
जे थबै बनै देव।

चैतक रौद
तपाबै माथ्ट-पाश्आ
पछ्या हवा
पकाबै चना-गहुम
बहारै ूिर-कण।

फूलक डाश्व
भौरा चढ़ै दू-चाश्व
गमकै बाग
वसन्ती हवा बहै
कोइली गाबै गीत।

कारी काजर
आँश्व देत सुखाय

कारी बादल
बरखासँ डुबाय
मुखरा देत अगाध।

सत्य वचन
अपन हुऐ हाथ
भले सम्मान
नहि छोड़ब बाट
दोसरक कल्याण।

झाड़ू बहारै
कुड़ा-कचड़ा दूरि
सत्य भगाबै
मन बसल मैल
पाप नै दिले पाथ।

दमकि शोर
पताल पसरल
वीरक यश
तीनू लोक पहुँचै
अदिसँ अद्भुत।

चौबीस घंटा
दिन राति बनैत

सात दिनक
सप्ताह बनैत छै
बारह मास वर्ष।

फूलक बाग
सिंचैत अछि माली
इन्द्र सिंचैत
धरती उपवन
अन उपजै खेत।

टुटल दिल
पेमसँ जुटैत छै
सूखल नदी
जलसँ भबैत छै
कोने आगू बढ़ै छै।

चहकै चिड़ै
वन-उपवनमे
गमकै फूल
वागमे झुमि-झुमि
देखि चान हँसैत।

नेना-भुटका खेलै गुड़िया खेल
पाछासँ मेल

जाँध्ध भेद भुध्ध
पढ़ै एकता पाठ।

पान मखान
मैथिलाक सम्मान
ािनक खान
जनकपुर ाम
मैथिलाके पणाम।

पढ़ैत सुग्गा
कहैत राम-नाम
पिंजड़ा बन्द
रहैत छै गुलाम
अछि संत समान।

साच बजैत
जग मारल जाय
झूठ बजै तँ
जगत पछ्ताय
नै छोड़ू साच वाणी।

नीमक गाछी
सूतल रही खाट
सपनैध्ध छी

चश्चतो पछताश्च
नदी तटक बाट।

दु:खक बात
नै कश्चयो केकरो
सुश्च हसँत
हाश्च करत मान
नै श्चलत सम्मान।

जीवन दैत
जल जीव जन्तुके
शीतल चाँद
चाँदनी श्चटकैत
शोभा छै रितीके।

आमक डाश्च
झुला झूलैत रा
कृष्ण पुकारै
संगे-संग झूलब
वृन्दावनक झूला।

पानक पात
मखानक पसाद

स्वर्गक बास
नदी तटक चास
नै होएत अशास।

माइक गोद
रितीके अछौना
फूलक सेज
सुख पाबै बेजोर
नै भेलै परलोक।

बासक वंशी
स्वर बजै मधुर
माया पसारै
स्वर छै अनमोल
सुनै सभ अभोर।

कारी काजर
मुखड़ा चमकारैत
कारी कोइली
मधुर गीत गबै
सभके ललचाबै।

चाँदनी राता
कहै मनक बात

प्यासल पेमी
प्यास बुझाबै राखि
शीतलसँ करै बात।

देव ि मसिँ
ऊपर माए-बाप
तीि कि खान
ि रती माता अछि
हिन्दुस्तान महान्।

मान घटै जँ
नित्य जाय सासुर
मान बढ़ै जँ
करै अतिथि सेवा
सेवासँ भेटै मेबा।

कालक मुँह
खुलल छै विशाल
ि मश: सभ
समए बचै नहि
कोय एहि चि सँ।

चमेली फूल

गमकै दिन-राति
गजरा बनि
देवौके नञि चढ़ै
नारी सजाबै केश।

कमल फूल
विराजै लक्ष्मीजी
सुख शान्ति दै
अन्न, धनसँ भरै
सभक छै कल्याण।

सावन मास
जलक बुन्न पड़ै
आसमानसँ
बेगक बाजा बजै
खन्ता डबरा भरै।

पानिक बुन
मोतीसँ महग छै
मोतीसँ नञि
मेटै भूखक रोग
पानि जिनगी दैत।

मैथिली भाषा
मौध सन मधुर

जे नहि पढ़ै
वो बाभनतौ लजाय
पबै पढ़ते मान।

मौि मखान
रेहु माछक खान
पानसँ मान
पाग सँ बढ़ै शान
मैथिलाके मैशान

आमक फल
मधुर रसदार
फलक राजा
सभके मन भावै
सभके ललचाबै।

सावन मास
झमझम फुहार
पेम बढ़ाबै
पेमीके ललचाबै
गोरीके तरसाबै।

मोनक बात

की कहब सजनी
समए नञि
की भेजब सनेस
छल ददकि क्लेश।

छलक रोग
नञि कोनो इलाज
पेमक भूख
नञि भेटै निसँ
नञि कोनो दबाइ।

चंचल मन
छैत घबराइत
मन डोलैत
नयन सुखदाय
पेमी कहै लजाय।

सोना कंगना
पैर पयजनियाँ
नाचै अंगना
घूमि घूमि तकैत
हमर सजनियाँ।

फूलक डारि

झूमि सनेश दैत
देशवासीके
सदा पसन्न रहुँ
देशक सेवा कर ।

देशक सेवा
माइक सेवा कर
भगनगी भक्ति
मिक्ति पालन छै
गरीबक कल्याण।

सूइत उठि
माए-बाप गुर के
छुऊ चरण
नित्य बन्दन कर
कृपा करत देव।

पढ़ि लिखि कऽ
बनु जानीसँ दानी
कर देशक
विकास कल्याणक
रक्खू ऊँच तिरंगा।

सभ अपन
पराया नहि कोइ
सूरज चाँद
सभके समझैत
एक समान देखैत।

राजा दुखित
पजा सभ दुखित
जौंआक दुख
दुखिया सँ छै बेसी
संसार अछि दु:खी।

सेवा करैत
पिपर चलैत
आगू बढ़ैत
झरना सन आगू
संघर्षें बढ़ैते।

खूनक दाग
छिपाय नहि पाबै
पापक भार
रिती नै उठाबै
सत्य करै से होय।

पात:क जल
पीबैत रहू श्रैात्य
टटका फल
खाऊ जीबैत िश्र
बनल रहु स्वस्ि।

रिक चका
उलश्च चलै बाट
चाक् चलै छै
ठामे ठाम नचैत
दुनू करै दू काम।

बच्चा बेदर
खेलैत संगे खेल
कखनु झगड़ा
कखनो करै मेल
पढ़ै छै पाठ एक।

श्चिलैत फूल
देखैत भौरा नाचै
रस श्चबैत
राश्चा श्चतबै संगै
पेमक बात करै।

1342 || विदेह सदेह:३४

श्चलक बात
की कहब सजनी
पेमक बाि
सभसँ मजबूत
तोड़लौ सँ नै टुटै।

खूनक दाग
सभसँ अछ पका
श्चटैत नञ्
कारी दागसँ भारी
बड़ पैघ बीमारी।

सच्चा इंसान
जान िमिईमान
उच्च ैश्चचाश्व
मानवक शृंगार
कायिकरै महान्।

सूयिरौद सँ
िरती तैप तैप
शुद होयत
सोना तपै आश्चसँ
िमिसँ तपै लोक।

मोछक मान
राखै छै घरवाली
सेवक करै
घरक रखवाली
गाए छै श्वतकारी।

दुजनि सािु
नौकर बेईमान
कपटी श्वि
ई तीनू छी शैतान
क्गमे लेत पाण।

खाना खजाना
जनाना पखानाके
पदामे राखू
जौ राखक बाहर
श्वख बाँश्व जाएत।

पीत नै जानै
ओछी जाँश्व, नीन नै
टुटल खाट
प्यास नै िबी घाट
सभ कहै छै बात।

बैल खीचैत
अछि काठक गाड़ी
मनुख खीचै
छै दुखियाक गाड़ी
की बनल लाचारी।

नीमक गाछ
करैत हवा साफ
दवा कऽ साि।

गंगा किनार
तीि जेना िम
पवि स्नान।
असाधि सेवा
देव मिसँ पैघ
मिर सेवा।

सभ दिन नै
होइत छै समान
राजा आ रंक।

अमृत पान
जिनगी दैत अछि
अमर दान।

मोरक पंख
चमकै चटक्कली
पेम जगाबै।

िनी बनब
सभके इच्छा अछ्छ
दीन क्कएक नै।

रामदेव पसाद मण्डल “झार दार”, गाम- रसुआर, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल। मैथिलीक भिखारी ठाकुर नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक प्रबल जनकवि ।

अपन गप, पाति, गीत, झार , महाझार (हमरा बिनु जगत सुना छै)

अपन गप (माए केर स्मृतिमे)

पेरणा-
माए-बाबूक संस्कारसँ पेरित भेलै हमरा ई उदेश्य।
दया-पेम दुनियामे बाँटि कऽ मेटा दिऔ दारुण-क्लेश।।

उदेश्य-

मात्र उदेश्य छै एते हमर, घर-घरमे होइ शान्ति-अमन। सुख भरल होइ जीव-जगतके, हरा-भरा होइ सभक चमन।।

सहयोग-
रहल नै पाछू ऋतु कुमारी, संग लगा नागेन्र कुमार झा । मण्डल

उमेशजी बहा पसीना, संग लगा गजेन्र ठाकुर। पती-बच्चा लहू जरा कऽ, सहयोगी बनलै भरपुर।।

गुर- पञ्जल गुर माए, जग-जाञ्जर छै दोसरमे सौसे संसार। सुदुर दशा छै गुर आश्चरी, ओ.के. रामदेव झार दार।

पानि

हे जगतके पालक शृजक, हे दुखमाया केर संघारी।
अहासँ हमर अतबे पानि, हम बअ सत् वरानिरी।।

बहुत कऽ देखाऐ पछले अहा, कआये हमरो ध्यऽ जान।
काम करए एहन हमर तन, जगमे होइ सबहक कल्याण।।

कर आदेशात हमरा तनके, काम करए जनहतकारी।
रहए अटल सत् पिपर हरदम, करए नै चचलात दुख भारी।।

सुखमे हम नै होइ मतबाला, हुअए नै हमरा दुखक गम।
दल भरल रहए सेवा भावसँ, जते करी तते लगए कम।।

मट जाए अजान अंिरा, दीप जलए दलमे सुजान।
ब्यापए ने हमरा कुमती, पैदा केलक जकड़ा अजान।।

होइ छै जगमे की मानवता, नैआकताक दअ जान।
दया पेमक बना कऽ सागर, आत्य करब जग संग स्नान।।

कर कृपा जगपर अव्यक्ता, मेटा दऔ दुआयाक रोग।
जाइत िरमसँ मुक्त होइ मानव, लोकक भीतर बसल होइ लोक।।

मटए मूलसँ सभक गरीबी, रहए नै भुखल कयो इंशान।
होइ उतिन दबल कुचललके, कुछ पकाशु एहन जान।।

हे ॑आदेशक सारे जगतके, कुछ ॑आदेसु एहन काम।
िरतीपर जे अमर करा दइ, उचा कऽ दइ जगमे नाम।।

झंडा गीत

झंडा तीरंगा सभसँ चंगा, छै दुनियामे ई बेमिशाल।
एकर ऊँचाइ हीमगिरी सन, छुइ नै सकल कियो एकर भाल।।
अइमे सागरक गहराइ, पाइब नै सकल कियो एकर पार।
करतै जे कियो एहन ढिठाइ, निश्चित हेतै तेकर हार।।
हरा रंग छै जीवन हम्मर, कऽ रहलै झंडा एलान।
हरा हमर छै बाग बगीचा, हरा हमर छै खेत खरिहान।।
रंग केशरिया गजब के पुरिया, ई खोललनि रणवाकुड़ा वीर।
देखलनि नै किछु आगू-पाछू, रँइग देलनि अपन सीना चीर।।
शेत रंग तँ दयावान छै, ई सच्चाइक पहिचान।
नीत िरम िीरज के उपमा, अहीसँ छै भारतक शान।।
चि मिखबै छै हम सभके, ठहर नै सुनि मिठी बात।
राह कठिन होइ चाहे कतनो, बढ़ु विकासक पिपर दिन राति।।
सत्यमेव जयतेक अिछै, सत्यक होइ छै हरदम जीत।
सभकोइ पकर सत्यक डोरी, एकरा मानू अपन मीत।।
लालच नै होइ मनमे ओहन सीमा पार होइ अप्पन राज।
रहै अछुता अप्पन सीमा, तकरा खातिर कसु आवाज।।
शारनाथिक अशोक स्तम्भसँ, लेलनि चिन्दी तीन बाघ निशान।
विपुल शेर अहा हिन्द निवासी, भरल रहै मन एतए शान।।
सिका नोट सरकारी पुस्तक, दस्तावेजपर शोभित निशान।
समृद छै पभुत्व हमर ई, सुना रहल दुनियाक गाण।।
दाया बैल और वाया घोड़ा, बीच विराजैत चि निशान।
हाि मिला दुनू गाबै छै, जय जय जवान और जय जय किसान।।
दया िरमके ऐ िरतीपर, लेलनि बुद गाि अकार।

गंगा यमुना कृष्णा कॉवेरी, बहै छै जतए पावन िर।।
जन-जनमे छै सच्ची शि, जनता सेवक जतए नरेश।
हजरत, तुलसी बालश्मकीके, गुइन्ज रहल घर घर अपदेश।।
श्मनकर चरण पखारै सागर, हीमश्मरी जेकर ैश्मरमौर।
हृदैमे जकड़ा पावण गंगा, जलै दीप सुजानके और जागु-जागु बाबू।।

अपन देश

अपन देश अपन देश, अपन देश मिथिला देश।
राजा जनकके ऐ रितीपर, रहै नै लेश क्लेश।
अपन..................।

पसरल एतएसँ ज्ञान जगतमे, छै पगट भगवान भगतमे।
हर नारी अतए पार्वती छै, हर नर अतए महेश।
अपन..................।

पग-पगपर अतए धार्मिक छै, झुठ नै अतए सत्यक नाम छै।
पर उपकारक खातिर मानव, सहै छै भारी क्लेश।
अपन..................।

जगतरनी जतए गंगा िरा, ज्योतिष जाग केर जतए उज्यारा।
हजरत तुलसी बाल्मीकक गुँथल रहल उपदेश।
अपन..................।

जनतामे जतए भरल छै एकता, भेद मुक्त छै अत केर जनता।
माला तोड़ि कऽ जाति मिक्कि, सभ कोइ देलकै फेक।
अपन..................।

सेवा केर जतए परमपरा छै, हर मानव लेने हाि खड़ा छै।
घर आएल मेहमानमे देखै, अल्ला ईषू गणेश।
अपन..................।

खेत बाग हरियाली भरल छै, अनसँ सभ भण्डार भरल छै।
बरदके घंटीसँ चकल होय, जतए केर पुरा देश।
अपन..................।

ऊँच जतए मेहनतक मान छै, खुन पसीना सभक शान छै।
हाि नै फैले ककरो आगू, घर होइ की पदेश।
अपन..................।

ई जननी छै शूर वीर केर, सागरसँ गहीर ीर केर
मतृभुमि केर रक्त खाितर, गला सजल छै अनेक।
अपन..................।
सभ होइ जतए केर जानी ्यानी, सभ होइ जतए सदगुन खजानी।
मंदिर, मस्जिद, गुर दरासँ बटै अमन संदेश।
अपन..................।
ूमि जतए सेवा केर मचल होइ, भला अइसँ कियो कोना बचल होइ
सदियोसँ जतए रीत पुरान, जनता सेवक नरेश।
अपन..................।

जतए होइ एकमती आइन जानसँ, झुकै नै बस टुटै शानसँ।
आष्ठा, मयादा मानवता, जकड़ा लेल होइ नेक।
अपन..................।

झार -

डूबल अछि मन्द अजान के सागर, तथ्य रहल अछि लोभ बुखार।

शाशको तँ बंधल अछि नयन नै देखाबै, के करतै एकर उपचार।।

झार - फेल कऽ गेल ऐपर सभटा, एण्टीबायोटिक िरम-इमन। आस्था-नैतिकता-मर्यादा, दया मानवता नीक नहि जान।।

गीत-

मानव मारै छै मानवताके

चढ़ गेल छै अजान यौ

सभा लगा कऽ सभ किछु कयो सोचू

देशक सभ प्रदान यौ सभ बनल छै पैसा रोगी,

अन्धविश्वास, कुरीतक जोगी

सिर चढ़ल छै भष्ट आचरण, दुख चढ़ल परवान यौ।

सभा......।

जनता राजा सभ अन्हरेलै

न्याय विकासी काम बनरेलै

साधु संत बनि कऽ ठक लुटेरा

लुटै शान्ति जान यौ।

सभा......।

अहा बिना के ई दुख हरतै

अहीसँ ई सभ दानव मरतै

कलमके एक बेर फेर बनाबू

रामक तीर कमान यौ।
सभा......।

झार -
सत् कर्मसँ ऐ दुनियामे, शान्तिक संग सुख छै कुल।
असत् संग संगति करबै तँ, जीवन गुजरत बनि कऽ शूल।।

गीत- सत् मे सदा अटल रहू बाबू।
सतक सुखमे देर छै।।
असत् अजान नरक केर भागी।
ई जीवन अन्हरि छै।।

जीवन डगरमे सत् कर सँगति
जतै नै पल सतसँ वंचित
छोड़ि असत् जे सतमे जीबए
से दुनियामे शेर छै
असत्.....................।

असत् छोड़ि जे सत् नै धरै छै
दुक्खक घर नरकमे परै छै
सत छोड़ि असत् मे जीबए
तकरा तँ दुख ढेड़ छै
असत्...................।

सत डगरमे फुले-फूल छै
डगर असत् मे भरल शूल छै
जे परल अजान अंिरा
ई बुझैमे फेर छै
असत्................।

झार - जनता बनू अयोि्यावासी, भाइचाराक पढ़ कऽ पाठ। गुण कऽ पेम दयाक डोरी, बन्हू सभ मानवक गाठ।।

गीत-
हिन्दु-मुस्लिम सिक्ख-इसाइ,
एके गाछक सभ फूल यौ। एके पकृति सभके रचलकै,
दू बुझनाइ छी भूल यौ।

जाति िमिक सीमा तोर
मानवसँ मानवके जोर
जब एकटामे सभ िमल जुड़बै
देश हेतै मृदुल यौ
एके...............।

जगत गुरवार सभ रचना केलकै
मेल एकताक मंतर देलकै
जन जोर जन फोर बैनक
सभके चटाबै िल यौ

एके..........।

झुठ-फुसक आइर बनल छै
अपनो भैया गैर बनल छै
अक्रि अनि लिगा कऽ
देशके भोकै छी शूल यौ
एके.........।

झार - बनू एक सभ भेद भुला कऽ, नारा सबहक यएह होइ एक।
दया-पेम जनसेवा जका, काज कर सभ नीक नेक।।

गीत- नेता अफसर मौज करै छै।
शासक आँखिमे झूट कऽ छौर।।
जनता नै एकता बनबै छै।
तँए चाटै छै मामक घैड़।।

एकताके जौ नै अपनेबै
जीवन भरि सुख लऽ सपनेबै
लुच्चा-लम्पट खुआ कऽ खाइ छै
नीचा-ऊपर सभ खमहौर
जन.......।

अपने पेट लऽ सभ बेहाल छै

तँए तँ देशक एहन हाल छै
माि औपचाश्वक राज चलै छै
श्वछया खाली लै छै घमहौर
जन............।

एकता बनैले सहए पड़ै छै
घटो लगा कऽ बहए पड़ै छै
अपन गलतपर लहए पड़ै छै
जलै छै खुन पश्वना और
जनता.....।
जन.........।

झार - जइ घरमे होइ नारी पूजा, ओ घर होइ छै स्वगिसमान। ओइ घरके तँ नरके मानू, जतए होइ नारीक अपमान।।
गीत- परबस श्वनबै छै अखनो
श्वमिला देशक नारी यौ
तँए फाटल छै साड़ी यौ ना

नारी कोना कऽ हेतै सख्त
कोइ नै दइ छै कश्वनयो वक्त
दुर हेतै कोना कऽ
अबला के लाचारी यौ
तँए......।

गाम छै अखनो पुरष पािन,

नारी बनल छै चुसक आम।
चुप रहि कऽ सहै छै,
पुरुषक अत्याचारी यौ।
तँए.....।

नारी नेतो जौ बनै छै,
कुसी पुरुष ओकर लै छै।
कानुन कसै नै छै राजा,
राजक छी बेमारी यौ।
तँए.....।

नारी सीता रानी अंश,
पुरुष बनल छै रावण कंश।
फेर कोना कऽ चलतै,
ई घर दुनियादारी यौ। तँए......।

झार -
पूजा-पाठक सता दऽ कऽ, कऽ रहलै सभ मानव भूल।
छोड़ि अपना कर्तव्य-कर्मकेँ मंदिर दौड़ए लऽ कऽ फूल।।
गीत-
देखियौ यौ सभ बाबू भैया,
ई सभ की देखाइ छै।

जान बिना ई अल्हर मानव,
सुखलेमे नहाइ छै।

दल बनेलकै सभ ठकपंथी,
एकटाके देने छै महन्थी।
अन पाबि की खेतै बाबा,
दछिएमे नहाइ छै।
जान.... ।

मंदिरमे खुब चढ़बु चढ़ाबा,
नि पुतके खुब हेतै बढ़ाबा।
ठकपंथीके फेरमे मानव,
पढ़ने ई पढ़ाइ छै।
जान..... ।

मॉगनेसँ जब देवता दैइतै,
बाँझि नि आपुत कोइ किए रखतै।
अंधविशासकमे अखनो मानव,
जंगलमे बौआइ छै।
जान.... ।

झार -
जखन ककयो काट चुभाबए, ओकरा लेल अहा फेकू फूल। अहाक

फूलके फूले भ्मलतै, ओकरा भेटतै शूल-भ्रिशुल।।
गीत-
मेल एकता बडड सुख दइ छै,
गाबै वेद-पुराण यौ।
सभ भाइमे जौ एकता रह्मतै,
बम-बम रह्मतै मकान यौ।।

छोड़्ह ध्द्रयौ जाध्मा पाध्माक झगड़ा,
ध्मायाध्मा ध्द्रयौ सम्पदाइक रगड़ा।
कंासँ कंाके जोड़्ह कऽ,
रोपु ध्यकाशी ान यौ।
सभ..........।

कुवुध्द्रमे जौ ओझरेबै, कोना दु:खक गुत्ी सोझरेबै।
भुख-गरीबी रोग अध्माक्र,
कोना कऽ हेतै ध्मादान यौ।
सभ..........।

राष्रध्मत लऽ सबध्कयो सोचु,
एकता जलसँ एकरा ध्मचु
देश जौ संकटमे फसेबै,
बचतै नै ककरो शान यौ।
सभ..........।

झार - दात तोहर छौ इज्जत रक्क, श्कयो मवाली पकड़ौ हाि।
मार चपा दे फूल बश्वासी, दात रहओ श्कछु मासुक साि।।
गीत- हम श्मालानी श्मश्िला के नारी,
रहबै नै कमजोड़ यौ।
नव डगर अपनेसँ गढ़बै,
िरबै श्वाक्त के डोर यौ।

हक हमर जे आब श्कयो श्छनतै,
अपना लऽ दु:ख अपने श्कनतै।
आब नै नारी रहब अनारी,
बनबै सख्त कठोर यौ।
नव...........।

आब नै सहबै हम दुदशिा,
करबै नै आब ककरो आशा
तोश्ब फेकबै जंश्मर गुलामी,
चाहे लगतै जे जोड़ यौ।
नव...........।

सभ नारीमे एकता बनेबै,
नारी ससख्ती सभके जनेबै
जे श्कयो आब हमरा सतेतै,
झुटका दऽ मलबै ठोर यौ।
नव...........।

झार - जरए ने थ्द्रऔ कोनो प्लोथ्गिन, ऐसँ उत्पन होइ छै जहर।
जौ ऐसँ अहा बाज नै आएब, पकृथ्ता ढाएत भारी कहर।।
गीत- जागू बाबू आबू आगू
जीयापर कर थ्वचार यौ
कोना जीयब अइ पदूषणमे
शृजनहार बेमार यौ।

भू जल वायु घ्वथ्ना पदूषण
दुख दुथ्नयामे अपार यौ।
कोना बँचब ऐ काल गालसँ
सभ थ्मल कर थ्वचार यौ।

थ्वजानक ई देन पदूषण बथ्न
घर घुसल चुहार यौ।
बाघ बथ्न ई मुँह बौने अथ्छ
दुैथ्नया बनल थ्नकार यौ।

इंजन हो पूरा कंडीसन
िआँ नै छोड़ै बेकार यौ।
कर थ्खयाल थ्कछु अथ्ला थ्पढ़ी
कोना रचत संसार यौ।

होयत कोना दुनियामे पावन
धरतीपर नर नारि यौ
जगत पावनि गंगा मैया,
खुद शुद्धिके लेल खाइर यौ।

झार - दया कर हे वीणापानी, मानवमे किछु बुद्धि औ जान। भटकि गेल ई अपन रास्ता, भाइयो लगै छै शत्रु समान।।
गीत- सभपर छै अजानक छाया
सतसँ भेलै दूर हौ।
अपने भाएके लहु चाटै छै
बनि कऽ मनुषा सूर हौ।
अपने.......।

जाति धर्म मानवता भेदी
लोग बनल सभ अही केर कैदी
किछु आशामे जड़ै ई जनता
बनि गेल छह सभ भीड़ हौ।
अपने.......।

िमिइमानसँ लोक छै बंश्चित
काम िोि आओर लोभ छे संश्चित
श्चाष्ठा नीश्चा मानवताके, जरा तपै छै घूर हौ
अपने.......।

अंि श्वशास छै सभके िएने
कुरीश्चासँ घर छै भरने
अजानक औश्चामे जड़लै
सबहक करम कपुर हौ।
अपने.......।

झार - नर नेता होइ आश्क होइ नारी, पदपर वएह अश्छ शोभाइमान।
लालच छोश्ड़ जनसेवा खातीर, न्याय केर खातीर करैए काम।।
गीत- लोभी लालची राज करै छै
फुहर गाल बजाबै छै
लुश्ट-लुश्ट भोली जनताके
अप्पन घर सजाबै छै।

पग-पग पसरल हेरा फेरी
काम छै काला मुँह छै गोरी
काला िनपर उजड़ा पॉश्चास।
ििुन जोश्ड़ सौ लगाबै छै।
लूश्ट..........।

ककरा कहबै नीक छै बाबू
बोरा लटकल छै सबहक आगू
के करतै जनता केर सेवा
दुर-दुर तक नै देखाइ छै।
लूश्च..........।

राजकमी छै लोभ लहरमे
जनता मरै छै लूश्च कहरमे
राजा पश्चरने चदरा चश्मा
श्चकछो नै एकरा देखाइ छै।
लूश्च..........।

झार - की कर हम सेवा अहाक, घर खाली श्चकछु छै नै नि।
बैश्च श्चबछा दौ अहाक नीचा, शदा-रंजीत अपन मन।।

गीत-
श्चमथिला रश्च गेल बश्च ई श्चमिला
दुक्खक भरल गोदाम यौ
रोऐ छै श्चमथिला केर रिती
लऽ लऽ जनक जीक नाम यौ।

आइ हर घरमे सीता रोऐ छै
राइत-राइत भश्च नै जनक सुतै छै

कतए सँ एतै दहेजक पैसा
हेतै केना कन्यादान यौ।
रोऐ.........।

दया ि रम के गाछ सुखाइ छै
श्राष्ठा नीश्वा हाट श्वकाइ छै
इमानक कोनो मोल नै रहलै
सेवा भेलै लोभक गुलाम यौ
रोऐ.........।

जनता श्वत लऽ कोइ लड़ै छै
अपने पेट लऽ सभ कोइ मरै छै
कश्वयो देखतै गरीब आजादी
हेतै कोना नवका श्वहान यौ
रोऐ.........।

झार -
ि रम-इमान और श्राष्ठा केर बीच, केकर भेल चश्वि ै श्वामाण। चाहे केतनो जोर लगाबू, शक्श्वा-संपन या ि नवान।।
गीत- देश्वयौ यौ सभ बाबू भैया
हमरा ई की देखाइ छै

गटा पकड़ने लोभ लोकके
नरकमे लेने जाइ छै।
लोभे करबै छै सभ पाप
चाहे जते छै श्रिश्चि ताप
ई िऽ लेलकै जकड़ा बाबू
से दुखमे बौआइ छै
गटा.........।

लोभ सभके करै छै अंि
चाहे छै कतनो कश्चल बन्दा
नीत िरम श्चाष्ठा मयादा
श्चकछौ नै सुझाइ छै
गटा.........।

जकड़ा चढ़लै लोभक पाप
से नै बुझै छै माए-बाप
दुश्चाया दारी के बताबए
भाइयो नै सोहाइ छै।
गटा..........।

झार - मुल्ला-साि-पण्श्चत-जानी, के नै छै पैसा केर भक्त। पाछू एकर सारा जमाना, कऽ रहल छै तपस्या शख्त।।

गीत-

पढ़ै श्लाख कऽ सभ टेढ़ भेल छै
जान थ्कछो नै बुझै छै
जइसँ पॉकेट बम-बम रहतै
तनै मा सुझै छै।
पैसे लऽ थ्वदा पढ़ै छै
पैसे लऽ मंथ्दर गढ़ै छै
पैसे लऽ सभ जप-तप हइ छै
पैसे लऽ देवतो पुजै छै।
जइसँ............।

पैसेसँ राजबदी चलै छै
पैसेसँ आश्वाष श्मलै छै
वेदो मंत्र पैसेसँ तौले छै
सभ अजानमे जुझै छै।
जइ..........।

भुश्ला गेलै सेवा के रीती
पैसेमे सभके छै पीश्ला
नीत रिम इमान जानके
नै थ्कछो कोइ बुझै छै।
जइ...........।

झार - वन-झील-नदी आ वनबासी, पहाड़-पठार संग रेगिस्तान। कर सुरक्षा पयावरणक, ऐसँ देश बनत निवान।।

गीत-

केमरासँ तस्वीर बनेबै
मिथिला मैथिल परिवार केर।
तकरा देखेबै पटना जा कऽ
विकास पुत नीतिश कुमारके।

फोटो बनेबै खेत अछि सुखाएत
सिंचाइ पानि बिजलीसँ वंचित।
और बनेबै बाटल खेतमे
दूर-दूर फाटल दरार केर।
तकरा.........।

फोटो बनेबै टुटल घरक
उखरहा एकताके जोड़ि कऽ।
भूख गरीबी रोग अशिक्षा
आगू खड़ा पहारके।
तकरा.........।

अंधिप्रशासक महल देखेबै
दहेज कुरीतक जहल देखेबै।
फोटो बनेबै छुपल लुटेरा

ढौंगी ढोग ढपारक।
तकरा.........।

झार - पश्चर माला मानवताक, देश थ्रकासक लगा थ्रअौ होड़। अहा बथ्रा जाउ चान गगन केर, थ्राहारै जनता बथ्रा चकौर।।

गीत-
थ्राल कऽ सजेबै राज पंचायती
मेल एकता केर फूलसँ।
भूख गरीबी रोग अथ्राक्ा
तब ने थ्राटतै मूलसँ।

युवा वर्ग आिबू सभ जागू
न्याय थ्रकाशी फूल थ्रखलाबू।
थ्राक्ाके नै गाथ्र सुनाबू
लोभ लालच केर फूलसँ।
भूख..........।

न्याय थ्रअबै गामे अन्दर
लोग नै बनतै कोटर्मि बन्दर।
सभ थ्राल झगरा आथ्रा बुतेबै
समता मूलक शूलसँ।
भूख..........।

सही सही राजकोष चलेबै

घर-घर शान्क्षि दीप जरेबै।
थ्यकास खोथ्यि रितीसँ श्वकालबै
शंकर केर थ्रिशूलसँ।
भूख..........।

झार - भौथ्य गेला अंगेज अकेला, छोथ्य कऽ पाछू ढेरो जौथ्य॥
कर रंगदारी वसुल रहल अछ्छि, माथ्य माथ्य कऽ सभके लाथ्य॥

गीत-
लोभी लालची कामी ि ि।
भूथ्य भरल दूर-दूर हौ॥
बाजह हौ काका केना कऽ हेतह।
देशक गरीबी दूर हौ॥

हाि कड़ोरो काम जे कैरतै।
सोनसँ खजाना भैरतै॥
घर बैसल घरघुसरा बैथ्य कऽ।
कला कौशल मजदूर हौ॥
बाजह.........।

व्यि बैसल मानव संसाि न।
हाि पैर मेहदी आँथ्यिमे आजन॥
भथ्य थ्द्दिन चौकपर तास खेलै छै।

और मचबै छै हुर हौ॥
बाजह.........।

सी.ओ, बी.डी.ओ, सरपँच मुखिया।
िरतीपर सभसँ ई दुखिया॥
फँड कोना सभ हम्मर हेतै।
हरदम भाजै भूर हौ॥
बाजह.........।

शान्ति सभके दँात काटै छै।
एक दोसर लऽ दुख बाटै छै॥
अपने भायके लहु चाटै छै।
बनि कऽ महिषासूर हौ॥
बाजह.........।

काम-ोि और लोभ भरल छै।
आगि अजानमे सभ जड़ल छै॥
आम जानि कऽ सभ रोपै छै।
गजड़ा काट बबुर हौ।।
बाजह.........।

सुस्त परल छै राजक कमी।
सेवामे बतै छै नमी॥
सत् कमक्रि सभकोई छोड़ि कऽ

सुखसँ भेलै दूर हौ।।
बाजह.........।

राजकोषपर नजर गरल छै।
हथियाबक लोभ भरल छै।।
हम्मर की कतर्व्यि बनै छै।
जान श्वुनकासँ दूर हौ॥
बाजह.........।

जाश्वा िरम मानवता भेदी।
लोग बनल सभ अही केर कैदी॥
िरम आथामे जश्कड़ ई जनता।
बश्वा गेल छह सभ िुड़ हौ।।
बाजह.........।

िरम इमानसँ लोग छै वंश्वत।
काम िोि और लोभ छै संश्वत।।
श्वाष्ठा नीश्वा मानवताके।
जड़ा तापल केर घुर हौ।।
बाजह.........।

अन्िश्वशास छै सभके िरने।
कुश्वतीसँ घर छै भरने।।
अजानक अग्श्वामे जड़लै।
सबहक करम कपुर हौ।।

बाजह.........।

वोटक खौश्चार आजुक नेता।
मारै छै चानी केर जूता॥
कुछ पापी तँ वोट बेच कऽ।
खाश्चि खसल छै जरर हौ।।
बाजह.........।

गप्पे-गप्पमे लफड़ा बढ़लै।
शाशक श्चसरपर टेन्शन चढ़लै।।
अलुल-जलुलसँ लश्च्ङ़ ई शाषक।
भेलह चकना चूर हौ।।
बाजह.........।

मुँह देखैल पंचैती होई छै।
घूस पंच भगवानो खाइ छै।।
आब ककड़ापर आश करतै।
गामक लोग मजबूर हौ।।
बाजह.........।

जानले नै कोइ स्कूल जाइ छै।
नौकड़ी कऽ ई जश्च्ङ़ देखाइ छै।।
श्चाकामे सभ कोई खोजै छै।
पाइ अड़श्च्म कऽ लुश्च हौ॥

बाजह.........।

झार - भारत हो या ओइसँ बाहर, सत् जन कऽ रहलै स्वीकार। मानवके छै दू आिर, सादा जीवन ऊँच श्चचार।।
गीत- दया िरम श्चाष्ठा मानवता
जान भरल भरपुर गै
बोल गै दैया कोना नै हेतै
देशक गरीबी दूर गै।

रोजगारक आब अवसर बढ़तै भूखल नै सबहक पेट भरतै नेता जनश्चत बोतल पीब कऽ
रहतै हरदम चूर गै
बोल गै..........।

शम सािनक कहा कमी छै खश्चाज भरल हर जगह जमीन छै लोहा-अवरक ताम्बा-कोयला खान भरल भरपुर गै।
बोल गै..........।
सत् कमिसभ श्चकयो अपनेतै सत्यक रोटी हरदम खेतै सत्यक खातीर जगसँ लड़तै रण बा कुड़ा वीर गै बोल गै..........।
श्चन्सा छोश्च सभ शाश्चा िरतै वसुिश्च कुटुमकम गढ़तै जग अमन केर पोिी पढ़तै साझ-भोर-दुपहर गै बोल गै..........।
काम-िोि और लोभ भगेतै घर-घर शाश्चा दीप जरेतै आब नै राज अजानक रहतै िरतीपर दूर-दूर गै बोल गै..........।

सेवाके सभ पूजा बुझतै असत् छुटै केर युक्ति सुझतै
असत् छोड़ि सभ सुख अपनेतै आब बेसी नै दूर गै बोल गै..........।

झार दारक सभ झार पढ़तै
सत् अहिंसा मनमे भरतै लोभ लालचक हीनता जरा कऽ
हिंसासँ रहतै दूर गै बोल गै..........।
धिरम इमान सभ ठकियो अपनेतै मानवता केर मंठ बनेतै जाति धिरमसँ
पाति भरेतै देसक लोक जरूर गै बोल गै..........।
लोभ लालच आब जानसँ भगतै सेवा लऽ सबहक मन जगतै मानवता
नै मुँह चोरेतै आब बनि मजबूर गै बोल गै..........।
अन्धिविसबासमे कोइ ने पड़तै कुरीतिके बाहर करतै जान-अजानक
पोथि पढ़ि कऽ
कमकि बान्हतै धिर गै बोल गै..........।
लोभमे आब नै वोटके बेचतै राष्ट्र हित लऽ बटम दबेतै वोट बेचि कऽ
पाप करै छी सोचतै सभ जरूर गै बोल गै..........।
गाथिक उपदेश भरल छै ऋषि-मुनिसँ वेद जरल छै गौतम केर धिरतीसँ
टपतै मानवताक नूर गै बोल गै..........।
झार पढ़ि सभ लोभ भगेतै दादाबला दाउ लगेतै न्यायक खातीर दाउ
चढ़ेतै अपन जान जरूर गै बोल गै..........।
आब नै रहतै मानव दानव जानसँ रकतै दुखक कानब शिक्षा केर
आब माने बुझतै जान-कमजिरूर गै बोल गै..........।

झार - दुनिया भरिक सुख होइ हमरा, दुख रहै सदिखन हमरासँ दूर।

इच्छा-देष छी दुखक सागर, ऐमे नै डूबू मर हजूर।।
गीत- बाबू करम कलमसँ लिखू अपन भाग यौ पाबू सत्यक साग यौ ना
कर्मगति छै भारी गहन सत्यके िर अपना मन। बाबू सत्य पकड़ि कऽ
बमबम रहतै बाग यौ पाबू सत्यक.........।
कमे दइ छै घर और घरनी गंगामि या नदी बैतरनी डुबा देतै की करतै
ऊँचा मरदक पाग यौ
पाबू सत्यक......।
कमेसँ छै बेटा-बेटी करते सेवा कि रितै चोटी कुलके ऊँच करतै
आकि लगेतै दाग यौ
पाबू सत्यक........।
बचू असत्यक ई चपेटसँ
लिअ तनमे सट लपेटसँ तनमे लगा नै सकतै कलजुग कोनो दाग यौ
पाबू सत्यक.........।

झार - कर्तव्यमे अधिकार जुड़ल छै, एकरे अपना तनमे जोड़। व्यर्था कर नै अधिकारक, चलतै बात कऽ कऽ सोर।।
गीत- ऊँच करबै अपना देशक नाम गै बहिना सातो करतब करबै परमान गै बहिना। करबै सभ संविधानिक आदर
राष्र पतीकक सम्मान सादर एकता चढ़ा रखबै परमान गै बहिना
तीनू करतब करबै परमान गै बहिना
ऊँचा करबै...........।
देशपर एतै जब कोनो संकट लगा देबै सहयोगक जमगघट राष्र

सेवा पञ्चला होएते काम गै बञ्ञ्ञाया चाञ्चम करतब करबै परमान गै बञ्ञ्ञाया ऊँचा करबै......।

सभके बुझबै सम बराबर भाषा-मजहब जाञ्चा बराबर नारीक ऊँचा करबै मान गै बञ्ञ्ञाया पाचम करतब करबै परमान गै बञ्ञ्ञाया ऊँचा करबै.......।
नि सरकारी रक्ञ करबै छोञ्छ ञ्ञसा शाञ्चाके रिबै अहीसँ करबै समस्याक ञ्ञादान गै बञ्ञ्ञाया छअम करतब करबै परमान गै बञ्ञ्ञाया ऊँचा करबै........।
वन-कील-नदी और वनवासी पयावरण छी रक्ञ राशी अहीसँ हेतै सबहक कल्याण गै बञ्ञ्ञाया सातम करतब करबै परमान गै बञ्ञ्ञाया ऊँचा करबै.........।

झार - पेड़ पौि छी जीवन रक्क, अही केर भीतर सबहक पाण।
कवो-पोटीन-वसाञ्चवटामीन, भरलञ्चा और खञ्ञाज भगवान।।
गीत- बौआ पाच गाछ सभ साल लगा रौ एकरा सन दोसर नै सगा रौ
ई देतौ तोरा शीतल छाया फल देतौ पोसैले काया मैया रितीके अहीसँ सजा रौ एकरा सन........।
जरना देतौ बनबैले खाना फञ्ञाचिर देतौ ञ्चयञ्चि नाना दबाइ बना कऽ दरद भगा रौ एकरा सन......।
भगबै छै वायु पदुषण
बञ्चा खड़ा छै जे खड़दुषण पयावरण पदुषण भगा रौ एकरा सन........।

वायु वेगके कम करै छै जक्षसँ जमीन जकश्च पकड़ै छै नै तँ सभ माश्च जेतौ दहा रौ एकरा सन.........।
बादलके आकषणि करै छै भू-मण्डलके जलसँ भरै छै उठैत खेतमे फसल लहलहा रौ एकरा सन.........।

झार - सा िवाद हे देशक िरती, सा िवाद हे सभ जनता। सा िवाद हे ताज देशक केर, सा िवाद सम्पभुता।।
गीत- कोसी-बलान कमला आँचरपर
बसल ई सुन्दर गाम यौ नि-नि श्रथिला नि-नि मैथिल नि-नि जनकपुर िमि यौ।
ताल तलैया भरल सरोवर वन-बागमे शोभा दोबर फल-फूलसँ लदल गाछमे भोम्हरा करै छै गाण यौ नि-नि...........।
हीर श्वर केर जननी िरती जनम-जात पावन सतवती केतौ ने एहेन शीतल छाया िरतीपर कोनोठाम यौ नि-नि.........।
चलह देखए कोसी महासेतु
श्चैरमली उतरब ऐ हेतु केहेन बनेलकै राजक राजा श्रथिलाक गौरव शान यौ नि-नि............।

झार - सबल रहै श्रथिला केर िरती, सबल रहै देशक जनता।।
सबल रहै ताज श्रथिला केर, सबल रहै सम्पभुता।।

गीत- हम्मर श्रथिला हम सभ मैथिल छी दुश्नयामे सोर यौ नि-नि श्रथिला नि-नि मैथिली जनकपुर जगमे बेजोर यौ।

राज जनकक शान भरल छै शदापक गाण भरल छै आष्ठा नीक्ष जान भरल छै अंग-अंग पोरे-पोर यौ िन-िन थ्राधिला............... ।
ताल तलैया भरल सरोवर वन-उपवनमे शोभा सुन्दर नीत नव नूतन फूल ख्रलै छै भोम्हरा करै छै सोर यौ िन-िन थ्राधिला....... ।
जग जाझ्रर छै िमि श्रहेसर जागेसर संग और थ्रदेसर मदनेसर कुसेसर नामक बाजए डंका जोर-जोर यौ
िन-िन थ्राधिला....... ।

झार - जनता रोबै सुखल रोटी, घी मश्राादा अफसर नेता।। देसक ई दसतूर बश्रा गेल, बहए बरद आ हकमए कुता।।

गीत- कते सूतब यौ युवा श्रहारी जागैक मौसम आइ छै लुच्चा-लम्पट चोर-उच्चका देसके लुटने जाइ छै।
जेकरे श्रललै कुंजी-ताला
बश्रा गेलै हाि मतबाला टाग तर थ्रप्पल भोली जनता बाप-बाप श्रथ्रआइ छै लुच्चा लम्पट...... ।

अफसर रखै छै दलाल तँइ तँ जनता छै बेहाल बस ओकरे टा काज चलै छै जेकरा घूसक पाइ हाि छै लुच्चा लम्पट...... ।

लगबू मेल एकताक मंि तोश्र फेकू ई चोरबा तंि जइसँ बूझै ई

पश्चातबा ईहो सभ कसाइ छै लुच्चा लम्पट......।

झार - इन्कलाबमे लहू बहा कऽ, बेि गेलै सभ वीरक खून। पहुँचै छै कहा सभ जनता लग, देसक औजादीक गुण।।
गीत- तुमलोग कहा आजादी पौलकै सभ लऽ रहलै आपे-आप शासक
सूतल पलंग तोड़ै छै के श्वागरेतै बाप-रौ-बाप
समता लऽ आजादी एलै याद छै केकरा सभ भूख्ल गेलै मोल मेटेलै
रँग केसबया श्वार चढ़ल छै अमीरी ताप शासक.........।

हम शश्मक जे देस रचै छी परान पसीना खून बेचै छी ई इनसाफ
कतएसँ एलै तकरा छै नून-रोटीक शाप शासक..........।
साश्व्तत्य चश्व्ल रहल छै उनटल तँइ तँ जनता जाइ छै श्वलटल ठक-लुटेरा फेश्वमे जनता
करम छोश्क्ष करै छै जाप शासक............।
तंि संरक्ण करै छै भक्ण होइ नै शासकसँ संरक्ण सभा लगै ने
अश्व केर खाश्वार और ने होइ छै वातालाप शासक.............।
देशमे फैलल छै अन्हेर केना हेतै फेर सबेर अजानक अजानमे जनता
नाहँक दुखमे करै श्वलाप शासक............।

झार - कुरसी शोभा ओइ मानवके, जे श्वलले श्वल-श्वलसँ जोश्क।
होइ रीत जतए केर एहन, बढ़तै श्वकास जंजीरके तोश्क।।
गीत- नेता अफसर देशक मुड़ी तर केलकै काका हौ बेश्वा िरम-

इमान खाइ छै घूसबला टाका हौ।

बुझै नै छकयो श्रष्ठा-नीश्ता स्वाश्रामानक नै छै पश्चश्वती। जाश्त-िरमक झगड़ा लगा कऽ

देशके केलकह फाका हौ बेश्च िरम..........।

सेवाकमी लोभमे ढुललै कमोके पैसेमे भुललै बैश्स गेलह आब बस श्वकासी कते लगेबह िका हौ। बेश्च िरम...........।

श्राष्ठासँ नै काम करै छै लक्ष्मी पािसँ मािं डरे छै जौ मुँह्दुबरा औश्कस एलै मारै छअ ओकरा िका हौ बेश्च िरम...........।

झार - बच्चा बनतै श्वलकुल ओहने, जे रखने छी अहा उसाश्व। ऐपर केकरो बस नै चलै छै, देखबै पकृश्त आँश्व पसाश्व।।

गीत- कनी देखही गै दाइ कनी सुनही रौ भाय कनी मानही गै माय बाप अजानवस बनलै कसाइ।

श्वन भश्व साहब जे कमबै छै साझ तक दार मे गमबै छै। माए-बाबूपर रौब जमबै छै

कोड़ासँ कश्नयाके करै श्वटाइ। कनी देखही.........।

चौक-चौरहापर मोछ लहराबै कोचाबला ितिी श्वन्ह फहराबै श्कसमत केर कश्नया घरमे रोबै छै पेट पोसैले करए कुटाइ-श्वसाइ कनी देखही.........।

बौआ पढ़ाकू भैस चरबै छै बुच्चीसँ मा सभ काज करबै छै टटका फैदा सभ कोइ देखै छै चुलीमे गेलै इसकूलक पढ़ाइ कनी देखही...........।

झार - हे रसुआर केर बाबा वनजरैया, र कै ने पण्श्चत घरक पास। डूश्च रहल मानव कुरीश्चामे, डुमा रहल अनश्चिशास।।

गीत- मूश्चामि भगवान सेबै छी भासै छी दऽ कऽ खेबा यौ। गीता कहै छै जीव श्वाव छी कर जगत केर सेवा यौ।

श्व:स्वाि सिेवा नै केलौ तब तँ जीवन व्यि िगमेलौ। श्वनु सेवाक व्यि छिै बाबू पूजा-देवी-देवा यौ। गीता कहै........।

जग लुटेरा ठक भरल छै हाि-हश्चियार पुरान पड़ल छै। पुण्य कल्याणक नामपर काटै सबहक जेबी-जेबा यौ। गीता कहै...........।

सेवा श्वना छै जान अि ूरा झट पकड़ू आ पट कर पूरा। छोश्च सतेनाइ सेवा ि र जीवन हेतै मि ुमेवा यौ। गीता..........।

झार - बेटा पोसलौ असत्यक ि ि, और श्वलेलौ बुड़ी कमाइ। बनल रहत ओ राहक रोड़ा, बक्त पड़त तँ बनत कसाइ।।

गीत- सेर भेल छोटकी पेट भेल बड़की आब कहू केना चलतै गुजर।
छौड़ा सभ नै मत सुनै छै
श्वलटैबला एलै पहर।
कन्या सभ छै गलबजौनी
मुँहसँ उगलै बीख-जहर। जान घर आरक लेइक बदला सासुपर ढाश्च रहल छै कहर। छौड़ा सभ.........।
एकटा छै श्वल्लीके ि नि भेजै नै खाइयौले जहर। तकर कश्चाया पलंग तोड़ै छै बैश्च-सुश्च गमबै आठो पहर। छौड़ा सभ...........।
ई अजानक फेर छी बाबू मानू कश्चायो बात हमर। पुि के पोसू सत्यक कमाइ
हेतै ने कश्चयो घरमे कहर। छौड़ा सभ..........।

छौड़ा सभ सभ बातमे रहतै
भगतै घरसँ दुखक लहर। सेर हेतै बड़की पेट हेतै छोटकी
भगतै घरसँ सारा कहर। छौड़ा सभ..........।

कनी सुआ आअ काली माइ, सभके होइ मानवताक जान। आर गेल मानव नरक खानमे, नैआक पतनके करै उत्।न।।
गीत- आका एलैए ऐ दुआयामे
सबहक घरमे रहैले। दुआयाक सुख-शाआ खाआर बरद बआ कऽ बहैले।

जौ घरमे आका नै लाबबै मंगल गीत केना कऽ गबबै।
अपना नैनाके सभ आकयो पढ़ाबू
दुख दुआयाक गहैले। दुआयाक सुख..........।
आकेसँ सुख-शाआ एतै दुख-गरीबी घरसँ जेतै। सुखक गाड़ी चआ चलू सभ आका एलैए कहैले।
दुआयाक सुख..........।
काम कर सभ सच्चा-पका पड़ै ने केकरो सुखमे ।का। आका कहै छै सभ मानवके आनो ले दुख कहैले। दुआयाक सुख.........।
झार - सभसँ भारी दहेज बेमारी, पआणय सू।क ई छी घुन। रोबै छै सभ बेरा-बेरी, बहा-बहा आंशूमे खून।।
गीत- आनगी दुबर भऽ गेल
राजा जनकक देशमे सभ डुमलै कलेशमे यौ।
लोकके लगलै लोभक बोखार तँइ सभ ।नै छै कपार। अजान चलबै छुआ कऽ राज दहेजक भेषमे। सभ डुमलै.........।

कफ्फन बश्न गेलै दहेज कोइ नै करै छै परहेज। बेरा-बेरी पड़ै छै सभपर मुरदा भेषमे।
सभ डुमलै.........।

सबहक मश्व गेल नीश्व-श्वष्ठा तँए तँ खाइ छै दहेजी श्वष्टा। जान श्वनु लोक जीबै छै श्वलकुल सुगर भेषमे। सभ डुमलै.........।

केकरा कहबै नीक छै बाबू एकटा दुटा लाबू आगू। लटकल बोड़ा देखैबे श्वलकुल बटुआ भेषमे। सभ डुमलै.........।

झार - ओइ पोिके राश्व उसार , खड़ा करै जे जाश्व-िरम। आगू लाबू ओइ पोिके, श्वखबै जे मानवताक करम।।

गीत- श्वन्दु-मुस्श्वम, श्वख-इसाई
सभ श्वल कऽ श्वऔ ई भाषण। जाश्व-पाश्व मानवता भेदी दइ छै नै केकरा ई राशन।
जाश्व-पाश्व नेता जगबै छै अपन जीतक जोगार लगबै छै। ई नेता छी देशरोही
ई की बुझतै सुशासन। जाश्व-पाश्व.........।
जाश्व-पाश्वके मनसँ भगाबू
फूल मानवता घर सजाबू। मेल श्वलाप समता एकताके
तइमे श्वऔ उच्च आसन। जाश्व-पाश्व.........।
एक बनू सभ मानव-मानव तब ने र कतै दुखक कानब।
फूट अनेकताक श्वता जरा कऽ

और थूअौ ओकरा अरगासन। जाथा-पाथा............।

झार - जमा केलौ नि लूथ-लूथ कऽ, बेटा पोसलौ घूसक नि।
कर नै आशा ओकरा सुक्खक, जरा जीअत अहा केर तन।।
गीत- समैसँ पथले भागसँ बेसी केकरा भलले बाबू यौ। तइदुआरे संतोष रि मनके कर काबू यौ।
थनु संतोषे नै भलतै शाथा जीवन रहतै लफड़ा िथा।
थियान नै रहतै नीथा-इमानक मन रहतै बेकाबू यौ। तइदुआरे.........।
सुख-लाभ सभ कोइ चाहै छै दुख-घाटासँ सभ भागै छै। इच्छा बेस छी दुक्खक कारण सभ थकयो एकरा थायागू यौ। तइदुआरे..........।
अपने हापिर कर आशा लगबू नै अनकामे िसा। स्वाथामान नै थनन्दा रहतै फेर केना कहेबै बाबू यौ। तइदुआरे..........।

झार - रहल भरममे फँथा कऽ सुग्गा, देथा कऽ सुन्दर थाम्मर फूल। भागल भरम जौ लोल ओ मारल, याथ आएल फेर अप्पन भूल।।
गीत- की अरजबै ओइ बेटाले पुत जे छै कुपुत यौ। उ तँ अरजतै खुद अपनेसँ पुत जे छै सुपुत यौ।
कोइ अरजै छै मान-मयाया कोइ चाहै छै इज्जत ज्यादा। कोइ बनल छै असंतोषमे कंस-कौरब केर दूत यौ। उ तँ...........।
कोइ अरजै छै यश और कृथा अरजै छै परलोकमे िरती। कोइ-कोइ थासा बूथा-बूथा कऽ
बन गेल छै जमदूत यौ। उ तँ............।
कोइ बाटै छै जगमे सेवा अरजै छै अमरत्वक आभा। कोइ परल

अजान-अंिरा
बच्चा कऽ जीबै छै भूत। उ तँ............।

झार - बेटा-बेटी सम-बराबर एकर रक्खू पुरा धियान। जौ बेटीके श्वाक्त देबै काश्च बैसत बेटाक कान।

बेटी पश्च कऽ भऽ गेल घरक ई जंजाल यौ माए-बाबूक काल यौ ना।
देश्वयौ अजानक चश्वि पाइयेमे छै सबहक पीश्वा। पाइ श्वनु आब नै होइ छै श्वस्ता कोनौ बहाल यौ। माए-बाबूक.........।
बेटी आइ.ए., बी.ए. पास दुला श्चलतै घोड़ा-घास। बाप केना कऽ करतै बेटीक हलाल यौ। माए-बाबूक........।
दुला जौ श्वलै श्वकछु योग्य लाख-दास छै ओकर डोज। बापके सुश्वा डोलै छै श्वातरसँ महाल यौ माए-बाबूक..........।
एगो रश्वतै तँ श्वान दइतै चाइटा कोना कऽ समेतै। लोक ओझरा मरै छै रीत-कुरीतक जाल यौ। माए-बाबूक.........।

झार - भूल करै जौ वनक पंकी, पशु करै तँ और छै बात। ऐसँ वंश्चत जीव-जगतके मा‍ि छोश्च कऽ मानव जाश्वा।।
गीत- कनी देखही श्वनेश कनी सुनही सुरेश कनी मानही महेश लोक अजानवश फँसलै कलेश।
लोक असत्यके जब नै छोड़ै छै दुखक घर नरकमे पड़ै छै। तकरा मदत नै देवो केरै छै और मुँह मुड़ै देशक नरेश।
कनी देखही..........।
सारे-मश्वने भागवत सुनै छै कोइ नै श्वकच्छो मनमे गुणै छै। दुख

पड़लासँ मा ि नै छै पकश्क असत् केना कटतै कलेश कनी देखही............।
छोश्क शाश्म श्वसा अपनाबै मानवतासँ पाश्म भराबै। दया-ि रमसँ टहल कराबै तकर रक्ष केना करतै गणेश। कनी देखही...............।

झार - सेवा कऽ कऽ जगवासीके, मागू नै छीनू आशीष। जौ सेवबै श्वः:स्वाि भिावसँ, ईशर देतै सुख-बखसीश।।
गीत-
सेवा दइ छै सभके मेवा बाजै छै बाबा केशौरी दास। श्वना स्वाि जे सेवा करतै दुख नै रहतै तकरा पास।
आइ सेवाके कोइ नै ि ड़ै छै स्वाि मे सेवौके करै छै। सेवा चश्क कऽ लोभक गाड़ी िऽ लेलक दुखमे अवास। श्वना स्वाि.........।
जीवनक दू राह फुटल छै सेवा सतेनाइ सा ि जुटल छै। छोश्क सतेनाइ सेवा ि र जीवन सफल भऽ पूरत आश। श्वना स्वाि.........।
ि र सदा लऽ सेवा-शाश्म
बढ़ै ने मन कखनो ि ाश्म। जीवनक ई मूल मंि छी एकरा पकश्क श्कयो होइ नै नाश। श्वना स्वाि............।

झार - जब-जब जनम होइ ऐ ि रतीपर, भारत मा तोरा देशमे। रक्ष करब हम तोहर माता, वीर-बाकुरा भेषमे।।
गीत- कते कहबौ रौ भाय
कते कहबौ रौ भाय
कते कहबौ रौ भाय। भाय भूश्मक वीर बराइ कते कहबौ रौ भाय।

ुमना भड़कलै ज्वाला िश्वा ुायाुा देलकै अपन सुख-शाुा। ुालक लगा िरतीक िूलसँ
देशक दुश्मन ले बनबै कसाइ।
कते कहबौ.............।
ुन्दु-मुस्ुम-ुाख-इसाई एक बनलै सभ ुन्दी भाय। बना दुलुाया गोड़ी-ुरंगी वीर दुला संग भेलै सगाइ। कते कहबौ............।
गजब शस्िसँ केलकै िश्वा हाि-हुियार छेलै सेवा-शाुा। ओकरे जररी अखनो छै बाबू एहीसँ हेतै देशक भलाइ। कते कहबौ...........।

झार - अंग-अंममे लोभ जकरलक, मन फँसल छै माया जालमे। अपना आुामे िि लराबै, काम नचाबै दऽ दऽ ताल।।
गीत- जान ुनु मानव भऽ गेल झर हरदम उगलै छै जहर। दुखमे डुमलै मानव जाुा कोइ पकड़ गै पकड़।
हरदम झुटे-फूुा बजै छै सभटा उल्टे चाुा चलै छै। ुाष्ठा मुा एकर कोइ पकड़ गै पकड़।
बेुा देलकै िरम-इमान संग छै नै नीुा-जान। रक्ा करतै के एकर कोइ पकड़ गै पकड़।
छुटलै दया-िरम केर रीत छै नै सेवासँ परुात। दुख बौटतै के एकर कोइ पकड़ गै पकड़
मेटेलै मानवता-मयादा हरदम करै छै झूठा वादा। एतबार करतै के एकर कोइ पकड़ गै पकड़।

झार - पैसेमे तँ सभटा सुख छै, घेर लेलक सभके अजान। साि-

मुल्ला, पण्डित-नेता, सभ खुनै पैसा केर खान।।
गीत- सभ ठकै छै ऐ जनताके नेता-पण्डित बाबा यौ। तँए तँ देशक एहेन हाल छै
तबल-तबाएल छै ताबा यौ।

नेता नै जनहित बुझै छै नफ्फे टा खाली आँखि सुझै छै। नीति-रिमके किछु नै बूझै छै जानै नै जनसेवा यौ।
तँए तँ............।
अन्धविशासक राज चलै छै घर-घर कुरीतक दीप जरै छै। छोड़ि अपन कर्तव्य-कर्मकेँ पूजै करोड़ो देवा यौ। तँए तँ..........।
पंडीजी ओहने पाठ पढ़बै छै जइसँ चढ़ाबा बेस चढ़बै छै।
भवसागरक पार उतरै केर अहीठाम लइ छै खेबा यौ। तँए तँ..............।

झार - नै छेड़ियै कोइ ऐ रितीपर, रहबै नै कोइ ऐ केर बाद। पगट छी जबतक ऐ रितीपर, ऐ बीच जीवन कर अबाद।।
गीत- सभकोइ आस कऽ आशिलाके
सजाबै जाउ यौ बाबू। उजरए नै ई रिती
तइ कामपर काबू यौ।
अवसर नै समता केर बोली अहीले खेललै खूनक होली। वीरक खनक मानके
बँचाबै जाउ यौ बाबू। उजरए नै...........।
अपन चैनक बोड़ा खोलू सेवामे जनता लेल घोर । भष्टाचारक नामके मेटाबै जाउ यौ बाबू। उजरए नै..........।

जगबू अपन नीश्चा-श्चाष्ठा तबे देतै जग पश्चाष्ठा। मानवताक दुश्चायामे बसाबै जाउ यौ बाबू। उजरए नै..........।

झार - कम खाउ आ रहू गमसँ, कर नै केकरो पमौजी। रोटी होइ बस सत्यक कमाइ, चलतै जीवन मनमौजी।।

गीत- केना जीबै छै लोक एतए केर देश्चयो जा कऽ करीबसँ। कोन हालमे अहा जीबै छी पुछ्यौ कनी गरीबसँ।

पेट छै खाली रोटी श्चनु तन छै कपड़ा वस्ि श्चहीन। श्चरपर छत ले अरज करै छै श्चन-राश्चा अल्ला-श्चावसँ। कोन हालमे.........।

कतए देखतै लडडू-लाइ

कोदौ मर आ लगै श्चठाइ। ि नि-ि नि हे अलुआ बाबा श्चलै छह तहूँ नसीबसँ। कोन हालमे..........।

ऊपर अंबर श्चाचचा जमीन आशा केकरो नै अल्ला श्चनु। कोनो श्चश्चसँ अटकल रहू कहै छै अपना जीवसँ। कोन हालमे..............।

छै ई दुश्चाया भश्चक मारल शामंतवादक झमारल। ई शोश्चत छै जनम-जनमक तँइ श्चलल छै नीबसँ। कोन हालमे..........।

झार - पैसामे छै भूख अजूबा, भरल नै ऐसँ केकरो पेट। राजा भूखल जनता भूखल, भूखल अश्छ सासु और सेठ।।

गीत- हे रसुआरक बाबा वनजरैया

लगबह कोनो जोगार हे। अजानक अन्हारमे डुमलै

आि श्चाक संसार हे।

आश्च तृष्णामे जरै छै दुश्चाया लोभ बनैलकै लोकके खुश्चाया। देवीक भौश्चाक और अि यात्श्चक हाि ि ड़ा हश्चयार हे। अजानक...........।

सरोसती लछमी ले मरै छै नीश्चा इमान बीच सड़क जरै छै। जइ

कलमसँ सेवा होइतै से बनलै तलवार हे। अजानक...........।
हक गरीबक कतल करै छै अपन-अपन मलह भरै छै। आश्चत हाि
राजकोषक पैसा समा रहल बेकार हे। अजानक............।

झर - जमीन पटा थ्वऔ गाछ-ब्बथ्वछसँ, सभ जगह कश्च थ्वऔ उदान।
एना अगर जौ कऽ नै सकब तँ, तैयार हतैले पाण।।
गीत- बाबू गाछ लगाबू परदुषण भगाबै ले दुश्चायाके बसाबैले यौ ना।
लइ कावनि दइ आक्सीजन करै जीवनक संरक्ण। समतुल पयावरण
करै छै जीव बचाबैले
परदुषण..........।
दबाइ बश्चा कऽ गाछ थ्मआबै श्वठगर-श्वठगर फल थ्वआबै।
जरना संग फश्चाचिर दइ छै
घर सजाबैले
परदुषण.............।
कर दुश्चायापर रहम रोपू पाच गाछ कम-सँ-कम। फेरसँ हश्चताश्चि
ितीपर बसाबै ले। परदुषण............।

जंगल कश्च-कश्च भऽ गेल कम तँए तँ जीव भरै छै दम। गाछ आब
नै काटू
पयावरण वचाबैले। परदुषण..........।

झार - राष्र श्च्रतमे सभ श्वकछु श्चायागू, िन-जीवन आ ऐशो-आराम।
संकटमे कही देश फसेबै, जीवन होएत दुबर हराम।।

गीत- हमर बिहार और हम बिहारी भरि दुनियामे शोर छै। नि-नि बिहार आ नि-नि बिहारी पटना पगि बेजोर छै।
ई भूमि छै शूर-वीरक
सागरसँ गहीर ीरक। हक कुमर सिंह पभा देवी
तइमे तँ मसहूर छै। नि-नि..............।
नालंदा-रोहताह-भोजपुर बाका-सिवान-सारन-भागलपुर। दरभंगा-सुपौल-सहरसा जनकपुर जगमे बेजोर छै। नि-नि..........।
अगम कुंआ-तारामण्डल गोल घर सुन्दर छै बड़ पुल रास्ता सुन्दर। बिरमली महासेतु लऽ कऽ
दुनियामे मजबूर छै। नि-नि..........।

झार -
जानी खोजै अपन गलती, दुजेमे खोजै अजान। बैसल अजानी खजूरक गाच्चा, जानी मारि गेलाह मैदान।।

गीत- पढ़ि कऽ देखियौ एकबेर गीता ऐमे आत्मिक जान छै। मानवताक रीढ़ ई पोि
खुदमे देखाबै भगवान छै।
भीतरक सदगुण देखबै छै की छै जे अवगणु बतबै छै।
कसतुरी नाभी लखबै छै। तँए ई जगमे महान छै। मानवताके............।
साफ कर तन-मन और वाणी त्यागि करर दोसर के हाथ। और कहै छै सेवा रि सभसँ जे औसान छै। मानवताके..........।
जेअपनेलकै ऐ रितीपर ओकरे भेलले अमत्वक जड़ि
ई शाि पद्माभा देवी

सभ पुस्तक केर शान छै। मानवता.............।

झार - काम-ोि मद लोभ मोह सन, सभ खेतमे दुक्खक बीज।
जँ पनपल ई मौका पा कऽ सुख केर भऽ गेल पावर सीज।।
गीत- देखयो सभ बाबू-भैया ई सभ की करै छै सुख ले एलै बोड़ा लऽ कऽ
दुख कअए भरै छै
लोभ-मोहमे सभ अन्हरेलै पढ़लो-लखलो लोक बनरेलै दुआया-दारी के बताबए भाइयोसँ लड़ै छै सुख..........।
करोि-कठोरता सभ छै नि अहंकार छै बेबस केने दोर केर सुख-शा देख
कअए ई जरै छै सुख........।
बहुत कम छै एहन कलामी जे नै करै छै कामक गुलामी जेकरा चढ़लै ई थारथा या नरकमे सड़ै छै सुख..........।

झार - कछु ने देतै मंदर-मस्जद, देतै ने कछु थाजाघर।
मनक सपना पूरा हेतै, जीव-जगत केर सेवा करतै।।

गीत- िरम करैत जे हुअए हा तैयो ने छोड़ िरमक बा हमर माए ई खबैत रहए साझ-भोर-दुपहर दन रा।
जा बूझ ने केकरो सतैह सदखन सतक रोटी खैहे भऽ सकौ कछु सेवा कहे दन-दुखी दुख अपन जा िरम..........।

दया पेमक रश्वहे आगा टुटौ ने मानवता िगा भुखलके तूँ अन श्वयैहे श्वयासलके श्वयश्वहे पाश्व िरम........।
सत् डगर कखनो नै छुटौ असत् अन्हार लोभ नै लुटौ नैश्वाकता श्वाष्ठा मयादा िरम इमान कऽ जीश्वहे माश्व िरम.............।

झार - बचल जीवन छै घोर अन्िरा, जराउ प्यारसँ जानक दीप।
वणा देखेतै एतए नै श्वकछो, मोती भरल सागरमे शीप।।
गीत- कर भला तब हो भला कर भला तब हो भला। हम नै कहै छी जानी गुणी
सबहक नीक लेल कश्व गेलाह।

दोसर सता कऽ दुख नै श्वकनू सुख-शाश्वा ले सेवा बुनू।
जानै नै जे परक पीड़ा जगमे अन्ि रश्व गेला। कर भला.........।
जे जानलकै परक पीड़ा तकरा श्वमललै सच्चा हीरा। नाम अमर छै िरा िममे गैर खड़ा छै िरम श्वकला।
कर भला...........।
श्वसा छोश्वड़ सेवाके पकड़ू डोरी पेममे सभके जकड़ू। नै केकरोसँ श्वाकबा-श्वमकाइत
केकरासँ ने कोनो श्वाला। कर भला...........।
स्वागत गीत
हम नै छी अहा योग यौ पाहुन अहा छी बड़ महान स्वागत स्वीकार शीमान्।
अहा छी गंगा अहा छी यमुना
पग ूिलसँ पावन भेल अंगना। अहाक सेवाक जान नै हमरा हम बालक अजान स्वागत.........।

अहा छी अल्ला अहा छी शंकर अहा छी हीरा हम छी कंकर चरण ि‍ूल हम मा‍ि लगा कऽ
कल जोि‍ड़ करै छी परनाम स्वागत..............।
हमरा नै सोना ि‍सघासन
मन दै छी हम आसन बैस ि‍नराजू देव अि‍ाि‍थ हम छी गरीब महान स्वागत............।

झार - चलए समैसँ सूरज-चंदा, समैसँ होइ छै सुबहो-शाम। समैसँ बान्हल सौसे दुि‍नया, अहूँ कर सभ समैसँ काम।।
गीत- बाबू समए कम छै काम छै बेसी डटू ना आब तँ पाछा हटू नै यौ।
भुदानी सभ छै अमीरके पास ऐमे गरीबके नै छै आश। फेरसँ भूि‍म भुदानी पुनि‍वचारसँ ि‍वचार ना आब तँ..........।
चलता-ि‍फरता बनबू न्यायालय गाम होइ जकर कायालय। गौआँ-अफसर ि‍मल कऽ
केस फाइलके छाटू ना। आब तँ............।
ि‍वकास पहाड़ पड़ल छै आगू आबो युवा वगि सभ जागू। एकताक डोर पकि‍ड़ कऽ
भेद-ि‍वष्मता काटू ना। आब तँ.........।
जब पौरषे ि‍रिज खोतै ऐठाम केना कऽ जनता ि‍जतै। ि‍नष्ठावानक बेटा
सुख जन-जनमे बौटू ना। आब तँ.............।

झार - शासक होइ जन-जनमे स्नेही, हर जनपर होइ हुनकर प्यार।

होइत साकार शब्द पजा-वत्सल, होएत देश खुशहाल कऽ गुलजार।।
गीत- बदलैना आब नै रहतै पाछा अपन बिहार गै
एलैए नीतीश कुमार गै ना।
सभटा सड़क ढलेतै पका आब नै फँसतै गाड़ी चका बदलैना विकासमे बनतै नव-नव बिनार गै। एलैए.........।
न्यायमे लगतै लबका दाउ भरटतै सबहक पुरना घाउ आब नै रहतै कोटमे केस फाइलक पहाड़ गै एलैए...........।
खेत हेतै चकबन्दी बाध्यत
रहतै कतौ नै बिलजी वंचित। बदलैना खेतमे हेतै लबका हरा-बहार गै। एलैए...........।
एतै मेल एकतामे जोड़ हेतै सुख-शान्ति केर भोर। सभ धर्मक कियो मारेबै जाति-पाति देबाल गे। एलैए............।

झार - दीप जराबू पेमक बाती, भरि कऽ तइमे स्नेहक तेल। फुटै आभा सुख-शान्तिक, जन-जनमे होइ सम्मत मेल।।
गीत- बदला जीबै हम सभ भैयारी हम बाके बिहारी।
जाति-रिमके करबै पाछा
तब ने राज कहेतै अच्छा हिन्दु-मुस्लिम सिख-इसाई सभ छिएै पहिले बिहारी यौ हम बाके.........।
एकताक पमाण चढेबै अपना बिहारके आगा बढेबै हर हाथिमे रोजी दएबै मूलसँ मेटेबै वेरोजगारी यौ हम बाके.............।
अन्धविशासक राज हटेबै कुरीतिके ढिल चटेबै भूख-गरीबी रोग अशिक्षा और भगेबै भष्टाचारी यौ हम बाके..........।

झार - राज हुनकेसँ चलि सकै छै, जिनका रगमे दानी खून। स्वामी

भाव अंग-अंगमे भरल होइ, और भरल होइ सेवा गुण।।
गीत- केकरोसँ नै रहबै पाछा
सभसँ जेबै अगारी यौ भ्रमर उठा गौरवसँ कहबै हम छी बाबू बिहारी यौ
मेल एकताक फूल खिलेबै घर-घर शान्ति दीप जरेबै जग अमन केर झोरा लऽ कऽ
घर-घर बनबै फुलवाड़ी यौ भ्रमर उठा..........।
हक हमर जे आब रोकयो सकतै
अपना ले दुख अपने सहतै आब ने केकरो मारल जेतै दसो नहक देहारी यौ भ्रमर उठा.........।
न्याय विकास पमाण चढेबै राजक नाम दुनियामे बढ़ेबै अन्धविश्वास अजान-कुरीति सभके करबै पछाड़ी यौ भ्रमर उठा........।

झार - चलि गेला सभ कहैबला, जग अमन केर रोपू जड़ि। के पढ़तै आब फेर ई फकरा, स्वान्तात छै सभ पेट पोखरि।।
गीत- यार दिलदार यार, की रौ भजार यार तूँ बिहारमे जा कऽ की देखले।

राजकमीके सुतैत देखलौ फुहरीके घूमि-घूमि मुतैत देखलौ।
न्याय केर नामपर लुटैत देखलौ जनताके राजा कुटैत देखलौ। न्याय मरै छल घूस अभावे राज धृष्टराष्टक चलैत देखलौ।

यार दिलदार यार, की रौ भजार यार तूँ पटनामे जा कऽ की देखले।
राजभवनमे गदहा चलैत देखलौ पदगौरवमे राजा मरैत देखलौ। सभ

गाड़ीमे पुलीश उड़ैत देखलौ मंश्वरमे मश्चला मुड़ैत देखलौ। लुच्चा-लंपट कुसी ि ि

मासु मश्वरापर पलैत देखलौ।

यार श्चलदार यार, की रौ भजार यार रेलगाड़ीमे चश्च कऽ की देखले।

सही श्चकटपर फाइन लगैत देखलौ

याि के नरक भोगैत देखलौ। पुलीसक वदीमे डकैत देखलौ

टीटीके पैसा ठकैत देखलौ। पुलीश टीटी सभ दल बना कऽ

मुँह दुबराके लुटाइत देखलौ। यार.............।

झार - जनता बनू अयो्यावासी, गुश्चा कऽ मानवताक मं ि। तन ि अल संतोष जलसँ, गला बान्हल होइ मयाया यं ि।।

गीत- छूक-छूक-छूक-छूक रेल श्चकासी आब चलेबै पटरीसँ। आब सभ कुछ श्चजलीसँ हेतै चलतै नै श्चकछो बैटरीसँ।

राजकमी बनतै म ि मेबा जश्च कऽ करतै जनता सेवा। अमन चैनक फल श्चयेतै खोश्च-खोश्च श्चदा मोटरीसँ। आब सभ कुछ..............।

गामे-गामे एकता बनेबै अपन काज अपनेसँ करेबै। आब नै केकरो घूसमे जेतै बान्हल पैसा गठरीसँ। आब सभ कुछ.............।

श्चाक्त केर औब लगतै झड़ी घर-घर बनतै जानक बरी।

सभसँ कम जे पढ़ल रहतै

कम नै रहतै मेश्चकसँ।

आब सभ कुछ..................।

झार - चाहे ओला पुस श्चराबै, टपश्च रहल होइ जेठक घाम।

ख्मखलक ख्मकष्मत कहा ख्मधाता, बैस घरमे करी आराम।।
गीत- कतेक कहब हे बाबा वनजरैया
अपना मनक मुराद हे।
कख्मइया देखतै गरीब आजादी केना कऽ हेतै आजाद हे।
आबो दलाली जीख्मवते रहतै अनबूझके खून ख्मपबतै रहतै। साफ हेतै ई कचरा केना देश हेतै केना आवाद हे। कख्मइया............।
के लेतै ऐ गरीबक ख्मजम्मा एकरा हक ले सोच ख्मजम्मा। ऐ गरीबक दुख हरै कऽ
के देतै बुख्मनयाद हे। कख्मइया............।
सभ गरीब मजदूर मेहनतकस बख्मन जीबै छै देशमे बेबस। आजादी घर-घर पहुँचेतै पैदा करह औलाद हे। कख्मइया.............।

झार - हे भूख्मनक भाग्य ख्मवधाता, जगक अनदाता भगवान। कहा पता तोरा ख्मठाबा छै केकरो, छूपल कतए छै खेतमे ख्मन।।
गीत- सुनह हौ बाबू सुनह हौ भैया केना होइ छै ई टोना हौ। माख्मटमे जौ गोबर ख्ममलै छै तब बनै छै सोना हौ।
जे ख्ममलबै छै खेतमे गोबर तकरा घरमे अन छै दोबर। ई जेकरा महकै छै बाबू दुखमे करै छै घौना हौ। माख्मटमे..........।
जे कोइ चुलीमे जरबै छै समझू सोनाके हरबै छै। जे फेकै छै एने-ओने
तकर ख्मवकास छै बौना हौ। माख्मटमे.............।
जे नै करै गोबरक आदर फटले रहतै तकर चादर। आदर नमन जे एकरा करै छै
हरदम रहै ख्मववाना हौ। माख्मटमे..............।

झार - पैसासँ सभ इज्जतबला, काज करै चाहै सैतान। तैयो पुजै ओकरे दुआया, एकएक तँ ओ छै पैसामान।

गीत- आंगनबाड़ी खेत खेसारी बआ उजडै छै भाय हो। सभटा खाइ छै भैस अनेरबा कोइ रोमए नै जाइ हौ।
रोमैले जेकरा भेजै आरहतबा दइ छै आजादी खाउ भअपेटबा। हमर भाग हमरा ले छोड़ू
जे छै हरा केलाइ हौ। सभटा..........।
के करतै एकर आगरानी आरल छै सबहक आँखक पानी। नीआ-िरम आष्ठा-मयादा सभटा गेलै बलाए हौ।
सभटा............।
कमी संग रजो छै अन्ाि तँए छै चौपट वकासी ि ि आअत हएत राजकोषक पैसा सभटा गेलै समाए हौ।
सभटा............।
झार - जआ कऽ रहब बाबू-भैया, और रहब चौकस हथियार। फेर नै पाबए राजक कुसी, लुच्चा-लंपट चोर-चुहार।।

गीत- सुनह हौ बाबू सुनह हौ भैया बाके बहारी बन्ि मन आत। ई एलेक्शन एहेन बुझाइ छै असत्यक ऊपर सत्यक जीत।

सभ कोइ कअयौ हम नीतीश छी सोलह नै सभ कोइ बतीस छी। भूख गरीबी रोग अआक्त सभ अअ कऽ करबै असआत। ई............। गामे-गामे एकटा बनेबै घर-घर शान्आ दीप जरेबै। जाआ-िरमसँ मनसँ भगा कऽ

गाबबै सभ मानवताक गीत। ई..............।
स्वाश्चमानके सभ कोइ जगेबै लोभ-लालचके मनसँ भगेबै। सभ श्चल ऊजरल घर सजेबै
सभ कोइ जपबै जय-जनहीत। ई...............।

झार - तरे स्वगपिण्श्चत पूजासँ, जे देखलक नै आइ तक कोइ।
जौ सच्चा ई जानैत मानव, पण्श्चतसँ नै पुजाबैत कोइ।।
गीत- अन्श्चशास अजान कुरीश्च भूख गरीबी भष्टाचार। ई अंगेज केना कऽ भगतै बाबू-भैया कर श्चचार।

हरदम घुमै चन्दा केर चकर रिम करैत लोक भेलै फकर। छप्पन करोड़के पुजैत-पुजैत उजरल जाइ छै घर-दुआर। ई.............।
मुखपिढ़लमे की छै अन्तर सभ पढ़ै छै एके मंतर। बेश्च रिम-श्चष्ठा मयादा लगबै छै पैसाक जोगार। ई..............।
देश्चयौ ई अजानक िि गाड़ने छै कुरीतक झंडा। भूख गरीबी बढ़बै खाश्चर कऽ रहलै घर-घर परचार। ई...............।

झार - छोश्च सत्य इमान-रिमके, ताकै अजानसँ तनक सुख।
श्चट सकै छै भूख तात्काश्चक, मेटाइ नै ऐसँ केकरो दुख।।
गीत- एबरी हमरा जीताबह हौ बाबू
श्चकासक करबह काम हौ।
आब केकरो सतेबह हौ बाबा आब पकड़ै छी कान हौ।
गली-कुच्चीमे सड़क दौगैबह घर-घरे हम कल गड़ेबह। ई सभटा कागजेपर हेतह अपन भरबै मकान हौ। आब नै..................।

सौर ऊजाले फरम भरेबह अपना चुला लग तकरा गड़ेबह। जौ कुच्छो कोइ बजबह बाबू
तकर िरब हम कान हौ। आब नै....................।
फन्ड थकासी घर ढुकेबह सभ जनताके घून थसेबह। केकरो थाकाइत तँ कौइ ने सुनै छै थथि छै देशक बाम हौ। आब नै....................।

झार - पैसा होइ छै शथासँ शीतल, जौ पाबै जानी-होथायार। कऽ कऽ सेवा दीन-दुखीके, कऽ लेलक अप्पन बेड़ा पार।।
गीत- झुमका देबौ बाली देबौ गै बेटी तूँ पढ़ गै। िरापर लटकल जानक डोरी पकथ्इ कऽ ऊपर चढ़ गै।
शदा रथ्खहे गुर-गोसाइ गुरचरण गथ्इ िड़ गै। जौ पढ़ैमे मन नै लगतौ
जोतमे केना घर गै। िरापर...........।
पढ़ थजान तूँ गथ्इ-गथ्इ कऽ
जगसँ मेटा कहर गै। लोक खड़ा अजान आथामे पी-पी थख जहर गै। िरापर.............।
जनथ्इत केर तूँ पोिी पथ्इ कऽ
नेता बन तूँ बड़ गै। गला लगा मानवता माला थारलके कर ऊपर गै। िरापर..............।

झार - सादी रीथा सभ मिमि, छोट नै छै अथा छोट छै। फँथा कऽ ई अजान-अंिरा, घर उजाथ्इ कऽ जरबै नोट।।
गीत- कनी देखही गै दाइ कनी सुनही रौ भाय कनी मानही गै माइ सासु अजानवश बनलै कसाइ।

नोट गीन-गीन कऽ नोट गनै छै अपने फासी आप बनबै छै। ई अजानक देन कुरीश्मा कऽ रहल दहेज छै सबहक िलाइ। कनी..............।
लोभक कारण लोभी बनै छै बँचतै नै श्मकछो सेहो जनै छै। तब नै श्मकअए आदशर्ि देखा कऽ
मस्श्मद-मन्श्मरमे करै सगाइ। कनी...............। सासु-पुतोहुके रोज कनबै छै कम-जहेजक रोब जमबै छै। सदी एकेसम चलै छै बेटी सासुके दही श्मकछु सबक श्मखाइ। कनी...............।

झार - हम और हमरा केर जालमे, फँसल एतए छै सभटा बन्दा। एही मोहके कारण मानब, कमर्ि किरै छै बश्म कऽ अन्ि।।
गीत- पढ़ै छेश्मऐ श्मखै छेश्मऐ श्मखै छेश्मऐ जान केना देशक हाल सुिरतै
दुखक हेतै केना श्मदान। बाजू भैया रामे-राम
रामे-राम हौ भाय सभ अन्हरेलै अजानक अन्हारमे।
सबहक मनमे लोभ जकरलक सुझै नै नीश्म श्मािन। गला दाश्म कऽ दहेज श्मनाबै श्मस्ता भेल बदनाम। बाजू...........। सभ उजरलै दहेजक लहश्ममे।
अन्िश्मशासक डंका पीट-पीट
नोटक बान्है बोझ। कुरीश्माक जाल फैला कऽ
सभके केने छै सोझ। बाजू..............। श्महार फँसल छै कुरीश्माक जालमे।
जनसेवाक पाठ श्मसश्म कऽ

सेबैए मूख्त्र-भिगवान। छोश्कह अपना कतर्प्रिय-कमक्रि देवीपर देने छै
थ्रियान। बाजू............. । लोक ओझरेलै अन्िश्चशासक जालमे।

झार - मानवता

१ ताज थ्रलै सम्पूर्णजिगतके, आ बश्वा जीबए झार दार।
मानवमे मानवता होइ तँ, बदलै नै ओकर अवतार।।

२
रंगू नै जीवन जाइत रिमसँ, सभके मानू अप्पन मीत।।
नीच ऊँचक भेद भुश्वा कऽ, गबैत रहु मानवता गीत।।

३
सता हमर सारे जगतपर, मानवता हमर मेघा थ्रानि।।
पालनमे जे करए श्चठाइ, स्वीकारए ओ नरकक खान।।

४
जन-जनपर हम्मर शासन छै, हर श्चाजपर हम्मर अधिकार।।
कोनो पप्त अपाप्त कहा छै, तकलिगा कर स्वीकार।।

५
हर औ मानव हमर श्वपाही, श्चनका छन्श्व मानवता जान।।
मार कुचश्वा श्चयौ बेमानवता, बढ़ाउ जगमे अपन नाम।।

६

हमरासँ पश्चले कोनो नै शासन, नै छै कोनो मिक्ति श्चानि।।
हमरा श्चनु जगत सुना छै, हतैबला छै पशु समान।।

७
हमरा लेल छै श्चकयो नै ऊँचा, नश्च श्चकयो नीच नादान।।
जे बरतलक ऐ मिक्ति, अटल जगतमे हुनकर नाम।।

८
हम मानवक मूलाारि छी, सभ रिमक श्चता समान।।
पाप पुण्यसँ अश्च परे छी, देवतो छी हम्मर संतान।।

९
मानव वास्ते सीमा सरहद, मानवताके सकर खेद।।
जाश्च रिम सरहदसँ अलग छै, मानवतामे कोनो नै भेद।।

१०
जब रै मानवता मानव, रहै नै भीतर जाइत रिम।।
श्चाष्ठा इमान कऽ करए आदर, और पुजै श्चात्य सत् कमि।।

११
जब मानव रै मानवता, तब बढ़ै जन-जनसँ मेल।।
दूर रहै घरसँ सभ टेन्शन, ब्यापै नै कोनो झगड़ा झेल।।

१२

जब ि रै मानवता मानव, पका होइ ओकर इमान।।
डर लगै छै असत् कर्मसँ, थ्कन्नौ नै बदलै ओकर जुवान।।

१३
जब मानवता ि रै मानव, तब उपजै मन लाज लेहाज।।
आदर दीली बड़ा पाबै छै, रहै नै छोट प्यारसँ बाज।।

१४
मानव जब ि रै मानवता, ओकरासँ कोइ दुखै नै जीव।
और नै दुखाया ओकरा सताबै, जीवमे देखै अल्ला शृव।।

१५
मानव जब मानवता ि रै, तन पश्चुर नैश्चाक पश्च ि न।।
ि रम इमानक रक्ता खाश्चार, करै न्यौछावर ि न आ जान।।

१६
मानवता जब ि रै मानव, श्चट जाए श्चच ऊँचक शान।।
दुखाया देखाबै सम बराबर, देखै ने थ्कयो अप्पन आन।।

१७
ि रै जब मानवता मानव, ब्यापै नै ओकरा शृ ि शृ ि ताप।।
काम ि ि ने लोभ सताबै, अन्थ्विशासमे करै नै जाप।।

१८
मानवता जब शासक ि रै, सुख सम्पन होइ जनता तमाम।।

श्अटै मूलसँ भूख गरीबी, रहै नै पाछा श्यकाशी काम।।

१९

मानवता जौ न्याय कमी ि रै, कम हेतै केश फाइलक ि ान।।

कहल मुक्त भऽ साड़ी जनता, देखतै फेरसँ नया श्बहान।।

२०

जौ मानवता ि रै श्अपाही, शुद शासन कऽ रचै श्य ि ान।।

झगड़ै नै जन-जनसँ श्कयो, शान्श्ा होएत सबहक पश्य ि ान।।

२१

मानव जब मानवता ि रै, पगट होइ भीतर नीत इमान।।

श्आष्ठा मयादा नैश्ाकता, दया ि रम सतकरम श्य ि ान।।

२२

जब त्यागै मानवता मानव, भऽ गेल ओकर शान्श्ा भंग।।

जकरा अखन तक कहै छल अप्पन, ओकरेसँ भऽ गेल भारी जंग।।

२३

मानवता जब छोरै मानव, भऽ गेल औकर बेड़ा गर्क।।

श्थकारे जगवासी ओकरा, जीबै जीवन बना कऽ नर्क।।

२४

अमूल रत मानवता मानू, जे पौलक ई जनश्ात भाव।।

दुख तँ हुनका रहते नै छह, रहै नै कोनो सुक्खक अभाव।।

झार - जान

१

कऽ रहलौ वन्दना सभके, हम अजानी नीच नादान। कऽ कऽ क्षमा सभ भूल-चूकके, सभ अक्षम देबै अभयके दान।

२ जीवन-मरण पालन केर रचना, पकृति केर गजब ज्ञान। ऐ रचनाके भेद-भेद कऽ, जाअ गेल अछि ई अजान।।

३ सूया ताप जलवायुक संग, रिती और गगणक तीर। सूवित् सयौग करै छै, जइसँ जनम-मरण जंजीर।।

४ अही पंचशक्ति केर जानी, नाम देलक अल्ला-भगवान। कयो कहै छथि राम प्यारसँ, ईसा-मूसा सुक्खक मि।।

५ एकर पमान स्कूली पुस्तक, कछु बसवास कर शीमान्। पढ़ कऽ जेकरा आइ जगत भव, कऽ रहल लोक गजब केर काम।।

६ आबू जानू वायुमण्डल, नाइरो अठहतर पसेट। ओ एकैस अन एक पशत, रहए घेरने हरदम पजेन्ट।।

७ आगोन कावणि अयम हाइडो, ओजोन आयोनमे एक पसेन्ट। कोहरा आंी-बखा बादल, संग तुफान बजली करेन्ट।।

८ एकर ऊँचाइ अठारह कमी, मानू एकरा पकृति गभि पलय-पभव अहीसँ संभव, अहीसँ चलत जीवन सगि।

९ तथ कऽ भीज कऽ सूथ कऽ जथ कऽ, करै छै नाइरो जग आरमान। जग रयता तत्व बेरानबे, सबहक लेल छै ई वरदान।।

१० नाइरोजनमय सौसे जगत छै, अधिक छै सभमे एकरे अंश। होइ चाहे सौसे जीव-जगत केर, खाहे ओकर सारा वंश।।
११ जहिना अक्षर गनि रचै छै, तहिना तत्त्व रचै छै जीव। रचना एकर ईसा-मूसा, हजरत तुलसी राम और शिव।।
१२ पृथ्वीक गुरुत्वाकर्षणसँ, सटल वायु धरतीपर। छी पभावित अहीसँ हम सभ, धरती केर सभ चेतन-जड़।।
१३ गोल-गोल छै अनु-पमाणु, रचल छै जइसँ ई जग काण्ड। सूरज चंदा तारा गोल छै, गोल बनल छै ई बहमाण्ड।।

१४ कऽ रहलै पकृति आयंणि, सभके कहा छै एकर जान। ओ भेद एकर की जनतै, जे नै पढ़लक भूगोल-विजान।
१५ तन अहा केर क्षेत्र मात्र छी, जाता मात्र पकृति जानू। जे दुनूक भेद जानलक, गीता कहै छै जानी मानू।।
१६ गूथल छी हमसब पकृतिमे, जहिना धागामे मोती। अभिन्न छी हम सभ एक-दोसरसँ, जहिना बातीसँ ज्योति।।
१७ पकृति एक तरु लता छी, फल-फूल छी जीव तमाम। कहा कल्पना हमर ऐ बिनु, बिनका नै छै हमर काम।।
१८ पकृति छी गाए दुधारि, जइ बिनु बै जग स्नेहक गाछ। तकरा भेटै छै दूध दया केर, दुख नै रहै छै तकरा पास।।
१९ पकृति छै धागा जइसन, जीव गूथल माला मोती। सभ रहि जाइ छै मैला पत्थल, बिनु कछुमे जखन जाइ छै ज्योति।।
२० की इच्छा अपनेके नै छै, हमहूँ चमकी बनि स्टार।। अविरात पूड़त अहुँक आसा, छोड़ि असत् कर सत्य स्वीकार।।
२१ आबू जानू संख्या रेखा, मानू एकरा जीवन आधार। एकरा

ैयचाश्व कऽ बाबू-भैया, देश्व सकै छी स्वगकि दार।।
२२ सुन्यके मानू संत बराबर, दाया पलस केर सुख आिर। वाया माइनस असत् बराबर, एनए ठाढ़ छै दुखक पहाड़।।
२३ सम रहनाइये काफी मानू, भवसारग केर नौका बीच। थयान हमेशा एते राखू, असत् ने श्वअए काटा श्वच।।

२४ सेवाक बश्वखारा चढ़ाबू, काटा झूकतै पलस केर ओर। सुख-शाश्व जश कृश्व लऽ कऽ, सभ श्वन एतै लबका भोर।।
२५ जान दबाबै पलसमे काटा, माइनसमे दबबै अजान।
सम-बराबश्व रहनाइ काफी, सममे सदा अटल भगवान।।
२६ जान बराबर ऐ दुश्वयामे, छै नै श्वकयो नाशी-पाप। कर साफ बस तन-मन अपन, बैसतै आश्व कऽ अपने आप।।
२७ श्वष-अमृत सारे जगत भरल छै, श्वअए जानसँ अमृत चूश्व। अजानक कुचिमे पश्व कऽ, श्वकअए मरै छी मािि ूश्व।।

२८ मुश्कील बहुत छै ऐ िरतीपर, ैश्वलए कतौसँ सत्यक जान। जीवन जौ पावन करनाइ अश्व, छोश्व सतेनाइ सेवा ठान।।

झार - कमि
१ बहुत कोइ देलकै ऐ दुश्वयाके, बाबा बश्व-बश्व कऽ उपदेश। दऽ की सकै छी हम झार दार, सूश्व श्वअ कमकि सन्देश।।

२

मानव रिए निुष मिक्ति, नीत इमानक चढ़ा कऽ तीर। श्वचै पत्यन्चा जानक गुस्सा, लक्ष्य कऽ कऽ असत् लकीर।।
३ कमकिरब अजानक दमपर, हरदम जइमे दुखक आस।
सुख भेटै छै ओइ वन्दाके, जेकरा भीतर जानक बास।।
४ दुश्रया भश्वक सुख होइ हमरा, चाश्व रहल अश्छ सारे लोक।
लेश्कन संभव कहा छै केकरो, मा भेटै सुखक संयोग।।
५ सुख-दुख पड़ल छै गोद पकृश्ता, भेटतै केना जानू तं। श्राश्चात सुक्खक ओ छै भागी, जे जानलश्व सत्कमकि मं।।
६ सुख भेटत अश्छ केकरा चाहने, चाश्व कऽ दुख भेल केकर दूर।
ई अजान छी बाबू-भैया, ई नै पकृश्ताक दसतूर।।
७ श्रयान रि रेश्वयो श्मति, केना चलाबै छै बेतार। तन-तरंगसँ फलक श्रणाएि, करए पकृश्ता सेश्व-श्वचाश्व।।
८ एकरे मानू नभ-मण्डलमे, जीव जगत केर फल खश्ताआन। कमकि फलक सबहक लेखा, सत् अटल पकृश्ता श्वान।।
९ हवा जल आ सूया तापसँ, बनल छै सारे देह स्ूिल।
सत् कमकि एकरा जोर , जोश्छ असत् मे कर नै भूल।।
१० सत् कमसिँ ऐ दुश्रयामे, शाश्वाक संग छै सुख छै कुल।
असत् संग संगश्व करब तँ, जीवन गुजरत बश्व कऽ शूल।।
११ कमभिा दुइये दुश्रयामे, एक सच्चा दूजा छी भूल। सत् असत् केर ऐ चकरमे, फँसल छै ऐठाम मानव कुल।।

12 जीव दुखाइ नै जाश्व-बूश्च कऽ, भऽ सकए जते बाटू प्यार।
शा्-श्व ने बैरी श्वकयो, यएह तँ छी सत् कमहिमर यार।।
१३ सत् कमपरि सेवा जानू, जइसँ होइ छै जग श्रमाण। सूजश मान

पश्चाष्ठा िनसँ, भरल रहै घर-वार मकान।।

१४ असत् कमिर पीड़ा जानू, जीवन जइसँ होइ वदनाम। अपजस और नरक केर भारी, जग रोही होइ सभटा काम।।

१५ बड़ा ने श्वकयो जाश्वा लऽ कऽ, नै बड़ा श्वकयो िमिसँ। श्वकयो बड़ा अश्छ ऐ िरतीपर, वस अपने सत् कमसँ।।

१६ जब-जब कमकि कमसँ जोड़ू, मन िर सत् कमकि श्वियान। दुखै ने जगवासी श्वकयो, यएह तँ छी सत् कमकि जान।। १७ काम सभ पकृश्वा केर छी, अलग-अलग छै सबहक सूि। अही सूिमे जोश्छ तनके, पश्वा रहल सभ जीवक पुि।।

१८ काम सभ पकृश्वा केर छी, जइ करै छी अहा-हम। चाहै मेटाउ दुख जगतक, या बूनू दुश्वायामे गम।।

१९ असत् कमसँ नाता तोड़लक, जोश्छ लेलक सत् कमकि डोश्व। दुखू हुनका चश्वा पड़ल अश्छ, खूलल दार जनत केर ओर।।

२० पुण्य मािछी परसुख देनाइ, पाप मािपरदुक्खक दान। आइक ने सश्वयोक बात छी, कश्छ गेला जानी श्वैदान।।

२१ िन बल भेटल तँ की भेटल, जौ भेटैत श्वकछु सेवा कमिलऽ श्वाअ श्वाक्र सत् गुर सँ, फेरौ जानबै एकर ममि।

२२ सेवा तँ भगवान मािछी, कमकि जौ मानबै पूजा। अहीसँ सदगश्वाके भेटबै, राह नै छै कोनो दुजा।।

२३ काम-िोि मद लोभ मोहसँ, लागल सभ िमीमे जंग। सभ िमकि कहै छै पोिी, पकड़ू सभ सत् कमकि संग।।

२४ कमकि जे श्वकयो देलश्वा सता, मानलक एकरे अपन भगवान। जगमे भेटलै ओकरे शाश्वा, सुख सम्पन अश्छ ओ इन्सान।।

२५ कमिकर सभ श्वात्य िमिसँ, बनैत रहत अहाक बात। फलक इच्छा कर ने कखनो, ई तँ अश्छ पकृश्वाक हाि।।

२६ शरीर अहाक यंि माि छी, कछु कराउ एहेन काम। ितीपर जे अमर कराबए, ऊँचा करए जगमे नाम।।
२७ अपनाइ तँ ओकरे अपनाइ छी, जे जानलक ई गहरा राज। नि जीवनक दाउ लगा कऽ, कऽ रहल जगसेवा कायि।

झार - रामायण

१

पहल वन्दना गुर चरणमे, दुजे चरण शंकर भगवान।
दुनू चरण अही केर नीचा, स्वीकारर सत् सत् पणाम।।

२ ओइ घरके तँ अयोिये मानू, जइ घर करए रामायण बास।। कमि रँगल होइ रामायणसँ, दुख नै रहतै तेकरा पास।।

३ श्याम रँग हे राम गोसाइ, जाि-मानवक चश्मा उतार। कर्मकिि बस देखए रमायण, पूजा-पाठक उतरए बोखार।।
४ कर्मकिि छी राम-रामयण, सुख-शाक सत्यक पतीक। अपनाके ऐ सत्य कमकिऽ, सभ पहुँचै सुखक नजदीक।।
५ जइसँ सुिरइ जग-भ मानव, आखलि कि मुि वाल्िक।
ओ की जानतै एकर भाषा, लागल मनका अजानक दीक।।
६ सभ पढ़ सुनै छथि एकरा, पुजै छथि सभ आरती उता। कमि घारक मूल मंपिर, करै नै छथिन कयो चा।।
७ सभ पढ़ै-सुनै छथि एकरा, भरल अछ भीतर एकर कि। जान माि सँ कछु नै होइ छै, ि भीतर कछु कर्मबैि।।
८ जूटल अछ मानव केर स्ता, िरती केर सभ जीवक संग।

एकरा आमाहू सत् कर्मसँ, असत्तेदार अकयो होइ ने तंग।।
९ दादा-पोता-बाप आ बेटा, सभ बनै छथि एके लोक। करम-रिम
छै सबहक अपन, अलाउ रामायणसँ संयोग।।

१० थता बनू अहा राजा दशरि, पुि बनू राम भगवान। भाय भरत
लक्ष्मण-शि्िन, माता बनू कौशल्या समान।।
११ थता बनू अहा राजा दशरि, पुि मे देखू अपन पाण। पोसू एकरा
सत्यक कमाइ, और थ्ललाबू सतकर्मकि जान।।
१२ थता बनू अहा राजा दशरि, बच्चा भेजू आत्य स्कूल। जान-
थजानक पढ़ा कऽ पोिि, सभमे थ्खलाबू जानक फूल।।
१३ भाय बनू अहा लक्ष्मण सन, छोड़ू ने भारी दुखमे संग। अहूँ
ओहीमे हाि बटाबू, राज-काज जौ कऽ थ्दअए तंग।।
१४ भाइक खाश्ार सभ थ्कछु थ्ायागू, सुख-शाश्ा और राजमहल।
थ्ाभा कऽ थ्वस्ता िरा िमिक, जगमे कर मयादा अटल।।
१५ पुि बनू अहा रामचन्दजी, थता वचन लऽ थ्ायागलथ्ा सुख।
नीश्ा इमान मयादा खाश्ार, ईस नै केलथ्ा बनबासक दुख।।

१६ बेटी बनू थ्ाया सुकुमाथ्र, टार नै थ्कन्नौ बड़क बात। रहए
पश्ाक्त हुकुमक सथ्दखन, जेठ, पुस, सौनु आथ्क थ्दन-राश्ा।
१७ कन्या बनू थ्ाया सुकुमाथ्र, ऊँच कर थताक पाग।। हुअए
भूल ने कोनो एहेन, जइसँ लगए पागमे दाग।

१८ पुिी बनू थ्ाया सुकुमाथ्र, बड़ा कऽ सथ्दखथ्ा कर थ्ाहाज। कऽ
कऽ सेवा जगवासीक, चढ़ा थ्दऔ थ्ार थताक ताज।।
१९ पती बनू थ्ाया सुकुमाथ्र, पश्ाक खाश्ार थ्ायागू सुख। हुनके

खुशीमे माि खुशी होइ, हुनके दुखसँ माि होइ दुख।।
२० पती बनू श्मया सुकुमाश्व, अहूँ पश्चाके मानू राम।। श्च्यौ नै आदेशक मौका, समश्चु कऽ हुनकर मनक काम।।
२१ पती बनू सतीअनुसुइया, जुबा ने उतरे पश्चाक नाम। पर पुरष सपनो नै देखल, पश्चाके मानलश्च चार िम।।
२२ पती बनू मनदोदरी रानी, पश्चाके श्चऔ सत् नीत सलाह।
श्च्यौ ने गुस्सा केर मौका, कऽ कऽ कोनो नीच गुनाह।।
२३ पुतोहु बनू अहा सीता-रानी, सासु पाबए माता केर मान। ससुर-भैसुर होइ श्यता बराबश्व, ननश्च-श्चअर भाए-बश्चन समान।।
२४ पुतोहु बनू अहा रानी सीता, ससुक छीनू हाि क काम। गोतनी जेठानी सगी बश्चन सन, जेठ लगै भाय बड़ा समान।।
२५ शासक बनू अहा रमचन्रजी, जन-जनमे सुख भर भरपुर। होइ उतािन दबल-कुचलकक, और होइ देशक गरीबी दूर।।
२६ पश्चर कऽ माला मानवताक, देश श्यकासक लगा श्च्यौ होड़।
अहा बश्च जाउ चाद गगनक, श्चाहारए जनता बश्च चकौर।।
२७ जनश्चतके कोनो ठेस ने पहुँचै, होइ एकताक नारा बुलन्द।
श्चाष्ठा चश्च कऽ ऊँच श्चाखरपर, करए फूटक कारा बन्द।।
२८ जे जेतए करै छी जे श्चकछु, देश सेवाक सभ छी काम। रक्खू सुरश्चक्त अपन नीश्च, खाउ नै ओइमे अपन इमान।।
२९ जनता बनू अयोि्यावासी, शाश्च केर पकड़ू आिर। दुखी ने होइ जन-जनसँ श्चकयो, सभमे होइ सेवाक श्यचार।।
३० जनता बनू अयोि्यावासी, सश्चखन पाबू सत्यक साग। नीश्च िरम इमान जलसँ, हरा-भरा होइ सबहक बाग।।
३१ जनता बनू अयोि्यावासी, भायचाराक पश्च कऽ पाठ। गुश्च कऽ

पेम दयाक डोरी, बान्हु सभ मानव केर गाठ।।
३२ सबहक सि सबहक दुश्मन, काम-ोि-लोभ-अजान। लोभ छै तइमे सबहक नाशी, दया-रिम और नीश्च इमान।।
३३ की कऽ सकल चतुरेगी सेना, की केलश्च जोग जप श्चजान। िवष्त भेल अयोिया नगरी, जब िलश्च केकइ अजान।।
३४ भेल अजान वस रानी केकइ, की पुरा भेल उनकर आस। जे प्यारा राजगदी पाबैत, भेज देलश्च हुनका बनवास।।
३५ ई करामात अजानक छी, उनटा दइ छश्च जजबात। उलश्च गेल अजानसँ सभटा, ऐ रितीके मानव जात।।
३६ पाइये टामे सभटा सुख छै, घेश्च लेलक सभके अजान। झोश्क देलश्च सभ शक्श्च ऐ लेल, गमा कऽ श्चष्ठा रिम-इमान।।
३७ काम-ोि मद लोभ मोह सन, सभ खेतमे दुखक बीज। जौ पनपल ई मौका पाश्च कऽ, सुख केर भऽ गेल पावर सीज।।

श्चयाग- महा झार

१ जीवन कोन सवोतम होइ छै, बाबू सोचू कर श्चचार। नाम अमर होइ रा-िममे, श्चयागक सभ पकर आिर।।
२ कमश्चिना अहा जीअब केना, अही लेल कमफिलक श्चयाग। सभ कमछै जगमे दोषी, जइसँ अपने पाबै छी साग।।
३ हरा रहत घर-दार अहाके, ऐमे फेटू श्चयागक जल। जौ अहा एहेन नै कऽ सकब, श्चश्चात दुखमय होएत कल।।
४ सत्य-अस्त छी मनक सृजन, मािछै करनाइ असत्यक श्चयाग। असत्य छोश्च की बचै छै, झटसँ कहू सत्यक बाग।।

५ एकरा ब्वनु अहा सपनाउ नै, हमर जन्म छी मानवक। असत् पकड़्ब कऽ एते जानू, जनम ब्वतैए दानवक।

६ असत् श्वायाग तँ मा‍ि श्वायाग छी, मनसँ श्वायागू ऐ इंसान। असत् श्वायाश्व कऽ जे श्व्मबै छै, रहै छै बश्व कऽ ओ भगवान।।
७ जतए अहाक चुली जरै छै, ओतए नै पहुँचैत असत्क दाना। अहीसँ दुखक सृजन होइ छै, श्वष भरल छै ओहेन खाना।
८ मीठ होइ सत्यक सुखल रोटी, असत्यक मेवा करए श्वायाग। ओइ घरमे सभ देव पुरष छै, हरा रहए ओ हरदम बाग।।

९ मन चाहै छै मनसँ केकरो, और करै मन केकरो श्वायाग। इच्छा, देष तँ नाम श्वछएे एकर, ऐसँ कटै छै सुखक बाग।।

१० सभसँ पश्वले एकरे श्वायागू, खुशी नै ऐमे छै गम। श्वायाश्व नै सकबै दोष एहेन तब, तब समझू अजान छी हम।।
११ सुखक इच्छा सभके सताबै, एही लेल चाहतक श्वायागू। सुख शाश्वक ई छी नाशी, सोबू नै बाबू आबो जागू।।
१२ दुखसँ देष तँ सभके होइ छै, एकरा चाहए श्वायागए सभ। लोहाबला गेट लगाबू, की दुख घर नै एते तब।।
१३ सुख श्वलल अश्छ केकरा चाहने, चाश्च कऽ दुख भेल केकर दूर। ई अजान छी बाबू भैया, ई नै दुश्वयाक दसतूर।।
१४ काम-ि‍ा मद-लोभ मोहसँ, सभ करै छै असत्यक काम। पहुँच सकल नै एकरा श्वायागने, श्वकयो ि‍रती सुखक ि‍म।।

पुश्चस सूिरक महा झार

१ पुश्चस शब्द स्पेश्चश भाषा, भीतर एकरा छह उदेश्य। अही लेल शासक अपनौलश्च, ऐ िरतीक सभटा देश।।

२ पश्चला अक्र पी कऽ जानू, पीसँ बनै छै शब्द पोलाइट। श्चाष्ट हुअए सभ हमर श्चपाही, देशक शासन होएत हाइलाइट।।

३ अक्र दोसर ओके जानू, ओसँ आएल शब्द ओब्जेक्ट। मािं उदेश्य होइ सुशासनके, और एकरे सभटा सब्जेक्ट।।

४ एल लाबलक श्चगर एडवाजर, अिि कानूनी उपदेशक। राजा-जनता बीचक डोरी, दुनूके तूँ पकाशक।।

५ इंटेश्चजेन्सके आइ बजेलक, तूँ छह बेटा चतुर-चलाक। देखा कश्चश्मा कोनो एहेन, राजा-पजा रहए अवाक।।

६ अक्र सी चेश्चकगके कहलक, श्चत इमानसँ कर परताल। सेवा होइ बस न्याय केर खाश्चर, करए नै कश्चयो तूँ हरताल।।

७ ई बोलेलक इनरजेश्चक, कमठ जानू एकर अिि शाश्च-संपन देश हो हमर, िर श्चपाही मन ई वत्र।।

८ जनता श्चतक रक्ा खाश्चर, बनल श्चपाही असीम अश्चकार। बश्च कठपुतली िनबलाक, श्चत-सँ-अश्चतमे बदलल श्चचार।।

९ लेतै के सामाजक श्चम्मा, करतै सुरक्ा एकरा के। जेकरा छै रक्ा केर श्चम्मा, भक्क बश्च बैसल छै से।।

१० नीक छल राज ऊ अंगेजी, कश्च रहल अश्च पुरश्चया लोक। शाि लगै श्चसँ अच्छा, सोचू केहेन ई संयोग।।

११ चूप हो बेटा पुलीस अबै छै, श्चि िनमे ई खौफश्चनसान। नागश्च डोलबैत ओकरा आगू, जे देखाबए एकरा िनवान।।

१२ कुल-खनदान ने देखए राजा, शायद रजौ छै बकलेल। जइ घर

सभ थ्रन चोर जनमलै, पुश्वास वदीके दइ छै किश्वा।।
१३ वदी पुलीसमे चोर घूसल छै, संगमे गामक दलाल छै। तँए तँ सड़क बीच भोली जनता, भऽ रहल हलाल छै।।
१४ इनकलाब की अहीले एलै, पुश्वास चोर संग जुटेले। अनपढ़-बेचरा-गरीब जनताके, उक्खश्वमे दऽ कऽ कुटैले।

शासक सुिरक महा झार

जय श्वन्द हे देशक िरती, जय श्वन्द हे देशक जनता।
जय श्वन्द हे ताज देशक, जय श्वन्द सम्पभुता।।

आस्श्वाक-नास्श्वाक दुइ भावसँ, बनल पकृश्वा दन्द श्वािन।
आस्श्वाक जग श्वैमाण करए, नास्श्वाक करए जगनाशी काम।।

जब हेतै आस्श्वाक गुण राजा, देशक हेतै नवश्चनमाण।
जनता पश्वरए पेमक माला, एकता िनसँ भऽ िनवान।।

जब हेतै नास्श्वाक गुण राजा, जनरोही हेतै सभ काम।
श्वखरए जनता टुटल माला, देश बश्वा जाएत दुक्खक िम।।

राज श्वदाक खेल नै जानू, ई जगमे भारी श्वजान।
जे गुनलश्वा अश्वछ पाठ मानवताक, हुनके छन्श्व एकर पश्वचान।।

राज थदाके ओ की जानत, जेकड़ा हाि लाठी भैसबार।
लाठीसँ कही राज चलै छै, राज चलाबए कलम तलवार।।

राज हुनकेसँ चश्ल सकै छै, थ्मनका रगमे दानी खून।
स्वामी भाव अंग-अंगमे भरल होइ, और भरल होइ सेवा गुण।

जेकर हाि हमेशा श्वाचा, उ बाबू नै कुसी जोग।
ऐ बुनके शासनकमी, ताकए घोटालाक संजोग।।

पजावत्सल्यके जाने भाषा, जनश्रुतमे बस श्चकल होइ मन।
रोम-रोम जनताके समथ्पति, और होइ अथ्पति जीवन नि।।

जानै नै जे सेवा भाषा, नि-ािरण बस आश्वरी ूनि।
हाि हमेशा जेकर नीचा, उ की जनतै दानक गुण।।

मन रंगल होइ सत्य भावमे, तन चढ़ल श्वाष्ठा केर वस्ि,
एक हाि मे पालन डोर होइ, दुजेमे रक्श केर शस्ि।।

चोरबा-चुश्वाया हाि मे परतै, जब-जब देशक शासन डोर।
लूट-मार चोरी डाका संग, बलात बढ़तै लगा कऽ होर।।

सच्चा शासक हुनके जानू, मानवतासँ रंगल होइ देह।
नीत-इमानक ताज चढ़ल होइ, श्वलमे होइ जन-जनसँ नेह।।

आष्ठाहीन जब शासक हेतै, समझू देशक थिति बाम।
पक्षया थकासी पन्चार रहतै, न्यायक रहतै चका जाम।।

लाज रहत तब राज ताजके, ब्यापै नै एकरा थि थि ताप।
पाबै नै एकरा पुि प्यारा, सतबै नै एकरा माए-बाप।।

आँख छोड़ कऽ कानपर देतै, जब-जब देशक राजा जोड़।
भुख गबी आर चढ़ बैसतै, उफड़ा जका उपलेतै चोर।।

शि आि नै ताजके िरै, छुबै नै एकरा सुन्दर नारी।
ताज नै पकड़ै जाआ-िरमके, और नै टोकै पती प्यारी।।

तन-मन मैला राजा हेतै, समझू उ राजा अजान।
रहै ैआरक्त राजक जनता, देशसँ मेटेतै नीआ जान।

ताल जलै नै ििि आआमे, डुबै नै ई लोभक घोल।
काम मोह नै अहं सताबै, वणा की रहतै एकर मोल।।

पद गौरवके अंिि राजा, और हेतै मनक थकलाग।
सोना उपजै वाला खेतमे, तब उपजतै गाजा-भाग।।

तन अहाक एक यंि माि छी, कुछ कराबू एहेन काम।
िरतीपर जे अमर कराबे, ऊँचा करावै जगमे नाम।।

विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)

श्रुति भजनावली- १-४५

॥ शी गणेशाय नमा ॥

१. ॥ विनय ॥

जय गणेश शंकर सुत सुन्दर अति कृपालु दीनन जन

पालक लम्बोदर अति रुप गजानन, युअ यश कहि न सकत सहसानन।

हमछी अति गमार कछु जानन आज पद कमल देहु उर ध्यानन॥

रामजी अरज सुनहु कछु कानन। वर्णि चहत राम गुण आनन॥

२. ॥ राग ध्रुपद ॥

सेवो मन शंकर अति कृपाल सेवक दुाख भंजन हौ दयाल,

जटा शोभित गंग िर तन छाय भस्म उर मुंड माल

उपवित भुजंगम दृग विशाल विजया भात पीबत फिरत मतवाल।

कर त्रिशूल बघ छाल बिराजित दास आस राखन के सुर रर

कैलाश वास गिरजा संअ संग बहुवजत ताल शोभए शशिभाल॥

काशीपति तेरो यश अपार सुनि आय िय तेरो दार

रामजी अति दीन कर नेहाल जनि वेगि जलए अव ि श लाल॥

३. राग संगीत

नाचत स्मयंग ये॥

कुंज बन चहुं ओर सुन्दर सघन बृक बनाय मण्डित लकत सुमन लजाय सुर तर जगमगात मयंक॥१॥

कठताल डम्फ मंजीर बाजत गोपी गण चहुं दिश छाजत कुञ्जक कलरव मोर नाचत राि लेत मृदंग॥२॥

बेनु आश्व स्परराग बाजत षट श्रींशराश्चान राग गावत गण सब सुनत
िवत यमुना बढ़त तरंग॥३॥
श्चाहुं लोक आनन्द होत सुश्च-सुश्च पवनजल सब श्करत पुश्च-पुश्च
रामजी गृह कायझिाकत कौतुक रंग॥४॥

४. श्चारहुत

वाश्च वयस पहु तेजल सजनी गे श्क कहु तश्चाक श्चवेक,
कबहु नैन नश्च देखल सजनीगे अवश्चि श्चतल दुई एक।
भावैन भवन शयन सुख सजनीगे ज्यौ श्चलत भश्च अंक।
एहेन जीवन लय श्क करव सजनीगे आनो कहत कलंक।
भूषण वसन भश्च सम सजनी पाण रहत अब से शेष।
श्चादश्चि भय पहु वैसल सजनीगे रामजी सहत कत शोक॥

५. श्चारहुत

श्चाठुर श्याम नश्च बहुरल सजनीगे कैलश्च बचन पमाण।
कओन श्चश्चि श्चवस मनायव सजनीगे श्चत नश्च दोसर आन॥
नयन वश्चस तन भीजल सजनीगे श्चन श्चन मदन मलान।
श्चार श्चान्दूर भावै सजनीगे भूषण भावे न कान॥
केहेन श्चिता श्चादश्चि भेल सजनीगे आनक दुख नश्च जान।
रामजीके आश नश्च पुरत सजनी मदन कयल श्चादान॥

६. भजन भैरवी

आब मन हश्च चरनन अनुराग।
त्याश्च हृदयके श्चश्चि वासना दम्भ कपट सब त्याग॥
सुत बश्चता पश्चजन पुरवासी अन्त न आबे काज।
जे पद ध्यान करत सुर नर मुश्च तुहुं श्चाशा आब जाग॥
भज रघुपश्च कृपाल पश्च तारो पश्चात हजार

बिनु हरि भजन बृथा जातछिन सपना सम संसार
रामजी सन्त भरोस छाडि अब सीता पति लौ लाग॥

७. ॥ राग बिहाग ॥

को होत दोसर आन रम बिनु॥ जे पभु जाय ताडि अहिल्या जे बधि रहत परवान॥ जल बिच जाइ गजेन्र उबारो सुनत बात एक कान॥ दौपदि चीर बढ़ाई सभा बिच जानत सकल जहान॥ रामजी सीता-पति भज आशछिन जौ सुख चाहत नादान॥

८. चैत के ठुमरी

चैत पिया नहि आयेल हो रामा चित घबरायेल।।
भवनो न भावे मदन सताबे नैन नीन्द नहि लागल॥
आमवासर कोइल कुकत कुहुकत बाग बाग फूल फूलल॥
रामजी वृथा जात ऋतुराजहि जौन कन्त भवि भललरामा॥
चित घबरायेल चैत पिया नहि आयल॥

९. चैतके ठुमरी

आबि गेल चैत बैरनमा हो रामा शिथि भेल वामा॥
लाले-लाले चून्दरी लगाय पलंगपर पियवा न अयल सपनमा॥
जौवन जोर आर भैल छिन छिन विष सन लागत भवनमा॥
रामजी जीवन वृथा एहि तनमे पभु कोन देखलो नयनमा॥

१०. चैतके ठुमरी

आबि गेल सियाक खोजनमा हो रामा पवन सुअनमा॥
वरषि वरषि हारे सब निशिचर लड़त कौ न सयनमा॥
उपवन नास बिसाय लंकपति मेघवासे कहत बयेनमा॥
मारसि जनि सुत बाहिके लाऊ रामजी बुझत कारनमा हो रामा॥

११. महेशवाणी

सुनु सुनु चण्डेशर नाथ कृपा दृष्टि से एक वेर ताकहु हम छी परम

अनाि॥

देव दनुज भूपश्च कत सेबल श्चकयो न दुखके सािं,

बड़े श्चआरास आश िय रोपल अहाक चरणमे मािं॥

भटश्चक-भटश्चक सबके र श्च्च बूझल सब स्पारिके सािं

जे छश्चि श्चआि अपेश्चक्त पश्चजन सभै रखै छश्चि क्याि॥

नश्च श्चकछ वेदपुराण जनए छी नश्च पूजाके भाव

श्चआश्च श्चन श्चान्ता उदरके फूश्च फटकके बात।।

अहा दयालु दीनेपर सब श्चन जनैत अश्च संसार

रामजीके सकल मनोरि पूर वहु भोला नाि॥

१२. महेशवानी

बम भोला छश्चि अनमोल कतेक दुखी हम

जाइत देखल करैत अश्च अनघोल॥

ककरहु देश्चक दैश्चक दुख छश्च

ककरहु भौश्च कलेस

श्चकयो अबै छश्चि आश अन टकाके लेल॥

कतेक श्चकल छश्चि पुि दार ले कतेक अनेक कलेस

कतेक अहाके भजन करै ये परमारिके लेल॥

परश्च मश्च अहा झारी वैसल सवके दुख हश्च लेल॥

रामजी श्चकछु कश्च न सकैछी अपराि के लेल॥

१३. महेशवानी

एहन बड़के खोश्च आनलश्च पारवतीके लेल॥

श्चनका घर नश्च ि न पश्चजन नश्च जाश्च पाश्चक झेल,

डमर बजावश्चि श्चपर श्चआश्च श्चन भूत पेतसँ खेल॥

अनक खेती श्चकछु नश्च राखश्चि भाग ििर अलेल,

भूषण गि-गमि लटकट विषधरि देखि उर मेल॥
परम बताहक लक्षण सभ छनि अंग भस्म लेने लेल,
हाथी घोड़ा त्यागि पालकी वोढ़ बड़द चढ़ि लेल॥
कहथि रामजीभाग ऊदय अब लेल,
त्रिभुवन पति गौरी पति हेता साजू पूरहर लभे॥
१४. महेशवाणी
हमरो जीवन व्यर्थहि बीति गेल।
कहियो बेलपत्र नहि तोड़ल, फूल रोपि नहि भेल।
अक्षत धूप, दीपलै, चानन शंकर पूजा नहि भेल॥
कतेक वासना मनमे कखन-कखनो दिवस रैन बीति गेल।
कवहुँ ध्यान शान्त चित भए बम-बम कहियो न भेल॥
सुत बनिताक विषय बस कवहुँ, मन विशाम न भेल।
चिन्ता करइत करइत दिन बीतल, अब जजरि तन भेल॥
कहथि रामजी सकल आश तजि शिव सेबू अलबेल।
शिव बिनु दोसरके हरत दुसह दुख निराशय मन कहलेल॥
१५. महेशवानी
शिवके सुनै त्रिभुवनमे दयाल
दुखियाक कहिया सुनता सवाल।
जय गंग चन्द्र भाल, कंठ मुण्डमाल, भंग ले बेहाल॥
वाम भाग पार्वती बसहा सवार, अंग-अंगमे विषधरि लटकल हजार,
भूतनात पणत पाल दिगम्बर धारि,
भस्म अंग संग बेताल डमर बघ छाला॥
रामजी दीननपर कखन करब खयाल
शिव बिना हमर के करत पतिपाल॥
१६. महेशवाणी

श्चाव काटू ने जञाल।
कतेक कहब हम अपन हवाल॥
आश्च श्चन चैन नश्च भूख भेल काल
श्चन्ता करश्च भूश्च गेल अहाक खयाल।
बन्‍ि वगा कुिटुम्ब संग िलाह अनेक भल
केओ न सहाय भेला दुश्चनि पवल।
रामजीके आशा एक जँ श्चागाहनै करब रहब बेकल॥
१७. महेशवाणी
श्चाव कहूने बुझाय॥
ककरा कहब हम अपन दुख जाय। ।
केओ ने भेटैत छश्चि अहाक समुदाय
जे सुश्च हेताह तुरत सहाय॥
श्चत श्चत बश्चाता सुत स्वास्थ्य से भाए।
श्चा नि देश्च भुख लए छश्च घुमाए॥
बमभोला वैदनािं दीनन अपनाय झाड़ीमे बैश्च
हीरालालको लुटाय॥
रामजी आशा लगाय कृपा दृश्च हेर
नािं श्चय अपनाय॥
इश्च
श्चाश्चरस्तु। शुभञ्चास्तुसि
१८. भजन श्चनय
पभू श्चनू कोन करत दुखा िणा॥
कतेक दुाखीके तारल जगमे भव सागर श्चनू जल जान, कतेक चूश्च हमरासे भऽ गेल सोर ने श्चनई छी काना॥ अहा के त बैश्च परल

अछि पतित उ ारिन नाम ।नामक टेक राखू प्रभू अबहूँ हम छी अ ि महाना॥ ज्यो नहि कृपा करब एहि जन पर कोना खबरि लेत आन। रामजी पतितके नाहि सहारा दोसर के अछि आना॥

१९. भजन लक्ष्मी नारायण जीक विनय

लक्ष्मी नारायण अहा हमरा ओर नहि तकइ छी यौ।

दीनदयाल नाम अहाके सभ कहए अछि यौ।

हमर दु ख देखि विकट अहा डरए छी यौ।

व्याधि गणिका शबरि अजामिल गजके उबारल यौ।

कौल किरात भिलनी अ िमके उबारल यौ।

कतेक पतितके तारल अहा मापि के सकत यौ।

र रपुरके भोलानाथ अहा के ि मि गेलायो।

ज्यो न हमरा पर कृपा करब हम कि करब यौ।

रामजी अनाथ एक दास राखु यौ।

२०. भजन विनय भगवती

जय जय जनक नन्दनी अम्बे, त्रिभुवन के तू ही अवलम्बो।

तुही पालन कारनी जगतके, शेष गणेश सुरन को।

तेरो महिमा कहि न सकत कोउ, सकुचत सारभ सुरपति को।

परमदुखी एहि जगमे, के नहि जनए अछि त्रिभुवनमो॥

केवल आशा अहाक चरणके, राखू दास अ ि म को॥

किये नहि राखि सकल शरणोमे, देख दुखी दिनन को॥

ज्यो नहि कृपा करब जगजननी, बास जान व्याज मनमे।

तौँ मेरो दुख कौन हटावत, दोसर छाड़ि अहाको॥

कबहौँ अवसर पावि विपति मेरो कहियो अवनिपति को,

रामजी क नहि आन सहारा छाड़ि चरण अहाको॥

२१. भजन विनय

पभु बिनु कौन करत दुाख िणा।।
कतेक दुखीके तारल जगमे
भवसागर बिनु जल जाना॥
कतेक चूक हमरासे भऽ गेल,
स्मर नि सुनए छी काना।।
अहाके तौँ बाना पड़ल अछि,पश्चात उिरण नामा।
नामक टेक राखु अब पभुजी हम छी अिम जोना।
कृपा करब एहि जन पर कोन खबरि लेत आन।
रामजी पश्चातके नाहि सहारा दोसर के अछि आना॥
२२. बिहाग
भोला हेर पलक एक बेरा॥
कतेक दुखीके तारल जगमे कतए गेलहुँ मेरो बेरा॥
भूतनाि गौरीवरशंकर बिपति हर एहि बेरा॥
जोना कृपा करब शिवशंकर कष मेटत के औरा॥
बड़े दयालु जानि हम एलहुँ अहाक शरण सुनि सोरा॥
रामजीके नहि आन सहारा दोसर केयो नहि औरा॥
२३. भजन महेशवाणी
भोला कखन करब दुाख िनि?
त्रिविधि ताप मोहि आय सतावे लेन चहन मेरो पाण॥
अहिवासर मोहि युअ समवीने पलभर नहि विशामा॥
बहुत उपाय कयके हम हारल दिन-दिन दुाख बलबान,
ज्यौँ नहि कृपा करब शिवशंकर कष के मेटत आन॥
रामजीके सरण राखू पभु, अिम शिरोमणि जान॥भोला.॥
२४. विनय बिहाग

राम बिनु कौन हरत दुाख आन
कौशलपति कृपालु कोमल चित
जाकेँ रित मुनि ध्यान॥
पतित अनेक तारल एहि जगमे,
जग-गाथाका परािन।।
केवट,गृद अजामिल तारो,
ािखहुषे धयो नाम,
नहि दयालु तुअ सम काउ दोसर,
कियो एक िनवान।।
रामजी अशरण आय पुकारो, भव ले कर मेरो ािण॥रामबिनु॥
२५. भजन विनय
लक्ष्मीनारायण हमर दुाख कखन हरब औ॥
पतित उािरण नाम अहाके सभ कए अछि औ,
हमरा बेर परम कठोर कियाक होइ छी औ।।
त्रिविधि ताप सतत आठो दिन तनबै अछि औ॥
अहा बिना दोसर के ािण करत औ॥
देव दनुज मनुज हम कतेक सेवल औ,
कियो ने सहाय भेला विपति काल औ॥
कतेक कहब अहाके ज्यो ने कृपा कर औ,
रामजीके चाकि अहाक के शरण राखन औ॥
२६. भजन विनय
एक बेर ताकू औ भगवान,
अहाक बिना दोसर दुाख केहु ना आन॥
आठो दिन कखनौ कल न पड़ै अछि,
कियो ने तकैये आन

केवल आशा अहाक चरणके आय कर मेरे ाणि॥
कतेक अमिके तारल अहा गश्च ने सकत श्चकयो आन,
हमर वान श्चकछु नाश्च सुनए छी,
बश्चर भेल कते कान॥
पबल पताप अहाक अश्छ जगमे
के नश्च जनए अश्छ आन,
गश्चाका श्चाद अजाश्चल गजके
जलसे बचावल पाण॥
ज्यो नश्च कृपा करब रघुनन्दन,
श्चपश्च परल श्चादान,
रामजीके अब नाश्च सहारा,
दोसर के नश्च आन॥
२७. महेशवानी
सुनू सुनू औ दयाल,
अहा सन दोसर के छश्चि कृपाल॥
जे अहा के शरण अबए अश्छ
सबके कयल श्चाहाल,
हमर दुाख कखन हरब अहा,
कहूने झारी लाल॥
जटा बीच गंगा छश्चि शोश्चात चन्द्र श्चराजश्चि भाल,
झारीमे श्चावास करए छी दुश्चयो पर अश्च खयाल॥
रामजीके शरणमे राखू,
सुनू सुनू औ महाकाल,
श्चपश्च हराऊ हमरो श्चावजी कर आय पश्चपाल॥

२८. महेशवानी

काटू दुाख जंजाल,

कृपा कर चण्डेशर दानी काटू दुाख जंजाल॥

ज्यो नञ्ज दया करब श्चावशंकर,

ककरा कहब हम आन,

श्चन-श्चन श्चकल कतेक दुाख काटब

ज्यो ने करब अहा खयाल॥

जटा बीच गंगा छश्चि शोश्चात,

चन्र उदय अश्छ भाल,

मृगछाला डामर बजबैछी,

भाग पीश्च श्चानकाल॥

लय श्चिशूलकाटू दुाख काटू,

दुाख हमरो वेश्चा कर श्चाहाल,

रामजी के आशा केवल अहाके,

श्चपश्चा हर कश्च खयाल॥

२९. महेशवानी

श्चाव कर ने पश्चापाल,

अहा सन के अश्छ दोसर दयाल॥

भस्म अंग शीश गंग तीलक चन्र भाल,

भाग पीब खुशी रही,

रही दुश्चया पर खयाल।

बसहा पर घुमल श्चफरी,

भूत गण सा‍ि,

डमर बजाबी तीन

नयन अश्छ श्चशाल॥

झाड़ीमे श्रावास करी,

लुटबथि हीरा लाल,

रामजी के बेर श्राव भेलाह कंगाल॥

३०. महेशवानी

श्रावजी केहेन कैलौँ दीन हमर केहेन॥

श्राश्राश्चन चैन नश्च

श्चन्ता रहे श्रान,

ताहू पर थिथि ताप

कर चाहे श्चन॥

पुि दारा कहल श्चकछु ने सुनै अश्छ काअ

ताहू पर पश्चजन लै अश्छ हमर पाण॥

अश्च दयाल जाश्च अहाक शरण अयलहुँ काश्च,

रामजी के दुाख हर अशरण जन जाश्च॥

३१. महेशवानी

श्चथि बड़ दुाख देल,

गौरी दाइ के एहेन वर श्चकयाक श्चाश्च देल॥

श्चनका जाश्च नश्च कुल नश्च पश्चजन,

श्चाश्चपर बसथि अकेल,

डमर बजाबथि नाचथि अपन श्चक भूत पेत से खेल॥

भस्म अंग श्चार शोश्चात गंगा,

चन्र उदय छश्च भाल

वर्स एकोटा नश्च छश्च तन पर

ऊपरमे छश्च बघछाल,

श्चषरि कतेक अंगमे लटकल,

कंठ शोभे मुंडमाल,
रामजी थ्ककयाक झखैछी मैना
गौरी सुख करती थ्आहाल॥
३२. थ्यहाग
वृन्दावन देथ्थ्व थ्स्नअ चहुओर॥
काली दह वंशीवट देखू,
कुंज गली सभ ठौर,
सेवा कुंजमे ठाकुर दशनि,
नाथ्थ्य थ्स्नअ एक बेर॥
जमुना तटमे घाट मनोहर,
पथ्यिक रहे कत ठौर,
कदम गाछके झुकल देखू,
चीर िरे बहु ठौर॥
रामजी वैकुण्ठ वृन्दावन
घूथ्म देखु सभ ठौर,
रासमण्ड ल' के शोभा देखू,
रहू थ्य्वस थ्ककछु और।।
३३. थ्यहाग
म ुरा देथ्थ्व थ्स्नअ सन ठौर॥
पत ल के जे घाट बनल अथ्छ,
बहुत दूर तक शोर,
जमुना जीके तीरमे,
सन रहथ्यि कते ठौर॥
असट ितुके खमभा देखू,
थ्बजली बरे सभ ठौर,

सहर बीचमे सुन्दर देखू,
बालु भेटत बहु ढ़ेर॥
दुनू बगलमे नाला शोभे,
पत्तल के है जोर
कंशराजके कीला देखू
देवकी वो वसुदेव॥
चाणूर मुष्टक योदा देखू
कुबजा के घर और,
राधा कृष्णके मन्दर देखू,
दाउ मन्दर शोर॥
छोड़ भाग
रामजी मन्दिन, घूम आ आब,
कृष्ण बसथि जेहि ठौर॥
गोकुल नन्द यशोदा देखू
कृष्ण झुलाउ एक बेर॥
३४. महेशवानी
भोला केहेन भेलौँ कठोर,
एक बेर ताकू हमरहुँ ओर॥
भस्म अंग आर गंग राजे,
चन्द्रभाल छवि जोर। ।
वाहन बसहा रुद्रमाल गर,
भूत-पेतसँ खेल॥
त्रिभुवन पति गौरी-पति मेरो ज्यो ने हेरब एक बेर,
तौँ मेरो दुाख कओन हरखत

सक्क न सकत जीव मोर॥
बड़े दयालु जाथ्म हम अयलहुँ,
अहाक शरण सूथ्म शोर,
राम-जी अशण आय पुकारो,
थ्वजए दरस एक बेर॥
३५. भजन थ्वनय
सुनू-सुनू औ भगवान,
अहाक थ्वना जाइ अथ्छ
आब अभि मोरा पाण॥
कतेक शुरके मनाबल थ्राथ्वाथ्वन
थ्कयो न सुनलथ्म कान,
अथ्व दयालु सूथ्म अहाक शरण अयलहुँ जाथ्म॥
बन्ु वगा कुटुम्ब सभ छथ्थ बहुत ि नवान,
हमर दुाख देथ्ख-देथ्ख हुनकौ होइ छथ्म हाथ्म।।
रामजी थ्मारास एक अहाक आशा जाथ्म,
कृपा करी हेर नाि,
अशरण जन जाथ्म॥
३६. महेशवाणी
देखु देखु ऐ मैना,
गौरी दाइक वर आयल छथ्थ,
पथ्वछब हम कोना।
अंगमे भसम छथ्म,भाल चन्द्रमा
थ्वषि र सभ अंगमे,
हम थ्माकट जायब कोना॥
बाघ छाल ऊपर शोभथ्म, मुण्डमाल गहना,

भूत पेत संग अयलथि, बथयाती कोना॥
कर थिशूल डामर बघछाला नीन नयना
हाि घोड़ा छथ्क पालकी वाहन बड़द बौना॥
कहथि रामजी सुनु ऐ मनाइन,
इहो छथि परम पवीणा,
तीन लोकके माथ्लक िका,
कर जमाय अपना॥
३७. महेशवानी
एहेन वर करब हम गौरी दाइके कोना॥
सगर देह साप छथि, बाघ छाल ओढ़ना,
भस्म छथि देहमे, थकट लगथि कोना॥
जटामे गंगाजी हुहुआइ छथि जेना,
कण्ठमे मुण्डमाल शोभए छथि कोना॥
मा परं चन्द्रमा थराजथि थ्लक जेका,
हाथि घोड़ा छाथ्क पालकी, बड़द चढ़ल बौना॥
भनथि रामजी सुनु ऐ मैना, गौरी दाइ बड़े भागे,
पौलथि कैलाशपथ्त ऐना॥
३८. भजन थहाग
राम थनु थपथ्त हरे को मोर॥
अथ्त दयालु कोशल पै पभुजी,
जानत सभ थ्चोर,
मो सम अि मि कुथ्टल कायर खल,
भेटत नथ्ह क्यो ओर॥
ता नि शरण आइ हथ्के हेर पलक एक बेर,

गथ्राका थ्राद अजाथ्रल तारो

पथ्रात अनेको ढेर॥

दुाख सागरमे हम पड़ल छी,

ज्यो न करब पभु खोज,

नाँ मेरो दुाख कौन हारावन,

छथ्रु अहा के और॥

थ्रपथ्रा थ्रादान पड़ल अथ्रु थ्राथ्रा थ्रन नाथ्र सहायक और,

रामजी अशरण शरण राखु पभु,

कृपा दृथ्र अब हेथ्र॥

३९. भजन थ्रहाग

थ्रपथ्रा मोरा काटू औ भगवान॥

एक एक थ्रपु से भाथ्रात जन,

तुम राखो रघुवीर,

हमरो अनेक शा ि लतबै अथ्रु,

आय कर मेरो ाण॥

जल थ्राच जाय गजेन्र बचायो,

गरड़ छथ्रु मैदान,

दौपथ्रा चीर बढ़ाय सभामे,

ढेर कयल असमान॥

केवट वानर थ्रा ि बनाओल,

थ्राद देल थ्राज ाि म,

थ्रभीषणके शरणमे राखल

राज कल्प भथ्र दान॥

आरो अ ि म अनेक अहा तारल

सवरी थ्रा ि थ्रा ि न,

रामजी शरण आयल छथि,
दुखी परम अदान॥
४०. महेशवानी
हम त' झाड़ीखण्डी झाड़ीखण्डी हरदम कहबनि औ॥
कर-त्रिशूल धार गंग धराजे,
भसम अंग सोहाई,
डामर-धारी डामरधारी हरदम कहबनि औ॥
चन्द्रभाल धारी हम कहबनि,
वृषधारी वृषधारी हरदम कहबनि औ॥
बड़े दयालु दिगम्बर कहबनि,गौरी-शंकर कहबनि औ,
रामजीके विपत्ति हटाउ,
अशरणधारी कहबनि औ॥
४१. चैत नारदी जनानी
बितल चैत ऋतुराज चित भेल चञ्चल हो,
मदल कपल अदान सुमन सर मारल हो॥
फूलल बेलि गुलाब रसाल कत मोजरल हो,
भंमर गुंज चहुओर चैन कोना पायब हो॥
युग सम बीतल रैन भवन नहि भावे ओ,
सुगा-सुगि कलरव सोर नोर कत झहरत हो॥
रामजी तेजब अब पाण अवधि कत बीतल हो,
मधुपुर गेल भगवान, पलटि नहि आयल हो॥
४२. भजन लक्ष्मीनारायण
लक्ष्मीनारायण हमरा ओर नहि तकय छी ओ॥
दीन दयाल नाम अहाक सब कहैये यौ

हमर दुखा देखि थकट अहूँ हरै छी यो॥
व्याि गव्याका गृि अजाभल गजके उबाड़ल यो
कोल करात भीलअ अमिके ऊबारल यो
कतेक पैतके तारल अहा गअ के सकत यो
ररपुरके भोलानाि अहा िमि गेलायो॥
जयो नि हमरा पर कृपा करब हम की करब यौ
रामजी अनाि एक दास राखू यो॥
४३. महेशवानी
शाव हे हेर पलक एक बेर
हम छी पड़ल दुखसागरमे
खेव उतार एह बेर॥
जयो नि कृपा करब शावशंकर
हम ने अायब यह और॥
त्राि ताप मोह आय सतायो
लेन चहत जीव मोर॥
रामजीके नह और सहारा, अशरण शरणमे तोर॥
४४. समदाउन
गौनाके दिन हमर लगचाएल
सखि हे आव आअ सकल समाजा॥
बहुदिना हम फेर आयब एह जग
दूरदेश सासुरके राजा॥
आसे दिन भूअ रहलौं सखिके संग
नह कएल अपन कछु काजा।
अवधात आत चंचल भेल बुझ
मोरा कोना करब हम काजा।

कखन संग जाए संदेश संबल किछु
दूर देश अछि बाटा॥
ऋण पैच एको नहि भेटत
मारमे कुश काटा॥
हमरा पर अब कृपा करब सभ
क्षमब शेष अपराध
रामजी की पछताए करब अब
हम दूर देश कोना जाएबा॥

४५. महेशवाणी

कतेक कखन तप कएलहुँ गौरी
एहन वर ले कोना॥
साप सभ अंगमे सह सह करइछ कोना,
बाघ छाल ऊपरमे देखल,
मुण्डमाल गहना॥
संगमे जे बाघ छइ,बड़द चढ़ना,
भूत पेत संगमे नाचए छइ कोना॥
गंगाजी जटामे हुहुआइ छथि कोना,
चन्द्रमा कपार पर शोभए छथि कोना।
भनथि रामजी सुनुए मैना,
शुभ शुभ के गौरी विवाह हठ छोड़ू अपना॥

[विदेह ई-पत्रिका, विदेह:सदेह मिथिलाक्षर आ देवनागरी आ गजेन्द्र ठाकुरक सात खण्डक- निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा,उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प गुच्छ), नाटक (संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बाल-मंडली-किशोर जगत- संग्रह कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक माध्य।]

संदेश

१.श्री गोविन्द झा- विदेहकेँ तरंगजालपर उतारि विश्वभरिमे मातृभाषा मैथिलीक लहरि जगाओल, खेद जे अपनेक एहि महाभियानमे हम एखन धरि संग नहि दए सकलहुँ। सुनैत छी अपनेकेँ सुझाओ आ रचनात्मक आलोचना प्रिय लगैत अछि तेँ किछु लिखक मोन भेल। हमर सहायता आ सहयोग अपनेकेँ सदा उपलब्ध रहत।
२.श्री रमानन्द रेणु- मैथिलीमे ई-पत्रिका पाक्षिक रूपेँ चला कऽ जे अपन मातृभाषाक प्रचार कऽ रहल छी, से धन्यवाद । आगाँ अपनेक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम हृदयसँ शुभकामना दऽ रहल छी।
३.श्री विद्यानाथ झा "विदित"- संचार आ प्रौद्योगिकीक एहि प्रतिस्पर्धी ग्लोबल युगमे अपन महिमामय "विदेह"केँ अपना देहमे प्रकट देखि जतबा प्रसन्नता आ संतोष भेल, तकरा कोनो उपलब्ध "मीटर"सँ नहि नापल जा सकैछ? ..एकर ऐतिहासिक मूल्यांकन आ सांस्कृतिक प्रतिफलन एहि शताब्दीक अंत धरि लोकक नजरिमे आश्चर्यजनक रूपसँ प्रकट हैत।
४. प्रो. उदय नारायण सिंह "नचिकेता"- जे काज अहाँ कए रहल छी तकर चरचा एक दिन मैथिली भाषाक इतिहासमे होएत। आनन्द भए रहल अछि, ई जानि कए जे एतेक गोट मैथिल "विदेह" ई

जनिकें पश्च रहल छथि।...विदेहक चालीसम अंक पुरबाक लेल अभिनन्दन।

५. डॉ. गंगेश गुंजन- एहि विदेह-कर्मक लाथ रहल अहाक सम्वेदनशील मन, मैथिलीक पत्र समर्थित मेहनतिक अमृत रंग, इतिहास मे एक टा विशेष फराक अध्याय आरंभ करत, हमरा विश्वास अछि। अशेष शुभकामना आ बधाइक संग, सस्नेह...अहाक पोथी कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक पहिने दृष्टया बहुत भव्य तथा उपयोगी बुझाइछ। मैथिलीमे तँ अपना स्वरूपक पाया ई पहिले एहन भव्य अवतारक पोथी थिक। हर्षपूर्णा हमर हार्दिक बधाई स्वीकार करी।

६. शी रामाशय झा "रामरंग"(आब स्वर्गीय)- "अपना" मिथिलासँ संबंधित...विषय वस्तुसँ अवगत भेलहुँ।...शेष सभ कुशल अछि।

७. शी बजेन्द्र त्रिपाठी- साहित्य अकादमी- इंटरनेट पर पहिल मैथिली पाक्षिक पत्रिका "विदेह" केर लेल बधाई आ शुभकामना स्वीकार करू।

८. शी पफुल्लकुमार सिंह "मौन"- पहिल मैथिली पाक्षिक पत्रिका "विदेह" क पकाशनक समाचार जानि कनेक चकित मुदा बेसी आह्लादित भेलहुँ। कालचक्रके पकड़ि जाहि दूरदृष्टिक परिचय देलहुँ, ओहि लेल हमर मंगलकामना।

९.डॉ. शिवपसाद यादव- ई जानि अपार हर्ष भए रहल अछि, जे नव सूचना-क्रान्तिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताके पवेश दिअएबाक साहसिक कदम उठाओल अछि। पत्रकारितामे एहि पकारक नव पयोगक हम स्वागत करैत छी, संगहि "विदेह"क सफलताक शुभकामना।

१०. शी आद्याचरण झा- कोनो पत्र-पत्रिकाक पकाशन- ताहूमे मैथिली पत्रिकाक पकाशनमे के कतेक सहयोग करताह- ई तऽ भविष्य कहत। ई हमर ८८ वर्षमे ७५ वर्षक अनुभव रहल। एतेक पैघ महान यज्ञमे

हमर शदापूर्ण आहुश्च पाप्त होयत- यावत ठीक-ठाक छी/ रहब।

११. शी श्चजय ठाकुर- श्चश्चागन श्चशश्चदालय- "श्चदेह" पश्चिकाक अंक देखलहुँ, सम्पूर्ण टीम बाईिक पाि अश्छ। पश्चिकाक मंगल भश्चष्य हेतु हमर शुभकामना स्वीकार कएल जाओ।

१२. शी सुभाषचन्द्र यादव- ई-पश्चिका "श्चदेह" क बारेमे जाश्च पसनता भेल। 'श्चदेह' श्चारन्तर पल्लश्चत-पुश्चत हो आ चतुश्चकि अपन सुगंि पसारय से कामना अश्छ।

१३. शी मैश्चिलीपुि पदीप- ई-पश्चिका "श्चदेह" केर सफलताक भगवतीसँ कामना। हमर पूर्ण सहयोग रहत।

१४. डॉ. शी भीमनाि झा- "श्चदेह" इन्टरनेट पर अश्छ ते "श्चदेह" नाम उश्चत आर कतेक रपे एकर श्चवरण भए सकैत अश्छ। आइ-काश्च मोनमे उदेग रहैत अश्छ, मुदा शीघ पूर्ण सहयोग देब।कुर केिम् अन्तामनिक देश्च अश्च पसनता भेल। मैश्चिलीक लेल ई घटना छी।

१५. शी रामभरोस कापश्च "भमर"- जनकपुरािम- "श्चदेह" ऑनलाइन देश्च रहल छी। मैश्चिलीके अन्तराषरीय जगतमे पहुँचेलहुँ तकरा लेल हाश्चकि बाईि। श्चश्चिला रत सभक संकलन अपूर्व। नेपालोक सहयोग भेटत, से श्चशास करी।

१६. शी राजनन्दन लालदास- "श्चदेह" ई-पश्चिकाक माध्यमसँ बड़ नीक काज कए रहल छी, नाश्चक अश्चठाम देखलहुँ। एकर वाश्चकि अँक जखन श्चंट श्चकालब तँ हमरा पठायब। कलकतामे बहुत गोटेके हम साइटक पता श्चखाए देने श्छयश्च। मोन तँ होइत अश्छ जे श्चल्ली आश्च कए आशीवाद दैतहुँ, मुदा उमर आब बेशी भए गेल। शुभकामना देश-श्चदेशक मैश्चिलके जोड़बाक लेल।.. उत्कृष पकाशन कुर केिम् अंतमनिक लेल बाइि। अदुत काज कएल अश्छ, नीक पस्तुश्च अश्छ सात खण्डमे। ..सुभाष चन्द्र यादवक किपर अहाक आमुखक पश्चल

दस पंक्तमे आ आगा हिन्दी, उदू ित ि अंगेजी शब्द अछि (बेबाक, आदोपान्त, फोकलोर..)..लोक नहि कहत जे चालनि दुशलनि बाढ़िनिके जनिनका अपना बहत्तरि टा भूर!..(स्पष ीकरण- अहा दारा उदृत अंश यादवजीक कि संगह बनैत-बिगड़ैतक आमुख १ जे कैलास कुमार मिशजी दारा लिखल गेल अछि-हमरा दारा नहि- के संबोधित करैत अछि। कैलासजीक सम्पूणआमुख हम पढ़ने छी आ ओ अपन विषयक विशेषज छथि आ हुनका पति कएल अपशब्दक पयोग अनुचित-गजेन्द्र ठाकुर)...अहाक मंतव्य क्यो ि गुप्त सभा खोलि मिथापदके बेचि रहल छथि तँ क्यो मैथिल (बाह ण) सभा खोलि सुमनजीक व्यापारमे लागल छथि-मिथापद आ सुमनजीक आड़मे अपन ि ि चमका रहल छथि आ मिथापद आ सुमनजीके अपमानित कए रहल छथि।..तखन लोक तँ कहबे करत जे अपन घेघ नहि सुझैत छनि, लोकक टेटर आ से बिना देखनहि, अ िलाह लागैत छनि.....ओना अहा तँ अपनहुँ बड़ पैघ ि ि कऽ रहल छी। मा ि सेवा आ से व्यावसायि ितखन बूझल जाइत जँ अहा दारा पकाशित पोि ी सभपर दाम लिखल नहि रहितैक। ओहिना सभके बिलहि देल जइतैक। (स्पष ीकरण- शीमान्, अहाक सूचना ि विदेह दारा ई-पकाशित कएल सभटा सामगी आकाइवमे http://www.videha.co.in/ पर बिना मूल्यक डाउनलोड लेल उपलब्ध छै आ भविष्यमे सेहो रहतैक। एहि आकाइवके जे कियो पकाशक अनुमति लऽ कऽ पिंट रूपमे पकाशित कएने छथि आ तकर ओ दाम रखने छथि आ किएक रखने छथि वा आगासँ दाम नहि राखि- ई सभटा परामशअहा पकाशकके पि/ ई-पि दारा पठा सकै छियनि।- गजेन्द्र ठाकुर)... अहाक पति अशेष शुभकामनाक संग।

१७. डॉ. पेमशंकर सिंह- अहा मैथिलीमे इंटरनेटपर पहिल पत्रिका "विदेह" पकाशित कए अपन अदुत मातृभाषानुरागक परिचय देल अछि, अहाक निःस्वार्थ मातृभाषानुरागसँ पेरित छी, एकर निमित्त जे हमर सेवाक पयोजन हो, तँ सूचित करी। इंटरनेटपर आदोपात पत्रिका देखल, मन पफुल्लित भऽ गेल।

१८.शीमती शेफालिका वमा- विदेह ई-पत्रिका देखि मोन उल्लाससँ भरि गेल। विजान कतेक पगति कऽ रहल अछि...अहा सभ अनन्त आकाशके भेदि दियौ, समस्त विस्तारक रहस्यके तार-तार कऽ दियौक...। अपनेक अदुत पुस्तक कुरुक्षेत्रम् अंतमनिक विषयवस्तुक दृष्टि सँ गागरमे सागर अछि। बधाई।

१९.शी हेतुकर झा, पटना-जाहि समपणि भावसँ अपने मिथिला-मैथिलीक सेवामे तत्पर छी से स्तुत्य अछि। देशक राजधानीसँ भय रहल मैथिलीक शंखनाद मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली चेतनाक विकास अवश्य करत।

२०. शी योगानन्द झा, कबिलपुर, लहेरियासराय- कुरुक्षेत्रम् अंतमनिक पोथीके निकटसँ देखबाक अवसर भेटल अछि आ मैथिली जगतक एकटा उदट ओ समसामयिक दृष्टिसम्पन हस्ताक्षरक कलमबन्द परिचयसँ आह्लादित छी। "विदेह"क देवनागरी सँस्करण पटनामे र. 80/- मे उपलब्ध भऽ सकल जे विभिन्न लेखक लोकनिक छायाचित्र, परिचय पत्रक ओ रचनावलीक सम्यक पकाशनसँ ऐतिहासिक कहल जा सकैछ।

२१. शी किशोरीकान्त मिश- कोलकाता- जय मैथिली, विदेहमे बहुत रास कविता, कथा, रिपोटआदिक सचित्र संगह देखि आ आर अधिक पसनता मिथिलाक्षर देखि- बधाई स्वीकार कएल जाओ।

२२.शी जीवकान्त- विदेहक मुदित अंक पढ़ल- अदुत मेहनति। चाबस-

चाबस। ककछु समालोचना मरखाह..मुदा सत्य।

२३. शी भालचन्र झा- अपनेक कुरकेिम् अंतमनिक देखख बुझाएल जेना हम अपने छपलहुँ अछि। एकर वशालकाय आकृति अपनेक सवसिमावेशताक पचायक अछि। अपनेक रचना सामथयमि उतरोतर वृद्धि हो, एहि शुभकामनाक संग हाधदिक बिाई।

२४.शीमती डॉ नीता झा- अहाक कुरकेिम् अंतमनिक पढ़लहुँ। ज्योश्वरीशर शब्दावली, कृषि मत्स्य शब्दावली आ सीत बसन्त आ सभ किा, किवता, उपन्यास, बाल-किशोर साहित्य सभ उतम छल। मैथिलीक उतरोतर वकासक लक्ष्य दृष्टिगोचर होइत अछि।

२५.शी मायानन्द मिश- कुरकेिम् अंतमनिक मे हमर उपन्यास सीिनिक जे विरोि कएल गेल अछि तकर हम विरोि करैत छी।... कुरकेिम् अंतमनिक पोिीक लेल शुभकामना।(शीमान् समालोचनाके विरोिक रपमे नहि लेल जाए।-गजेन्र ठाकुर)

२६.शी महेन्र हजारी- सम्पादक शीमिथिला- कुरकेिम् अंतर्मनक पढि मोन हर्षित भऽ गेल..एखन पूरा पढ़यमे बहुत समय लागत, मुदा जतेक पढ़लहुँ से आहाल्दित कएलक।

२७.शी केदारनाि चौिरी- कुरकेिम् अंतमनिक अदुत लागल, मैथिली साहित्य लेल ई पोिी एकटा पतिमान बनत।

२८.शी सत्यानन्द पाठक- विदेहक हम नियमित पाठक छी। ओकर स्वरपक पशंसक छलहुँ। एम्हर अहाक लिखल - कुरकेिम् अंतमनिक देखलहुँ। मोन आहाल्दित भऽ उठल। कोनो रचना तरा-उपरी।

२९.शीमती रमा झा-सम्पादक मिथिला दपणि। कुरकेिम् अंतमनिक पिंट फॉमिपढि आ एकर गुणवता देखख मोन पसन भऽ गेल, अदुत शब्द एकरा लेल पयुक्त कऽ रहल छी। विदेहक उतरोतर पगतिक

शुभकामना।

३०.श्री नरेन्द्र झा, पटना- विदेह नियमित देखैत रहैत छी। मैथिली लेल अद्भुत काज कऽ रहल छी।

३१.श्री रामलोचन ठाकुर- कोलकाता- मिथिलाक्षर विदेह देखि मोन प्रसन्नतासँ भरि उठल, अंकक विशाल परिदृश्य आस्वस्तकारी अछि।

३२.श्री तारानन्द वियोगी- विदेह आ कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक देखि चकबिदोर लागि गेल। आश्चर्य। शुभकामना आ बधाई।

३३.श्रीमती प्रेमलता मिश्र "प्रेम"- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक पढ़लहुँ। सभ रचना उच्चकोटिक लागल। बधाई।

३४.श्री कीर्तिनारायण मिश्र- बेगूसराय- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक बड्ड नीक लागल, आगाक सभ काज लेल बधाई।

३५.श्री महाप्रकाश-सहरसा- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक नीक लागल, विशालकाय संगहि उत्तमकोटिक।

३६.श्री अग्निपुष्प- मिथिलाक्षर आ देवाक्षर विदेह पढ़ल..ई प्रथम तँ अछि एकरा प्रशंसामे मुदा हम एकरा दुस्साहसिक कहब। मिथिला चित्रकलाक स्तम्भके मुदा अखनो अंकमे आर विस्तृत बनाऊ।

३७.श्री मंजर सुलेमान-दरभंगा- विदेहक जतेक प्रशंसा कएल जाए कम होएत। सभ चीज उत्तम।

३८.श्रीमती प्रोफेसर वीणा ठाकुर- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक उत्तम, पठनीय, विचारनीय। जे क्यो देखैत छथि पोथी प्राप्त करबाक उपाय पुछैत छथि। शुभकामना।

३९.श्री छत्रानन्द सिंह झा- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक पढ़लहुँ, बड्ड नीक सभ तरहे।

४०.श्री ताराकान्त झा- सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद- विदेह तँ कन्टेन्ट प्रोवाइडरक काज कऽ रहल अछि। कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक

अदुत लागल।

४१.डॉ रवीन्द्र कुमार चौरि- कुरुक्षेत्रम् अंतमनक बहुत नीक, बहुत मेहनतिक परिणाम। बधाई।

४२.श्री अमरनाथ- कुरुक्षेत्रम् अंतमनक आ विदेह दुनू स्मरणीय घटना अछि, मैथिली साहित्य मध्य।

४३.श्री पंचानन मिश्र- विदेहक वैविध्य आ निरन्तरता प्रभावित करैत अछि, शुभकामना।

४४.श्री केदार कानन- कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल अनेक धन्यवाद, शुभकामना आ बधाइ स्वीकार करी। आ नचिकेताक भूमिका पढ़लहुँ। शुरूमे तँ लागल जेना कोनो उपन्यास अहाँ द्वारा सृजित भेल अछि मुदा पोथी उनटौला पर जात भेल जे एहिमे तँ सभ विधा समाहित अछि।

४५.श्री दिनाकर ठाकुर- अहाँ नीक काज कऽ रहल छी। फोटो गैलरीमे चित्र एखन शताब्दीक जन्मतिथिक अनुसार रहैत तऽ नीक।

४६.श्री आशीष झा- अहाँक पुस्तकक संबंधमे एतबा लिखबा सँ अपना कए नहि रोकि सकलहुँ जे ई किताब मात्र किताब नहि थिक, ई एकटा उम्मीद छी जे मैथिली अहाँ सन पुत्रक सेवा सँ निरंतर समृद्ध होइत चिरजीवन कए प्राप्त करत।

४७.श्री शम्भु कुमार सिंह- विदेहक तत्परता आ क्रियाशीलता देखि आह्लादित भऽ रहल छी। निश्चितरूपेण कहल जा सकैछ जे समकालीन मैथिली पत्रिकाक इतिहासमे विदेहक नाम स्वर्णाक्षरमे लिखल जाएत। ओहि कुरुक्षेत्रक घटना सभ तँ अठारहे दिनमे खतम भऽ गेल रहए मुदा अहाँक कुरुक्षेत्रम् तँ अशेष अछि।

४८.डॉ. अजीत मिश्र- अपनेक प्रयासक कतबो प्रशंसा कएल जाए

कमे होएतैक। मैथिली साहित्यमे अहा दारा कएल गेल काज युग-युगान्तर धरि पूजनीय रहत।

४९.शी बीरेन्द्र मल्लिक- अहाक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक आ विदेह:सदेह पढ़ि अपार पसनता भेल। अहाक स्वास्थ्य ठीक रहए आ उत्साह बनल रहए से कामना।

५०.शी कुमार राधारमण- अहाक दिशा-निर्देशमे विदेह पढ़ल मैथिली ई-जर्नल देखि अपार पसनता भेल। हमर शुभकामना।

५१.शी फूलचन्द्र झा पवीण-विदेह:सदेह पढ़ने रही मुदा कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक देखि बढ़ाई देबा लेल बाध्य भऽ गेलहुँ। आब विश्वास भऽ गेल जे मैथिली नहि मरत। अशेष शुभकामना।

५२.शी विभूति आनन्द- विदेह:सदेह देखि, ओकर विस्तार देखि अपार पसनता भेल।

५३.शी मानेशर मनुज-कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक एकर भव्यता देखि अपार पसनता भेल, एतेक विशाल ग्रन्थ मैथिलीमे आइ धरि नहि देखने रही। एहिना भविष्यमे काज करैत रही, शुभकामना।

५४.शी विदयानन्द झा- आइ.आइ.एम.कोलकाता- कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक विस्तार, छपाईक संग गुणवता देखि अपार पसनता भेल।

५५.शी अरविन्द ठाकुर-कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक मैथिली साहित्यमे कएल गेल एहि तरहक पहिल पयोग अछि, शुभकामना।

५६.शी कुमार पवन-कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक पढ़ि रहल छी। किछु लघुकथा पढ़ल अछि, बहुत मार्मिक छल।

५७. शी पदीप बिहारी-कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक देखल, बधाई।

५८.डॉ मणिकान्त ठाकुर-कैलिफोर्निया- अपन विलक्षण नियमित सेवासँ हमरा लोकनिक हृदयमे विदेह सदेह भऽ गेल अछि।

५९.शी धीरेन्द्र पेमर्षि- अहाक समस्त पयास सराहनीय। दुख होइत

अछि जखन अहाक पयासमे अपेक्षित सहयोग नहि कऽ पबैत छी।

६०.श्री देवशंकर नवीन- विदेहक निरन्तरता आ विशाल स्वरूप- विशाल पाठक वर्ग, एकरा ऐतिहासिक बनबैत अछि।

६१.श्री मोहन भारद्वाज- अहाक समस्त कार्य देखल, बहुत नीक। एखन किछु परेशानीमे छी, मुदा शीघ्र सहयोग देब।

६२.श्री फजलुर रहमान हाशमी-कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक मे एतेक मेहनतक लेल अहा साधुवादक अधिकारी छी।

६३.श्री लक्ष्मण झा "सागर"- मैथिलीमे चमत्कारिक रूपे अहाक पवेश आह्लादकारी अछि।..अहाके एखन आर..दूर..बहुत दूरधरि जेबाक अछि। स्वस्थ आ पसन रही।

६४.श्री जगदीश पसाद मंडल-कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक पढ़लहुँ । कथा सभ आ उपन्यास सहस्रबाढ़नि पूर्णरूपे पढ़ि गेल छी। गाम-घरक भौगोलिक विवरणक जे सूक्ष्म वर्णन सहस्रबाढ़निमे अछि, से चकित कएलक, एहि संग्रहक कथा-उपन्यास मैथिली लेखनमे विविधता अनलक अछि। समालोचना शास्त्रमे अहाक दृष्टि वैयक्तिक नहि वरन् सामाजिक आ कल्याणकारी अछि, से पशंसनीय।

६५.श्री अशोक झा-अध्यक्ष मिथिला विकास परिषद- कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल बधाई आ आगा लेल शुभकामना।

६६.श्री ठाकुर पसाद मुर्मु- अद्भुत पयास। धन्यवादक संग पार्थना जे अपन मातृ-पितृक ध्यानमे राखि अंकक समायोजन कएल जाए। नव अंक धरि पयास सराहनीय। विदेहके बहुत-बहुत धन्यवाद जे एहेन सुन्दर-सुन्दर सचार (आलेख) लगा रहल छथि। सभटा गहणीय-पठनीय।

६७.बुद्धिनाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी,अहाक सम्पादन मे पकाशित

‘विदेह’आ ‘कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक’ विलक्षण पत्रिका आ विलक्षण पोथी! की नहि अछि अहाक सम्पादनमे? एहि पयत सँ मैथिली क विकास होयत,विश्वाससंदेह।

६८.श्री बृखेश चन्द्र लाल- गजेन्द्रजी, अपनेक पुस्तक कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक पढ़ि मोन गदगद भय गेल , हृदयसँ अनुगृहित छी । हार्दिक शुभकामना ।

६९.श्री परमेशर कापड़ि - श्री गजेन्द्र जी । कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक पढ़ि गदगद आ नेहाल भेलहुँ।

७०.श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर- विदेह पढ़ैत रहैत छी। धीरेन्द्र प्रेमर्षिक मैथिली गजलपर आलेख पढ़लहुँ। मैथिली गजल कतऽ सँ कतऽ चलि गेलैक आ ओ अपन आलेखमे मात्र अपन जानल-पहिचानल लोकक चर्च कएने छथि। जेना मैथिलीमे मठक परम्परा रहल अछि। (स्पष्टीकरण- श्रीमान्, प्रेमर्षिजी ओहि आलेखमे ई स्पष्ट लिखने छथि जे किनको नाम जे छुटि गेल छन्हि तँ से मात्र आलेखक लेखकक जानकारी नहि रहबाक द्वारे, एहिमे आन कोनो कारण नहि देखल जाय। अहाँसँ एहि विषयपर विस्तृत आलेख सादर आमंत्रित अछि।-सम्पादक)

७१.श्री मंत्रेश्वर झा- विदेह पढ़ल आ संगहि अहाक मैगनम ओपस कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक सेहो, अति उत्तम। मैथिलीक लेल कएल जा रहल अहाक समस्त कार्य अतुलनीय अछि।

७२. श्री हरेकृष्ण झा- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक मैथिलीमे अपन तरहक एकमात्र ग्रन्थ अछि, एहिमे लेखकक समग्र दृष्टि आ रचना कौशल देखबामे आएल जे लेखकक फील्डवर्कसँ जुड़ल रहबाक कारणसँ अछि।

७३.श्री सुकान्त सोम- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक मे समाजक इतिहास आ

वतमीनसँ अहाक जुड़ाव बडड नीक लागल, अहा एख्न केंमे आर आगा काज करब से आशा अछ्छ।

७४.पोफेसर मदन थ्रश- कुरकेंम् अंतमनिक सन थ्कताब मैथ्रिलीमे पश्लले अछ्छ आ एतेक थ्यशाल संगहपर शोि कएल जा सकैत अछ्छ। भथ्यष्यक लेल शुभकामना।

७५.पोफेसर कमला चौिरी- मैथ्रिलीमे कुरकेंम् अंतमनिक सन पोिी आबए जे गुण आ रप दुनूमे थ्यासरसन होअए, से बहुत थ्दनसँ आकाक्ष छल, ओ आब जा कऽ पूणिभेल। पोिी एक हािसँ दोसर हाि घुथ्म रहल अछ्छ, एख्नना आगा सेहो अहासँ आशा अछ्छ।